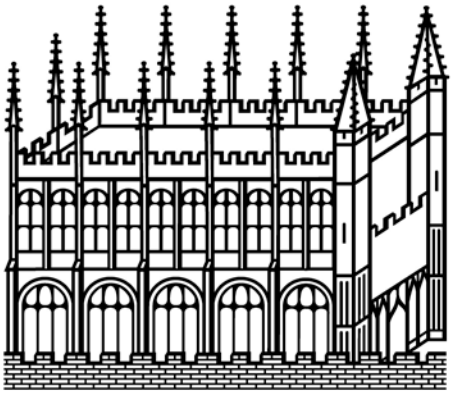


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

29 D 194

13.D.14.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Parola Commissione.

कमीशनबड़ौदा

—o—

अर्थात्

महाराजा मल्हरराव गायकवार रईस बड़ोदा की ओर से करनैल फियर साहब रेज़ीडेण्ट बड़ौदा के बिषदेने के मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ात ॥

जिसमें

सररिचर्डकौच साहब चीफजस्टिस बङ्गाल प्रेजीडेन्ट कमेटी और श्रीमान् महाराजा जियाजी रावसेंधिया जी०सी० एस० आई० और श्रीयुत महाराजा सवाई रामसिंह जी०सी०एस०आई० और करनैल सर-रिचर्ड मीडसाहब चीफकमिश्नर मैसोर और मिस्टर मैलवल साहब सी० एस० आई० जज चीफ कोर्ट पञ्जाब और राजा सर दिनकरराव सी० एस० आई० कमेटी की सभा के जज थे ॥

जिसको

पोलीटिकल और क़ानून अदालत के मुआमलों के अनुरागियों और सब छोटे बड़ों हिन्दुस्तान के सरदारों को गुणग्राहकता के लिये सम्पूर्ण मुक़द्दमा आदि से अन्त तक संग्रह करके अवध समाचार पत्रके सम्पादक मुंशीनवलकिशोर की अनुमति से बाबूदामोदरदास साहब आगरेकालिज के सनद्याफ्तेने टाइम्स आफ़ इण्डिया की छपीहुई प्रतिसे अवध अख़बारका तर्जुमा मिलाकर और अधिक कर उर्दू में तरतीब दिया ॥

और

पण्डित प्यारेलाल साहब कश्मीरी यंत्रालयीय पण्डितों के प्रबंधक ने नागरी खड़ी बोली में उल्था रचना किया ॥

—o—

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यन्त्रालय में पण्डित प्यारेलाल के प्रबन्धसे छपा ॥

मई सन् १८७६ ई० ॥

कमीशनबड़ौदा

—o—

अर्थात्

महाराजा मल्हरराव गायकवार रईस बड़ोदा की ओर से करनैल फियर साहब रेज़ीडेण्ट बड़ोदा के बिषदेने के मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ात

जिसमें

सररिचर्डकोच साहब चीफजस्टिस बङ्गाल प्रेजीडेण्ट कमेटी और श्रीमान्महाराजा जियाजी रावसेंधिया जी० सी०एस० आई० और श्रीयुत महाराजा सवाईरामसिंह जी०सी०एस० आई० और करनैल सररिचर्ड मीडसाहब चीफकमिश्नर मैसोर और मिस्टर मैलवल साहब सी० एस० आई० जज चीफ कोर्ट पञ्जाब और राजा सर दिनकरराव सी०एस० आई० कमेटीकीसभा केजज थे

जिसको

पोलीटिकल और क़ानून अदालत के मुआमलों के अनुरागियों और सब छोटे बड़ों हिन्दुस्तान के सरदारों की गुणग्राहकता के लिये सम्पूर्ण मुक़द्दमा आदि से अन्त तक संग्रह करके अवधसमाचार पत्रके सम्पादक मुंशी नवलकिशोर की अनुमति से बाबूदामोदर दास साहब आगरेकालिज के सनदयाफ्तेने टाइम्स आफ़ इण्डिया की छपीऊई प्रतिसे अवध अख़बारका तर्जुमा मिल कर और अधिक कर उर्दू में तरतीब दिया-

और

पण्डित प्यारेलाल साहब कश्मीरी यंत्रालयीय पण्डितों के प्रबंधक ने नागरी खड़ी बोली में उल्था रचना किया

—o—

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यन्त्रालय में पण्डित प्यारेलाल के प्रबन्ध से छपा

मई सन् १८७१ ई०

कमीशन बड़ौदा का सूची पत्र ॥

नम्बर	प्रतिदिन की कार्रवाई	पृष्ठसे पृष्ठतक
१	[पहिले दिनका इजलास]	
	कार्रवाई कमीशन विषयखुलाने या बहकाकर बिषयदिलानेकी [तहक़ीक़ात	१—३
	गायकवारके बिषयदेनेके मुक़ट्टमेमें सरकारकेवकीलकीस्पीच	३—१२
	अमीना आया के इजहारात	१२—१६
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न	१६—२०
	कचहरी के साहबानकी वार्त्ताका बयान	२०—२१
२	[दूसरे दिन का इजलास]	
	आयासे प्रश्न करना	२१—२६
	सरकारके वकीलने फिरआया अमीनासे इज़हारलिये	२६—३२
	फैज़ू रमजानका इज़हार	३२—३२
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न	३२—३३
	सरकारके वकीलने फिर फैजूसे इज़हार लिये	३३—३४
	कारभाई पुंजाभाईके इज़हारात	३४—३४
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न	३५—३५
	शेखकरीमके इजहारात	३६—३६
	सरजंटबेलनटायन साहबने करीमसे प्रश्नकिये	३६—३०
३	[तीसरेदिन का इजलास]	
	बख़्शियारखां के पुत्रसन्दलखांका इजहार	३८—३८
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न	३८—४१
	बख़्शियारखांके पुत्र सन्दलखांके फिरइजहारलियेगये	४१—४२
	छोटूके इजहारात	४२—४३
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न	४३—४३

नम्बर	प्रति दिनकी कार्रवाई	पृष्ठसे पृष्ठतक
	दूसरीबार छोटूके इजहारात लियेगये ..	४३—४४
	शेखदाऊद के इजहारात ..	४४—४४
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न ..	४४—४५
	ऐडवकेटजनरल ने फिर इजहार लिये ..	४५—४५
	सन्दलखाँ फिर बुलाया गया ..	४५—४६
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न ..	४६—४६
	फिर दुबारा इजहारात लियेगये ..	४६—४६
	शेखअब्दुल्लहके इज़हार ..	४६—५१
४	[चौथे दिनका इजलास]	
	सरजण्टसाहब ने शेखअब्दुल्लह से प्रश्न किये	५१—५३
	शेखअब्दुल्लहके फिर इजहारात लियेगये ..	५३—५४
	अबदुल्रहमान के इजहारात ..	५४—५५
	ब्रैसनसाहब के प्रश्न ..	५५—५७
	अमीना को फिर बुलाया ..	५७—५८
	ब्रैसन साहब के प्रश्न ..	५६—५६
	शेखअबदुल्लहके फिर इज़हारहुये ..	५६—५६
	पीडरूडिसूज़ा केइजहारात ..	५६—६०
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	६०—६२
	करनैलफियर साहब के इजहारात ..	६२—६५
५	[पांचवेंदिन का इजलास]	
	साहब ऐडवकेटजनरल ने करनैलफियरसाहबका इजहार [लिया..	६५—६७
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न ..	६७—७७
	करनैलफियर साहबसे दुबारा इजहारात लियेगये ..	७८—७८
	मिस्टरअनवरार्टी साहबने डाक्टरसीवर्डसाहबकेइज़हारात [लिये..	७८—७६

कमीशन बड़ौदा का सूची पत्र ॥

नम्बर	प्रतिदिन की कार्रवाई	पृष्ठसे पृष्ठतक
१	[पहिले दिनका इजलास]	
	कार्रवाई कमीशन विषयखुलाने या बहकाकर विषदिलानेकी [तहक़ीक़ात	१—३
	गायकवारके बिषदेनेके मुक़द्दमेमें सरकारकेवकीलकीस्पीच	३—१२
	अमीना आया के इजहारात	१२—१६
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न	१६—२०
	कचहरी के साहबानकी वार्त्ताका बयान	२०—२१
२	[दूसरे दिन का इजलास]	
	आयासे प्रश्न करना	२१—२६
	सरकारके वकीलने फिरआया अमीनासे इज़हारलिये	२६—३२
	फैज़ू रमजानका इज़हार	३२—३२
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न	३२—३३
	सरकारके वकीलने फिर फैजूसे इज़हार लिये	३३—३४
	कारभाई पुंजाभाईके इज़हारात	३४—३४
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न	३५—३५
	शेखकरीमके इजहारात	३६—३६
	सरजंटबेलनटायन साहबने करीमसे प्रश्नकिये	३६—३७
३	[तीसरेदिन का इजलास]	
	बख़्शियारखां के पुत्रसन्दलखांका इजहार	३८—३८
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न	३८—४१
	बख़्शियारखांके पुत्र सन्दलखांके फिरइजहारलियेगये	४१—४२
	छोटूके इजहारात	४२—४३
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न	४३—४३

नम्बर	प्रति दिनकी कार्रवाई	पृष्ठसे पृष्ठतक
	दूसरीबार छोटूके इजहारात लियेगये ..	४३—४४
	शेखदाऊद के इजहारात ..	४४—४४
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न ..	४४—४५
	ऐडवकेटजनरल ने फिर इजहार लिये ..	४५—४५
	सन्दलखाँ फिर बुलाया गया ..	४५—४६
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न ..	४६—४६
	फिर दुबारा इजहारात लियेगये ..	४६—४६
	शेखअब्दुल्लहके इज़हार ..	४६—५१
४	[चौथे दिनका इजलास]	
	सरजण्टसाहब ने शेखअब्दुल्लह से प्रश्न किये	५१—५३
	शेखअब्दुल्लहके फिर इजहारात लियेगये ..	५३—५४
	अब्दुलरहमान के इजहारात ..	५४—५५
	ब्रैसनसाहब के प्रश्न ..	५५—५७
	अमीना को फिर बुलाया ..	५७—५८
	ब्रैसन साहब के प्रश्न ..	५६—५६
	शेखअब्दुल्लहके फिर इज़हारहुये ..	५६—५६
	पीडरूडिसूज़ा केइजहारात ..	५६—६०
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	६०—६२
	करनैलफियर साहब के इजहारात ..	६२—६५
५	[पांचवेंदिन का इजलास]	
	साहब ऐडवकेटजनरल ने करनैलफियरसाहबका इजहार [लिया..	६५—६७
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न ..	६७—७७
	करनैलफियर साहबसे दुबारा इजहारात लियेगये ..	७८—७८
	मिस्टरअनवरार्टी साहबने डाक्टरसीवर्डसाहबकेइज़हारात [लिये..	७८—७६

नम्बर	प्रति दिन की कार्रवाई	पृष्ठ से पृष्ठ तक
६	[छठेदिनका इजलास]	
	आजके दिन केवल डाक्टर सीवर्ड साहब और डाक्टर ग्रे [साहब के इज़हार लियेगये..	७६—८८
	सरजंटबेलनटायन साहबके प्रश्न ..	८८—१००
	डाक्टरसीवर्ड साहब के दुबारा इज़हार ऐडवकेटजनरल ने [लिये..	१००—१०३
	डाक्टर ग्रेसाहबके इज़हार ..	१०३—१०८
७	[सातवें दिनका इजलास ॥]	
	डाक्टर ग्रेसाहब के इज़हार के पीछे सरजंट बेलनटायन [साहब ने उन इज़हारों में प्रश्न किये..	१०८—११०
	सरकार के वकील ने डाक्टरग्रेसाहबके दुबारा इज़हारलिये..	११०—११२
	मुहम्मद अब्दुल्लह गवाह का इज़हार ..	११२—११३
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	११३—११४
	इज़हार गोबिन्दबालू ..	११४—११५
	इज़हार यलापा गवाह ..	११५—११५
	इज़हार लक्ष्मण ..	११६—११६
	इज़हार जम्मूमियां गवाह ..	११६—११७
	सवालात जो जम्मूमियां से सरजंटबेलनटायनसाहबनेकिये..	११७—११७
	इज़हार नाटाजुग्गा गवाह ..	११८—११८
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न नाटाजुग्गा से ..	११८—११६
	मुहम्मदअलीबख्श गवाह का इज़हार ..	११६—१२०
	ऐडवकेटजनरल ने मुहम्मदअलीबख्श का दूसरीबेर इज़ [हार लिया..	१२०—१२१
	इज़हार रावजी गवाह ..	१२१—१२६
८	[आठवेंदिन का इजलास]	
	रावजीका इज़हार फिर शुरूहुआ ..	१२६—१३१
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	१३१—१४३

नम्बर	प्रति दिन की कार्रवाई	पृष्ठसे पृष्ठतक
	ऐडवकेटजनरल ने दुबारा प्रश्न किये ..	१४३—१४६
६	[नवेंदिन का इजलास]	
	आज नरसूराजाना गवाह बुलायागया ..	१४६—१४६
	नरसूराजाना गवाह का इजहार ..	१४६—१५२
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	१५२—१५८
	ऐडवकेटजनरल ने नरसूके दूसरीबेर इज़हार लिये ..	१५८—१६०
	इज़हार जुग्गा भगवान गवाह ..	१६०—१६२
	कारभाई अमानसिंह गवाहके इज़हार ..	१६२—१६३
	सरजंट बेलनटायन साहब के प्रश्न ..	१६३—१६४
	सवालात जो साहब ऐडवकेट जनरल ने किये ..	१६४—१६४
१०	[दशवें दिनका इजलास]	
	आज दजीबा नरोतम गवाह के इजहार मिस्टर अनट- [र्टी साहब ने लिये ..	१६४—१६५
	सरजंट बेलनटायन साहब के प्रश्न ..	१६५—१६५
	इजहार शिवलाल वितल ..	१६५—१६६
	इजहार दुबल मन्नूदास ..	१६६—१६०
	दलपति गोविन्दराम का इजहार ..	१६०—१६०
	छग्गनलाल दामोदरदास गवाह का इजहार ..	१६०—१६८
	इजहार मीरइमाम अलीगवाह ..	१६८—१६८
	इजहार मुन्नीभाई जस भाई ..	१६६—१७०
	इजहार भोदर नरसी ..	१७०—१७१
	इजहार अकबर अली ..	१७१—१७२
	सरजण्ट बेलन टायन साहब के प्रश्न ..	१७२—१८१
	ऐडवकेट जनरल के प्रश्न ..	१८१—१८४
	इजहार बसन्तराम भिखारी राम ..	१८४—१८५

नम्बर	प्रति दिन की कार्रवाई	पृष्ठसे पृष्ठतक
	मिस्टर ब्रैसन साहबके प्रश्न ..	१८५—१८५
	ऐडवकेट जनरल ने इस गवाह के दुबारह इजहार लिये ..	१८५—१८५
	इजहार मिस्टर बूवी साहब ..	१८६—१८०
	सरजण्ट बेलन टायन साहब के प्रश्न ..	१८०—१८८
	ऐडवकेट जनरल के प्रश्न ..	१८८—१८८
११	[ग्यारहवें दिनका इजलास]	
	आजकेदिन दामोदर पंथकेइजहार ऐडवकेट जनरलने लिये ..	१८८—२००
१२	[बारहवें दिनका इजलास]	
	ग्यारह बजे साहब ऐडवकेट जनरल ने दामोदर पंथ से [इजहार लेना प्रारंभ किया ..	२००—२०४
	सरजण्टबेलनटायन साहब के प्रश्न जो दामोदर पंथ [गवाह से किये ..	२०५—२१८
	ऐडवकेटजनरल ने दुबारा इजहार दामोदरपंथ के लिये ..	२१८—२१६
	इज़हार हेमचन्द फतहचन्द जौहरी ..	२१६—२२५
१३	[तेरहवेंदिन का इजलास]	
	मिस्टरअनवरार्टी साहब नेहेमचन्द फतहचन्द के इज़हार [लेना प्रारंभ किया ..	२२५—२२५
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्नहेमचन्दफतहचन्द से ..	२२५—२२८
	ऐडवकेटजनरल के प्रश्न ..	२२८—२३३
	इज़हार नानाजी वितल गवाह ..	२३३—२३४
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२३४—२३८
	ऐडवकेटजनरल ने फिर नानजीवितल के इज़हार लिये ..	२३८—२३६
१४	[चौदहवेंदिन का इजलास]	
	रघुनाथके पुत्र आत्माराम के इजहार प्रारंभ हुये ..	२३६—२३६

नम्बर	प्रति दिन की कार्रवाई	पृष्ठसे पृष्ठतक
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२३६—२४१
	बलवन्तराव रावजीके इज़हारात ..	२४१—२४१
	रामेश्वरमोरा के इज़हारात ..	२४१—२४१
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२४१—२४२
	दूसरी बेर रामेश्वरमोरा के इज़हार लियेगये ..	२४२—२४२
	दतेरिया रामचन्द्र के इज़हारात ..	२४२—२४२
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२४२—२४३
	दतेरिया रामचन्द्र का दुबारा इज़हार लियागया ..	२४३—२४३
	भावपूनाकर के इज़हार ..	२४३—२४४
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२४४—२४८
	मिस्टर रिचीसाहब के इज़हार ..	२४८—२४६
	सरजंट बेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२४६—२४६
	इजहार अब्दुलअली के ..	२४६—२४६
	करनैलफियर साहब बुलाये गये ..	२४६—२५१
	ऐडव केट जनरल ने दुबारा इज़हार करनैल फियरसाहब [के लिये ..	२५१—२५२
	इजहार गजानन्द वितल ..	२५२—२५४
	सरजंट बेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२५४—२५६
	गजानन्द वितल के दुबारा इज़हार हुये ..	२५६—२६०
१५	[पन्द्रहवें दिनका इजलास]	
	हरजीवनदास पुरुषोतमदास के इज़हार ..	२६०—२६०
	सरजंट बेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२६०—२६०
	ऐडव केट जनरल ने फिर उसके इज़हार लिये ..	२६०—२६१
	मिस्टरसूटर साहब के इज़हार ..	२६१—२६४
	सरजंट बेलनटायन साहब के प्रश्न ..	२६४—२६५

नम्बर	प्रति दिन की कार्रवाई	पृष्ठ से पृष्ठतक
	गजानन्द वितल फिर बुलाया गया	..२६५—२६६
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न	..२६६—२६६
	ऐडवकेटजनरल ने दुबाराइज़हार लिये	..२६६—२६०
	सरल्यूस्पेली साहब के इज़हार	..२६०—२००
	सरजंटबेलनटायन साहब के प्रश्न	..२००—२०५
१६	[सोलहवेंदिन काइजलास]	
	सूटरसाहब कमिश्नर पुलिस की गवाही	..२०६—२०६
	महाराजा गायकवार का उज्र	..२०६—२०६
	सरजंटबेलनटायन साहब की स्पीच खण्डन	..२०६—३००
१७	[सत्रहवें दिन का इजलास]	
	सरजंटबेलनटायन साहब की तितिम्मा स्पीच	..३००—३३०
१८	[अठारहवें दिन का इजलास]	
	तितिम्मा स्पीच सरजंटबेलनटायन साहब और दोपहर के [पीछे सरकार के वकील की स्पीच	..३३०—३५०
	ऐडवकेट जनरल साहब का उत्तर	..३५०—३००
१६	[उन्नीसवें दिनका इजलास]	
	तितिम्मा स्पीच वकील सरकार	..३००—४१२
२०	[बीसवें दिनकाइजलास]	
	ऐडवकेटजनरल की तितिम्मागुफ्तगू	..४१२—४१६
	चिट्ठी दादा भाई नौरोजी	..४१६—४१६
	दामोदर पंथके उन इजहारों का खुलथा जो उसने [पुलिसके रूबरू दिये	..४१०—४२६

नम्बर	प्रतिदिन की कार्रवाई	पृष्ठसे पृष्ठतक
	रेज़ो ल्यूशन गवर्न्मेण्ट हिन्दमें काग़ज़ात मुफ़्तहर गज़ट आफ इण्डिया और गवर्न्मेण्ट हिन्दके वज़ीर [के मुकट्टमें के खुलासा करने के निसबत	४२७—४५६
	अंगरेजी मेम्बरों की रिपोर्ट	४५७—५२१
	हिन्दुस्तानी मेम्बरों की रिपोर्ट	५२२—५२६
	श्री मान् लार्डसेलसबरी साहब बहादुर सल्तनत हिन्दके वज़ीर जो पत्र इजाक सलन्सीराबट आनरेबिल साहब गवर्नर जनरल बहादुर हिन्दुस्तान बइजलास कौंसिल की प्रति	५२६—५४०

लण्डन दफ़्तर हिन्द
३ जून सन् १८७५ ई०

इति

भूमिका

ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की अमलदारी जबसे हिन्दुस्तान में हुई तबसे ऐसा मुकदमा कमीशन गत वर्षमें जो बड़ौदे के राजाके मुक़द्दमे के तहक़ीक़ात करने के लिये नियत हुवा था कभी नियत नहींहुवा—यह वह मुक़द्दमा है जो सम्पूर्ण हिन्दुस्तान और यूरुप में समाचार पत्रों के द्वारा विख्यात होचुका है—इस मुक़द्दमे की बिना और असल यह थी कि करनैल फ्रियर साहब बड़ौदा के ब्रिटिश रेज़ीडण्ट को अरबत में विष दियागया था नहीं और इस अपराधका शुभा मल्हरराव गायकवार बड़ौदा पर हुवा—कि उनकी साजिश या तरग़ीबसे विष दियागया तथाच गवर्नमेण्टहिन्दने इसमुक़द्दमेकीतहक़ीक़ात के लियेएक कमीशन नियत की जिसमें तीनसाहब यूरोपियन अर्थात् सररिचर्डकौच साहब चीफजस्टिस बंगाल प्रेज़ीडण्ट, और सररिचर्डमीड साहब चीफ़कमिश्नर मुल्कमैसोर, और मिस्टर मैलवल साहब कमिश्नर अम्रतसर, और तीन साहब हिन्दुस्तानी अर्थात् दो बड़े महाराजा हिन्दुस्तान अर्थात् श्रीयुत महाराजा साहबबहादुर जयपुर और श्रीमान्महाराणा साहबबहादुर सेंधिया अधिपति ग्वालियारऔरराजासरदिनकरराव रियासत ग्वालियार के पहिले वज़ीर मेम्बर नियतहुये—तहक़ीक़ातके उपरान्त हिन्दुस्तानी जजसाहबों ने बड़ौदेके अधिपति मल्हररावको साजिश या तरग़ीब विष देने के अपराध से बरी किया—परन्तु जजसाहबानयूरोपियनने बड़ौदाके महाराजापर साजिश या तरग़ीब विषखिलाने

का अपराध सूचित किया—परन्तु इनका यह साबित करना तीन गवाहों के बयान पर था जिनमें से दो मनुष्य ऐसे थे जो बड़ौदे की रेजीडेण्टी के छोटे नौकर थे—यद्यपि गवर्न्मेण्ट हिन्द ने यूरोपियन साहबों के रायों के साथ सम्मत किया—लेकिन माण्डीस आफ़ सालसबरी साहब सेक्रेटरी आफ़ स्टेट आफ़ इण्डिया ने प्रतिकूल मतों के होने से यह समझा कि मल्हरराव गाथकवार पर साजिश और बहकाके जहर देने का अपराधसाबित नहीं हुवा—परन्तु उन्होंने मल्हरराव बड़ौदे के अधिपतिको श्रीमहाराणी विक्टोरिया की आज्ञानुसार इस सबबसे बड़ौदे कीगद्दी से उतारा कि उनका चाल चलन अच्छा न था और उनके देश का प्रबन्ध बहुत ख़राब और बड़ौदे की प्रजा उनसे बहुतही अप्रसन्न थी ॥

गत वर्ष में अनेक अख़बारों में इस मुक़द्दमे पर वादानुवाद हुवा कई अख़बार लिखने वालों ने गवर्न्मेण्ट की इस कारर्वाई पर बड़े २ एतराज किये और कलंक लगाये—और कितनों ने गवर्न्मेण्ट इङ्गलिशिया की इस कारर्वाई की सहायता की—जोकिअब यह मुक़द्दमा पूर्णहोगया इसलिये अबइस विषयमें लिखना कि वह कारर्वाई कैसीथी व्यर्थहै लेकिन जोकि अख़बारों में इस मुक़द्दमे की अलग २ कारर्वाइयां छपी हैं और बहुधा अख़बार के अवलोकन करने वालों और देश के रईसों की यह इच्छा पाईगई कि तर्जुमा सब कारर्वाई कमीशन का आदि से अन्त पर्य्यन्त अखीरी हुक्म तक क्रम पूर्व्वक छापा जावे—जो कि इस भूमिका का लिखने वालाभी बड़ौदे की कमीशन के अवलोकन करने के लिये कमीशन की सभामें उपस्थित रहा इसलिये इच्छा हुई कि इस मुक़द्दमे के अनुरागियों को इस कारर्वाई से जो यादगार तारीख़ है सूचित करे—यद्यपि अख़बारों में तर्जुमे हुये परन्तु जांचने के समय उन तर्जुमों में कुछ अन्तर पाया गया—इसलिये एक अति अंगरेज़ी विद्या

भूमिका

ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की अमलदारी जबसे हिन्दुस्तान में हुई तबसे ऐसा मुकद्दमा कमीशन गत वर्षमें जो बड़ौदे के राजाके मुक़द्दमे के तहक़ीक़ात करने के लिये नियत हुवा था कभी नियत नहींहुवा—यह वह मुक़द्दमा है जो सम्पूर्ण हिन्दुस्तान और यूरुप में समाचार पत्रों के द्वारा विख्यात होचुका है—इस मुक़द्दमे की बिना और असल यह थी कि करनैल फ्रियर साहब बड़ौदा के ब्रिटिश रेज़ीडण्ट को ज़रबत में विष दियागया या नहीं और इस अपराधका शुभा मल्हरराव गायकवार बड़ौदा पर हुवा—कि उनकी साजिश या तरग़ीबसे विष दियागया तथाच गवर्नमेण्टहिन्दने इसमुक़द्दमेकीतहक़ीक़ात के लियेएक कमीशन नियत की जिसमें तीनसाहब यूरोपियन अर्थात् सररिचर्डकौच साहब चीफजस्टिस बंगाल प्रेज़ीडण्ट, और सररिचर्डमीड साहब चीफ़कमिश्नर सुल्कमैसोर, और मिस्टर मैलवल साहब कमिश्नर अम्रतसर, और तीन साहब हिन्दुस्तानी अर्थात् दो बड़े महाराजा हिन्दुस्तान अर्थात् श्रीयुत महाराजा साहबबहादुर जयपुर और श्रीमान्महाराणा साहबबहादुर सेंधिया अधिपति ग्वालियारऔरराजासरदिनकरराव रियासत ग्वालियार के पहिले वज़ीर मेम्बर नियतहुये—तहक़ीक़ातके उपरान्त हिन्दुस्तानी जजसाहबों ने बड़ौदेके अधिपति मल्हररावको साजिश या तरग़ीब विष देने के अपराध से बरी किया—परन्तु जजसाहबानयूरोपियनने बड़ौदाके महाराजापर साजिश या तरग़ीब विषखिलाने

का अपराध सूचित किया—परन्तु इनका यह साबित करना तीन गवाहों के बयान पर था जिनमें से दो मनुष्य ऐसे थे जो बड़ौदे की रेजीडेण्टी के छोटे नौकर थे—यद्यपि गवर्न्मेण्ट हिन्द ने यूरोपियन साहबों के रायों के साथ सम्मत किया—लेकिन मार्क्वीस आफ़ सालसबरी साहब सेक्रेटरी आफ़ स्टेट आफ़ इण्डिया ने प्रतिकूल मतों के होने से यह समझा कि मल्हरराव गायकवार पर साजिश और बहकाके जहर देने का अपराधसाबित नहीं हुवा—परन्तु उन्होंने मल्हरराव बड़ौदे के अधिपतिको श्रीमहाराणी विक्टोरिया की आज्ञानुसार इस सबबसे बड़ौदे कीगद्दी से उतारा कि उनका चाल चलन अच्छा न था और उनके देश का प्रबन्ध बहुत खराब और बड़ौदे की प्रजा उनसे बहुतही अप्रसन्न थी ॥

गत वर्ष में अनेक अखबारों में इस मुक़द्दमे पर वादानुवाद हुवा कई अखबार लिखने वालों ने गवर्न्मेण्ट की इस कारर्वाई पर बड़े २ एतराज किये और कलंक लगाये—और कितनों ने गवर्न्मेण्ट इङ्गलिशिया की इस कारर्वाई की सहायता की—जोकिअब यह मुक़द्दमा पूर्ण होगया इसलिये अबइस विषयमें लिखना कि वह कारर्वाई कैसीथी व्यर्थहै लेकिन जोकि अखबारों में इस मुक़द्दमे की अलग २ कारर्वाइयां छपी हैं और बहुधा अखबार के अवलोकन करने वालों और देश के रईसों की यह इच्छा पाईगई कि तर्जुमा सब कारर्वाई कमीशन का आदि से अन्त पर्य्यन्त अखीरी हुक्म तक क्रम पूर्वक छापा जावे—जो कि इस भूमिका का लिखने वालाभी बड़ौदे की कमीशन के अवलोकन करने के लिये कमीशन की सभामें उपस्थित रहा इसलिये इच्छा हुई कि इस मुक़द्दमे के अनुरागियों को इस कारर्वाई से जो यादगार तारीख़ है सूचित करे—यद्यपि अखबारों में तर्जुमे हुये परन्तु जांचने के समय उन तर्जुमों में कुछ अन्तर पाया गया—इसलिये एक अति अंगरेज़ी विद्या

निपुण की दो तीन बेरकी शुद्धता पूर्व्वक यह तर्ज्जुमा उर्दू और नागरी में प्रकाश किया जाता है—और यह विचार कर कि हमारे हिन्दुस्तान के दिशाओं और देशों में हिन्दी देवनागरीके पढ़नेवाले बहुतसेहैं और बहुतसे मुक़ामों और शहरोंसे ऐसी इच्छा मालूमहुई इसवास्ते आशा है कि नागरी के तर्ज्जुमे को अधिक तर पसन्द करेंगे—इस पुस्तक के देखने वालों को उचित है कि अन्त की वार्त्ता अर्थात् खण्डन मण्डन मिस्टर बेलनटायन साहब, सरजण्ट इटला बड़े वकील महाराजासाहब बड़ौदा और मिस्टर इस्कोविल साहब ऐडवकेट जनरल की तक़रीर को अवलोनकरें उससे सम्पूर्ण मुक़द्दमे का सारांशउनको मालूम होजावेगा और हिंदुस्तानी और यूरोपियन साहबों के विचार और गवर्न्मेण्ट इण्डिया का रेजोल्यूशन भी देखने के योग्य है और जो तजवीज अन्तमें साहब सेक्रेटरी आफ़स्टेट हिन्द ने अपनी चिट्ठी में की है वह भी पढ़ने और ध्यान देने के योग्य है ॥

प्रयोजन यहहै कियह मुल्की मुक़द्दमा अति कठिन और नाज़ुक मुक़द्दमा था जिसमें एक बड़े और स्वाधीन रईस के मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात उसी की सल्तनत में एक कमीशन के द्वारा हुई इस बड़े मुक़द्दमे के देखनेसे यह भी विदितहोगा कि क्योंकर यूरोपियन साहबान और हिंदुस्तानी, मुक़द्दमे के मुख्य वृत्तान्त के खुलनेके लिये ध्यान दे रहेथे सच तो यह है कि यह एक छोटासा मुक़द्दमा न था किन्तु बहुत ही पेचदार और नाज़ुकमुक़द्दमा था, अन्त में मैं यह पश्चात्ताप करता हूं कि अंगरेजी और नागरी के मुताबिक करने के कारण से विलम्ब होगया पर आशा है कि मुक़द्दमेके अनुरागी मेरे इस परिश्रम को समझकर ग्रहण करेंगे ॥

इति ॥

कमीशन बड़ौदा

श्रीमान् मल्हरराव गायकवार के अपराध के विषयमें कि उन्होंने करनैल फ्रियर साहब को जहर दिया या नहीं २३ फरवरी सन् १८७५ ई० ॥

———o———

स्थान बड़ौदा ।

पहले दिन की कारवाई ॥

आज के दिन कारवाई कमीशन इस बात के निश्चय करने को शुरू हुई कि मल्हराव गायकवार ने करनैल फ्रियर साहब को विष दिया या नहीं सररिचर्ड कौच साहब प्रेजीडेण्ट और श्रीमान् महाराजा सेंधिया और श्रीयुत महाराजा जयपुर और जनरल सररिचर्ड मीडसाहब और सर दिनकरराव और मिस्टर मैलवल साहब इस कमीशन के मेम्बर इस मुक़द्दमें की तहक़ीकात के लिये नियत हुये ॥

२२—नम्बर हिन्दुस्तानी फौज के सौ सिपाही दरवाजे के ऊपर खड़े हुये थे और कमीशन के प्रारम्भ होने के थोड़े काल के पहिले यह सिपाही आगये थे और चार गाड़ियों में कमीशन के मेम्बर आये पहिली गाड़ी में महाराजा सेंधिया आये थे उनके साथ इनका बाड़ी गार्ड था दस मिनट के उपरान्त सरल्यूइसपीली और मल्हरराव भी आये और उनके साथ भी इनका बाड़ीगार्ड था सरल्यूइसपीलीसाहब ने गायकवार को

निपुण की दो तीन बेरकी शुद्धता पूर्व्वक यह तर्ज्जुमा उर्दू और नागरी में प्रकाश किया जाता है—और यह विचार कर कि हमारे हिन्दुस्तान के दिशाओं और देशों में हिन्दी देवनागरीके पढ़नेवाले बहुतसेहैं और बहुतसे मुक़ामों और शहरोंसे ऐसी इच्छा मालूमहुई इसवास्ते आशा है कि नागरी के तर्ज्जुमे को अधिक तर पसन्द करेंगे—इस पुस्तक के देखने वालों को उचित है कि अन्त की वार्त्ता अर्थात् खण्डन मण्डन मिस्टर बेलनटायन साहब, सरजण्ट इटला बड़े वकील महाराजासाहब बड़ौदा और मिस्टर इस्कोविल साहब ऐडवकेट जनरल की तक़रीर को अवलोनकरें उससे सम्पूर्ण मुक़द्दमे का सारांशउनको मालूम होजावेगा और हिंदुस्तानी और यूरोपियन साहबों के विचार और गवर्न्मेण्ट इण्डियाका रेजोल्यूशन भी देखने के योग्य है और जो तजवीज अन्तमें साहब सेक्रेटरी आफ़स्टेट हिन्द ने अपनी चिट्ठी में की है वह भी पढ़ने और ध्यान देने के योग्य है ॥

प्रयोजन यहहै कियह मुल्की मुक़द्दमा अति कठिन और नाज़ुक मुक़द्दमा था जिसमें एक बड़े और स्वाधीन रईस के मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात उसी की सल्तनत में एक कमीशन के द्वारा हुई इस बड़े मुक़द्दमे के देखनेसे यह भी विदितहोगा कि क्योंकर यूरोपियन साहबान और हिंदुस्तानी, मुक़द्दमे के मुख्य वृत्तान्त के खुलनेके लिये ध्यान दे रहेथे सच तो यह है कि यह एक छोटासा मुक़द्दमा न था किन्तु बहुत ही पेचदार और नाज़ुकमुक़द्दमा था, अन्त में मैं यह पश्चात्ताप करता हूं कि अंगरेजी और नागरी के मुताबिक करने के कारण से विलम्ब होगया पर आशा है कि मुक़द्दमेके अनुरागी मेरे इस परिश्रम को समझकर ग्रहण करेंगे ॥

इति ॥

कमीशन बड़ौदा

श्रीमान् मल्हरराव गायकवार के अपराध के विषयमें कि उन्होंने करनैल फियर साहब को ज़हर दिया या नहीं २३ फरवरी सन् १८७५ ई० ॥

———o———

स्थान बड़ौदा ।

पहले दिन की कारवाई ॥

आज के दिन कारवाई कमीशन इस बात के निश्चय करने को शुरू हुई कि मल्हराव गायकवार ने करनैल फियर साहब को विष दिया या नहीं सररिचर्ड कौच साहब प्रेजीडेण्ट और श्रीमान् महाराजा सेंधिया और श्रीयुत महाराजा जयपुर और जनरल सररिचर्ड मीडसाहब और सर दिनकरराव और मिस्टर मैलवल साहब इस कमीशन के मेम्बर इस मुक़द्दमें की तहक़ीकात के लिये नियत हुये ॥

२२—नम्बर हिन्दुस्तानी फौज के सौ सिपाही दरवाजे के ऊपर खड़े हुये थे और कमीशन के प्रारम्भ होने के थोड़े काल के पहिले यह सिपाही आगये थे और चार गाड़ियों में कमीशन के मेम्बर आये पहिली गाड़ी में महाराजा सेंधिया आये थे उनके साथ इनका बाड़ी गार्ड था दस मिनट के उपरान्त सरल्यूइसपीली और मल्हरराव भी आये और उनके साथ भी इनका बाड़ीगार्ड था सरल्यूइसपीलीसाहब ने गायकवार को

उनके नियमित स्थान पर अपने साथ लेजाकर बैठाया यह जगह पहिले कमीशनके लोगों की बाईं ओर नियतथी उसदिन मल्हरराव अति उत्तम वस्त्र पहिने हुये थे सुर्ख मरहटी पगड़ी शिरपर बंधी हुईथी और सम्पूर्ण वस्त्रोंके ऊपर एक मखमल का चुग़ह पहिने हुये थे गले में मोती और लाल और जमुर्रद का हार पहिने हुये थे उनकी उंगुलियों में कोई अंगूठी नथी परन्तु कानों में बाले जिसमें मोती पड़े हुये थे पहिनेथे मिस्टर इस्कोबल साहब वकील खास सरकार और मिस्टर अनवरा-रटी साहब मिस्टर हैरन साहब को हिदायत से और मिस्टर क्लीवलेण्ड और मिस्टर लेवारनग साहब श्रीमान्गवर्नरजनरल वैसराय की ओर से मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात के लिये इज-लास में आये और सरजण्ट बेलनटाइन साहब और मिस्टर ब्रैन्सन और मिस्टर परसल और मिस्टर शान्ता रामनारायण बहिदायत मिस्टर जेफरसिन और पीनसाहबके वास्ते जवाब देही गायकवार की ओर से इजलास में आये और मिस्टर वासदेव जगनाथ वकील हाई कोर्ट मल्हरराव की ओर से सम्पूर्ण कारवाई मुक़द्दमे की देखरहे थे॥

ग्यारह बजे पर बीस मिनट आने के उपरान्त साहबान कमीशन की इजाज़त से एक अहल्कार ने उस प्रोक्लेमेशन के तर्जुमे को जोकि जबान मरहटी हिन्दुस्तानी में मिस्टर फिलन साहब सुतरज्जिम ने तर्जुमा कियाथा पढ़ा॥

सरकार के मुख्य वकील ने साहबान कमीशन के रूबरू अरज किया कि खुलासा लिखने वाले इस कारवाई के पहिले से मुक़र्रर होगये हैं और जो कुछ साहबान कमी-शन को इस विषय में जरूरत होगी तुरन्तही उसको ता-मील कीजावेगी सरजन्टबेलनटाइन साहब ने कहा कि एक बात अरज करनी मुझको भीहै हमको जरूरत गवाहों की होगी उनका बुलाना आपको जरूर होगा और श्रीमान् मल्हराव के वास्ते उनकी गवाही निहायत जरूर है यद्यपि

उनके बुलाने का उपाय हमने अपनी तौर पर किया है परन्तु अगर वह न आवें तो आप हमको सहायता देंगे॥

प्रेज़ीडेन्ट साहब ने इसबात को सुनकर उत्तर दिया कि हम सब बातों के मदद देने पर राज़ी हैं सरजन्टवेलनटाइन साहबने इस विषय में झुककर अदाकिया और कहा कि खुलासा लिखने वाले दोनों ओर से सुकर्रर हुये हैं फिर भी अशुद्ध होने का संदेह हो तो वह लिखने वाले परस्पर अपने २ इज़हारात मिलालेंगे॥

गायकवार के विष देने के मुक़द्दमे में सरकार के वकील की स्पीच।

मिस्टर आर, इस्कोबल साहब अपने स्थान से खड़े हुये और एक स्पीच मल्हरराव गायकवार पर जुर्म्म ठहरा देनेमें सरकार की ओर से पढ़ी॥

मेरे लार्ड प्रेज़ीडेण्ट और आप महाराजान और साहिबान कमीशन मेरी तक़रीर पर ग़ौर फ़रमावें अब मैं सरकार की ओर से संक्षेप रीति से उन अपराधों का बयान करता हूं जो कि मल्हरराव के ऊपर ठहराये गये हैं और जिन अपराधों की तहक़ीक़ात के वास्ते यह कमीशन नियत हुई है हमने बहुतसे लोगोंसे गवाहियांलीं उनसे मालूम हुवा कि मल्हरराव के ऊपर एक बड़ा जुर्म्म नियत होता है और उनके ऊपर चार अपराध ठहरायेगये परन्तु उन चारों को हम नीचे इस भांति पर संक्षेप करलिखतेहैं पहिले तो यहहै कि श्रीमान् मल्हरराव ने अपने नौकरों के द्वारा करनैलफियर साहब और रेजीडेन्सी के नौकरों को बहकाया और दूसरे यह कि उन्होंने स्वतः अपने नौकरों के द्वारा करनैल फियरसाहब केनौकरों से और रजीडेन्सी के नौकरों से उनके स्वामी को विष दिलवाया मैं सम्पूर्ण गवाहियां कि जिनसे कि मुक़द्दमा साबित होता है इस जगह फ़ज़ूल समझता हूं क्योंकि धीरे धीरे आपके रूबरू सब गवाहियां तसदीक़ हो जायेंगी॥

परन्तु मैं इस मुक़द्दमे का वृत्तान्त संक्षेप मे आपके जेहन नशीन करता हूं क्योंकि यह कमीशन जोडीशल नहीं है किन्तु केवल मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात करके श्रीमान् नव्वाब गवर्नर जनरल बीरेश के इजलास में अपनी रिपोर्ट पेश करेगी और खास अपने तौर पर एक राय नहीं दे सक्ती है पसमें सम्पूर्ण वृत्तान्त इस मुक़द्दमे का संक्षेप में आपके रूबरू पेशकरताहूं अभी आपके सामने इश्तिहार पढ़ा गया मैं उसके मुताबिक अपनी तकरीर इस मुक़द्दमेके विषय में करूंगा मैं रेजीडन्सी के नौकरों के बहकाने की तारीख उस वक्तसे खयाल करता हूं जबकि पहिली कमीशन बड़ौदे में नियत हुईथी तो मालूम हुवा कि पहिली कमीशन तारीख २८ अक्टूबर सन् १८७३ई० को शुरूअ हुईथी और बराबर दो महीने तक अर्थात् नवम्बर डिसम्बर मुकद्दमेकी तहक़ीक़ात होती रही इन महीनों में जासूस सालिम और यशवन्तराव के द्वारा श्रीमान् मल्हरराव ने रेजीडेन्टके नौकरोंसे विष दिये जाने की साजिश की यहां तक कि सिरफ रेजीडेन्ट के नौकरही नहींथे किन्तु खास निजके नौकर रजीडेन्ट साहब के भी अपने स्वामी के विष दिये जाने के लिये तय्यार किये गये थे उस समय साहब रजीडेन्ट यहां के करनैल फियर साहब थे और जिस समय का मैं जिकर करता हूं उनकी मेम साहब भी विलायत नहीं गईं थीं किन्तु मुकाम बड़ौदे में थीं पहिले श्रीमान् मल्हरराव ने करनैलफियर साहब के विष देने की आया से वार्त्ता शुरूअकी यह आया फियर साहब की मेम साहिब के जाने के उपरान्त फियर साहब की लड़की अर्थात् ब्यूबीसाहब की मेमसाहिबाके पास नौकर थी इस आया का नाम अमीना है और यह बहुत मुद्दत से करनैलफियर साहबके पास नौकर थी और फियरसाहिब की मेम साहिब के मिजाज में इसको इतना दखलथा कि सब बातें मेम साहिबा इससे कह दिया करती थीं यह

श्रीमान् मल्हरराव के पास तीन बेर गई थी—पहिली बेर वह उस समय गई थी जब कि पहिले कमीशन शुरू हुई थी अर्थात् सन् १८७३ ई० के अन्तमें दूसरी बार—पहिली कमीशन के पूर्ण होने पर गई थी जब कि श्रीमान् मल्हरराव नौसारी से आये थे अर्थात् मई सन् १८७४ ई० में और तीसरी बेर—फियर साहब के विष दिये जाने के कुछ दिन पहिले गई थी इन तीनों मरतबे खास महाराज और आया से बातें होती रहीं यह एक जासूस के साथ कि उन दो जासूसों का जिनका मैं वर्णन पहिले कर चुका हूं गई थी इससे जो वार्त्ता हुई वह आपको इसके इजहार लेने के समय मालूम होगी पहिली बेर इसके साथ फैज़ भी गया था और यह गाड़ी में सवार होकर श्रीमान् मल्हरराव के महलमें गई और सालिम इसको महाराज के रूबरू लेगया महाराजने इससे यह वार्त्ताकी कि तुम अपनी मेम साहिबा से हमारी सिफारिश करो ताकि वह साहिब से कह देवें कि वह हमारे हाल पर मेहरबानी करें—दूसरी बार उसके साथ करीम गया था और महाराजसे बड़ी देर तक वार्त्ता होती रही—तीसरे दफे वह रमज़ान के महीने में गई थी और सालिम अपने साथ उसको लिवा ले गया था और दाऊद की गाड़ी में बैठ कर गयेथे साहिबान कमीशन को मालूम होगा कि इन तीनों दफे में सिवाय आया और महाराज के और उन दो जासूसों के कोई और न था पहिली बेर में आया को कुछ श्री मल्हरराव ने नहीं दिया परन्तु सालिम ने दोसौ रुपये करीम और अमीना को दिये दूसरी मरतबा पचास रुपये महाराज ने आया को दिये और उसकी तहक़ीक़ातके वास्ते अगर आपकी मरज़ी होगी तो दफा १६७ कानून शहादत के अनुसार आया के पति को बुलाऊंगा उस मनुष्य का नाम अब्दुल्ला है और उस शख्सके इक़रार से पचास रुपये का दिया जाना साबित हो

जावेगा किन्तु कुछ इसके प्रति अब्दुल्लाकी गवाही की जरू-रत नहीं है क्योंकि आया के घरमें कई कागज ऐसे पाये गये कि जिनसे पचास रुपये का दिया जाना साबित है यह कागज चार खत हैं दोतो आया ने अपने पतिको लिखे हैं और दो उसके पतिने आया को लिखे हैं इन खतों में सम्पूर्ण कार रवाई जो महाराज और आया में हुई लिखी है साहिबान कमीशन को उन खतों के देखने से फिर तहक़ी-क़ात करने की आवश्यकता न होगी॥

इस बातको सुनकर सरजन्ट बेलनटाइन साहब ने बड़त धीरे से कहा कि जो कुछ कि साहबान कमीशन स्वीकार करें वह सब ठीक और सच है परन्तु उन खतों को अभीसे गवाही में लाना खिलाफ मालूम होता है आया के हाजिर करने के समय जो यह खत पेश किये जावें और साहबान कमीशन उनका पेश किया जाना उचित समझे तो उस दशा में कुछ हानि नहीं है॥

मिस्टर इसकोवल साहब ने उत्तर दिया कि वह खत गवाही के लायक़ है परन्तु जब तक कि कमीशन के मेम्बर उन चिट्ठियों को न मांगेंगे हम उनको पेश न करेंगे॥

जब कि आया से इज़हार लिये गये तो आया बड़त बीमार थी और इस बातसेसाहबान कमीशन को साबित हुवा होगा कि उसके मनमें अपने अपराध का बड़ा खयालथा अब मैं दो और नौकरोंका बयान करता हूं यह खासनिज के नौकर साहब रेजीडेन्टके हैं और उन्होंनेभी बसबबसाजिश के बड़तसा रुपया श्रीमान्मल्हरराव से पाया था उनमें से एक पेडरू है यह शख़्स करनैल फियर साहब का खानसामां था उसको पचास रुपये महाराज ने दिये थे और यह आया के साथ गया था परन्तु अब यह वहांके जाने से इन्कार करता है॥

अब मैं वह हाल आपके रूबरू बयान करता हूं कि जिस तरह करनैल फियर साहब को विष दिया गया परन्तु

यह ईश्वरही का अनुग्रह था कि उनके प्राण बचगये नहीं तो कोई बात हिलाकत की बाक़ी न रही थी—९ नवम्बर सन् १८७४ ई० को बिष देने का हाल मालुम हुवा और उस दिन से दो रोज पहिले भी बिष दिया गया था परन्तु उद्योग सिद्ध नहीं हुआ रावजी जो रेजीडेन्सी का हवालादार था उसने जहर दिया था रावजी सालिम के साथ श्रीयुत मल्हरराव के महल में गया और उसके द्वारा सम्पर्ण काररवाई पहिले कमीशन की गायकवार को मालूमहोती रहती थी इसको पांच सौ रुपये महाराज ने दिये थे जब कि महाराज नौसारी से बिवाह करके आये तो इसी हवालदार को आठ सौ रुपये और दिये थे जब कि सालम के घर की तलाशी हुई तो उसके घरमें से एक गड्डी कागज़ों की निकली उन चिट्ठियों से बिष का दिया जाना और भी साबित है और मैं जरूरत पर उनको पेश करूंगा एक बात और भी सबूत की है कि रावजी हवालदार की तनख़ाह तो कम है और जो कि इसने इस समय में खर्च किया था वह बहुत जियादह था तो इससे बखूबी हम को जाहिर हुवा कि जरूर इसको रुपया गायकवार से मिला है॥

मैं रावजी के सबूत में कई खत ऐसे पेश करूंगा जो कि रावजी ने अपनी स्त्री को लिखे थे और जिस में इस रिश्वत का हाल लिखा है॥

मैं अब उस कैफियत को बयान करना चाहता हूं कि जिस तरह पर जहर के देने का हाल मालुम हुवा यह तो हम पहिले बयान कर चुके कि हवालदार रावजी ने जहर दिया था परन्तु अब उसकी कैफियत सुनिये कि करनैल फ्रियर साहब हर सुबह के वक्त हवाखाने के वास्ते जाया करते थे और वहां से लौट करके एक खास कमरे में जहां नहाने और मुंह हाथ धोने का सामान रक्खा रहता था वहां आते थे अब्दुल्ला खिदमतगार उनके आने

से पहिले चकोतरे का शर्व्वत तय्यार कर रक्खा करता था और फियर साहब उसको हर रोज पीलिया करतेथे ८नवम्बर के रोज अब्दुल्ला ने बदस्तूर शर्व्वत बना कर रक्खा हवालदार रावजी वहां गया और करनैल फियर साहब के शर्व्वत में एक जहर की पुड़िया मिला दी इस जहर में संखिया और हीरे का चूरा मिला हुआ था करनैल फियर साहब जब हवा खोरीसे आयेतो उन्होंने दो तीन घूंट शर्व्वत के पिये मगर चूंकि इस शर्व्वत में विष मिला हुआ था इस सबब से बेस्वाद मालूम हुवा फियर साहब ने यह बात खयाल करके कि चकोतरह जिसका यह शर्व्वत बनाया गया है खराब होगा शर्व्वत को फेंक दिया परन्तु उनके सिर में दर्द होता रहा और जी मतलाया किया उन्होंने उस बरतन में जो देखा तो उनको मालूम हुवा कि सियाह रंग की गाद उस बरतन में जमीहै इस बात को देखकर एकचिट्ठी डाक्टरसीवर्ड साहब को लिखी और अपनी नादुरुस्ती तबीयत का हाल सब उसमें लिखा डाक्टर सीवर्ड साहिब फौरन् चिट्ठी के देखतेही करनैल फियर साहब के पास आये और देखा कि संखिया और कोई चमकती हुई वस्तु बरतन के नीचे जमी हैं परन्तु अपने तजुर्बे पर उनको निश्चय न हुवा और उन्होंने कुल कैफियत लिख कर डाक्टर ग्रीसाहब को बम्बई में भेजी और एक पुड़िया उस वस्तु की भी जो उस बरतन में जमगई थी भेजी पस डाक्टर ग्रीसाहब और डाक्टर सीवर्ड साहब की राय मुतफिक हुई जब कि दो डाक्टर लोगों का एक मत है तो इसमें सन्देह नहीं कि करनैल फियर साहब को जरूर संखिया दी गई होगी सिवाय इस बात के एक और भी सबूत है कि सालम और यशवन्त राव सुबह के वक्त रेजीडन्सी में गये इससे साफ मालुम होता है कि विष दिये जाने के हाल मालूम करने के वास्ते गये थे और उससे साफ मालूम होता है कि इनके

रञ्जोडन्ही से कोई मुख्य कार्य्य न था और यह जरूर विष का हाल मालूम करने के वास्ते गये होंगे जब उन दोनों से इजहार लिया गया और पूछा गया कि तुम किस वास्ते रञ्जोडन्ही में गयेथे तो उन्हों ने उत्तर दिया कि हम महाराज की ओरसे डाली लेकर गयेथे यद्यपि इसमें संदेह नहीं है कि फियर साहब के पास उस दिन डाली पहुंची परन्तु यह दोनों छः बजे से पहिले गये थे और डाली आठ बजेके उपरान्त पहुंची एक बात और भी लिखने के योग्य है कि जब डाक्टर सीवर्ड साहब के नाम चिट्ठी फियर साहब ने लिखी थी तो उस बात की इत्तिला करने के वास्ते सालिम रावजी हवालदार के घर पर गया था॥

मैंने पहिले यह वर्णन कियाहै कि विषमें संखिया अवश्य थी क्योंकि संखिया को जहर सब जानते हैं और हीरे के चूर्णके लिये मैं इतना कह सक्ता हूं कि हिन्दुस्तान में यह बात प्रसिद्ध है कि हीरे का चूर्ण जहर होता है और आप को डाक्टर शेवर्ज साहब की किताब का हवाला देता हूं कि वह लिखते हैं कि हिन्दुस्तानी मनुष्य हीरे के चूर्ण को जहर जानते हैं गवाही दामोदर पन्थ की लायक़ ख़याल करने के है यह महाराज गायकवार का प्राइवेट सेक्रेटरी था उसके पास तहवील में खानगी हिसाब गायकवार के थे पहले दामोदरपंथ ने मल्हरराव की आज्ञासे दो तोले संखिया फौजदारी के दफ़्तर से मंगाया और वहां यह लिखा कि घोड़े की बीमारी के वास्ते इतनी संखिया की जरूरत है परन्तु वहां से संखिया न मिली और एक बौरा के यहां से संखिया हाथ लगी दामोदर पंथ अपने इजहार में इकरार करता है कि मैंने हीरेका चूरह हेमचन्द फतहचन्द की दूकान से पाया था उसको महाराज ने यशवन्तराव को दे दिया मालूम होता है कि विष की पुड़िया में संखिया और हीरे का चूरा जरूर मिला था पहिले महाराज ने वह पुड़िया सालिम

को दीथी और सालिम ने रावजी को दी रावजीने छठी और सातवीं नवम्बर को यह पुड़िया करनैलफियर साहब के शरबत में मिलाई थी परन्तु करनैल फियर साहब को कुछ असर न हुआ महाराज ने इस बात को मालूम करके ९ तारीख़ को एक और पुड़िया दी और उसी पुड़िया की फंकी का चूरह बरतन की पेंदीमें जमरहा था रावजी का परतला जो देखा गया तो और कई पुड़ियां संखिया की मिलीं जो कुछ मैं कह रहा हूं उसकी सचाई दामोदरपंथ और रावजी के इजहार पर मौकूफ है गवाहों के इजहार अलग २ लिये गये हैं जिस पर भी यह सब का एक बयान है इससे मालूम हुवा कि यह सब बातें सच्ची हैं दामोदरपंथ और रावजी ने अपने अपराध क्षमापन के इकरार लेने के उपरान्त अपना इजहार दिया नरसू का इजहार बगैर कसूर मुआफ करने के लियागया है उसके बयान से बिलकुल सचाई मालूम होती है यह रजीडन्सी में बहुत दिनों से नौकर था जोकि इससे ऐसा खराब काम हुवा तो इसने कोशिश की थी कि कुएं में गिरके मरजाय परन्तु कमीशन के साहिबान् इस विषयमें भी ग़ौर फरमायेंगे तो खूब मालूम होगा कि इस मनुष्यने जरूर विष देने को कोशिश की थी दामोदरपन्थ की गवाही गायकवार के कागजों से सबूत होती है क्योंकि उन कागजों में बहुत से खर्च ऐसे लिखे हुये हैं कि जो गायकवार ने रजीडन्सी के नौकरों को रुपया दिया था महाराज के खानगी हिसाब में उसने लिखा है कि तीन हजार रुपयेके हीरे मोल लिये गयेथे और एक जगह लिखा है कि अठारह सै रुपये का तेल गायकवार ने मंगवाया पस यह सब फरजी हिसाब मालूम होते हैं हेमचन्द्र जौहरी के इजहार भी आप के सामने लिये जावेंगे उनसे आपको मालूम होगा कि किस क़दर चोरी दामोदरपन्थके हिसाबमें है और कितने रुपये के हीरे दामो-

दरपन्थ ने हेमचन्द से गायकवार के वास्ते मोललिये थे॥

अब मैं वह हाल कहता हूंकि जिससे गायकवार के ऊपर खास सुक़ह्मा साबित होता है महाराज गायकवार हर सोमवार और ट्टहस्पतिवार को करनैल फियर साहब की मुलाकात को रजीडन्सी में जाया करतेथे नवींनम्बर को सोमवार था कि महाराज दस्तूरके माफिक करनैलफियर साहब की मुलाक़ात को गये यदि उसदिन करनैलफियर साहब की तबीयत जहर मिले हुये शर्व्वत पीने के कारण कुछ अलील थी परन्तु मुलाकात महाराजसे की और कहाकि आज मेरी तबीयत अच्छी नहीं है महाराज ने कहा कि तबीयत मेरी भी अच्छी नहीं है और आज सम्पूर्ण शहरमें यही बीमारी है यह सुनकर करनैलफियर साहब चुपहोरहे यदि दामोदर पन्थका बयान सच है तो यह बात गायकवार को मालूम होगई थी कि करनैलफियर साहब को विष दियागया क्यों कि उन्होंने लौटते वक्त रास्तेमें यह कहाथा कि करनैलफियर साहबको आज विष दियागया है साहिबान कमीशन को भी यह बात मालूम होगी कि ऐसी बातें छिप नहीं रहसक्ती हैं सम्पूर्ण शहर में उसीदिन इसबात की ख़बर उड़गई कि किसीशख्सने करनैलफियर साहब को जहरदिया है जब गायकवार ट्टहस्पतिवार को आये तो उनके साथ मिस्टर दादाभाई नूरूजी भी थे उन्होंने कहा कि हमने ऐसी ख़बर शहर में सुनी है कि आपको किसी मनुष्य ने विष दिया है थोड़ी देर के पश्चात् महाराज ने एक यादद्दाश्त करनैलफियर साहब को इस मजमून की लिखभेजी कि हमने सुनाहै कि आपको किसी बदमाशने विषदिया है यदि आप कहें तो हम उसकी तहक़ीक़ात करें अब यह बड़े आश्चर्य्य की बात है कि अगर गायकवार को कुछ बनावट नथी तो इतने दिन पीछे यह यादद्दाश्त क्यों भेजी उनको चाहिये था कि जिसरोज जहरदिया गया था या

जिसदिन उन्होंने सुना था उसीदिन याददाश्त भेजते ॥ अब मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त इस मुक़द्दमे का कमीशनके लोगोंकेसामने इस वास्ते बयान किया कि आप सबलोग इसपर गौरकरें ॥

जब आप सब साहिब गवाहों के इज़हारात सुन लेंगे और सरजेन्टबेलन टाइन साहब भी अपने सवालात करलेंगे तबमैं अपनी राय इस मुक़द्दमे में दूंगा और इस समय जिन कामों में ज़रूरत होगी बहस करली जावेगी मुझको और कुछ कहना बाक़ी नहीं रहा अब आप आनन्द से गवाहों को बुलवाइये इसके पहले कि वकील सरकार अपनी तकरीर कहकर बैठें उन्होंने यहभी कहाकि यहां थोड़े गवाह ऐसे हैं कि जो अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी को बिल्कुल नहीं जानते हैं इस कारण उनके इज़हारात लेने के वास्ते एक बन्दोबस्त करना ज़रूर है सरजन्ट बेलनटाइन साहब ने उत्तर दिया कि जिस ज़बान में जो मनुष्य इज़हार देगा उसका वैसा ही बन्दोबस्त किया जायगा इस बात को साहब प्रेज़ीडण्ट ने स्वीकार किया ॥

अमीना आया का इज़हार ॥

अमीन आया का इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहब ने लिया और फिलन साहब उसका तर्जुमा करते जाते थे ॥

आया ने कहा कि मेरा नाम अमीना है मुझ को वह समय याद है जब कि मुकाम बडौदे में पहिली कमीशन मुकर्रर हुई थी मैं उस समय करनैल फियर साहब की मेम साहिबह के पास नौकर थी और जब तक वह इंगलिस्तान को नहीं गईं थीं मैं उन्हींके पास रहती थी उनके इङ्गलिस्तान में जाने के उपरान्त मैं उनकी बेटी जो कि बेवी साहब की मेम साहबह हैं उनके पास नौकर रही मैं गायकवार को खूब जानती हूं और उनके महल में तीन मरतबे गई थी पहले मरतबे जब मैं फियर साहब की मेम साहिबह के पास नौकर थी और दो मरतबे जबमैं बेवी साहब की मेम

साहिबह के पास नौकर थी तब गईथी मैं उनके पास पुराने महल में गई थी मुझको यह बात याद नहीं है कि मैं किस समय उनके पास गई थी परन्तु यह जानती हूं कि रात थी पहिली मरतबा मेरे साथ फैजू गया था रजीडन्सी केहाते में जो कुआं है वहां तक मैं और वह पैदल गये और वहां से एक गाड़ी में सवार होकर बहुत दूर चल कर एक बड़े मकान के दरवाजे के पास हमारी गाड़ी ठहरी और सालिम हमारे पास आया सालिम और हम और फैजू तीनों महल के भीतर सीढ़ी पर चढ़के एक मकान खास में जहां महाराज बैठे थे गये॥

मिस्टर मैलवल साहब ने पूछा कि वह किस तरह का बनाहुआ मकान था और उसमें कैदरवाजे थे ?॥

उ०-मुझको याद नहीं है। प्र०-मिस्टर अनवरारटी साहब ने पूछा क्या वह मकान सीढ़ी से मिला हुआ था या तुमको जीने पर चढ़के कुछ दूर जाना पड़ा था परन्तु मिस्टर सरजन्ट बेलन टाइन साहब ने आया को उसके उत्तर देने से निषेध किया क्योंकि यह सवाल बेकार था। प्र०- मिस्टर अनवरारटी साहब ने फिर पूछा कि तुम जीने के ऊपर चढ़ के कहां गईं ? उ०- मैं एक कमरे में गई और सालिम महाराज को मेरे आने की इत्तिला करने गया थोड़ी देर के उपरान्त सालिम और महाराज दोनों वहां आये महाराज आकर एक चौकी पर बैठ गये मैं और फैजूफर्श पर बैठे और सालिम खड़ा रहा महाराज ने मुझ से पूछा कि कुछ मेम साहिबह हमारे विषय में तो कोई बातनहीं कहती थीं मैंने कहा मुझसे आपके विषय में कोई बात नहीं कही थी महाराज ने कहा कि अगर मेम साहिबा कुछ हमारी निस्बत में कहें तो तुम हमको सालिम और यशवन्त राव के द्वारा खबर देना मुझसे और महाराज से केवल इतनीही बातें पहिली बेर हुईं फैजू ने अपने लड़के के वास्ते

जो कि पहिले से महाराज का नौकर था तरक्की की सिफारिश की परन्तु मुझको याद नहीं कि उसका उत्तर महाराज ने क्या दिया फिर मैं घरको चली आई दूसरे दफे तब मैं महाराज के पास गई थी जब महाराज नौसारी से आये थे॥

इस्कोबल साहब ने कहा कि हमारी और सरजन्ट बेलन् टाइन साहब की राय है कि हम दूसरी अप्रैल से लेकर १६ मई सन् १८७४ ई० तक के हालात का जब महाराज नौसारी में थे इज़हार लें और सिवाय इसके और इज़हारात लेने में हमारा वक्त खराब होगा॥

अमीना बयान करती है कि जून के महीने में महाराज नौसारी से पलट आये तब मैं फिर महाराज के महल में गई क्योंकि सालिम और करीम ने मुझको वहां जाने के लिये बार २ कहा था और करीम भी मेरे साथ गया उस समय पानी बरस रहा था मार्ग में मुझको सालिम मिला और हम तीनों उसी मकान में जहां पहिले गये थे गये॥

सालिम ने बदस्तूर मेरे आने की महाराज को इत्तिला की महाराज आकर उसी चौकी पर बैठ गये जिस पर पहिले बैठे थे मैं और करीम महाराज के सामने फर्श पर बैठे महाराज ने मुझसे पूछा कि बेबी साहब की मेम साहिबह तो मेरे विषयमें कुछ नहीं कहतीं थीं मैंने और करीम ने उत्तर दिया कि हमसे कुछ नहीं कहतीं थीं मिस्टर बेबी साहब को कुछ अधिकार नहीं है और न उनकी मेम साहिब तुम्हारे लिये कुछ कह सक्ती हैं यह कह कर मैंने महाराज को सलाम किया और वहां से बिदा हुई थोड़ी देर के उपरान्त सालिम ने मुझसे आकर कहा कि यशवन्त राव के घर जाकर दो सौ रुपये ले आना मैं वह रुपये ले आई और उसमेंसे सौ रुपये मैंने लिये और सौरुपये करीम को दिये॥

टिफन खाने के वास्ते जलसह बरखास्त हुआ॥

टिफन खाने के उपरान्त फिर इजलास शुरूहुवा मल्हरराव गायकवार टिफन के उपरान्त इजलास में उपस्थित न थे॥

अमीना बदस्तूर अपना इजहार बयान करतीथी तीसरी मरतबे मैं रमजान के महीने में महाराज की हवेली में गई इस मरतबे मेरे साथ छुट्टू नामक एक लड़का था मैं बदस्तूर गाड़ीमें बैठ कर महाराज की हवेलीमें पहुंचो सालिम को मैंने महाराज की हवेली के दरवाजे पर पाया सालिम ने बदस्तूर जाकर महाराज को मेरे आने की इत्तिला की महाराज उसी मकान में जहां दो मर्त्तबे पहिले मुझसे मिले थे मिले जो कि मैंने सरकार अंगरेजी का नमक खाया है इस कारण सच सच बयान करती हूं मैं कुछभी न छिपाऊंगी उस मरतबे महाराजने मुझसे पहिले यह पूछा कि बेवी साहब की मेमसाहिबह तो मेरे विषय में कुछ नहींकहतीं थीं मैंने उत्तर दिया जब हमारी बड़ी मेमसाहिबा यहां आवेंगी तब हम आपकी सिफारिश करेंगी और बेवी साहबकी मेमसाहिबह आपके वास्ते कुछ नहीं कर सक्तीं है फिर सालम ने कहा कि साहब के ऊपर जादू असर कर सक्ता है या नहीं मैंने महाराज और सालिम दोनों से कहा जादू का नाम नलो साहब लोगों पर जादू असर न करेगा अगर तुम कुछ उन पर करोगे तो अच्छा नहोगा मुझको जादूका नाम सुन कर बड़ा भय हुवा और मैं महाराज से बिदा हो कर चलने लगी परन्तु सालम ने मुझको बैठा लिया और कहने लगा कि ऐसी जल्दी न करो हमारी बात सुनो तुम्हारी जन्म भर की रोटियां महाराज के यहां होजावेंगी और महाराज तुमको निहाल करदेंगे महाराजके दिलकी बातको पूरा करो और महाराज तुम्हारे पति कोभी नौकरी देंगे यह सुन कर मैंने उत्तर दिया कि अब तक मैं भूखी नहीं मरती थी मैंने अंगरेजी नौकरी की है मुझको कुछ महाराज की

नौकरी की चाह नहीं इतना कह मैं वहां से चली और चलने के वक्त कहा कि तुम किसी के कहे में आकर साहब पर कुछ मत करना अगर साहब पर कुछ नुकसान पहुंचेगा तो तुम्हारे हक में बुरा होगा यह सुन कर महाराज अप्रसन्न हुये और सालिम से कहा आया को यहां से लेजावो फिर सालिम ने थोड़ी देर के उपरान्त पचास रुपये मुझको दिये और जो कुछकि हाल गुजरा था मैने सब अपने पति को कि वह मुझ से बहुत दूरथा खतके द्वारा इत्तिलादी और उसको अपने पास बुलवा लिया और जो पत्र कि मैंने अपने पतिको लिखे थे वह सब अब्दुल रहमान से लिखवाये थे। प्र०-मिस्टरअनवरारटी साहब ने आया से पूछा कि तुमने सूटर साहब के सामने यह इजहार दिये थे या नहीं ? उ०-हां मैंने सब इजहार दिये परन्तु मैं बीमार थी डाक्टर सावर्ड साहब इसबात को खूब जानते हैं और उन्होंने मेरा इलाज किया था॥

सरजनृ बेलनटायन साहब के प्रश्न॥

प्र०-तुमने पचास रुपये क्या कियेथे ? उ०-मैंने रमजान के महीने में फकीरों को खाना खिलाया। प्र०-क्या उस वक्त तुम और तुम्हारे पति एकही मकान में रहते थे ? उ०-हां साहब एकही मकान में रहते थे। प्र०-क्या उस को तुम्हारे इस पचास रुपये का हाल मालूम होगया था ? उ०-हां साहब मैंने कहदिया था। प्र०-तुमने कुलकैफियत इन रुपयों की बयान करदी थी ? उ०-बहुत रोकर उत्तर दियाऔर एक मुट्ठा कागजों का निकाला कि यह मेरे सारटीफिकट हैं साहब मैं झूंठ नहीं बोलती हूं मैं पांच मरतबे इंगलिस्तान होआई हूं इस बात को सुन कर सम्पूर्ण इजलास हंसने लगा। प्र०-वह जो सौ रुपये पहिले तुमको महाराज से प्राप्त हुये थे उसका भी हाल तुमने अपने पति से बयान किया था ? उ०-हां मैंने कहा था करीम को और मुझको दो सौ रुपयों में से आधा २ मिला है और यह भी कहा

था कि यह रुपया महाराज ने अपने विवाह के इनाम में मुझको दिया है। प्र०–हमें मालुम हुवा कि तुमने अपने पति से यह नहीं कहा कि महाराज ने यह रुपया वास्ते जहर देने करनैलफियर साहब के बतौर साजिश के दिया है? उ०–विष देने का तो महाराज ने कुछ मुझसे चरचा नहीं किया था। प्र० तुमसे महाराज ने इशारे में कहाथा कि करनैलफियर साहब को जहर दो? उ०–मुझसे तो कोई बात ऐसी नहीं कही। प्र०–जब तुम तीसरी बार गई थी तो तुमसे कुछ इसके बारे में कहा तो था? उ०–यह बात तो मुझसे नहीं कही थी कि जहर दो परन्तु उनके कहने से कुछ सन्देह हुवा था। प्र०–तुमने अपने पति से साफ २ क्यों न कहा कि महाराज हमसे ऐसा कहते थे? उ०–मुझको एक बाजारी खबर मालुम हुई इस सबब से मैंने यह बात जाहिर न की। प्र०–अच्छा तुम यह बताओ कि महाराज के कहने से तुम क्या समझी थी? उ०–मैं कुछ जहर की निस्बत नहीं समझी थी। प्र०–अच्छा महाराज और सालिम की बार्त्ता से तुम को विष देने का खयाल हुवा था? उ०–हां मुझको कुछ संदेह हुवा था और मैं इसी वास्ते महा भयभीत हुई थी। प्र०–अच्छा जब तुम अतिभयभीत हुई थी तो फिर किस वास्ते अपने पतिसे उसकी इत्तिला नहीं की? उ०–मैंने केवल इतनाही अपने पति से कहा था कि साहब के दिल फेरनेके वास्ते महाराज कुछ देना चाहते हैं कुछ जहर देने के विषयमें मैंने बयान नहीं किया। प्र०–तुमको निश्चय था कि केवलमहाराज करनैलफियर साहब के दिलको फेरना चाहते थे या उनका मतलब जहर देने से भी था? उ०–मैं उनका मतलब जहर देने से समझी थी क्योंकि मैंने पेडरू और रावजी हवालदार को बातें करते सुना था प्र०–क्या तुमको पेडरू और रावजी के कहने से मालुम हुवा था कि महाराज विष दिया चाहतेहैं या तुमको सालिम और महाराज

के कहने से साबित हुवा था? उ०—नहीं मुझको केवल पेडरू और रावजी की बातों से मालूम हुवा था। प्र०—अगर यह दोनों तुमसे कुछ बात न कहते तो तुमको क्या सन्देह न होता? उ०—अगर यह दोनों न कहते तो मुझको विषकी निस्बत कुछ ख़याल न होता। प्र०—तुमको पेडरू और रावजी ने ज़हर के विषय में कब कहा था? उ०—वह महाराज के बड़े हितू हैं। प्र०—मैं यह पूछता हूं कि उन दोनों ने तुमसे कब कहा था? उ०—पेडरू और रावजी ने मुझसे कुछ नहीं कहा था वह दो शख़्स और हैं जिन्हों ने मुझसे कहा था। प्र०—तुमने अभी हमसे कहा था कि पेडरू और रावजी ने हमसे कहा था? उ०—मैंने सोच समझ के नहीं कहा। प्र०—क्या तुम इस समय बदहवास हो। उ०—मैं अच्छी हूं परन्तु मेरे हाथ पांव इस समय गिरे जाते हैं? प्र०—अच्छा अगर पेडरू और रावजी ने तुम से नहीं कहा फिर उन दोनों मनुष्यों का नाम बताओ। उ०—उन दोनों शख़्सों का नाम करीम और काज़ी है। प्र०—उन्हों ने तुमसे कब कहा था? उ०—जब मैं महाराज के यहां तीसरी मरतबे गई थी उससे एक महीना पहिले उन्हों ने मुझसे फ़क़त यह बयान किया था कि महाराज किसी साहब को विष देना चाहते हैं। प्र०—तुम केवल इस बातसे कि किसी साहबको ज़हर देना चाहते हैं फियर साहब का नाम क्योंकर समझ गईं? उ०—मैंने एक क़रीने से समझा कि महाराज को सिवाय करनैल साहब के और किसी से प्रयोजन नहीं है। प्र०—फिर तुमने साहब से क्यों न कहा कि महाराज आप को विष देना चाहते हैं? उ०—यह बात सिर्फ मैं विचार से समझी थी किस निश्चय पर साहबसे बयान करती प्र०—मुझको उत्तर दो कि तुमने साहब से कहा या नहीं? उ०—नहीं कहा। प्र०—क्या तुमको यह ख़याल न हुवा कि अपने स्वामी के प्राण को इतनी इत्तिला करदेने से चाहो वह

खयाली हो बचालें? उ०–मुझको यह खयाल नहीं था कि कोई नौकरों में से विष देगा नहीं तो मैंअवश्यही इत्तिला कर देती। प्र०–क्या तुमको कुछ भी इसका खयाल नहीं था कि फियर साहब के नौकर साहब को जहर देंगे? उ०–हां मैं सागन्द खाके कहती हूं कि मुझको इसका खयाल न था। प्र०–तुमने पेडरू और रावजी का जो नाम लिया था वह किस वास्ते लिया था? उ०–मैंने इस सबब से नाम लिया था कि वह महाराज के हितू और उनका भेद जानने वाले हैं परन्तु मुझको यह विश्वास नहीं था कि पेडरू और रावजी साहब को विष देंगे। प्र०–तुमको क्यों निश्चय न था? उ०–मैंने आज तक नहीं सुना था कि किसी नौकर ने अपने मालिक को सरकार की अमलदारी में जहर दिया हो। प्र०–फिर तुम को किस बात का भय हुवा? उ०–मुझको इस बात के सुनने से भय हुआ। प्र०–जब तुम इस बात को झूठ समझती थी तो फिर तुमको क्यों भय हुआ मैं इस वास्ते डरी थी कि कहीं महाराज मुझ को मरवा न डालें। प्र०–अगर तुमको अपने मारे जाने का खौफ था तो तुमने किस वास्ते फियर साहब से इत्तिला नहीं की? उ०–मैंने इसलिये इत्तिला नहीं की कि मुझको यकीन था कि कोई बंगले परसाहब को नहीं मार सकेगा। प्र०–तुमने अपने पति से विष देने के विषय में कुछ कहा था? उ०–हां मैंने कहा था कि महाराज कर-नैल फियर साहब को विष देना चाहते हैं। प्र०–तुमने यह कब कहाथा? उ०–मुझको नहींमालूम। प्र०–अच्छा खयाल करकेयाद करो कि कब कहाथा? उ०–मैंने अपने पतिसे विष देने के विषय में कभी नहीं कहा था। प्र०–अच्छा खयाल करो कि कभी तुमने कहा था या नहीं? उ०–मुझको बिल्कुल याद नहीं पड़ता कि मैंने विष के विषय में कुछ कहा था या नहीं। प्र०–अच्छा तुमको क्या याद पड़ता है? उ०–इतना मैंने अपने पति से बयान किया था कि मुझसे महा-

राज ने फकत इतना कहा है कि साहब को कोई ऐसी वस्तु देना चाहिये जिससे उनका दिल फिर जाय। प्र०–यह तुम ने कब कहा था? उ०–जिस रोज मैं तीसरी बेर महाराज के यहां गई थी उसके एक दिन पीछे मैंने कहा था॥

अब साढ़े चार बजे का समय होगया था सरजन्ट बेलन टायन साहब ने साहबान कमीशन से कहा कि इजलास का बरखास्त होना अवश्य है क्योंकि जो आपसे मैं और अधिक प्रश्न करूंगा तो संध्या होजावेगी पस प्रेजीडेन्ट साहब ने इजलास को बरखास्त किया॥

कचहरी के साहबान की बांक्षा का बयान॥

टाइम्स आफ इण्डिया के खास कारस्पाण्डेण्ट के लेख से प्रति हुआ कि इस मकान में जहां कमीशन का इजलास शुरू हुआ पहले साहब कण्टन मिस्ट मजिस्ट्रेट की कचहरी थी परन्तु कमीशन के लिये कुछ थोड़े कमरे नये बनाये गये हैं सम्पूर्ण कचहरी का लम्बाव चौड़ाव सत्तर फुट लम्बा और पच्चीस फुट चौड़ा और पूर्व की ओर एक ऊंचा चबूतरह बना है जहां कि कमीशन के बैठने की जगह नियत है साढ़े दश बजे सलामी की तोपें दगीं उससे मालूम हुआ कि अब मेम्बरान कमीशन वास्ते इजलास के आनेवाले हैं पहले श्रीमान् महाराजा सेंधिया वहां आये और थोड़ी देर के उपरान्त सरल्यूइस पीली साहब और मल्हरराव एकहीगाड़ी परसवार होके आये और जो खास जगह गायकवार के वास्ते पहिले से नियत हुई थी वहां जाकर बैठे सररिचर्ड कौच साहब की कुर्सी बीच में थी और उनके दाहिनी ओर श्री युत महाराजा सेंधिया और बायें तरफ श्री मान्महाराजा जयपुर बैठे हुये थे महाराजा सेंधिया अतिउत्तम वस्त्र पहिने हुये थे उनके आभूषण स्त्रियों के आभूषणोंसे भी सर्वोपरि थे श्रीयुत महाराजा जयपुर जो अपने देशके उत्तम प्रबन्ध करने केलिये विख्यातहैं उन्होंने वास्तवमेंउत्तमहीप्रबन्धकररक्खा है

उनकी सूरत से मालूम होताथा कि वह निहायत होशियार और जहीन और बुद्धिमान हैं आखोंपर सोनेकी ऐनक लगायेहुये उनकेमिजाज और सुन्दर बुद्धिसे मालूम होताथा कि उनका तशरीफ लाना इसमुकद्दमेकेलिये बहुत अच्छा होगा गवाह आज के दिन अमीना थी इसकी सूरत के देखने के पहले जब मैंने इसका प्यारा नाम सुना था तो मैंने समझा कि कोई परिस्तान की परी या स्वर्ग की अप्सरा होगी परंतु अफसोस अमीना यद्यपि तेरी आखें काली हैं परंतु उसकी सियाही ऐसी खराब है कि अंधियारी रात की सियाही को भी उसको नहीं पहुंचती है अमीना बुड्ढी है और मालूम होता है कि वह हुक्का पीती है क्योंकि इजहार के समयइसने यह बयान किया किमेरी समझ अच्छी नहीं है यह पांच मरतबा इंगलिस्तान को भी गई है और इसके पास बहुत से सारटीफिकट भी हैं॥

दूसरे दिन का इजलास॥

बड़ौदा २४ फरवरी सन्१८७५ ई०॥

आजके दिन नियमित समय पर मेम्बरान कमीशन मौजूद हुये पहले दिनसे आजबहुतमनुष्य थे और सूर्य्य की गरमीसे दिनभर बहुत गरमीरही ग्यारह बजेके समय सरल्यूइस पीली साहबके साथ मल्हरराव गायकवार आये महाराजा सेंधिया सफेद कपड़े पहिने हुयेथे और पीली पगड़ी मरहठी सिरपर बांधे हुये थे बाकी और मेम्बरान कमीशन कपड़े पहिले दिन के सदृश पहिने हुये थे सरजेन्ट बेलनटाइन साहब बदस्तूर आया से प्रश्न करते रहे खास इजहारात जो अमीना से लिये गये वह यह थे कि खान बहादुर अकबर अली या उनके लड़के अब्दुल अलीने अमीना को धमका कर उससे इजहारात लिये हैं आज आयाके इजहारातमें हास्य होता रहा जब सरजन्ट बेलनटायन साहब ने आया से पूछा कि तुमको गायकवार के पास जाने से क्यों इन्कारथा तो अमीना

ने इजलास के रूबरू अपने जुग़राफिये की विद्या को प्रगट किया उसने कहा कि मैं बड़ौदेको नहीं जानती हूं यह कह कर फूट२रोने लगी और कहने लगी कि मैंने कानपुर,नीमच जबलपुर,और ग्वालियर और इङ्गलिस्तानको देखा है और इन स्थानों में बहुत दिन रही हूं यहां तक कि अरबतक भी पहुंच गई थी कि सरजन्ट बेलनटाइन साहब उसको ठहरा कर फिर बड़ौदेमें लेआये अमीनाने कहा कि मैं सफरके मुआमले में सरजन्ट बेलन टायन साहब से कुछ कम नहीं हूं जब अकबर अली के विषय में उससे पूछा गया तो वह बोली कि मैं अकबरअली को जानती हूं फिर फौज गवाही की जगह पर आया उसकी डाढ़ी बहुत सुन्दर और काली थी और सब गवाहों में यही गवाह बहुत सुन्दर था उसने कहा कि एक मरतबा मैं आया के साथ गायकवार के यहां गया था परंतु मेरे सामने महाराज ने कोई जादू का जिक्र नहीं किया फिर एक ईमान्दार गाड़ीवाला गवाही के वास्ते आया उसनेसाफ२जिस तरह उसको गाड़ी किराये की गई थी और जिस तरह अमीना महाराज के यहां गई थी सब बयान किया अन्त को अपने छूटने के वास्ते सरकार से दरखास्त की सरजन्ट बेलन टाइन साहब ने गाड़ीवान से पूछा कि तुमको सरकार ने किस वास्ते क़ैद किया था उसने उत्तर दिया मुझे इसलिये क़ैद किया था कि मैं इस कैफ़ियत को किसी से बयान न करूं जो कि अब मेरे इजहारात सरकार के सामने लेलिये गये अब मुझको घरजाने का हुक्म हो एक बड़ी हंसी की बात इसके इजहार में हुई अर्थात् जब सरजेन्ट बेलनटायन साहब ने पूछा कि तुम्हारे घरमें कौन है और तुम्हारा विवाहहुवा या नहीं पहिले तो उसने उत्तर दिया कि मेरी शादी नहीं हुई है फिर थोड़ी देरके उपरांत याद करके कहा कि मेरा विवाह हो गया है—शेख करीम का इजहार इस तरह पर हुवा कि मैं आयाके साथ एक

मरतबे महाराज के यहां गया था परंतु मुझको स्मर्ण नहीं कि महाराज ने आया से क्या कहा॥

इन दो दिनों में चार गवाहों के इजहार पूरे लिये गये एक की गवाही तो निहायत इस मुक़द्दमे में फायदे मन्द रही और बाक़ी तीन गवाहों के इजहारात आपस में प्रतिकूल हैं और एक दूसरे का खण्डन करते हैं यह बात साहिबान कमीशन को खूब मालूम होगई कि आया ज़रूर महाराज के पास गई परन्तु यह हम नहीं कह सक्ते हैं कि अमीना आया को महाराज ने फियर साहब के विष देने की सलाह और मशवरह केवास्ते बुलवाया था या मेम साहिबा के अनुकूल करने के वास्ते आज के दिन गायकवार अति चिन्तित मालूम होते थे आया से वेलन टायन साहब ने फिर प्रश्न करने शुरू किये। प्र०—तुम को स्मर्ण है कि किसदिन फियर साहबको जहर दियागया था? उ०—मुझको याद नहीं। प्र०—तुमको उस दिनकी कैफियत मालूम है? उ०—मुझको नहीं मालूम। प्र०—जिस दिन उनको जहर दिया गया था तुमने उसी दिन खबर पाई थी या नहीं? उ०—नहीं मुझको कुछ दिन के पीछे मालूम हुवा था। प्र०—तुम उस समय कहां थीं जिससमय तुमको खबर मिली थी? उ०—मैं रेजोडन्सी में थी। प्र०—तो तुमको अवश्य स्मर्ण होना चाहिये? उ०—नहीं साहब मैं इस हाल को नहीं जानती हूं और मुझको उस दिन खबर नहीं मिली थी। प्र०—जब तुमको खबर मिली थी तो तुमने किसी औरसे भी कहा था? उ०— मैने किसी से बयान नहीं किया। प्र०—तुमको मालूम है कि तुम्हारे पति के इजहारात करनैल फियर साहब ने लिये थे? उ०—हां मुझको मालूम है। प्र०—तुमको यह याद है कि तुमने अपने पति से बयान किया था कि साहब को विष दिया गया है उ०— मुझको याद नहीं। प्र०—अच्छा कल जिस समय से

तुम्हारे इज़हारात लिये गये हैं तुमने अपने पति से मुलाक़ात की या नहीं ? उ०—मुझको इसकी बड़ी मनाही है। प्र०—किसने तुमको मना किया ? उ०—खान बहादुर ने प्र०—कल से कोई पुलिस वाला भी तुम्हारे पास आया है ? उ०—नहीं कोई नहीं मैं सच कहती हूं कि मुझ से और किसी से बातें नहीं हुईं। प्र०—तुमने कल यह बात जो कही थी कि मैने काज़ी और करीम से सुना था कि महाराज चाहते हैं कि फ्रियर साहब को ज़हर दिया जाय यह बात सच है ? उ०—हां यह बात सच है और जो कुछ मैने कहा है उसे न बदलूंगी। प्र०—यह बात सच है कि जब महाराज से तुम से तीसरी मुलाकात हुई थी तो तुम से महाराज ने कहा था कि करनैल फ्रियर साहब को तुम्हारे हाथ से विष दिया जाय ? उ०—नहीं साहब मुझसे नहीं कहा और जो कुछ कि ठीक हाल था मैंने पहिलेही आप से बयान किया। प्र०—तुमने जो महाराज के प्रश्न करने पर क्रोधित होकर इन्कार किया था तो वह गुस्सा और इन्कार किस सबब से था ? उ०—मैने केवल यह कहा था कि तुम साहब के साथ किसीतरह की बदसलूकी न करना नहींतो तुम पछताओगे। प्र०—तुमने जो बदसलूकी का शब्द कहा तो उससे क्या मतलब था ? उ०—मेरा मतलब उस से था जो महाराज ने मुझ से कहा था। प्र०—किसी को तुमने अपने इज़हारात पहिले भी दिये थे ? उ०—हां मैने सूटर साहब और खान बहादुर के सामने अपने इज़हारात दिये थे। प्र०—तुमने कब अपने इज़हारात उनके रूबरू दिये थे ? उ०—जब सूटर साहब बम्बई से आये थे। प्र०—तुम को याद है कि तुम्हारे इज़हारात सूटर साहब के रू बरू लिख लिये गये थे ? उ०—पहिली बेर मेरे इज़हारात नहीं लिखे गये थे। प्र०—पहिली मर्त्तबा जब तुम्हारे इज़हार लिये गये और लिखे नहीं गये उस समय कौन २ लोग थे

उ०–खान बहादुर १ गाड़ी वाला २ और एक लड़का ३। प्र०–खान बहादुर में से कौन था क्या अकबर अली था? उ०–मैं तो केवल खान बहादुर को जानती हूं मैं उनका नाम नहीं जानती। प्र०–क्या वह बाप था या बेटा था? उ०–मैं इस बातको नहीं जानती मैं तो खान बहादुर को फोरजट साहब के समय से जानती हूं मैंने उनको बम्बई में देखा है अकबर अली पहचानने के वास्ते इजलास में बुलाये गये उन्होंने तुरन्तही उसको पहिचान लिया सरजण्ट-बेलन टायन साहब ने अकबर अली से कहा कि आप इस गर्म कचहरी में ज़ियादः देर तक न रहिये (इस बात को सुनकर सम्पूर्ण इजलास हंसपड़ा) प्र०–तुम कै दिन तक मुटर साहब को अपने इज़हारात दिया की? उ०–दो दिनतक। सरजण्ट बेलन टायन साहब ने इजलास के तरफ मुखातिब होकर कहा कि मुझको आया के इजहार से मालूम होता है कि यह क़ैद की गई थी मुतरज्जिम साहब आप इससे पूछिये कि यह क़ैद रही थी या नहीं मुतरज्जिम साहब ने उससेपूछा। प्र०–क्या तू क़ैदथी? उ०–हां मैंक़ैद रही थी। प्र०–अकबर अली के रूबरू अपने इज़हारात देने से पहले तुम क़ैद रही थी? उ०–हां मैं अपने इजहारात देने से पहले क़ैद हुई थी। प्र०–मिस्टर मैलवल साहिब ने कहा कि तुम अपने इजहार देने से पहिले कैद हुई थी या पीछे इसको व्यौरे वार बयान करो? उ०–मैने अकबर अली से कहा कि मैं बहुत बीमार हूं और जब मुझको आराम हो जावेगा तब मैं अपने इजहारात दूंगी। प्र०–यह हमारा जवाब नहीं है हमारे प्रश्न का उत्तर दो? उ०–मैं उसी दिन क़ैद की गई थी। प्र०–मुतरज्जिम साहब ने आया से पूछा कि जब तुमने अकबर अली को अपने इजहार दिये तो तुम उस से पहिले कैद हो गई थी या नहीं? उ०–मैंने अकबर अली से कहा कि मैं बहुत बीमार

हूं जब मुझको आराम हो जावेगा मैं तुमको जवाब दूंगी सरजन्ट बेलन टायन साहब ने कहा कि यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है जब तुमने अकबर अली के रूबरू अपने इज़हार दिये थे तो तुम बीमार थी परन्तु यह बताओ कि तुमको उसके पहिले कैद किया या पीछे। उ०—मैं कैद न थी मैं अपने घर में आराम से सो रही थी (मिस्टर मैलबल साहब ने कहा कि यह प्रश्न के जवाब को नहीं समझी इस से फिर पूछो उस दशा में कि जब यह बीमार थी कैद भी थी) प्र०—सरजन्ट बेलन टायन साहब ने कहा कि मैं केवल यह पूछना चाहता हूं कि जब अकबरअली ने तुमसे इज़हार लिये थे उस वक्त तुम क़ैद थी या नहीं? उ०—मैं अपने पलंग पर बीमारी के कारण बेहोश पड़ी थी मुझको खबर नहीं। प्र०—इसका जवाब दो कि जिस समय अकबरअली ने तुमसे इज़हारात लिये उस वक्त तुम कैद थी या नहीं? उ०—जब अकबर अली मेरे पास आया तो उसने मेरे इज़हारात लेना चाहा परन्तु मैं बहुत बीमार थी इसलिये उसको अपने इज़हारात न दे सकी मुझसे वह कह गया कि तुम यहां से न जाना। सररिचर्ड मीड साहब ने कहा कि इसके उत्तर से प्रगट है कि वह क़ैद न थी। प्र०—सरजन्ट बेलन टायन साहब ने फिर पूछा कि तुमने जब अपने इज़हारात दिये उसके पीछे तुम अपने घरमें रहीं या सरकार को हवालात में सुपुर्द की गई? उ०—मैं अपने मकान में थी और मेरे मकान के बाहर पहिरा था मेरे पास मेरा पति नहीं आ सक्ता था इसकेदो दिन के उपरान्त मैं अस्पताल को गई। प्र०—तुमने अकबर अली से कहा कि मैं बहुत बीमार हूं? उ०—हां मैंने कहा था। प्र०—तुमने अपने इज़हारात अकबर अली को पहिले दिये थे या सूटर साहब को? उ०—मैंने अकबर अली से कुछ भी नहीं कहा था। प्र०—अच्छा अभी तो तुमने कहा था कि मैंने अकबर अली को

इजहारात दिये और उस वक्त एक लड़का और एक गाड़ी वाला मौजूद था ? उ०—हां यह बात सच है। प्र०—बज़त अच्छा क्या तुमने अपने तीनों मरतबे के जानेका हाल अकबर अलीसे न कहा होगा ? उ०—नहीं मैंने कुलहाल नहीं कहा। प्र०—तुमने क्यों नहीं कहा ? उ०—मैं उस समय बज़त बीमार थी आप डाक्टर सीबर्ड साहब से पूछ लीजिये। प्र०—तुमने सूटर साहब को कितने दिन के उपरान्त अकबर अली के देखा ? उ०—दो दिन के पीछे। प्र०—तुम उस समय कहां थी ? उ०—मैं अस्पताल में थी। प्र०—वहां कोई सिपाही था ? उ०—वहां तो नहीं था परन्तु जबमैंबीबी साहिब कीमेम साहिबाके बंगलेमें आगई थी एक सिपाही तैनातथा। प्र०—जिसवक्त सूटर साहब आये और कौनउसवक्त था ? उ०—वहां कईसिपाहीथे और अकबरअली और अब्दुलअली थे। प्र०—कितने सिपाही थे ? उ०—मुझको याद नहीं। प्र०—सूटर साहब ने तुम्हारे इजहारात लिख लिये थे ? उ०—लिख लिये थे। प्र०—क्या तुमने अपने सम्पूर्ण इजहारात दिये ? उ०—हां साहब दिये। प्र०कुछ सूटर साहब ने बिष दिये जाने के विषय में तुमसे पूछा था ? उ०—हां साहब पूछा था। प्र० तुमने उसका क्या उत्तर दिया ? उ०—मैंने कहा कि मैं कुछ नहीं जानती। प्र०—तुम से सूटर साहब ने यह भी पूछा था कि महाराज ने विष देने के विषय में तुमसे कुछ कहा था ? उ०—हां पूछा था परन्तु मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया। प्र०—अब यह बताओ कि अकबर अली या अब्दुल अली ने तुमसे कहा था कि महाराज ने विष देने के विषय में कुछ तुमसे कहा है जल्द बताओ ? उ०—मुझको उन्होंने धमकाया था कि तुमसे अगर कहा है तो जल्द बताओ और मुझसे इकरार कराना चाहा परन्तु मुझकोजो कुछ मालूमथावहबयान किया। प्र०—सूटरसाहब के रूबरू उन्होंने तुमकोधमकायाथा? उ०—मुझको उन्होंने नहीं धमकाया। प्र०—तुमने अभी क्यों

कहा था कि मुझको धमकाया था ? उ०-मैंने नहीं कहा सरजन्ट बेलन टायन साहब ने उसके पहिले इजहारात को सुतरज्जिम साहबके इजहारात से मिलाया और साहब प्रेजीडन्टके इजहारात भी मिलाये गये तो उसमें पायागया कि उसने बयान किया था कि मुझे धमकाया। प्र०- सरजन्टबेलन टायन साहब ने फिर आया से पूछा कि तुमने क्यों कहा था कि अकबर अली और अब्दुलअलीने मुझको धमकाया था यह बात सच है या झूठ है ? उ०—यह बात झूठ है मुझे तो किसीने भी नहीं धमकाया मैंने शायद कहा होगा परन्तु मुझे तो खयाल पड़ता है कि मुझसे अकबरअली और अब्दुलअली ने सिर्फ तीनही प्रश्न पूछे थे धमकाया नहीं था। प्र०—अब तुम्हारा निगहबान कौन है ? उ०—अबमैं क़ैद हूं। प्र०—क्या तुम अकबरअली और अब्दुलअली की निगहबानी में हो ? उ०— हां मैं उनकी निहाबानी और थोड़े सिपाहियों के पहिरे में हूं। प्र०—जब तुम्हारे इजहारात सूटर साहब ने लिख लियेथे तो तुम्हारे चलते समय तुमको सुनाये थे या नहीं ? उ०— उन्होंने मुझे इजहारात नहीं सुनाये। प्र०—फिर तुम्हारे इजहारात और किसीके रूबरू भी सूटर साहब के पीछे लियेगये ? उ०— हां एक वकील या बैरिस्टर के रूबरू मैंने इजहारात दियेथे मैं वकील और बैरिस्टर में अन्तर नहीं जानती हूं। प्र०—तुमने सूटर साहब के रूबरू और भी कभी इजहारात दिये थे ? उ०—हां साहब दिये थे जब कि मैं अस्पताल में थी मैं आपके रूबरू कभी झूठ न बोलूंगी मैं इस सभा को ईश्वर के बराबर जानती हूं प्र०—क्यामिस्टर सूटर साहब तुम्हारेपास अस्पतालमें आयेथे? उ०—मैंने आपही सूटर साहब को अस्पताल में बुलवा भेजा था और मैंने उनसे कहा कि जब मुझ को आराम होजावेगा तो मैं अपने सम्पूर्ण इजहारात दूंगी। प्र०—तुमने किसको सूटरसाहब के बुलवाने को भेजाथा ? उ०—मैंने डाक्टरसीवर्ड

साहब से कहा था मुझे नहीं खबर कि उन्होंने किसको भेजा था। प्र०—क्यावह अकबरअली था या अब्दुलअली था जिस को तुमने भेजा था ? उ०— साहब मैं सिपाहियों के पहिरे में थी मुझको खबर नहीं कि सूटरसाहब के बुलाने को कौन गया था। प्र०—अब मुझको थोड़ेसे प्रश्न तुम से करने को और बाक़ी है तुम महाराज के पास पहिली बेर क्यों कर-गई ? उ०—मैं बड़ौदे में पहिले कभी नहीं आई और मुझ को बड़ौदे के हालात नहीं मालुम और रोकर कहनेलगी कि मैं इङ्गलिस्तान पांचबार हो आई हूं और कानपुर जब्बलपुर और शमला और नीमच और और जगहपर बहुत दिन तक रही हूं और अरब भी हो आई हूं। प्र०—सरजन्टवेलनटायनसाहब ने यह सुनकर कहा इस में संदेह नहीं है कि तुम्हारे नहाने से इनमुकामों की रौनक में फ़र्क आगया है अगर तुम सचसच हमारे सवालों का जवाब दोगी तो तुम इन देशों में फिर चली जासक्ती हो परन्तु अब यह बताओ कि तुम पहिलीबेर महाराज की हवेलीमें क्योंकरगई ? उ०—सालिम और फैज़ बहुत दिनों से तकाज़ाकर रहेथे कि महाराजके पास चलो परन्तु मैंने इन्कार किया। प्र०—तुम किस वास्ते महाराजके पास जाने से इन्कार करती थी ? उ०—मैं नहीं जानती थीकि महाराजके यहां क्योंकर जाते हैं इसवास्ते मैंने इन्कार किया था मैंने सालिमसे कहा कि तुम मेरे साथचलो। प्र०—तुम दामोदरपन्थ को जानती हो ? उ०—मैं नहीं जानती। प्र०—यह बात सच है कि तुम फ़ैज़ और सालिम के कहने से जबरदस्ती गई थी ? उ०—हां साहब॥

सरकार के वकील ने फिर आया अमीना के इज़हार लिये॥

तुमने अभी कहा था कि मैंने किसी वकील या बैरिस्टर के रूबरू अपने इजहारात दिये थे यह बात सच है मिस्टर क्लीवलैंड साहब की तरफ मुखातिब होकर आया से पूछा

क्या यही वकील थे।? उ०—हां साहब यही वकील थे। प्र०—जब तुम अस्पताल में थी तो तुम्हारे पास अकबर अली या अब्दुल अली आये थे। उ०—हां साहब आये थे। प्र०—सूटरसाहब के इजहार देने के पीछे फिर भी कभी अकबरअली तुम्हारे पास आये थे? उ०—कभी नहीं आये। प्र०—कोई और पुलिस का अफसर तुम्हारे पास आया था? उ०—कोई नहीं आया था मैं पुलिसके सिपाहियों के पहिरे में थी। प्र०—तुम किस अस्पताल में थी? उ०—मैं रजमट के अस्पताल में थी। प्र०—तुम्हारा कौन डाक्टर इलाज करता था? उ०—मुझ को नाम उसका नहीं मालुम परन्तु वह रजमट का डाक्टर था और डाक्टर सीवर्डसाहब भी आया करते थे। प्र०—तुमने पहिले कहा था कि कि खानबहादुर हमारे पास अस्पताल में एक लड़के को साथ लेकर आया था यह बात सच है? उ०—हां साहब यह बात सच है। प्र०—क्या तुमने पहली मर्त्तबा खानबहादुर को देखा था? उ०—हां साहब पहली मर्त्तबा देखा था। प्र०—तुमने उसको कहां देखाथा? उ०—मैं उस समय अपनी चारपाई पर अपने घरमें पड़ीथी। प्र०—तुम उसगाड़ी वालेको जानतीहो जो अकबरअलीके साथ आयाथा? उ०—हां साहब जानतीहूं। प्र०—उसका क्या नाम है? उ०—उसका नाम सिब्बीया कोची है। प्र०—अकबरअली के साथ कौन लड़का था? उ०—मेरा नौकरथा जिसका नामकुट्टू है। प्र०—अच्छा वहबातें बताओ जो अकबरअली से और तुम से उस वक्त हुईं? उ०—मैंने अकबरअली से कहा कि मैं बहुत बीमार हूं जब मुझ को आराम होजावेगा तोमैं सब हाल तुमको बताऊंगी। प्र०—क्या अकबरअली के बातें करनेके पीछे तुमको पहिरे में कर दिया था? उ०—हां साहब पहिरे में करदिया था। प्र०—उसकेपीछे तुमने अपने पतिसे मुलाक़ात कीया नहीं? उ०—मेरे पासमेरे पतिकेआनेकी मनाही होगई थी। प्र०—जबकि

तुम तीसरे दफे महाराज की मुलाकात को गई तो तुम महाराज से क्यों डरी ० उ—मुझसे काजी और करीम ने जो बात कही थी उसका खयाल हुवा। प्र०—जो बात महाराज ने तुमसे की उस बात से और काजी और करीमकी बातसे एकही मतलब पाया जाता था? उ०—पहिले तो मैं नहीं समझी परन्तु उसके पीछे मुझको वही मतलब मालूम हुवा। प्र०—क्या तुम अंगरेजी बोलती हो? उ०—मैं अंगरेजी नहीं बोलती परन्तु कुछ समझ लेती हूं हमारी मेम साहिबा कभी अंगरेजी में बोलती हैं और कभी हिन्दुस्तानी में। प्र०—तुम तीन मर्त्तबा जो महाराज के पास गई थी तो तीनों मर्त्तबा अपनी मेम साहिबा से छुट्टी लेके गई थी या ग़ैर हाजिर होकर गई थी? उ०—मैंने दो मर्त्तबा तो रुखसत ली और एक मर्त्तबा गैरहाजिर होकर गई। प्र०—तुमनेबयान किया है कि हमने काजी और करीम के जबानी जहर दिये जाने का हाल सुना था अच्छा यह बात तुमने सूटर साहब के रूबरू भी कही थी? उ०—हां साहब कही थी॥

साहब प्रेज़ीडण्ट ने पूछा कि गाड़ी वाले का नाम तुम जानती हो? उ०—मैं गाड़ीवान को नहीं जानती और न मैं उसका नाम जानती हूं थोड़ीदेर के पीछे याद करके कहा कि शायद उसका नाम सन्दल है। प्र०—तुमने कभी संदलको देखा है? उ०—मैंने संदलको कभी नहीं देखा परन्तु एक दिन जब वह गाड़ीका किराया करीमसे लेने को आया था तब देखाथा। प्र०—तुमने अभी हमसे कहा है कि मैंने बिष दिये जाने के बिषयमें सुना था अच्छा यहतुम बताओ कि तुमने अपने तीसरे मर्त्तबे महाराज के यहां जाने से कितने दिन पहिले सुना था? उ०—मुझको नहीं याद परंतु मैं जानती हूं कि बीस पच्चीस दिन पहिले मैंने सुना था प्र०—यह बात तुमने रमज़ान के महीने में सुनी या अन्त में? उ०—मुझको इस वक्त याद नहीं परंतु करनैल फियर

साहब के जहर दिये जाने से बीस पच्चीस दिन पहिले मैंने सुनी थी प्र०—फिररिचर्ड मीडसाहबने पूछाकि तुम रमज़ान के महीने में महाराज के पास कितने दिन पहिले फ्रियर साहब के जहर दिये जाने से गई थी ? उ०—मैं नहीं बता सक्ती कि मैं कितने दिन पहिले गई थी क्योंकि मुझको यह बात याद नहीं है परन्तु मैंने जहर दिये जाने के पहिले यह बात सुनी थी॥

फैज़ूरमजान का इज़हार॥

फैज रमजानने बयान कियाकिमैं चौकी दार रेजीडन्सी का हूं और बीस बरससे नौकरहूं मुझ को वह समय मालूम है कि जब यहां पहिले कमीशन हुई थी मैं आया के साथ एकबेर गाड़ीमें सवार होकर महाराजके यहांगयाथा और हम दोनों चम्पानियर दरवाजेसे महाराज की हवेली में जीने पर चढ़ कर एक ऊपर के कमरे में गये और हम फर्श पर जाके बैठ गये उस कमरेमें एकबड़ा आईना रक्खा हुवा था और एक चौकी भी रक्खी हुई थी सालिमने जा कर महाराजसे हमारे आनेकी इत्तिलाकी महाराज आकर उसचौकीपर बैठ गये महाराजने आयासे कहाकितुम हमारे पास क्यों नहीं आती हो आयाने उत्तर दियाकि मुझको आने का अवकाश नहीं है फिर महराजने आयासे कहा कि तुम मेम साहिबा से हमारी सिफारिश करदो आया ने उत्तर दिया किमैं मेमसाहिबासे तुम्हारे विषयमें कुछनहीं कहसक्ती इसके पीछे मैंने सलाम किया और कहाकि मुझसे बहुत से आदमी बैर रखते हैं आप मेरे ऊपर मेहरबानी किया करें फिर मैंने अपने लड़के के वास्ते सिफारिश की और फिर हम और आया महाराज से बिदा होकर घरको आये॥

सरजन् बेलनटायन साहब के प्रश्न॥

फैजूने कहा मेरा लड़का सवारों में खण्डेराव के वक्त से नौकर है सोलह या सत्रह वर्ष की उमर है उसको बड़ौदे के

सिक्के के दस रुपये माहवारी मिलते हैं करनैलफियर साहब ने मेरा इज़हार लिया था परंतु मैं ज़हर दिये जाने के विषय में कुछ नहीं जानता था मैंने उसके विषय में कुछ नहीं बयान किया फिर मेरे इज़हार करनैल फियर साहब ने लिख लिये प्र०—मैलवल साहब ने पूछा तुम्हारे इज़हार लिख जाने के उपरांत क्या हुवा? उ०—मैं हवालात में बन्द किया गया और जबसे हवालात में अकबर अली और अब्दुल अली की निगरबानी में हूं मैं रावजी को जानता हूं रावजीने मेरे ऊपर करनैल फियर साहब के सामने ज़हर देने का अपराध लगाया था और मुझसे रजोडम्बी के सब नौकर ईर्षा करते हैं सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि जो बातें तुम्हारे और महाराज के मध्य में हुई उसे बयान करो? उ०—सामिल और आया ने मुझसे कहा कि महाराज के पास चलो उस दिन वह साहब के वास्ते डाली लाया था और इससे पहिले भी कईबेर उसने महाराज के यहां चलने के वास्ते मुझसे कहा था आयाभी मेरे साथ चलनेको तय्यार हुई मैंने कुछ उससे नहीं कहाथा और आया कोई बच्चा नहीं थी जिसको मैं बहकाता। प्र०—मिस्टर मैलवल साहब ने पूछा कि तुम आया के साथ गये थे इसका इक़रार करते हो? उ०-उसने कहा मैं इक़रार करता हूं। प्र०—तुम यहबात क्यों कहतेहो कि मैंने आया कोनहीं बहकाया तुम आयाके साथगये थे। उ०—मैंतो बीसबर्ष से सरकार गवर्न्मेण्टमें नौकर हूं मैं ओमान् सेंधिया को जानता हूं यदि वह न जानते होंगे तो मैंने सूटर साहब के रूबरू केवल यह इज़हार दिये थे कि मैं आया के साथ गया था॥

सरकार के वकील ने फ़िर फ़ैज़ू का इज़हार लिया॥

फैज़ू वर्णन करता है कि मैं और आया और गाड़ीवान तीनों अस्पताल में गये परन्तु मुझसे और आया से उस वक्त

फिर मुलाक़ात न हुई और मैंने अस्पताल में भी कोई बात उस से नहीं की और मेरे रूबरू उससे इज़हारात भी नहीं लिये गये मुझे स्मर्ण नहींहै कि मैंने आया को इज़हार देने से कितने दिनों के उपरान्त अपने इज़हार सूटर साहब को दिये। प्र०–प्रेजीडन्ट साहब ने फैज़ से पूछा तुम महाराज के कौन से महल में गये थे? उ०–हवेली में। प्र०–क्या तुम्हारी दरख़ास्त से तुम्हारा लड़का नौकर हुआ था? उ०–नहीं साहब वह तो खण्डेराव के समय से नौकर था। प्र०–क्या तुम्हारे कहने से खण्डेराव ने नौकर रक्खा था? उ०–जब कि करनैल वायस साहब इंगलिस्तान को जाने लगे तब मैंने उन से दरख़ास्त की थी कि अगर मेरा नाम महाराज के हां करा दो तो मेरे वास्ते अच्छा होगा क्योंकि मेरा इस थोड़े मासिक में यहां गुजारा अच्छी तरह से नहीं होसक्ता है मेरी दरख़ास्त को श्रीयुत वायस साहब ने मंज़ूर किया और मुझको महाराज के यहां नौकर रखा-दिया यों दो वर्ष तकमैं बराबर महाराजके यहां नौकर रहा परन्तु जब करनैल वायसाहब आये तब मुझको रजीडन्सी में नौकर रक्खा और महाराज से कह कर मेरी जगह पर मेरे लड़के का नाम करा दिया॥

कार भाई पुन्ना भाई के इज़हारात।

इस शख़्स ने इज़हार दिये कि मैं रामचन्द्र हलवाई को शिकरम को हांकता हूं मैं बड़ौदे के सदर बाज़ार में रहता हूं मैं फैज़ और आया को जानता हूं वह मेरी गाड़ी में सवार होकर गई थी इस बातको एक या सवा वर्ष बीता होगा आया मेरी गाड़ी में शायद आठ बजे रात को सवार होकर गई थी गाड़ीसे उतरकर हवेली के दरवाज़े परगई मैं हवेली के सम्हनेजो मैदान है अपनी गाड़ी कोलिये खड़ा रहा अमीना आया को पहिचानने के वास्ते बुलाया उसको उसने पहिचान लिया॥

सरजेनृ बेलनटायनसाहब के प्रश्न ॥

यह मनुष्य बेलनटायनसाहब के प्रश्नोंका उत्तर देताहै कि मैं बाटनसाहबके बंगलेसे जहां मैं अब तक पहिरेमें हूं आया हूं मुझको सूटरसाहब ने उस बङ्गले में महाराजके नजरबन्द करने के उपरान्त पकड़ के क़ैद किया था मुझको इस वास्ते पहरेमेंरक्खा ताकिमैं अपने भेदको किसीसेनकहूंमैंने सिवाय इसके कि इन दोनोंको महाराज की हवेली में पहुंचादिया था और कोई कामबुरा नहीं किया मैंने अपने मालिक से इस बात की इत्तिला करदी थी मैं आया और फौज को पहले से भी जानता था जब कि आया अस्पताल में थी और मेरे इजहारात लिये गये तब भी मैंने इजहार दिये थे सूटर साहब ने मुझ से पूछा कि आया को बता दो मैंने उसको पहचान लिया अस्पताल में मैंने केवल आयाही को पाया जबसे मैं क़ैदहूं अपने खामी को नहीं देखा ॥ प्र०-क्या तुम से यह कह दिया था कि जब तुम अपनी गवाही देदोगे तब तुम छोड़ दिये जाओगे ? उ०-हां मुझसे कह दिया था कि जब तुम अपनी गवाही देदोगे तो सरकार तुमको छोड़ देगी। प्र०-क्या यह बात तुमसे अकबर अली ने कही थी ? उ०-नहीं मुझसे अकबर अली ने नहीं कहीं थी मेरे इजहारात साहब ने लिये थे और साहब ही ने मुझसे यह बात कही थी अब फिर वह यह भी बयान करता है कि मैं क़ैद खाने में न था सरकार ने मुझको खाना दिया और कहीं आने जाने न पाता था-यह तो बहुत अच्छी बात थी कि सरकार ने तुमको बे मेहनत खाना दिया परन्तु अब तुम को सरकार न छोड़ेगी यह बात सरजन्ट बेलनटायन साहब की सुनकर सम्पूर्ण अधिष्ठाता हंसने लगे सरजेण्ट बेलन टायन साहब ने उससे पूछा तुम्हारा विवाह हुआ है यानहीं पहले उसने उत्तर दिया कि नहीं फिर थोड़ी देर के उपरान्त याद करके कहने लगा कि हुवा है ॥

शेख़ करीम के इज़हारात ॥

इस मनुष्य ने कहा कि मिस्टर बेवी साहब के पास मैं चपरासियों में नौकर था मैं उस समय भी मौजूद था कि जब वह नौसारी को गये थे और नौसारी से वर्षा के प्रारम्भ में आये थे जब मैं वहां से आया तो उसके आठ दिन के उपरान्त अमीना के साथ महाराज के यहां गया था पहिले आया ने एक संदल नामे गाड़ीवान को वहां जाने के वास्ते ठहराया था हम और आया सन्दल की गाड़ी में बैठ कर महाराज के यहां गये महाराज का जासूस सालिम हमको रास्ते में मिला और हवेली में ले गया हम जीनेपर चढ़कर एक कमरे में गये सालिम ने महाराज को बुलाया महाराज आकर एक चौकी पर बैठे आया महाराज के रूबरू फर्श पर बैठ गई और मैं एक तर्फ खड़ा रहा महाराज और आया से वार्त्ता होती रही महाराज और आया के मध्य में नौसरी की शादी का जिक्र होता रहा महाराज आया से पूछते थे कि साहब हमारी शादी के सबब से हम से अप्रसन्न तो नहीं हैं आया ने उत्तर दिया कि मैं अब कुछ नहीं कह सक्ती हूं जब हमारी मेम साहिबा आवेंगी तो हम इसका उत्तर देंगी हम उनके द्वारा आपकी सिफारिश साहिब से करावेंगी साहब के मिज़ाज में हमको दखल नहीं है जोउनके दिल में आता है सो करते हैं उसी दिन दो सौ रुपये सालिम ने हमको दिये और कहा कि तुम और आया आधे २ लेलो यह महाराज के विवाह का पारितोषक है सौ रुपये मैंने आया को दिये और सौ रुपये मैंने आपरखलिये ॥

सरजन बेलनटायन साहब ने करीम से प्रश्न किये ॥

यह मनुष्य उनके प्रश्न का उत्तर देता है कि मैंने आया को उसके पतिके सम्मुख रुपया दिया था मेरे इज़हारात बेवी साहब ने फियर साहब के जहर दिये जाने के उपरान्त लिये मुझसे सिर्फ सालिम के बारे में बेवी साहब ने

प्रश्न किये थे और मुझसे सालिम ने केवल यही कहा था कि तुम कमीशन को कारवाई को बताया करो और महाराज तुमको इसके बदले इनाम देंगे मैंने सालिम से कहा कि अगर ऐसी बात फिर तुम मुझ से कहोगे तो मैं अपने स्वामी से कहूंगा तब से सालिम मेरे साथ बैर रखता है मैंने बीबी साहब से महाराज के विषय में कुछ नहीं कहा परन्तु मैंने मिस्टर सूटर साहब के सामने पूरा इजहार दिया प्र०-तुमने कोई बात सूटर साहब से कही थी जो कि तुमने महाराज और आया की बार्त्ता में सुनी थी? उ०-हां साहब जो कुछ कि मैंने सुनाया कहा था। प्र०-तुम से कै बेर सूटर साहब ने इजहार लिये? उ०- केवल एक बेर। प्र० जोकुछ तुमने कहाथा सब लिखलिया गयाथा? उ० हां साहब लिख लिया गया था और मुझको सुना भी दिया गया था। प्र०-सालिम अगर तुम्हारा मित्र न था तो तुम उसके साथ महाराज के यहां क्योंगये? उ०-आया मुझको ले गई थी कि हम महाराज के विवाह का इनआम ले आवें। प्र०-सरकार के वकील ने पूछा कि आया से और तुम से मुलाक़ात कलसे हुई या नहीं? उ०-कलसे मुझसे किसी से मुलाकात न हुई॥

आज साढ़े चार बजे जलसा बरख़ास्त हुआ॥

तीसरे दिनका इजलास॥

जब कि इजलास जमा हुवा तो सरजन्ट वेलनटायन साहब ने कहा कि मुझको एक बहुत अच्छी बात इजलासके रूबरू कहनी है और वह यह है कि सुतरजिम साहब। तर्जुमा लफ्जो इजहारों का नहीं करते हैं किन्तु उसका संक्षेप करके हमको जवाब देते हैं हम चाहते हैं कि आगे से लफ्जी तर्जुमा इजहारात का हुवा करे साहब प्रेसीडन्ट ने इस बात को स्वीकार किया॥

बख़्तियार खां के पुत्र सन्दल खां का इज़हार॥

बख़्तियारखां के पुत्र सन्दलखां ने इज़हार दिया कि मैं शिकरम वाला हूं और मैं शेख मुहम्मद बरअर की शिकरम को हांकता हूं मैं बीवी साहब की आया को जानता हूं परन्तु उसका नाम नहीं जानता हूं और मैं करीमको भी जानता हूं मैं करीम और आया को अपनी गाड़ी में बिठाकर गायकवार की हवेली में ले गया था मैं सालिम को भी जानता हूं यह शख़्स महाराज के पास रज़ीडन्सी में आया करता था सालिम भी हमारे साथ गाड़ी में बैठकर गया था मैं इन लोगों को सवार करके नौबजे रात को ले गया था और वहां से दश बजे रात को लौटकर आये जब कि मैं गया था तो थोड़ा पानी वर्ष रहा था इस बात को नौ महीने हुये होंगे करीम ने दूसरे दिन गाड़ी का किराया दिया था करीम और आया दोनों इजलास में बुलाये गये और इस मनुष्य ने दोनों को पहिचाना॥

सरजन बेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

प्र०- तुमने यह इज़हारात कबदिये? उ०—सूटर साहब के रूबरू दिये थे प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो कबदिये? उ०—जब कि पुलिस बम्बई के अफ़सर बड़ौदे में आये और तहक़ीक़ात शुरू करने लगे। प्र०—यह कबकी बातहै? उ०—साहब मैंतो लिखा पढ़ा नहीं हूं मैं क्योंकर बतासक्ता हूं कि कबकी बात है। प्र०—तुम को आठमहीने की बात तो यादहै और इस थोड़े दिनों की बात को भूलगये? उ०— हां साहब मुझको नहीं यादहै। प्र०—क्या यह कल की बात है? उ०—नहीं। प्र०—क्या यह परसों की बात है? उ०—नहीं साहब जब बम्बई के पुलिस के अफ़सर आये थे। प्र०— अच्छा यह बताओ कि उसको कितने दिन हुये? उ०—साहब दो तीन महीने हुये होंगे। प्र०— तुमने अपने इज़हारात सूटर साहब को दिये थे? उ०—हां साहब

सूटरसाहब को दिये थे और यह मैंने कह दिया था कि तुम इसके बारे में किसी से न कहना नहीं तो मुझको मुश्किल होगी मैं एक परदेसी आदमी हूं। प्र०-क्या सूटरसाहब ने तुम्हारे इजहारात लिख लिये थे उ०—नहीं ? प्र०-क्या तुम हवालात में रक्खे गये थे ? उ०—नहीं। प्र०—क्या तुम कभी हवालात में रक्खे गये थे ? उ०—कभी नहीं। प्र०—क्या अब तुम हवालात में हो। ?उ०—नहीं। प्र०—क्या तुमने इससे पहिले किसी मनुष्य को अपने इजहारात दिये थे ?उ०—किसी को नहीं। प्र०— तुमने इसके पीछे किसी को अपने इजहारात दिये थे ? उ०—हां एक साहब को दिये थे और वह साहब वकील हैं प्र०—क्या तुमने अपने सम्पूर्ण इजहारात उसको दिये थे ? उ०—हां। प्र०—सिवाय उन साहब के और भी कोई था ? उ०—कोई नहीं। प्र०—तुम अङ्गरेजी जबान में बात चीत कर सक्ते हो ? उ०—नहीं। प्र०—तुमने इजहारात अपने किस जबान में दिये थे ? प्र०-हिन्दुस्तानी जबानमें। प्र०—तुम अब्दुलअली को जानते हो ? उ०—नहीं परन्तु जब अब्दुलअली इजलास में बुलाया गया तो उसने कहा हां साहब यही थे जिन्होंने मेरे इजहारात सूटरसाहब के रूबरू लिखे थे। प्र०—अब्दुलअली ने तुम से क्या प्रश्न किया था ? उ०—मुझसे पूछा था कि साहब तुमसे पूछते हैं कि तुम किस को अपनी गाड़ी में बैठाकर लेगये थे। प्र०—तुमसे यह भी पूछा था कि तुम किस समय बैठाकर ले गये थे ? उ०—मुझसे नहीं पूछा। प्र०—जिस समय उन्होंने तुमसे पूछा था कि तुम किसको अपनी गाड़ी में बैठाकर लेगये थे तो तुमने यह भी उनसे पूछा था कि आप किसको निस्बत में कहते हैं ? उ०—मैंने पूछा था उन्होंने उत्तर दिया कि हम करीम बख्स और आयाको निस्बतमें पूछते हैं। प्र०—तुमको आया पहिलेसे जानती थी ? उ०—नहीं। प्र०—तुमको करीम जानता था ? उ०—हां जानता था। प्र०—तुमने कभी पहिले

भी कभी करीमको सवार किया। था उ०-नहीं। प्र०-तुमने उसे कल रातको देखा था? उ०-नहीं। प्र०-अब्दुलअलीने करीमके विषय में तुमसे कहाथा? उ०-नहीं। प्र०-कलरात को तुम कहां सोये थे? उ०-मैं अपने घरमें सोया था। प्र०-वहां कोई पुलिसका आदमी था? उ०-कोई नहीं। प्र०-कभी हवालातमें रहेथे? उ०-कभी नहीं परन्तु एक दिन जब पहिले इजहारात दिये थे। प्र०-क्या तुमने करीमके विषयमें इजहारात पहिलेही से दे दिये थे? उ०-नहीं साहब बहुत देर पीछे दिये थे और यह भी मैंने कह दिया था कि मेरे इजहारात किसीको मालुम न हों। प्र०-तुमने यह क्यों कहा था? उ०-मैं परदेसी था और मुझको प्राणका अन्देशा था। प्र०-मुझको मालुम हुवा कि तुमनेअपने इजहारात इसके दो महीने पीछे दिये थे? उ०-हां साहब दो अढ़ाई महीने के पीछे दिये थे। प्र०-वहां और भी कोई उपस्थित था? उ०-कोई नहीं। प्र०-तुमने आया और करीम के जानेके विषयमें भी सूटर साहब से कुछ कहा था? उ०-हां साहब मैंने कहा था परन्तु उस समय कि जब उनसे मैंने अपनी जान के बचनेका इकरार लेलिया था। प्र०-तुम नीची गरदन करके न देखो और मेरी ओर देखो तुमने आया और करीम के विषय में कहा था? उ०-नहीं साहब केवल आया की निस्बत में कहा था। प्र०-तुमने आया निस्बत क्या कहा था? उ०-मैंने कहा था कि मेरी गाड़ी में बैठकर आया शहर के ओर गई थी। प्र०-तुमतो आया को जानतेही न थे? उ०-साहब परन्तु अबतो मैं जानता हूं। प्र०-तुमने क्योंकर जाना? उ०-साहब मैंने उसको बीबीसाहब के बंगले में रहते हुये देखा। प्र०-तुम इससे पहिले आया को नहीं जानते थे? उ०-हां साहब नहीं जानता था। प्र०-सूटर साहब ने तुमसे करीम के विषयमें कुछ पूछा था? उ०-कुछ नहीं पूछा था। प्र०-फिर तुमने क्योंकर सब हाल सूटर साहब से कहा था।

उ०—साहब मुझको अपने प्राण का भय था। प्र०—तुमको किसका भय था? उ०—मुझको महाराज का भय था। प्र०—तुम उसदिन क़ैद होगये थे? उ०—मैं तो कभी भी क़ैद नहीं हुवा। प्र०—तुमने अभी कहा है कि जब तक मैंने करीम का नाम नहीं लिया तब तक मैं कैद रहा? उ०—मैंने तो यह नहीं कहा उसको उसके इजहारात सुनाये गये उसने कहा सब दुरुस्त है मैंने अपने प्राण बचाने का जब इकरार करलिया उस समय मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे कह दिया। प्र०—तुमने सूटर साहब को कब देखा था? उ०—जब वह मुझसे हाल पूछने को आये। प्र०—क्या तुम सूटर साहब के पास गये थे या सूटर साहब तुम्हारे पास आये थे? उ०—मैं सूटर साहब के पास गया था। प्र०—तुम अकेले गये थे या कोई तुम्हारे साथ था? उ०—सैयद ऊंट वाला मेरे साथ था। प्र०—क्या वह ऊंट हांकता है? उ०—नहीं साहब अब नहीं परन्तु पहिले उसके पास ऊंट थे। प्र०—क्या यह वही मनुष्य है जिसने गायकवार के ऊपर नालिश की थी? उ०—मुझको खबर नहीं॥

बख़्शय:खां के पुत्र सन्दलखांके फिर इजहारात लिये गये॥

वह गवाह बयान करता है कि जब मैं पहले सूटर साहब के रूबरू गया तो मेरे साथ सन्दल ऊंट वाला था मेरे उन्होंने इजहारातलिये करीम बख्श मेरे पास छ:बजे संध्याको गाड़ी लेने आया था और नौ बजे मैं उनको सवार कराकर महाराज के महलमें ले गया। प्र०—तुमने सूटर साहब को अपने इजहारात कब दिये थे? उ०—दो महीने या अढ़ाई महीनेहुये होंगे। प्र०—क्या तुमने पहलेहीदफे अपनी जान बचाने का इकरार लेलिया था? उ०—हां साहब पहलेही मर्त्तबे लेलियाथा प्र०—तुम ऊंटवालेका नाम जानतेहो? उ० उसका नाम सय्यादतअली है। प्र०—क्या वह अहमदाबाद से आयाहै? उ०—मुझको खबर नहीं। प्र०—उसको इस मुक़-

हमेंसे क्या प्रयोजन था? उ०—वह अपने घरमें बैठाया और वहां बात चीत बड़ौदे के मुआमिले में होरही थी। प्र०—फिर वह तुम्हारे साथ क्यों गया था? उ०—सटर साहब से उसने कहा था कि मैं बता सक्ता हूं। प्र०—क्या तुमने सय्यादतअलीसे पूछाथा कि वह करीम और आया को जानता है? उ०—हां साहब उसने कहा था कि मैं जानता हूं और मैं इस मुकद्दमे को साबित करदूंगा। प्र०—जब तुम डरते थे तो तुमने सय्यादतअली से क्योंकर पूछा था? उ०—साहब झिझक आयाथा। प्र०—तुमने सय्यादतअली को हाल में भी देखा है? उ०—हां साहब हालमें भी देखा है प्र०—तुमने कब देखा है? उ०—बहुत दिन हुये। प्र०—वह कहां रहता है? उ०—कम्प में रहता है। प्र०—प्रेज़ीडन्ट साहब ने पूछा कि किस सबबसे तुमको अपने प्राण का भय था? उ०—साहब मैं परदेसी था और मुझको महाराज से भय था कि वह मुझको मरवा डालेंगे। प्र०—सर दिनकरराव ने पूछा तुमतो परदेशी आदमी हो तुमने आया और करीम को क्योंकर जाना? उ०—साहब मैं तीन वर्ष से यहां नौकर हूं मुझको छिपाने से यह मतलब था कि भाव सेंधिया को महाराज ने हाथी के पांव के नीचे दबवा कर मरवा डाला था और जब भावसेंधिया से हाथी के पांव के नीचे दबवा कर मरवा डाले गये तो फिर मेरी क्या गिन्ती है॥

छुट्टू के इज़हारात।

उसने वर्णन किया कि मैं चार महीने से अमीना के पास नौकर हूं और मुझ को याद है कि मैं उसके साथ एक मरतबे संध्या के समय शहर को गया था पहिले हम अरब खाने में गये और वहां से सालिम हमारे साथ हो लिया मैं पहले सालिम को नहीं जानता था मैं गाड़ी में सोतारहा मुझको नहीं मालूम कि आया और सालिम कहां

गये थे साहब ऐडवकेट जनरल ने पूछा कि इस जाने के पहिले तुम कितने पहले आया के पास नौकर थे ? उ०—मुझको यह नहीं मालूम परन्तु मैं चार महीने से आया के पास नौकर हूं ॥

सरजन बेलनटायन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—क्या तुमको हवालात में रक्खा था ? उ०—नहीं साहब मुझको हवालात में नहीं रक्खा था। प्र०—कुछ भी हवालात में नहीं रक्खा था ? उ०—नहीं रक्खा था। प्र०—तुम रात को कहां सोये थे ? उ०—मैं खान साहब के यहां सोया था। प्र०—खानसाहब का नाम बताओ ? उ०—नाम मुझको नहीं मालूम। अकबर अली को इजलास में बुलाया और उसने उसको पहिचाना। प्र०—कभी पहिले भी कोई सिपाही तुम्हारे साथ रहा है ? उ०—नहीं साहब। प्र०—तुम्हारे साथ खेमे में और कौन रहता है ? उ०—सम्पूर्ण गवाह रहते हैं। प्र०—क्या वह सब एक जगह रहते हैं ? उ०—साहब वह कल से एक जगह हुये हैं और पहले तो वह अलग २ रहते थे। प्र०—तुम जानते हो कि सब गवाह अलग २ क्यों रहते थे ? उ०—सरकार को गवाही देते थे। प्र०—तुम रावजी को जानते हो ? उ०—हां साहब मैं जानता हूं। प्र०—क्या वह तुम्हारे खेमे में रहता है ? उ०—नहीं साहब अलग खेमे में रहता है। प्र०—उसके पास कौन रहता है ? उ०—खान साहब। प्र०—खां साहब उसके साथ जब से वह क़ैद हुये रहते हैं ? उ०—हां साहब। प्र०—कबसे वह क़ैद हुवा है उ०—दो महीने से क़ैद हुवा है ॥

दूसरी बार छुट्टू के इज़हारात लिये गये ॥

प्र०—तुम्हारे खेमे में कै आदमी हैं ? उ०—मुझको उनकी संख्या मालूम नहीं परन्तु गाड़ी वाले हैं और और भी हैम प्र०—गाड़ी वाले कै हैं ? उ०—तीन। प्र०—तुम उनके ना। जानते हो ? उ०—नहीं जानता हूं मैं केवल उस गाड़ी

वाले का नाम जानता हूं जिसकी गाड़ी में बैठ कर गया था। प्र०—तुमने जो अभी यह कहा कि कल से गवाह अलग २ कर दिये गये हैं वह कौन २ हैं? उ०—मैं उनके नाम नहीं जानता आया, करीम, और और गवाह हैं जो गवाही अपनी दे चुके हैं॥

शेख दाऊद के इज़हारात॥

इसने बयान किया कि मेरे पिता का नाम शेख रहीम है और मैं शिकरम को हांकता हूं मैं बीबी साहब की आया को नहीं जानता हूं मैं आया के पति और छुट्टू लड़के को जानता हूं मैं आया और उस लड़के को शिकरम में बैठा कर महाराज के महल में ले गया था यह पांच चार रोज दीवाली से पहिले का जिक्र है सालिम भी उस गाड़ी में था और थोड़ी देर के उपरान्त फिर इनको सवार कराकर लौटा ले आया अब्दुल्ला खानसामां ने मेरी गाड़ी को किराये लिया था॥

सरजनबेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

अब तुम कहां हो? उ०—कम्पू में हूं। प्र०—तुम कहां रहते हो? उ०—अपने मा बाप के पास घरमें रहता हूं। प्र०—कोई सिपाही तुम्हारे पास था? उ०—कोई नहीं। प्र०—तुमने यह खबर किसीसे कही थी? उ०—किसी से नहीं। प्र०—तुमने इसका हाल पहिले किस से कहा? उ०—एक मनुष्य से कहा था। प्र०—मनुष्य के नाम होते हैं तुम उसका नाम जानते हो? उ०—साहब मैं नहीं जानता हूं। प्र०—क्या उसका नाम सन्दल है? उ०—हां साहब सन्दल है प्र०— तुमने उससे क्योंकर बातें कीं? उ०—मैं बाजार में रोटी लेने जाता था वह एक दूकान पर बैठा हुवा था मैंने उससे बातें कीं वह मुझसे पूछने लगा मैंने सब बातें उससे कहदीं और उसको सब हाल मालूम होगया। ०ने तुमसे उसने क्याकहां था साफ बयान करो? उ०—उसने पूछा कि तुम रात को सवार करके किसको लेगये थे मैंने

उसने कहदिया था। प्र०—तुम उसके पूछने से यह क्योंकर समझे कि उसका मतलब आयाने है क्या तुम और किसीको रातके समय सवार कर के नहीं लेजाते हो? उ०—साहब मैं और वह एक सड़कपर गाड़ी हांकते झवे चले आते थे और उसने देखलिया थाजो साहबवह मुझको न देखता तो न पूछता। प्र०—क्या उसी समय तुमसे बातें हुईं? उ०—हां कोई पच्चीस तीस मिनटके उपरान्त उससे बातें हुईं। प्र०-तुम ने कैबार आया के जाने का जिक्र उसे किया? उ०—हमको याद नहीं॥

एडवकेट जनरल ने फिर इजहार लिये॥

प्र०—तुम्हारे खामी का क्या नाम है? उ०—छुट्टू नाम है। प्र०—सन्दल के खामी का क्या नाम है? उ०—सलामत नाम है। प्र०—क्या वह दोनों गाड़ियां किराये पर देते हैं? उ०—हां साहब। प्र०—कहां पर गाड़ियों को रखते हैं क्या एकही स्थान पर दोनों की गाड़ियां हैं? उ०—नहीं साहब अलग २ उनकी गाड़ियां हैं। प्र०—वह दोनों कहां रहते हैं? उ०—एक तो क़स्साबखाने में रहता है दूसरा शराब खाने के निकट रहता है। प्र०—पहले तुमने उससे बातें की थीं या उसने तुम से बातें की थीं? उ०—पहले उसने मुझसे बातें की थीं। प्र०—क्या उसने यह पूछा था कि तुम किसको सवार करके ले गये थे? उ०—हां साहब यह पूछा था। प्र०—बम्बई की पुलिस बड़ौदे में कब आई तुमको मालूम है? उ०—हमको नहीं मालूम॥

सन्दलखां फिर बुलाया गया॥

प्र०—तुम शेख दाऊद को जानते हो? उ०—हां साहब जानता हूं हम और वह एकही काम करते हैं मैं छुट्टू के यहां नौकर हूं और मेरे और उसके एक बेर बातें हुई थीं मैं उस समय अपने बैलोंको पानी पिलाने जाता था और वह शहर के तरफ गाड़ी लिये जाता था मैने उससे पूछ

कि तुम किस्को लिये जाते हो वह उस समय न बोला परन्तु दूसरे दिन मैने उस्से पूछा कि तुम किस्को ले गये थे उसने मुझसे बयान किया॥

सरजन् बेलन टायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—तुमने करीम का नाम लिया था उ०—हां साहब लिया था प्र०—तुमने सूटर साहब से अपने इजहारात में सब बयान करदिया था? उ०—हां साहब बयान कर दिया था॥

फिर दुबारह इजहारात लिये गये।

प्र०—तुमने शेख दाऊद से करीम के विषय में क्या पूछा था? उ०—मैने पूछा कि रात को तुम कहां गये थे उसने मुझसे कह दिया। प्र०—परन्तु तुमने करीमके विषय में क्या कहा था? उ०—मैने कुछ भी नहीं कहा। प्र०—सरजन्-बेलनटायन साहब ने कहा कि मेरे ओर देखा तुमने तो अभी बयान किया है कि मैंने करीम की निस्बत कहा था कि वह बोवी साहब का नौकर है? उ०—साहब मैने नहीं कहा और जो आपने पूछा होगा तो मैं अंगरेजी जबान नहीं समझता प्रेजीडन्ट साहबने पूछाकि तुमने करीमके विषय में कुछ भी नहीं कहा? उ०—कुछ भी नहीं कहा। प्र० कभी भी कुछ नहीं कहा? उ०—कभी कुछ नहीं कहा। प्र० तुमको अच्छी तरह से याद है कि तुमने कभी भी कुछनहीं कहा? उ०—साहब जैसा आप कहतेहैं शायद कहाहोगा इस बात को सुनकर सम्पूर्ण इजलास हंस पड़ा? प्र०—जब सूटर साहबके रूबरू इजहार दियेथे उस समय बोवी साहब मौजूद थे? उ०—हां साहब मौजूद थे और उस समय दाऊद भी था॥

शेख अब्दुल्ला के इजहार॥

उसने बयान कियाकि अमीनाका मैंपतिहूंमैं मेजर ब्लैकनी साहबका सात महीने से नौकर हूं दो महीने तो बड़ौदे में

रहा और बाक़ी दिनों महाबलेश्वर में रहा अट्ठाईसवीं या उन्तीसवीं मार्चकोमैं बड़ौदे में आयाहम और आया एकही मकान में रहते थे साहब प्रेजीडण्ट ने पूछा कि तुमने चिट्ठियां आया को भेजी थीं ? उ०—हां साहब मुझसे और आया से खतकिताबत होती थी साहब सेक्रेटरी ने वह खत दिखायेऔर उसने उनको पहिचान लिया उसपर (सी) और (डी) का निशान दिया गया उसने बयान किया कि मैंने यह दोनों चिट्ठियां आया को भेजी थीं और घरकी तलाशी पर चार चिट्ठियां निकलीं और वह सरकार में मौजूद हैं। प्र० पहली चिट्ठी कौनसीहै ? उ०-पहलीचिट्ठी वहहैकिजिसपर (ए) अक्षरका चिन्हहै यहचिट्ठीआयाने मुझकोभेजीथी सरजन्ट बेलनटायन साहबने खड़े होकर कहाकि इनचिट्ठियोंको हम शहादत में नहीं लेसक्ते हैं और हवाला कानून शहादत का दिया साहब प्रेजीडन्ट ने कहाकि हम इन चिट्ठियों को पढ़ें और देखेंकि यह शहादत के योग्य हैं या नहीं हमको साबित होता है कि यह चिट्ठी आया ने लिखी है बेलन टायन साहब ने कहा कि आपको यह क्योंकर साबित हुआइसको साबित करना चाहिये साहब ऐडवकेट जनरल नेकहा कि अच्छा फिर इस पर हम बहस करेंगे अब इसको रहने दो तथाच यह अलग रक्खी गई और अब कि टिफन खाने का समय था इस सबब से इजलास बरखास्त हुवा॥ टिफन खाने के उपरान्त फिर जब इजलास शुरू हुआ तो अब्दुल्ला से पूछा कि तुम यशवन्तराव और सालिम को जानते हो ? उ०—हां मैं कुछ जानता हूं और मुझसे यशवन्त राव और सालिम से बात चीत हुई है सालिम को मैं उस समय से जानता हूं कि जब से वह महाराज के साथ रसीडन्सी में आकर फौज के पास पानी पीने के वास्ते जाता था जनके महीने में मेरी स्त्री महाराज के पास गई थी और महाराज ने उससे पहिले कमीशन के विषय में पूंछा परन्तु

पहली बेर सिवाय इसके और कुछ वार्त्ता नहीं हुई कि मेम साहिबा को समझा दो कि वह साहब से कहैं ता कि साहब महाराज पर मेहरबानी करैं दूसरी मर्त्तबा जबकि वह गई थी तो मैं महाबलेश्वर में था उसने मुझसे बयान किया था कि मैं करीम बख्श के साथ गई थी और महाराज ने उससे पूछा था कि मेम साहिबा हमारे विवाह के विषय में तो कुछ नहीं कहती थीं उसने उत्तर दिया कि कुछ नहीं कहती थीं फिर महाराज ने कहा कि तुम मेमसाहिबा को समझा दो कि वह साहिब से हमारी सिफारिश करें इसबेर सौरुपया महाराज ने मेरी स्त्री को दिया फिर मेरी स्त्री मेमसाहिबा के साथ पना को चली गई। प्र०—जब कि तुम्हारी स्त्री पूनाको गई थी तो यशवन्त राव कहां था? उ०—वह बम्बई को गया था। ऐडवकेटजनरलने प्रेज़ीडण्टसे कहा कि जब आया पूनाको गई थी तो यशवन्तराव चिट्ठी लिखा करता था मुझको मालूम हुवाकि आयाकी इस मुकद्दमे में साजिशथी—मरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा कि मुझको उसका साज़ मालूम नहीं होता मैं नहीं कहसक्ता कि यह चिट्ठियां गवाही में क्योंकर ली जावेंगी क्योंकि यह चिट्ठीयां घरोगू हैं जो पति ने स्त्री को लिखीं और स्त्री ने पति को इनका क्योंकर सुबूत हो सक्ता है ऐडवकेटजनरल ने कहा कि उनका सुबूत यों हो सक्ता है कि आया ने जो कुछ इज़हार दिये हैं उसकी सचाई इस से मालूम होतीहै बेलनटायनसाहब ने कहाकि अच्छा इन चिट्ठियों को शहादत में दाखिल न करो परन्तु इतना मालूम हुवा कि आया और खानसामां की इस मुकद्दमे में साजिश थी ऐडवकेटजनरल ने यह बात स्वीकार की और कहा कि अच्छा फिर इन चिट्ठियों को शहादत में दाखिल क्यों नहीं करते बेलनटायन ने कहा कि साजिशका शब्द बहुत बुराहै और साजिश के नाम से इन चिट्ठीयों को गवाही में दाखिल करना उचित नहींहै प्रेज़ीडन्टसाहब ने कहाकि यह तुम्हारा

बात मानने के योग्य नहीं है अच्छा साजिश का नाम जाने दो परन्तु इन चिट्ठियों को शहादत में दाखिल करना उचित है तथाच यह चिट्ठियां गवाही में लीगईं ऐडवकेट-जनरल ने कहा कि हम पहली चिट्ठी जो १६ अगस्त सन् १९३ई० की लिखी हुई है दाखिल करते हैं जिसमें शेखअ-ब्दुल्लाने अमीना को लिखा है कि मैं परमेश्वर की कृपा और तुम्हारे आशीर्वाद से अच्छा हूं जब से कि तुम बड़ौदेसे गईं तुम्हारी कुछ खबर नहीं आई इस सबब से मुझको अत्यन्त चिन्ता है तुमको ऐसी भूल न चाहिये थी यह ईश्वरकी मरजी है तुम्हारा इस में कुछ अपराध नहीं है महाराज के पास अब जाने की मनाही होगई है मुझको अब महाराज के दरबार की खबर नहीं मिलती बंगले के नौकर सब तुमको सलाम देते हैं यशवन्त राव बम्बई को गया है शहाबुद्दीन भी बम्बई को जावेगा परन्तु अब तक मुझको ठीक खबर मालूम नहीं है इस चिट्ठी के देखतेही तुम उत्तर लिखना॥

(दस्तखत——शेख अब्दुल्ला खानसामां)

यह चिट्ठी खास अब्दुल्लाके हाथकी लिखी है ऐडवकेटजनरलने अब्दुल्ला से पूछा इस चिट्ठीमें जो बंगले का शब्द लिखा है उससे क्या अर्थहै? उ०—यहशब्द रेजीडन्सीके बंगलेका बोधक है फिर यह चिट्ठी महाराजगानके जानने के वास्ते हिन्दुस्तानी भाषा में पढ़ीगई सरजन्ह बेलनटायन साहबने कहा कि इस चिट्ठी की आप के पास कोई नक़ल भी है उन्होंने उत्तर दिया कि अभी तक उसकी नक़ल इस वास्ते नहीं की गई थी कि यह गवाही में दाखिल नहीं थी अब यह चिट्ठी शहादत में दाखिल हुई है इसलिये अबउसकी नक़ल तुमको मिलसक्ती है। प्र०—यशवन्त राव यह कौन मनुष्य है जिसका चिट्ठी में जिक्र है कि वह बम्बई को गया है? उ०—यहशख्स महाराज का जासूस है साहब ऐडवकेट जनरल ने कहा कि दूसरी चिट्ठी को हम पेशकरते हैं इस चिट्ठी पर मोहर डाकखाने की १९

अगस्त सन् १८७४ की है और उसमें तारीख़ नहीं पड़ी है परन्तु मालूम होता है कि डाकखाने की मोहर से दो एक दिन पहिले यह चिट्ठी लिखी गई होगी यह चिट्ठी शेख अब्दुल्ला ने अमीना को लिखी है कि मैं ईश्वर की कृपा और तुम्हारे आशीर्व्वाद से अच्छी तरह से हूं तुम कुछ चिन्ता न करना कर्नेल फियर साहब पूना में १८ तारीख़ को गये हैं और सुकाम गरकी में रहेंगे तुमको मालूम हो कि दीवान मौकूफ़ होगये और दूसरा मनुष्य उनकी जगहपर अभी नौकर नहीं हुवा है तुम वहांकी खबरें लिखते रहना जो हजरत बम्बई में गये थे उनके विषयमें मालूम करना और जब तुम वहां से आना तो अपने साथ उनको जरूर लेते आना तुम उनको इस जरूर बातकी इत्तिला देना और समय २ पर अपने समाचार से हमको इत्तिला करते रहना जबसे तुम यहांसे गईं हमको बिल्कुल भूलगईं इसमें तुम्हारा कुछ दोष नहीं है हमारी प्रारब्ध का कसूरहै यशवन्त राव बम्बई को अब्दुल्लाखां साहब के साथ गया है और पेडरू का सलाम पहुंचे हमारे और पेड़रूके तरफसे अपने खानसामां से सलाम कह देना जितनी जल्दी होसके इसका उत्तर भेजना—इति॥

(दस्तखत शेख अब्दुल्ला।)

साहब प्रेजीडन्टने कहाकि इन चिट्ठियोंकी नकल कीजावे॥

गवाह वर्णन करताहै कि जबकि मेरी स्त्री पूनासे आई तो फिर एक बेर महाराजके पास रमज़ान के महीने में गईथी मैं उसके वास्ते गाड़ी किराया करके लायाथा एक लड़का छुट्टू भी उसके साथ गयाथा और महाराज और मेरी स्त्रीसेजो कुछ वार्त्ता हुईथी सुबहको मुझसे इसने बयानकी इससे महाराज ने कहाकि साहब को कोई ऐसी वस्तु दोकि जिससे साहब का दिल फिर जावे मेरी स्त्री ने कहा कि ऐसी वस्तु कदाचित् न देना अगर साहब को कुछ होगयातो तुम तबाह होजाओगे इस मरतबे सालिमने पचास रुपये उसको दिये महा-

राज ने उससे कहा था कि अगर तुम ऐसा काम करोगी तो तुमको और तुम्हारे पतिको नौकरी मिलजावेगी॥ जोकि साढ़े चार बजे का समय था इजलास बरखास्त हुवा॥

चौथे दिनका इजलास॥

आज ग्यारह बजेके समय फिर इजलास शुरूहुवा कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बर मौजूदथे श्रीयुत महाराज मल्हरराव नहीं आयेशेख अब्दुल्ला सेसरजन्ट बेलन टायन साहब ने प्रश्न पूछे। प्र०—तुम्हारी शादीको कतनी मुद्दतहुई? उ०—दस या ग्यारह बरस हुये प्र०—जब तुमबरदेस जाया करते थे तो अपनी स्त्री को खत लिखा करतेथे? उ०—हां साहब। प्र०—वहभी तुम को लिखा करती थी? उ०—हां लिखा करतीथी? प्र०—तुम सिवाय अपने घरके हालात के और हालातभी लिखा करते थे? उ०—हां साहब जो कुछ हम को जरूरी मालूम होता था वह लिखा करते थे। प्र०—अच्छा तुम को मालूम है कि कभी तुम्हारी स्त्री ने किसी मुफीदअमर की निस्बत तुमको लिखा था? उ०—शायद लिखा होगा। प्र०—सिवाय उन चिट्ठियों के जो तुमने जाहिर की हैं कोई और भी चिट्ठी तुमारी स्त्रीने लिखी है? उ०—शायद मेरेकाग़जोंमें होगी प्र०—जून और जुलाई सन् १८७३ ई० के महीनों में तुमने कोई चिट्ठी पाई थी? उ०—कोई नहीं। प्र०—क्या सबब है? उ०-उस जमाने में हम और वह एकही जगह परथे। प्र०-क्या तुम नवम्बर और दिसम्बर सन्१८७३ ई०में भी एकही जगह परथे? उ०—नहीं साहब मैं बम्बई में था और वह बड़ौदे में थी। प्र०—जून सन् १८७४ई० में तुमकहां थे? उ०—थोड़े दिनों के वास्ते मैं महाबलेश्वर को गया था और मेरी स्त्री बम्बईमें थी। प्र०—तुम्हारी स्त्री करनैल फियर साहब की मेमसाहिबा के पास कितने दिन नौकर रही? उ०—सात आठ महीने। प्र०—तुमनेविष दियेजाने के विषय में पहले

क्या सुना था? उ०-बंगलेपर बहुत से मनुष्य बात चीत किया करते थे कि मालूम नहीं किस मनुष्य ने साहब को विष दिया है। प्र०-तुम कुछ जहर की निस्बत जानते थे? उ०-मैं कुछ नहीं जानता था। प्र०-तुम जानते हो कि गर्व्वत कौन बनाया करता था? उ०-मैं नहीं जानता था अब मैं १३ नवम्बर के हालात में कुछ प्रश्न तुम से पूछना चाहता हूं। प्र०-तुम को याद है कि तुमने करनैल फ्रियर साहब के रूबरू इजहार दिये थे? उ०-मैंने उनके रूबरू इजहार नहीं दिये थे किन्तु मैंने बीबीसाहब के रूबरू इजहार दिये थे। प्र०-जो कुछ तुम्हारी स्त्री ने तुम से कहा था उस का बयान साहब से किया था? उ०-मैंने नहीं कहा। प्र०-तुमने किसके सामने पहले कहा था? उ०-सूटर साहब के सामने। प्र०-तुमने बीबी साहब के सामने क्यों नहीं इजहार दिये? उ०-मुझको भय मालूम हुआ। प्र०-तुम क्यों भय भीत हुए? उ०-साहब मुझ से पूछा नहीं गया मैं क्योंकर कहता। प्र०-मेरे प्रश्न का उत्तर दो यह इजहार तुमने क्यों न दिया कि मेरी स्त्री महाराजके यहां गई थी और महाराज ने उससे कहा कि कोई ऐसा जादू करो कि फ्रियर साहब का दिल फिर जाय? उ०-मुझको भय मालूम हुआ। प्र०-तुमको क्या भय था? उ०-साहब मेरी स्त्री को वहां जाने को मनाही थी और मेरी इजाजत के बिना वहां गई थी शायद वह उसपर अप्रसन्न होते। प्र०-क्या तुम्हारी स्त्री ने तुमसे कह दिया था कि इस बारे में किसीसे जिक्र न करना? उ०-मुझसे नहीं कहा था। प्र० अच्छा तुमको सूटर साहब के रूबरू क्यों भय मालूम हुआ? उ०-मेरा एक छुट्टू लड़का नौकर था और उसने सब हाल कह दिया फिर मैं क्योंकर छिपा सक्ता। प्र०-वहां उस समय कौन २ थे? उ०-दोनों खानसाहब गजानन्द वठिल और छुट्टू और एक गाड़ी वाला था। प्र०-यह सब आदमी

तुमसे पहले पहुंच गये थे ? उ०--नहीं केवल अकबर अली और अब्दुल अली मुझ से पहिले पहुंच गये थे। प्र०—उन पुलिस के आदमियों ने तुमसे क्या पूछा ? उ०--मुझसे पूछा कि इस मुकद्दमे की निस्बत क्या जानते हो मैंने कहा कि किस मुकद्दमे की निस्बत, कहा महाराज के मुकद्दमे की निस्बत, मैंने कहा मैं कुछ नहीं जानता, कहा तुम सच कहते हो मैंने कहा मैं सच कहता हूं। प्र०--तुमने मुझसे जो कहा कि छुट्टू और गाड़ीवाला भी पहले से मौजूद थे और मैंने उनके रूबरू इज़हार दिये यह बात सच है ? उ०—हां साहब मौजूद थे। प्र०—जब तुमने कहा कि मैं इस मुकद्दमे के विषय में कुछ नहीं जानता हूं तो सूटरसाहब ने क्या कहा उ०—सूटरसाहब ने उस लड़के और गाड़ी वाले को बुलाया और मेरा सामना कराया मुझसे कहा कि तुमने गाड़ी मंगवाई थी मैंने उत्तर दिया कि मंगवाई थी उन्होंने कहाकि यही गाड़ी वाला है मैंने कहा यही गाड़ी वाला है जिस की गाड़ी मैंने किराये को लीथी। प्र०—इज़हार देकर तुम कहां गये ? उ०—मैं तीन चार सिपाहियों के पहिरे में रक्खा गया। प्र०—फिर क्या हुवा ? उ०—अपने घर चलागया। प्र०—क्या तुम आया के साथ रहते हो और जब उसके इज़हारात हुये थे तुम मौजूदथे ? उ०-हां साहब फिर जब तक हमारे और उसके इज़हार नहीं लिये गये थे हम अलग२ रक्खे गये थे। प्र०—तुमने अपनी चिट्ठी में शहाबुद्दीन का ज़िक्र किया है वह कौन मनुष्य है ? उ०-साहब वह काज़ी है और शहर में रहते हैं और महाराज के यहां काम करते हैं प्र०—अब तुम जानते हो कि वह सरल्यूसपोली साहबके पास नौकर हैं उ०—यह बात नहीं मालूम॥

शेख अब्दुल्ला के फिर इज़हारात लिये गये॥

उसने बयान किया कि मैंने सूटरसाहब के सम्मुख अपने इज़हारात दिये थे सूटरसाहब उस समय पश्चिम की तरफ

के कमरे में बैठे हुये थे जिस समय मेरे इज़हार लिये तो उस समय मेरी स्त्री बेबीसाहब की मेमसाहिबा के पास नौकर थी। प्र०—तुमने बयान किया कि जब तुम अपने इज़हार दे चुके तो तुम पहरे में रक्खे गये थे? उ०—पहिले दिन मैंने कई प्रश्नों का उत्तर दिया था और मेरे दो तीन दिनतक इज़हारात होते रहे। प्र०—जिस दिनसे तुमने अपने इज़हारात देने शुरू किये थे और जिस दिन तक कि पूर्ण किये थे इस दरमियान में कभी अपनी स्त्री से कुछ बातें तुमने की थीं? उ०—नहीं कीं। प्र०—जब कि वह अस्पताल में थी तब तुम देखने को गये थे? उ०—हां गया था। प्र०—वह कितने दिन अस्पताल में रही? उ०—पांच दिन तक अस्पताल में रही? ऐडवकेट जनरल ने कहा कि आया के इज़हारात १८ तारीख को लिये गये थे और उसके पति के इज़हारात १९ तारीख को॥

अब्दुल रहमान के इज़हारात।

सय्यद अब्दुल रहमान ने बयान किया कि मैं कई वर्षसे आया को जानता हूं मैं डाकखाने का चपरासी हूं जबकि आया बम्बई में गई थी तो मुझसे कहा था कि मैं मेम साहिबा के साथ बम्बई में आई हूं वह विलायत जाने वाली हैं और बम्बई में मैंने उसके पति को कई चिट्ठियां लिखवा दी थीं वह चिट्ठियां अब्दुलरहमान को दिखाई गईं और उनको उसने पहिचान लिया और कहा कि यह चिट्ठियां मैंने लिखवाई हैं इसकोवल साहब ने उन चिट्ठियों को शहादत में दाखिल करलिया ताकि यह सुबूत हो कि दरमियान यशवन्तराव और सालम और महाराज के खतकिताबतहोती थी मिस्टर अनवरारटी साहबने उन चिट्ठियोंको गवाही में दाखल किया मिस्टर ब्रैंसन साहब ने कहा कि चूंकि इस समय सरजनबेलनटायन साहब मौजूद नहीं है तो हम इस वक्त इन चिट्ठियों के शहादत में दाखल करने से इन्कार करते

प्रेजीडन्ट साहब ने कहा कि तुमको इन्कार करना न चाहिये क्योंकि एक चिट्ठी तो दाखल ग्रहादत होचुकी है इसमें तुमको क्या इन्कार है ब्रैंसन साहबने कहा कि इस से क्या साबित होता है अभी आया की गवाही नहीं ली गई—है जब कि तुम्हारे साथी ने कल की चिट्ठी को दाखिल ग्रहादत करलिया तो फिर तुमको इस चिट्ठी के दाखिलग्रहादत करने में क्या इन्कार है यद्यपि यह चिट्ठी भेजी गईथी परन्तु यह चिट्ठी उसके पास नहीं पहुंची प्रेजीडण्टसाहब ने कहा कि यह चिट्ठी भेजी गई थी परन्तु उसने लौटादी इस चिट्ठी पर निशान [डी] का लगाया गया और चिट्ठी दाखलग्रहादत की गई गवाह वर्णन करता है कि मुझको नहीं मालूम कि मैंने किस समय में यह दोनों चिट्ठियां लिखी थीं परंतु मुझको तीसरी चिट्ठी का लिखाजाना याद है यह शेखअब्दुल्ला खानसामां के नाम लिखी गईथी यद्यपि उसका मजमून भूलगया हूं परन्तु मतलब याद है उसमें एकचिट्ठी महाराज के नाम भी थी॥

ब्रैंसन साहब के प्रश्न॥

प्र०—तुम अंगरेजी जानते हो? उ०—कुछ थोड़ी सी मैं अंगरेजी समझ सक्ता हूं परन्तु बोल नहीं सक्ता। प्र०—तुम बम्बई में कहां रहते हो? उ०—खेतवाले के महल्ले में। प्र० तुम कितने वर्षसे वहां रहतेहो? उ०—चार वर्षसेवहां रहता हूं प्र०—आया बम्बई में कहां रहती थी? उ०—मेरेही घर में रहती थी। प्र०—तुम अकबरअली और अब्दुलअली को जानते हो? उ०—हां साहब जानता हूं प्र०—तुमने कभी इनको बम्बई में देखा था? उ०—बम्बईके पुलिस में तो यह नौकरही हैं बम्बई तो इनका निवासस्थान है। प्र०—तुमसे इन लोगों ने किस जगह पर इजहार लिये थे? उ०—कालबा देवी के डाकखाने में मेरे इजहार लिये थे। प्र०—तुम्हें कौन बुलाने गया था? उ०—एक जमादार अहमद-

अली गया या प्र०—क्या वह अकबरअली का सम्बन्धी है ? उ०—हां साहब उनका सम्बन्धी है। प्र०—अहमदअली तुम्हारे पास आया तो तुमने क्याकहा ? उ०—अहमदअलीने तो मुझसे कुछ नहीं कहा परन्तु खानबहादुर ने मेरे इजहारात लिये। प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो अहमदअली ने तुमसे क्या कहा और उस समय कौन २ मौजूद थे ? उ० उस वक्त केवल मैं और अहमदअली था और कोई न था। प्र०—तुम्हारे किस जगह पर इजहार लिये थे ? उ०—अहमदअली ने अपने घरपर लेजाकर इजहारात लिये थे। प्र०—तुमसे खानबहादुर ने क्या पूछा ? उ०—खानबहादुर ने मुझसे पूछा कि कोई चिट्ठी तो तुमने महाराज को नहीं लिखी है मैंने कहा मैंने कोई चिट्ठी नहीं लिखी है परन्तु आया के वास्ते एक चिट्ठी लिखी है फिर मुझसे पूछा कि तुमने कब शेख अब्दुल्ला के नाम चिट्ठी लिखी थी मैंने उस को बता दिया। प्र०—क्यावह होली के पीछे चिट्ठी लिखी थी ? उ०—मैं होली को नहीं समझता मुसलमान हूं। प्र०—क्या बकराईद के पीछे लिखीथी ? उ०— मुझको याद नहीं। प्र०—तुम गवरात को जानते हो ? उ०—हां साहब जानता हूं। प्र०—अच्छा यह बताओ कि गवरात के कै दिन पहले या पीछे यह चिट्ठी लिखी थी ? उ०—साहब मैं नहीं बता सक्ता क्योंकि मुझको स्मर्ण नहीं है। प्र०—उस वक्त और भी कोई था जिस वक्त तुमने चिट्ठी लिखी थी ? उ०—और कोई न था। प्र०—महाराज को तुमने क्या लिखा था ? उ० उसने यह लिखवाया था कि मुझको खर्चमें जो बम्बईके गवर्नर ने खाना साहब लोगों को दिया था उसमें कुछ तुम्हारा जिक्र नहीं आया कोई चिन्ता करने की बात नहीं है ऐडवकेट जनरल ने पूछा। प्र०—महाराज को और क्या तुमने चिट्ठी में लिखा था ? उ०—और कुछ नहीं लिखाथा। प्र० यह चिट्ठी तुमने क्या आया को और चिट्ठियों के साथ में

लिखी थी ? उ०—हां साहब और चिट्ठियों के साथ में लिखी थी। प्र०—तुम डाकखाने में कितने दिनों से नौकर हो और क्या मासिक है उ०—तीन वर्ष से नौकर हूं और अट्ठाईस रुपये महीना मिलता है॥

अमीना को फिर बुलाया॥

उसने बयान किया कि मैं अब्दुल्ला को जानती हूं मैं और वह एकही मकान में बम्बई में रहते थे जब मैं बम्बई में थी तो उससे चिट्ठियां लिखवाया करती थी वह चिट्ठी जिसपर (डी) अक्षर का निशान दिया गया था पढ़ी गई वह हजरत शेख़ अब्दुल्ला के नाम पर चिट्ठी थी—सलाम के पीछे अमीना आया बम्बई से आप को लिखती है कि मैंने एक चिट्ठी टिकट लगाकर आपके पास भेजी थी मुझको बड़ी चिन्ता है कि वह चिट्ठी तुम्हारे पास पहुंची या नहीं यदि तुम कहो तो मैं इंगलिस्तान को जाऊं एक मेम साहिबा मुझको लिये जाती हैं मैंने खर्च के वास्ते तुमको लिखा था परन्तु कुछ खर्च तुमने नहीं भेजा यशवन्त राव को सलाम कह देना कुट्टू की मां से एक रुपया लेलेना लिखना कि तुमने मुहम्मद बशीरसे पांच रुपये क़र्ज़ लिये हैं वह रोज़ आकर मुझसे तक़ाज़ा करता है जो लिये हैं तो मैं उसको दे दूं तुमनेवह चिट्ठी जो चिट्ठी केसाथथी उस शख़्स को दी या नहीं मुझे इस विषयमें अति चिन्ता है अधिक क्या लिक्खा जावे शीघ्रही उत्तर भेजना इति॥

गवाह बयान करता है कि यह चिट्ठी मेरे कहने के अनुसार लिखी गई है और मैने उसमें लिखा था कि काज़ी और यशवन्तराव और सालिम को सलाम कहदेना काज़ी एक बहुत बड़ा प्रतिष्ठित मनुष्य है और वह मेरे कमरे में पानी पीने को आया करता था सालिम और यशवन्तराव को मैं इस सबब से जानती हूं कि वह दोनों महाराज के साथ रजोडन्सी में आया करते थे। प्र०—वह चिट्ठी कि जो तुमने

अली गया या प्र०—क्या वह अकबरअली का सम्बन्धी है ? उ०—हां साहब उनका सम्बन्धी है। प्र०—अहमदअली तुम्हारे पास आया तो तुमने क्याकहा ? उ०—अहमदअलीने तो मुझसे कुछ नहीं कहा परन्तु खानबहादुर ने मेरे इजहारात लिये। प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो अहमदअली ने तुमसे क्या कहा और उस समय कौन २ मौजूद थे ? उ० उस वक्त केवल मैं और अहमदअली था और कोई न था। प्र०—तुम्हारे किस जगह पर इजहार लिये थे ? उ०—अहमदअली ने अपने घरपर लेजाकर इजहारात लिये थे। प्र०—तुमसे खानबहादुर ने क्या पूछा ? उ०—खानबहादुर ने मुझसे पूछा कि कोई चिट्ठी तो तुमने महाराज को नहीं लिखी है मैंने कहा मैंने कोई चिट्ठी नहीं लिखी है परन्तु आया के वास्ते एक चिट्ठी लिखी है फिर मुझसे पूछा कि तुमने कब शेख अब्दुल्ला के नाम चिट्ठी लिखी थी मैंने उस को बता दिया। प्र०—क्यावह होली के पीछे चिट्ठी लिखी थी ? उ०—मैं होली को नहीं समझता मुसलमान हूं। प्र०—क्या बकराईद के पीछे लिखीथी ? उ०— मुझको याद नहीं। प्र०—तुम ग्वरात को जानते हो ? उ०—हां साहब जानता हूं। प्र०—अच्छा यह बताओ कि ग्वरात के कै दिन पहले या पीछे यह चिट्ठी लिखी थी ? उ०—साहब मैं नहीं बता सक्ता क्योंकि मुझको स्मर्ण नहीं है। प्र०—उस वक्त और भी कोई था जिस वक्त तुमने चिट्ठी लिखी थी ? उ०—और कोई न था। प्र०—महाराज को तुमने क्या लिखा था ? उ० उसने यह लिखवाया था कि मुझको खर्चमें जो बम्बईके गवर्नर ने खाना साहब लोगों को दिया था उसमें कुछ तुम्हारा जिक्र नहीं आया कोई चिन्ता करने की बात नहीं है ऐडवकेट जनरल ने पूछा। प्र०—महाराज को और क्या तुमने चिट्ठी में लिखा था ? उ०—और कुछ नहीं लिखाथा। प्र० यह चिट्ठी तुमने क्या आया को और चिट्ठियों के साथ में

लिखी थी ? उ०—हां साहब और चिट्ठियों के साथ में लिखी थी। प्र०—तुम डाकखाने में कितने दिनों से नौकर हो और क्या मासिक है उ०—तीन वर्ष से नौकर हूं और अट्ठाईस रुपये महीना मिलता है॥

अमीना को फिर बुलाया॥

उसने बयान किया कि मैं अब्दुल्लाको जानती हूं मैं और वह एकही मकान में बम्बई में रहते थे जब मैं बम्बई में थी तो उससे चिट्ठियां लिखवाया करती थी वह चिट्ठी जिसपर (डी) अक्षर का निशान दिया गया था पढ़ी गई वह हज़रत शेख़ अब्दुल्ला के नाम पर चिट्ठी थी—सलाम के पीछे अमीना आया बम्बई से आप को लिखती है कि मैंने एक चिट्ठी टिकट लगाकर आपके पास भेजी थी मुझको बड़ी चिन्ता है कि वह चिट्ठी तुम्हारे पास पहुंची या नहीं यदि तुम कहो तो मैं इंगलिस्तान को जाऊं एक मेम साहिबा मुझको लिये जाती हैं मैंने खर्च के वास्ते तुमको लिखा था परन्तु कुछ खर्च तुमने नहीं भेजा यशवन्त राव को सलाम कह देना छुट्टू की मां से एक रुपया लेलेना लिखना कि तुमने मुहम्मद वज़ीरसे पांच रुपये क़र्ज़ लिये हैं वह रोज़ आकर मुझसे तक़ाज़ा करता है जो लिये हैं तो मैं उसको दे दूं तुमनेवह चिट्ठी जो चिट्ठी केसाथथी उस शख़्सको दी या नहीं मुझे इस विषयमें अति चिन्ताहै अधिक क्या लिक्खा जावे शीघ्रही उत्तर भेजना इति॥

गवाह बयान करता है कि यह चिट्ठी मेरे कहने के अनुसार लिखी गई है और मैने उसमें लिखा था कि काज़ी और यशवन्तराव और सालिम को सलाम कहदेना काज़ी एक बहुत बड़ा प्रतिष्ठित मनुष्य है और वह मेरे कमरे में पानी पीने को आया करता था सालिम और यशवन्तराव को मैं इस सबब से जानती हूं कि वह दोनों महाराज के साथ रजोडन्सी में आया करते थे। प्र०—वह चिट्ठी कि जो तुमने

खत के साथ भेजी थी वह किसके नाम है ? उ०-वह महाराज के देने के वास्ते सालिम के नाम थी वह चिट्ठी कि जिस पर निशान (ए) का था इजलास में पढ़ी गई उसमें यह लिखा था कि हमने तुम्हारा मतलब समझा तुम बारंबार इसी तरह पर चिट्ठियां लिखते रहो सालिम मेरे पास आया था अब मैं किसी कदर अच्छी हूं मैंने सालिम को चिट्ठी लिखदी है कि मैं २० तारीख तक वहां आऊंगी पांच रुपये मुहम्मद वजीर को दिये गये तुम्हारे खसुर के घरमें जगह रहने को है नहीं मैं कहां रहूं मुझको बड़ी तकलीफ है जमादार से २५) रु० पहुंचे २०) रु० उस माड़वाड़ी को जल्द देदेना मेरा इस दिनों में बड़ा नुकसान हुवा बीमारी के सबब से मुझको छुट्टी लेनी पड़ी मैं यशवन्तराव के घर पर गया थी वह बयान करता था कि महाराज ने दो तीन बेर तुम्हारे विषय में पूछा था सालिम तो तुम्हारे मकान पर कभी नहीं आया था मुझको लक्खूबाबा मतकर और और आदमी तुमको सलाम देते हैं॥ लिखा हुवा १० अप्रैल सन् १८७४ ई०॥ गवाह वर्णन करती है कि यह चिट्ठी मैंने आप लिखवाई थी इस फिकरह से कि सालिम मुझको मिला यह मतलब है कि सालिम बम्बई को गया था और वहां मेरी और उसकी भेंट हुई थी मैंने उसको यशवन्तराव के मकान पर बम्बई में देखा था वहां महाराज की बातें मुझसे उससे हुई थीं मैंने उससे कहा कि महाराज से हमको पारितोषिक क्यों दिलवाओगे उसने कहा कि महाराज के यह काम सावकाश से होते हैं यशवन्तराव ने मुझसे कहा कि अब जो मैं यहां से जाऊंगा तो तुम्हारे इनआम दिलाने में कोशिश करूंगा महाराज ने जब मैं बड़ौदे में था तो तुम्हारी निस्बत चार मर्तबा पूछा था साहबऐडवकेट जनरल ने पूछा कि क्या तुमने अपने पति से यह दोनों चिट्ठियां पाईं थीं ? उ०—हां साहब पाईं थीं॥

ब्रैंसनसाहब के प्रश्न ॥

प्र०—जबसेकि तुम्हारा पहला इजहार लिया गया तुम कहां थीं? उ०—साहब मैं खानबहादुर के पास थी प्र०—जब से तुम्हारे इजहार होचुके हैं तुमने खानबहादुरके देखा है? उ०—देखा है। प्र०—क्या छोटे खानबहादुर को भी देखा है? उ०—हांसाहब देखाहै। प्र०—तुमरावसाहब गजानन्द वठिल को जानती हो? उ०—पहले कहा कि नहीं जानती हूं फिर याद करके कहा कि हां जानती हूं ॥

शेखअब्दुल्ला के फिर इज़हार हुये।

शेख अब्दुल्ला के दुबारह इजहार प्रेजीडण्टने लिये वह वर्णन करता है कि एक मेरी चिट्ठीमें लिफाफे के अन्दर एक चिट्ठी महाराज के नाम परभी आयाने भेजीथी जबमैं महाबलेश्वर जाने लगा तो मैंने सम्पूर्ण चिट्ठियां अपनी स्त्री को देदींथीं और फिर मुझको नहीं मालुम कि उस चिट्ठी का क्या हुवा ॥

प्रेडरूसेाज़ाके इज़हारात ॥

मिस्टर अनवरारटीसाहब ने पेडरूडसौजा के इजहारात लिये उसने कहा कि जब करनैलफियरसाहब बड़ौदेमें आयेतो मैं उनकी मुलाजिमा में हाजिर था करनैलफियर साहब महीने मार्च सन् १८७३ ई० में बड़ौदे में आये थे और मैं बराबर बड़ौदेमें रहापरन्तु थोड़ दिनोंके लिये नौसारीमें गया था और एक महीने की छुट्टी लेकर गोवा को गया था मैं सालिम को जानता हूं वह बहुधा मुझसे कहा करता था कि जो तुम महाराजके पास आओ तो तुम्हारे वास्ते अच्छा होगा और हम तुम्हारी सवारीके वास्ते गाड़ी भेज दिया करेंगे मैने कहा मैं नहीं आना चाहता हूं जब कि मैं गोवा को जाने लगा तो मैंने सालिम से कहा कि मेरे राह के वास्ते कुछ खर्च लादो और उसने मुझको साठरुपये बड़ौदे के प्रचारके लादिये जिसके चेहरेदार पचास रुपये

होते हैं यह रुपया मुझको रजीडन्सीमें सालिम देगयाथा और देते समय कहा कि यह साठ रुपये सरकारने तुमको राह के खर्चके वास्ते दिये हैं अनवरारटो साहबने पूछा कि सरकार से क्यामतलब है। उ०—महाराज से मतलब है। प्र०-तुम कितनी मुद्दत से करनैलफियर साहब का काम करते थे। उ० छब्बीस वर्ष से॥

सरजएटबेलनटायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—क्या तुम्हारी गवाही बम्बई में हुई थी? उ०—हां साहब हुई थी प्र०—किसके सामने हुई थी? उ०-ऐडगैन्टन साहब के रूबरू हुई थी प्र०—क्या तुमने सब हाल उनसे कह दिया था? उ०-हां साहब कहदिया था। प्र०—क्या तुमने सालिम से अपने गोवा के जाने का हाल कहा था? उ० नहीं साहब और कई शख्सों से कहा था। प्र०—क्या केवल सालिमने तुमसे कहा था कि गायकवारके पास चलो? उ० हां साहब केवल सालिम ने कहा था। प्र०—तुम सालिमको कबसे जानते हो? उ०—जबसे मैं बड़ोदे में आया हूं और वह महाराज के साथ एक सप्ताह में दोरर आया करता था प्र०—सालिमने तुमसे यह भी कहा था कि महाराजतुमको क्यों बुलाते हैं? उ०—केवल यह कहाथा कि जो तुम महाराज के पास चलोगे तो तुम्हारे वास्ते अच्छा होगा। प्र० तुमने इन्कार किया था? उ०—हां साहब मैंने इन्कार किया क्योंकि उन दिनों मुझको जानेका अवकाश न था प्र०—यह बात सही है कि तुम कभी नहीं गये? उ०—मैं कभी नहीं गया। प्र०—तुम कहां ठहरे हुये थे जब कितुमने ऐडगैन्टन साहब को गवाही दी थी? उ०—मैं साहब अपने साहब के यहां गया था। प्र०-तुम कबसे पुलिस के पहरे में हो? उ०—चालीस दिन से। प्र०—तुम रावजी को जानते हो? उ०—हां साहब मैं जानता हूं। प्र०—तुम कब से जानते हो? उ०-जब से साहब मैं यहां आया हूं। प्र०-तुम्हारा और

रावजी की प्रीतिथी? उ०—साहब हम बात चीत किया करते थे कुछ मिचता नहीं थी। प्र०—कभी रावजीने तुम से महाराज के यहां चलने के वास्ते कहा था? उ०—कभी नहीं कहा। प्र०—अच्छा उसने तुम से कभी नहीं कहा परन्तु तुमने कभी उस से इकरार किया था? उ०—नहीं साहब कभी नहीं। प्र०—कभी तुमने रावजी से कहा था कि चलो महाराज के यहां चलें? उ०—मैने रावजी से सिवाय उन साठ रुपयों के जो मैने महाराज से पाये थे कभी और महाराज के यहां का जिक्र तक नहीं किया। प्र०—कभी तुम और रावजी ने महाराज के यहां जाने का बन्दोबस्त किया था? उ०—कभी नहीं। प्र०—कभी तुम और रावजी सालिम के साथ महाराज के यहां गये थे? उ०—कभी नहीं। प्र०—कभी राव जी के सामने तुम से और गायकवार से बातें हुई थीं? उ०—कभी नहीं हुईं और मैं कभी नहीं गया। प्र०—तो अब इस बात से मैंने यह समझा कि तुम महाराज की हवेली में कभी नहीं गये? उ०—कभी नहीं गया। प्र०—कभी तुमसे और महाराज से बातें नहीं हुई? उ०—कभी नहीं हुई। प्र०—यदि रावजी तुम्हारे मुंहपर कहदे कि तुम महाराज के यहां गये थे तो यह बात गलत है? उ०—बिल्कुल गलत है। प्र०—अगर रावजी तुम्हारे मुंहपर कहदे तो तुमको आश्चर्य होगा? उ०—हां साहब जरूर आश्चर्य होगा यह बात बिलकुल गलत है। प्र०—तुम कभी गोवा को गये थे? उ०—हां साहब एक महीने की रुखसत लेके गया था। प्र०—क्या तुम वहां से लौट आये थे तो तुम रावजी के साथ महाराज के यहां गये थे? उ०—मैं कभी नहीं गया। प्र०—अच्छा एक बात तुम मुझको और बताओ कि तुमने कोई पुड़िया महाराज के पास से पाई थी? उ०—मैं क्योंकर पुड़िया पाता जब कि मैं महाराज के यहां गयाही नहीं। प्र०—अच्छा फर्ज करो कि तुम महाराज के पास नहीं गये

परन्तु कोई पुड़िया तुमने महाराज से पाई थी? उ०—कोई पुड़िया नहीं पाई। प्र०—तुमने ऐडगैन्टन साहब के सामने क्या इज़हार दिये थे। उ०—साहब जो कुछ मैंने इज़हार दिये थे वह कागज में लिख लिये गये हैं। प्र०—क्या उन्होंने तुमसे पूछा था कि तुमने महाराज से कुछ पाया? उ०—हां साहब मुझ से पूछा था लेकिन मैंने उसका उत्तर दिया प्र०—तुम अकबर अली को जानते हो? उ०—हां साहब जानता हूं। प्र०—जब तुमसे ऐडगैन्टन साहब इज़हार ले चुके थे तो तुमसे कोई सवाल अकबर अली ने किया था? उ०—हां साहब उन्होंने भी इज़हार लिया था मैंने वही इज़हार जो ऐडगैन्टन को दिया था उनके रूबरू भी कह दिया। प्र०—तुमसे यह कहा था कि अगर तुम सच कहोगे तो तुम्हारे वास्ते अच्छा होगा? उ०—हां साहब मुझ से कहा था और मैंने भी जो कुछ सच था कह दिया था। प्र०—खानबहादुर ने तुमसे पूछा था कि तुम महाराज के यहां गये थे? उ०—हां साहब पूछा था। प्र०—तुमको खबर है कि रावजी ने तुम्हारे निस्बत क्या कहा? उ०—मुझको खबर नहीं साहब ऐडवकेट जनरल ने कहा कि मेरे दोस्त पांचवीं तारीख़ को इज़हार की तारीख़ मुकर्रर करते हैं अगर साहब प्रेजीडण्ट का भीयही सम्मत हो तो यही तारीख नियत की जावे प्रेजीडण्ट साहब ने कहा अच्छा यही तारीख करार-दी जावे इसके पीछे जो इज़हार उसने दिये वह साहब प्रेजीडेण्ट को सुनाये गये॥ तदनन्तर टिफन खाने के वास्ते इजलास बरखास्त हुआ—टिफन खाने के उपरान्त इजलास फिर शुरू हुआ और फियर साहब गवाही के वास्ते बुलाये गये फियर साहब ने सौगन्ध खाकर बयान किया कि मैं बम्बई की फौज का कर्नैल था मेरा नाम राबिट फियर साहब है मुझको श्री महाराणी के कम्पानियन बाथ और ऐडेकांग के तमग़े मिले हैं मैं १८ मार्च सन् ४८७५ ई० को

बड़ौदे में आया था मैं यहां पोलीटीकल रजीडण्ट बड़ौदे का मुकर्रर होके आया और २४ दिसम्बर तक इस ओहदे पर मुकर्रर रहा मार्च सन् १८७४ई० में मेरी मेम साहिबा विलायत को गई थी अमीना आया बम्बई तक उनको पहुंचाने गई उसको एक महीने की छुट्टी बम्बई से मिली जबकि मैं बम्बई में गया था तो जनरल गेल साहबके मकान में ठहरा था और मैं नौसारी को महाराज के साथ २ अप्रैल सन् १८७४ई० को गया था मिस्टर बेबीसाहब मेरे साथ नौसारी को नहीं गये मैं नौसारी में १६ मई सन् १८७४ ई० तक ठहरारहा और मेरे दोतीन रोज आने के पीछे महाराज भी बड़ौदे में आये पोलीसाहब के काम देनेतक मैं बराबर बड़ौदे में रहा और महाराज गायकवार भी बराबर बड़ौदेमें रहे महाराज प्रतिसोमवार और वृहस्पति को सुभते मुलाकात करने को आया करते थे वह बहुधा गोविन्दराव और बापूभाई के साथ आया करते थे उन के साथ कई सवार अरदली में होते थे मैं उन सवारों को बखूबी जानता हूं बहुधा यशवन्तराव और सालिम उनके साथ आया करते थे और जब कभी यह नहोते थे तो महादेवराव काली और यशवन्तराव का लड़का आया करता था जब कि मैं नौसारी में था तबभी यह लोग आया करते थे मेरी रजीडन्सी कचहरी के पश्चिमकीओर एक जगह थी वहां एक कमरे में मेरा गुसल-खाना था मेरे गुसलखाने के बाहर एक बरामदा था वहां एकतिपाई रक्खी थी वहां दो मनुष्य अर्थात् रावजी और नरसू बैठेरहते थे करीम बेबीसाहब के कमरेके बाहर बैठा रहता था गोविन्दबापू मेरी कचहरी में आता था मैं सुबह उठ कर हवाखाने के वास्ते जाया करता था और वहांसे आकर एक गिलास चकोतरह की शर्बत का जोकि हमेशह अब्दुल्ला चौकीदार बनाता था पिया करता था ९ दिसम्बरको मैंने शर-बत पिया और मेरा शिर घूमने लगा मैं सितम्बर महीने से

बीमार था गणपति के तहवार पर मैं बहुत अलील था और मेरे शिरमें फोड़ा निकला था यह फोड़ा बराबर तीन सप्ताहतक रहा और डाक्टर सीवर्ड साहब हररोज प्लास्टर उसमें लगाया करते थे और यह प्लास्टर मेरी मेज़ पर रक्खा रहता था इस फोड़ेके सबब से मेरे शिरमें पीड़ा होती थी और मेरी आंखें बैठी जाती थीं और जब कि मैं रात्रि को सोता था तो मुझ को बुखार मालुम होताथा ६ नवम्बर को मैं गोविन्दराव के मकान पर गया और मैंने दो तीनघंट शरबत के पिये थे और मैं सारेदिन अलील रहा दूसरे दिन फिर मैंने थोड़ासा शर्बत पिया ९ तारीख़ को भी मैने शर्बत पिया और उस दिन मैं हवा खोरी से जल्द पलट आया मैने देखा कि रावजी हवालदार ने मुझको बरामदे में आकर सलाम किया यह बात नई थी और कभी इतनी जल्दी रावजी नहीं आया था दो तीन घंटे पीने के उपरान्त बीस मिनट तक मैं चिट्ठी लिखा किया फिर मैंने देखा कि मेरे सिर में अतिपीड़ा हो रही है मैंने जो उस गिलास को देखा तो मालुम हुआ कि इस गिलास में काले रंग की तिलछट जमी हुई है मैने उसको देख कर तुरन्तही चिट्ठी डाक्टर सीवर्ड साहब के वास्ते बुलाने के लिखी डाक्टर साहब आकर उस तिलछट को लेगये जो कि वह सोमवार था महाराज भी थोड़ी देर के उपरान्त आये मैने उनकी कुशल प्रश्न की उन्होंने कहा कि मैं अलील हूं और दीवाली की मिठाई खाने से मैं अलील होगया थोड़ी देर के उपरान्त वह चले गये यशवन्त राव दीवाली की डाली मेरे देने के वास्ते लाया और मुझको एक मिठाई उस में बताई कि यह मिठाई बहुत खराब है इस मिठाई को न खाना फिर जब महाराज मेरे पास से चले गये तो मैने हाजिरी खाई और डाक्टर सीवर्ड साहब के वास्ते लिखा— साहब प्रेजीडण्ट ने पूछा कि तुमने डाक्टर सीवर्ड साहब

को महाराज के जाने के उपरान्त चिट्ठी लिखी थी या उनके आने के पहिले ? उ०—महाराज के जाने के उपरान्त मैंने भोजन किया फिर डाक्टर साहब को चिट्ठी लिखी ॥ अब साढ़े चार बजे का समय होगया था इसवास्ते इजलास बरखास्त हुवा ॥

पांचवें दिन का इजलास।

आज के दिन ग्यारह बजे कमीशन शुरू हुई महाराज सेंधिया बीमारी के कारण नहीं आये इजलास शुरू होने के समय साहब प्रेजीडण्ट ने कहा कि आज महाराज सेंधिया नहीं आये हैं और उनके पास आज की सम्पूर्ण कारर्वाई पहुंचाना चाहिये सरजन्ट वेलनटायन साहब ने कहा कि उनके पास आजकी सम्पूर्ण कारर्वाई अवश्य पहुंचानी चाहिये फिर गवाह के इजहार शुरू हुये साहब ऐवडवकेट जनरल ने कहाकि कल आपने डाक्टर सीवर्डसाहब की चिट्ठी लिखने तक इजहार दिये हैं अब यह बताओ कि तुमने डाक्टर सीवर्डसाहब के आने और महाराज के जाने के उपरान्त किसी से अपनी बीमारी का हाल बयान किया था या नहीं उ०—मैंने बेवी साहब से कहा था फिर वह चिट्ठी कि जो डाक्टर सीवर्डसाहब को फियरसाहब ने लिखी थी इजलास में पढ़ीगई ॥ बड़ौदा ६ नवम्बर सन् १८७४ ई० ॥ माईडियरसर, जो कुछ कि आपकी अदालत का हाल सुबह को मैंने आप से बयान किया था और जो वस्तु कि तुम यहां से लेगये उस को तुमने देखा होगा दया करके बताओ कि वह वस्तु विष है या और कोई वस्तु है यद्यपि मैं दो तीनघंट शरबतके पीने पाया परन्तु आधे घण्टे तक मेरे पेट और शिरमें पीड़ा होती रही और जी मतलाता रहा और मेरी दृष्टि कम होती गई यहांतक कि मेरी जिह्वा में कांटे पड़गये और मेरी जबान पर कषैलापन था मैंने इन सब बातोंसे जाना था कि ज्वर के कारण होगया है या शायद चकोतरह जिस का

शर्बत बनाया गया है खराब होगा परन्तु अब मालूम हुआ कि यह विष का सबब है और अगर मुझको यह मालूम होता कि इसमें विष है तो मैं उसको जरा न फेंकता और जब कि मैंने उस गिलास के नीचे तलछट देखी तो मुझको मालूम हुवा कि यह विष है॥

(दस्तखत करनैल आरफियर)

यह चिट्ठी गवाही में लीगई और उसपर (ए) लिखा गया फिर थोड़ी देर के उपरान्त डाक्टर सीवर्ड साहब मेरे पास आये और उन्होंने बयान किया कि मैंने इस तलछट में से संखिया मालूम किया है मैंने शीघ्र यह बात सुनकर एक तारबर्क़ी गवर्न्मेण्ट को दी कि मुझको विष दियागया यद्यपि मुझको तबतक यह मालूम न हुवाथा कि मुझको किसने विष दिया है तारबर्क़ी में यह लिखा हुवाथा कि मुझको किसीने विष दिया पर ईश्वर की अनुग्रह से मैं बचगया यह तारबर्क़ी मैंने डाक्टर सीवर्ड साहब की वार्त्ताकरने के उपरान्तभेजी थी अर्थात्एक और दो बजे के मध्य में भेजीथी फिर मैंने इस जहर दियेजानेकी तहक़ीक़ात करनी शुरु की और कई नौकरों को उस दिन मैंने क़ैदमें भेजा अर्थात् रावजी, हवालदार, और यलापा, और लक्ष्मण गोविन्दराम बापू आदि संध्या के समय पहिरे में भेजे गये थे और रजीडन्सी में सब लोगोंको मालूम होगया था कि करनैलफियरसाहब को किसी ने विष दिया है फिर मैंने उस तलछट को ग्रेसाहब के पास भेज दिया और बेवीसहब और मैंने मिलकर इस मुकद्दमेकी तहक़ीक़ात की महाराज फिर २० तारीख़को मेरे घरमें आये उसदिन उनके साथ उनके वज़ीर दादाभाई नूरूजी थे उन्होंने कहा कि मैंने सुना है कि आप को किसी मनुष्य ने विष दिया है जो कुछ कोशिश हमसे होसकेगी हम उसके करने में हाजिर हैं दादाभाई नूरूजी ने कहा कि हमने १० तारीख़ को यह ख़बर सुनी थी परन्तु हमको निश्चय न आया १२ तारीख़

को हमने सच जान कर आप से पूछा फिर महाराज घर को चलेगये और एक याददाश्त घर से लिखकर भेजी साहब ऐडवकेटजनरल ने पूछा कि तुमने कितना हिस्सा शर्बत का फैंकदिया था और जो कुछ कि फैंक दिया था क्या वहां की मट्टी को ग्रेसाहबके लिखने से खोदकर भेज दियाथा? उ०-हां साहबभेज दिया था। प्र०-क्या डाक्टरग्रेसाहबने मट्टीजमीन को खोदकर भेजने को खासकर तुमको लिखा था या डाक्टरसोवर्डसाहबको लिखाथा? उ०-डाक्टरसोवर्डसाहबकेद्वारा मुझको लिखाथा और मैंने आपही पृथ्वी खोदकर एकपाकिट बनाकर भेजदिया था और उसपर मैंने मोहर करदी थी॥

सरजनबेलनटाइनस हिब्र के प्रश्न॥

प्र०-करनैलफिथरसाहब बताइये कि क्या तुम १८मार्चको सुकर्ररहोकर बड़ौदेमें आयेथे?उ०-हां साहब। प्र०-पहिले तुमयहां से कहां सुकर्ररथे? उ०-पालनपुरमें। प्र०-पालनपुर से पहिले तुम कहां सुकर्ररथे उ०-मैं गुजरातमें था। प्र० तुम्हारा क्या ओहदा था? उ०-पोलीटीकल सुपरिण्टेण्डण्ट था। प्र०-इससे पहिले तुम कहांथे? उ०-मैं सिंध में था। प्र०-तुमने वह जगह कबछोड़ी? उ०-सन् १८७२ ई० में छोड़ी थीजब मैं बिलायत को गयाथा? प्र०-क्या इससे यह मतलब है कि तुम आप वह जगह छोड़ कर गये? उ०-तुम्हारा इससे क्या मतलब है। प्र०-मेरा यह मतलब है कि तुम छुट्टी लेके गये थे या और किसी तरहबिलायत को गयेथे? उ०-मैं छुट्टी लेकर गया था। प्र०-छुट्टी के पूर्ण होने के उपरान्त तुम आये तो फिर अपनी जगह पर क्यों क़ायम न हुये? उ०-कोई इसका सबब नहीं है। प्र०-क्या वह जगह तुम्हारी तख़फीफ में आगई थी? उ०-तख़फीफ में नहीं आई थी (फिर थोड़ी देर सोचकर कहा कि हां तखफीफ में आगई थी)। प्र०-मेहरबानी करके वही बात कहो जो अपनी उस जगह की निस्बत कहने को थे?

उ०—मुझे कुछ तुमसे उस बात के छिपा रखने की इच्छा नहीं है। प्र०—परन्तु तख़फीफ का कहना तो बिल्कुल ग़लत है तुम उस जगह से बरतरफ होगये थे? उ०—मुझ को नहीं मालुम कि मैं बरतर्फ होगया था। प्र०—क्या तुम्हारे पास कोई सनद गवर्न्मेण्ट की ऐसी नहीं पहुंची थी जिससे तुमको मालुम हुवा हो कि मैं बरतरफ होगया? उ०—जो सनद मेरे पास पहुंची थी उसका उत्तर मैंने गवर्नमेण्ट को लिख भेजा था। प्र०—तुमको मालुम है कि वह दस्तावेज़ महाराज या महाराज के वज़ीर के पास है? उ०—मैं खयाल करता हूं कि उनके पास नहीं होगी क्योंकि वह गवर्न्मेण्ट का रेज़ोल्यूशन है उसको यह ईमान्दारी से हासिल नहीं कर सक्ते। प्र०—हमारा मतलब ईमान्दारी और बेईमानी से नहीं है संसार में सब प्रकार के मनुष्य होते हैं अब यह बताइये कि उनके पास वह सनद है या नहीं—प्रेज़ीडण्ट साहब ने कहा कि करनैल फ्रियर साहब आप अप्रसन्न न हूजिये और प्रश्न उत्तर दीजिये? उ०—यदि वह दस्तावेज़ महाराज ईमान्दारी से हासिल करते तो साहब रेज़ीडण्ट के द्वारा लेते। प्र०—साहब यह उत्तर हमारे प्रश्न का नहीं है आपको ईमान्दारी और बेईमानी से क्या काम है इस बात का इजलास को अधिकार है आप साफ़ २ हमारे प्रश्न का उत्तर दीजिये कि कभी आपने सुना है कि उनके पास कोई ऐसी सनद है? उ०—नहीं। प्र०—क्या तुमको यह बात मालूम नहीं है कि उन्होंने सरल्यूइस पोली साहब को ऐसी सनद दिखाई थी? उ०—नहीं प्र०—अच्छा मेहरबानी करके इस काग़ज को अवलोकन कीजिये—इस बात को देख कर ऐडवकेट जनरल ने कहा कि सरजन्टबेलनटायन साहब को अधिकार नहीं है कि सनद को कारर्वाई यहां की कमीशन में पेश करें सरजन्टबेलनटायन साहब ने कहा कि मैंने खूब शोच समझ कर इस काग़ज को पेश

किया है और मैं इसके अन्तमें एक बड़ा मतलब गायकवार का निकालूंगा साहब ऐडवकेटजनरल ने कहा माई लार्डमैं आपका उस इश्तिहार पर ध्यान दिलाता हूं कि जिसमें श्रीगवर्न्नरजनरलने लिखा है कि मल्हरराव के पहले अपराध नहीं देखे जावेंगे करनैलफियर साहब को भी पिछली कारवाई ग़ौर करनेकेयोग्य नहींहै प्रेज़ीडण्टसाहब ने कहा कि यह तुम्हारी रायगौर तलब नहीं है सरजन्बेलनटायन साहब उस कारवाई को पेश करसक्ते हैं सरजन्बेलनटायन साहब ने कहा कि उसकी कारवाई ज़ाहिर करने से मेरा मतलब यह नहो है कि करनैल फियर साहब अप्रशस्त हों किन्तु मैं इतना चाहता हूं कि यह बात करनैल साहब मालूम करलें कि सनद की कारवाई को महाराज खूब जानते हैं साहब प्रेज़ीडण्टने सरजन्ट बेलनटायन साहब से पूछा कि आप यह कह सक्ते हैं कि यह रेज़ोल्यूशन महाराज के हाथ रास्त तौर से है उ०—मैं नहीं कह सक्ता। प्र०—जब तुम बम्बईमे थे तो तुमने किसी फरेब के मुकद्दमे की तफ़्तीक़ात कीथी? उ०—हां कीथी। प्र०—अच्छाकिस मुकद्दमेकी तफ़्तीक़ात की?उ०—मुझको याद नहीं। अच्छा इन बातों का जबाब वो सवालफिर हमतुम करलेंगे यहबताओ किवह रेज़ोल्यूशन तुमको ठीक वक्त पर दफ्तर से मिला था उ०—नहीं ठीक समय पर नहीं मिलाथा मैं उस समय इंगलिस्तानमें था ऐडवकेटजनरल ने कहाकि हमअभी तारबरक़ी बम्बई को देतेहैं और वहांसे सम्पूर्ण फैल मंगाये लेते हैं और फिर उस रेज़ोल्यूशन परबार्त्ता करेंगे। सरजन्बेलनटायन साहब ने कहा कि अच्छा यह बज़ुत खूब बात है। प्र० नवम्बर सन् १८७३ ई०में कोई कमीशन नियत हुई थी? उ०—हां हुई थी। प्र०—उसका प्रेज़ीडण्ट कौनथा? उ० जनरलमीड साहब थे। प्र०—वह कब पूर्ण हुई? उ०-२४ दिसम्बर को पूर्ण हुई। प्र०—क्या ७ मई को गायकवार का

बिवाह हुवा था? उ०—हां १७ मईको बिवाह हुवा था। प्र०—तो फिर यही तारीख़ आपके नाराज़ीकी मालूम करनी चाहिये? उ०—इन्हो तारीखों में खरीता लिखा गया था। प्र०—तुमको खबर है कि श्रीमान् वैसरायके पास १७ मईका कोई खरीता गायकवार ने भेजा था? उ०—हां भेजा था। प्र०—उस खरीते का उत्तर श्रीमान् गवर्नरजनरलबीरेश के पास से कब आया था? उ०—साहब २५ नवम्बर सन् १८७४को आया था और वह मेरे द्वारा आया था साहब प्रेजीडण्ट ने सरन्टेलनटायन साहब से कहा कि आपने वह सब खरीते और उसके उत्तर का आशय पढ़ा या नहीं? उ०—साहब मैंने नहीं पढ़ा वह सब पुलिस के हाथ में है। सरल्यू-इसपीली साहब ने कहा यदि आवश्यक हो तो आप पुलिस से मंगवा लीजिये? उ०—नहीं उसकी कुछ जरूरत नहीं है। प्र०—अच्छा यह बताइये कि महाराज के यहां कौन तारीख़ को पुचउत्पन्न हुवा था? उ० १६—अकटूबर को उत्पन्न हुवा और ८—मईको विवाह हुवा। प्र०—अच्छा हमको इस बात से कुछ प्रयोजन नहीं है यह क़ानूनी बहस है क्या आपके फोड़ा उन्हीं दिनों में हुवा था? उ०—हां साहब उन्हीं दिनों में हुवा था और डाक्टरसीवर्ड साहब मेरा इलाज करते थे। प्र०—क्या तुम्हारे पलास्टर लगाया था। उ०—हां साहब? प्र०—यह जो तुमने बताया कि मैं अलील रहा करता था और मेरे शिर में पीड़ा रहा करती थी और मेरा जी मतलाता था क्या यह उन्हीं दिनों की बातें हैं? उ०—हां साहब यह उन्हीं दिनों की बातें हैं। प्र०—क्या यह तुमको ख़याल हुवा था कि ग़र्बत का सबब है? उ०—नहीं कुछ यह ख़याल नहीं था प्र०—क्या तुम सब सर्बत को हर दिन पीजाया करते थे? उ०—कभी सब पीलिया करता था और कभी सब फेंक दिया करता था। प्र०—तुम को कुछ सन्देह हुवा करता था जो तुम फेंकदिया करते थे

उ०—मुझको चकोतरह ख़राब मालुम होता था और मैंने कई बेर अब्दुल्ला को ताक़ीद की थी और चकोतरे मंगाकर देखे थे तथाच कई बेर ख़राब चकोतरों को देखा। प्र०—तुमतो कहते हो कि ६ नवम्बर से मुझको संदेह हुवा और मेरे मुंहका स्वाद बदल गयाथा? उ०—नहीं यह मैंने नहीं कहा था। प्र०—तुमने कहा तो है कि मैंने दो तीन घूंट पीकर बाक़ी फेंकदिया? उ०—हां मैंने दोतीन घूंट पीकर बाक़ी फेंक दिया था। प्र०—पस मालूम हुवा कि तुम्हारी तबीयत ६ नवम्बर को ऐसी रही कि जैसे सितम्बर और अकटूबरमें रहा करती थी। प्र०—सातवीं तारीख़कोभी तुमने ग्रर्बत कुछ पीकर फेंकदिया था उ०—हां साहब फेंक दिया था। प्र०—तुमने आठवीं तारीख़ का जिक्र नहीं किया क्या तुमने आठवीं तारीख़को ग्रर्बत नहीं पियाथा? उ०—आठवीं तारीख़ में मैंने बिल्कुल ग्रर्बतनहीं पिया। प्र०—तुमने जो बयान कियाकि उस बस्तुमें गहरा रंगथा यह सहीं है? उ०—यह बात सही नहींहै। प्र०—अच्छा तुम यह बताओकि फिरक्या रंगथा? उ०—उसमें हलका भूरा रंग था। प्र०—१३ नवम्बर की चिट्ठी इजलासमें है वह किस्की लिखी हुई है? उ०—उस का आशय क्याहै। प्र०—उसका आशय यहहै कि तुमने किसी से सुना है कि तुमको विष दिया गया है और उसमें संखिया और हीरेकाचूर्ण और ताम्बा है? उ०—यह चिट्ठी मैंने अपने खबर देनेवालेसे पाईथी जो मुझको खबरें दिया करताथा। प्र० अच्छा नामबताओ कि वह कौन मनुष्य था? उ०—एक मनुष्य नहीं है बहुतसे मनुष्य खबरें दिया करतेथे। प्र०—वह खबरें किस विषय में तुमको दिया करते थे उ०—जो बातें मेरी तजवीज़ के लिये होती थीं उनबातों की यह लोग खबरें दिया करते थे और बहुधा उन लोगों से ज़ियादह मालूम होता था कि जो गायकवार पर नालिशो हुवा करते थे प्र०—वह मनुष्य किस स्थान पर तुमसे भेंट करते थे? उ०—कोई ख़ास

जगह नहीं थी। प्र०—वह लोग इन खबरों के सबबसे तुमसे रुपया भी पातेथे ? उ०—कभी नहीं। प्र०—ज़रा याद कीजिये शायद कभीऐसा ज़ुवाहो ? उ०—कभीऐसा नहीं ज़ुवा। प्र०—तुम्हारा इसमें क्या निश्चय है ? उ०—मुझको अच्छी तरह से विश्वास है कि कभी ऐसा नहीं ज़ुवा। प्र०—तुमने उस चिट्ठी में लिखाहै कि मुझको प्रतिष्ठितमनुष्यके द्वाराखबर पहुंचीहै वह कौन विश्वसित मनुष्यथा ? उ०—साहबबहुतसे मनुष्य हैं। प्र० जिस मनुष्य ने तुम से कहा था कि तुम को तीन वस्तुओं से विषदिया गयाहै तुमने उसका नाम क्योंनहीं लिख लिया था ? उ०—उस का नाम इस सबब से नहीं लिखा कि वह विश्वसित मनुष्य था और छिपी ज़ुई खबर थी और सिवाय इसके कुछ लिखने की जरूरत नहीं थी। प्र०—तुम भावपूना कर को जानते हो ? उ०—हां मैं जानताहूं। प्र०—क्या वह मनुष्य था जिसने तुम को खबर दी थी उ०—शायद वही होगा मैं मालूम करूंगा। प्र०—तुमको यह थोरीसी बात यादनहीं ? उ०—बहुतसे मनुष्य खबर देने वाले थे मुझको नाम याद नहीं है। प्र०—और कौन २ मनुष्य हैं जो तुम को खबर दे जाते थे ? उ०—एक यशवन्तराव था मेरे पास सम्पूर्ण मनुष्यों के नाम की सूची है जो मुझको खबरें दिया करते थे। प्र०—मुझको आपकी फेहरिस्त दरकार नहीं है परन्तु यह बताओ कि भाव पूनाकर और यशवन्त राव में से कौनसा मनुष्य था ? उ०—मुझको स्मर्ण नहीं परन्तु इन्हीं दोनों में से एक ने कहा था। प्र०—अब यह बताओ कि पहली कमीशन में भाव पूनाकर ने कुछ कारवाई गायकवार के प्रतिकूल की थी ? उ०—इस से आप का क्या मतलब है। प्र०—मेरा प्रश्न तो बिल्कुल साफ है परन्तु मुझ को नहीं मालूम कि आप मेरा प्रश्न क्यों नहीं समझते उ०भाव पूनाकरने निस्संदेह उस कमीशनमें गायकवारके प्रतिकूल खबरें दी थीं वह बड़ा प्रतिष्ठित मनुष्य है। प्र०—

मैं मानता हूं कि वह प्रतिष्ठित मनुष्य है परन्तु यह बताइये कि उसने गायकवारके प्रतिकूल खबरेंदी थींया गायकवार के फायदेकी? उ०—उसने गायकवार के प्रतिकूल एकभी खबर नहीं दी थी। प्र०—आप के रुतबे का आदमी हमारे प्रश्न का जवाब बखूबी दे सक्ता है आप यह बताइये कि वह खबरें गायकवार के प्रतिकूल थीं या गायकवार के वास्ते अच्छी थीं? उ०—गायकवार अन्याई मनुष्य था और भावपूनाकर नगर के रहने वालों का बड़ा हितैषी था सो लोगों की भलाई के लिये खबरें दिया करता था। प्र०—यह हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं है बड़े खेद की बात है कि आप हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं देते हैं? उ०—यह मनुष्य जो खबरें दिया करता था तो हमेशा गायकवार के प्रतिकूल नहीं हुवा करती थीं। प्र०—करनैल फियर साहब आप अपने रुतबे पर ख्याल करें आपऐसा बुद्धिमान हमारे प्रश्नोंका ऐसा उत्तरदे बड़ेअफसोस कीबात है? उ०—मैंने उत्तरतो दिया कुछ यह बात न थी कि हमेशा वह बरखिलाफ खबरें दिया करता था। प्र०—क्या सआदतअली की शिकायत गायकवार के अन्यायकी इसी शख्स ने तुमसे बयान की थी? उ०—सआदत अली ने खुदबयान की थी। प्र०—अच्छा करनैल फियर साहब सावधानी से जवाब दो क्या सआदत अली के मुकद्दमे की उसने पैरवी नहींकी थी? उ०—एक हुक्म गवर्नमेण्ट से आया था रिपोर्ट करने के वास्ते। प्र०—करनैल फियर साहब मेरे प्रश्नों पर किञ्चित् ध्यान दीजिये कि आया भावपूनाकर ने सआदत अली के मुकद्दमे की पैरवी की थीं या नहीं? उ०—जहां तक कि मैं जानता हूं कह सक्ता हूं कि उसने पैरवी नहीं की क्योंकि पैरवी का शब्द बहुत पुरमानी है उसका मुकद्दमा तो बहुत दिन से पेशी में था वह इस मुकद्दमे में के विषय में बहुधा खबरें दिया करता था। प्र०—तुमको इस बातके कहने में कोई सन्देह तो नहीं है? उ०—हम को

कोई सन्देह नहीं है बेशक सआदतअली के मुक़द्दमे में भावपूनाकर ने बड़ी मदद दी थी। प्र०—तांबे के निस्बत तुमसे भावपूनाकर ने क्या कहा था? उ०—मुझको याद है कि उसने कहा था कि तुम्हारे ज़हर में सङ्खिया और हीरे का चूरा और तांबा मिला था। प्र०—क्या केवल यही ख़बर तुमको मिली थी? उ०—हां यही ख़बर मिली थी। प्र०—तुमने भाव पूनाकर से पूछा था कि तुमको यह ख़बर क्योंकर मिली? उ०—मैंने नहीं पूछा किन्तु मैंने इस ख़बर को एक बाज़ारी गप समझा। प्र०—अभी तो तुमने कहा था कि यह बड़ी मोतबिर ख़बर है फिर बाज़ारी गप क्योंकर थी? उ०—मैंने इसलिये कहा था कि मैं उसको प्रकट न करूं। प्र०—क्या तुम्हारे शर्बत में तांबा भी था? उ०-तांबा नहीं था परन्तु मेरे मुंह में तांबे का स्वाद आगया था। प्र०—क्या शर्बत पीने के पीछे तुम्हारे मुंहमें स्वाद आ गया था? उ०—हां शर्बत पीनेके पीछे जब मैंने चुरट पिया है उसके पीछे तांबे का स्वाद आगया था। प्र०—क्या चुरट मेंभी तांबेका स्वाद होता है? उ०-नहीं चुरट मेंतो नहीं होता है परन्तु शायद सङ्खिया खानेके पीछे चुरट पीने से स्वाद ऐसा हो गया हो। प्र०—यह स्वाद तुम्हारे मुंहमें कबतक रहा? उ०—बीस मिनट तक। प्र०—तुमने शर्बत पीने के कितनी देरके पीछे बक़ी शर्बत फेंका था? उ०—कोई आध घण्टे के पीछे। प्र०—मालूम होता है कि तुमने बेस्वाद होने के कारण बाक़ी शर्बत फेंक-दिया होगा? उ०—हां। प्र०-क्या ६ और ७ को तुम्हारे मुंहका स्वाद६तारीख़के सदृश होगया था? उ०—नहीं। प्र०-फिर तुमने आठवीं तारीख़ को शर्बत क्यों नहीं पिया? उ०-ईश्वर का ही अनुग्रह था कि मैंने नहीं पिया नहींतो मरजाता। प्र०—परन्तु अदालतों में तो सबब पूछा जाता है तुम भी कोई सबब बताओ? उ०-कोई सबब नहीं। प्र०-तो क्या तुमने बे सबब नहीं पिया? उ०-यही सबब है कि ६

और ७ तारीख़ को मेरा चित्त अच्छा नहीं था इसी सबब से ट को नहीं पिया। प्र०—कोई और सबब नहीं है? उ०—मेरे विचार में कोई सबब नहीं है। प्र०—तुमने रावजी के इज़हार लिये थे? उ०—हां लिये थे। प्र०—क्या उसने फैज़ का नाम लिया था? उ०—हां लिया था—फिर टिफन का समय आगया और जलसा बरखास्त हुवा टिफन खाने के पीछे फिर प्रश्न पूछने शुरू होगये। प्र०—भावपूनाकर तुम्हारे पास क्यों आया करता था? उ०—साहब मुलाकात करने को आया करता था। प्र०—क्या वह तुम्हारे पास दफ़्तर के वक्त आया करता था? उ०—आया करता था। प्र०—क्या तुम्हारी ग़ैरहाजिरी में भी आया करता था? उ०—नहीं आया करता था। प्र०—कभी तुमने उसको अपने पीछे भी आकर पाया था? उ०—नहीं पाया। प्र०—साहब कुछ सोच कर जवाब दीजिये? उ०—हां कभी ऐसा होता था कि अगर मैं इस्कूल को गया तो वह आकर मेरी मुलाक़ात के वास्ते ठहरजाता था। प्र०—इससे क्या यह बात साबित है कि अगर तुम कभी बाहर गये और वह तुम्हारी मुलाक़ात को आया तो तुम उसको आकरघरपर पाते थे? उ०—कभी सुबह को जब मैं हवा खाके आया तो उसको मैंने आया-हुवा नहीं पाया। प्र०—मेरा मतलब आपके सुबह के हवाखाने से नहीं है मेरा मतलब यह है कि कभी आपने बाहर से आकर उसको बैठाहुवा पाया या नहीं? उ०—कभी नहीं। प्र०—अच्छा यह बताओ कि वह तुम्हारे पीछे कभी आता था तो तुम्हारे बरामदे में आकर बैठा-करता था या नहीं? उ०—हां बैठा रहता था। प्र०—तो मालुम हुवा कि कभी वह तुम्हारे पीछे तुम्हारे खास कमरे में भी चला आता होगा? उ०—नहीं मेरे कमरे में नहीं आ सक्ता था। प्र०—२ नवम्बर के खरीते के विषय में कुछ भावपूनाकर ने कहा था? उ०—मुझसे कुछ

नहीं कहा था। प्र०—तुमने उसके विषय में कब सुना था? उ०—मैंने सुनाथा मगर यह याद नहीं कि कब सुनाथा। प्र०—अच्छा आप याद कीजिये? उ०—एक दो रोज पहिले सुना था परन्तु मैं ठीक२ नहीं कह सक्ता हूं। प्र०—भाव पूनाकर को कुछ उसके विषय में खबर थी? उ०—मुझको खबर नहीं। प्र०—एक खरीता जो श्रीमान् नव्वाब गवर्न्नर जनरल के यहां से आया था उसके जवाबके बारेमें कुछ इसने कहा था या नहीं? उ०—हां कहा था। प्र०—उसे कहां से खबर मिली? उ०—यह बात मैंने उससे नहीं पूछी प्र०—उसने तुम से क्या कहा था? उ०—उसने कहा था कि एक खरीता जो गवर्न्नर जनरल के यहां से आया है उसका उत्तर महाराज के यहां से लिखा जाता है। प्र०—क्या उस जवाब में तुम्हारी शिकायत की थी? उ०—मुझको खबर नहीं। प्र०—क्या भावपूनाकर ने उसकी इत्तिला तुमको नहीं दी? उ०—इसकी इत्तिला नहीं दी। प्र०—करनैल फियर साहब क्या आप सौगन्द खा सक्ते हैं कि इस की इत्तिला उसने आपको नहीं दी? उ०—हां मैं सौगन्द खा सक्ता हूं कि इसकी इत्तिला उसने नहीं दी। प्र०—फिर आपको क्योंकर मालूम हुवा कि उस में आपकी शिकायत थी? उ०—मेरा ऐसा विचार है। प्र०—भावपूना कर क्या जासूस था जो तुम को खबरें दिया करता था? उ०—नहीं वह बड़े रईस का एजन्ट है और बहुत प्रतिष्ठित मनुष्य है। प्र०—वह किस रईस का एजन्ट है? उ०—मीर इब्राहीम अली का एजन्ट है। प्र०—वह तुमको क्यों खबरें देने आया करता था? उ०—वह बहुधा रजीडन्सी में मीर जुलफिक़ार अली के काम के वास्ते आया करता था और उस जिक्र में इसका भी जिक्र कर दिया करता था। प्र०—जिस दिन तुमको जहर दिया गया तुमको मालूम है कि वह आया था? उ०—हां वह आया था। प्र०—क्या तुमने उससे

कुल हाल कह दिया था ? उ०—नहीं कहा था। प्र०—तुम से तांबे के निस्बत उसने किस तारीख़ को कहा था ? उ०—बारवीं या तेरवीं तारीख़ कहा था। प्र०—तुम को पूनाकर को देखे कुये कितने दिन कुये ? उ०—कलही मुझसे उससे मुलाक़ात कुई है। प्र०—तुमने उससे कुछ कहा तो नहीं ? उ०—मैंने उससे यह पूछा कि तुमने मुझको ख़बर दी थी कि तुमको संखिया और हीरेका चूर्ण और तांबे से ज़हर दिया गया है उसने कहा कि हां मैंने कहा था॥

सरजन्टवेलनटायन साहब के प्रश्न पूर्ण कुये॥

ऐडवकेटजनरल ने कहा कि मैंने बम्बई को फैलके मंगाने के लिये तारबरक़ी भेजीहै अब मैं करनैल फियर साहबसे दुबारह तब प्रश्न करूंगा कि जब सरजन्टवेलन टायन साहब के प्रश्न सब ख़त्म होजावेंगे—प्रेजीडण्ट साहब ने कहा कि नहीं तुम अपने प्रश्न करलो और सरजन्टवेलन टायन साहब फियर साहब से फिर प्रश्न करलेंगे॥

फियर साहब से इज़हारात फिर लिये गये॥

प्र०-खरीता कौन सी तारीख़ को लिखा गया था ? उ०-९ तारीख़ को। प्र०—क्या तुम नौसारी को गवर्न्मेण्ट की आज्ञा से नहीं गये ? उ०-गवर्न्मेण्ट की आज्ञा से मैं वहां नहीं गया। प्र०—तुम्हारे इस न जाने को गवर्न्मेण्ट ने पसन्द किया ? उ०—हां पसन्द किया। प्र०—महाराज ने जो दादा भाई नूरूजी को अपना दीवान किया था तो उसमें तुम्हारी सलाह ली थी या नहीं ? उ०—हां साहब पहले उन्होंने मुक़र्रर कर लिया था फिर खरीते के द्वारा मुझको इत्तिला दी थी। प्र०—जबसे दादा भाई नूरूजी मुकर्रर कुये थे और उन्होंने प्रबन्ध के लिये किसी तरह की सहायता मांगी तो तुमने उनको सहायता दीथी ? उ०—हां साहब दी थी। प्र०—कभी दादा भाई नूरूजी ने उसकी शिकायत की थी कि फियर साहब हमको मदद नहीं देते

है ? उ०—कभी नहीं किन्तु कई बार उन्होंने मेरी सहायता देने का गुण माना। प्र०—तुमने अभी कहा है कि कई आदमी मेरे पास खबरें लाते थे क्या वह योंहीं आते थे या तुम कुछ उनको देते थे ? उ०—मैं कुछ भी नहीं देता था। प्र०—उस खरीते में जो महाराज ने तुम्हारी शिकायत लिखी थी वह सहीह है ? उ०—बिल्कुल गलत है। प्र०—तुमसे उस खरीते के निस्बत महाराज से कुछ बातें हुई थी ? उ०—मैंने उनसे बड़ा अफ्सोस जाहिर किया था कि तुमने मेरी शिकायत बिल्कुल झूठ लिखी और उन्होंने भी बड़ा अफ्सोस किया और कहा कि वास्तव में आपकी शिकायत झूठ लिखी गई मेरा कुछ अपराध नहीं दादा भाई ने आपकी शिकायत लिखी और मैंने जो उनको मना किया तो उन्होंने उत्तर दिया कि जब तक सम्पूर्ण कारवाई मेरे सुपुर्द न करोगे तब तक इत्मिनान बिल्कुल न होगा। प्र०—उस शर्बत में सिवाय अरक चकोतरे के और भी कोई वस्तु थी ? उ०—और कुछ वस्तु न थी सरजन्टबेलन टायन ने पूछा कि क्या तुमने उस खरीते को अपने उत्तर के साथ भेजा था ? उ०—हां मैंने अपने जवाब के साथ खरीता भेजा था॥

अनवरारटी साहब ने डाक्टर मोवर्ड साहब के इजहारात लिये

उन्होंने बयान किया कि मेरा नाम जार्ज अडोने सार्ट साहब है मैं बम्बई के फौज का डाक्टर हूं और मैं बड़ौदे की छावनी की मजिस्ट्रेटी का काम करता हूं मैं सितम्बर महीने से यहां रहता हूं जब कि करनैल फियर साहब के सिरमें फोड़ा था मैं उसका इलाज करता था—साहब प्रेजीडण्ट ने पूछा कि क्या फोड़ा उनके सितम्बर के महीने में निकला था ? उ०—मुझको याद नहीं॥ गवाह वर्णन करता है कि मैं उनके फोड़े का इलाज करता था मुझको ९ नवम्बर का हाल मालूम है मुझको एक चिट्ठी फियर साहब ने लिखी थी परन्तु इस वक्त मेरे पास कोई चिट्ठी नहीं है जब कि मैं रजीडन्सी

में आया तो मैंने दो नोकरों को बरामदे में बैठे हुये पाया नरसू ने मुझको हमेशा के तौर पर सलाम नहीं किया हमेशा जो मैं आता था तो मैं नरसू से कुशल पूछता था और वह मुझको झुक २ कर सलाम करता था परन्तु इसबेर उसने प्रति कूल किया और रावजी ने मेरा छाता और टोपी जल्दी से ले लिया रावजी कभी छाता नहीं लेता था यह बात भी मुझको नई मालूम हुई और मैं कर-नैल फियर साहब के कमरे में गया और वहां मैंने उनको पाया और करनैल फियर साहब ने मुझसे कहा कि मुझको किसी ने जहर दिया है देखो इस गिलास में तलछट जमा है और सब कैफियत अपने मिजाज की वर्णन की मैं उस तलछट को लेकर अपने घर चला आया करनैल फियर साहब ने मुझको वह भी जगह दिखाई जहांबाक़ी शर्बत फेंक दिया था मैंने देखा कि कोई पतली वस्तु वहां फेंकी गई है फिर मैने रावजी नरसू को बाहर जाने के समय भी उसी जगह बैठे पाया और रावजी ने फिर जल्दी से उठ कर मेरी टोपी और छाता देदिया और वह आदमी जो मेरे बुलाने के वास्ते गया था उसको मैंने रानी के पुल के पास पा मालुम हुआ कि वह उधर से आता है मैंने उससे एक दो सवाल किये उसने मुझको जवाब दिया फिर मैंने दो सवारों को महाराज की रवीडन्सी में जाते देखा उसमें से मैं एक को पहिचानता हूं उसका नाम यशवन्तराव है॥

अब साढ़े चार बजगये थे इस कारण मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा कि जो और प्रश्न किये जावेंगे तो बहुत देरी होगी इस कारण जलसा बरखास्त हुवा॥

छठे दिन का इजलास।

आज ११ बजे कमीशन का इजलास शुरू हुआ कमीशन के सम्पर्ण मेम्बरान मौजूद थे सरल्यूइसपीली साहब बीमारी

के कारण से नहीं आये श्रीमान् मल्हरराव टिफन के उपरान्त कमीशन में आये॥

पहिली रीतिके अनुसार ऐडवकेट जनरल अर्थात् सरकार के मुख्य वकील और मिस्टर अनवरारटी साहब मिस्टर बरन साहब की हिदायत से और मिस्टर क्लीवलैण्ड साहब और मिस्टर लेवारनर साहब श्रीज़नर वैसरायके ओर से उपस्थितथे और सरजन्टबेलनटायन साहब और मिस्टर ब्रैन्सन साहब और मिस्टर परसल साहब और मिस्टर शान्तारामनारायण, मिस्टर जाफरसन साहब की हिदायत से और बेलनटायन साहब गायकवार की तरफ से थे मिस्टर बासुदेवाजगन्नाथ वकील हाईकोर्ट श्रीमान् गायकवार की ओर से मुक़द्दमे को देख रहे थे॥

मिस्टर जार्ज्जटेलर साहब और मिस्टर जी, ऐम, बेगली साहब दोनों रानियों और महाराजासाहब की बेटीके ओर से हाज़िर थे॥

कलके दिन श्रीमान्महाराजासेंधिया भी हाज़िर थे और जो उनका चित्त कुछ उद्विग्न था वह जाता रहा श्रीमान् महाराजा सेंधिया सफेद पोशाक पहिने हुयेथे और उसके किनारोंपर सुनहरी कारचोबी काम था महाराजा साहब के गले में दो हार थे एक हार बड़े २ जमुर्रद के टुकड़ों काथा और दूसरा हार मोतियोंका था जिसमें तीन लड़ियां थीं उसहार में एक धुगधुगी बड़े २ हीरों की जड़ी हुई थी दूसहार में एक बड़ा जमुर्रद भी था बायेंकानमें एक गुच्छा बहुमूल्य मोतियोंका था और दहिने कान में केवल दोतीन मोतीथे हाथों में हीरे के जड़ाऊ कड़े थे और दहिने हाथ में एक हीरेकी अंगूठी थी जिसमें एकहीरा माजफलके बराबर था बायें हाथ में एक अंगूठी थी उसमें जमुर्रद बहुत बड़ा जड़ाऊवा था निदान वह बिल्कुल जवाहरात और रत्नों में जगमगारहे थे यह पोशाक महाराजा साहब की वही थी

जो रोज़मर्रा पहिना करते हैं और किसी बातका उनको ख़याल नथा वह करनैलफ्रियर साहब के इज़हार का तर्ज़ुमा जो हिंदुस्तानी ज़बान में हुवा था देख रहे थे आजके दिन केवल डाक्टरसीवर्डसाहब और डाक्टरग्रेसाहब के इज़हार लिये गये इनदोनों डाक्टर साहबों के इज़हार से साबित हुवा जो तलछट गिलास में रहगया था और गिलास का शर्बत करनैल फ्रियर साहब ने फेंक दिया था वह सफेद संखिया और पिसा हुवा हीरा था डाक्टर सीवर्ड साहब ने वह हाल भी बयान किया जो आया ने अस्पताल में कहा था॥

जिस समय अदालत एकत्र हुई तो डाक्टरसीवर्डसाहब बुलाये गये मिस्टर अनवरारटी साहब ने नीचे लिखे हुये प्रश्न किये॥

प्र०—डाक्टरसीवर्डसाहब आपको याद होगा कि शनिवार को आपने कहांतक इज़हार दिये थे कि आपगिलास लेकर जिसमें तलछट था अपने मकान पर आये फिर उसको क्या किया आपने उस तलछटके क्या जुज़ अलग २ कियेथे? उ०—मैंने उस गिलास को किताब की अलमारी में रखकर बन्द करदिया था॥

सरजन्टवेलनटायन साहबने कहा कि कुछ ज़ोर से वर्णन कीजिये क्योंकि आप की गवाही अति आवश्यक है मुझको अफ़्सोस है कि मैं आप की गवाही में दखल देता हूं। प्र०—मिस्टर अनवरारटी साहब—क्या आपने गिलास को उस समय तक बन्द रक्खा जबतक आपने तलछट के जुज़ अलग करने के वास्ते उसको मंगाया था? उ०—हां बन्दरक्खा। प्र०—क्या आपने अलग किया—अभी प्रश्न पूरा नहीं हुआथा कि सरजन्टवेलनटायन साहबने खड़े होकर कहा कि आप पूछिये कि उन्होंने उस तलछट को क्या किया? उ०—मैंने कुछ ताज़े कोयले मंगवाये लेकिन कोयलों के मंगवाने से पहिले इस तलछट मेंसे थोड़ी तलछट को एक शीशे के टुकड़े पर

रक्खा और खुर्दबीन से देखा। प्र०—इस तलछट की क्या सूरत थी? उ०—मुझको सफेद २ जर्रे कोनेदार देख पड़े जैसे सफेद पत्थर पिसा हुआ होता है। प्र०—आपको कोई वस्तु और भी मालूम हुई? उ०—हां कुछ चमकती हुई वस्तु थी। प्र०—प्रेज़ीडेण्ट का—यह वस्तु सफ़ेद थी? उ०—हां सफ़ेद और उज्वल और एक दो जर्रे इस ही मिलेजुले किसी वस्तु के थे सिवाय इसके खुर्दबीन से और कोई वस्तु मालूम न हुई फिर मैंने इस तलछट को बिल्लौर के हावनदस्ते में जिस को मैंने खूब साफ करलिया था डाला और थोड़े कोयले भी उसमें डालकर दोनों को पीसा और फिर एक नली में जो इस प्रकार की वस्तु के इम्तहान के वास्ते मुक़र्रर है डाला यह नली बिल्कुल नई थी और पहिले उसमें किसी चीज़ का बर्त्ताव न हुवा था मैंने इस नली को इसपरिटस आफवाइन (अर्थात् वह शराब जो सफा करती है) में गर्म किया उसमें किसी क़दर नमी आगई थी मैंने नमीको ब्लाटिङ्ग कागज़ से सुखाया फिर नली को मैंने गर्म किया जब खूब गर्म होगई तो एक छल्ला धातके सदृश उसमें मालूम हुवा यह छल्ला मेरे पास मौजूद है और उसको मैं पेश करता हूं। प्र०—प्रेज़ीडेण्ट क्या आपने धातका छल्ला कहाथा? उ०—हां धात काछल्लाकहिये-कियह कि गर्महे।नेसे सम्पूर्णवस्तुइकट्ठीहोगई देखिये इस नैमें यह छल्लासा है जो एकतिहाई इंचका चौड़ा है इस नैपर (एम) अक्षर का निशान है इस नै के गर्म करने के पीछे फिर मैंने देखाकि कोई साफचीज़ छल्लेके दोनोंओर इकट्ठी होगई है जब मैंने खुर्दबीन से उसको देखा तो वह वस्तु बहुत चमकती हुई देखपड़ी इससे मालूमहुवा कि वह संखिया है मैंने यह कोयला अस्पताल से मंगवाया था इससे अधिक उसरोज मैंने कुछ इम्तहान नहीं किया मेरे पास इस प्रकारकी चीज़ोंके इम्तहान के वास्ते कुछ दवाइयां नहीं हैं जो चिट्ठी कि अदालत में मौजूद है वह करनैल फियर

साहबने मुझको भेजीथी उसवक्त मैं रवीडन्सी को जाता था मैंने अपने इम्तहान और इस तलछट के जुज़ोंके अलग करने का नतीजा करनैलफियरसाहब से बयान किया और मैंने जो चिट्ठी करनैल फियर साहब को लिखी थी वह उन्हीं के पास बैठकर मिस्टर वोबीसाहब के सामने लिखी॥

मिस्टर अनवरारटीसाहबने अदालत में बयान किया कि यह चिट्ठी रज़ीडन्सी के सरजन्ट के तरफ से साहब रसीडेण्ट केनाम है उस पर (ऐन) अक्षर का निशान है और उसका आशययह है॥

साहब—आपकी चिट्ठी के उत्तर में जो मैंने इसवक्त एक बजे पाई रपोर्ट करता हूं कि जहांतक मैंने इस गिलास के तलछट का इम्तहान किया जो आपने आज मुझको इम्तहान के वास्ते दियाथा तो मालूम हुवा कि वह तल-छट संखिया है॥

यह संखिया इतनी थी कि मैंने उसका इम्तहान कोयले से किया और संखिया का होना मुझको मालूम हुवा॥

वह छल्ला जोनैमें पड़ा हुवा है और छल्ले के दोनों ओर जो उज्वल वस्तु है यह खास संखिया होने का असर है॥

मेरी इच्छा है कि गिलासके इस बाक़ी तलछट को डाक के द्वारा गवर्न्मेण्ट के डाक्टर के पास भेज दूं जो ऐसी चीजों का इम्तहान किया करता है॥

अगर आप गिलास का सब शर्बत पीजाते तो आप के मरने के वास्ते काफी था॥

(दस्तख़त जी—एडवनसीवर्ड रवीडन्सी सरजन)

६ नवम्बर सन् १८७४ ई०

बड़ौदा।

फिर डाक्टरसाहबने वर्णन किया कि बाक़ी तलछट को मैंने ब्लाटिङ्ग कागज के ऊपर रखकर छाना और कुछ तलछटजो गिलास में रहगया था उसको भी पानी में डालकर छान

लिया इस उपाय से पानी छूनगया और तलछट कागज के ऊपर रहगया मैंने इस कागज को एक जलतीऊई लम्पकी चिमनी के पास रखकर सुखाया जब यह कागज सूखगयातो मैंने उसको तह करके एक लिफाफे में रक्खा और यह लिफाफा जो अदालत में है यहीहै और यही मेरी मुहरहै जो इस पर मैंने लगाई थी प्र०—क्या यही ब्लाटिङ्ग कागज है जिसपर आपने तलछट को छाना था ? उ०—हां यही है और इस लिफ़ाफे की पीठ पर जो लिखा है वह मेरे हाथकालिखा हुवा है और भोजन के समय यह लिखा था और रजिस्ट्री के द्वारा डाकमें भेजा था और यह लिफाफा भेजनेके पहिले एक दूसरे बड़े लिफ़ाफे में बन्द करके उसपर अपनी मुहर लगाई और डाक्टर ग्रे साहब के पास उसको भेजदिया ॥

मैंने डाक्टर ग्रे साहबको आप चिट्ठी नहीं लिखी थी किन्तु करनैल फियर साहब को चिट्ठी उसमें रखके भेजदी थी लिफ़ाफे भेजने के समय लाल स्याहीसे करनैलफियर साहब की चिट्ठी पर कैफियत लिखदी थी कि गवर्न्मेण्ट के डाक्टर के पास जो हर वस्तु के जुज निश्चय करते हैं यह लिफाफा भेजा जाता है ॥

(दस्तख़त—जी० आई० सीवर्डसाहब)

६ नवम्बर सन् १८०४ ई०।

इसलिाफ़फ़े को भी मैंने उसी मुहर से बन्दकिया जिससे छोटे लिफ़ाफे को बन्दकिया था ॥

मिस्टर अनबरारटी साहब ने अदालत के सामने वर्णन किया कि इनदोनों लिफ़ाफोंपर अलग २ अक्षरोंके चिह्नकिये जावें अर्थात्(ओ)अक्षर और (पी) कि आगे को निशान रहे तथाच अदालत से इजाजत हुई और (ओ) और (पी) का निशान उनलिफ़ाफोंपर कियागया ॥

डाक्टर साहब ने वर्णन किया कि इस चिट्ठी का नीचे लिखाहुआ उत्तर मेरे पास आया ॥

माईडियर सीवर्ड मैंने आपकी चिट्ठी एक और लिफ़ाफे समेत पाई अर्थात् डीमी आफीशियल करनैल फियरसाहब की चिट्ठी और एक छोटी पुड़िया जिसमें भूरे रङ्गकी कुछ वस्तु थी और उसमें कोई वस्तु पीली चमकती हुई भी थी॥

तथाच मैंने उसका इम्तहान किया तो मालूम हुवा कि इसमें सफेदसंखिया और कोई चमकती हुई वस्तुहै खुर्द-बीन से मालूम हुवा कि यह पिसा हुवा शीशा या संगखारा है वह बहुधा संगखाराके सदृश है कोई २ जर्रोंका रंग गुलाबी और जदा था यदि आपकी इच्छा हो तो सरकारी रीति से उसका उत्तर दूं॥

मैं करनैलफियर साहब की चिट्ठी लौटाता हूं और पुड़िया को अपनी चिट्ठी के उत्तर आने तक रखलिया है॥

(दस्तख़त डब्ल्यू ग्रेसाहब)

क़ायममुक़ाम कमीकल आनर लाइज़र गवर्न्मेण्ट यानकालेज मुक़ाम बम्बई लिखा हुआ ११ नवम्बर सन् १८७४ ई०॥

डाक्टर सीवर्ड साहबने यह भी वर्णन किया कि मैंने कई दिन के पीछे तलछट की और भी परीक्षा की मैंने उस वस्तु को जो नली में इकट्ठी होगई थी निकालकर थोड़े पानी में डाला उसमें जो वस्तु भारी थी वह पानी के नीचे बैठ गई और जो हलकीथी वह पानीके ऊपर तैरने लगी जो वस्तु पानी के ऊपर तैरती थी उसको मैंने दो तीन बार करके उतारा और अब उसको शीशे के टुकड़े में पेशकरता हूं साहब-प्रेजीडेण्टने प्रश्न किया कि यह क्या तुमने कहा कि तीन दफ़ा करके उतारा? उ०—नहीं माई लार्ड कई मर्त्तबा करके॥

साहब प्रेजीडेण्ट ने उस समय कहा कि मिस्टर अनवरारटी साहब दयाकरके तुम एक ओर होजाओ तो डाक्टर साहब का वर्णन हम अच्छी तरह सुनें॥

पंखे रोक दिये गये ताकि वह अजज़ा जो डाक्टर साहब पेश करते हैं उड़ न जावें॥

डाक्टर सीवर्डसाहब ने बयान किया था कि यह शीशी के टुकड़े जो अब मैं पेश करताहूं वह हैं जिसपर कि मैंने गिलास का तलछट रखकर खुर्दबीन से देखा था (यह तीन टुकड़े शीशे के सन्दूकमें बन्द थे जिसपर (आर) अक्षरका निशान है) प्रथम टुकड़ा शीशेका वह है जिसपर कि मैंने गिलास का तलछट रक्खा था दूसरा टुकड़ा शीशे का वह है जिसको पहले टुकड़े पर रखकर तलछट को रगड़ाथा देखिये यह शीशा छिलगया और उसका यह निशान है रगड़ने से पहिले यह निशान शीशे पर न थे इससे यहबात मालूम हुई कि जो जर्रे चमकते हैं वह किसी और वस्तुके हैं शीशे के जर्रे नहीं हैं और निश्चय करके यह हीरेका चूर्ण है जिसका हाल मैंने पहिले भी सुना था सिवा इसके यह जर्रे बहुत चमकते थे। प्र०—डाक्टरसाहब मैंने सुना है कि आपके पास कुछ खबर आई थी उस खबर की इत्तिलाअ १० नवम्बर को करनैल फियर साहब को आपने की थी॥

साहब प्रेजीडेण्टने पूछा कि यह खबर तुमने पाई थी या डाक्टरग्रेसाहब ने- मिस्टर मैलब साहब ने कहा कि मिस्टर ग्रे साहब कहिये मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा कि नहीं डाक्टर सीवर्डसाहब इसपर साहब-प्रेजीडण्ट बोले कि डाक्टर ग्रे साहब का नाम आपने भूल से लिया था॥

मिस्टर अनवरारटी साहब-हां मैंने भूल की थी क्षमा चाहता हूं मेरा प्रयोजन डाक्टरसीवर्ड साहब के कहनेसेथा॥ डाक्टर सीवर्ड साहब ने बयान किया कि यह चिट्ठी जो अदालत में पेश है इसकी इत्तिला करनैल फियर साहब को सरकारी रीति पर भेज दीगई थी॥

मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा कि माईलार्ड—मैं इच्छा रखता हूं कि इन सब चिट्ठियों पर पहिचान्ने के वास्ते चिह्न कर दिये जावें॥

सरजनवेलनटायन साहब—नहीं मेरे विचारसे जो ऐसा

होगा तो ग़लती होगी जब तक हर एक चिट्ठी आदि की सचाई न होजावे उस पर निशान न किया जाय क्योंकि चिट्ठियां बहुत हैं कहां तक निशान किये जांयगे॥

साहबप्रेजीडण्ट ने कहा बहुत अच्छा जब तक सिदाकत न हो निशान न किया जाय। प्र०—मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा डाक्टर सीवर्ड साहब—आपने शनिवार को कहा था कि आपने जब करनैल फियर साहबका गिलास देखकर हिलाया तो उसमें से धुवां सा उठा था तो क्या उस धुयें के उठने से भी कोई बात मालूम हुई थी? उ०—जब से यह गिलास मेरे पास आया था उस वक्त से किसी ने इस गिलास को हाथ नहीं लगाया था मैंने आपही औज़ारों के द्वारा उसकी परीक्षा ली थी। प्र०—मिस्टर अनवरारटी साहब अब मैं दूसरी बात आपसे पूछता हूं आपको याद है कि अमीना आया का इलाज आपने किया था अगर आपके विचार से उचित हो तो अपनी किताब देखकर बयान कीजिये? उ०—अमीनाका इलाज शायद १७ और१८ तारीख़को मैंने किया उसके दाहिनी ओर बहुत पीड़ा थी और उसको बुख़ार भी था और मालूम होता था किउसके कलेजे में कोई रोग था और उसका फेफड़ा भी खराब होरहा था और अस्पताल के जाने से पहिले मैंने उसको देखा था मिस्टर बेवी साहब के हाते में वह रहा करती थी मेरी रायसे वह अपने मकान से अस्पताल को गई मुझसे और उससे अस्पताल में कुछ बातें हुईं सरजन्ट बेकनटायन साहब ने कहा माई लार्ड मैं नहीं जानता क्या आपके यह सवालात किस तरह इख़्तियार में दाख़िल हो सक्ते हैं इस बारे में कुछ सवाल न करना चाहिये। प्र०—मिस्टर अनवरारटीसाहब ने कहा कोई सन्देशा आया का आप किसी के पास ले गये थे? उ०—मैं कोई सन्देशा किसी के पास नहीं लेगया केवल सूटर साहब को बुलाया था। प्र०—सूटर साहब के

पास आप किस वास्ते गये ? उ०—मुझको मालुम हुआ कि आया बहुत बीमार है, मैंने समझा कि शायद उनसे आया कुछ कहेगी और अपना दिल हलका करेगी और आया से मैंने यह भी कहा था कि अगर अपने दिलका हाल कहेगी तो जल्द आराम होजावेगा तथाच उस समय आया ने मुझसे कुछ कहा था इसी कारण मैं मिस्टर सूटर साहब के पास गया मुझको मालुम नहीं कि मेरे जाने के पीछे मिस्टर सूटर साहब अस्पताल में आये या नहीं मुझको याद नहीं कि किस तारीख़ को मिस्टर सूटर साहब के पास मैंगया था क्योंकि मैंने अपनी याद्दाश्त की किताब में नहीं लिखा निश्चय करके १८ नवम्बर से दो तीन दिन पीछे होगा ॥

सरजन्टबेलन टायन साहबने कहा कि माईलार्ड हमारे पास तारीख़ है-अर्थात् २१ तारीख़ है ॥

मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा यह वह तारीख़ है जब कि मिस्टर सूटर साहब अस्पताल को गये थे परंतु वह तारीख़ नहीं है जिस तारीख़ को डाक्टर सीवर्ड साहब मिस्टर सूटर साहब के पास गये थे ॥

सरजन् बेलनटायन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—आप जानते थे कि आया के इजहार मिस्टर सूटर साहब ने लिये—अभी सवाल पूरा न हुवाथाकि गवाहने कहा हां सरजन्ट साहबने कहा कि धीर्य्यकरो मेरा सवाल पूरा होनेदो अगर आपमेरा पूरा प्रश्न सुन कर उत्तर देंगे तो आपको और मुझको आसानी होगी। प्र०—क्या मिस्टर सूटर साहब ने आया के इजहार अस्पताल के जाने के पहिले लिये थे ? उ०-हां। प्र०—मिस्टर सूटर साहब से आपको मालुम हुवा कि आया ने मिस्टर सूटर साहब से क्या कहा था ? उ०—कुछ भी नहीं मालुम हुवा। प्र०—आपके विचारसे मालुम होगा कि आयाने क्या बयान किया होगा और इस पूछने का संक्षेप क्याथा ? उ०—हां। प्र०—आप कहते

हैं किजबआया अस्पतालकोआई तोवहबीमारथी ? उ०—हां वहबीमारथी। प्र०—क्याउसकेबलिस्तर(फफोला)था ?उ०—मुझकोयादनहीं कि बलस्तर था। प्र०—क्यातुमने पलस्तर रक्खा था क्योंकिआयाकहती है कि आपनेपलस्तर रक्खा था ? उ० नहीं(हिन्दुस्तानीलोग प्लास्टरकोपलस्तरकहते हैं)मैंनेपलस्तर बेलेडूनादवाकालगाया था लेकिनउससमय नहींलगाया। प्र० उसकेकलेजे में पीड़ा थी ? उ०—हांउसकेकलेजे में पीड़ा थी और उसका इलाज सरजनमेजर ल्यूइससाहब करतेथे। प्र० तुमकहतेहो कि आयाअधिकचिन्ताके कारणबीमारहुईथी कलेजेकीबीमारीसे उसकायहहाल नहींहुवा था ?उ०—हांमुझकोउससमय ऐसाही मालूमहुवा था और शायदयही बात हो। प्र०—आपकोऐसाही मालूमहुवा अर्थात् उसकी शरीर केरोगसेचित्तमें अधिकचिन्ता थी ? उ०—हांक्योंकिजोकुछउसकाइलाज होचुका था उससेबढ़तकुछ उसकोफायदा था। प्र०—आपकोमालूमहोगा कि देहकारोगकम है परन्तु चिन्तासेउसकेमुंहकारङ्गबदलगयाहोगा?उ०—हांप्र०क्याउसकादिल अधिकचिन्तासेबेकरारथा ? उ०—मुझकोऐसाही मालूमहोता था प्र०—बयानकीजिये कि यहपलटनका अस्पताल है ? उ०—हांपलटन और इस्टाफकाअस्पताल है। प्र०—क्याआपवहांकाम करतेहैं ? उ०—नहीं सरजनमेजर लोइससाहब कामकरतेहैं प्र०—फिरआप वहांक्योंगयेथे और क्याआपकावहां जानासहीहै परन्तुआप कहतेहैंकि डाक्टरलोइससाहबको वहांकाचार्ज है ? उ०—सरजनमेजर लोइससाहब मेरेमित्रहैं और जोकि मैंआयाको जानताथा और मुझको उससेतलुकथा इसलियेमैं उसकेदेखनेको गयाथा। प्र०—क्याआपने जानेसेपहिलेसरजनलूइससाहबको इत्तिलाकीथी उ०—नहींइसकीकोई जरूरत नथी क्योंकिवह मेरेमित्र हैं। प्र०—पसमालूमहुवा कि आपने डाक्टरलूइससाहबकेदेखनेकेबिना आयाकीरोगपरीक्षाकी थी? उ०—मैंयहनहींकहताहूं कि मैंने उसकेवास्ते परीक्षाकी थी॥

प्र०—परन्तु आपनेप्लास्टरतो लगाया? उ०—हां बाहरलगाया था। प्र०—क्या आप उसको परीक्षानहीं कहते? उ०—यह प्लास्टर मैंने अस्पताल के आनेसे पहले लगाया था। प्र०—मैं नहींसमझा पहिले मैंनेसमझा था कि बाहरलगाने से खाल पर लगानेका आपका मतलबहै(यहसुनकर सम्पूर्णसाहबान कमीशन हंसनेलगे) जबआया अस्पतालमें गई तो जो कुछ आपसेहोसका आपनेकिया? उ०—हां अगरआप अस्पताल के असिस्टन्टको बुलाकर पूछेंगे तो वह आप से सबबातें कह देगा। प्र०—नहीं २ असिस्टन्टके बुलानेकी कुछ आवश्यकता नहींहै आपकी सबबातोंपर मैं निश्चयकरताहूं जबवह शफाखानेमेंगई तो आपने उसकेलिये कुछ कियाथा। उ०—शायद नहींकिया—अगर आप अस्पतालके असिस्टन्टको बुलायेंगे तो वह आपसे सबहालकहदेगा। प्र०—नहीं मैं उसको न बुलाऊंगा आपने सबबातोंका बिस्तारपूर्व्वक इजहारदियाहै अगर आपने उसका इलाज बखूबीनहीं किया तो आप उसकेपास क्योंगयेथे? उ०—चूंकि मैं उसके पास जाता था। प्र०—पस आपके विचारसे आयाको फायदा था और जबआपने देखा कि उसको हौलदिलहै तो आपनेसहायता की और दिलका हाल उसकेजाहिर कराया? उ०—हां ऐसाही हुवा। प्र० आप और आया एक दूसरेकी बातों को खूब समझते थे? उ०—हां। प्र०—आपके और उसके दरमियान कोईमुतरज्जिम न था? उ०—नहीं प्र०—आपको यह बात खूबयादहै? उ० हां कोई मुतरज्जिमन था केवलएक पुलिसका आदमी वहां था। प्र०—पस आपजानतेथे कि यहपुलिसका आदमीआया की तबीयतको दुरुस्त करदेगा और यह पुलिसका आदमी कानथा? उ०—ईश्वरजाने कौनथा। प्र०—ईश्वरका नाम न लो क्योंकि आपखूबजानतेहैं कि मैं ईश्वरको यहां नहीं बुला सक्ता? उ०—आपमुझसे ऐसीबात पूछतेहैं कि मैं उसकोनहीं जानताहूं। प्र०—मुझे अधिकारहै जोचाहूं आपसेपूछूं अब

मैं पूछताहूं कि तुमकिसी पुलिसके आदमीको जानते हो? उ०—मैं किसी पुलिसके आदमीको नहींजानता। प्र०—आप अकबरअली को जानतेहैं। उ०—हां जानता हूं। प्र०—क्या वह अकबरअली था? उ०—नहीं। प्र०—या अब्दुल्लअली? उ०—यह नहीं जानता एकछोटा पुलिस का आदमी था। प्र०—वह बीमार औरतके कमरेमें क्या करता था? उ०—मैं जानताहूं कि यह औरतपुलिसके पहरेमेंथी। प्र०—जबआपने उससे कहाथा कि अपनेदिलका हालकहो तो कोईआदमी पुलिसका उसकमरेमेंथा? उ०—मैं नहीं जानता कि पुलिस का आदमीकमरेमें था या दरवाजेपर। प्र०—मैंबड़ेत नम्रता से आपसे पूछता हूं कि क्या डाक्टरों में यह बातहै कि एक डाक्टरके बीमार का इलाज दूसरा डाक्टर करै? उ०—मैं नहीं कहसक्ता कि क्यारीतिहै परन्तु सरमेजर लूइससाहबसे मेरी मिचताहै उनकेबग़ैर कहनेके उसबीमारके पासगया था। प्र० डाक्टर सीवर्डसाहब आपसे पूछताहूं और यक़ीनहै कि आप ऐसा ओहदे दार और जानकार मुझको बखूबी जबाब देगा कि आपकी रीतिहै कि आप दूसरे डाक्टरके बीमार के पास उसकेइत्तिलाके बिना जासक्ते हैं? उ०—हांहै औरनहींभीहैयह बात डाक्टरोंके तअल्लुक़ है जैसी प्रीतिहो वैसा वर्त्ताव करें। प्र०—पसइससे मालूम हुवाकि आपका यह मतलबहै कि अगर आपकी और एक डाक्टरकी प्रीतिहैतो आप उसके बीमार के पासउसकी इत्तिलाके बिनाजा सक्ते हैं? उ०—जोकुछमैं जानता था आपसे कहदियासुझको आपसे छिपाने कोइच्छा नहीं है॥

साहब प्रेजीडण्टने कहा कि आप हांया नहींका जबावदीजिये——गवाहने वर्णन कियाकिअगर यहबीमार डाक्टरकेनिजकाहैतो उसकेपास जानाउचित है। प्र०—सरजण्टबेलनटाइनसाहबने कहाजोबिमार अस्पतालमें होतोउसकेपासआप नजांय? उ०—नहीं। प्र०—मालूमहुवा कि सरजनमेजरल्यूइससाहब अपनेकाममें बड़ेप्रवीणहैं? उ०—बड़ेनिपुणहैं। प्र०—

आपमुझसे वर्णनकीजिये किआप भावपूनाकर कोजानते हैं ? उ०—हांमैंने उसको देखाहै लेकिन नहीं कह सक्ता किमैं उसकोजानताहूं। प्र०—आपनेउसको कबदेखाथा ?उ०—बड़ौदेसे मिस्टरबोवी साहब केजानेके उपरान्त। प्र०—आपनेउसकोपहिले कभी नहीं देखा ? उ०—मुझकोयाद नहीं। प्र० आपने उसको उसी पीछे देखा था ? उ०—किसके पीछे। प्र० आपकहतेहैं किमैंने उसकोएक मरतबादेखाथा और अबयह भीकहतेहैं किमिस्टरबोवी साहबके जानेसेपहिले उसकोनहीं देखाक्या आपनेएक मर्तबाके सिवाय और भी देखा था ? उ० जहांतक मुझको यादहैमैं कहताहूं किमैंने उसकोनहीं देखा नउसेबार्ताकी। प्र०—मिस्टरबोवीसाहब कबगयेथे ? उ०—मुझकोयाद नहीं। प्र०—मैंआपसे फिरनपूछूंगा केवल इसमर्त्तबे यहपूछता हूं किआपखूब जानते हैं कि उसवक्त से आपनेभाव पूनाकर कोनहीं देखा ? उ०—नहीं जहांतक मुझकोनिश्चय और स्मरणहै। प्र०—अबआपकीइजाजतसे ९ नवम्बरकी बाबत सवालकरना चाहताहूं परन्तुआयाके विषयमें मुझको पूछना है वहयहहै किमैं समझाकि आपकीऔर आयाकी बार्त्ताछिड़ी थी ? उ०—जितनाकि मुझको स्मरणहै मैं वर्णन करताहूं कि मेरी और आयाकी कुछमामूली बातेंछिड़ीं थीं। प्र०—क्याआप कहतेहैं पुलिसके आदमीने तर्ज्जुमानहीं कियाथा ? उ०—जहां तकमुझको स्मरणहै कहताहूंकि कोई मुतरज्जिम नथा। प्र० जोआपने जवाबदिया यहमेरा प्रश्ननहींहै मेराप्रश्न यहहै कि पुलिसके आदमीने आपकी बार्त्ताका तर्ज्जुमा नहींकिया ?उ० अगरआप अबसेप्रलय तकपूछे जावेंगेतोमैं वहीजवाब दूंगाजो कुछकि देचुकाहूं अन्तरनपड़ेगा। प्र०—मुझको यहांप्रलयतक ठहरना मंजूर नहींहै हां अगर कोई ऐसी बात पेश होजावे जिसकाहाल कुछ मालूम नहींहै शायद ठहरूं ? उ०—आप ऐसीहीबातें करतेहैं मानोप्रलय तकआप ठहरेंगे। प्र०—आप नहीं जानते पुलिस के आदमी ने तर्ज्जुमा किया या नहीं ?

उ०—मैंआपसे पहिलेकह चुकाहूं। प्र०—फिर मुझसे कहिये कि आपनेक्या कहाथा? उ०—मुझकोयाद नहींहैकि मैंनेक्या कहाथा। प्र०—शायद पुलिसके आदमीने तर्ज्जुमा कियाहो? उ०—शायद।—क्यातुमजानते होकि उसने तर्ज्जुमा कियाहो उ०—मुझकोयादनहीं। प्र०-डाक्टरसीवर्डसाहबमैंतुमसेपूछता हूंकि हरएक आयाके बयानका शब्दतुमनेअपने कानोंसुना? उ०—मुझको खूबयाद नहीं आपउस बातको पूछते हैं जोमेरे खयालमें नहींहै आपमुझको दरमियानी करारदिया चाहते हैंऔरइसी प्रयोजनसे आप ऐसेप्रश्न करतेहैं। प्र०—क्यामेरीयह इच्छाहै—डाक्टर सीवर्ड साहब जैसे आप बातोंमें सावधान हैं उसीतरह डाक्टरीमेंभी निपुणहैंतो आपसे बढ़करदूसरा कोई डाक्टरन होगा इसलियेआपदयाकरके बयानकीजियेकिआपने मुतरज्जिम केद्वारा आयासे वार्ता कीथी? उ०—(बड़े जोरसे कहा)मैं उत्तरनहींदेसक्ता। प्र०—मेहरबानी करके इसकदर गुस्सा न हूजियेअबमेरे सवालका जवाबदीजिये? उ०—मैंकुछ जवाबनहींदेसक्ता।प्र०—आपकोकुछभीतअल्लुकहै?उ०—(मेम्बरान्कमीशनकी तरफ देखकर)अगरयह साहबइसीतरहप्रलय तकप्रश्न कियेजायंगे तोसिवा उसउत्तरके जोमैंदे चुका और कुछजवाब न दूंगा और प्रलयतक इनके सवाल नचुकेंगे॥

साहबप्रेजीडण्ट-सरजंटबेलनटायन साहब आपसे हरएक बातपूछनेके अधिकारीहैं डाक्टरसीवर्डसाहबने उत्तर दियाकि जोकुछमैं बयानकरूं उसकोसुनना चाहियेसाहब प्रेजीडेण्टने कहाकिजो सरजन्टसाहब पूछैं उसकाउत्तर आपकोदेना चाहिये डाक्टरसाहबने कहाकि मुझको मालूमनहीं। प्र०—सरजन्टबेलनटायनसाहब काक्याआप कहसक्तेहैंकिआपबखूबीहिन्दुस्तानी बोलसकेंगे? उ०—मैंहिन्दुस्तानीबोल सक्ताहूं लेकिन बखूबी हिन्दुस्तानी नहींबोल सक्ता। प्र०—अबमैं आपसे(दरबारहर्ष नवम्बरके प्रश्नकरताहूं किआपनेबयानकिया थाकिमुझसेकरनैल फियरसाहबने कहाकि मुझको खबरपहुंचीहै मुझ

को जहरदिया जायगा ? उ०—क्यामैंने यहकहाथा। प्र०—मैं आपकेइजहार पेशकरताहूं मुझकोमंजूर नहींकि कोईग़ल्ती हो ? उ०—अगरमैंने ऐसाबर्णन कियातो ग़लतहै। प्र०—आप कहतेहैं किकरनैलफियरसाहबने मुझसेकहाथा कि मैंनेसुना हैकिलोग मेरीजानलेनी चाहतेहैं पस अबतक मुझकोनिश्चय नथापरन्तु अबनिश्चय हुवाआपको मालूमनहीं किकरनैलफियरसाहबने किस शख्स से सुनाथा ? उ०—जहांतक मुझको यादहै कहताहूं किलोगोंने उनकीजान लेनेवास्ते उनकोधम काथा और उसवक्त तकउनको जहरदेने कासन्देह नथा। प्र०—जबआप प्रेजीडन्सीको गयेथेतो आपनेगिलासको तल छटकेसमेत देखाथा उ० हां। प्र०—जबआपने उसकोदेखाथा तो तलछटमिलाहुवाथाऔर गिलासकी पेन्दीमेंबैठा हुवा न था ?उ०—जबकरनैलफियरसाहबने गिलासको तिरछाकियातो तलछटको मैंने पेंदीमेंबैठाहुवा देखा। प्र०—क्या यहतल छटपानीमें मिलाहुवा नथा अलगथा? उ०—यहतलछटपानी केनीचेबैठा हुवाथा। प्र०—क्यायह बस्तु इसक़दर गिलासमेंथी कि उसमें पानी पच गया था और केवल तरी उसमें बाक़ी रहगईथी ? उ०—पानी बहुतथा आपऐसेसवाल करते हैंकि जवाबदेना कठिनहै। प्र०—आप कहते हैं कि करनैलफियर साहबने आपसेकहाथा कितलछट कीरंगतसियाही माइल भूरीथी क्यापिसे हुये हीरे और संखियाका रंगऐसा होता हैमेरे विचारसे इसकायह रङ्गनहींहोता ? उ०—हांसियाही माइलभूरा रङ्गनहीं होता। प्र०—तोआप इसबातका जवाबदे सक्ते हैं कि संखिया और हीरे के चूर्ण का रङ्गस्याही माइल नहींहोताहै ? उ०—हांनहीं होता। प्र०—पस मालूम होता हैकि सिवा इनदोनों चीजोंके और कोइचीजभी थी—जिससे तलछटका रङ्गस्याही माइल होगया ? उ०—इस विषयमें मैं कुछराय नहींदेसक्ता। प्र०—हैं, हैं, डाक्टरसीवर्डसाहब इस का जवाब दीजिये॥

साहब प्रेजीडण्टने कहाकि सरजन बेलन टाइन साहब क्या बातहै—सरजन बेलनटायन साहबने कहा आप खयाल करें मैंने यहप्रश्न कियाहै कि करनैल फियर साहबने कहाथा कि गिलासमें कोईवस्तु मूरेरङ्गकी स्याहीमाइलथी अबमैंडाक्टर सीवर्डसाहबसे पूछताहूंकि ऐसीरङ्गत संखिया और पिसीहुई हीरेकीभी होसक्ती हैतो डाक्टरसाहब कहतेथेकि नहींफिर मैंनेपूछा हैकि सिवाइन दोवस्तुओंके औरकिसी वस्तुके होने का सम्भवहै जिसमें तलछटका यहरंग होगया डाक्टरसाहब कहतेहैं किमैं इसपर रायनहीं देसक्ता? उ०—डाक्टरसीवर्ड साहब मैंने केवल दोही वस्तुओंको देखाऔर कोईवस्तु नहीं देखी। प्र०—आपके इसवर्णनसे मालूमहुवाकि जुजोंके देखने केसमयआपने और कोईवस्तु नहीं देखी? उ०—हांपरीक्षाके समयकोई वस्तु स्याहीमाइल मैंने नहीं देखी। प्र०—तो आप इस तलछटका रङ्गक्या बतलाते हैं? उ०—हलका मूरा रंग बताता हूं। आपने थोड़ा पानी भी मिलाया था? उ०—हां। प्र०—डाक्टर सीवर्डसाहब मुझको निश्चयहै किपानी डालनेके पहिलेभी अजवाअलग करलिये होंगे? उ०—मैंने पानीका बखूबी इमतिहान नहींकिया। प्र०—मैंजानताहूं जबकोईमनुष्य किसी वस्तुके जुज अलाहिदा करता तोवह उन वस्तुओं का बखूबीइमतिहान करलेता हैजिनकेद्वारा जुजोंको अलगकरता है? उ०—हां बहुधा यहीरीतिहै। प्र०—बहुधा दृष्टिऐसी हैं किजबकभी लोगोंनेविषका इमतिहान कियाहैतो जिनवस्तुओं केद्वारा इमतिहान किया गया उनही चीजों में जहर पाया गया? उ०—हांऐसी दृष्टिहैं। प्र०—आप कहतेहैं किमैं पानी और तलछट समेत मझोल चमचेका एक तिहाई हिस्सा तल छट होगा? उ०—हां एक मझोला चमचा भरहोगा। प्र० आपनेअपने इजहारमें बयान किया किएक मझोले चमचे के बराबर पानीथा औरपांचचावल बराबर दूसरी वस्तुथी? उ० हां। प्र०—आपने इस तलछट कोक्या कियाआपने जो उसमें

कुछपानी मिलाया तोपानी मिलाकर आपनेक्या किया?उ० क्याआपका मतलब इस प्रश्नसे यहहैकि अखीरमें मैंने उसको क्याकिया। प्र०—हांजबआप ९ नवम्बरको करनैलफियरसाहब केकमरेमेंथे? उ०—मैंनेपानी मिलानेकेपीछेकुछ नहींकिया। प्र०—आपनेपानीं औरतलछटको अलगनहीं कियामैंभूलगया आपनेअपने मकानपर उसकोअलग कियाथा आपतलछटको किस तरहलेगये?उ०—गिलासमेंलेगया। प्र०—हांक्षमाकीजिये मुझको यादआयाकि आपने कहाथाकि आपअपनेकोटकेपाकिटमेंरखकरलेगये थेऔरआपअपनेमकानपरजाकरपिसेहुये कोयलेसे इमतिहान किया? उ०—हां। प्र०—क्या इस तरह इमतिहान खूबहोताहै?उ०—हां। प्र०—पससालूमहुवाकिजो इमतिहान आपनेकियातो आपफिर इमतिहानकरकेजाहिर करसक्तेहैं कि संखियाहै? उ०—निस्संदेह। प्र०—क्याआपउसका जौहरभी निकालसक्ते हैं? उ०—हां। प्र०—नै में जो छल्लासा पड़गयाहै अगरउसका इमतिहान कियाजाय और उसमेंसंखियाननिकलेतोक्याहोगा। उ०-जहांतकमैंने अजमाइसकीहै संखियाहै। प्र०—किसी औरधातु से क्याऐसी कैफ़ियत नहीं होजाती है? उ०हां होजातीहै। प्र०मेरा मतलब यहहै कि जिसतरह संखियेसे छल्ला बनगयाहै? उ०—परन्तु खुर्दबीनके देखनेसे असलियत मालूमहोजावेगी। प्र०—आपने कोयलाकहांसे मंगायाथा? उ०—अस्पतालसे कोयला मंगायाथा और अस्पतालअसिस्टन्टकोयला और औजारलायाथा। प्र०—क्याआपने इसकोयलेकी आजमाइश नहीं की? उ०—नहीं। प्र०—तो आपने कोयले को आजमाइश फिर की? उ०—हां। प्र०—क्याआपने कोयले की आजमायश आपही की थी? उ०— नहीं गवर्न्मेण्ट के कमीकल अनेलायर्जने की थी। प्र०—नहीं वहो कहिये जो पहिले आपने कहा था मैं समझा कि आपनेपहिले कोयले की पहिचानकी फिरडाक्टरग्रे साहब के पास भेजा? उ०—हां ऐसाही किया था।

प्र०—क्याआपनेपानी और तलछटकी आजमायश कीथी?उ० हां मैंने छानकर यहतलछट डाक्टर ग्रेसाहब के पास भेजा था। प्र०—मेरा मतलब यहहै कि जबआप इमतिहान करते थेतो आपनेपानीका इमतिहान नहींकिया? उ०-नहींजब मैनेतलछट कोछान लियातोपानी को फेंक दिया मैने केवल तलछट का इमतिहान किया था। प्र०—मुझको विश्वास है किकईविष इसप्रकार के हैं जिनकी उत्पत्ति तांबेसे है? उ० हां। प्र०—उनका क्यानाम है? उ०—एकतांबेका विषहोता है उसकोतूतिया कहते हैं और अक्सर कलमेंमें तूतियाका जहर भी हो जाता है। प्र०—तो आपने तूतिया होने का इमतिहान नहीं किया? उ०—नहीं। प्र०—कोई वस्तु ऐसी नथी जिससे तांबे का होना मालूम हो? उ०—नहीं। प्र० आपकहतेहैं किजब संखिया पानीमें डालदी जाती है तोकुछ तैरतीहै औरकुछनीचे बैठजातीहै अगर संखिया पानीसेभारी होताहै तोक्यों तैरताहै और किस वास्ते पानीके नीचे नहीं बैठजाता?उ०—संखियाकी खासियत ऐसीही होती है और कुछ बैठजाताहै। प्र०—पसमैंकहताहूं कियदि संखियापानी में कितनाही मिलायाजाय तोकुछ बैठजायगा औरकुछतैरनेलगेगा? उ०—इस विषय में मैं कुछनहीं कहसक्ता। प्र० क्या सम्पूर्णआयु में संखियाको आपने यह पहिलेही मरतबा आजमाया? उ०—नहीं लण्डनमें प्रोफेसर हफमोमसाहब के साथजहर की कसरतसे आजमायशकी। प्र०—उसके उपरान्तभी कभीआपने संखिया की आजमायशकी थी? उ० हांएकमरतबा मंगाकर आजमायशकी थी। प्र०—आपनेइस तलछटको तौलाथा? उ०—नहीं। प्र०—आपनेइस मरतबा इसतलछट मेंसे कुछ आजमायश के वास्तेलियाथा? उ०—मेरेविचारसे वहएक तीसराहिस्सा होगा। प्र०—एकचावल भरसे जियादह था? उ०—हां। प्र०—बाकीआपने डाक्टर ग्रेसाहबके पास भेजदिया—अर्थात् ढाई चावलके बराबर। उ०

हां वह ढाई चावल के बराबर होगा। प्र०—मैं नहीं समझा कि आपने क्योंकर दुबारह आज़माय्श की ? उ०—यदि आपकी इच्छा होतो मैं दुबारह आप को आज़माय्श करके दिखाऊं। प्र०—क्या आपने उन्हीं वस्तुओं से फिर इमतिहान किया जिनमें कि पहिले इमतिहान किया था ? उ०—हां। प्र०—क्या आपने उसी तलछट की फिर आज़माय्श की जो बाक़ी रह गया था ? उ०—हां। प्र०—जो छल्ला नली में पड़ा था उसमें क्या आठवां हिस्सा संखिया था ? उ०—मैं नहीं कह सक्ता। प्र०—आपने और कितना इस तलछट में से लेकर इमतिहान किया था ? उ० एक चुटकी भर मैंने लिया था। प्र०—आपने उस कोयले को तौला था जिससे आज़माय्श की थी ? उ०—कोयले के तौलने की कुछ ज़रूरत नथी। साहब प्रेजीडण्ट बोले कि श्रीमान् महाराजा साहिब कहते हैं कि मुतरज्जिम को तर्ज़ुमा करने की नौबत नहीं आती कि आप डाक्टर साहब से प्रश्न कर बैठते हैं इस बात का आगे को खयाल रखिये॥

सरजन्ट बेलनाटायन साहब ने कहा कि मेरा क़सूर है जो मैं जल्द २ प्रश्न करता हूं अब आगे से खयाल करूंगा और गवाह से फिर प्रश्न पूछने शुरू किये। प्र०—क्या तुमने अन्त में आज़माय्श उस कदर तलछट पर की जो नली में बच रही थी ? उ०—हां सब के ऊपर की जो कुछ बच रही थी। प्र०—क्या वह एक चुटकी भर थी ? उ०—हां वह चुटकी भर थी। प्र०—क्या तुम्हारे आज़माय्श करने से उसमें कोई रंग पैदा होगया ? उ०—कोई रंग पैदा नहीं हुआ। प्र०—परन्तु मेरी आंखें खुर्दबीन नहीं हैं मैं उस को रंग ही कहूंगा ? उ०—नहीं वह तो एक चमकती हुई वस्तु थी। प्र०—एक चिट्ठी जो अभी तुम्हारी इजलास में पढ़ी गई और जो कि ग्रे साहब के नाम थी नहीं यह मेरी गलती है जो कि तुम्हारे नाम ग्रे साहब ने लिखी थी उसमें लिखा है कि मैंने तुम्हारी चिट्ठी और जो उसके भीतर वस्तु थी पाई क्या कोई तुमने चिट्ठी लिखी थी ? उ०—नहीं उस चिट्ठी से मतलब फियर साहब को

चिट्ठीका है। प्र०—वहलिखतेहैं किहमनेतुम्हारी चिट्ठीपाईवह क्योंलिखतेहैं ? उ०—साहबमैनेकोई चिट्ठीउनकोनहीं लिखी परन्तु करनैलफियर साहबके लिफाफेपर लिखदियाथा मेरा हाथउससमयपीड़ा करताथा और इसवास्तेमैंअलग चिट्ठी न लिखसका। प्र०—क्यावहीचिट्ठी तुम्हारेपासकरनैल फियरसाहबसेपहिले आईथी? उ०—हां वही पहिली चिट्ठीथी। प्र० क्यासंखियाको शीशेकेबनानेमेंबर्त्तीतेहैं? उ०-हांकोई२ शीशोंमें बर्त्तीतेहैं प्र०-शीशाजोछिलगयाहैअगरफिररगड़ाजायतोवह फिरभी छिलजायगा उ०—हांबेशक छिलजायगा। प्र०—तुम उसको दिखासक्तेहो ? उ०—यदिसाहिबान कमीशनआज्ञा दें तोदिखासक्ताहूं प्रेजीडण्टसाहबने कहाइसवक्त तुमदिखा सक्तेहो?उ०—यदिआज्ञाहोतो दिखासक्ताहूं। प्र०—अच्छारहनेदीजियेयह बातहमडाक्टर ग्रेसाहबसे पूछ लेंगे। प्र०—अब दूसरेमुआमलेमें आपसेबार्त्ताकरूंगा आपने बयान किया कि रावजीनेआपकी तरफ किसदृष्टि से देखा ?उ०—वह रावजी बयानसुना। प्र०—हांरावजीने आपको छाता दिया था ? उ०—हां। प्र०—उसनेपहिले कभीऐसानकिया ? उ०—नहीं। प्र०—जब तक रावजी ने यह बयान नहींकियाथा कि उसने अपनेहाकिमको जहरनहींदिया तो आपने यहजिक्रकिसी और से कियाथा ? उ०—हांकिया था। उ०—किस शख्ससे जिक्रकियाथा ?उ०—मिस्टरबोडीसाहब से। प्र०—अर्थात्यह नौकरआपकी और किसतरहदेखतेथे इसबातकाआपनेउनसे जिक्रकियाथा ? उ०—हां। प्र०—आपनेयहजिक्रउनसेकबकियाथा ?उ०—मैंयहनहीं कह सक्तामगर बड़ौदेसे रवानाहोने के पहिलेमैंने उनसेकहाथा।प्र०—मैंनेसुनाहै कि मिस्टरबोडीसाहबपच्चीसदिसम्बरकोबड़ौदेसे रवानाहुये? उ०—मैंनहींजानता प्र०—क्या आपकहसक्तेहैं कि एकआधरोज पहिले आपनेउनसेयहजिक्रकियाथा ? उ०—मुझकोयादनहीं मगरजहरदिये जानेकेउपरान्त और रवानगीसेपहिलेउनसेकहाथा।प्र०-आप

यह कहसक्तेहैं कि २४दिसम्बर के पहिलेयहबात्तीं हुईथी ? उ०—हांनिश्चयकर कहताहूं। प्र०—सिवायइसकेऔर कुछ आपनहींकहसक्ते ? उ०—नहींऔरकुछनहींकहसक्ता। (फिर तलछटसे शीशेकेछिलनेको आजमायशकीतथाचश्मकी बखूबीआजमायशहुई औरशीशाछिलगया) साहबप्रेज़ीडण्टनेसरजन्टबेलन टायनसाहब से कहा कि आपने बखूबीनिशानदेखे सरजन्टसाहबने कहा कि हांमैंने खूबसाफतौर से निशानोंको देखा॥

डाक्टरसीवर्ड साहब के दुबारह इज़हार ऐडवकेटजनरलन ने लिये।

प्र०—मेरीसमझमें यहआया कि जबअस्पतालमें आयानहीं गईथीतोआप उसकाइलाज करतेथे? हां। प्र०—आपकोयादहै कि अस्पताल जानेके पहिले कितनेदिन आपनेउसका इलाज किया? उ०—सिर्फएक रोज़। प्र०—आपका यहकामभीबतौर डाक्टर रजीडन्सी केहैकि रजीडन्सीके नौकरोंका आपइलाज करें? उ०—हां यदि कोई शख्स बज़त बीमार हो। प्र०—क्या सबबथा कि आपने उसको अस्पतालमें भेजदिया? उ०—मुझको वह बज़त बीमार मालूम हुई और उसका इलाज उसके मकानपर बखूबी नहींहोसक्ताथा। प्र०—अर्थात् मिस्टरबोवी साहबके अहातेमें? उ०—हां। प्र०—उसकेवास्ते आपअस्पतालमें दवातजवीज करनेके वास्तेगये थे? उ०—मेरी दवातजबीजकरनेकीइच्छानथी मैंकेवल उसकेदेखनेकोगयाथामैंनेउस केफेफड़ेको देखाऔरजो किआया बोवीसाहबकीनौकरथीइस लियेमुझे उसको देखनामंजूरथा। प्र०—यहआया अस्पताल मेंअलग कमरेमेंथी या औरबीमारोंके साथथी? उ०—अलग कमरेमेंथी। प्र०—आपकिस मुकाम परपुलिसके आदमीका होना बतातेहैं वहकमरेमें था या बाहरदरवाज़े के बैठाथा? उ०—शायद दरवाज़े के बाहरखड़ाथा मैंनेखूब ग़ौरनहींकिया प्र०—जबआप आयाके कमरेमें गयेथे तो आपके साथ और

कोई आदमीभीथा ? उ०-मुझेयादहै कि शायदअस्पताल का असिस्टन्ट मेरेसाथा। प्र०—आपकोयादहै किकौनसे अस्पताल का वह असिस्टन्टथा? उ०—मुझकोयादनहीं। प्र०—आपकहते हैंकि पुलिसका आदमी दरवाज़ेपर खड़ाहुवाथा आप कह-सक्तेहैंकि वहकिस प्रकार के पुलिस का आदमीथा क्या वह बम्बईके पुलिस काथा ? उ०—हांबम्बईके पुलिसकाथा बड़ौदे में पुलिस नहीं है।प्र०—उसकी वरदीकैसीथी (सरजन्टबेलन टायनसाहबनेकहा) किन डाक्टरसाहब बयानकरें किउसकी वरदीकैसीथी तोमैंमंजूर करूंगा ? उ०—मुझको एकछोटा पुलिसका सिपाही मालूम हुवाथासादीवर्दी पहिनेहुयेथा। प्र०—डाक्टर सीवर्ड साहब आप कहते हैं किमैं हिन्दुस्तानी बोलसक्ताहूं परन्तु जल्दी और बखूबीनहीं बोलसक्ते ?उ०—हां जल्दीनहीं बोलसक्ता। प्र०—क्याआप इतना बोलसक्ते हैंकि रोज मरो की गुफ़्तगूमें मुतरज्जिम की जरूरत नहींहै ? उ० हांथोड़ी२ बातोंमें मुतरज्जिम कीजरूरत नहींहै। प्र०—क्या आपको कभी मुतरज्जिम कीजरूरत होती है ? उ०—हांजब जरूरत हुई और जो शख़्स मुझको उस वक्त मिल जाता है बुलालेताहूं। प्र०—अबमैं ९ नवम्बरकेविषयमेंआपसेप्रश्नकरूंगा आपबयान करतेहैंकि गिलासके तलछट काहलका भूरारंगथा उ०—हां। प्र०—जबआपको पहिले यह तलछट मिलाथा तो आपनेउसके रंगपरग़ौर कियाथा ? उ०—हांमैंनेग़ौरकिया था गुलाबी माइल उसकारंग थाजैसाकि चकोतरेके अरक़ का रंगहोताहै। प्र०—आपने कितना पानी उसमें मिलाया था ? उ०—शायद एक चमचा होगा। प्र०—आपकोयादहैकि आपने किस बरतनसे पानी लेकर उसमें मिलाया था ?उ० उस बरतनसे जो मुंह धोनेकी मेजपर रक्खाथा और मुझको ऐसा याद आता है कि वह सुराही थी। प्र०—अर्थात् जो बरतन उसवक्त आपकेसाम्हनेथा उससे आपने पानी लिया ? उ०—हां। प्र०—आपकहतेहैं कि जबआप घरगये तोआपने

यह कहसक्तेहैं कि २४ दिसम्बर के पहिलेयहबात्तीं हुईथी ? उ०—हांनिश्चयकर कहताहूं। प्र०—सिवायइसकेऔर कुछ आपनहींकहसक्ते ? उ०—नहींऔरकुछ नहींकहसक्ता। (फिर तलछटसे शीशेकेछिलनेको आजमायशकी तथाचहमकी बखूबीआजमायशहुई औरशीशाछिलगया) साहबप्रेज़ीडण्टनेसरजन्टबेलन टायनसाहब से कहा कि आपने बखूबीनिशानदेखे सरजन्टसाहबने कहा कि हांमैंने खूबसाफतौर से निशानोंको देखा॥

डाक्टरमीवर्ड साहब के दुबारह इज़हार ऐडवकेटजनरलन ने लिये।

प्र०—मेरीसमझमें यहआया कि जबअस्पतालमें आयानहीं गईथीतोआप उसकाइलाज करतेथे? हां। प्र०—आपकोयादहै कि अस्पताल जानेके पहिले कितनेदिन आपनेउसका इलाज किया? उ०—सिर्फएक रोज़। प्र०—आपका यहकामभीबतौर डाक्टर रजीडन्सी केहैकि रजीडन्सीके नौकरोंका आपइलाज करें? उ०—हां यदि कोई शख्स बज़त बीमार हो। प्र०—क्या सबबथा कि आपने उसको अस्पतालमें भेजदिया? उ०—मुझको वह बज़त बीमार मालूम हुई और उसका इलाज उसके मकानपर बखूबी नहींहोसक्ताथा। प्र०—अर्थात् मिस्टरबोवी साहबके अहातेमें? उ०—हां। प्र०—उसकेवास्ते आपअस्पतालमें दवातजवीज करनेके वास्तेगये थे? उ०—मेरी दवातजबीजकरनेकीइच्छानथी मैंकेवल उसकेदेखनेकोगयाथामैंनेउसकेफेफड़ेको देखाऔरजो किआया बोवीसाहबकीनौकरथीइसलियेमुझे उसको देखनामंजूरथा। प्र०—यहआया अस्पताल मेंअलग कमरेमेंथी या औरबीमारोंके साथथी? उ०—अलग कमरेमेंथी। प्र०—आपकिस मुकाम परपुलिसके आदमीका होना बतातेहैं वहकमरेमें था या बाहरदरवाज़े के बैठाथा? उ०—शायद दरवाज़े के बाहरखड़ाथा मैंनेखूब ग़ौरनहींकिया प्र०—जबआप आयाके कमरेमें गयेथे तो आपके साथ और

कोई आदमीभीथा ? उ०-मुझेयादहै कि शायदअस्पताल का असिस्टन्ट मेरेसाथा। प्र०-आपकोयादहै किकौनसे अस्पताल का वह असिस्टन्टथा? उ०-मुझकोयादनहीं। प्र०-अपकहते हैंकि पुलिसका आदमी दरवाज़ेपर खड़ाकरवाथा आप कह-सक्तेहैंकि वहकिस प्रकार के पुलिस का आदमीथा क्या वह बम्बईके पुलिस काथा ? उ०-हांबम्बईके पुलिसकाथा बड़ौदे में पुलिस नहीं है।प्र०-उसकी वरदीकैसीथी (सरजन्टबेलन ट.यनसाहबनेकहा) किन.डाक्टरसाहब बयानकरें किउसकी वरदीकैसीथी तोमैंमंजूर करूंगा ? उ०-मुझको एकछोटा पुलिसका सिपाही मालूम करवाथासादीवर्दी पहिनेहुयेथा। प्र०-डाक्टर सीवर्ड साहब आप कहते हैं किमैं हिन्दुस्तानी बोलसक्ताहूं परन्तु जल्दी और बखूबीनहीं बोलसक्ते ?उ०-हां जल्दीनहीं बोलसक्ता। प्र०-क्याआप इतना बोलसक्ते हैंकि रोज़ मरो की गुफ़्तगूमें मुतरज्जिम की ज़रूरत नहींहै ? उ० हांथोड़ी२ बातोंमें मुतरज्जिम कीज़रूरत नहींहै। प्र०-क्या आपको कभी मुतरज्जिम कीज़रूरत होती है ? उ०-हांजब ज़रूरत हुई और जो शख़्स मुझको उस वक्त मिल जाता है बुलालेताहूं। प्र०-अबमैं ९ नवम्बरकेविषयमेंआपसेप्रश्नकरूंगा आपबयान करतेहैंकि गिलासके तलछट काहलका भूरारंगथा उ०-हां। प्र०-जबआपको पहिले यह तलछट मिलाथा तो आपनेउसके रंगपरग़ौर कियाथा ? उ०-हांमैंनेग़ौरकिया था गुलाबी माइल उसकारंग थाजैसाकि चकोतरेके अरक़ का रंगहोताहै। प्र०-आपने कितना पानी उसमें मिलाया था ? उ०-शायद एक चमचा होगा। प्र०-आपकोयादहैकि आपने किस बरतनसे पानी लेकर उसमें मिलाया था ?उ० उस बरतनसे जो मुंह धोनेकी मेज़पर रक्खाथा और मुझको ऐसा याद आता है कि वह सुराही थी। प्र०-अर्थात् जो बरतन उसवक्त [illegible] सामनेथा [illegible] ससे आपने पानी लि[illegible] उ०-[illegible] प्र[illegible] हते[illegible] आप बरगदे ते[illegible]

कोयले और औजार मंगायेथे और यहकोयले और औजार आपके अस्पतालका असिस्टन्ट लाया था आपकोयादहैकि वह कौनसाअसिस्टन्ट अस्पताल काथा ? उ०—उसशख्सका नाम इब्राहीमजीहै परन्तु वह बड़ौदेसे चलागया। प्र०—वहयहूदी था या मुसल्मान ? उ०—यहूदी। प्र०—इब्राहीमजी उसवक्त कहांथा वहअपने मकानपरथा या आपके मकानपर ? उ० मुझकोयादनहीं कि मैंनेउसको चिट्ठीलिखकर बुलायाथा या किसतरह परन्तु उसको उसके घरसे बुलायाथा। प्र०—यहबात आपने किसीसे नहीं कहीकि औजार और कोयले आपकिस प्रयोजनसेमंगाते हैं ? उ०—किसीसेनहींकही। प्र०—अस्पताल केअसिस्टन्टसेभी नहीं कहाथा ? उ०—हांउससेभी नहीं कहा प्र०—सरजन्टवेलनटायन साहब ने आपसे पूछा था कि अगर। संखियागिलासमें डालनेके पहिले बोतलमें मिलाई जातीतो क्यासंखियापानीके ऊपरतैरनेलगे ? उ०—यहमैंनहींकहसक्ता प्र०—मुझको अब सिर्फ इतनी बातका जवाब दीजिये किऐसी खासियत संखिये की है ? उ०—हां ऐसी ही खासियत है। प्र०—हीरेका चूर्ण अगर पानीमें डालाजाय तो वह पेंदी में बैठ जावेगा ? उ०—हां। प्र०—आपकहते हैं जबमैंने मालूम करलिया कि वास्तवमें संखियाहै तो फिर आपनेकुछउसकी आजमाइश नहीं की ? उ०—हां मैंने फिर आजमाइश नहीं की। प्र०—क्या वजह जो आपने फिर आजमाइश नहीं की ? उ०—फिर इमतिहान करना वृथा मालुम हुआ। प्र०—आपने सबतलछट की आजमाइश आपही क्योंनहीं की। उ०—न मेरे पासदवाइयां थीं न औजारथे। प्र०—सिवा हीरे के और भी ऐसी चीजें हैं जिससे शीशाछिल जाता है ? उ०—हां हैं। प्र० आपऐसी चीजों कोजानते हैं ? उ०—मैंनहीं जानता हूं। प्र० यह बात डाक्टर ग्रे साहबसे पूछी जावेगी मगर आपने गिलास की तलछट में गुबार उठतो हुआ कब देखा था ? उ०—मैं ने तलछट को फियर साहब के पास पानी मिलानेके पहिले

देखा था। प्र०—सरदिन कर रावका—आपकी रायमें ज़हर सङ्खियाथा या पिसाहुआ हीरा? उ०—सङ्खिया प्र०—अगर हीरेका चूर्ण किसीको दिया जायतो उसकोवह पचा सक्ताहै और उसको दुःखनहीं पहुंचसक्ता? उ०—मैं इसबारे में कुछ जवाब नहीं देसक्ता फिर मेम्बरान् कमीशन टिफन खाने के वास्तेउठ गये॥

डाक्टर ग्रे साहब का इज़हार॥

जबमेम्बरान् कमीशनटिफन खाकरआये तोडाक्टरग्रे साहबका इज़हार शुरूहुवा उनके इज़हार ऐडवकेट जनरलनेलिये डाक्टर साहब ने बयान किया कि मेरानाम वौइलंगटनग्रे है मैं बम्बईकेफौजका एकसरजनहूं और कायममुक़ाम कमीशनर नेलायर्ज गवर्न्मेण्टका हूं॥

११—नवंम्बरको एकरजिस्ट्री की हुईचिट्ठी डाक्टर सीवर्ड साहबरेजीडन्सी सरजनबड़ौदाके पाससे आईयह एकरजिस्ट्रीकियाहुवा पाकिटथा जिसपरअब निशानहर्फ(पी)का है यहलिफाफाजो मेजपररक्खा हुवा है ऊपरकादूसरा लिफाफा है जिसवक्तयह मेरेपास पाकिटआया तो उसकीमुहर साबित थी इस लिफाफेमें एकपाकिट और एकचिट्ठी है उसपर हर्फ (एफ का निशानबना है अन्दरकेपाकिटपरभीमुहरसही और सालिमथी, डाक्टरसीवर्ड साहबकालेख इसपाकिट परथा जिस लिफाफेपर निशानहर्फ(ओ)का बनाहुवा था उसमेंएक ब्लाटिङ्ग कागज़लिपटा हुवा मैंनेपाया इसकागज़में मुझकोथोड़ा चरहमिला जो तैलमें ढाईचावल था उसकी रंगत भूरीथी उसमेंकुछ चमकते हुये ज़र्रेभीथे तथाच इस बुरादेके मैंनेअजज़ाअलग कियेजिस तरहसंखिया की आजमाइश होती है पहिलेमैंने थोड़ाचूरह नलकी में रखकर गर्मकिया उससेमालूमहुवा कि एक सफैद चीज़एक तर्फको आगई उसको मैंने खुर्दबीनसे देखातो उस वक्तमुझको मालूमहुवा कि किसीचमतीज़ईचीज के अष्टकाण रज़हैं मैंनेउन ज़र्रोंकी और तरहसे

भी आजमाइश को मैं समझा कि यह सफैद संखिया के टुकड़े हैं मैंने उनको थोड़े पानी में डालकर जोश किया और जोश होने के उपरान्त मैंने थोड़ा पानी लिया और उसमें अमौनियल नसटेट आफ सिलवर को मिलाया इसके मिलाने से हलका पीला रंग हो गया फिर मैंने अमौनियल सलफोट आफ कापर को मिलाया जिससे हलकी सब्ज रंगत होगई फिर मैंने सलफ्यूररेड हैड्रोजन गा- से आजमाइश की पसतीन तरीकों से इमतिहान इक्वातीनों दफा मैंने अमोनिया मिलाई थी लेकिन अमौनिया सबमें नहीं मिलाई थोड़ा पानी दूसरी रीति के आजमाइश के वास्ते रहने दिया अर्थात् बाक़ी में मारीटक तेज़ाब मिलाया उसको मैंने जोश किया लेकिन वह पानी में न घुला हर प्रकार के इमतिहान से मुझको निश्चय इक्वा कि यह संखिया है इस आजमाइश में छठा हिस्सा बुरादे का खर्च इक्वा सिवाय इसके और तरह से भी मैंने उसका इमतिहान किया अर्थात् मैंने थोड़ा चूर्ण पानी में मि- लाया और उसमें तेज़ाब मारीटक डालकर दो तांबे के पत्तरों में रक्खा और उन दोनों पत्तरों को आग पर रक्खा जब वह खूब गरम होगये तो भूरे रंग की चीज़ पत्तरों के भीतर मालूम हुई फिर मैंने एक पत्तर को उठाया और खुर्दबीन से उसको देखा तो अष्टकोण टुकड़े नज़र आये पस इस इमतिहान से भी मालूम हुआ कि यह संखिया है मैंने कोयले से भी इमतिहान किया मेरे पास वह नै है जिसमें मैंने इमतिहान किया गवाह ने उस नै को निकालकर दिखाया—देखिये इस नै में जो धात कासा छल्ला पड़ गया है वह संखिया है अगर फिर आग पर रखकर बखूबी गर्म किया जाय तो संखिया फिर असली हालत पर आजाय (यह नै डाक्टर साहब से लीगई और हर्फ (टी) का निशान किया गया) मैंने इस बुरादे से ११ नवम्बर को और कुछ आजमाइश नहीं की नउस दिन मैंने चमकते हुये ज़र्रों की कुछ आजमाइश की हरचन्द संखिया के होने की सबतरह से आजमाइश की परन्तु इनसब अजमाइशों में इन चमकते हुये ज़र्रों को कुछ ज़रर

नहीं पहुंचा मैंने उन्नीस नवम्बर को खुर्दबीन से इन जर्रों को देखा मुझको खयाल हुवा कि यह पिसा हुवा शीशा है या संग खारा है तथाच इसबारेमें डाक्टरसीवर्ड साहबको मैंने लिखा जो चिट्ठी मैंने डाक्टर सीवर्ड साहब को भेजीथी उसपर (क्यू) का निशान है जब मैंने इस चूरह के जर्रे पुड़िया में चमकते हुयेदेखे तोमुझको अतिआश्चर्य्य हुवाजब खुर्दबीनसे देखातो हीरेकेजर्रे मालूम हुयेमैंने डाक्टरसीवर्ड साहब को जोचिट्ठी भेजीथी और अब उसपर निशान हर्फ (यू) काहै उसमें मैंने यह मजमून लिखाथा ॥

माईडियर सीवर्ड——वर्त्तमान मासकी १२ तरीख़ कोलिखी हुई चिट्ठीके क्रमसे मैं आपको लिखता हूं कि जब मैंनेबखूबी तौर से उनचमकते हुए जर्रोंका इमतिहान कियातो मालूम हुवा किवह पिसाहुवा हीराहै कईजर्रे ऐसे चमकते हुये हैं किऐसी चमक सिवाय हीरेके और किसी वस्तु मेंनहीं होसक्ती सिवाय इसके वह बहुत सख़्त है मैंने तेज़ाब में उसको गलाना चाहा लेकिन न गली यहबात सिर्फमेरी देखीहुईहै अगर किसीको संदेह होतो दूसरी रीतिसे भी उसकी आजमाइश करसक्ता हूं ताकि साबितहो कि यह हीरेका चूर्णहै यानहीं करनैल फियरसाहबके सुंहमेंजो तांबेकाखाद आगया उसका क्यासबब है क्या उसमेंतांबाथा क्योंकिसङ्खियामें कोईखादनहीं होता मैंने कितनाहीं उस पुड़ियाके चूरेकी अजमाश की लेकिन मुझको उसमेंतांबानमिला मगरजोकि अक्सर जौहरपानी में घुलजाते हैंशायदयह जौहरभी अर्क़चकोतरे केसाथ घुलगया और शर्बत केसाथ फिकगया शायदजल्दीसे जीमतलाने की यहवजह हो गई किसंखिया जोशर्व्वतपर तैरतारहा उसको फियर साहब कुछपीगयेहोंगे और उसवक्त उनकापेट खाली होगा क्योंकि यहरीति है कि जब संखिया पानी में खूब नहीं मिलाई जाती है उस वक्त तक वह पानीके ऊपरतैरती रहतीहै हिन्दुस्तानी लोगनिश्चय करतेहैं कि संखिया और हीरे का चूर्णबड़े मार-

डालनेवाले जहरहैंमगर सचीबातयह हैकिइन दोनों मेंसे मुहलिक एकबस्तुभीनहीं है जोकुछआप और भेजेंगे उसकीभी आजमाइश करके मैं आपकोइत्तिला दूंगा यदि यह सम्भव है किइस चकोतरे का पर्व्वत जिसमें यह जहर मिला हुआ था या उसजगह की मिट्टी जहांकिपर्व्वत फेंकागया था आपमेरे पासभेजेंगे शायद उससेमालुम हो किउसमेंतांबायानहीं॥

दस्तखत—डब्ल्यूग्रे कमीकल ऐनेलायर्ज गवर्नमेन्ट
कालिजलैबुरैरी बम्बई लिखा हुआ
१३ नवम्बर सन् १८७४ ई०॥

सरजन्ट बेलनटायनसाहबने कहाकि इसचिट्ठी कादरबारे अलमास साईदाके पढ़ना दुबारहयाद दिलानाहै और कोई फायदा नहीं——साहबप्रेजीडण्ट ने कहा क्या आपइनकार करते हैं कि यहचिट्ठी गवाही में शामिल न की जाय सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि मुझको कुछ इनकार नहींहै डाक्टर ग्रे साहबने कहाकि जबमैंने यहचिट्ठीलिखी थी तोमेरे पास कोई और लेख बड़ौदेका नहीं आया जिसमें लिखा हो कि तलछटमें हीरेका चूरह भी है उसको मैंने अपनी तौरसे मालूम किया इसचिट्ठी के लिखने के उपरान्त दूसरा पाकट रिजिष्टरी कियाहुवा १७नवम्बरको मेरेपास बड़ौदे में पहुंचा उसमुहरमें चिड़ियाको चोटीखुदीहुईथी जिसलिफाफेमेंयह पाकिटबन्दथा उसमेंएकपुडिया थीऔर एकचिट्ठीथी औरमुहरसही सालिमथी पाकटमें मिट्टीकेसदृशकोई बस्तुथी१७चावलभरयहबस्तुथी मैनेउसका इमतिहान कियामालूम हुवाकि इसमेंभीसंखिया और चमकतेहुये जर्रेथेजैसेकि पहिलेपाकिट मेंथे जिसतरह पहिलीपुड़िया कीमैंनेआजमाइश कीथी उसी तरह उसका इमतिहान किया पहिली पुड़ियामें एकचावल संखिया पाईथी औरउसमेंसिवाचावलकेपसइससूरतमेंसवादो चावल संखिया एक आदमीके मारने के वास्ते काफीथी अगर मौक़ामुनासिबसे दीजाती॥ सरजन्ट बेलनटायन साहबनेकहा

आपवक्त सुनासिब किसव को कहते हैं ?उ०—जबकिआदमी का पेट खाली हो। प्र०—हां मैं पहिले नहीं समझता था मैं वक्त सुनासिबऔर बातकोसमझताथा प्रेज़ीडण्ट साहबनेकहा डाक्टरसाहब की गर्ज यह है कि संखिया ऐसेवक्त पर दीजाय तो खूब कारगरहो डाक्टरसाहब ने बयान किया कि संखिये का असर आध घण्टेमे एकघंटे मेंहोजाताहै उसकी तासीर यहहैकि सिरघूमता है जीमतलाता है क़ै होतेहैंछाती सूज जाती है दस्तआतेहैं अगरसंखियाथोड़ी २ दीजावेतोआखों सेपानीबहता है आखोंकोजरर पहुंचताहै मैंनहीं कहसक्ता कि हीरेकाचूर्ण मिलानेसे उसका मुहलिक होनाजियादाहोजाता-ताहैऐडवकेट जनरलसाहबने कहा अगरएकबोतल मेंसंखिया डालीजावे जिसमेंपानी भराहो और वह हिलायाजाय और फिर किसीपतली चीजमें वह पानीडालाजाय तोसंखिया सब में मिलसक्तीहै ? उ०—हांडाक्टर साहबने बयानकियाकि ३० दिसम्बरसन् १८७४ ई०को एक पाकिट मिस्टर सूटरसाहबका भेजा हुआ मेरेपास पहुंचाउसमें एकलिफाफाथा और उस लिफाफेमें एकपुडियाथी जबमैंने पुड़ियाकीवस्तुदेखी तोउसमें सातचावल संखियावैसीहोयी जिसकोमैं पहिलेसे अजमाइश कर चुकाथा और डाक्टर सीवर्डसाहबकी दरख्वास्त अनुसारमैंने कुछइमतिहान कियालेका ३१जनवरीको कियावहसाफ कोयला थाउसमेंकुछ भी संखिया नथीबड़े२डाक्टरोंने लिखाहैकि हीरे काचूर्ण कोई जहरजिस्मानी नहीं पहुंचाता। प्र०—ऐडवकेट जनरल। डाक्टरग्रेवर्ज साहबअपनीऔषधि केगुणोंकी किताबों में क्या लिखतेहैंकि हीरेकाचूर्ण जहर मोहलिकहै अभी यह सवालपूर्ण नहींहुआथा किसरजनबेलनटायनसाहब बोलउठे कि डाक्टरग्रेवर्जसाहब की रायनहीं मानी जा सक्ती ऐडवकेट जनरलनेकहा कि मैंडाक्टर ग्रे साहब से केवल इतना पूछता था कि उनकीराय डाक्टर ग्रेवर्ज साहब कीराय के अनुकूलहै या नहीं,डाक्टरग्रेसाहबने कहा कि मेरीरायउनकेअनुकूल है

प्रेजीडण्ट साहब नेडाक्टरग्रे साहबसे सवालकिया किडाक्टरों ने आजमाइशको है कि हीरेकाचूर्ण मारडालता है यानहीं? उ०-हांआजमाइश को है। प्र०—इस आजमाइश काक्या नतीजाहुआ? उ०—यहनतीजा हुआकि वह मोहलक नहीं है पसआपसवाल और जवाब डाक्टरग्रेसाहबके पूर्णहुये—सरजन्ट साहब ने प्रेजीडण्टसे कहा हजूरजानतेहैं कि और कोईकारवाई शुरूकीजाय—परंतु थोड़े समयके रहजाने से सरजन्ट साहबने कहाकि इसवक्तमेरागला दुखताहै प्रेजीडण्टसाहब नेकहा बेहतर है फिर अदालत बरखास्त हुई॥

पांचवे दिनका इजलास।

आजके दिनसब मेम्बरान् कमीशन् मौजूद थे परन्तु सरल्यू इसपीलीसाहब ग़ैरहाजिर और बरवक्त शुरूसुकहमेके गायकवारभी मौजूद न थे जिसवक्तरावजी का इजहारशुरू हुआ गायकवार अदालत में आये॥

डाक्टर ग्रेसाहब के इजहार के उपरान्त सरजण्ट बेलन टायन साहबने उनके इजहारसें सवालातकरने शुरूकिये।प्र० आपकेइजहारसे यहबातमालूम नहींहैकि आपनेसङ्खियाउस चरहसे अलगकीया नहीं जो आपको भेजागयाथा? उ०—हां अलग किया।प्र०—हमनेवह छल्लाधातका जोनलकीमेंपड़गया है देखाक्या उस आजमाइशसे और कोई रीतिइमतिहान की नहींजिससे बखूबीसाबित होकिसंखियाहै यानहीं? उ०—और कोई रीतिनहीं है मैंने इस इमतिहान के उपरान्त खुर्दबीन से भीदेखाथा। प्र०—इससे बढ़करकोई इमतिहान नहीं होसक्ता है? उ०-हांइससे बढ़करऔरकोई इमतिहाननहींहै। प्र०——क्या इसी आजमाइशसे संखिया अलग होजाती है? उ०—हां। प्र०-कईजौहरतांबे के होतेहैंक्यावहभी विषहोते हैं? उ०—हां। प्र०—क्यातांबेका जौहर भी जहर होताहै? उ०—हां जहर होता है। प्र०—अगर जौहर तांबे का किसी पतलीवस्तु से मिलाकर किसी को पिलायाजाय तो उसकेमुंह

में बखूबी तांबेका मज़ा आजायगा ? उ०—हां। प्र०—मैनेसुना है किइसतांबेके जौहर का मज़ाऐसा तेज़होता है कि अगर कोईशख़्सउसको गल्ती से खाजाय तौ शीघ्र मालूम होजाय? उ०—जबान को लगतेही उसका मज़ा मालूम हो जावेगा। प्र०-यहमज़ाकुछदेरतकरहेगा ? उ०-हांकुछ देरतकरहेगा। प्र०—क्याइसकी पहिचान यह भीहै जबउसकोकोई शख़्सखा जाय तो उसके कण्ठ में कांटेसे पड़जाते हैं याउसकीख़ासियत क्याहै ? उ०— उसकी ख़ासियत ज़हरकीसी है और उस केहल्कमें खुश्कीआजाती है। प्र०—और क्याउसके पेट मेंपीड़ा भीहोती है ? उ०—हांदर्द भी होजाता है। प्र०—क्या मुंहमें कफभी आनेलगता है? उ०—इसबातको मैं नहीं जानता। प्र० क्या कुछ थोड़ा कफ आता है ? उ०—हां जब वह अपनी तासीर करता है आताहोगा। प्र०—आधघण्टेमें याएकघण्टे में ? उ०—इससे भी कमदेर में तांबेकीतासीर होतीहै। प्र० शायदइसका फ़ायदा है किअगरखाली पेटमेंजाय तो जल्द असर करे ? उ०— हां यह सही है। प्र०—जब वह अपनी तासीरकरता है तो बराबर थूक आताहै ? उ०—हांजब जो मतलायेगा तो जरूर थूक आयेगा। प्र०—अगरथोड़ीसंखिया खाईजाय तो शायदथूक न आये और बराबररोज़ खाईजाय तोथूकआना शुरूहोजाय ? उ०—हां यहीबात है। प्र०—तो यहबातकुछअवश्य नहींहै जिसको संखिया दीजाय उसकोथूक आवै ? उ०—नहीं। प्र०—आपके बिचारसे ढाईचावल संखिया एकआदमी के मारडालने के लिये काफीहै ? उ०—हां। प्र० करनैलफियर साहबका बयानहै कि उनका जीमतलानेलगा और ऐसीदशा होगईजिसतरहकि किसीको संखियादी जाती है मगर इस्ट्रेमकपम्य की उनकेवास्ते कुछ ज़रूरत नहीं हुई मालूमहोता है कि उन्होंनेबहुत कम संखिया खाई होगी ? उ०—हां बहुतकम संखियाखाई होगी। प्र०—डाक्टर ग्रे साहब क्या आपके बिचारसे ऐसीथोड़ी संखियाके खानेसेजोमत-

लाने और कफ आनेलग होगा ? उ०—हां इतनी जीमतलाने और कफके आनेवास्ते कफी है। प्र०—आप कहतेहैं कि अगर कोई शख्स तांबेका जौहर खावे तो उसकाभी यही हाल होता है ? उ०—हां तुरन्तही जीमतलानेलगताहै। प्र०—डाक्टर ग्रे साहब आपको बखूबी अजजाके अलग करनेमें अभ्यास है यह बातउचित थी या अनुचित कि डाक्टरसीवर्ड साहबने गिलास की तलछटमें बगैर अजमायश के पानीमिलाया? उ०—हां उचितथी लेकिन (अभीप्रश्नपूर्णनहींहुवा था कि फिरसवालकियागया) प्र०—मेरे इसबातके कहनेसे यह मतलब नहींहै कि डाक्टरसीवर्ड साहबने जानबूझकर खराबकामकिया परन्तु सम्भव हैकि पानीमेंभी कोईजुज्जजहरीलाहो? ०—उ०हांमुमकिन है प्र०—क्यामेरा खयालसहीहै कि दसबारह दिनके उपरान्त दूसरी पुड़िया आपके पास भेजीगई जिसके निस्बत बयान है कि अमोनसेखुरचकर मट्टीभेजीगई? उ०—हांछः दिनके उपरान्त॥

सरकार के वकील ने डाक्टरग्रेसाहब के फिर

इजहार लिये।

प्र०—तुमनेसंखियेकाउसचूरेसे जोतुम्हारेपासभेजागयाथा बखूबी अलगकिया ? उ०—हांबखूबी अलगकिया साहबप्रेजीडण्टने कहाकि मिस्टरमैलवलसाहबकहतेहैं कि सुतरज्जिमने तर्ज्जुमागलतकिया उसनेतर्ज्जुमाकियाकि मुमकिनहै संखिया का अलगहोनाचूरेसे सुतरज्जिमने अपनीगलती मानलीप्र०-आपनेपहलीया दूसरी पुड़िया में तांबेका जौहर पायाथा ? उ० नहींप्र०-आपकोकरनैल फियरसाहबकी चिट्ठीमेमालूम हुआ होगाकिइसमें तांबेकाहोनाभी सम्भवितथा आपने तांबेकेहोने कीभी आजमाइशकीथी ?उ०-हांमैनेतांबेके होनेकी आजमायश कीथी।प्र०-क्यासंखिया ऐसाविषहैकि वहनहींपचता? उ० नहीं। प्र०—पसपाखाने के रास्तेसे कुछनिकल जाताहै और कुछ रहजाताहै उ०—हां। प्र०—आपसेपूछागयाथाकि मुखमेंधता

केस्वाद होनेका क्याकारण था क्याऐसामजा संखियाकेखाने सेभीहोजाता है ? उ०—इसबिषयमें सुखतलिफ रायहै। प्र०—इसबारेमें आपकाक्यामत है ? उ०—तोआपयह पूछतेहैं कि संखियामेंमजा है यानहीं साहब प्रेज़ीडेण्टबोले कि आपको अपनीनिश्चयसे क्यामालूमहुआ ? उ०—मैनेउसको चक्खाऔर दूसरीतरहसे मैने उसकीपरीक्षाली परमुझको उसकाकोई मजा न मालूम हुवा ऐडवकेट जनरल ने कहा शायद आप ने संखिया थोड़ी चक्खीहोगी सरजन्टबेलन टायन साहब ने कहा कि इतनीही करनैलफियर साहिबने चक्खी होगी उ० नहींमैनेकाफी संखियाचक्खीथी औरमैनेदेखाहै किजिनलोगों नेसंखियाखाई उनकावर्णनहै किमुहमेंधातकासा स्वादआजाताहै साहबप्रेज़ीडेण्ट ने कहाकि डाक्टर साहबकेवल उतनाहीकहसक्ते हैं जो पहिले केबडे २ डाक्टरोंकी रायहोचुकीहैं ? उ०—दशबीसमनुष्यों से मेरासाबिकाहुआ जिन्होंने संखियाखाई उन्होंने वर्णन किया कि मुखमें धातकासा स्वाद आजाताहै। प्र०—तीसरेपाकिटमें जोआपकेनिकट संखिया भेजीगईवह वैसीहीसंखिया थी जैसेकि प्रथमऔरदूसरेपाकिटमेंथी ? उ०—हांऐसीहीथी। प्र०—क्यासंखियासब एकही प्रकारकी होती है ? उ०—नहीं तरह २ कीहोती है। प्र० क्याआपने बुरादेसेइतना संखियाअलग करलियाथा कि आप कहसकेंकितीसरे पाकटमेंसंखिया वैसीही थी जैसेकिबुरादे में थी ? उ०—हांमैनेभले प्रकार खुर्दबीनसेदेखा औरमालूम हुवाकिवही संखियाहै। प्र०—पसआपकोमालूम हुवाकियह वहीसंखिया थी ? उ०—हांवहीसंखिया। प्र०—आपनेअच्छी तरहदेखाकिवहीं संखियाथी ? उ०—हांमैनेखुर्दबीन से देखा कि वहीसंखियाथी। प्र०—जिसको आपधातका मजा बयान करतेहैंक्या उससे तुम्हारा प्रयोजन तांबेके स्वादसे है ? उ० हां। सरदिनकररावने कहासंखियेके सिवा औरभी इसप्रकार की वस्तुहैंजिनकी खासियतसंखियाकी है औरप्राणहर हैं?

उ०—हां कहा है प्रश्न. यह मुकद्दमा जैपुरका बड़ा बात पक्षपातसे किसी विद्यार्थी से कुलमक्तोड़े ? उ०—हां कुल मक्तोड़े लिखा है ऐडवोकेटजनरलने प्रेसिडेण्टसाहब से कहा जो गवाहोंका कटहरा कहीं छोड़ा छटा दिया जावे तो उचित है क्योंकि दूसरा पटन गवाहों के वास्ते कटहरा आगेको बढ़ा दियागया था अबदिल्ला नौ गवाह आवेंगे—सो कटहरा पीछेको छटा दिया गया और एकगवाह हिन्दुस्तानी तलवार कर उसमें खड़ा किया गया था—सरफ प्रेसीडेण्टने पूछा कि यह गवाह कौन मुल्कहै ऐडवकेट जनरलने उत्तर दिया कि इसका नाम अबदुल्ला है ॥

मुहम्मद अब्दुल्ला गवाह का इज़हार ।

मुहम्मद अब्दुल्ला के इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहब ने लिये उसने बर्णन किया कि जब करनैल फियर साहब बड़ौदे में रेजीडेण्टीपटपर नियतहोकर आयेतो उस समयमे मैं करनैलसाहब का नौकर हूं——करनैलफियर साहब पालन पुरसे यहां आये—मैं उनके पीछे बड़ौदे में आया पर्व्वमें जब कि मेरी उमरकमथी और लड़का था तो करनैलफियर साहब अपनी मेम साहिबा समेत इङ्गलिस्तान को जायाकरते थे उस समय मेंभी उनका मैंनौकरथा—पन्द्रहवर्षसे मैंउनकी नौकरीकरता हूं—कभी नौकूफहोजाताथा और कभी फिर रखलिया जाता था गतनवम्बरमें मैं उनका नौकर था चौबदारीभी करचुका हूं और रमज़ान महीने में दूसरे दरजेका मैं नौकर था और दूसरे दरजे की खलाजिमी का कार्य्य शर्ब्बत तय्यार करने का था जब मैंबीमार अथवा ग़ैरहाज़िर होजाता तो खानसामा शर्ब्बत बनायाकरता करनैलफियर साहबप्रति दिनयहशर्ब्बत पिया करते ९ नवम्बर को उस कमरे में जहां कि शर्बत बना करताथा मैंने शरबततैय्यार किया और उसको खानेके कमरे में लेगया वहांमे मैंने एक तश्तरी और एक बरतन और एक छुरीलेकर बरतन में फलीकेलेकी और दोतीन नारंगियां रख

करसबबस्तुओं को साहबके कमरेमें लेगया और रीतिके अनुसार मुंहधोने की मेजपर उसके रक्खा उस समय साढ़ेछः बजे पर दोतीन मिनटबीतेथे इसके उपरान्त उसकमरेमें दोमनुष्य आये एक का नाम गोबिन्द और दूसरे का नाम यलापा था एक मनुष्य कमरेमें झाड़ू देताथा और दूसरा प्रत्येक वस्तु को झाड़ता पोंछता था फिर मैंने साहब के वास्ते कपड़े निकाले करलनेफियरसाहबके आनेसे पहिलेमैं फिरकमरेमें नहींगया परन्तु जिस समय फियरसाहब आये उससमय मैं वहां गया उसदिनमैंने चकोतरेकाशर्बतइसप्रकारसे बनायाथा—पहिले मैंने चकोतरेको छुरी से छीलकरकाटा फिर उसकोमैंने सूप प्लेटमें रक्खाऔर चांदीके चमचेसे उसको दबा २ कर अरक निकालातिसपीछे एकबारीक कपड़ेमेंमैंनेउसको छानलिया॥

सरजन् बेलन टायन साहबके प्रश्न॥

प्र०—उस कमरेके सम्मुख बरामदाभीथा वा नहीं? उ० हां बरामदाहै और उसबरामदेमें भीतरऔर बाहरसे रस्ता है। प्र०—यहबरामदा रोजसाफ कियाजाताहै? उ०—बाज़२ मरतबा—औरजो बरामदा भीतर की ओरहै वहरोज साफ कियाजाताहै—औरमैं अच्छीतरह नहींकहसक्ता कि बाहर कावरामदा प्रति दिन झाड़ा जाताहै यानहीं। प्र०—मैंभले प्रकारनहीं समझता कितुम भीतरकाबरादा किसको कहते हो? उ०—साहबकी कचहरीके कमरेमें जानेके दोमार्ग हैं एकबाहरके बरामदेसे औरदूसरे अन्दरके बरामदेमेंसे होकर है। प्र०—एक बरामदाहै यादो बरामदे हैं? उ०—बरामदा एकहै परघोड़ा बरादा खुलाहुवाहै। प्र०—यहबरामदारोज साफहोताहै? उ०—हांभीतरसे प्रतिदिन साफहोताहै। प्र० उस रोजयह बरामदा साफ किया गयाथा या नहीं? उ० मैंयहबात भलेप्रकार नहींकह सक्ता क्योंकि यहमेरा काम नहींहै मजदूरका कामहै। प्र०—साहब ऐडवकेट जनरल ने प्रश्नकियाकितुमने ९नवम्बरकोदेखाथा किकोई मनुष्यबरामदे

कौसाफ करताथा ? उ०—दोमनुष्य उसमें सोतेथे और वही साफ कियाकरते थे। प्र०—मेरे प्रश्नका यहउत्तरनहीं हैतुमने ९नवम्बरको साफकरते हुयेबरामदेको देखाथा ?उ०—नहीं॥

हज़हार गोविन्द बालू॥

गोविन्दबालु बुलायागया और मिष्टर अनवरारटी साहब ने उसके हजहार लिये उसने कहा कि मैं हम्माल हूं और रेजीडन्सी कानौकर हूं जबसेयुत करनेल वाकर साहब दो वर्ष की छुट्टी लेकर इंगलिस्तान को गये थे मैंउस समय में नौकर था इसको पांच छः वर्षव्यतीत हुये मेराकाम है कि साहबरेजीडन्ट केनिजकी कचहरीका कमरा साफ किया करूं मुझको ९ नवम्बर सोमवार अच्छीतरह यादहै कि उसदिन भोरको मैंने कमरा साफकिया था७ बजेसे पहिले जब साहब हवा खानेको गयेथे तो मैंने कमरा साफ किया था और मैं उसदिन कमरे में आध घंटे या पौन घंटे तक रहा अभी मैं कमरेके भीतर ही थाकि अब्दुल्ला भी कमरेमें आया-लक्ष्मण सिपाही दवातलियेहुये बाहरखड़ाथा सबसे प्रथम यलपा उस कमरे में गया और वह कमरे को साफ करके चला आया यलापा दूसरा मजदूर है-अब्दुल्ला भीतर था और साहबके कपड़े निकालता था कपड़ों के निकालने के पीछे बूट साफ किये और बाहर निकल आया रावजी हवालदार भी उस कमरेमें गया परन्तु अब्दुल्लाके निकल आनेकेपीछे वहगया था रद्दीकी टोकड़ी साहबकी मेजके पासरहा करतीथी रावजीने कहा कि इस रद्दीकी टोकड़ी को दूसरी टोकड़ी में करदेना चाहियेयह रद्दीकाग़ज़की इकट्ठी की जातीथी इसलिये उस को फेंका नहीं करते थे-दो टोकड़ी रद्दीकी रहती थीं एक टोकड़ी भीतर रहतीथी और दूसरी बाहर रावजीने भीतरकी टोकड़ीके काग़ज़ बाहरकी टोकड़ीमें डालदियेसाहब प्रेसीडेन्सी ने कहा कि इस बात के कहने से तुम्हारा क्या मतलब है गवाहने कहाकिजो टोकड़ी भीतरके कमरेमें रहतीथी उसके

काग़ज़ बाहरके कमरेकी टोकड़ी में डाल दिये गये अर्थात् रावजी भीतरकी टोकड़ीसे वह काग़ज़लाया और बाहर की टोकड़ी में वह काग़ज़ रखदिये भीतर जो मेज़ है उसको मैं साफ़ किया करता हूं सुखधेने की मेज़को भी मैं भले प्रकार जानताहूं प्रतिदिन नवीन जललाकर उसपर रक्खा करता हूं ६ नवम्बर को उसपर मैंने नवीन जल बाहर के घड़े से लाकर रक्खा और उस घड़े में पानी भीथोड़ीभरा करता है-यह जल केवल साहब लोगोंके बर्त्तावकेलिये है मैंनेअब्दुल्लाको शर्बतलाते हुये और मेज़पर रखतेहुये नहींदेखा मैंसातबजे इसकमरेमें गया था-जब साहब हवाखाकर लौट आये मैंने उनको नहीं देखा सरजन्टबेलनटायनसाहबनेगवाहसे कोईप्रश्न नहींकिया॥

ऐडवकेटजनरल ने कहाकि मैं यलापा नाम दूसरे मज़दूर को बुलाता हूं-साहब प्रेज़ीडण्ट ने कहा कि आपने घड़े के विषयमें कोईप्रश्न नहीं किया तथाच गवाह फिर बुलायागया और ऐडवकेटजनरल ने उससे प्रश्नकिया॥

गवाहने वर्णन किया कि खानेके कमरेके बाहर एक दीवार है जहांकिघड़े रक्खेजातेहैं-उसके सामने दरबारका कमरा है वहां मनुष्यों काआवागमन रहता है उस स्थानपर घड़ेरहते हैं-साहब ऐडवकेटजनरलने कहा कि पहिलेसे अबकुछ रेज़ीडन्सीका प्रबन्ध पलटगया है साहब प्रेज़ीडण्टने सरजन्टबेलनटायनसाहबसे कहाकि आप इसगवाहसे कुछसवाल करना नहींचाहते उत्तरदिया नहीं॥

इज़हार यलापा गवाह॥

यलापाकेइज़हारऐडवकेटजनरलने लियेउसने वर्णनकिया कि मेरा नामयलापा नरसूहै मैंमज़दूर रेज़ीडन्सीका नौकर हूं ६नवम्बरको साहबका कमरा साफ़ किया था॥

सरजन्टबेलनटायनसाहब ने इसगवाह से कुछ सवालात नहीं किये॥

इज़हार लक्ष्मण ॥

लक्ष्मण दरयासिंहके इज़हारमिस्टर अनवरारटीसाहबने लियेउसने बयानकिया कि ९ नवम्बरको करनैलफियरसाहबके निजके कमरेकीमेज मैंने साफकीथी मेजको साफकरकेडेवढ़ी पर गयाजहांकि सिपाही बैठाकरते हैं वहांजाबैठा मैं नहीं जानता किमेरेजानेके पीछेवहां क्याहुवासाहबने मुझको चिट्ठी दी मैंडाकखानेको चलागया इसचिट्ठीको सवा सात या साढ़े सातबजेलेगयाथा बरामदेसेजातीसमयकोई मनुष्यमुझकोनहीं मिलापरन्तु जबमैं डाकघरसे लौटआताथातो मैंनेएक मनुष्य कोदेखा अर्थात् सालिमको औरयह वहीसालिम था जोभी महाराजके साथआया करताथा वहमुझको नाखे के निकट मिलाथा औररजीडन्सी कोआताथा जिससमय मैंरजीडन्सीमें पहुंचातो वहवर्त्तमानथा और जहांविलायती वृक्षलगेहुयेथे वहांखड़ाथा उनवृक्षोंसे आठनौपर्ग की दूरीपर रेजीडन्सीहै डाकखानेके आवागमनमें पौनघंटालगाहोगा सालिमउनही वृक्षोंके पासखड़ा रहासरजन बेलन टायन साहब नेकहा कि मुझको इस गवाहसे कोई प्रश्नके करनेकी इच्छा नहीं ॥

इज़हार जम्मू मियां गवाह ॥

जम्मूमियांके इज़हार ऐडवकेटजनरल ने लिये उसनेवर्णन किया किमैं कम्पूका कोतवाल हूं मुझको९ नवम्बरभलीभांति स्मर्णहै कि उसदिनमुझको नाटाजुग्गाकी जबानी कोई खबर मालूमहुईथी सोडाक्टरसीवर्ड साहबसे मैने उसकी इत्तिला की और उसीदिन दोबजे मुझको मालूम हुवा कि करनैल-फियर साहबके विषदेनेका उद्योगहुवाथा औरयहबात डाक्टर सीवर्ड साहब ने मुझसेकही थी मैने इसबातका जिक्र दूसरे किसीशख्स से नहीं कियापरन्तुइसके पीछेनाटाजुग्गासे तीन औरचार बजेकेबीच में निस्संदेह वर्णन किया था ॥

ऐडवकेटजनरल नेकहा तुमने नाटाजुग्गासे कहा था कि

करनैलफियरसाहबके बिषदियेजानेका उद्योग हुवाहै यहतुम ने उसकेदृष्तिलाके पहिलेकहाथा या उसकेवर्णनके पश्चात् ? उ०—जिससमय मैनेडाक्टरसीवर्ड साहबसे इत्तिलापाई उसी समयमैनेनाटा जुग्गासेकहाथा साहब प्रेजीडण्टने कहा कि मेरीसमझमेंनहीं आताकियह गवाहक्याकहताहै उससेफिर पूछाजायसो पूछागयातो उसनेकहाकि प्रथमसुझसे डाक्टर सीवर्डसाहबने कहाथा इसके उपरान्त मैने नाटाजुग्गा से कहा औरउससे मैंनेइसप्रयोजनसे कहाथाकिकुछ थोरेवार इत्तान्तउससे मालूम हो। प्र०—जबतुमनेनाटा जुग्गासेकहा था तोवहभीतुमने उससेकहाथा कि यह बातडाक्टर साहब ने मुझसे कही ? उ०—हां॥

सवालात जो जम्मू मियाँ से सरजन्ट
बेलन टाइन साहब ने किये॥

प्र०—जब तुमने नाटाजुग्गासे वहकहा जो तुमसे डाक्टर सीवर्ड साहबने कहा था तो तुमसे नाटाजुग्गाने कुछ कहा था ? उ०—हां। प्र०—इसकेपीछे तुमनेडाक्टर सीवर्ड साहब को देखा ? उ०—हांदूसरेरोज प्रातःकालको। प्र०—उनसे तुमनेवहीकहा जोनाटाजुग्गाने तुमसेकहा था ? उ०—हां। प्र०—डाक्टरसीवर्ड साहबने तुमसे तहक़ीक़ात करनेको कहा था ? उ०—हां। प्र०—तुमसेडाक्टर सीवर्डसाहबने क्या कहा था ठीक२वर्णन करो ? उ०—मुझसे उन्होंने कहाथा किएक मनुष्यनेकरनैल फियरसाहब को बिषदिया परन्तुमालूमनहीं कि किसनेदिया सोतुम उसको निश्चयकरो। प्र०—क्या तुमसे केवल इतनाही डाक्टर साहबने कहाथा ?उ०—हां इतनाही कहा था। प्र०—तुमको भलीभांति मालूम है कि इतनाही कहा था ? उ०—हां। प्र०—उन्होंने किसी मनुष्यका नाम नहीं लिया ? उ०—उन्होंने किसीका नाम नहीं लिया। प्र०—यह तहक़ीक़ाततुमको क्यों सुपुर्द कीगई ? उ०—यह तहक़ीक़ात मुझको इसवास्ते सौंपीगई किमैं यहांका कोतवाल हूं॥

इज़हार नाटाजुग्गा गवाह ॥

नाटाजुग्गाके इजहार मिस्टर अनवरारटी साहबने लिये उसनेकहा कि मैंबाजारका सुक़ह्महूं और सफाईआदिकी देखभालका कार्य्यमेरे संबंधितहै ९ नवम्बर मुझको भलीभांति स्मर्णहै मैं सालिम को जो गायकवार का सवार है जानता हूं मैने ९ नवम्बर को भोरको आठ बजे उसको देखाथा—मैं एकमुकाम कमातीपुरा है उसको साफ करताथा सालिम बाजारकी तरफ़ घोड़ेपर सवार हुवा घोड़ेको खूब तेजलिये जाताथा वहनगरकी ओरसे आताथा और सदरबाजारको जाताथा वहमुझको पुलपर मिलाथा मैं जुम्मा और रावजी कोजो रजीडन्सीमें मुलाजिमहै जानताहूं यहदोनों सदरबाजारमेंरहते हैं पांचमिनटके उपरान्त सालिम घोड़ेपर सवार उसतरफ से वापिस आया और घरकी ओर गयाउस समय उसकाघोड़ा बहुततेज नहींजाताथा मैनेजन्मूमियां कोतवाल सेसालिमका जिक्रकिया जबसदर बाजारसे वहलौट आयातो मुझसेकुछ बातकीथी ॥

सरजनबेलनटायन साहब के प्रश्न

नाटाजुग्गासे ॥

प्र०—जबतुमसे और सालिमसे बातेंहुईंथींतो सालिमका घोड़ाधीरे २ जाताथा वा तेजजाता था ? उ०—जाते समय अतितीव्र जाताथा और आनेके समय धीरे २ । प्र०—सालिम कानाम विषके दियेजानेमें तुमसे किसीने कहाथा ? उ०—नहीं तिसपीछे रावजी बुलायेगये उससमय सरजन बेलन टायन साहबने कहा कि मैं चाहताहूं कि महाराजा साहिब भी बुलायेजांय सो प्रेजीडन्ट साहब की आज्ञानुकूल महाराजा साहब बुलाये गये ॥

प्रेजीडण्टसाहबने पूछा कि महाराज को क्यों बुलातेहो सरजनसाहबने कहाकि महाराजा साहबने कहाथा कि जब रावजीके इजहारहोंतोमैंबुलालियाजाऊं—ऐडवकेटजनरलने

कहा कि एक गवाह और है जो इजाजत होतोबुला लिया जाय—सो मुहम्मद अलीबख़्श गवाह बुलाया गया ॥

मुहम्मद अलीबख़्शगवाह का इज़हार ॥

मुहम्मद अलीबख़्शका इजहार मिस्टर अनवरारटीसाहब ने लिया उसने कहा कि मैं रेजडन्सीका चपरासी हूं ९ नवम्बर सोमवार मुझको अच्छीतरह स्मर्ण है सालिम जो गायकवारका सवार है उसको मैं जानताहूं—साढ़ेछः बजे या सात बजे मैंने सालिमको रेजीडन्सीमें देखा था उससमयतक साहब रेजीडण्टहवाखोरी से लौटकर नहीं आये थे—मैं डेवढ़ी में एक सन्दूकपर बैठाहुवाथा और सालिम घोड़ीकीबाग पकड़े हुये खड़ा था यहसन्दूक डेवढ़ीके बाईंतरफ रक्खा हुवाहै जिस समय डाक्टरसीवर्डसाहब के निकट मैं चिट्ठीलेगया उससमय सालिमकोमैंनेवहां नहींदेखा मुझसे और सालिमसे कुछबातें हुईं थी उसने कहाथा कि तुम बाजारको जानेहो एकरुपया लेतेजाओ मुझको घोड़ेबिस्कुटलादो जबमैं रेजीडन्सीको लौट आयातो मैंने सालिमको वहां नहीं देखा उसने मुझसे नरह रुपयामांगा न बिस्कुटमांगे मुझे स्मर्ण है कि उसदिनमैंने मिस्टरबोवीसाहब को देखा था—दो तीनदिन के पीछे साहब रजीडण्टने मुझे आज्ञादी कि मैं सालिम वा और किसी मनुष्यसे न बोलूं उससमय मैं रेजीडन्सीको लौटआया मुझको डाक्टर सीवर्डसाहब मिले थे—मैंने सलामकिया तो डाक्टर साहब ने मुझसे पूछाकि तुम क्या लायेहो मिस्टर अनवरारटीसाहबने कहा कि मैं तुमसे यहबात नहीं पूछताकि उन्होंने तुमसे क्या पूछाथा और तुमसे डाक्टरसाहबबोले थे या नहीं ? उ०—हां बोले थे और मैं उनसे बोला था—मिस्टर ब्रैन्सनसाहब ने इस गवाहसे प्रश्न किये ॥

प्र०—करनैलफियरसाहब ने तुम्हारे इजहारलियेथे ? उ० नहीं मिस्टर बोवीसाहब ने मेरे इजहार लिये थे। प्र०—यह इजहार करनैलफियर साहब के रूबरू उन्होंने लिये थे ? उ०

नहीं करनैलफियर साहब अलग बैठेथे। प्र०—तुमने करनैल फियरसाहबकेरूबरू अपनेकिसीबयानपर दस्तखतकियेथे? उ० नहीं क्योंकि करनैलफियरसाहब वहां मौजूद न थे। प्र०—तुम ने मिस्टरबोवी साहब से कहा था कि जब तुम बाजारसे पलट आये तो तुमने सालिम से कह दिया था कि बिस्कुट तय्यार नहीं हैं? उ०—हां मैंने दूरसे कहदिया था। प्र०—दोमिनट हुये तुमनेवर्णन कियाथा कि बाजारसे लौटतेहुये मैंनेसालिम को नहीं देखा अब बयान करो कि तुमने सालिमको कबदेखा था? उ०—जब मैं डाक्टर साहब के बंगले से वापिस आता था तोस्कूलकेनिकट उसको देखाथा। प्र०—जबतुमने स्कूलकेनिकट देखाथा तो कौनवक्तथा? उ०—साढ़ेसात या आठ बजेहोंगे। प्र०—इसके उपरान्त तुमने सालिमको नहींदेखा? उ०—हां जब मैं बंगले को आया था उस समय सालिम को देखा था॥

ऐडवकेटजनरलने मुहम्मद अलीबख़श का दूसरी बेर इज़हार लिया।

प्र०—जब तुमने सालिम को इस्कूलके निकट और डाक्टर साहबके बंगलेके पास देखा था तो वह क्या करता था? उ० वहनगरकीओर जाताथा। प्र०—घोड़ेपर यापैदल? उ०—घोड़े पर। प्र०—कितनी देरके पीछे तुमने उस को घोड़े पर देखा था? नौबजे॥

साहबप्रेसीडण्ट ने पूछा कि बंगले पर मुतरज्जिम ने कहा हांमाईलार्ड—मिस्टरअनेवरारटी साहबने कहाकि रेसीडन्सी पर—मुतरज्जिमने कहा हां हां रेसीडन्सी पर॥

ऐडवकेटजनरलने गवाहकी तरफ देखकर प्रश्न किया कि तुम से और सालिमसे कुछबातेंहुईंथीं? उ०—उससमय कुछ बार्त्ता नहीं हुई। प्रश्नसरदिन कर रावका—क्या सालिम का यह नियमथा कि प्रतिदिन रेसीडन्सीको आया करताथा वा उसके आने का कोई मुख्य दिन नियत था? उ०—सोमवार और वृहस्पतिवार को आया करता था। प्र०—९ नवम्बर को क्या दिन था? उ०—सोमवार और देवालीका दूसरादिन था

उससमय मल्हरराव उसीअदालतमें आये और रावजीगवाह बुलाया गया॥

इज़हार रावजी गवाह॥

रावजी रहीमन के इजहारऐडवकेट जनरलनेलिये उसने कहा कि मैं रेजीडन्सी के चपड़ासियों का हवालदार था और डेढ़वर्षयासवा वर्ष से इसओहदेपर नियत हूं॥

करनैल फियरसाहबने मुझको नियत कियाथा मैं सदरबाजारमें रहाकरताथा कोई रेजीडन्सीका नौकरमेरे साथ या मेरेपासनहींरहताथा मैं सालिमको जानताहूं जो महाराजा साहिबका एकसवारहै जबवहबंगलेको आया करता था उस समयसे उसकीमेरी मुलाक़ातहै बंगलेसेमेरा अर्थरेजीडन्सीहै कमीशन के बैठने के दो महीने पहिले जो काश्तकारों की नालिश के सुनने के मध्ये हुई थी और जिसको सवावर्षबीता सालिमनेमुझसे कहाकिमहाराजा साहिबनेतुमको बुलायाहै वह तुमसेकुछ वार्त्ताकरने चाहते हैं तुममहाराजा साहब के निकटचलो मैनेउससेकहा कि अभीमेरा आना नहोगा वह मुझसेतकरार करतारहा अन्तको मैं जानेपर राजी हुवा सो पहिलीबेर रविवारको मैं महाराजासाहबके निकटगया-संध्या समयसातबजे रेजीडन्सीसे मैंरवानाहुवा प्रथममैं यशवन्तराव के निकटगयायह मनुष्यमहाराजा साहबकाजासूस है वहरेजीडन्सीको आया करता था॥

उसकाघर नईबाजारमें है उसके निकट सालिमभी बैठा हुवाथामुझको यशवन्तराव औरसालिम महाराजा साहबके सन्मुख ले गये॥

श्रीमहाराजा साहिबका मन्दिरनगरके भीतरहै उसमकान में नज़रबाग़होकर उसमार्गसेगया जोमकानकेपीछेसे है जब मुझकोयहदोनों मनुष्यसीढ़ीपर लेगयेतोएककमरे परमुझको बैठायासालिम मेरेनिकट बैठारहा और यशवन्तराव महाराजा साहिबसे इत्तिलाकरने के वास्तेगयासो महाराजासाहब

यशवन्तरावकेसाथ आये और मैंनेउनको पहिचाना और उठ करसलामकिया महाराजा साहिबनेमुझसे कहाकितुमबंगले से खबरलासक्ते हो जोबंगलेसेखबर लाओगे तो मैंतुमकोखुश इनआम इकराम दूंगा और जबखबर लाओगे तोमैं तुमको खुशकिया करूंगा तुममुझको सदाखबरेंदियाकरो मैं तुमको हमेशाखुश किया करूंगा महाराजा साहब ने यह भी मुझ से पूछाकितुम रेजीडन्सीके जमादारको भलीभांति जानतेहो मैंनेकहाहां महाराजासाहब ने मुझसेयहभी पूछाकि उससे और तुमसे कुछलेहै मैंनेकहा हां महाराजा साहबने कहा कि आगे जमादार कोभी अपने साथलाना मैंने कहा बहुत अच्छा इसके पीछे महाराजा साहब मुझ से इधर उधर की बातें करने लगे॥

ऐडवकेट जनरलनेकहा किइधरउधर के शब्दकाअर्थ इस से उत्तमऔर नहीं होसक्ता उसने कहा कितहीं इससे यह मतलबहै कि मुतफर्रिक्क बातेंहुवा कीं॥

तिसपीछे गवाहने वर्णनकिया कि जबमैं महाराजा साहब के निकटजाया करताथा तो यशवन्तराव और सालिमसवार मेरे हमराह जायाकरते थे मैं सदैव महाराजा साहिब को रेजीडन्सी में लोगोंके आनेकी इत्तिलादिया करताथा॥

फिर मेम्बरान कमीशन टिफन खानेके वास्ते उठे॥

जब टिफनके पीछे कमीशन के मेम्बरान् एकच हुये तो उस गवाहने वर्णन किया कि जब पूर्व्वमें कमीशन इकट्ठी हुईथी तो उस समय में मैं तीनबेर महाराजा साहब के निकट गया था सदाउसी मकानमें महाराजा साहबसे मेरीभेंट हुई और जिस प्रकार कि पहिली बेर हुई उसी तरह दूसरी मरतबा भी हुई मैं हमेशा महाराजा साहब को इत्तिला दिया करता था कि रेजीडन्सी में क्या कारवाई होती है क्योंकि मैं कमीशन की कारवाई को भलीभांति जानताहूं मैंसुना करताथा कि लोग कमीशन के रूबरू क्या शिकायत करते हैं वही महाराजासाहब

से जाकर कहदेताथा उनदिनों महाराजा साहबसे मैंने अपने विवाह का हाल वर्णन किया महाराजा साहबने बतौर खर्चा शादीके पांचसौ रुपये दिये जिस जमाने में कि कमीशन तह-कीक़ात करतो थी उस समय मुझको यह पांचसौ रुपये दिये थे-महाराजा साहब ने यशवन्तराव को पांचसौ रुपये के देने की आज्ञादी थी सो उसने रुपये लाकर मुझको दिये थे॥

साहब ऐडवकेटजनरल ने कहाकि माईलार्ड जो दरवाजे बन्दकरदिये जावेंतो उचितहै क्योंकि रोशनीकी चमकजिया-दाहै-मिस्टर मैलवलसाहबने कहा खिड़कियोंके बन्दकरने की कुछ आवश्यकता नहीं॥

ऐडवकेटजनरल ने कहाकि चिलमनका डालाजाना अव-श्यहै-साहबप्रेजीडेण्टने आज्ञादी कि मिस्टर जारडीनसाहब यह काररवाई करें——गवाहने बयानकिया कि यशवन्तराव मेरेनिकट रुपया नहीं लाया था किन्तु उसने मुझसे आकर कहाथा कि महलमें आकर रुपया लेजाओ-सो एक मनुष्य पंखेवाला रेजीडन्सी का जिसका नाम जुग्गाथा उस को मैं अपनेहमराह लेगया जबमैं महल में पहुंचा तो मुझ को एक सिपाहीमिला फिर यशवन्तराव मिले-यशवन्तराव के कार-कुनने मुझको पांच सौ रुपये दिये-उस समय कारकुन और जुग्गावर्त्तमानथे और कोई मनुष्यनथा-कारकुनकानाम दल-पतथा मैंने चारसौ रुपये विवाहमें खर्चकिये और सौ रुपया अमानतमें रक्खे और जिसके पास अमानत रखवाईथी उससे यह बातकहीकि जिससमय चाहूंगा लेलूंगा--इस चारसौरुपये का कुछजेवरबनाया औरकुछका वस्त्र मोललिया जिस समय में कि कमीशन का इजलास होता था मेरा विवाह हुवा था कमीशन के पूर्णहोने से दोतीन दिनके उपरान्त मैंने सालिम को देखाथा उसने मुझसे कहाकि मैंने जमादारको भी राजी करलियाहै और मुझसे कहाकि जमादारने महाराजासाहब के पासआने का वादा किया है जब जमादार आवें तो तुम

भी उन्हींके साथ आना उसी दिन संध्याको मैंने जमादार से जिक्रकिया जमादारने कहाकि अच्छामैं इतवारकेरोजचलूंगा मुझको महीना याद नहीं परन्तु इतनास्मर्ण है कि कमीशनको पूर्णज्ञये आठदस दिनज्ञये थे—इत्तिजाम यह किया गया था कि प्रथम यशवन्तराव केघरमें जाऊं जमादार यशवन्तराव के मकानपर मुझको मिलगये थे—मुझको याद है कि जुग्गा या कारभाई मेरे साथ गयेथे—यहदोनों मनुष्य पंखेवाले हैं और अब बेकार हैं एक मनुष्य का मेरे हमराह होना मुझको खूब यादहै—जब हमलोग वहां पहुंचे तो नरसूजमादार और सालिम और यशवन्तराव हमको मिले हमलोग नज़र बाग की तरफहोकर गायकवारके मन्दिर मेंगये औरयशवन्तरावनगर में होकरगये—सालिमसवार मेरे साथगया था हमलोग जब सीढ़ीपर पहुंचे तो उस समय जमादर हमारे साथ था और पंखेवाला नीचे खड़ारहा कमरेमें हमसब बैठाये गये सालिम एक और जीनेपरगया थोड़ी देरपीछे मुझको और नरसूजमदारको साथ लेगया जब हमवहां पहुंचे तो महाराजा साहब एक बेंचपर बैठेहुये थे उसकेनिकट एक गुसलखानाथा वहां यशवन्तराव और सालिम और महाराजासाहबथे महाराजा साहब और जमादार और मुझसे बातें हुई इनबातों से यह प्रयोजन था कि रेज़ीडन्सी में जो जो बातें हुआ करें उसकी इत्तिला महाराजा साहब को दीजायाकरे महाराजा साहब ने कहाकि जोकि तुमलोगबड़ौदेमें रहतेहो हररोजकीखबर मुझको दियाकरो और महाराजा साहबने जमादारसे कहा कि पुराने जमादारहो तुमसब सरदारोंको जानतेहोइसलिये मुझको इत्तिला दियाकरो कि कौन २ सरदार आताहै और क्या २ बातें हुवाकरतीहैं जमादारने वादाकियाकि सालिम के द्वारा बराबर आपको खबरें पहुंचाया करूंगा यदि आपके विचारमेंउचित होतोआप उन खबरों को लिख लियाकीजोये महाराजासाहब ने कहा कि जो जरूरी खबर हुवा करे वह

लिखकर भेज दियाकरो—जमादार ने महाराजासाहब से कहा कि मेरेभाईकी पिनशन मौकूफहोगईहै आप उसकेवास्ते कुछ बन्दोबस्त कीजिये महाराजा साहब ने कहा मैं उस का कुछ बन्दोबस्त नहीं करसक्ता तुम साहब रेज़ीडण्ट को अरज़ीदो जमादार का भाई महाराजासाहबके पास नौकर था इस के अनन्तर कुछ बार्त्ता न हुई और महाराजासाहब नौसारीको चले गये ॥

नौसारीको जानेके पहिले मैं तीनचारबेर महाराजासाहब के पास गया——मैंऔर जमादार करनैलफियरसाहबकी अरदलीमें थे जबकि वह नौसारीको गयेथे महाराजासे औरमुझ सेकईमरतबे नौसारीमें मुलाक़ातहुई यशवन्तरावका बेटाएक बटी में वहां रहता था और एक मरतबा मुझ को सालिम महाराजासाहबके पासलेगया और मुलाक़ातकराईउसरोज़ महाराजा साहबने मुझसे भावपूनाकर के मुझे बार्त्ताकी और कहा जो तुम बराबर खबरें दोगे तो तुमको बहुतखुश करूंगा और कहाकि तुम दामोदरपंथ या दामोदर परपदको जानतेहो मैंने कहा कि हां जानता हूं——तीनबेर पेडरू के साथ महाराजा साहब के निकट गया था जबकि महाराजा साहब नौसारी से लौट आये तो मैं बीस इक्कीस मरतबा महाराजा साहबके पासगया पेडरूसे महाराजासाहबने पूछाकि साहब किस समय भोजन करते हैं और खातेवक्त क्या २ बातें होती हैं पेडरू ने उत्तर दियाकि संध्यासमय भोजन करते हैंछोटी मेमसाहिबा आप की बड़ी प्रशंसा किया करती हैं जो आप साहबसेदोस्ती रखियेतो आपकेलिये अति उत्तमहोगा महाराजासाहबने कहाकिमैंतो साहबसेस्नेह रखताहूंपरन्तुसाहब मुझसे अप्रसन्न रहते हैं ॥

गवाहनेयहभी वर्णनकिया अगरआपसाहब से अच्छीतरह रहेंगे तो साहब भी आपपर मेहरबानी रक्खेंगे ॥

छोटी मेमसाहिबा की गर्ज़ बेवीसाहब की मेमसाहिबा से है

महाराजासाहबने पूछा कि तुम अपने गोवादेश से कब लौट आये पेड़रूने कहाकितीन चारदिनहुये उससमय महाराजा साहबने पेड़रूको एक पुड़ियादी और कहाकि साहबके खाने में डालदेना——जब पेडरू अपने घरको जाता था तो उसने कुछरुपया सालिमसवार से लिया था॥

ऐडवकेटजनरलने मेम्बरान् कमीशनसे कहाइससमय चार बज गये क्या और भी किसी गवाह के इज़हार लिये जांयगे मेम्बरोंने कहा आज अदालतबरख़ास्तहो कलसुकहना फिर पेशहोगा सो अदालत बरख़ास्तहुई॥

आठवें दिनका इजलास

रावजी का इज़हार फिर शुरू हुआ॥

जब कि अदालतएकच हुई तो सरल्यूइसपीलो साहब आये और श्री महाराजामल्हरराव टिफन खाने के वक़्ततक समाज में वर्त्तमान थे ऐडवकेटजनरल ने रावजी से नीचे लिखेहुये प्रश्न किये॥

प्र०—तुमने मुझसे कलके दिन कहाथा कि मैं महाराजा साहबके पास पेड़रू के साथगया था कहोकि सिवाय पेड़रू के और भी कोई मनुष्यथा? उ०—मेरेसाथ नरसूजमादारथा और क़ब्लइसके भीवादवापिसी नौसारीके कईमरतबा जमादार और पंखेवालेके साथ महाराजासाहबके पासगया था॥

सरजन्बेलनटायनसाहनेबकहा कि इसगवाहसे कहाजाय कि ऊंचेशब्दसे बोले क्योंकि महाराजासाहब उसकी आवाज नहीं सुनसक्ते गवाहने कहाकि नौसारीसे आनेके पन्द्रहदिन उपरान्त तीन सौरुपये मुझकोमिलेथे यहरुपये मुझको नरसू जमादारने दियेथे और कहाथाकि महाराजा साहब ने तुम कोदियेहैं फिरमैंऔर नरसू जमादारमहाराजासाहबकेपास गये महाराजासाहबने कहाकि साहब मुझपर बड़ा अन्याय करते हैं जो कोई बातमैं तुमसे कहूं तो तुम उसको मानोगे

हमलोगोंनेकहामानेंगे महाराजासाहबने पूछाकिसाहबकि स समयभोजन करतेहैं और क्याखातेहैं हमने उत्तरदिया कि वह हमारेसाम्हने खानानहींखाते इसलियेहमकोमालूमनहीं किवहक्या भोजनकरतेहैं वह हमारेसाम्हने शर्बतजरूर पीतेहैं उससमयमहाराजासाहबने पुड़ियादीऔर कहाकियहसाहब केशरबतमें डालदेना मैंने महाराजासाहब से पूछादूसमें क्याहै उन्होंनेकहाकि जहरहै मैंनेकहाकि अगरसाहबको जाररपहुंचे तो हम लोगोंकी बड़ीखराबी होगी महाराजा साहबने कहा एकहीबेर कुछनहोगा किन्तु बहुतदिनोंके पीछे असर होगा महाराजा साहबने कहाकि अगर इस पुड़ियाने असर किया तो मैं तुमको लाखरुपया और अपनेयहां नौकरी दूंगा और तुम्हारे बालबच्चोंकी खबरगीरी करूंगा ॥

प्र०—यहपुड़िया तुमको किसतारीखको दीगईथी? उ०—मुझको स्मर्णनहीं। प्र०—हरएक पुड़ियामें कितना २ विष था? उ—०गवाहने उंगलीके इशारेसे बताया कि इतनाथा ॥

प्रश्न मैलवलसाहब का—क्याचुटकी भर था—सरजन्हबेलनटायनसाहबने कहाकि इसकोथोड़ीसी मट्टी देदीजावे ताकि वहबयान करे—सोथोड़ीसी मट्टीउसेदीगई और उसनेबतलाया कि इतनीथी——सरजन्ह बेलनटायन साहब बोले मैंचाहता हूंकि यहमट्टीअदालतमें रखलीजावे साहबप्रेजीडण्टने आज्ञा दीकिमिस्टर जारडीन साहब सेक्रेटर इसमट्टीको अपनेपासरख लेसोवहमट्टी उनकोदीगई और आज्ञाहुई कि इसेरक्षापूर्व्वक रक्खो—और गवाहनेयहभी वर्णन कियाकि विषदियेजाने के आठ दिन पहिले जबमैं महाराजा साहब के निकटगया तो तुझको और नरसूको गालियांदीं और कहाकि अबतक तुम लोगों ने कुछभी नहींकिया ॥

सुतरञ्जिम ने कहा जो आज्ञाहो तो गालियोंका तर्ज्जुमा कियाजाय—सरजन्ह बेलनटायन साहब ने कहा इसकी कुछ आवश्यकता नहीं है सुतरञ्जिमने कहा कियावास्तव में यह

गालियां निहायत फोहश हैं—तर्जुमा न होना चाहिये तिस पीछे महाराज ने कहा मैं तुमको एक और वस्तु दूंगा सो उन्होंनेएक विषकीपुड़िया दी उसकीरंगत स्याहीमाइल थी

प्र०—ऐसी सियाह जैसा मुतरज्जिम का कोट है ? उ० नहीं जैसेकि टोपीहै—टोपीकी रंगतभूरी थी—मैंने सोमवार कोसाढ़े छः बजे साहबके गर्बत में पुड़िया डालीयह पुड़िया वहथी जो महाराजा साहबने दुवारहदी थी जब मैं साहब के कमरे से बाहरआया तो सालिम सवार नेमुझसे पूछाकि तुमने वहकाम कियामैंने कहा कि हां—करनैलफियर साहब का चिट्ठी लिख कर डाक्टर साहब को बुलाना मुझे स्मर्ण है मैंने जमादारसे कहाकि डाक्टरसाहब बुलायेगये हैं अबहम लोगोंकी फजीहती होगी जिस समय डाक्टर साहब आयेहैं मैंऔर जमादार बरामदे में खड़ेथे उसीदिन मेरीपेटी लीगई थीऔर मुझकोआश्चर्य हुई किमैं अपनेघरको जाऊंतबसे मुझको पेटीनहीं मिली करनैलफियरसाहब ने मेरेइजहार लिये उस समय मिस्टरबोवीसाहब वर्त्तमानथे दूसरेदिन मैं हवालातमें सुपुर्दहुवा परन्तुसन्ध्या को ५ बजेवहांसे छूटगया जोरुपया मुझको मिला था उससे यह आभूषण बनवाया था सोवह जेवर पेशकियागया पांचसौ या साढ़ेपांचसौरुपयेकी लागत का होगा मैं सर्वदा महाराजा साहब को खबरें लिखकर भेजाकरता था—जुग्गालिखा करताथा जुग्गाकेहाथ कालिखा हुवाखत पहिचानता हूं मैं थोड़ा गुजराती पढ़सक्ता हूं सो एक काग़ज गवाहको दियागया उसने कहा कि जुग्गा का लिखाहुवा है मैं इसकोभी नहीं पढ़सक्ता ॥

मैं हमेशा जुग्गासे खबरें लिखाताथा और किसी से नहीं लिखाता था और जमादार महाराजा साहब के पास पहुंचाया करते थे ॥

इसगवाहने वर्णन किया कि मैंने मिस्टर सूटर साहब के भी रूबरू अपनेइजहार दियेथे मुझकोस्मर्ण है कि सोमवार

थी, और शायद २२—तारीख़ थी परन्तु महीना स्मर्ण नहीं

साहब ऐडवकेट जनरलने कहा कि शायद २२—दिसम्बर होगी—गवाहने कहा कि मेरे इज़हार मिस्टरसूटर साहबने लियेथे प्रथमबेर उन्होंनेआपनहीं लिखेदूसरीबार आपहीलिखे मैनेयह इज़हार उससमय दियेजब कि मिस्टर सूटरसाहबने मुझको बुलायाथा—९ बजेतक वहमेरे इज़हार लेतेरहे मैने उससमय तककिसी बातका इकबाल नहीं कियाथा फिरवह मुझेरज़ीडन्सीकी कोठीमेंलाये और रेज़ीडन्सीके बागमें बैठा या—पांचछः बजेतकमैं वहांबैठारहा फैजू और करीमभीवहां विद्यमान थे—हम लोगोंमें परस्पर तकरार होने लगी—फैजू और करीमने अपना और आयाका मुझसे जिक्रकिया और कहा हम लोगोंने तो इक़बाल किया तुमक्यों नहीं इक़बाल करतेहो यहबात सुनकरमैं सूटरसाहब के हवलदार को बु-लायामैं आपही जाकरबुलालाया उसकानाम नहींजानताहूं जोउसको देखूंतो पहिचानलूं—उसकानाम मीरअमानअली यावह अदालतमें बुलायागया और गवाहने उसको देखकर पहिचान लियाफिर गवाहनेकहा कि मैनेहवलदारसे कहा था कि मुझको बड़ेखान साहबअर्थात् अकबरअलीखान बहा-दुरकेपास लेचलो जबमैं उनकेपास गयातो मैने उनसे कहा कि मैं आपको बहुतसही २ बिषके दियेजानेका हालबतादूंगा बशर्ते कि मेरीजानबख़्शीहो और उसका वाइदाआप साहब लेलें॥

साहबऐडवकेट जनरलनेकहा कि हमनहीं चाहते कि तुम अतिबिस्तारसे वृत्तान्त कहो केवल इतनाही वर्णन करो कि तुम्हारी जानबख़्शी हुईथी—गवाहने बयानकिया कि हां इसी वाइदेपर मैनेसम्पूर्ण वृत्तान्त सूटरसाहबसे कहदियाथा जबसे मैने सूटरसाहबके रूबरू इज़हार दिये उससमयसे मैनेनरसू जमादार को नहीं देखा—बरवक्त इजहार के उसदिन नरसू जमादार वर्त्तमानथा जमादारने कहा कि तुमनेहर एकबात

काइकबाल करदिया मैनेकहा हां मैने हरएकबातका इकरार करलिया और जोगले २ पानी होगा तो यही कहूंगा इसके उपरान्त पुलिसके कमरेमें लोगलेगये यहपेटी जोअदालतमें रक्खी हुईहै इसीको पहिना करताथा इसपेटीमें जोजेबहैउसी में विषकी पुड़िया रक्खाकरताथा॥

ऐडवकेटजनरलने कहा—मार्डलार्ड इस गवाहके बयान से विदित होताहै कि दोपुड़ियां जिनका उसने इस्तैमालकियाहै विषहैवह आगेकोजेबमेंरखताथा और जिसपुड़ियाका उसने इस्तैमाल नहींकिया वहदूसरे जेबमें रक्खा करताथा गवाह ने बयान कियाकि मैं उससमय वर्त्तमान था जबकि रावसाहब और खान साहबने इसपेटीकी तलाशीलीथी मेरे सामने एक पुड़ियाभी इसपेटी में निकली थी—गवाह ने कहाकि मुझसे खानसाहबने पूछाथा कि तुमविषकी पुड़ियोंको कहां रक्खा करतेथे मैंने उत्तर दिया किपेटीकी जेबमें रक्खा करता था मुझसे पूछाकि तुम्हारीपेटी कहांहै मैंने कहाकि भोदरपट्टा वालेके पासहै खानसाहबने एक मनुष्य भेजकर भोदरपट्टेवाले को बुलाया मेरेरूबरू उसकेगलेसे यहपट्टाउतारा और उसी में इधरउधरदेखने लगे फिर बड़े खानसाहब को टटोलते २ एक जगह पर कोई कठोरसी वस्तु मालूम हुई उन्होंने कहा कि यहां कोई वस्तुहै यह कहकर उन्होंने पट्टेको रखदिया और सूटरसाहबको जो दूसरे कमरेमेंथे बुलाया जबवह आये तो उनके सन्मुखपेटीकी सिलाईको खोला उसमें से एक सफेद पुड़िया निकली मुझको दिखायाकि तुम इसपुड़ियाको पहिचानतेहो मैंने कहाकि हां पहिचानता हूं इस पुड़िया में जहरहै ग़लती से मेरीपेटी में रहगई थी फिर सूटरसाहबने कुछ और बातें मुझसेपूछीं और मैं वहांसे चलाआया जिस रोज यहपुड़िया मुझको मिलीथी वहदिन मुझको भलेप्रकार स्मरणहै यहपुड़िया मेरेइजहार सेदोरोज पीछे मिली थी॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा कि अबमेरी तरफसुत-

वज्जह हो थोड़े से प्रश्न मैं भी तुमसे करूंगा उससमय प्रेजी-डेण्ट साहबने कहाकि अबदो बजगये हैं आपक्या सवालचाह-तेहैं सरजन्टवेलन टायनसाहिब ने कहाआपकी आज्ञाहोतो उत्तमहै किपांचछः मिनट के वास्तेसवालात मुलतवीकिये जांवे उससमय कमीशन के मेम्बर टिफन खानेके वास्तेउठे टिफन खानेके पीछेमिस्टर करसिटजी से जो नवीन मुतरज्जिम नियत हुये थे सौगन्ध लीगई॥

सरजंट वेलनटाइन साहब के प्रश्न॥

प्र०—तुमकितने दिनों तक करनैलफियर साहबके नौकर रहे? उ०—शायदडेढ़ वर्ष। प्र०—करनैल फियर साहब तुम परबड़ी मेहरबानी करतेथे? उ०—हांवह मुझपर बड़ेमेहर बानथे। प्र०—तुमकोउनसे कोईशिकायत की बातनहीं हुई? उ०—नहीं। प्र०—फिरभी तुम उनके मारडालने पर राजी-होगये? उ०—मुझको महाराजासाहबने रुपयेदेकर राजी कियाथा। प्र०—तुमको राजीकरने में जियादह कहने सुनने की जरूरत नहुई? उ०—मुझकोलाख रुपयेदेनेको कहाथा जोकिमैं गरीब आदमी हूं राजी होगया। प्र०—चूंकि तुम गरीबआदमीथे औरतुमको एकलाख रुपयेके मिलनेकोवादह हुवा तोतुमअपने हाकिमके मारडालने पर राजीहोगयेजो सदातुमपर कृपारखता था। इसबातको सुनकर गवाहनेमुंह ही मुंह कुछ कहा॥

सरजन्टवेलन टायन साहब ने कहा कि वास्तवमें ऐसाहो या लज्जामतकरो स्पष्टरीतिसे वर्णनकरो? उ०—हांमैं मार-डालने पर राजी हुआ। प्र०—क्यावास्तवमें तुम मारडालना चाहतेथे? उ०—वास्तवमें मारडालनेकी मेरीइच्छानथीकिन्तु महाराजा साहब की थी। प्र०—क्या तुम्हारी इच्छा थी कि तुम अपने हाथसे साहबको मारो? उ०—मुझको महाराजा साहबने बहकायाथा। प्र०—चूंकि तुमको बहकायाथा तोतुम ने मारडालने काउद्योगकरलिया? उ०—हांमैं गरीबआदमी

था और मुझको तरगीब दीगई। प्र०—तुम से और करनैल फियरसाहब से नाराज़गी तो नहीं हुई? उ०—नहीं। प्र० तुमकेवल द्रव्यकेलोभसे मारनाचाहते थे? उ०—हांमैं गरीब आदमी हूं और मुझको तरग़ीब दीगईथी। प्र०—चूंकि तुम गरीबआदमी थे केवलद्रव्य केहीलोभसे खूनीबनना चाहतेथे? उ०—हांमुझको तरगीबदी गईमैंराज़ी होगया। प्र०—अबतुम को लाखरुपये मिलगये? उ०—नहींमुझको कुछभी प्राप्त न हुआ। प्र०—तुमने महाराजासाहब से कुछरुपया मांगाया? उ०—नहीं। प्र०—तुमको स्मर्ण है कि तुम्हारे इजहार इरादा होनेके पीछे करनैलफियरसाहब के रूबरू लेगये थे? उ०—हां याद है। प्र०—इसके पीछे तुम अनुमान एक महीने के छूटे रहे? उ०—हां। प्र०—इस अवसर में तुमने महाराजा साहब से रुपये मिलने की दरखास्त की थी? उ०—नहीं। प्र०—इस अवसर में तुमने कभी महाराजा साहबको देखा वाकोई सन्देशा उनका तुम्हारे पासआयाथा? उ०—नमेरेपास कोईसन्देशा आया न कभी उनको मैंनेदेखा। प्र० तुमगरीब आदमीहो और गरीबहोने और बहकायेजानेसेतुम मारडालनेके वास्ते राजीहोगये तुमनेकिसवास्ते रुपयेकेमिलने की महाराजासाहब से दरख़ास्तनहींकी? उ०—मैंनहींगया और क्योंकर मैंजाता। प्र०—क्योंतुमतो बज़ध वहांगए होगे? उ०—मैंपहिले वहांगया था मौकूफ होनेके पीछे नहींगया। प्र०—जबकितुमने वहकर्म्मकिया जो महाराजासाहबने तुमसे कहाथा तोफिर क्योंनहींगए तुम को महाराजासाहबसे रुपये की दरख़ास्तकरनी चाहियेथी क्याकारणथा कितुमने करनैलफियरसाबको नहींमारडाला या कोई और बातथी? उ०—मेरा उद्योग निष्फलहुवा। प्र०—मैंभी यहीसमझाथा परन्तुमुझको ख़यालहुवा कितुम अपनीआबरूकी वजहसे नहींगए मालूम हुवाकि तुमयहसमझेकि तुम करनैलफियरसाहबको न मारसके इसलिये महाराजा साहबके पास जानाचाहिये। उ०—न मैं

गया और न रुपया मंगवाया। प्र०—परतुम क्यों नहींगये तुम गरीबआदमी थे और सुफलसीसे खूनी बननाचाहते थे ?उ० मैंखूनी बननेको नथा। प्र०—हांमहाराजासाहब चाहतेथे कि तुमखूनीबनो इसबातको हमसबलोग जानतेहैं परन्तुतुमगरीब थे फिरतुम किसवास्ते रुपयामांगने नहींगये ? उ०—मैंक्यों करजाता मैंनहींगया। प्र०—तुमसे और नरसूसेउससमय कुछ बार्त्ताहुईथी जबकिविषदेनेका उद्योगतुम्हारापूर्ण नहुवा ? उ० नरसूसे कुछबार्त्ता नहुईथी मैंअपने घरसेबाहर नहींनिकला और मैंकभी नहींगया। प्र०—तुम भावपूनाकरको जानतेहो ? उ०—हां वहबंगले को आया करताथा औरमैं उनको जानता हूं। प्र०—वहबंगलेको किसवास्ते आयाकरताथा? उ०—वहसाहबकेपास आयाकरता था मैंनहींजानता था कि क्योंआता था। प्र०—क्याखबरोंके देनेवास्ते साहबकेपास आया करता था किनगरमें क्याहोरहाहै ? उ०—मैंयह नहींजानता। प्र० तुमनेकभी कोईवस्तु उसको देतेहुए सुनाहै (जवाबका तर्जुमा सुतरज्जिमनेइसतरहकिया) उ०—नहींसुना कभी २ सुना उसको मैंने इत्तिलाकी प्र०—करनैल फियर साहबके नौकरों में कुछ बार्त्ताहुवाकरती थी कि महाराजासाहबने श्रीमान् वाईसराय के निकट खरीताभेजा है ? उ०—खरीते काहाल मैंनहीं जानता। प्र०—तुमनेकुछभी इसविषयमें सुनाथा ? उ० मैंने कुछभी नहीं सुना और मुझकोकुछ ज्ञातनहीं है। प्र० भावपूनाकरसे भी नहींसुना इसतरफमत देखो हमारीओर देखो उ०—नहीं भावपूनाकरसे भी मैंनेनहींसुना। प्र०—अब तुमसेछोटी बातोंमेंकुछ प्रश्न करताहूं तुम सचकहना ? प्र० तुम्हारे जोफोड़ा निकलाथा और जिसको तुमनेदिखाया—यह फोड़ाशीशी की वजहसे होगयाथा ? उ०—हांशीशीकी दवासे मेरेफोड़ा होगयाथा। प्र०—शीशीके रखनेसे खालकेपासफोड़ा होगयाथा ? उ०—शीशीके मुखपर रुईलगीथी और रुईमें से दवा निकलकर मेरेशरीर पर लगगईथी। प्र०—मालूमहुवा

की इसीशीशीमें की दवासेतुम्हारे फोड़ाहोगया था क्योंठीक है ? उ०—हां। प्र०—पसतुमने इससंदेहसे कि करनैलफियर साहबको कष्टहोगा औषधि को फेंकदिया ? उ०—हांइसी हेतुमैंने दवाफेंकदी। प्र०—परभाई तुमजाननेथे कि यहदवा करनैलकी हानिकेलिये दीगईहै ? उ०—हां। प्र०—फिर तुम ने क्यों उसकाइस्तैमाल नहींकिया तुमजाननेथे कियहशीशी की औषधिजरर पहुंचाने केवास्तेदीगई है तुमनेउसको क्यों-फेंकदिया ? उ०—मैनेउसका इस्तैमाल नहीं किया और फेंक दिया। प्र०—किसवास्ते इस्तैमालनहीं किया ? उ०—इसवास्ते इस्तैमालनहीं कियाकि उससे मुझको कष्टहुवा और मुझको यहसंदेहहुवा किमैंशीघ्रही पकड़ा जाऊंगा। प्र०—परन्तु तुम जानतेथेकि मेराविषदेने का उद्योगहै पस ऐसीवस्तुका क्यों इस्तमालनहींकिया ? उ०—मैंने नहींकिया। प्र०—परमैंपूछता हूं कि तुमने किसवास्ते उसका इस्तैमाल नहीं किया ? उ० मुझकोभयहुवा कि साहबको उससेजरर पहुंचेगा इसलिये इस्तैमालनहीं किया। प्र०—तुमने नरसूसे कहाथा कि मैंने इस्तैमाल किया है ? उ०—हां मैंने नरसुसे कहा था। प्र० तुम्हारा वह कहनाझूठथा ? उ०—हांमैंने असत्यकहा था। प्र०—मालूमहोता है कि कभी२तुम झूठकामजा भी उठाया करतेहो ? उ०—मैंझूठ क्यों बोलूंमैंने आपसेसच २ कहदिया प्र०—तुमने नरसू से क्योंझूठबोला इसझूठबोलनेकी क्याजरू-रतथी ? उ०—एकसवार प्रतिदिन महाराजा साहबके पास से आयाकरता था कि कामहुवा यानहीं दवाडालीगई या नहीं। प्र०—तुमनेनरसू से क्योंझूठ बोलाथा ? उ०—वह मेरे पीछेपड़ाहुवा था इसलिये सिवायझूठ के और कोई उपाय नदेखा। प्र०—वह तुम्हारे पीछेपड़ाहुवा था इसलिये तुमने उससे झूठबोला क्याजोकोई तुम्हारेपीछे पड़ताहै उससेझूठ बोलतेहो ? उ०—हांअबमुझको झूठबोलने से क्यालाभहै। प्र० केवल तुमने इसी वास्ते झूठ बोला कि वह तुम्हारे पीछे पड़ा

ज़रूर था? उ०—हां मैंने इसीवास्ते झूठ बोला। प्र०—तुम जानते हो कि मिस्टर सूटर साहब भी तुम्हारे पीछे पड़े रहे शायद उनसे तुमने एक झूठ नहीं किन्तु सैकड़ों झूठ बोले होंगे? उ०—वह मेरे पीछे कभी इतना नहीं पड़े। प्र०—पस जो कुछ तुम ने उनसे कहा सब सच था? उ०—हां सब सच था। प्र०—इस बातपर तुम्हारा भलेप्रकार निश्चय है? उ०—हां इतमीनान है। प्र०—तुमको इसबात का बड़ा खयाल था कि मिस्टरसूटर साहबको धोखा नहो? उ०—उनसे मैंने जो कुछ कहा सब सचकहा। प्र०—क्या तुमने करनैलफियरसाहबसे भी सचकहा था? उ०—अगर मैं करनैलफियरसाहब से सच कहता तो वह कब मेरा या किसी का विश्वास करते। प्र०—तो यही कारणहै कि तुमने उससे सच नहीं कहा? उ०—हां। प्र०—पस तुमनेइसवास्ते उनसे सचनहीं कहाकि वहतुम्हारा विश्वास नहीं करते? उ०—हांइसी विचारसे मैंने सच नहीं कहा। प्र०—तुमने मिस्टरसूटरसाहब सेहरएकबात सचकही उ०—हां। प्र०—अबमैं तुमसेकुछ वहबातेंकिया चाहताहूं जो तुमने मिस्टरसूटर साहब से कही थी और यहबातें उन दो पुड़ियोंके मद्दे है जोतुमको उससमयदी गईं थी जबतुमसेलाख रुपयेके दिये जानेका वाइदाज़वा थातुमको यहपुड़िया किसनेदीथी? उ०—नरसूनमादार लायाथा—उसने मुझको दी थी। प्र०—क्या उसने तुमसेकहाथाकिउनदोनों पुड़ियोंकेतीन हिस्से बराबरकरके तीनरोज तक देनो? उ०—उसने कहाथा कि इनदो पुड़ियों के तीन हिस्से करना औरदो या तीन दिनतक इसका इस्तेमालकरना। प्र०—उसनेकहाथा कि बराबरके हिस्सेकरना? उ०—हां तीनहिस्से बराबर करनेको कहाथा तथाच मैंनेतीनपुड़िया बनाईं और अपने पासरखली। प्र०—यानी उन दोपुड़ियोंको मिलाकर तुमने बराबरके हिस्सेकिये थे? उ०—हरएक पिसीहुई वस्तु मेंसे मैंने थोड़ा २ लिया क्योंकि मैं जानताथा कि सफैदचीज अधिकहानिकारकहै। प्र०—अब

मैं तुमसे वह कहताहूं जो तुमने करनैलफियरसाहबसे कहा था किन्तु मैं तुमको पढ़कर सुनाताहूं तुमने कहाथा कि दो तीनदिनके पीछे जमादारने मुझको दोपुड़ियां दीं और कहा कि बराबरके तीनहिस्सेबनायेजावें और दोयातीनदिनदीजावें ताकि तीनरोजमें वहखत्म होजावे और तुमने यहभी कहाथा किसालिम और यशवन्तरावने महाराजासाहबके रूबरू बड़ी एहतियातसे समझाया था और फिर तुमकहते हो कि इन पुड़ियोंका देना दो तीन रोजतक मैंने मुलतवी रक्खा क्योंकि मुझको अवसर न मिला ? उ०-गवाहने कहाकि हां यहसब मेराबयानहै। प्र०-औरतुमकहतेहो कि विषकीपुड़िया जोमुझको पहिलेजमादारने दीथी मैंनेउसके तीन भागकिये ? उ० हांमैंने तीनभागकिये थे। प्र०-उनपुड़ियों को तुमने अपनी पेटीकी जेबमेंरक्खा और कहतेहोकि एकपुड़िया जोपीछेनिकलीथी वहभी उन्हींपुड़ियोंमेंसेथी जोमुझको जमादारनेदीं थी क्यामिस्टरसूटरसाहबके रूबरूभीतुमनेयहीवर्णनकियाथा उ०-हां। प्र०-क्यायहबात ठीकहै? उ०-हां। प्र०-अबमैं तुमसे पिछली पुड़िया के मुहेपूछता हूं क्यातुमकोवहपुड़िया जमादारने दीथी?उ--हांजमादारनेदीथी। प्र०-क्याइस पुड़ियाके दवाकारंग पहिलीपुड़ियोंके खिलाफथा क्योंकितुम कहतेहोकि जोपुड़िया तुमकोप्रथममें मिलीथी उनमेंसेएकमें सफेदरंगकीदवाथी और दूसरेमेंजोवस्तुथींवहगुलाबीमाइल थीं इसतीसरी पुड़िया का रंग जो अन्तको तुम्हें मिली कैसा रंगथा ? उ०-उसका रंग इसटोपीकासा था-एक बैरिस्टर की टोपी वहांरक्खी थी उसका रंग स्याहीमाइल भूरा था। प्र०-उस सूरतमें उसको रंगत सफैद पुड़िया कीसीन थी ? उ०-नहीं स्याहीमाइल रंगथा। प्र०-क्या उसटोपीसे उस का रंगगहराथा ? उ०-बखूबी यादनहीं। प्र०-तुमनेपुड़िया की सबदवाको गिलास में छोड दिया था ? उ०-हां। प्र० पानीमें मिलाकर छोड़ा था ? उ०-हां प्रथम मैंने बोतलमे

ने सबका सब बोतलका जल गिलास में डालदिया ? उ०-हां सबपानी डालदिया। प्र०-अन्तकी पुड़ियामें कितनीदवाथी? उ०-उसगवाह ने चुटकी भरकर रेत उठाई (जोस्याहीके सुखानेके वास्तेवहां रक्खीथी और कहा किइतनीथी या शायद कुछइससे अधिकहो। प्र०—इसरेतसे उसपुड़िया की दवा का रंगस्याही माइल था ? उ०-इसकारंग जियादा स्याही माइलहै उसकारंग हलकाथा। ऐडवकेट जनरलने कहाकि सुतरज्जिम तुमतर्जुमा अच्छानहीं करतेहो उसनेकहा था कि थोड़ाकाला। प्र०-तो मालूमहुवा कि वह दवाटोपी से जियादहस्याही माइलथी परन्तुउसका रंगइसरेतसे हलका था ? उ०—हां। प्र०—जिस दिन तुमने अपने स्वामीके मारडालाने का उद्योग किया उसदिन डाक्टरसीवर्डसाहब को देखाथा ? उ०—हां बंगलेपरथा वहीं उनको मैंने देखाथा। प्र०—अबसालिम कहांहै ? उ०—मैंनहींजानता कियह कहां है सुनाहै कियहकैदहै और मैंभीकईदिनसेकैदथा। प्र०-तुमको विश्वासहै किसालिम क़ैदहै ? उ०—हां मैंजानता हूं कियह क़ैदहै। प्र०—बयानकरोकिपेडरू तुम्हारेसाथ कितनीबेर महाराजासाहबकी मुलाक़ातको गयाथा? उ०-तीनबेरनौसारी से आकर और एकबार जबकियह गोवाअपने घरसेलौटआया। प्र०—कुलचार मरतबा ? उ०—हां चार मरतबा। प्र०—इसविषदेनेकाहालयह कुलजानताहै ? उ०—हांयह सब जानता है महाराजासाहबनेखुद मुझसेकहाथा। प्र०-तुमनेमहाराजा साहबसे कहते हुये खुदसुनाथा ? उ०—हांमैंने खुदसुनाथा। प्र०-तुमने कागजदेतेहुयेदेखाथा?उ०-कौनसा कागज। प्र० वह कागजजिसमेंविषथाऔरजिसमेंजहरहोना तुमजानतेथे ? उ०—एकपुड़िया देतेहुये मैंनेदेखाथा। प्र०—तुमने महाराजासाहब को कहतेहुये सुनाथा कि इसपुड़िया में विषहै ? उ०—हांमैंने कहतेहुये सुनाथा। प्र०—कबयह बातहुई थी ? उ०—जबकिपेडरूगोवासेवापिसआया। प्र०—पेडरूका अखीर

जानायहीथा? उ०-हां। प्र०-तुम उसकीतारीखकहसक्तेहो? उ०-मुझको तारीख़ स्मर्णनहीं। प्र०-मेरे विचारसे ग़ुरूनव म्बरहोगा जबकितुमको यहपुड़िया दीगई? उ०-हांयह पुड़िया मुझको दीगई उसके दोदिन पीछे मैं बुलाया गयाथा प्र०-तुमकोयादहै किमहाराजा साहबनेपुड़िया तुमकोकब दी थी हांमैंभूला जमादारने तुमको पुड़ियादीथी? उ०-हांपहिलीबेर जमादारने दोपुड़ियांदीथीं और दूसरीमरतबा एक पुड़ियादीथी। प्र०-उनदोपुड़ियों यादूसरएक पाकिटसे पहिले पेडरूकोपुड़िया दीगईथी? उ०-हांपहिले मेरी इस पुड़िया सेदीगई थी। प्र०-यानिक़ब्ल अखीर पुड़ियाके? उ०-हां प्र०-तुमने पेडरू की पुड़ियाके मिलनेसे एकदोदिन पीछेपुड़ियापाईथी? उ०-दोदिनबाद। प्र०-फिरतुमको मालूमहुआ थाकि पेडरूकोक्यादियागया? उ०-मुझकोमालूम नहींनयह जानताहूंकि उसकेपास पुड़ियाहैया नहीं। प्र०-क्यातुम सब एकही काममेंप्रवृतथे अर्थात्करनैल फ्रियरसाहबके मारडालनेमें? उ०-हां हमसब शरीकथे। प्र०-तुमने पेडरूसेकिसवास्ते नहींपूछा किउसने उसपुड़ियाको क्याकिया? उ०-मैं क्योंपूछता वहअपने कामपर होशियारथा मैं अपने कामपर होशियारथा (इससेसम्पूर्ण समाजके अधिष्ठाताहंसे) मैंनेनहीं पूछा। प्र०-इससे मालूम होता है कितुमने पेडरूको छोड़ दियाथा किजबवह चाहेवह विषदे और जबतुमचाहो तुम जहरदो? उ०-महाराजा साहब को बड़ीजल्दी थी उन्होंने मुझसे और पेडरूसे कहदिया था कि यहकाम शीघ्र करना प्र०-तुमकोयहबात क्योंकर मालूमहुई? उ०-सालिमऔरयशवन्तरावदोनोंताकीदकिया करतेथे। प्र०-पसइससेतुमकोविदितहुवाकिमहाराजासाहबको जल्दीहै? उ०-हां। प्र०-परन्तु तुमसेकहदियागया था कि चारमहीने के उपरान्त यहपुड़िया असरकरेगी? उ०-हांमुझसे कहाथाकि दोतीन महीने केबाद असरकरेगी। प्र०-तुमनेकभी पेडरूसे नहीं पूछा कि

उनकीपुड़िया क्याहुई ? उ०—अभीनहीं पूछा । प्र०—तुमने पेडरूका अपराधी होना कब बयान किया किवहभी करनैल फियरसाहब के मारडालने में तुम्हारा शरीक है ? उ०—मैंने मिस्टरसूटरसाहब केरूबरू उसको मुजरिम कहाथा। प्र०—तुमने उसका नाम करनैल फियर साहब के रूबरू नहीं लिया उ०—नहीं। प्र०-क्यों नहीं ? उ०-मुझको भयथा। प्र०—तुमको क्याभयथा ? उ०—जो कोईमनुष्य कोईबात करताहै तो क्याकहनेके वास्ते कियाकरता है। प्र०—यह पुड़िया तुम्हारी पेटीमें भूलसे रहगई ? उ०—हांगल्तीसे रह गईथी प्र०—क्या तुमने दोनों खूराक पुड़ियाको दीऔर एक गल्ती से रहगई उ०—चार खूराकें थीं तीन दी गईं और एक गल्ती से रह गई प्र०—क्या कारण था कि तुमने इस खूराक को रहने दिया ? उ०—भूल से रहगई। प्र०—इससे तुम्हारा मतलब क्या है कि भूलसे रहगई ? उ०—इससे यह मतलबहै कि मैंने पुड़िया को जेब में रक्खा और रख कर भूल गया कि कहां रक्खी है। प्र०—तुमने वहकाम क्योंन किया जिस वास्ते इन आमदिये जानेका वादा हुवा था ? उ०—मुझको भयथाकि साहबको एकाएकी कुछ न होजाय। प्र०—क्या तुमनेइसस्ट्राकोमाइल पुड़ियाको दवा ९ नवम्बर को बिल्कुल डालदीथी ? उ०—थोड़ीडाली थी और बाक़ीको रखलिया था। प्र०—थोड़ी सीजितनी कि तुमनेहमको दिखाईक्या तुम जानते थे किफौरन् उसकी तासीरहोगी ? उ०—मैं जानता था कि एकदमेबेर उसकी तासीरन होगी-परन्तु मुझको महाराजा साहबबराबर कहला २ भेजते थे कि जल्दीकरो जल्दीकरो। प्र०—और किसीको मालूमन था कि तुम्हारेपास यह जहर बाक़ी है ? उ०-किसीको मालूम न था तुमने किसी से कहाभी नहीं। उ०—मैंने किसीसे नहींकहा। प्र०—पसतुम्हारे साथी जानतेहोंगेकि तुमने इसतमाम पुड़ियाका इस्तमाल किया ? उ० हांवह यहीजानतेथे। प्र०—क्यावह कोई पुलिस का आदमी

याजिसने तुम्हारीपेटीमें कठोरवस्तु देखीथी ? उ०—हांप्रथम मुझसे पूछागयाकि तुम्हारीपेटी कहांहै। प्र०—तुमने बताया था कि मेरीपेटीकहांहै जिसमें तुमविष रखतेथे ? उ०—मैंने नहीं बताया। प्र०—क्या तुमको स्मर्ण था किपेटीमें जहरकीकी है ? उ०—मुझको स्मर्ण नथा जोयादहोता तो मैंउसको निकालकर फेंकदेता। प्र०—जब तुमने पुड़ियाको देखाकि तो तुमकोआश्चर्य्य हुवा ? उ०—हां मुझको अचम्भा हुवा औरमैं घबरागयाथा। प्र०—अगर मेरीयादसही है तो तुमने कहा था कि जबतुमसे अकबरअलीने पूछा था कि तुम बहुधा वस्तु अपनीकहां रक्खाकरते हो तो तुमने कहा था किपेटीमें ? उ०—हां मैंने यहीकहा था। प्र०—उस समय अकबरअलीने कहाथा किपेटी मंगवादीजावे ? उ०—मुझसे कहाथा किपेटी कहांहै मैनेकहाथा कि बहादुरके पासहै। प्र०—तुमने बहादुरकोपेटी क्योंदी थी ? उ०—मैंने नहींदी नवीन रेजीडेण्ट साहबने दीथी। प्र०—उस मनुष्य को तुम्हारी पेटी कबदी गई थी ? उ०—मेरे रूबरूदीगई थी परन्तु मुझको दिनयाद नहीं है। प्र०—कितने दिनोंके उपरान्त पुलिस को पुड़िया मिली थी ? उ०—बहुत दिनोंके पीछेपरन्तु मुझेस्मर्ण नहींकि कितनेदिनोंकेबाद। प्र०—तुमको कुछभी स्मर्ण नरहा कियहतुम्हारीपेटी जो दूसरामनुष्य पहिनेहै उसमें एक पुड़िया विषकी है ? उ०—इस पुड़िया को मैं बिल्कुल भूल गया था। प्र० जब करनैल फियर साहब ने तुम्हारे दूजहार लिये थे और तुमसे पूछा था कि दुबारह जहर देने का तुम्हारा संदेह किसपरहै और तुमनेकहाथा कि फौजूपरहै क्योंकि फौजूकरनैल शार्टसाहब और करनैलसाहबके जमानेमें चन्दबातोंके निस्बत माखूज हुवाथा ? उ०—हां मैंने अपने प्राणके बचानेके वास्ते उसकानाम लियाथा। प्र०—पहिले तुमने खूनकरना चाहा और फिरएक निर्दोष मनुष्यको माखूज करतेथे ? उ०—यह लोगभी दरबार (अर्थात् महाराजासाहब) मेंजाया करतेथे

यदिउन्होंने विषमीदिया होतातो मुझको किसतरह मालूम होता। प्र०-बहर सूरत तुमने अपने ही प्राण बचाने के वास्ते उसकोमाखूज किया? उ०-जबरजीडएट साहबनेमुझसे पूछा तोमैंने उत्तर दिया कि बहुतसे मनुष्य नगर में रहतेहैं और यहांआते जाते हैं। प्र०-पसतुमने एकनिर्दोष मनुष्यको माखूजकरना चाहाहालांकि खूनकरनेका तुमनेउद्योगकियाथा? उ०-चूंकि यहसब लोगनगरमें रहतेथे इसलिये उनकोमैंने माखूज करना चाहाथा। प्र०-साहबने तुमसे यह पूछाथा कि विषदेनेमें तुम्हारा किसपर सन्देहहै तुमनेउत्तर दिया कि फैजूपर? उ०-मैंने कहाथा कि फैजू नगरमें रहताहै मेरा सन्देह उसपरहै। प्र०-क्यातुमने कहाथा कि फैजूपर मेरा सन्देहहै? उ०-हां। प्र०-यहतो तुमभूलगये कि मैनेविषकी पुड़िया पेटीमें रक्खीहै परन्तु इसबातको नहींभूले कि हमने विषदियाहै और अपराध इसका फैजूपर लगाया? उ०-हां पुड़ियारखकर भूलगयाथा। प्र०-और फैजूको माखूजकिया? उ०-बहुत आदमी उसका नाम लेतेथे उस समयमैं चुपहो रहा। प्र०-नहींनहीं तुमचुप नहींरहेथे तुमनेकहाथा कि फैजूपर मेरासन्देहहै? उ०-हांमुझसे पूछागयातो मैंनेकहा कि फैजूशहरमें रहताहै मेरासन्देह उसपरहै। प्र०-अर्थात् मारनेके उद्योगका सन्देहहै? उ०-हां मैं केवल पुड़ियोंको जानताथा। प्र०-इससेतुम्हारा क्यामतलबहै? उ०-मुझेयह सन्देहथा कि जैसी पुड़िया मुझको और पेडरूको दीगईहै वैसीपुड़ियां औरोंकोभी दीगई होंगी। प्र०-इसलिये तुमने उनकोमाखूज किया? उ०-हां। प्र०-जबतुम करनैलफियर साहबके रोबरूइजहार लियेजानेके पश्चात् छुटादियेगये तो तुमकहांरहे? उ०-मैंघरमेंथा और मैंने साहबसे दरखास्त कीथी कि मुझकोपट्टा मिलजाय अर्थात्मैं फिर नौकर रक्खा जाऊं। प्र०-क्यातुम फिरनौकर रक्खेगये? उ०-नहींसाहबने कहाथा कि साहबलोग तहकीकात के वास्तेआते हैं तहकी-

कात करनेके उपरान्त नौकर रक्खेजाओगे। प्र०—भावपूना करने तुम्हारे विषय में कहा था? उ०—मैं नहीं जानता कि उसने कुछ कहाहो। प्र०—क्या तुमने उससेकहा था कि वह तुम्हारे निस्बत कुछकहे? उ०—मैंअपनेघरमें रहताथा कहींबाहर नहींजाता था। प्र०—क्या तुम्हारी गरज यहहै कि तुम अच्छीतरह जानते थे कि भावपूनाकर तुम्हारे मद्दे कुछ नहीं कहा? उ०—नहीं प्र०—सावधान होजाओ क्या तुम्हारा यहमतलबहै कि तुमनेभावपूनाकर से कुछबातें नहीं कीं? उ०—नहीं। प्र०—क्यातुम यहकहतेहो कि तुमनेउसको नहींदेखा? उ०—जबवह बंगलेपर आताथा मैंउसको देखता था? प्र०—जहरदेने के पहिलेतुमने उसकोदेखा था? उ० जब साहिब रवाना होनेवाले थे उस समय उसको मैंने देखाथा। प्र०—यानिजहर देनेके पीछे? उ०—हां। प्र०—पसमैंखयाल करताहूं किउससे और तुमसे विषदेनेके विषयमें कुछबातेंहुईं? उ०—नहीं २ कुछ बातेंनहींहुईं। प्र०—क्यातुम्हारायहमतलबहै कितुमसे और उससेकभी इसविषयमें बातें नहींहुईं? उ०—मुझकोस्मर्णनहीं शायदकभी कीहों। प्र०—मैं तुमकोयाद दिलाताहूं तुमकोयाद होगाकि दरमियानतुम्हारे और उसके महाराजा साहबके विषयमें बातेंहुईथीं? उ०—कभीनहीं हुईं। प्र०—क्यातुमने महाराजा साहबके मद्दे उस से कुछबातेंकीं थी अर्थात्जहर देनेकेपश्चात्? उ०—नहींमैंने कभीमहाराजा साहबकेविषय में कोई बातनहीं की। प्र०—क्यातुमसे उसनेनहीं पूछाथा कि महाराजा साहब इसबात को जानतेहैं यानहीं? उ०—उसनेमुझसे नहींपूछा। प्र०—क्यातुम्हारी यहगर्जहै कि तुमनेकभी उसकेरोबरू महाराजा साहबका नामनहीं लिया? उ०—नहींलिया। प्र०—तुम्हारे इजहारके पहिले जोकरनैल फियरसाहबने लियेथे तुमनेभाव पूनाकरको नहींदेखा? उ०—नहीं। प्र०—जब तुम्हारे इजहार लियेगये तो भावपूनाकर मौजूदथा? उ०—क्यामिस्टर

सूटरसाहबके सन्मुख। प्र०-हां? उ०-मैने उसको वहांनहींदेखा औरवहवहांनथा। प्र०—उससमयतुमने भावपूनाकरको नहीं देखा? उ०—मैने उसको नहींदेखा। प्र०—पस मैं खयालकरता हूंकि एकलक्षरुपये के लोभसेतुमने अपनेखामी के मारडालने कावाइदाकिया? उ०—हांमैं गरीबआदमी था एकलाख रुपये के लोभमें आगया। प्र०—पस गरीबहोने और एक लाखरुपये के लोभसे तुमने मारडालना चाहाथा? उ०—हां मैं गरीब आदमी था लाखरुपये के लोभ से मैने ऐसाकरना चाहाथा। प्र०-मैंतुमसे फिर प्रश्नकरना चाहताहूं इसवास्ते कि तुमगरीब आदमी थे तुमने द्रव्य के लोभसे मारडालना चाहा जिन दिनोंमें कितुमछूटे हुयेथे महाराजा साहब के पासतुम किस वास्ते नगये? उ०—मैं डरता था इसलिये नहीं गयासुझको इस विषय में वार्त्ताकरने काभय था। प्र०—तुमने साहब की शर्बतमें शुक्रऔर शनिवर को विषनहीं डालाथा? उ०-नहीं मैने सोमवारके दिन डालाथा उसीरोज उसकोखबर होगई। प्र०—तुमने केवल उसी दिनजहर डाला था? उ०-हां मैने केवलउसी दिनविष डाला था। प्र०—शुक्र और शनिवार को जिस किसी ने साहब के गिलासमें विषडाला होतो तुमकोउस की खबर नहीं है? उ०-जमादारने शनिश्चरवार को मुझको विषकी पुड़िया दीथी और मुझको कुछ मालूम नहीं। प्र० जबसे किमिस्टर सूटरसाहबने तुम्हारे इजहारलिये तुमनेपुलिसकेआदमियोंको देखाहै?उ०—उससमयसे मैं पहिरेमेंहूं॥

ऐडवकेट जनरलने दुबारह प्रश्न किये॥

प्र०—जबतुम पहिलीबेर महाराजा साहब के निकट गये तो तुमसे महाराजा ने कुछ विषका जिक्र किया था? उ० नहींमुझसे कुछजिक्र नहीं किया। प्र०—उन्होंने तुमसे क्या कहाथा? उ०-उन्होंने केवल इतना कहा कि बंगलेपर जो बातहो उसकोइत्तिला मुझकोकिया करो। प्र०—महाराजा साहबसे विषदेने का जिक्र पहिले कबआया था? उ०—नौ-

सारी से वापिस आनेसे पांच महीने के उपरान्त। प्र०—जिस सोमवारको तुमनेकरनैल फियरसाहब को विषदियाथा और उसजहरका दियाजाना मालूमहोगया और उसकेउपरान्त जोतुमकहतेहो किमैंअपने घरमेंरहा? उ०—हां जिसदिनसे किमुझ पर विषदेनेका संदेह पायागया मैं अपनेघरमेंरहा? प्र०—यशवन्तराव या सालिम कभीतुम्हारे घर परआयेथे उ० नहीं। प्र०—तुम्हारीमुअत्तली केपीछेभी नहींआये? उ०—नहींमेरे घर कभी नहीं आये। प्र०—बग़ैर यशवन्तराव और सालिम के तुमकभी महाराजा साहब के पासगये थे? उ० नहीं। प्र०—अपनी मुअत्तली केबादतुम अपनेघर रहेक्या तुमको अपनेघरपर पहिरा रहिनेका सन्देह था यातुम यह खयाल करतेहो किकुछ आदमी तुम्हारी कारवाई पर निगरानी करतेहैं उ०—मुझको स्मर्णनहीं मैंअपने घरसे कहीं बाहरनहीं निकला। प्र०—सरजन्ट बेलनटायन साहब ने तुमसे उस निशानकी बाबत दरयाफ्त कियाथाजो तुम्हारे पेटपरहै वह चिह्नअबभी है? उ०—हां है। प्र०—तुमने कभीयह निशानकिसी डाक्टरको दिखाया—सरजन्टबेलन टायनसाहबबोले कि निशानभी बहुत अच्छीजगहपरहै जहांपर कि थीथीके रखनेका हालयह शख्स बयानकरता है—ऐडवकेट जनरलने कहाकि ग्रेसाहबमेहरबानी करके आप उस चिह्नको देखें सो डाक्टर ग्रेसाहब गवाहको बाहरलेगये और चिह्नको देखाफिर ऐडवकेट जनरलनेडाक्टर ग्रेसाहबके इजहारलिये उनसेपूछा कि आपनेइस गवाहको देखाउन्होंनेकहा कि हांदेखा एकइञ्चया आधाइञ्चके नाभि के निकट तीनचिह्न है अर्थात्जहां कि पाजामाबान्धा जाता है वह निशान मिसलतेजाब और गरमलोहे या फोड़ेकेमालूम होतेहैं या जिसतरह फफोलेका चिह्न पड़जाताहै या किसी वस्तुका निशान जिसे शरीरका चर्मदग्ध होजाताहै फिरसरजन्टबेलन टायनसाहबने प्रश्नकिया कि आपसुनचुकेहैं कि इस गवाह ने क्या इजहार दिये अर्थात्उसने वर्णन कियाहै कि

स्त्रीके मुखपर रुईलगीथी और रुईमेंसे वहवस्तु निकलकर उसके पेटमें लगगई—क्या आप खयाल करसक्ते हैं कि उसके वर्णनके अनुकूल ऐसे चिह्नपड़गयेहैं ? उ०—हां सफेद संखियेसे ऐसे निशान पड़जातेहैं। प्र०—क्या आप ख़याल करतेहैं कि बग़ैररगड़ने संखियेके खालपर निशान पड़सक्ताहै ? उ०—हां जोसंखिया खालसे लगजावे। प्र०—कितनीदेरमें सोजिशमालूमहोगी ? उ०—एक घण्टेमें। प्र०—ऐसा चिह्न एकघण्टेमें पड़जावेगा ? उ०—हां। प्र०—क्यावास्तवमें ऐसाही विचारांश है कि यहचिह्न जोगवाहके शरीरपरहै वहइसी तरहसेहोगये हैं ? उ०—हां मुझको यही निश्चयहै अर्थात् जोयह संखिया देहमें लगताते ऐसाचिह्न पड़जाता। प्र०—चूंकिआप डाक्टर हैं और डाक्टरहोने के कारणआप कमीशनमेंरहे और इसके इज़हार आपनेसुने--सोडाक्टरी विद्याकेबलसे वर्णनकरसक्ते हैं कि इसमनुष्यकी देहपर इसीतरहसे जैसा कि वहकहताहै चिह्न पड़गयेहैं ? उ०—हां। प्र०—मुझको विश्वासहै कि इस गवाहके इज़हारोंपर भलेप्रकार ध्यानकरके आपऐसा बयान करतेहैं ? उ०—हां। प्र०—यदिआप इसमनुष्यके इज़हार न सुनते और आपकी रायतलब होती तो आप क्या कहते ? उ०—मैं कहता कि यह चिह्न तेज़ाब या गरम लोहेके हैं। प्र०—मैंइन मुआमिलोंको नहींजानता परन्तु क्याआप कहसक्तेहैं कि ऐसेनिशान हिन्दुस्तानियों की देहपर बकुथाहोते हैं ? उ०—हांमैंखयाल करसक्ता हूं—इसके उपरान्त ऐडवकेट जनरलने डाक्टरसाहब से प्रश्न किये॥

प्र०—क्या संखिया तेज़ाबकीखासियत रखताहै ? उ०—हां। प्र०—मैं समझाकि आपकी राय है कि जो संखिया घोलकर बोतलमें डालीजाय और वह शरीर से लगेतो ऐसे चिह्नपड़ सक्ते हैं ? उ०—हां पड़सक्ते हैं। प्र०—सररिचर्डमीड साहबने कहा जो तेज़ाब एक फोड़ेपर लगाया जायातो ऐसानिशान पड़सक्ता है ? उ०—हांपड़सक्ताहै परन्तु फोड़ेकी हालतदेखो

आय—तिसपीछे रावजी बुलागया—साहब प्रेजीडण्टनेउसे प्रश्न किया कि जबतुम सोमवारको संखियेका इस्तैमालकरचुके तो बोतलको क्या किया था? उ०—मैंने उसबोतलको एकसंदूक के पीछेछिपादिया था। प्र०—किसजगह छिपाकर रक्खाथा? उ०—जहांकि बरामदेके रूबरू गाड़ियां आकर खड़ीहोती हैं। प्र०—क्या वहां पर शीशी तुमको नहीं मिली? उ०—पुलिसके लोगों ने आकर ढूंढ़ा था परन्तु उनको शीशी नहीं मिली। प्र०—शीशीकितनी बड़ीथी? उ०—इतनीबड़ी (गवाहने बताया कि उंगलीके बराबर थी) एडवकेटजनरलने कहाकि अबचार बजगये हैं किसी गवाह के शायद इजहार न लिये जावेंगे साहबप्रेजीडण्टने कहाकि हां अबफजूल है—इसवास्ते कमीशन बरखास्त हुई॥

नवेंदिनका इजलास॥

आज बरवक्त इजलासके सम्पूर्ण मेम्बरान् वर्त्तमान थे सर-ल्यूइसपीजी साहब दो पहर तक रहे पर श्रीमान् महाराजा मल्हरराव दिनभर मौजूदरहे और श्रीयुत महाराजासेंधिया भी मध्यान्ह के उपरान्त देरतक कमीशन से ग़ैरहाज़िररहे इजलासके आरंभहोतेही साहबऐडवकेटजनरलने प्रेजीडण्ट साहबसे पूछा कि माईलार्ड—सुनाहै कि शनिश्चरवार को कमी-शनका इजलास न होगा—क्याहबात सत्यहै साहबप्रेजीडण्ट नेकहाकि मैंभी इसका तज्करह करनेको था शनिश्चरवारको हिन्दुओंकी तातीलहै इसलिये उसदिन इजलास न होगा॥

साहबऐडवकेटजनरलने कहाकिकेवलशनिवारको—साहब प्रेजीडण्टने कहा—हां—तिसपीछे नरसूराजाना गवाहबुलाया गया॥

नरसूराजाना गवाह का इज़हार॥

इस मनुष्यने वर्णनकिया किमैं रजीडन्सी बड़ौदेके चपड़ा-सियों का जमादार हूं मुझको रजीडन्सी में नौकरीकरते हुये

बत्तीस वा चौंतीस वर्षकेथे और सत्रह या अठारह वर्षसे ओ-हदेजमादारी परथा मेरामासिक १४) रु० यायही तनख़ाह जमादार की है—दस रुपये मासिक रावजी हवालदार को मिलतेथे मैंनगरमें रहताथा प्रतिदिन भोरको सातया आठ बजे रेज़ीडन्सीमें अपने कामपर हाज़िरज़वा करता संध्याको सातबजे चलाजाया करता था रेज़ीडन्सी की कचहरी कभी साढ़ेछः बजे बरख़ास्तहोजातीथी तो उससमय मैं घरको चला आता था—मुझेवह जमाना याद है जबकि बड़ौदेमें कमीशन का इजलासज़वा था उससमय रावजीनेमुझसे बार्त्ताकी थी और मुझसे कहाथा कि सालिम और यशवन्त कहते हैंकि तुमकोमहाराजासाहबके निकटजानाचाहिये मैनेउत्तरदिया किमेरेघरमें बीमारीहै मैं अभीनहींजासक्ता और सिवायइस-केइनदिनों मुझको अपने कार्य्यसे छुट्टी नहीं है जब बड़ौदेसे कमीशन बरख़ास्त हुई तो रावजीऔर सालिमने फिरमुझसे वहांजानेका तज़करहकिया मैंसालिमको उससमयसे जानता हूंजबकि वहरेज़ीडन्सीमें आयाकरताथा—महाराजखण्डेराव के कालके पीछे मैं यमुनाबाईकी सेवामें रहा उनकेपास से रेज़ीडन्सीकोलौटआया—करनैलबारसाहबकेज़मानेमेंसालिम रेज़ीडन्सीको आयाकरताथा जबकि यमुनाबाई रेज़ीडन्सी में रहाकरतीथी उसज़मानेमें उनकेपास मेरीतैनाती हुईथी मु झको आज्ञाथी किसबतक वहयहांरहें तुमभी उनकेपासरहो जबवह पूनाकोगईं उससमयभी दोमहीनेतकमैं उनकेपासरहा उन दिनों करनैलबार साहब बड़ौदेके रेज़ीडण्ट थे और जब मिस्टरटक्कर साहबआये उन्होंनेभी मुझेयमुनाबाईके पासरक्खा यशवन्तराव जासूसने दोतीनबेर मुझसेकहा कितुम महारा-जासाहबसे मुलाक़ात करो सालिम और रावजीने भीकहा थाकि सोम और वृहस्पतिवार को जबकि महाराजा साहब रेज़ीडन्सीको आयेथेतो सालिम और रावजीमुझसे सदायही कहाकरतेथेअन्तको मैंमहाराजासाहबको मुलाक़ातके वास्ते

राजीहुवा और बरखास्त कमीशनसे बीसपच्चीसरोज के पीछे महाराजासाहबके निकटमैंगया उसदिन रावजीऔर सालिम और एकमनुष्य जोरावजीके साथथा और मैंमहाराजासाहबके पासगये प्रथमहम यशवन्तरावके घरपरआये वहांसे महाराजा साहबके महलको गये सररिचर्डमीड साहबने सुतरजिम से पूछाकि बाड़ेके क्याअर्थ हैं सुतरजिमने कहाकि दरबार—वा फवेलीको कहतेहैं—गवाहने वर्णनकिया किरावजी और एक औरमनुष्य मेरेसाथ गयेथे यशवन्तराव और एकदूसरा मनुष्य दूसरेमार्गसे गयेथे महलके पीछेजो एक बागहै उसमेंहोकर हमलोगमहलमें पहुंचे यहबाग नवीन तैयार हुवाहै मैं इस बागकानाम नहींजानता जब हममहलमें पहुंचे तो मैंसीढ़ीपर बैठगया—जब यशवन्तराव महाराजा साहबको अपनेसाथ ल-याउससमय सालिमने हमकोऊपर बुलायाजो मनुष्यरावजी केसाथ गयाथा वहनीचेखड़ारहा जबहम ऊपर गये तोमहाराजासाहबसे मुलाक़ात हुई—सलामकरके मैं जमीनपर बैठ गया यशवन्तराव और रावजी और महाराजासाहबसे कुछ बार्त्ताहोती रही महाराजा साहबने अप्रसन्न होकर कहा कि इसमनुष्यको तुमक्यों लाये—यहलुच्चा आदमी है रावजी ने कहाकि अब लुचपन न करेगा—महाराजा साहबने कहा कि रेजीडन्सीमें जो खबरेंहुवा करेंवह मुझको भेजाकरो मैंने कहाबहुत अच्छाइस मुलाक़ातमें केवलयही वार्त्ताहुई और कुछनहीं एकमासके पश्चात् अथवा एकमहीने से कुछकममें फिर महाराजा साहब की मुलाक़ात को गया रावजी और सालिममेरे साथगये थे जो मनुष्य सालिम के साथगया था उसकानाम कारभाई था इसमर्त्तबा भी महाराजा साहबसे मुलाक़ातहुई कारभाई को सबने नीचेछोड़ दिया और हम लोगऊपर गये यहमनुष्य रेजीडन्सीका पंखावाला है हमारी मुलाक़ात महाराजा साहबसे नौ या साढ़े नौबजे रात्रिको हुई—मैं आठया साढ़े आठबजे रेजीडन्सीसे रवानाहुवा क-

रताथा महाराजा साहबके साथ सालिम और यशवन्तराव
हुवा करतेथे जब महाराज नौसारी को गयेतो साहबरेजी-
डेण्टके साथभी वहांगया था महाराजा साहबके साथ केवल
सालिमथा यशवन्तराव नहींगया—जबनौसारीगयेथे सालिम
साहब रेजीडण्ट के हातेमें रहा करता था इसहाते में कई
और सवार भी रहा करते थे रावजी ने मुझको नौसारीमें एक
बेर पारितोषक दिलवाया था इसका जिक्र महाराजासाहब
और सालिमसे पहिलेहोचुका था जबमुझको इनआमदिया
तोरावजीने मुझसेकहा थाकि तुमको डेढ़सौरुपया इनआम
कामिलाहै मैंने कहाकि मैं इसरुपयेको क्याकरूं यह कहकर
सालिम के पासवह रुपया रावजी छोड़आये जबसालिम नौ-
सारीसे गयाथा तो रावजीने उसके हाथ यहरुपया मेरेघर
भिजवादिया सोसालिमने वहरुपया मेरे भाईको देदियाजब
मैं बड़ौदेको आयातो मालूमहुवा किवह रुपया मेरे भाईके
पासपहुंचगया—जब महाराजा साहब नौसारीमें थेतो कभी
महाराज के सम्मुखमें अकेला नहीं गयाजब साहब रजीडण्ट
उनकेपास जातेथे तोमैं भी हमराहजाताथा जब महाराजा
साहबबड़ौदेको वापिसआयेतो मैंमहीनेडेढ़महीनेकेपीछेउनके
सलाम के वास्ते फिरगया और पूर्ववत् यशवन्तरावकेमकान
पर हमऔर रावजीगये और वहांसे महाराजासाहबकेपास
गये इसबेर महाराजा साहबने कहाकि जोकुछ रजीडन्सीमें
हुवाकरेलिखकरहमारेपास भेजदियाकरो रावजीनेकहाबहुत
अच्छा जोमनुष्य आयेगा उसकानाम लिखकरआपकेपासभेज
दूंगासालिमने महाराजा साहबसे मरहटीभाषामें कहा कि
महाराज विवाहका पारितोषक इसमनुष्यकोनहींमिलामहा-
राजासाहबने कहाकि इसका तुम कुछ बन्दोबस्त करदो केवल
इतनीही बार्त्ता हुई थी हमको कुछ रुपया उस समय नहीं
मिला था परन्तु दस पन्द्रहदिन के अनन्तर आठ सौ रुपया
सालिम लाया और हमने इस रुपये को परस्पर बांट लिया

अर्थात्मैंने और सालिम और रावजीने यहरुपयालिया और कुछ जुग्गा पंखेवालेको भी दिया रावजी हरमनुष्य का नाम जोरजीडन्सीमें आया करते थे लिखकर महाराजा साहबके भेजनेको मुझे दियाकरता मैं यशवन्तरावके मकानपर जाकर सालिमको देदेता इसीभांति बीसया पच्चीस परचे महाराजा साहबको गये-सोम और वृहस्पतिवारको यह परचेनहीं भेजे जाते थे क्योंकि दोनों दिनोंमें महाराजा साहब स्वतः आया करतेथे इसरुपयेके मिलनेके एक महीने या सवा महीनेपीछे फिरहम महाराजासाहब के पास सलाम करने के वास्ते गये उसरोज महाराजासाहबसे मुलाक़ात एकछोटे कमरेमें हुई जहांकि बड़े २ शीशेरक्खे हुयेथे वहांकुछ पीतलके बत्तीदान और एक घण्टाभी रक्खा हुवाथा सालिम और यशवन्तराव महाराजासाहबके पासथे महाराजासाहबने सालिम से कुछ बार्त्ता करके हमलोगोंसे कहाकि साहब मुझसे अतिअप्रसन्न रहतेहैं इसकाकुछ उपायकरना चाहिये महाराजा साहबने कहाकि मैं कोई वस्तुदूंगा ऐसाकोई यत्नकरनाकि वहउनके कण्ठ और उदरतक पहुंचजाय मैंने उत्तरदियाकि खानेपीने में तो कुछमेरा इखतियार नहींहै नवह मेरेसम्मुख भोजन करतेहैं रावजी ने कहाकि चकोतरेका अर्कततो पीतेहैं उस में डालदो महाराजासाहबने कहा यदितुमऐसा कामकरोगे तो तुम को धनवान बनादूंगा—नौकरी की तुमको आवश्यकतानरहेगी यहवार्त्ता दसपन्द्रहमिनट तकरही मुझको महीना स्मर्ण नहीं परन्तु इतना कह सक्ता हूंकि अन्तिम विषके उद्योगसे तीनचार महीने पहिले की यहबात है इसवार्त्ता के उपरान्त सालिमने मुझकोएकपुड़ियादी वहपुड़िया अनुमान एक उंगली के थी यह पुड़िया अहमदाबाद के काग़ज़ की बनी हुईथी जब मैं रेजीडन्सी को लौट आया तो मैंने वह पुड़िया रावजी को दे दी उसके चौथे पांचवें दिन सालिम और यशवन्तराव को बंगले पर देखा मुझसे सालिमने पूछा

कि तुमने रावजीको वहपुड़िया देदी मैनेकहा हांदेदी आठ दसदिनके पीछे मैंदसहरेके सलामको महाराजासाहबकेपास गया पहिलीरीतिके अनुसार नौबजे यशवन्तरावके मकान परगया और वहांसे रावजी जुग्गाकेसाथ महाराजा साहब केमहलको गया जिसकमरेमें हमेशा मुलाक़ात होतीथी उसमें महाराजा साहब से मुलाक़ात हुई सालिम और यशवन्तराव महाराजासाहब के पासबैठेहुये थे जब महाराजा साहबने मुझकोदेखा तो बुरी २ गालियांदीं और कहा कि तुमलोग लुच्चेहो गालियांदेनेके पीछे महाराजासाहबने हमसे कहाकि अबतक तुमलोगोंने कुछनहींकिया मैनेकहा कि रावजीको मालूमहोगा मैंकुछ नहींजानता रावजीनेकहाजो कुछ मेराकामथा मैंकरचुका और वहवस्तु जोमहाराजासाहबने दीथी अच्छीनहो तोमैंक्याकरूं महाराजासाहबने कहा अच्छा मैंदूसरी पुड़िया भेजूंगा और कहाकि उसकोअच्छी तरह डालना—कलकेदिन तुम्हारेपास सालिमके हाथपुड़िया पहुंचेगी—सोउसके दूसरेदिन जबअपने मकानसे मैंनिकलता था तो सालिमने मुझको पुड़ियादी और मैनेउसको लाकर रावजीके हवाले करदिया—यहपुड़िया ९ नवम्बरकेपांचसात रोज पहिले दीथी ९ नवम्बर के प्रातःकाल के आठबजे मैंअपनेमकानसे आया मैनेरावजीको डेवढ़ीपर बैठाहुआदेखा जो साहबकी कचहरीके निकट है उसदिन भोरको मुझसे और रावजीसे कुछवार्त्ता नहुई थोड़ीदेर के पीछे जब गिलास में विष मालूमहुवा तो गड़बड़ होगई मुझसे रावजीने कहाकि डाक्टरसाहब आयेथे और गिलासजेबमें रखकर लेगये सिवा इसके और कुछबातें रावजीसे नहींहुईं उसकेदूसरे दिन करनलफियर साहबने मेरेइजहारलिये मैंअपने ओहदेपरका क़ायमरहा और फिरसूटरसाहबकी आज्ञानुसारमैं पकड़ागया ९ नवम्बर और जिसदिनतक मैंपकड़ागया रावजीसे कुछबातें नहींहुईं मेरे इजहार के पहिले मुझसे किसीने नहीं कहा

कि रावजीने क्याइजहारलिया और इजहारसे पहिले मुझसे मुआफीका वादा नहींहुवा जब मेरेइजहार लियेगये तो सरल्यूइसपीजी साहब भी वहांबैठेथे—साहबप्रेजीडण्टनेप्रश्न कियाकि मिस्टरसूटरसाहब और सरल्यूइसपीली साहबने इजहार लियेजानेके पहिले तुमसे कुछ कहाथा? उ०—कुछ नहींकहा वहमेरे इजहार सुनतेरहे। प्र०—ऐडवकेट जनरल ने कहातुमसे अपराधके क्षमाहोनेका कुछवर्णन हुवाथा? उ० नहीं इसके उपरान्त गवाहने कहाकि जबसे मैं कैदहुवाहूं कईदिन तक हिन्दुस्तानी सिपाहियोंके पहरेमेंरहा और इस केपीछे गोरोंकेपहिरे हूं मुझेस्मर्णहै कि एकदिन मैं रेजीडन्सी के बागमें गयाथा मैंने वहांनौकरों को देखा मुझे लज्जा आई कितने समयके पीछे मेरे भाग्यमें लिखाथा कि मैं ऐसाकर्म्म करूं और अबक्योंकर अपनामुखदिखाऊं इससेमैं कुयेंमेंगिर-पड़ा—रावजीके पेटमें जोनिशानहै उसने ९ नवम्बरके दोदिन पहिले मुझको दिखायाथा वहजगह सूजीहुई फोड़ेके सदृश थी उसने कहाकि मैंने यहीशीशी रक्खो थी उससे मेरी यह गति होगई॥

सरजन बेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

कितने वर्षोंसे तुम रेजीडन्सी में नौकर हो? उ०—बत्तीस अथवा इससे अधिकवर्षका नौकरहूं। प्र०—तुमसे और कर-नैलफियरसाहब से कभी नारीजी नहीं हुई या कोई वजह शिकायतकी तो नहींहुई? उ०—नहीं मैं करनैलफियरसा-हबको अपना मावाप समझताथा वह मुझको खाने को देते थे—मेरी अभाग्यताथी कि मैंने लोगोंका कहनामानलिया। प्र०—तुम्हारा अभाग्य था हो वा न हो परन्तु द्रव्यकेलोभसे तुम अपने बाप और स्वामीके जहरदेनेपर राजीहुये? उ०—मुझको रावजीने बहकाया था मेरे भाग्यमें यही लिखाथा। प्र० तुमने यहकर्म्म धनके लोभसे कियाक्यों तुमने कियानहीं? उ०—मुझको रुपये कभी नहीं मिले केवल महाराजासाहब

के विवाहमें मिलाथा। प्र०—इसकाम के वास्ते तुम को क्या मिलने वालाथा? उ०—मुझसे प्रतिज्ञा हुईथी कि मेरेवास्ते कुछ बेहतरहोगा। प्र०—तुमको निश्चयथाकि तुम्हारी नौकरीमें तरक्काहोगी और तुमको रुपयामिलेगा? उ०—हांयही समझा था। प्र०—पस यहबात समझकर तुम भी सुआमिले में शरीकहुये? उ०—हां। प्र०—परन्तु आज वर्णनकरते हो इस बयानके वास्ते तुमको कुछ न मिलेगा? उ०—कुछ नहीं मिलेगा। प्र०—पस मालूमहोता है कि तुमरुपया लेकर खून करोगे और दरोग हल्फ़ी न करोगे? उ०—मैं क्या करूं मेरे भाग्यमें यहीथा मेरी कांबख्ती थी। प्र०—तुमकहतेहो कि जो कुछरजोडन्सीमें होता था रावजी लिख लियाकरते थे और लिखकर महाराजासाहबके भेजनेको हमें दिया करते थे? उ०—हां चिट्ठी लिखकर मैं सालिम को देदिया करता था। प्र०—यहपरचा कागजका होताथा या कोईकिताब होतीथी या और कुछ होताथा?उ०—एकपरचाकागजका होताथाजो मोहरसे बन्दकिया जाता था वहीपरचा प्रतिदिन भेजाजाता था। प्र०—ऐसाकोईपरचा तुम्हारेपास अबनहींहै? उ०—नहीं है। प्र०—तुमको मालूमहै कि उनपरचोंमें से कोई परचाअब कहींहोगा? उ०—यहपरचे सालिमके पासहोंगे या सरकार के पास। प्र०—अबबयानकरोकि तुमसे और महाराजासाहब से पहिले किसकमरेमें मुलाक़ात हुईथी? उ०—एक छोटा कमराथा और उसमें एक बेंचबिछीहुई थी। प्र०—सबकमरे का हालबयानकरो? उ०—इसकमरेमें दो बड़े २ आईने थे और एकघड़ीथी और जोकिराचिका समयथा कमरेके और असबाबका मैंनेखयाल नहींकिया। प्र०-क्याएकही कमरेमेंतुम सेऔर महाराजासाहबसेभेंट हुईथी या सुखतलिफ कमरोंमें? उ०—हमेशाएकही कमरेमें मुलाक़ात होती थी। प्र०—उस कमरेमें ग़ुसलखानाभी था?उ०-शायदहो क्योंकि चारोंओर दरवाजे और कमरेथे। प्र०—पसतुम कहतेहो कि उसकमरे

के पासकोई गुसलखाना नथा?उ०—हांशायदहो मैंनहींकह सक्ता। प्र०—तुमकहतेहो कि दरवाजे और बक्तसे कमरेथे तुमनेकोई गुसलखाना नहींदेखा? उ०—मैनेगुसलखाना नहीं देखा। प्र०—दरवाजोंके खयालसे तुमकहतेहो किशायद कोई गुसलखानाहोगा? उ०—हां। प्र०—परन्तु तुमनहीं जानते? उ०—नहीं। प्र०—महाराजा साहबके निकट हालमें भीगये थे? उ०—नहीं। प्र०—करनैलफियर साहबने तुम्हारे इजहार आपलिये वा किसी और मनुष्यसे अपने सन्मुखलिवाये थे? उ०—आपहीलियेथे। प्र०—तुमने करनैलफियर साहबसे प्रतिज्ञाकीथीकि सचकहोगे और सिवासचके और कुछ न कहोगे? उ०—हां परन्तु मैने उनसे सत्यनहीं कहा था मेरे इजहार उन्होंने लिखलिये थे। प्र०—तुम्हारादिल उससमय गवाही न देताथा कि तुमको झूठ बोलना न चाहिये? उ०—नहींमैने उनसे मुख्यवृत्तान्त वर्णन नहीं कियाथा। प्र०—पस इसकोभी तुमकिस्मतपर हवालाकरो कि तुम्हारे भाग्यमेंथा कि करनैल फियरसाहबके सामनेबक्तसा झूठबोले?उ०—हांमेरेभाग्यमें यहीथा मैं क्याकरूं। प्र०—तुम्हारा क्या मजहब है? उ०—हिंदू। प्र०—मैंइनबातों को अच्छीतरह नहींजानता क्याऔर झठबातों मेंसे क्यातुम्हारे भाग्यमें यहभीथा कि तुमफैजू पर दोषलगाओ? उ०—हांमैने यहीबयान कियाथा। प्र०—तुम जानतेथे कि फैजूनिर्दोष है? उ०—फैजू और एकमुसल्मान आया करतेथे सालिमभी आयाकरता था। प्र०—मैं फिरसुनूं तुमने क्याकहा? उ०—फैज और सालिम आयाकरते थे और एक पादरी साहबभी बंगलेपर आया करते थे सालिम का नियम था कि फैजूके मकान पर जाकर बैठाकरता था इसी कारण मैने उसका नामलिया। प्र०—पादरीसाहब को शर्बत में जहरके डालनेसे क्यागर्जथी? उ०—फैजूका मकान रेजीडेंसीके अहातेमें था मनुष्यबजधा उसकेमकान में जाकरबैठा करतेथे। प्र०—क्यातुमने इसीकारण उसपर दोष लगाया?

उ०—रेजीडन्सीके सम्पूर्णनौकरोंने उसका नामलिया था इस-लिये मैनेभी उसका नामलिखाया। प्र०—केवल इसी कारण तुमने विचार किया कि तुम्हारे इज़हार भी और गवाहों के अनुकूल हों? उ०—हां। प्र०—तुम जानते थे कि वह बयान तुम्हारा बिल्कुल गलतथा? उ०—हां मैनेझूठ वर्णन कियाथा। प्र०—मालूम होता है कि तुमने और रावजी ने इसबात का सम्मत कियाथाकि फौजको भी अपराधी बनावें? उ०—हमने सम्मत नहीं किया। प्र०—तुम जानतेथे कि रावजीने ऐसाही बयानकिया है? उ०—सम्पूर्ण नौकरोंने ऐसाही बयान किया था। प्र०—क्या रावजीसे और तुमसे इज़हार के पहिले कुछ बार्त्ता हुई थी? उ०—नहीं वह मेरे इज़हारके पहिले क़ैद होगयाथा। प्र०—मगर वह इसतारीख़ से पहिले क़ैद नहीं हुआ था तुम को क्योंकर मालूम हुआ कि और नौकरों ने फौज़का नामलिया था? उ०—अब्दुल्ला और पेडरू और एक मुसल्मान मज़दूरने फौज़का नामलियाथा। प्र०—मैं विचारता हूं कि तुम नहीं जानते थे कि रावजी और और नौकरोंने महाराजासाहबको इसी अपराधमें संयुक्तकिया है? उ०—मैं न जानताथा। प्र०—परन्तु हमजानतेहैं कि तुमजानते थे कि रावजीने महाराजासाहबको अपराधमें संयुक्त किया? उ० नहीं। प्र०—मैं समझताहूं कि जोकुछ तुमने आज वर्णनकिया वह इबसचहै और सिवायसचके और तुमने कुछ बयाननहीं किया? उ०—हां आज सिवाय सचके मैंने और कुछ बयान नहीं किया—इसके अनन्तर कमीशनके अधिष्ठाता टिफनखाने खानेके वास्ते उठे टिफनके उपरान्त मेम्बरान् कमीशन फिर समाज में सुशोभित हुये तो सरजन्ट बेलन टायन साहब नरसू गवाह से फिर प्रश्न करने लगे। प्र०—तुम से और महाराजा साहब से सब कै दफे मुलाक़ात हुई? उ०—पांच छः दफा। प्र०—यह तुमको भलेप्रकार स्मर्णहै परन्तु ठीकर बताओ? उ०—शायद पांचबेर हुई होगी। प्र०—मेहरबानी

करके मेरे प्रश्नका स्पष्ट उत्तर दो मैं शायद नहीं जानता ? उ०—मैं जानता हूं कि पांच दफा। प्र०—हांमैं भी ऐसा ही जानता हूं परन्तु जबप्रथम तीनबेर महाराजा साहब से भेंट हुई थी तो विषका जिक्र आयाथा यानहीं ? उ०—नहीं। प्र०—जब तुम्हारी चौथीबेर महाराजा साहबसे मुलाक़ातहुई थी तो उसदिन कौन२ मनुष्यथा ? उ०—यशवन्तराव और सालिम और महाराजा साहब रावजी और मैंथा। प्र०—इस मुलाक़ात में यह बात ठहरागई थी कि यह पुड़िया तुमको भेजीजावेगी ? उ०—हां। प्र०—अगर यादहोतो महीनाऔर तारीख़ बयानकरो ? उ०—मुझको न तारीख़ स्मर्ण है न महीना प्र०—जोमहीना नहीं कहसक्ते तो यहबात बताओ कि विषदिये जानेके कितने पहिले यह बार्त्ता हुई थी ? उ०—एक पुड़िया २५ दिन पहिले और दूसरी पुड़िया सात आठ दिन पहिले। सरजन्टबेलनटायन साहबने मुतरज्जिमसे कहा किशायद तुम सही२ तर्जुमा नहीं कहते यद्यपि मैं तुम्हारी भाषाको नहीं जानता परन्तुमुझको ऐसाहीमालूम होताहै मुतरज्जिम करसट जीने उत्तरदिया किमेरा अक्षरमुतरज्जिम मेरी ओरसे उत्तर देताहै उससे पूछिये मैनेतर्ज्जुमा गलत कियाया सही सरजण्ट बेलनटायन साहबने कहा कि गवाहसे पूछो कि जबपहिली बेरविषका वर्णनहुआ तोभलेप्रकार समझोथा कि साहबके जहरदेनेका यहजिक्र है ? उ०—हां। प्र०—क्यापहिली बेर तुम्हारे सन्मुख ऐसावर्णन हुआथा ? उ०—हां। प्र०—तुम्हारे रूबरू पहिलीबेर यहवर्णन हुआ था ? उ०—हां मेरे रूबरू प्रथमबेर यह वर्णन हुआथा शायद रावजी के रूबरू इससे पेश्तरभी हुवा होगा। प्र०—तुम महाराजा साहबकी मुलाक़ातके वास्तेफिर भी गयेथे ? उ०—दसहरेकी छुट्टियोंमें जब कि दूसरीपुड़िया मुझकोमिली थी गयाथा। प्र०—इससेमालूमहोता हैकि चौथी मुलाक़ातपर तुमकोएक पुड़ियादीगई और एक पुड़िया पांचवीं मुलाक़ात पर ? उ०—हां साहब।

प्र०—जब चौथी मुलाक़ात पर तुमको पुड़िया दीगई थी और उससेकुछ फलनहुआ तो तुमको पांचवींमुलाक़ात परपुड़िया दीगई ? उ०—हां महाराजासाहब मुझपर क्रोधितहुये और दूसरीपुड़िया मुझको दी। प्र०—अब तुम मुझसे कहोकि जब अन्तकी बेर करनैलफियर साहब को विष दिया गया उससे कैदिन पहिले महाराजा साहबसे तुम्हारी मुलाक़ात हुई ? उ०—पांच या सात दिन पहिले परन्तु मुझेभले प्रकार स्मर्ण नहीं। प्र०—तुमनेरावजीसे पूछाथा कितुमकोजो चौथीमुलाक़ातमें पुड़ियामिली उसकोतुमने क्या किया ? उ०—हां मैने पूछाथा क्योंकि मालिम मुझसे रोजपूछा करता था रावजीने मुझसेकहा कि मैने पुड़ियाको डाल दिया मगरकुछ कारगरनहीं हुई इसको मैं क्याकरूं। प्र०—जब तुम्हारे हाकिम को विषदिया जाताथा तो तुमनेकुछ इन्कार किया था ? उ० किसकेरूबरू। प्र०-रावजीसे ? उ०-नहीं। प्र०-तुमकहतेहोकि रावजीने तुमको फोड़ादिखाया था क्याउसने यह फोड़ामहाराजासाहबकी अन्तिमभेंटके पहिलेदिखायाथा वामुलाक़ातके पीछे ? उ०—पहिले या पीछे मुझको स्मर्ण नहीं। प्र०—जो शीशी रावजीको दीगई थी वह तुमने देखी थी ? उ०—एक शीशी सन्दूकके नीचेबंगले में रक्खीहुई देखी थी। प्र०—जब वहदीगई थी तुमनेशीशीको देतेहुये देखा था ? उ०— कुछ दियाथा मैने भलीभांति नहींदेखा थाकि पुड़ियाथी या शीशीथी मैं आगेथा और रावजी पीछे खड़ा था। प्र०—पुड़िया थी या नहीं ? उ०—मैंनहीं कहसक्ताकि पुड़ियाथी या नहीं यह तुम्हारा बयान अन्तकीबेर का है? उ०—हां। प्र०—तुम ने पूछा थाकि रावजीने उसकोक्या दिया ? उ०—मुझको स्मर्ण नहींकि मैनेउससे पूछाहो परन्तु मुझको स्मर्णहै कि रावजी नेवहफोड़ा जो उसकेउदरपर होगयाथा मुझकोदिखायाथा। प्र०—इसशीशीके सिवायतुमने कोईशीशी और भी देखीथी ?उ० नहीं। प्र०—तुमसे रावजीने कहाथा किशीशीका इस्तेमालमैने

किया ? उ--०यहसुझको याद नहीं किउसने इस्तैमाल करने का ज़िक्रसुझसे किया या नहीं ॥

ऐडवकेटजनरल ने नरसू के दूसरी बेर इज़हार लिये ॥

प्र०—तुमने अभी सरजन्टवेलनटायन साहबसे कहाकि श्रीमतीबंगलेमें संदूकके नीचे रहाकरतीथी ? उ०—हां। प्र०—तुम्हारीगर्ज़ बंगलेके कहनेसे रजोडन्सीका मकानहै ? उ०—हां प्र०—यहश्रीमती तुमनेदेखीथी ? उ०—मैंनेखुद देखी थी। प्र० तुमको स्मर्णहै कि तुमने वहश्रीमती पहिलीबेर कबदेखीथी? उ० एकबेरदेखी थी भले प्रकार स्मर्णनहीं कि कब देखी थी। प्र० तुमको स्मर्णहै कि किससमय तुमनेयहश्रीमती देखीथी ? उ० रावजीने मुझकोश्रीमतीदिखाई थी औरकहाथा किइसमें दवा डालकर और पानीमें मिलाकर शर्बतमें डाली जावेगी। प्र० ९ नवम्बरसे कितनेदिन पहिलेतुमको श्रीमतीदिखाई थी? उ० मुझको भलीभांति स्मर्णनहीं। प्र०—तुमकहतेहो कि मुझको स्मर्णनहींहै कि रावजी और रजोडन्सीके नौकरोंने महाराजा साहबपर जुर्म्मसाबित करना चाहाथा या नहीं ? उ०—हां मैं कहता हूं कि मैंनहींजानता। प्र०—तुमको मालूम है कि कमीशन के रूबरू किन किस मनुष्य के इज़हार लिये गये ? उ०—मैं पहिरेमें था और आजपहिरेसे निकलाहूं मुझको किसभांति मालूमहोता। प्र०—तुमसे किसीमनुष्यने कहाकि किसगवाहके इज़हार होचुकेहैं ? उ०—नहीं मेरे निकट कोईमनुष्य नहींआनेपाता था दूरसेमुझको रोटी फेंकीजायाकरतीथी (प्रश्न सरदिनकरराव का) तुम ३४ वर्षके नौकरहोकमीशनकेबैठनेसेपहिलेभीतुमकभीमहाराजासाहबके सम्मुखगये थे उ०—मैंकभी नहींगयाजबइससे पहिलेकमीशन बैठीथीउस समयसे मैंने महाराजासाहब के निकट जाना आरम्भ किया (प्रश्न सरदिनकरराव का) तुम खण्डेरावके निकटभी दसहरे के पारितोषक लेनेकेलिये जायाकरतेथे? उ०—नहीं प्र०—क्या

तुमठीक २ वर्णन करतेहो ? उ०—हांठीक २ वर्णन करताहूं उससमयमें पारितोषक देनेका क़ायदा दरबारमें नथा थोड़े से सरदार पारितोषक दियाकरते थे। प्र०—जब महाराजा साहबने तुमको विषदेने के लियेबुलायाथा और तुमजानते थे कि यहबात बड़ेतबुरीहै तो तुमने अपनेपरिवारके लियेकुछ प्रबन्धकरलियाथा ? उ०—मैंमहाराजासाहबकी जबानीप्रतिज्ञा परविश्वासरहा। प्र०—तुमजानतेहोकि किसीमनुष्यको विषदेना बड़ा अपराधहैसोमहाराजासाहब दसबारहमनुष्योंके रूबरू क्यों कर ऐसीबार्त्ता करते ? उ०—दसबारह मनुष्यनथे केवलदोही मनुष्य थे अर्थात् मैं और रावजी। प्र०—जितनी संखिया दी गईथी वहकमथी वा अधिकथी और क्यातीनबेर दीगई ? उ० मैने अपनेआयु भरमें कभीकिसी को संखिया नहीदी मैनेराव-जीको संखिया देदीथी। प्र०—जब महाराजासाहब से पहिले तुम्हारीभेटहुई थी तो महाराजासाहब ने तुमको लुच्चा कहा था पसलुच्चाकहने परभीतुमको ऐसासुआमला सुपुर्द करते उ०—रावजीने समझादिया थाकि अबलुचपन नकरेगा इसी हेतु यह कार्य्यसुझको सौंपागया। प्र०—तुम हिन्दू हो ? उ० हां प्र०-कौनहिन्दू हो तुम्हारीक्याजातिहै। उ०-तिलंगीकमाती हिंदूहूं। प्र०—तुमको पुलिसका भयहै ? उ०—किस वास्ते। प्र०—सचकहनेके वास्ते ? उ०—सचके कहनेमें क्याभय करना चाहिये। प्र०—तुमको विश्वासहै कितुमअपराधी हो ? उ० मेरीदुर्भाग्यता हैकि मेराभीइस बातसे सम्बन्धहै मैंक्या करूं मेरी अभाग्यता। प्र०—यदि सरकार तुम्हारा अपराध क्षमा करेगीतो ईश्वरको वर्त्तमान और साक्षीदेकर सचकहोगे ? उ०—सरकार चाहे क्षमा करे वान करेसरकार मेरी माता पिताहै जोचाहेसोकरे। प्रश्न मिस्टरमैलवल साहबका॥ यदिस-रकार तुम्हारा अपराध क्षमा करदेते और भी तुमसच कहो ? उ०—मैं इससमय भी सचकहरहा हूं इससेअधिक और क्या सचकहूंगा। प्रश्न सरदिनकररावका। भलाजो सरकार तुम्हारा

अपराधक्षमा करदे तोजो कुछबाक़ी रहगयाहो वहभीवर्णन करोगे? उ०—इससे बढ़कर औरक्या सचकहूंगा उसममयमे मैं सचकह रहाहूं सरकारमेरी मातापिताहैं चाहेफांसी देदें॥

प्रश्न सरदिनकरराव का—जिसमनुष्यके पासतुमने ३५ वर्ष नौकरीकी तुमनेउसीको विषदेना चाहाजो कुछतुमको और सचकहनाहो ईश्वरको वर्त्तमान समझकर वर्णनकरो? उ० मुझको भयनहींहै मैं सचकहता हूं और परमेश्वर को वर्त्तमान समझता हूं॥

प्रेज़ीडेण्ट साहबने मुतरज्जिम से कहाकि तुमने गवाहसे यहकहाहैकि तुमईश्वरको वर्त्तमान समझकर सचकहो मुतरज्जिमसाहबने उत्तरदिया हां और गवाहने भीकहाकि ईश्वर कोवर्त्तमान समझकर सचकहता हूं॥

इज़हार जुग्गा भगवान गवाह॥

जुग्गागवाह बुलागया और मिस्टर अनवरारटी साहबने उसके इज़हारलिये उसनेवर्णन कियाकि रजीडन्सीकापंखेवाला हूं मैंरावजी हवालदार और नरसू जमादारको जानताहूं मैं सालिम और यशवन्तराव को भी जानताहूं यशवन्तराव का मकानभी जानताहूं शहरमेंउसकाघरहै रावजीकेसाथ मैंदो तीनबेर गयाथा जबमैं यशवन्तरावके घरगया तो उसकेकारकुन ने मुझको पांचसौरुपये दियेथे सौरुपये मेरेपास रखवाये गये और चारसौरुपयेरावजीहवालदारलेगयेथेयशवन्तरावकेकारकुनने यहरुपये रावजीको दियेथे पहिलीबेर जबरावजी महाराजासाहबके पासगयेथे इसको चौदह या पन्द्रहमहीने हुयेहोंगे दूसरीबेर जब मैं रावजीके साथगया तो पहिलीबेर से सातआठ महीनेकेपीछे गयाथा उससमय रातके सात वाआठ बजेहोंगे मैनेयशवन्तराव और रावजी और सालिम औरनरसू जमादारको वहांदेखाथा जबहमलोग वहांपहुंचेतोमुझकोनीचे छोड़गये और सबलोग ऊपरचलेगयेयहलोग नज़रबाग के मार्गसेगयेथे दोघण्टेके पश्चात्यहलोग ऊपरसे उतरेमुझको

केवलएकही बेरकपया मिला (गवाहको एककाग़ज़ दिखाया गया उसनेस्वीकार कियायह मेरालिखाज़वा है गवाहसे कहा गयाकि इसको तुमपढ़ो)गवाहने कहा कि मैंने यह काग़ज़ नरसूजमादार और रावजी हवालदारके कहनेसे लिखाथा जोकुछ वहबतलातेथे मैं लिखाकरताथा- लिखकर कभीतो मैं नरसूको देता और कभी रावजीको ॥

ऐडवकेटजनरलने प्रेजीडण्टसाहबसे कहा कि माईलार्ड यह चिट्ठी गवाहीकी तौरपर मंजूरकी जाय इस शर्त्तपर कि सरजन्टबेलनटायनसाहब स्वीकार करें यह चिट्ठी सालिमके घरसे मिलीथी सरजन्टबेलनटायनसाहबने स्वीकारकिया और साहब प्रेजीडण्टकी आज्ञानुकूल यहचिट्ठी गवाहीमें दाखिल की गई इसचिट्ठीपर हर्फ (एक्स)का चिन्ह दियागया ॥

मिस्टर अनवरारटीसाहबने नीचेलिखीहुई चिट्ठीका तर्जुमा पढ़ा ॥

आज भावपूनाकर आया और उसनेसाहबसे वर्णनकिया कि महाराजने एक नई जोरूकीहै उसका नाम गङ्गाबाई है उसका पिताधोबीथा महाराजने आज्ञादी है कि सातहजार रुपया नजरानामट्टनमोहालसे उसकोदियेजावें और वह मनुष्यनालिशकरने को आये हैं परन्तु किसीने उनकीनालिश न सुनी—दूसरे-बापूसाहब गायकवार आयेथे साहबने पूछाकि तुम कैसे हो उन्होने कहाकि साहबके आशीर्वाद से अच्छा हूं—तिसपीछे साहबने पूछाकि तुमअपने कार्य्यकेलिये दादा भाई और शिवदीन(शायदशहाबुद्दीन) के पासजातेहो-बापू साहब ने सुनकर उत्तरदिया मेरे जाने की उनके पास क्या आवश्यकतायी—जबतक आपवर्त्तमान हैं मैं किसी को कुछ नहीं समझता यहलोग नीति औप्रबन्धसे आज्ञानहैं वहलोग परस्पर बैठ २ कर मशवरह कर लिया करते हैं ॥

तीसरे भावपूनाकरने साहबसेकहा कि तोपोंका शब्दसुन करलोगअति प्रसन्नहुये और परस्परएकत्रहोकर कहने लगे

किकोई बड़ासाहबआया है और खुशहुये कि अबहमारीदाद फरयादसुनी जायगी—साहबने कहाकियह जनरलसाहब हैं जो अहमदाबाद से पलटनके अवलोकन के लिये आये हैं॥

चौथे—रखमाबाईके भाई ने अरज़ीदी है कि मेरी बहिन मुझको मिले—साहब उससे अतिअप्रसन्न हुये॥

पांचवें—मैं कल आऊंगा और अपने साथ कपासजी को लाऊंगा सालिमको भेजदीजिये॥

दो चिट्ठी और भी उस गवाहको दिखाईगईं उसने कहा कि मैं इनको नहीं जानता न मेरीलिखीहुईहैं सरजन्टबेलनटायनसाहबने कहाकि मुझको इसगवाहसे कुछसवालकरना नहीं है॥

साहब ऐडवकेट जनरलने कहाकि मैंने कुछ काग़ज दरबारहु करनैलसाहब के मंगवा ने का वाइदा कियाथा और गवर्न्मेण्टको तारबक़ी भेजीथी परन्तु उनकाग़जों के आनेमें किसी प्रकार की दिक्कतहै—शायदगवर्नमेण्टके दफ्तरसे वह काग़ज न मिले—सरजन्टबेलनाटायन साहबने कहा कि मैंने आपपर जाहिरकर दिया है कि मैं कोई ऐसी बातपेश नहीं करनाचाहता जिससे बदमज़गीहो मैं उसकाग़जकी नक़ल दूंगा अगर करनैलफियरसाहब उसको पढ़कर कहें कि यह नकलसही हैतो काफीहोगा—दुवारहकरनैलफियर साहबके इज़हार की जरूरत न होगी—साहबप्रेज़ीडण्ट ने कहा कि यह बात बख़ूबी मुनासिबहै—जबकि करनैल फियरसाहब उस को देखकर मानलें तो वही नकल कमीशन के अधिष्ठाताओं को देदी जावे॥

कारभाई अमानसिंह गवाहके इज़हार॥

कारभाई अमानसिंह बुलायागया और ऐडवकेट जनरलने उसके इज़हार लिये उसनेवर्णनकिया कि मैं पंखेवाला हूं पिछले वर्ष पंखेवालोंमें नौकरनथा परइसीवर्ष में नौकर हुवाहूं चमड़ासियोंके हवालदारको मैंजानताहूं मैं राजिके

समय कईबेर नगरको उसकेसाथगया था मुझे ऐसा स्मर्ण है कियांचछः बेरमैं नगरमें गयाहूं परन्तु यह स्मर्ण नहीं कि कितने दिनबीते—जबबह महाराजाके पासजाता तोप्रथमयश-वन्तरावके मकानपर जाया करता मैं नहीं कहसक्ता कि कै मरतबे महाराजासाहबके पासउनके साथगया जबबह लोग महाराजा साहबके पासऊपरके मकान को जातेतो मुझको नीचेछोड़जाते थे ॥

साहबप्रेजीडण्टनेपूछा कि कौन२ मनुष्यतुम्हारे साथजाया करतेथे—गवाहनेकहा कि रावजी—सालिम—नरसूजमादार और यशवन्तराव—जायाकरतेथे ॥

मरजनबेलन टायनसाहबके प्रश्न ॥

रजीडन्सीमें कितने दिनतक तुमपंखेवालोंमें नौकररहे ? उ०—अन्तकीबेर पन्द्रहबोस दिननौकररहा परन्तु मैंपहिलेभी नौकर रहचुकाहूं। प्र०—मेरा मतलब यहहै कि तुम कितने दिनोंतक पंखेवालेरहे ? उ०—मैंदोबेर रहाएकबेर एकमहीने और दूसरीबेर पन्द्रह या बीसरोजतक। प्र०—पहिलीबेर तुम किसबोकहतेहो ? उ०—जबपंखे चलनेशुरूहुयेथे। प्र०—कोई तारीखबताओ कबचलना शुरूहुयेथे ? उ०—होलीकी छुट्टियों केपीछे। प्र०—आखीर होलीकी छुट्टियोंके पीछे ? उ०—हां। प्र०—तुमकहतेहो कि मैंएक महीने तक नौकररहा ? उ० हां। प्र०—दूसरीबेर कबनौकरहुये ? उ०—जबपंखेका मौसम पूर्णहोने वालाथा। प्र०—नौकर होनेसे पहिले रावजी और नरसूको जानतेथे ? उ०—हांमैं जानताथा। प्र०—तुमसौगन्द खासक्तेहो ? उ०—हां। प्र०—नौकरीसे पहिलेभी उनकोजान-तेथे ? उ०—हां—परन्तु जबनौकर हुवाउनको जियादहजानने लगा। प्र०—तुमनेमिस्टर सूटरसाहबके रूबरूबयान कियाथा कि तुमकभी सीढ़ीके नीचे ठहरतेथे और कभीजीनेके ऊपर जातेथे क्यायहबात ठीकहै ? उ०—हांठीकहै। प्र०—तुमकबसे हवालातमें हो ? उ०—ढाई महीने हुये। प्र०—किसहेतु से

तुमहवालातमेंहो? उ०-गवाहीदेनेके लिये। प्र०-तुमनेसच कहाइसलिये तुमक़ैदकियेगये?उ०-हां। प्र०-तुमखानसाहब कीहिरासतमें कैरोज़रहे? उ०-तीन दिन-इसके उपरान्त सूटर साहबके पास रहा। प्र०-जोकुछ तुमने वर्णन किया उसको कबूल कराते ज़ियेतीन दिन खानसाहबकोलगे? उ० उन्होंने मुझसे एकरोज़ कुछभी नहींकहा। प्र०-तुम्हारेसाथ जुग्गाभी रहताथा? उ०-मैने उसको नहींदेखा मैंअकेला रहाकरता था। प्र०-तुमने जुग्गाका बयान सुनकर अपना इज़हारदियाथा? उ०-नहीं। प्र०-क्या जुग्गाभी क़ैदथा? उ०-हां॥

सवालात जो साहबऐडवकेट जनरलने किये॥

प्र०-पहिले दिनतुमसे किसीने कुछनहींपूछा और तुमको तुम्हारेघर जानेदिया? उ०-मुझसेसंध्याके समयपूछागयाथा परन्तुघर जानेकी आज्ञाहोगईथी। प्र०-दूसरेदिनभी तुमसे कुछपूछा गयाथा? उ०-मुझसे कुछ नहीं पूछागया। प्र० तीसरेदिन तुमने मिस्टर सूटर साहबके सन्मुखकुछ इज़हार दियाथा? उ०-हां। प्र०-उसीसमय से तुम पहिरे मेंहो उ०-नहींदूसरे दिनसे। प्र०-उसवक्तसे तुम बराबर पहिरे मेंहो? उ०-हां जबसे कि महाराजा साहब पकड़े गये हैं उसके दूसरेदिनसे॥

इसकेअनन्तर साहब ऐडवकेटजनरलने कहा कि अबचार बजगयेहैं साहब प्रेज़ीडेण्टने कहा कि अबअदालत कलजमा होगी॥

दसवें दिनका इज़लास॥

आजकेदिन नियमानुकूल कमीशनके अधिष्ठाता ११ बजेके समयआये-परन्तु श्रीयुत महाराजा सेंधिया और मल्हरराव न आयेसरल्यू इसपीलीसाहब मध्यान्हसे पहिलेआयेथे परन्तु मध्यान्हके पश्चात्नहींआये इज़हार दाजीबानरोत्तम गवाह

केआरम्भ्भ्भ्ये उसकेइजहार मिस्टर अनवरारटीसाहबने लिये उसनेवर्णन किया कि मैंकुम्हारहूं रेजीडन्सीके रावजी हवालदारको जानताहूं—दिवालीसे पहिले उसनेमुझसे कुछ जेवर केबनवानेके वास्तेकहाथा सोमैंने उसकेसाथ जाकरशिवलाल सुनारका मकान बता दिया—नीचे विस्तृत आभूषण बनवाये गये थे॥

एकजोड़ी पाञ्चोंके कड़ोंकी—एक कण्ठी—एकजोड़ी कंगन, दोस्वर्णके छल्लेजिनका वजनएकतोला—एककरधनी लड़केकी, एकजोड़ी कड़ेकी लड़कीके पांउकी—कार्तिकके महीने सेइस आभूषणके बननेका प्रारम्भ्भ्आथाजो २ वस्तुतय्यार होतीगईं रावजीको मिलती गईं—अदालतमें जोपेशहै सुनार का असबाबहै॥

साहब प्रेजीडण्टने सरजनबेलन टायन साहबसे पूछा कि आपको इसहिसाबके दाखिल होनेमें कुछइन्कारहै उन्होंने उत्तरदिया कि नहीं परन्तु सुनारइस हिसाबकी तसदीक के वास्ते बुलायाजाय॥

सरजनबेलन टायनसाहबके प्रश्न॥

प्र०—क्याकारणहै कि रावजीने यहआभूषण तुम्हारेद्वारा बनवाया? उ०—मैं नगरके भीतर रहता थो और रावजीने मुझसे पूछाकितुम किसी सुनार को जानतेहो मैंने कहाहां जानताहूं। प्र०—यहसुनारकहांरहता है? उ०—सड़कपर पीपलके वृक्षके नीचेरहताहै। प्र०—क्याउस जगह रावजीभी रहताहै? उ०—नहींवह शहरमें नहींरहता है॥

इजहार शिवलाल वतिल॥

शिवलाल वतिलबुलायागया और ऐडवकेट जनरलनेउसके इजहार लियेउसने कहाकि मैं सुनारहूं मेरामकान गणपत राव महादेवके मकान के निकट है अर्थात् उस सड़कपरजो नगरके बाहरहैमैं कम्पूमें नहीं रहता हूं मैंउजीबा नरोत्तम को जानताहूं उससेमेरी जान पहिचानहै उसने कुछ जेवर

किसीशख़्स के वास्ते बनवाया था जिसके वास्ते यह आभूषण बनाथा एकपट्टे वालाहै रावजी उसकानामहै वहसाहब के पासरेजीडन्सी मेंनौकर था मेराहिसाब बहीसे मालूम होगा किमैंने क्या२ उसका जेवर बनायाहैयह मेरीही हिसाबबही हैजो रक्खीहै लिखना पढ़नामैं नहीं जानता दूसरे मनुष्य से लिखवालिया करता था॥

प्रश्नऐडवकेट जनरलका-तुमजोलिखनापढ़ना नहीं जानते तोतुम अपनेसब हिसाब जबानीयाद रखतेहोगे गवाहनेबयान कियाकि मैं यहहिसाब नहींपढ़सक्ता आपहीपढ़िये याकिसी औरसे पढ़वाइये औरकहाकि देवालीसे पहिले रावजीनेएक जोड़ीपांवके कड़ेकी एककंठी एकजोड़ा कंगन और कई वस्तु बनवाईथी जोजो वस्तुबनीथीरावजीके पासभेजदेताथा मुझको स्मर्णनहींकि देवालीके दसपन्द्रहदिनपहिले यहजेवरबनगया था यादेवालीके उपरान्त तकबनाजो जेवर कि इससम यहां वर्त्तमानहै उसमेंएक जंजीरसोनेकी नहींहै जोमैंने बनाईथी तीनसौया चारसौ पचहत्तर रुपयेका जेवर बनायाथा मुझको जबानी यादनहीं हिसाबमेंलिखाहै मुझको सबरुपया मजदूरी समेत मिलगया—सरजन्ट बेलनटायन साहबनेकहाकि मुझको इस गवाहसे कुछ नहीं पूछना है॥

इजहार दुबल मन्नूदास॥

इसमनुष्यके इजहार मिस्टरअनवरादी साहबनेलिये उसने वर्णनकिया किमैं सुनारहूं औररावजी कोजानताहूं मैं और रावजी एकहीबाजारमेंरहतेथे मैंनेरावजीकेवास्तेचार चीजें बनाईथीं उनकानाम कुरतीहै वहकानमें पहिनेजातेहैं और इसजेवर को जंजीरेंभी बनाईथीं इसकेविशेषकुछ जंजीरेंऔर भीकानोंके वास्तेबनाईथीं जितनारुपया मैंने रावजीसे पाया उसका हिसाब मेरेनिकटहै यहबहीजो रक्खीहै मेरे हिसाब कीहै। प्र०—देखोग्यारहवीं अषाढ़ सुदीमें क्यालिखाहै ?उ० जब ग्यारहवीं आषाढ सुदी तिथिलिखी है कहीं सम्वत् नहीं

लिखा—शायद १९३० सम्बत होगा-इसमें कुछ रक़में लिखीहैं जिसका जोड़ ११॥) है इसके सिवाय औरभी कई रक़में नीचे लिखीहैं—आषाढ़बदी सप्तमीमें २०) फिर २०) लिखेहैं आषाढ़ बदी नवमीको २०) फिर ६०) सोनेकी जंजीरोंके वास्ते दिये गयेथे दसवींतारीख़को ८) रु० और दियेगये मैंनेसब ७९॥) रु० पायेथे सोमैंने रावजी के वास्ते दोकल्ले--दोबाले दो कानोंकी जंजीरेंबनाई थीं—सरजन्हवेलनटायन साहबने कहा कि इस गवाह से मुझको कुछसवाल नहीं करनाहै ॥

दलपतगे बिन्दराम का इज़हार ॥

दलपतगोबिन्दराम बुलायागया और ऐडवकेटजनरलने उस के इज़हारलिये उसने कहा कि मैं यशवन्तराव को जानता हूं वहगायकवारका नौकरहै मैं उसकेपास सवातीन वार्षसे नौकरथा सन्दूक आदिकी कुञ्जियां मेरे निकटरहाकरतीथीं जोकुछ वह कहताथा मैं कियाकरताथा मैं उसकाकारकुन था मैं जुग्गा और रावजी को पहिचानता हूं यदि वह मेरे सम्मुखआवें तोमै शीघ्रही पहिचानलूंगा सो अदालतनेउनको बुलाया—गवाहने कहाकि यशवन्तरावको मैंने एकमर्त्तबा या बारह या चौदहमहीने हुयेथे देखा था उससमय देखाथाकि राचि के समय आठबजे मेरे मकानपर दोनों आये थे और पांचसौ रुपया सिक्का बड़ौदेके यशवन्तरावकी आज्ञाके अनुसार रावजी और जुग्गाको दियेथे उससमय यशवन्तराव मकान के ऊपरथे—सरजन्हवेलनटायनसाहब ने कहाकि मुझको इस गवाहसे कोई सवालनहीं करनाहै ॥

छगनलालदामोदर दासगवाह का इज़हार ॥

इस मनुष्य के इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहबने लिये उसनेवर्णन कियाकि मैं इजराफौजदारी बड़ौदेका नौकरहूं मैं सालिमको जानताहूं वह गायकवारका नौकरहै जिसदिन गायकवारके पुलिसका गार्ड उसके मकानपर नियतहुआथा शायद तारीख़ २३ दिसम्बर थी दिनमुझको यादनहीं गार्ड

के नियतहोने से एकदिन पहिले उसके मकानपर हुजूरमुन्शी अरदासियर बद्याके साथमैंगया यह हुजूर फौजदारहैं और मकानकी तलाशीलेने के वास्ते गयेथे बम्बईके पुलिसका एक हवालदारभी साथथा इसबातके कहनेपर मीरइमाम अली-हवालदार अदालतमें बुलायेगये गवाहने कहा यही मनुष्य उसदिन हमारेसाथगयाथा—हजूर फौजदार गायकवार की सरकार में नौकर थे जब सालिम के घरकी तलाशी लीगई तो एकरूमालमें कुछ काग़ज बन्धेहुये मिले उनकागज़ों को हजूरफौजदार अपनेमकान पर लेगये और उनको बन्दकरके मोहरलगादी और उसपर एकटिकटलगाकर लिखदियाकि यहकाग़ज सालिमके मकानसे निकलेगवाह को एकरूमाल दिखाकर पूछागयाकिवह रूमालयहीथा गवाहनेकहाकिमैं अच्छीतरह नहींकहसक्ता कि यहीथा तिसपीछे फिर उससे कहागया कितुमभले प्रकारध्यान सेदेखो कियही रूमाल है जबगवाहने ग़ौरसे देखातो कहाकि हां वह रूमाल यहीहै सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा कि मुझको इस गवाह से कोई सवाल नहीं करना है॥

इज़हार मीर इमाम अली गवाह॥

मीरइमाम अलीके इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहबने लियेउसने बयान किया किमैं बम्बईके पुलिसका हवालदार हूंजब हरमुज़जी अरदासियर बद्यासालिमके मकानमें तलाशीके वास्तेगये थेमैं उनके साथ था मेरे रूबरू एकपुलिन्दा कागजोंका मिलाथा इसपुलिन्दे पर उससमय मोहरकरदी गई थी और साहबके दिखाने वास्ते एकपहिरेके साथलायाथायह पुलिन्दा सालिम और मुन्नेभाई के रूबरू खोलागया था जबतक यहपुलिन्दा नहींखोलागया वहपुलिसके पहिरे मेंथा सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहाकि इस गवाहसे मैं कुछ न पूछूंगा॥

इजहार मुन्नीभाई जसभाई ॥

मुन्नीभाई जसभाईजो रेज़ीडन्सीकेएक हिन्दुस्तानी असिस्टण्टहैं बुलाये गये और मिस्टर अनवरारटी साहब ने उनके इज़हारलिये उन्होनेवर्णन कियाकि २९ नवम्बर को जब कि इमाम अलीकाग़ज़ोंका एक पुलिन्दालायाथा मैं मौजूद था इसपुलिन्दे के स्थान २ पर बड़ौदे की फौजदारी के अदालत की मुहरेंलगीहुईंथीं और एकटिकट चिपकाथा उसमेंलिखा था कि यह काग़ज़ सालिम के मकान से निकले जिससमय पुलिन्दा खोलागया मैं और सालिमवहींथे मैंने इनकाग़ज़ों की कोईसूचीनहीं बनाई उसमेंसे जितने काग़ज़ निकालकर अलग रक्खेगये उनकी मैंने फेहरिस्त बनाईथी जो काग़ज़कि इसवक्त कमीशनमें पेशहै और जिसपर(ऐक्स)अक्षरकाचिह्नहै उसीपुलिन्देमेंका है उसकीपीठपर मेरेदस्तखतहैं औरजितने पुलिन्देसे काग़ज़निकालेगयेसबपरमेरेदस्तखतहैं ऐडवकेटजनरलने कहा माईलार्ड-मैं चाहताहूं कि यहकाग़ज़ात पढ़ेजावें सरजन्टबेलनटायन साहबनेकहा कि किसवास्ते पढ़ेजावेंऔर क्या वजह उनके पढ़ेजानेकी है-ऐडवकेट जनरल ने कहा कि यह काग़ज़ उसीतरह पढ़ेजावें और अदालतमें दाखिलकिये जायें जिसतरह कि वहकाग़ज़दाखिलहैं जिसपर कि (ऐक्स) अक्षरका चिन्हहै इनसे विदित होताहैकि महाराजा साहब और रज़ीडन्सीके नौकरोंमें खतकिताबतथी साहब प्रेज़ीडण्टने ऐडवकेटजनरलसे कहाकिआपनेयहप्रतीत कियाकिजिस काग़ज़पर(ऐक्स)अक्षर का चिह्न है उसका लिखने वाला कौनहै परन्तुयह आपनेसाबित नहींकियाकि इनचिट्ठियोंका लिखने वालाकौनहै ऐडवकेटजनरलने कहामैं हुजूरके रूबरूयहबात विनयकरताहूं कियह चिट्ठियां गवाहीकी तौरपर दाखिलहोसक्तीहैं क्योंकि सालिमरावजी और नरसूबराबर चिट्ठियांलिखा करतेथे और इसबातका इक़रार किया किमंगल और इतवारके सिवाय बराबर हम चिट्ठियां भेजा करते थे यदि

सरजन्टबेलनटायन साहब इस बातका बिचारकरते हैं कियह चिट्ठियांवास्तवमें उनलोगोंकी लिखीहुई नहींहै किन्तुकूल पच हैंतो इसबातके सूचित करनेकेलिये फिर उपायकिया जावेगा सरजन्टबेलनटायनसाहब नेकहामेराउज्र बहुतसा फर२है प्रथम साबितकरना चाहिये कियह चिट्ठियां उनकी इजाजतसे लिखी गईं और किसमनुष्यने लिखीं जबतक इसबात की तसदीकन होगी किसकानूनकी रूसे यह चिट्ठियां शहादत में दाखिल करसक्तेहैं ऐडवकेट जनरलने कहामेरे विचारसे यह चिट्ठियां शहादतमेंदाखिलहोसक्तीहैंसाहबप्रेजीडेण्टनेकहाआपने अ-च्छेप्रकारसाबितनहींकियाकियहचिट्ठियांशहादतमेंदाखिल करनेकाबिलहैऐडवकेटजनरलनेकहा मसमालूमहुवाकिहुजूर के विचारसे यहचिट्ठियां शहादतमें दाखिल करने के काबिल नहींहैं साहब प्रेजीडेण्टने कहाहां मेरीरायभीहै ऐडवकेट जनरल ने कहा आपअपनी याददाश्त में लिखलीजिये साहब प्रेजीडेण्टनेकहा इसको अपनी याददाश्त में लिखलूंगा परंतु आपजानते हैं कि इस कमीशनकी अपीलनहीं है आपको यह-कहनानचाहियेथा कि मैंअपनी याददाश्तमें लिखूंऐडवकेटज नरलनेकहा मैनेकेवल आपसे इसीप्रयोजनसे अर्जकी थी कि मेरीयह गुफ्तगू लिखलेनी चाहिये साहबप्रेजीडेण्टने कहा आपकोमुझसेऐसी दरखास्त करना न चाहिये ऐडवकेट जनर लने कहा जो आपकी रायहो॥

इजहार भोदरनरसी।

भोदरनरसी बुलायागया और मिस्टरअनवरारटी साहबने उसके इजहारलिये उसने बयानकिया कि पहिले मैं पटुवाला था परन्तु अबमैं रेजीडन्सीका जमादारहूं पिछले महीने में मेरीतरक्कीहुईहै१५ दिसम्बरकोरावली कापट्टा मुझकोमिस्टर बलैनफोर्ड साहब ने जो रेजीडन्सी के एक एसिस्टन्ट थे दिया २५ दिसम्बर तक मेरेपास वहपट्टारहा यहपट्टा मैं प्रतिसमय अपने निकटरखताथा परन्तुजब नहानेको जाता तो उसेउतार्ही

में रखजाता था खानसाहबने देखनेके वास्ते मुझसे पट्टामांगा था तथाचमैंने उनकेहवाले किया कमीशनमें जोपट्टा रक्खाहै वहीपट्टाहै इसमेंएकजेब है बल्किउसे जेबनकहा चाहिये उस में तलवार लटकाई जातीहै मैंइसपट्टेको जेबसे वाक़िफ नहीं हूं सरजन्टबेलन टायनसाहबने उससे कुछप्रश्न न किये ॥

इजहार अकबर अली ॥

खानबहादुर अकबरअलीके इजहार मिस्टरअनवरारटीसा-हबनेलिये उन्होने बर्णनकिया किमैं बम्बईकी डकैटिब(सुराग रसां) पुलिसका अफसरहूं मैंसूटर साहबके साथइस मुकद्दमे कीतहक़ीकातके वास्तेआयाथा मैंनेयह पेटी २५ दिसम्बरको देखीथी मुझकोउसमें एकपुड़िया मिली और प्रथममें रावजी सेमैने पूछाथाकिजो पुड़िया गायकवारके पाससेलायेथेउन-को कहांरक्खा करतेथे उसनेमुझसे कहाकिमैं पेटीकोजेब में रक्खाकरताथा मैंने उससे पूछाकि तुम्हारापट्टा कहांहैउसने कहाकि भोदर के पास है उस समय हमचार मनुष्य मौजूद थेखानबहादुर अब्दुलअली रावबहादुर गजा नन्द वतिल और रावजी और जिसस्थान पर मिस्टर सूटर साहब ठहरा करते हैंहम भी उसी जगह अर्थात् रेजीडन्सी के बंगले में ठहरा करते थे जब रावजी का पट्टा भोदर से मंगवाया भोदर उसकोलेकर आयाऔर उसनेअपने गलेसे उतारकर मुझको दियासरजण्ट बेलनटायनसाहबने कहाकि मैनेनहीं देखाकि यहलोग क्योंकर पट्टापहिनतेहैं यदिगवाहपहिनकर दिखाये तोदेखूं सोगवाहने पट्टापहिन करदिखाया और बयानकिया किपट्टेवालेइस प्रकारसे पहिनतेहैंजबमैने भोदरसे पट्टामांगा उसने मुझको उतार कर इस भांति दिया मैंने उसको इधर उधरदेखाऔर एक मुकाम पर उसको रावजीने कहा कि मैं पुडियोंको उसी जेबमें रक्खाकरताथा जब हरएक जगह पर देखातो मेरी अंगुली एक जगह परचलीगई टटोलनेसे कोई कठोरसीवस्तु मालूम हुईउस समय मैनेमिस्टर सूटरसाहबको

बुलाया उस पट्टे की एकजेबमें एक मैला कपड़ाथा भोदरने उसकोअपना कपड़ा बताया और एकजेबमें थोड़ासूत थाजब मिस्टरसूटरसाहब आयेउनके सम्मुखपुड़िया निकालीगई इस पुड़िया में आटे की भांति कोई सफैद वस्तु थी मिस्टरसूटर साहबने उसको खोल करदेखा औरवह अपने साथ लेगये॥

सरजन् बेलन टायन साहबके प्रश्न॥

प्र०—तुमअंगरेजी बोलसक्तेहो?उ०—मैंनहीं बोलसक्ता क्योंकिमैं अंगरेजी नहींजानता। प्र०—सौगन्द खाकर वर्णन करतेहोकि तुमकभी अंगरेजी नहींबोलते? उ०—जबकिअंगरेजीभाषा नहींजानतातो किसतरहबोलसक्ताहूं साहबअंजी उन्ने कहासीधासाधा जवाबदो कितुमअंगरेजी बिल्कुल् नहीं बोलसक्ते? उ०-नहीं मैं कुछभीअंगरेजी नहीं बोलसक्ता हूं। प्र०—सरजन्ट बेलनटायन साहब (पेटी उठा कर) बोले इसी पाकिट में तुम कहते होकि पुड़िया मिली थी? उ०—हां। प्र०—जबतुम्हारे पासअव्वल पेटीआई थीतो कहतेहो कियह जेबफटी हुई नथी? उ०—नहीं। प्र०—दिखाओ कि यहजेब तुमनेकहांसे फाड़ीथी? उ०—गवाहने पेटी को उठाकर दिखायाकि उसजगहसे परन्तु यह नहीं कहसक्ता कि कितनी फाड़ीथी। प्र०—मैं यह बातपूछता हूं कि तुमनेजेब कोकिस लियेकाटा था? उ०—मैने देखाथा किकोई कठोर वस्तुरक्खी है मैंदेखना चाहताथा कि इसमेंक्या वस्तुहै। प्र०—परन्तुतुम कहतेहो कि मैने सूटरसाहबको बुलालिया था? उ०—हां वादेखने जेबके। प्र०—परन्तुजब तुमने देखा कि जेब में एक पुड़ियाहै तो मिस्टरसूटरसाहबके बुलाने की क्या आवश्यकता थी और पेटीके फाड़नेके पीछे सूटरसाहब को तुमने क्यों नहीं बुलाया? उ०—मुझको भलीभांति पुड़िया के होनेका निश्चय नथा। प्र०—परन्तु तुमजानते थेकि कोई वस्तुहै क्योंकि उसमुक़ाम पर तुम्हारी उंगलियां थी? उ०—हां जानता था कि कोईकठोर वस्तु है परन्तु पुड़िया के होने का विश्वास न था

प्र०-जबतुमने जेबफाड़कर पुड़ियाकोनिकाला थातो उसवक्त भी तुम्हारी जानकारी वैसीही थी जैसी कि पहिलेथी? उ० नहीं उससमय मालूमहोगया था किपुड़ियाहै पहिलेके निस्बत मेरी जानकारी बढ़गईथी। प्र०—सूटर साहब के बुलाने कीक्या आवश्यकता थी जोबुलाना मंजूरथा तोपहिले भलीभांतिमालूम करलेनाचाहिये था? उ०—मैने सूटरसाहबको केवलइस प्रयोजनसे बुलायाथाताकि उसको देखेंकि कोईदवाहै वाक्याबस्तुहै। प्र०—क्यायहबात तुमनहीं जानतेथे कि मिस्टर सूटरसाहब बखूबीनिश्चय करलेंगे और तुम्हारे बयानपर उनकोकुछ शक नहोगा? उ०—रावजीने मुझसेपहिले कहदिया था। प्र०—हां मैंजानताहूं किरावजीने तुमसेकहदिया था परन्तुयह पूछताहूं किजबतुमने पेटीकोफाड़डाला औरतुम्हारी उंगलियां उसजगहथीं जहांसे किपुड़ियानिकलीतो फिरक्या वजहथी कितुमने पुड़िया न निकाली और मिस्टरसूटरसाहब के आनेका इन्तिजारकिया? उ०—रावजीने मुझसेकहाथा किउनपुड़ियों मेंसे जोमुझेमिलीथीं किसीकदर दवाबाकीहै। प्र०—मेरेप्रश्नका उत्तरदीजिये कितुमने मिस्टरसूटरसाहबको पुड़ियानिकालने के पहिले किसवास्ते बुलाया? उ०—हां मैनेपुड़िया नहींनिकाली बल्कि मिस्टरसूटरसाहबके आनेका इन्तिजारकिया। प्र०—शायद आपकोयहगर्जहै किजब तुमने उसपुड़ियाको टटोला तोरावजीनेतुमसेकुछकहा? उ०—नहीं जबमैने पुड़ियाको टटोलातो मैं और रावजी एकहीजगहबैठे थे। प्र०-उससमय तुमने मिस्टरसूटरसाहबकोबुलाया? उ०-हां प्र०—अबतक तुमनेमेरे प्रश्नकाउत्तर नहींदिया अर्थात् तुमने सूटरसाहबको क्योंबुलायाथा? उ०—इस वास्तेबुलायाथा कि वह अपने हाथ से जेबको खोलें। प्र०—क्या यह मुतलब था किजब पुड़ियानिकले मिस्टरसूटरसाहब मौजूदहों? उ-हां प्र०—तुम्हारीयह गर्जथीकि जिसवक्त पुड़िया निकले तो कोई मनुष्य गवाहकीतौपरमौजूदहो? उ०—हां चूंकि हमारा व

ड़ाअफ्सर वहांमौजूदथा इसलिये मैने उनकोबुलालिया अगर नहोतेतोकुछआवश्यकतानथी। प्र०-पसतुम्हारीयहीगरज थी और गवाहहोनेकी किसीकी जरूरत नथी ? उ०-यदिसुझकेा गवाहकी आवश्यकता होतीतेा तीनमनुष्य उससमयमैाजूदथे। प्र०—वहकौन २ मनुष्य थे ? उ०—रावजी। प्र०—परन्तुतुम जानतेहेाकि रावजी मुझसिवा गवाह नथा ? उ०—खानबहादुर अब्दुल्अली रावबहादुर गजानन्दवतिल और मैंखुदथा। प्र०—तुमकेापुड़िया मिलनेका कुछखयाल नथा ? उ०—नहीं मुझकेा केवल इतनाही खयालथा कि इस पेटीसे और कुछपतालगे। प्र०—जबतुमकेा पुड़ियामिली होगी तेाबड़ाआश्चर्य हुवाहेागा ? उ०—हांजब रावजीने उसका होना पेटीमें बयानकिया था। प्र०—रावजीने उसवक्त जबकि तुमकेा पुड़ियामिली कुछबयान नहींकिया? उ०—मुझे उससमयतक पुड़ियामें किसीचीजके होनेका खयाल नथा। प्र०-तुमकेाकुछ भीखयाल था कि इसपेटीमें कागजकी पुड़ियामिलेगी ? उ० मुझकेाकुछसन्देह नथा परन्तुपेटीमें केाई कठोरवस्तु विदित हुईथी। प्र०-जेबके फाड़नेबिना तुमकेामालूमहेागया कि जेबमें कागजकी पुड़ियाहै?उ०-उससमयतकमुझकेामालूम नहींहेाताथा कियहकागजकेापुड़ियाहै। प्र०-बहुतसे मनुष्य कहतेहैं कि तुमबड़ेचतुरहेा क्यातुमकेा मालूमनहींहेाताथा किकागज कीपुड़ियाहै वानहीं?उ०-जबमैने जेबमेंसख्तचीज देखीतेा मुझकेानहींमालूमहेाताथा किउसमेंक्यावस्तुहै। प्र०क्या तुमयहभी नहींजानतेथे कियहकागजहै ? उ०-मुझकेाकागजसामालूम हुआथा। प्र०—क्यातुमकेा यह मालूमनहीं होसक्ता था कि किसीवस्तु पर कागज लिपटा है ? उ०-नहींयह नहींमालूम होताथा कि कागजमेंकेाईवस्तु बन्दहै। प्र०—क्या तुमइतनाही उसवक्त जानतेथे कि केवलकागज का टुकड़ा है ?उ०—मुझकेामालूम नहीं हुआकि केवलकागज है या कागजकिसी वस्तु पर लिपटाहुवाहै। प्र०—याकेाई पुड़िया समझी इस वास्ते तुम

ने मालूमकरने के लिये जेबको फाड़डाला ? उ०—हां। प्र० तुमनेजेबके फाड़नेके पश्चात् रावजी को बुलाया ? उ०—हांजब रावजी वर्णन करचुका था। प्र०—लेकिन देखोतुमने जेबको फाड़ा और पुड़ियानिकाली क्यातुम्हारी यहगरजहै किरावजीने उसवक्त तुमसे कुछबयान कियाथा ? उ०—हां उसवक्त बयानकिया था। प्र०—रावजीने उसवक्त तुमसे क्याकहाथा ? उ०—रावजीने मुझसेकहा कि उनपुड़ियोंमेंसे जो मुझकोमिली थीं कुछ दवा बाक़ी रहगई थी यह दवाभी उसी मेंसेहै। प्र० सूटरसाहबके आनेकेपहिले तुमनेपूछलियाथा कि इसपुड़िया मेंक्याहै ? उ०—हां जोनपूछता तो किस्तरहजेबको फाड़ता। प्र०—यदि तुमरावजी से नसुनते तो जेबको नफाड़ते परन्तु मैं जानताहूं कितुमने मिस्टरसूटर साहबको इसवास्ते बुलायाथा ताकिवहदेखें और दर्याफ्तकरें कि इसजेबमें क्या वस्तु है या तुमखुदरावजीके बयानसे जानतेथे ?उ०—हां। प्र० तुमको रावजीकी बातपरइतना निश्चयथाकि बगैर पुड़ियाके निकाले सूटर साहबको बुलायाकि वहखुद आकरदेखेंकि जेबमें क्याहै ? उ० हां मैनेजेबको नहींफाड़ा क्योंकिहमारे साहबनिकट थे। प्र० अब बताओ कि रावजीने तुमसेकहा था कि मैने एकपुड़िया अपनी पेटीमें छोड़दी है या तुमने अपनीकेवल बुद्धिसेमालूम कियाथा ? उ०—रावजी ने केवल इतनाही कहा था कि मैं जेबमें पुड़िया रक्खा करताथा गवाहने रुककर फिरकहा कि मैने रावजीसे पूछाथा कि तुम्हारीपेटी में जेबहै वानहीं। प्र० तुमनेरावजी से यह बातकभी नहीं कही कि मैने कुछ हिस्सा विषका रहनेदिया है और एक पुड़िया विषकी पेटी में है ? उ०—यह बात उसने मुझसे नहीं कही। प्र०—रावजी तुम्हारी हिरासतमें कबआया ? उ०—२२ तारीखको आया था। प्र० रावजी को तुम्हारे निकट किसनेभेजा था ? उ०—मैने आपही उसको बुलाया था मैंने खानबहादुर अब्दुल अली, और राव बहादुर, गजानन्द पतिल, को भेजाथा। प्र०—उसको कौनला-

या ? उ०—एकसिपाही लायाथा ? प्र०—क्या उसने पहिलीमें ही विषदेनेका इकबालकिया ? उ०—पहिलीबेर उसने इकबाल नहीं किया। प्र०—मैं ऐसाही खयाल करता हूं ? उ० खान बहादुर अब्दुलअली और गजानन्द वतिलसे उसनेकुछ कहाथा। प्र-०उसरोजके आनेके पहिले तुम्हारेपास कितनी देरवह हिरासत में रहा ? उ०—भोरके आठ बाजेसे संध्याके सातबजे पर्य्यन्त। प्र०—वहतुम्हारीरक्षा मेंरहा ? उ०—नहीं। प्र०—तुमने उस क़ीमती चीजको कहां छिपाया था ? उ०—जहां और मौकूफ़ नये नौकर थे। प्र०—वहकहां थे ? उ०—रखीलदासोंके बागमें अहातेके भीतर रहते थे।प्र०—जब वह तुम्हारे निकटआया तो उसने विषदेने का इकबालकिया ? उ०—हां। प्र०—यही बात ठीक है और कुलबातों की कीइब्तिदा तुमसेहै औरतुमको भीइसबातकी इत्तिलान थी ? उ०—रखीलदासोंके नौकर परस्परझगड़ा करतेथे उनकेझगड़ने में यहबात मालूमहुई। प्र०—मेरेप्रश्न का यहउत्तर नहीं मैं यहपूछताहूं कि तुमकोइसबातकी पहिलेसेखबरथीया नहीं ? उ०—उसने मेरे रूबरूअपने आप इक़रारकिया। प्र०—उसके इक़रारकरनेके पहिले तुमनेकोईबात किसीसे ऐसी नहींसुनी थी जिससे वह अपराधी होता मिस्टर अकबरअली सावधान होकरबयान करो ? उ०—नहीं मैंने कोईबात ऐसी नहींसुनी थी केवल इतनाही सुनाया कि वह रुपया खूब उड़ा रहाहै। प्र०—तुम सौगन्द खासक्तेहो कि तुमने कुछ नहीं सुनाथा ? उ०—किसबात कीकसम खाऊं। प्र०—इस बातकी कि वहभी विषदेनेमें शरीक है ? उ०—मैंने किसीसेनहीं सुनाथा किवह विषदेनेमें संयुक्त है। प्र०—तुमने किसीसे यहभी नहीं सुना था कि उसको विषकी पुड़ियांमिली थीं ? उ०—नहीं। प्र० एकबात भी तुमनेनहीं सुनी ? उ०—नहीं। प्र०—तुमने यहभी नहीं सुनाथा कि उसको विषकी पुड़ियां मिलीं जबकि उसने तुमसे बयान किया अर्थात् उस जगह जहां वह हिरासत

मेंथा ? उ०—जब उसनेमुझसे बयानकिया तोमैं उसकेनिकट गयाथा इससेपहिले नहींगया। प्र०—इसके उपरान्तभी वह और नौकरोंके साथक़ैदरहा ? उ०—नहीं दूसरेकमरेमें क़ैद रहा। प्र०—तुम कहतेहो कि उसने २२ तारीख़ को बयान किया ? उ०—हां। प्र०—तुम सौगन्द खासक्ते हो जिसरोज़से कि उसने विषदेनेका इक़रारकिया और वहनौकरोंसे अलग रक्खागया ? उ०—२२-तारीख़ से २८ तारीख़तक वह मेरे चार्जमेंथा। प्र०—मैंने तुमसे यहप्रश्न नहींकिया क्यातुमसौगन्दखासक्ते हो२८-तारीख़के पीछेयहशख़्स और और रजीडन्सी केनौकरोंसे अलगरक्खागया और सबसेअलगरहा ? उ०—हां वहफिर अपने घरको नहीं गया। प्र०—मिस्टर अकबरअली मैंने कभी पहिले हिन्दुस्तानी पुलिस के आदमियों से प्रश्न नहींकिये हैं इङ्गिस्तानमें बहुधा इत्तिफाक हुआहै मेरे प्रश्न का उत्तर दो क्या तुम कसम खासक्ते हो कि २२-तारीख़के पीछे जब उसने तुम्हारे सम्मुख इज़हार दिये थे उससमयसे रजीडन्सीके और नौकरों के पास नहीं गया यहप्रश्न स्पष्टहै इसका उत्तरदो ? उ०—यहमनुष्य रजीडन्सीके और नौकरों के निकट नहींगया किन्तु वहमेरे चार्ज में था। प्र०—तुम सौगन्ध खासक्ते होकि उसदिन उससेऔर दूसरे किसीरेजीडन्सीके नौकरसे बातें नहीं हुईं ? उ०—मैंनहींकह सक्ताकि उससे किसीकी बातेंहुईं यानहीं परन्तुमेरी आज्ञासे उसपर सिपाहियोंका पहिरानियत कियागयाथा। प्र०—शायद इस सूरतमें और नौकरोंसे बातेंकीहों ? उ०—मैंनहीं जानतामैं क्योंकरकहूं। प्र०—शायद उसनेकीहों ? उ०—मुझको ऐसे खयालकरने कीकोई वजहनहीं है। प्र०—हमकोऐसे खयाल करनेकी कोईवजह नहीं है कि उसनेबातें कीहों ? उ०—मेरी आज्ञाथी कियहशख़्स किसीसे बार्त्ताकरने नपाये। प्र०—तुम सौगन्द खासक्ते हो कि तुमने ऐसीआज्ञादीथी कियह किसी से बार्त्तान करनेपावें ? उ०—हांमैंने आज्ञादीथी कियहकैदी

किसीसेबातें नकरे परन्तुवहां गवाहरका और कहा कि एक बातहुईथी। प्र०—वहक्या बातथी? उ०—इसमनुष्य से और जमादारसे मुकाबिला कराया गया। प्र०—किसने इस मनुष्य को लाकरसामना कराया? उ०—मैंने और रावबहादुर गजानन्दवतिल और खानबहादुर अब्दुलअलीनेएकसिपाही को आज्ञादीथी किरावजीको लेआओ। प्र०—जमादारसे उस समयक्याकहाया? उ०—उससमय वहअब्दुलअली और गजानन्दवतिल मेरेपास उपस्थितथे। प्र०—जबसिपाही रावजीको लाया तोतुमने जमादारका मुकाबिलाकराया वह मुकाबिला किसतरह कराया था मैं सुनाचाहता हूं? उ०—रावबहादुर गजानन्दवतिल और खानबहादुर अब्दुलअली ने जमादारसे कहा कि रावजीने संबबातोंका इकबालकिया इसवास्ते मैंने रावजीको बुलायाहै। प्र०—तुमने जमादारसे प्रथम यहकहा कि तुमलोगोंसे रावजीने इकबाल करलियाहै? उ०—हां। प्र०—परन्तु यहभी तुमनेउससे कहाथा कि क्याकबूल कियाहै? उ०—नहीं। प्र०—उससमय तुमने रावजीको बुलाया? उ०—रावबहादुरगजानन्दवतिल औरखानबहादुर और अब्दुलअलीने कहाथा कि अगरतुमकहोतो रावजीको बुलायाजाय जमादारने कहा कि अगर चाहो बुलालो। प्र०—उससमय रावजीको तुमनेबुलवाया? उ०—हां। प्र०—रावजी अपनेमकानपरमिलाथा? उ०—अपनेमकान परनहीं किन्तुजहांहमारे आदमीथे। प्र०—उसको तुम्हारेनिकट लाये? उ०—हांलाये। प्र०—जबउनदोनों का सामनाहुआ तो क्यावार्त्ताहुई? उ० रावजीने कहाकि ऐबाबामैंने गलेगलेपानीमें कबूल करलिया प्र०—उसके पीछे जमादारने भी कबूलकिया? उ०—हांउस समय उसनेकहा कि अबठीक २ हालतुमको बतादूंगा? प्र० क्याउसने उससंध्याको सबबातोंका इक़बालकिया? उ०—मुझ से नहींकहा। प्र०—किसमनुष्य से इकबालकिया? उ०—मैंने उससेकहा कि मेरेसम्मुख तुमकुछ बयानमतकरो साहबकेपास

चलो। प्र०—उसने कोईबात भी तुमसेकहीथी ? उ०—नहीं। प्र०—मुझको बताओ कि तुम्हारी हिरासतमें इसजुर्म्म केमद्दे कितने मनुष्य क़ैद हैं ? उ०—मेरेपास गवाह हैं क़ैदी नहीं हैं। प्र० अर्थात् तुम्हारेनिकट ऐसेगवाह हैं कि उनको कभी आनेजाने नहींदेतेहो ? उ०—हांऐसेही गवाह हैं कि वह कहींचलेन जायें ताकि उनके मिलनेमें दिक्कतन हो। प्र०—वह कितनेहैं अर्थात् कितनेगवाह और कितनेक़ैदी हैं ? उ०—मेरेनिकट कोई क़ैदी नहीं है। प्र०—कितनेगवाह हैं ? उ०—बीस या बाईसहोंगे उनके नामकी मेरेपास फेहरिस्तहै आपदेखेंगे। प्र०—मैंदेखना नहीं चाहता क्या तुम एकमनुष्यको जानतेहो जिसकानाम नूरुद्दीन बोहरा है ? उ०—हां। प्र०—नसीरुद्दीन बोहराको जानतेहो ? उ०—हां। प्र०—यहदोनों क़ैदहैं ? उ०—मेरेपास क़ैदनहीं हैं वह जेलखानेमें क़ैदहै। प्र०—क्यादोनों जेलखाने में हैं ? उ० हां। प्र०—तुम्हारे चार्जमेंहैं ? उ०—मेरेचार्जमें क्योंकर होसक्तेहैं वहजेलखानेमें हैं। प्र०—कभी तुम्हारे चार्जमें वह थे ? उ०—वह खानबहादुर अब्दुलअली और राव बहादुर गजानन्द-वतिलके चार्जमेंथे। प्र०—उनकोहिरासतमें कानलायाथा ? उ०—जिनदो आदमियोंका नाम मैने अभीलिया। प्र०—क्या वह लोगभी और गवाहोंके साथ रहतेथे ? उ०—हां परन्तु दूसरी कोठड़ी मेंथे। प्र०—यहलोग जेलखानेमें कबगयेथे ? उ०—खान बहादुर अब्दुलअली जानते हैं आपसेबयान करेंगे उनकीयादद्दाश्तमें तारीख़ आदिलिखीहैं। प्र०—लेकिनमुझसे तुमकहो कि वहलोग कबजेलखानेमें गयेथे ? उ०—१५ या बीसदिनहुये। प्र०—वहलोग कबतक गवाहोंके साथजेलखाने मेंरहे ? उ०—वहलोग गवाहोंसे अलग रहतेथे। प्र०—कितने दिनतक वह जेलखाने मेंरहे ? उ०—खानबहादुर अब्दुलअली दोनोंकी संख्या जानतेहैं। प्र०—कभीसाहब मजिस्ट्रेटके रूबरू वहगयेथे ? उ०—मैंनहीं जानता। प्र०—तुम जानते हो कि मिस्टरसूटर साहब या और किसी हाकिमके सम्मुखगयेथे ?

उ०—मेरे रूबरू कभी नहीं गये। प्र०—तुमने कभी सुनाथा कि वहगयेथे? उ०—जो मैं सुनता तो आपसे वर्णन करता। प्र० उनकीगवाही लेनेकी आजमाइश करतेथे और जबवह कुछ बयान नहीं करतेथे तो उनको फिरतुम जेलखानेमें भेजदिया करतेथे? उ०—उनकी शहादतका हाल रावबहादुर गजानन्दवतिल को मालूम होगा। प्र०—मिस्टर अक्बरअली क्या आप भलेप्रकार नहींजानते कि इनलोगों के रूबरू कोशिश कीगई और हालपूछागया औरपूछते २ थकगयेतोआपनेउनको जेलखानेमें भेजदिया? उ०—मुझको याद करनेदीजिये (गवाह चुपहुवाऔर ग़ौरकरनेलगा) प्र०—आपको स्मर्ण होगा उ०—दामोदरपन्थने नूरुद्दीनके पिताका नाम लियाथा। प्र० मैं दामोदरपन्थका सब हाल जानताहूं परन्तु आपसे पूछता हूंकि क्याआपके चार्जमें गवाहथे और जबआपकोउनगवाहों से कुछहालमालूमनहुवा तो आपने उनको जेलखानेभेजदिया उ०—हां मुझको याद आया जेलखाने में उनके भेजनेका यह कारणथा कि संखियेके सुपुर्द मेका उनसे कुछ तअल्लुकथा। प्र०—आपको याद आगया? उ०—दामोदरपन्थने कहाथाकि मैने एकबैराहरोंकीदूकानसेविषमोल लियाथा। प्र०-दामोदर पन्थके बयानपर इनदोनों शख्सोंके इजहार लियेगयेथे? उ० मैनेबैराहरोंके इजहार लियेथे। प्र०—मैंपूछताहूं कि पुलिसने उनकेइजहार लियेथे?उ०—हांलियेथे। प्र०—क्या वहतुम्हारीहिरासतमेंथे? उ०—हांपरन्तु दूसरेखेमेमें उसपर सरजन्ट बेलनटायनसाहबनेकहा कि दूसरीक्यावस्तु-सुतरज्जिम नेउच्च शब्दसे कहा किखेमा—सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा कि क्रोध मतकरो-सुतरज्जिमनेकहा मैंतो स्पष्टरीतिसे कहता हूं परन्तु आपनहीं सुनतेहैं क्रोधनहीं करताहूं। प्र०—क्यातुमने कोशिशकी किदामोदरपन्थके इजहारकी तसदीक़होे? उ० यहबड़ा मुआमलाहैइसकीतहक़ीक़ात अबहोगी। प्र०—आप मेहरबानी करके इसबातको यादरक्खें कि बड़ामुआमला अब

दरपेशहै और उसकीतहक़ीक़ातहोरहीहै मेरेप्रश्नका उत्तर दो? उ०—यहएकबातहैवह दूसरीबातथी। प्र०—मिस्टरअकबरअली मेरेप्रश्नका उत्तर दो कि कभी कोशिश की गईथी कि यहदोनोंशख़्स दामोदरपन्तके इज़हारकी सिदाक़त करें? उ० हांजरूरथी और होरहीहै। (इस परसमाजमें हंसी उड़ी) प्र० अर्थात् तुम्हारायहमतलबहै कि वहजेलखाने भेजदियेगये? उ० हां इज़हार उनकेलियेजांयगे॥

ऐडवकेट जनरल के प्रश्न॥

प्र०—तुमकहतेहोकि तुमनेपेटीको फाड़डाला था? उ०—हां प्र०—इससेपहिलेवह सिलीजुईथी? उ०—हांसिली जुई थी। प्र० तुमनेउसकी सिलाई खोल डाली? उ०—हां। प्र०—तुम कहतेहोकिजब तुमनेपुड़ियापाईतो मिस्टरसूटरसाहब करीब थे बतलाओ कि किस जगह थे? उ०—वहां से दसकदम पर थे। प्र०—किसी कमरे में या और किसी स्थान पर? उ० दूसरे कमरेमेथे चिलमन बीच में पड़ी जुई थी। प्र०—रेजी डन्सीके मकानमें? उ०—मिस्टर सूटरसाहबने मुझसे कहाथा कि तुमठहरो वहहाथ धोने के वास्तेगये थे। प्र०—जब तुमने सूटरसाहबको बुलाया तो वहशीघ्रही आयेथे? उ०—हां जल्दी आ गये थे। प्र०—पेटी का तज़करह प्रथम तुमने रावजी से किया था वा रावजीने तुमसेकहा? उ०—मैनेपहिले रावजी से कहाथा। प्र०—तुमने प्रथम रावजीसे कब तज़करह किया उ०—जबरावजी ने मुझसे कहा कि मेरा वह नियम था कि विषकी पुड़ियांपट्टे के जेबमेंरक्खा करता था उस समय कहा था। प्र०—क्या तुमनेउसी समय उस पट्टे को मंगाया? उ० हां। प्र०—भोदरके आनेकेपहिले यहपट्टा कभी तुम्हारेक़ब्ज़े में रहाथा? उ०—मैने उस पट्टे को देखा नहीं था और न भोदरसे कभी भेंटजुई थी। प्र०—जबतुमने पट्टेमें वह पुड़िया पाई तो तुमनेसूटर साहबको बुलाना उचित समझा? उ० हां क्योंकिवह बड़े अफ़सर हैं। प्र०-तुम कहते हो रावजी मेरे

निटक्र २२ तारीखको आयाथा ? उ०—हां। प्र०—वहकिस समय तुम्हारेनिकट आया था ? उ०—सुबह के ८ बजे या ९ बजे मेरेपास आयाथा। प्र०—जबवह तुम्हारेनिकट आयाथा तुमनेउससे कुछ प्रश्नकियेथे ? उ०—हां। प्र०—क्याइसी वास्ते रावजीको तुमने बुलायाथा ? उ०—हां। प्र०—तुमने रावजी को किसलिये बुलायाथाबयानकरो ? उ०—मुझको और साहब को उसपर बड़ासंदेह था। प्र०—किस सबब से तुमको उसपर संदेहथा ? उ०—मुझकोचारों ओरसे खबरमिली किरावजी ने बहुतसा रुपया खर्चकिया और अन्तकी बेर उस कमरे में जहां कि गर्वतरक्खाथा यही मनुष्यआया था। प्र०—तुमकहते हो कि सुबहकेवक्त तुमनेउससे कुछप्रश्नकिये थे परउसने कुछ उत्तरनहीं दिया ? उ०—उसवक्त नहींदिया। प्र०—तुमनेप्रात: कालसे संध्यापर्य्यन्त फिरभीकभी देखाथा ? उ०—हां। प्र० तुमने उससेवार्त्ताकी थी ? उ०—नहींवार्त्ता करनेका समयनथा प्र०—उसदिन नरसू पकड़ा नहींगया ? उ०—नहीं उस दिन वहकामपर था। प्र०—किसकार्य्यपर ? उ०—बंगलेकी जमा-दारीपर। प्र०—क्यानरसू रावजीके साथ और नौकरों समेत हिरासतमें था ? उ०—नरसू मेरी हिरासत में न था। प्र० क्यावह उननौकरों के साथथा जो हिरासतमें थे ? उ०—नहीं प्र०—२२तारीखको कौन२मनुष्य तुम्हारीहिरासतमें था ? उ० मेरीहिरासत में कोई मनुष्यनथा केवल तहकीकातके लियेमेरे पास लोगआये थे। प्र०—बहरसूरत वहलोग आपके पासथे ? उ०—फौज और जुग्गाजहां क़ैदथे उसजगहसे मेरेपास आये थे। प्र०—और कौनमनुष्य आयाथा ? उ०—रामाबरीक जिस-को करनैलफियर साहबने क़ैदकियाथा। प्र०—तुमकहते हो कि रावजी तुम्हारी हिरासतमें २२ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक रहा ? उ०—हां प्र०—सिवाय उस दिनके जब कि तुमने रावजी और नरसूकामुकाबिला करायाथा औरभी उनदोनों में कभीवार्त्ता हुई उ०—बातोंके करनेकी आज्ञा थी केवल

२४तारीख़ को उनमेंबातें हुई थीं। प्र०—रावजीनेसिवायइस बातकेकि बाबामैनेगलेगले पानीमें कबूलकरदिया है और भी कुछ जमादार से कहाथा उ०—नहीं। प्र०—या किसी और मनुष्यने भी जमादारसे कहदियाथा कि रावजीनेक्याकहा? उ०-नहीं। प्र०-२२दिसम्बरसे किसमुकामपरबड़ौदेमें कैदथा? उ०—जहांहमलोगरहतेहैं। प्र०--वहस्थानकहांहै? उ०—उस मैदानमेंहमरहतेथे जोरेजीडन्सी केनिकटहै। प्र०—रेजीडन्सी केअहातेमें?उ०—नहींअहाते केनिकट। प्र०—तुमनेउसकोकिस तरहरक्खा? उ०-थोड़ेदिनतकअखोरगवाहकेसाथ और चन्द-रोजतक अलगरक्खा एक२ पुलिसके सिपाही के पासकई २ गवाहथे। प्र०—फिरवहांसे तुमलोग कहांगये?उ०—करनैल बिढ़नस हबके बंगलेकेपीछेगये।प्र०—तुमयहांसेकबगयेथे?उ० सुदीमकीदूसरीया तीसरीतारीख़को। प्र०—उसमयसेराव जी तुम्हारे निकटहै? उ०—हां। प्र०-नरसूकहां रहा?उ० हिन्दुस्तानी पलटनके गार्डमें और थोड़े दिनगोरों के पहिरे मेंरहा। प्र०—उसकोकिस स्थानपररक्खाथा?उ०—जिसस्थान पररेजीडन्सीमें गोरोंका पहिरारहताहै। प्र०—नरसू तुम्हारे चार्जमें कभीरहा? उ०—नहींदूजहार देनेके लिये वह मेरे निकट आयाकरताथा। प्र०—तुम्हारे चार्जमें कभीनहींरहा? उ०—नहीं। प्र०—अबतुमको इससुआमलेसे तअल्लुक़ नहीं है जिसमें तीनबीहरहिरासतमेंहैं?उ०—तअल्लुकहैगजानन्दवति-लकको। प्र०—जबरावजीने जमादारकेरूबरू इकबाल कियाकि ऐबाबा मैनेगलेगले पानीमें कबूलकिया उससमय जमादारने कुछकहाथा? उ०—उससमय कुछ नहीं कहा जब रावजी चलागया उससमय कहाथा। प्र०—उसने रावजी से कुछभी कहाथा?उ०—नहीं प्र०—सरदिनकर रावनेकहाइससुआमलेमें तहक़ीक़ात करनेकाकौनमनुष्यअधिकारीथामिस्टर सूटरसा-हबयातुम? उ०-मिस्टरसूटरसाहबने मुझको इख़तियारदिया था। प्र०—जबतुमको तहकीकात करने का इख़तियार दिया

थातोतुमने साहबके आनेसे पहिलेपेटीको क्योंफाड़ा ? उ० क्योंकि मैंनहीं जानताथाकि उसमें पुड़िया है यानहींइसके उपरान्त कमीशनके अधिष्ठाता टिफनखाने के वास्ते उठ गये टिफनसे लौटने के पीछे इज़हार सन्तराम भिखारी राम के लिये गये ॥

इज़हार सन्तराम भिखारीराम ॥

इस मनुष्यके इज़हारऐडवकेटजनरलने लिये उसने वर्णन कियाकिमैं गायकवारकानौकर हूं बम्बईऔर बड़ौदाऔरसूरत मेंजोगायकवारकी दूकानेहैं उनकामैंअफसर हूं उनका हिसाब मेरे निकट रहता है मैं गायकवार के महल में रहता था और बड़ौदा महाराजा साहब को देखा करता थामैं यशवन्त रावको जानता हूं वह मलहरराव के निकट जासूसके तौर पर नौकरहै मैं सालिमको भी जानता हूं वह भी महाराजा साहबका नौकरहै कभी महाराजासाहब के साथ यहलोग रहतेथे और कभीनहीं और मैंएक और मनुष्यकोभी जानताहूं जिस का नाम दामोदर चिम्बक उर्फदामोदर पन्थ है यहमनुष्य गायकवारका निजकानौकरहै वहसिपाहियों और कारकुनोंको तनखाह बांटाकरता था मुझेस्मरण है कि एकबेर श्री महाराज ने मुझको एक काग़ज़के पढ़नेके वास्ते बुलाया था वहछोटी चिट्ठीथी जिसस्थानपर श्रीमहाराजासाहब बैठे हुयेथे बेंचपर यहचिट्ठी पड़ीहुईथी जोलोग महाराजासाहब के निकट खड़ेहुयेथे उनमें से एकने मुझसे कहाकि तुमइस चिट्ठीकोपढ़ो सोमैंने उसको बड़े शब्दसेपढ़ा जिसप्रकारमैं इस समय बोलरहा हूं, चिट्ठीके पढ़ने के उपरान्त श्रीमहाराजा साहबने कहा कि यह चिट्ठी दामोदरपंथको देदेनासोदूसरे दिन मैंनेचिट्ठी देदीमुझको मालुम नहीं वह चिट्ठी कहांगई यहचिट्ठी गुजराती भाषमें लिखी हुईथी जितना कि मुझको उसका मतलबयाद है वर्णन करताहूं उसचिट्ठीमें न तारीख़ थी न किसीके दस्तखत थे उसमें लिखाथा कि भावपूनाकर

और नव्वाब साहबका कारकुन बार्त्ताकरतेहैंमें गायकवारके मन्दिरमें नजरबागहोकर जायाकरताथा। प्र०—क्या इसमार्ग से निजकेलोग जायाकरते थे ? उ०—बाबाखानेपर यहकचहरीहै। प्र०—मेरे प्रश्नका उत्तरदो ? उ०—हां सबलोग इस मार्गसे जाते थे ॥

मिस्टर ब्रैन्सनसाहब के प्रश्न ॥

प्र०—उसकचहरी का हालवर्णन करो ? उ०—इसमहल के नीचे गोकेठड़ियांहैं उनमें मालरहताहै और उसकेऊपर दूसरी मंज़िलपर नजसाहब की कचहरी है। प्र०—क्या तुम हिरासतमें हो ? उ०—हां। प्र०—इसी अपराधपर कि तुमने महाराजासाहब की चिट्ठीको पढ़ा ?उ०—हां। प्र०—१३—१४ जनवरीसे हिरासतमें हो ? उ०—मुझेस्मर्ण नहीं फिर कहा कि पौषशुदीषष्ठीसे हिरासतमें हूं ॥

ऐडवकेटजनरलने इसगवाहके दुवारह इज़हार लिये ॥

प्र०—दूसरी मंज़िलसे जो ऊपरकामकानहै उनमें कुछभी मालरहता है ? उ०—नहीं वह खालीरहता है। प्र०—उस महलमें तीसरीमंज़िलभी है ? उ०—हांतीन याचार मंज़िल हैं। प्र०—तुम जानतेहो कितीसरी मंज़िलपर किस तरफ से जातेहैं ? उ०—एकछोटे कमरेमेंहोकर उसकीसीढ़ी है। प्र० उसमें चौथादरजाभी है ? उ०—हांहोगा मैंने नहींदेखा। प्र० इस चौथेदरजेपर कोईजीनाहै उ०—कोई सीढ़ीनहीं हैलोग उसपरआयाजायाकरतेहैं। प्र०—उनदरजों परकभी तुमगये हो ? उ०—हां। प्र०—तुमकहतेहो किमैं अब हिरासतमेंहूं तुम किसस्थान पर रहाकरते थे ? उ०—जोगली छापे दरवाजे के निकट है मैं सेनापति की कचहरी में पौषशुदी षष्ठी से हिरासतमेंहूं। प्र०—किसकी हिरासतमें हो ? उ०—उनसिपाहियों की हिरासतमेंहूंजो कचहरीमें नियतहैं। प्र०—गायकवार के पुलिस के सिपाही ? उ०—हां ॥

इजहार मिस्टर बोवी साहब ॥

मिस्टरबोवी साहबके इजहार मिस्टर अनवरारटी साहबने लियेउन्होंने बर्णनकिया कि मेरानाम अरथर विलियमकरो लीबोवीहै गत नवम्बरमें रेजीडन्सी बड़ौदेका कायम मुकाम ऐसिस्टन्टरेजीडण्टथा और मकानरेजीडन्सी में रहाकरता था ९ तारीख नवम्बरकी मुझको भलीभांति स्मर्णहै उसीदिन वक्तसबेरे हवाखोरीको गयाथा पूबजे जब रेजीडन्सी को लौटा तो सालिमसवार और यशवन्तराव और माधोराव हाजीकोदेखा यहतीनों मनुष्य बरामदेमें खड़ेथे मेरा मतलब यहहै कि जहां आवागमनका द्वारहै मुझकोस्मर्णहै किफैज सालिमसे वार्त्ता करताथा जबदबजे वस्त्रपहिनकर मैं निकला तो मैनेसुना कि करनैलफियर साहबकी गर्बतमेंकुछ डाल-दियागया जब महाराजा साहब चलेगये उससमय करनैल फियरसाहबनेमुझसे यहबातकहीथी इसकेउपरान्त मैने तह-क़ीक़ातके करनेमें करनैलफियर साहबको सहायतादी जिस समयरावजी का पट्टालियागया मैं मौजूदथा जबपट्टा मांगा तो उसनेआपही उतारकर एकखूंटीपर करनैल फियरसाहब के निजकी कचहरीमें लटकादिया अमीनाआया कि जिसके इजहार कमीशनमें होचुकेहैं मेरीमेम की आयाहै वह मेरे पासव्यतीत एप्रिल वामईसे नौकरहै दोएक मरतबा आया गैरहाजिरी हुईथीमुझेस्मर्ण नहीं कि वहकिस२दिनग़ैरहा-हाजिर हुई सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहाकि चूंकिवह बहुधा ग़ैरहाजिररही इससेमालूम होताहै कि वह अधिक ग़ैरहाजिररही ग़वाहनेफिर कहा कि मुझकोस्मर्णहै कि जब अब्दुल्लाका पुत्रमरगया था तोवह ग़ैरहाजिरहोगई थी और करनैलफियर साहब के विषदिये जानेसे कईदिन पहिलेभी वह ग़ैरहाजिररही थी मुझकोस्मर्णहै कि १९दिसम्बरको जब सूटरसाहब आयाके कमरेमें गयेथे मैंभी उनकेसाथ गयाथा मैं जानता हूं कि शायद गजानन्द शास्त्री और खानबहादुर

पहिला और खान बहादुर दूसरा भी सूटरसाहब के साथ थे जिस समय उसने सूटरसाहब से कुछ कहाथा मैं वहां वर्त्तमानथा उस समय वह जियादह बीमार मालूम होती थी प्र०—अनवरारटो साहब ने कहा आपको स्मर्ण है कि उसने क्या कहाथा सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा कि मैं इन्कार करताहूं ऐसेसवाल करने का-ऐडवकेट जनरलने कहाआया के इजहारोंमें प्रश्नकियेथे जोअबभी प्रश्न कियेजांय तोउनकी सिदाक़त होजाय सरजन्टबेलन टायनसाहबने कहा कि मुझे वही सवालात मंजूर हैं ॥

साहब प्रेजीडेण्टने कहा कोई और गवाह उनबातों की तसदीक़ केवास्ते आसक्ता है फिर सरजन्टबेलन टायनसाहबने अपना उज्र वापिस लिया। प्र०—मिस्टर अनवरारटो साहबने कहाकि आयाने सूटरसाहबसे क्या कहाथा ? उ० उसने कहाथा कि मैं कईबेर श्रीमहाराजा साहब के मन्दिर में गई और मैने रुपया भी पायाा उसने कुछ और भी बयान किया था परन्तु मुझे स्मर्णनहीं १६—दिसम्बरको बड़ादेसे मैं रवाना हुआ ॥

सरजन् बेलनटायन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—भाव पूनाकर को आपभले प्रकारजानते हैं ? उ० हां खूबजानताहूं। प्र०—वहबहुधा रेजीडन्सीमें आयाकरता था ? उ०—सदाआया करता था। प्र०—किस तरहका वह साहबरेजीडण्टका नौकरथा ? उ०—कोर्ट आफवार्डससे उस को तअल्लुक था-और मिस्टरहोप साहब सूरतके कलक्टरनेउसको रेजीडन्सीमें भेजाथा। प्र०—आप मेरा प्रश्नहीं समझे मैं पूछताहूं किवह रेजीडन्सीमें नौकरथा ? उ०—वह रेजीडन्सीमें नौकर था किन्तु सूरत के कलक्टर साहब का नौकर था। प्र०—उसको कोई खास खिदमत साहब रेजीडण्टने पुर्द नहीं की थी ? उ०—नहीं। प्र०—उसको कुछ रेजीडन्सीसे मासिक मिलताथा ? उ०—नहीं। प्र०—आप जानते

हैं कि कुछ खबरें लाया करताथा और साहब रेजीडण्ट को महाराज गायकवारकी कारर्वाइयोंसे सूचित किया करता था ? उ०—मैं जानता हूंकि बहुतसी बातोंकी इत्तिलादिया करता था। प्र०—कोई और मनुष्यभी इत्तिला दिया करता था ? उ०—हां और लोग भी इत्तिला दिया करते थे। प्र० क्या भावपूनाकर ने भी कभी कोई खबर दी थी ? उ०—नहीं प्र०—रेजीडेन्सीमें संखिया वा कोई तांबेका बिषरहता था ? उ०—मैंने कभीनहीं देखा। प्र०—आपने कभी किसीकाम के वास्तेसंखिया नहींमंगाया ? उ०—कभीनहीं। प्र०—आपकी आज्ञासे कभीसंखिया नहींआई ? उ०—कभी नहीं आई ? प्र०—क्या इस हमलेके पीछेभी नहींआई ? उ०—नहींआई।

ऐडवकेट जनरल के प्रश्न॥

प्र०—आप कहतेहैं कि भावपूनाकर कलक्टर सूरत का नौकर था क्यावह जुल्फिक़ार अलीअसमर्थके इलाक़े काजो बड़ौदेमें है इन्तिजाम करताथा ? उ०—हां। प्र०—आपनेसरजन्टबेलन टायनसाहबसे कहा कि संखिया आपकी आज्ञासे कभीनहीं आई ? उ०—कभी नहीं। प्र०—९ नवम्बर वा उसके उपरान्त कभीनहीं आई ? उ०—नहींआई ऐडवकेट जनरलने कहाकि और गवाहों कीशहादत बहुत तूलसे है औरचार बज गयेहैं अबबरखास्त होना चाहिये सोकमीशन बरखास्त हुई॥

ग्यारहवें दिनका इजलास॥

आजकेदिन ११ बजेपर कमीशनका इजलास शुरूहुआसम्पूर्ण मेम्बर और सरल्यूइस पीली साहब और श्रीमान्महाराजा मल्हरराव मौजूदथेपरन्तु मध्याह्नकेउपरान्त श्रीयुतमल्हरराव और श्रीमहाराजा सेंधिया और सरल्यूइसपीलीचलेगये इससमाजमें आजकेदिनबड़ीभीड़थी सैंकड़ोंमनुष्यदामोदर पंथके इजहार सुननेके लिये आयेथे जो तमाशाई उसअदालत में आनेके योग्यनथे वहमैदानमें खड़ेरहे जिससमय दामोदरपंथ बुलायागया तोवह निहायतबेहूदातौरसे कमीशनमेंहाजिर

इआसज मखमल की मिरजई पहिने इयेथा इस मनुष्य का अति स्थूलशरीर हैऔर अयोग्य मालूम होताहै उसके मुखका नकशा मोटा और चेचकरूहै और उसकीखाल गज के चर्म के सदृश खुरदरीहै औरगवाहोंसे उसकीआदत और प्रकारकी मालूम होती है॥

जोगवाही रावजीनेदी वहअति चातुरताके साथदीनरसूने कांप२ कर गवाहीदी और अपने अपराध को छुपाना चाहा परन्तु दामोदरपंथ बड़ादुष्टऔर डरपोक है जिससमय उसने गवाहीदेनी आरम्भकी तो धीरे२ नेत्रोंकोनीचे कियेइयेउत्तर देताथा मालूमहोता थाकिवहअपने मनमेंअति लज्जितहै परन्तुसरजन्ट बेलन टायन साहबने उससेकहा किबड़े शब्द से वर्णनकरो जिसेकि श्रीमान्महाराजा साहबभी तुम्हारे इजहार सुनेंऔरशिर उठाकरमहाराजा साहबने चारआंखेंकरो और इजहार दोयहसुनकर उसने शिरउठाया और उच्चशब्द सेबोलने लगासर ल्यूइसपीकी साहब(रेजीडण्ट) नेजो कहा थाकि दामोदरपंथके इजहार सुननेकेयोग्यहैं औरकारआमदहैं वास्तवमें उन्होंनेसत्य कहाथा ऐडवकेट जनरलनेउसके इजहारलिये औरनीचे लिखेकेअनुकूल उसनेइजहारदिया॥

दामोदरपंथ के इजहार।

मेरानाम दामोदरचिम्बकषा दामोदर पंथहै सरजन्टबेलन टायनसाहबने सुतरज्जिमसेकहाकि गवाहसेकहोकि बड़ेजोर सेबोले कि श्रीमहाराजा मल्हरराव भीसुनें गवाहने वर्णन कियाकि मैंब्राह्मणहूं और श्रीयुत महाराजा गायकवाड़ का प्राईवेट सीक्रेटरीथा मुझेइस अधिकारपर तीनवासाढ़ेतीन वर्ष बीते होंगे सम्पूर्ण सिपाहियों और कसबियों आदि की तनखाह बांटनेका काम मेरे सुपुर्दथा चिड़िया खानेके नौकरोंकी तनखाहभीमैं बांटाकरताथा महाराजा गायकवाड़ कीआज्ञाके अनुकूल यहसब रुपयाबांटा जाताथा मैंलड़ीपोल केदरवाजे पररहा करताथा और निजकी कचहरी अपने म-

कानमेंकिया करताथा इस कचहरीमें २५-सुहर्रमेरे आधीनथे-माधोराव रामकृष्णसरदफ़रथा-एक मनुष्य जिसकानाम नानाजीवतिलहै जवाहिरखानेकाकार्कथा और एक और मनुष्य जिसका नामबलवन्तरावजीहै खजानचीथा—आबाजीरामचन्द्र मेरासर्रिश्तेदारथा मैंप्रातःकालके सातबजे महलमेंजाताथा और रात्रिके दसबजेतकवहां रहताथा परन्तु तीसरेपहिर भोजनकेनिमित्तअपनेघरमें आयाकरताथा मैं महाराजा गायकवारकेमन्दिरकेसम्पूर्णकमरों को जानताहूं गायकवार महलके चौथेदरजेपररहाकरतेथे जिस मनुष्यकोकोईखास कामहोता थावहपीछेके रास्तेसेआताथा और दरबारकेसबलोग फाटकसे आयाकरतेथे परन्तुबहुतसे मनुष्यजोनिजकी कचहरीमेंमहाराजा साहबकेनिकटआतेतो वहपीछेके जीनेसे आयाकरतेथे सरजन्बेलन टायनसाहबने कहा कि मैंगवाहका बयान कुछ भी नहींसुनता विश्वासहैकि महाराजासाहबभीन सुनतेहोंगे गवाहसे कहा जायकि जोरसेबयान करे आज्ञाहुई कि गवाह जोरसे वर्णनकरे गवाहने बयानकियाकि लोगगदीके कमरेमें जायाकरते हैंउनका आवागमन मगमनास दरवाजे सेथा॥

एक और दरवाजा नजरबागकी ओरसेथा वह खासदरवाजा मशहूरहै मैंयशवन्तरावको जानताहूं वहजासूसके तौर परमहाराजा साहबकेपास नौकरथा मैंसालिमकोभी जानताहूं वह महाराजा साहबका सवारहै यह दोनों मनुष्यदिनको महाराजा साहबकी अरदली में रहतेथे यदि रात्रिको कुछ आवश्यकता होतीथी तो बुलाये जातेथे मुझेस्मर्णहै कि महाराजासाहबने मुझेआज्ञादीथी कि सालिमको संखियेकी पुड़िया देदोवह दिनभाद्रपद केथे सुतरञ्जिमसे पूछागया कि यहकौन दिनहोतेहैं उसनेकहा कि यहदिन २९-सितम्बरसे १०-अक्टूबरतक होतेहैं—गवाहने वर्णन किया कि महाराजा साहबने मुझको आज्ञादी कि दोतोले संखिया खारिशके लियेमंगाओ सो मैने महाराजा साहबकी आज्ञा के अनुसार फौजदारी के

महकमेको लिखा—उस समय एकचिट्ठी गवाहको दिखाईगई उसनेकहा कि वहचिट्ठी यहीहै और उसपर मेरेही दस्तखत हैं ऐडवकेट जनरलने वहचिट्ठी पढ़वाई उसमेंयहलिखाथा॥

श्रीमहाराजकी फौज़दारी के सम्पूर्ण अफ़सरों के नाम पर॥

रामरामके उपरान्त मालूमहै।कि घोड़ेकी खारिशके लिये दो तोले संखिये की आवश्यकता है इजाज़त दो कि संखिया मंगाई जाय॥

(द०) दामोदरचिम्बक खासगीवाला लिखाऊआ

भाद्रपद नवमी सम्वत् १९३१

४ अक्टूबर सन् १८७४ ई० के अनुकूल

गवाहने वर्णनकिया कि हांयहीतारीखहैजबचिट्ठीलिखीगई और कहाकि फौजदारीसे संखिया नहींआई तो मैंने नरोत्तमपुरहसे संखियामंगाई परन्तुमंगानेके प्रथम महराजासाहब और मुझसेकुछ वार्त्ताऊईथी मैनेकहाथाकि ऊरमुज़जी वद्याकहताहै कि महाराजासाहबसे कुछबातें करके संखिया दूंगा ऊरमुज़जी वद्याफौजदारथा यहसुनकर महाराजासाहबने कहाकि लश्करसे मंगालो मैनेकहा जोआप लश्करसे संखियामंगावेंगे तोइजाज़तीपरवानाभेजाजावेगा महाराजा साहबनेकहाकोशिशकरके कहींसेसंखियामंगाओ और कहा कि नूरुद्दीन बौहरे से मंगवाओ(नूरुद्दीन महाराजा साहबके सिलेखानेमेंपहिलेनौकरथा) साहब प्रेज़ीडण्टनेकहा सिलाखाने केक्याअर्थहैंक्यादवाईखानेकोकहतेहैं सुतरज्जिमनेकहाहां॥

गवाहने वर्णनकिया कि अबदवाईखाना सिलहखानेमें है यहसिलहखाना उसकमरेके निकटहै जहांश्रीमहाराजसोया करतेहैं थोड़े दिनोंके पीछे श्रीमहाराजा साहबने कहा कि एकतोला हीरामंगवाओ जबमैंने नूरुद्दीनबौहरेको संखिया के वास्तेलिखा तो वहएकपुड़ियामें संखियालाया मैंनेउसपुड़ियाको नहींखोला और महाराजासाहबसे पूछा इसकोक्या कियाजाय महाराजासाहबने कहाकि वहसालिमको देदोकि

वह घोड़ोंकी खारिशकी औषधी बनायेगा सोमैंने वहपुड़िया सालिमको देदी॥

तिसपीछे श्रीमहाराजा साहबने मुझसे फिरकहाकि एक तोला हीरा मंगवाओ शायद यहसंखिया मंगानेसे आठदस दिनपीछे मुझसेकहाथा तथाच मैंने नानावटिल से हीरेमंगवाकर महाराजासाहब की आज्ञासे यशवन्तराव को देदिये आठदसदिन पीछे मुझसे महारासाहबने कहाकि यहशीशी हकीमके पासमेंआईहै यहसालिमको देदेना यहशीशी रात्रिकेसमय महाराजासाहबने गजाबाकेहाथ मेरेपासभेजी पूर्वोक्त गजाबानानाकंवलकरका नौकरहै नानाकंवलकर महाराजासाहबके सालेहैं वहशीशी जोरात्रिके समयआईथी मालूमनहीं उसमेंक्या था मिस्टर मैलवल साहबने सुतरज्जिमसे पूछाकि ष्टथनोदे के क्या अर्थहैं सुतरज्जिमने उत्तरदिया कि इस शब्दकेअर्थ वज़ोरकेहैं मिस्टर मैलवलसाहबने कहाकि गवाह ने कहाथा कि नानाकंवलकर महाराजासाहबकेसालेहैं और मौरूसी वज़ोरभीहैं सुतरज्जिमने कहा हां। तिसपीछे गवाह ने वर्णनकिया किउंगलीके बराबरशीशी घीमैनेयहदवा दूसरी शीशीमें करदी जिसमेंपहिले गुलाबका इतरथा गवाहनेशीशी को दो पुड़ियाके बराबर निशानकिया गजाबाने एकशीशी से दूसरीमेंदवा को कियाथा यह छोटीशीशी जिसमेंदवाथी मैंने अपने पासरखली दूसरेदिन महाराजा साहबकी आज्ञाकेअनुकूलशीशी सालिमको देदीवहदिन दसहरेके थे थोड़े दिनों केपीछेमहाराजा साहबने मुझसेकहाकि एकतोलाहीरा और दोतोलेसंखियामंगाओ सोनूरहीन बौहरेसे संखियालेनेकेलिये मैं आपही उसके मकानमें गया और संखियालेकर सालिम कोदेदी और एकतोले हीरेमें तीनमाशे पिसाहुआ हीराथा और नौमाशेहीरे के टुकड़े थे मैंनेपुड़िया खोलकर नहींदेखी यह बातमानजी के कहनेसे मालूमहुई घीमहाराजा साहबने मुझसे कहा कि हीरे की पुड़िया यशवन्तराव को देदो और

महाराजा साहबने कहा था कि इन हीरोंका स्वामी अकल-कोटके ताजकेवास्ते आवश्यकताहै साहब प्रेजीडेण्टने पूछा कि स्वामीके क्या अर्थ हैं सुतरञ्जिमने कहा कि स्वामी पहिलेदरजे के पुजारीको कहतेहैं गवाहने कहाकि वहपुड़िया यशवन्त-रावको मैनेदेदी मैने यशवन्तरावसे पूछा कि इनहीरोंका क्या होगा यशवन्तरावने उत्तरदिया कि करनैल फियरसाहबको विषमेंमिलाकर दियाजावेगा मैने इतनाही कहाथा कि यह बातबहुत बुरीहै और मैने कुछनहीं कहा मैने२९ अक्टूबरको सुना था कि विषदिये जानेका उपाय किया गया जबसे कि यशवन्तरावको हीरेदिये उसकेआठ दसदिनके उपरान्त मैने सोमवार को यह खबर सुनीथी मैं महाराजा साहबके साथ आठबजे रेजीडंसीको गयापरन्तु मार्गमें शिवाकी धर्म्मशाला पर उतरपड़ा और महाराजा साहबके लौटनेतक वहां ठह-राराहा जबमहाराजा साहबरेजीडंसी से पलटआये तो मुझ-को अपनी गाड़ी में बैठालिया और मुझको मेरे मकान पर उतार दिया मार्गमें श्रीमहाराजा साहबने मुझसे कहा कि रेजीडन्सी में एक शोर मचरहाहै मैने पूछा किसकारण वह शोरहै महाराजा साहबने कहा किनरसू प्रतिदिन मेरेनिकट आताथा परन्तुआजनहीं आया रावजीने जल्दी करके डाल दिया मैनेपूछा क्या डालदिया था महाराजा साहबने कहा किनरसूडेवढ़ी पर बैठा रहा करता था जब कोई आता था तो वह शीशी बजादिया करताथा आजनरसूनथा इसीसे आज रेजीडन्सीमें शोर मचरहा है महाराजा साहबने मुझसे यह भीकहा कि सालिम रावजीके मकानको दौड़ागया हैताकि वह पुड़ियोंकोलावे और जहां एकबुढ़ियारोटी पकारही है उसमें डालदे॥

महाराजासाहबने यहभी कहाकि मालूमनहींकि सालिम ने रावजीसे पुड़ियोंको लेकर फेंकदियाहै या नहीं-और बड़ी खराबीकी बातहुईहै देखाचाहिये क्या होताहै जबगाड़ी मेरे

मकानके निकटपहुंची महाराजा साहबने मुझको वहांउतार दियाउसदिन महाराजासाहबसे और कुछबातोंका होनाहुस विषयमेंयादनहीं सोमवारको ११-बजे भोजनकरके महाराजा साहबके महलको मैंगया वहांजाकरदेखाकि महाराजासाहब लक्ष्मीबाईके पलंगपर बैठे हैं और नानाकंवलकरसे विष की बातेंकररहे हैं परन्तु मैंने यहनहीं सुनाकि वह क्या बातेंथीं क्योंकि मैं पांचछः कदमकी दूरीपरथा और नमैं उसबार्त्तामें संयुक्तहुआ-इसकेउपरान्त महाराजासाहब और नाना और मैं गाड़ीमें सवार होकर घुड़दौड़को गये मार्गमें महाराजा साहब और नानाकंवलकरने मुझसे कहाकि इसबातकी खूब खबर रखना और जोखबरें मालूम हुआ करें उनकी मुझको इत्तिला दिया करना मैंने अपने घरमें जाकर कई मनुष्योंसे विषके दियेजानेका हालपूछा जोकुछ मैंने सुनाथाकि दूसरे दिनभोरको महाराजासाहबको उसकी इत्तिलादी मैंने महाराजासाहब से कहाकि रावजी का पतानहीं है शायदकहीं भागगया महाराजा साहबने कहाकि यद्यपि रावजी बड़ाबुद्धिमान और चतुर है परन्तु झूठाभीहै उससमयमुझसे और कुछनहींकहा मङ्गलवारको मैंने सालिमऔर यशवन्तरावको महाराजासाहब के पास महलमेंदेखा महाराजा साहब ने मुझसेकहा कि विषकेदेनेका हालदरयाफ्तकरके मुझसेवर्णनकरो उसदिन मुझसेऔर महाराजासाहबसे विषकेविषयमें वार्त्ता हुईजब करनैल फियरसाहब कोजगह सरल्यूइस पोलीसाहबनियत होकरआये मुझको खूबयादहै कि एकदिन महाराजासाहब मुझको सरल्यूइसपोलीसाहबके साम्हनेलेगये और साहबमेंसूफके रूबरू इसबातकी गवाही दिलवाईकि महाराजासाहबकी बातें मुसम्मानरायणकानजिसपान्द्रीसे हुईं मुझको महाराजासाहब ने सरल्यूइसपोलीसाहब के रूबरू पेशकिया परन्तु उसदिनमुझसे और साहबसे कुछबार्त्ता न हुई न कुछ विषका जिक्रआया उसदिन रावजीको मैंने नहींदेखा प्रथममें

केवल नौसरीमें मेरी और उसकी भेंटहुई थी जबसिष्टरसूटर साहब बड़ौदेमें आयेथेतो सम्पूर्णनगरमें उनके आनेकी खबर प्रसिद्ध होगईथी उनके आनेके पीछे मुझसे और महाराजा साहबसे विष दियेजानेकी कुछवार्त्ता हुईथी—पहिले रावजी पकड़ा गया परन्तु फिर छोड़ा गयाइसको सुनकर महाराजा साहबने मुझसेकहा था कि जोशख़्स बानी सुबनीथा वहछूट गया अबकुछ भयनहीं है परन्तु मुझको स्मर्णनहीं है कियह बातेंमुझसे और महाराजा साहबसे किसदिन हुईथीं इतना यादहै किसूटरसाहबके आनेके उपरान्तवार्त्ताहुईथी जबरावजी दूसरीबेर पकड़ागया तबभी मुझको खबरहुईथी और मैंने यहभी सुनाथा कि उसने इक़बालकिया सो महाराजासाहब को मैंने खबरपहुंचाई महाराजासाहबने उसके उत्तरमें कहा किमैनेभी ऐसाहीसुनाहै जबरावजीने इक़बालकियातो उसको उसकी बरीय्यतका सारटीफिकट दियागया मुझसेऔर महाराजासाहबसे इस विषयमें वार्त्ता हुई थी महाराजा साहबने मुझसे कहाथा अगर यहांकोई तहकीक़ात हो तोकदाचित् किसी बातको कबूल नकरना मुझको और कुछ महाराजा साहबकी वार्त्तास्मर्णनहीं है मुझकोसालिम और यशवन्तराव केपकड़ेजानेकी तारीख स्मर्णहै १५ मार्गशीर्ष थी मुतरज्जिमने कहा कि यहतारीख २३ दिसम्बरके अनुकूलहै रावजी और सालिमके पकड़ेजानेके उपरान्त साहबरजीडण्टने महाराजा साहबको लिखा था कि उनको हमारे पास भेजदो जबयह लेखमैं महाराजा साहबके निकट लेगया तो महाराजा साहबने कहा कि हमने सालिम और यशवन्तराव कोभी भेज दियाहै महाराजासाहब ने उससमय मुझसे नहीं कहा कि उनदोनों को किस वास्ते भेजदिया है परन्तु इसके उपरान्त मुझसे कहा कि मैंने दोनों को समझा बुझाकर भेजा है कि कदाचित् किसीबातकाइक़बाल न करना इसवार्त्ताके विशेष और कुछ महाराजासाहब ने मुझसे नहीं कहा—उससमय

सालिम और यशवन्तराव रजीडन्सीको गये और फिर लौट आये उसी दिन सरल्यूइस पीलीसाहब रेजीडण्ट की आज्ञा पहुंची कि सालिम और यशवन्तराव को भेजदो—रजीडन्सी के जानेके पहिले उनको मैंने देखाथा वह ऊपर कीछतपर नानाकंवलकर के पासथे जब नानाकंवलकर मुझकोमिलेतो मुझसे कहा ॥

मिस्टरब्रैन्सनसाहबने कहा हमनहीं पूछतेकि उन्होंनेतुम से क्या कहा ॥

ऐडवकेट जनरल ने कहा कोई मनुष्य और भी उस समय मौजूद था ? उ०—सिवाय नानाकंवलकरके और कोई मनुष्य नथा ॥

गवाहफिरवर्णनकरनेलगाकिजबसालिम और यशवन्तराव रजीडन्सीकोचलेगये तो संध्याको महाराजासाहबसे फिरमेरी भेंट हुई महाराजासाहबनेकहाकि मैंनेदोनों मनुष्योंकोसमझा दियाहैकि तुमकिसीबातकाइकरार नकरना सिवाय इसबात के और जो कुछ महाराजासाहबने कहा मुझको स्मर्ण नहीं जिसदिन महाराजा साहब पकड़ेगये उसीदिन मैंभी संध्याके समय पकड़ागया ९ बजेएक पहिरा आया महलके कमरेबंद कर दियेगये और प्रतिस्थानपर पहिरा खड़ाहोगया जैकसन साहब और गजानन्दवतिलने मुझसेकहा कितुम अपनेदफ्तर मेंचलो कितुम्हारे सन्मुख प्रत्येक वस्तु बन्दकरके मोहरलगा दीजावे जिससमय प्रत्येकवस्तु पर मोहर लगाई गईमैंभीमौ-जूदथा इसकेउपरान्त मैं अपने घर चला आया परन्तु शीघ्रही फिरमैं बुलायागया और सेनापतीकी कचहरीमें मुझको क़ैद कियामैं दोदिनतक हवालातमें रहावहां केवलचौकीदारोंका पहिरा था सिपाही न थे वहां से फौजदारके सिपाही मुझको रेजीडन्सी में लाये और गोरोंके पहिरे में १९ दिनतक बन्धि मेरहा फिरपुलिसकेसुपुर्द कियागया जबतक मैंने किसीबात कोकबूल नहीं किया मुझपर गोरोंकापहिरा रहाजब मैंनेइक-

वाल कियातो पुलिसके सुपुर्द कियागया पहिलीवेर रेजीडन्सी के बागके नीचेमें बुलाया गया वहां दोनों खान और बलवन्त राव सीक्रेटरी वर्त्तमानथे यहबलवन्तराव कारकुनथा जोअहमदाबादसे बुलायागया था एकमनुष्य भावपूनाकर औरएक सिपाहीपुलिसका वहांमौजूद था जबमैं वहां पहुंचातो खान बहादुरने कहा कि मैनेतुमको इसलिये बुलायाहै कितुम्हारे संदूकके काग़ज़ देखाचाहताहूं उससंदूकमें महाराजासाहब के निजके काग़ज थे उसपर मेरे सान्हने मोहर लगाई गईथी उसफरवड़ी २ मोहरेंथीं और सबमुसल्लमथीं मैंनेपुलिससे कुछ नहींकहा परन्तु पुलिसके लोगोंने मुझसे कहाथा कि अगरतुम इकबाल करोगे तुम्हारेलिये अति उत्तमहोगा वहलोग आधे घंटेतक सन्दूकके काग़ज़ देखतेरहे उसके उपरान्त मैं गोरोंके पहिरेमें सुपुर्द कियागया बलवन्तराव और भावपूनाकर और दोनों खानबहादुरने देखाथा ऐडवकेट जनरलने कहा कि अब दोबजगये हैं टिफनका समयआगया यदि आज्ञा होतो थोड़ी देरकेलिये अदालत बरखास्त कीजावेसो कमीशनके मेम्बरटिफनखानेके वास्तेगये॥

जबटिफन खाकर लौटेतो गवाहने वर्णन किया कि सन्दूक के काग़जोंके देखनेके पीछेमेरा इज़हारहुआ उससमय मिस्टर रिचीसाहब सरल्यू इसपीलीसाहब कप्तान जेकसनसाहब कप्तान सीग्रीव साहब दोनों खान बहादुर गजानन्दबतिल और बलवन्तराव सीक्रेटरी मोजूदथे जबमैंने अपना इज़हार दिया तो सरल्यू इसपीली साहबने मुझसे मेरे अपराधके क्षमा करने का इकरार किया था किसीमनुष्यने मुझसे रावजी वा नरसू जमादारके इज़हार का हालवर्णन नहीं किया मैंतो गोरोंके पहिरे मेंथा मुझे कौन सूचित करता जिसदिन मुझको सारटी फिकट मिलातो गजानन्द बतिल और दोनोंखान बहादुर वर्त्तमान थे-गजानन्द ने मुझसेकहा कि जोसच २ कहोगेतो सरकारतुम्हारा अपराध क्षमाकरेगी और मुझको एक परचा

भी दिखाया सिवा इसके उससमय मुझसे कुछनहीं कहा जब मैं नौसारी गयाथा मैंने रावजीको देखाथा रावजी महाराजा साहबके गुसलखाने के पासबैठा था सिवाय रावजीके सालिम और महाराजा साहबभी बैठेथे रात्रि के दस बजे होंगे और महाराजा साहबके बुलाने के अनुसार मैं गयाथा जबमैं महाराजा साहबके पास पहुंचातो महाराजा साहबने मुझकोएक कागज़ देकर कहा कि इसको पढ़ोसो मैंने उसे पढ़ा तो वह अर्जी स्वर्गवास यमुनाबाई खाण्डेरावजी कीस्त्रीकी ओरसे श्रीमान् गवर्नर जनरलके नाम थी उससमय महाराजा साहबने कहा कि इसअर्जी की नक़ल लिखलो जबमैंने नकल लिखली तोवह अर्जी रावजीको फेरदी मैं सब काग़जों को महाराजा साहबके रूबरूपढ़कर सुनाया करता थामैं दक्षिणी भाषा जानता हूं बहुधा हिसाब छोटे २ परचों पर रहा करते थे कोई किताब न थी और जिस मनुष्य को महाराजा साहब रुपया दिलाते थे मैं याद बना कर महाराजा साहबके दस्तखत करा लिया करताथा बहुधा श्री महाराजा साहब मुझको जुबानी आज्ञादिया करतेथे ॥

एककाग़ज जबगवाहको दिखायागया तो उसनेकहा कि मेरेहाथका लिखाहुवा है उसमेंयह लिखाथा ॥

श्री लक्ष्मी इत्यादि ॥

हिसाबतीसरे माहशव्वाल अर्थात् महीना मार्गशीर्ष सम्वत् १९३० ई० (२४ नवम्बर सन् १८७४ ई० के अनुकूल) ॥

याददाश्त ॥

बम्बईसे कुछ माल यशवन्तके पुत्रमहीपति योलीके द्वाराजो सरकारका कासिदहै आयाहै इसलिये सरकार की आज्ञाके अनुसार नीचेलिखा हुआरुपया दियागया कलके बनेहुयेरुपये जोबाजारसे मोल लिये गये १००० पट्टा बहिसाब १८ ¾ फीसदी-१८७॥) कुल ११८७॥) सिक्के वा बादशाही जो खजानेसे दियेगये १०००) कुल ३१८७॥) रुपया पानेके समय जो रसीद

यशवन्तराव ने दाखिल कीथी इस काग़ज़के साथ रक्खीगई ॥

सरजन्ट बेलनटायनसाहबने कहाइन याददाश्तोंकेपेश करने से ज्ञातहोता है ताकि साबितहो कि समय २ पररेजीडन्सी के नौकरोंको रुपयादिया गया और हिसाब में दूसरेनाम से रुपयालिखागया ऐडवकेटजनलरनेकहा हांइसीबातकेसाबित करनेके वास्ते यहयादें पेशकी गईं प्रेजीडेण्ट साहबने कहा ऐडवकेट जनरल प्रगटकरना चाहतेहैं कि वास्तवमें समय २ पररुपया लोगों को दियागया और याददाश्तोंमें दूसरे नाम से लिखागया इसवार्त्ता के उपरान्त वह यादमिसल में संयुक्त कीगई और उसपर (ए) का निशान लगायागया और गवाह ने वर्णन किया कि प्रति दिन और प्रतिसप्ताह और मासिक औरवार्षिक हिसाबबन कर पेश हुआ करता था बलवन्तराव कारकुन प्रतिदिन का हिसाब रक्खा करतेथे और मैं हिसाबों परदस्तखत कियाकरता था मालूमनहीं कियशवन्तरावको क्या मासिक मिलताहै सिवातनख्वाहके जितना सालिमऔर यशवन्तराव को रुपया दियागया वहमेरे महकमेसे दियागया ॥

ऐडवकेट जनरलने कहा जोयाद तुमने पढ़ीउसमें तुमलिखते होकि उस असबाब के लिये जो बम्बई से आया तुम जानते होकि कौन असबाब बम्बई से आया था ?उ०—कोई असबाब नहीं आया था। प्र०—फिर क्यों लिखागया कि बम्बईसे असबाबआया ? उ०—इसवास्ते लिखागयाकि रेजीडन्सीके सब नौकरोंको रुपयादेनामंजूरथा। प्र०-तुमको क्योंकरमालूम हुआ कि रेजीडन्सी के नौकरोंको रुपयादिया जायगा ? उ०—महाराजासाहबनेआज्ञादी थीकिजबरुपया रेजीडन्सीकेनौकरोंको दियाजाय तो वहरुपया इसीभांति हिसाबमें लिखा जाययदि कोई वस्तु आती तो महाराजा साहब उस व्यौपारी कानाम लिख वातेजिसकी दूकान से आया था ऐडवकेट जनरलने एक औरयाद गवाह कोदी और पूछाकि यहरुपया भीयशवन्तराव को दियागया था ? उ०—हां देखिये १८॥=) कीदहानीद है

इसमें नमालका व्यौरा और नब्यौपारीका नामहै। प्र०—क्या इसपरभी तुम्हारेदस्तखत हैं? उ०—हां। प्र०—किसमनुष्यने इसयादका रुपयापाया? उ०—सालिम अरब ने। प्र०—क्या कोई वस्तु अहमदाबाद से खानेमें आई थी? उ०—नहीं॥

ऐडवकेट जनरलने कहा माईलार्ड मेरे विचारसे योयह सब यादेंगवाहों को दिखाकर पहिचानवाई जायें और उनसेकसम लेली जावेतो अतिउत्तम है॥

सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा मेरी भी यही राय है मैने उन यादों की सूची बनाई है उनपर [ए]से [क्यू] पर्य्यन्त निशानहैं इनसब याददाश्तोंमें सातहजार रुपयादिया गयाहै प्रेजीडण्ट साहबने कहा कि मिस्टर जारडीनसाहब से कहा जाय कि इन याददाश्तों को क्रमपूर्व्वक सूचीनीव्यार करें—चारबजे अदालतबरखास्त हुई॥

बारवें दिनका इजलास।

ग्यारह बजे पर कमीशन के मेम्बर एकत्र हुये कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बर और श्रीयुतमहाराजा मल्हरराव समाज में सुशोभितहुये तीसरेप्रहर को श्रीमान्महाराजा सेंधियानथरीफनहीं लाये और सरल्यूइस पीलीसाहब दिन भर नहीं आये ऐडवकेटजनरल अर्थात् सरकारकेबडेवकी लदामोदर पंग्रका इजहार लेनेलगे—पूर्व्वोक्त साहबने गवाहसे पूछा कि तुमने हमसेकल कहा था कि दोबार नानाजीवतिल के पाससे मैने हीरे मंगवाये थे परन्तु बयानकरोकि उसके मोलके देने का किसनेबन्दोबस्त कियाथा? उ०—श्रीमहाराजासाहबके आज्ञाकेअनुकूल बन्दोबस्त कियागया मैने महाराजा साहब से पूछाथा कि इन हीरों का मोलदेदिया जायसो आज्ञाहुई थी किदेदो तोमैने हीरोंका मोलदेदिया—यहरुपया हजूरीबट्टे और बचत से दियागयाथा परन्तु इस रुपये को हीरोंके मोल में दिया जाना हिसाब में दर्ज नहीं हुआ किन्तु महाराज

साहिबकी आज्ञासे महाराजा साहबके हिसाबमें इसप्रकार लिखागयाकि ब्राह्मणोंके खिलानेके लिये रुपियादिया गया॥

जब गवाहसे एक और प्रश्नकिया तो मुतरज्जिम गवाह से कुछ बार्त्ता करनेलगा सरजण्ट बेलनटायन साहबनेकहा क्या कहतेहो मुतरज्जिमने कहाकि जो कुछगवाहने वर्णनकिया मेरीसमझमें नहीं आयाथा इसलिये मैं पूछताहूं सरजण्टसाहबने कहा कि जो कुछ वह कहताहै मुझे सुनाओ प्रेजीडण्ट साहबने कहाकि जबमुतरज्जिमही नहींसमझाहैतो तुम क्या समझोगे-गवाहने वर्णनकिया कि महाराजा साहबने मुझसे कहाथा कि इनहीरोंको दवाईकी मदमें दर्ज हिसाब करना क्योंकि इनकी भस्म बनाईजावेगी उनको मैंने इसीप्रकार हिसाब में लिखाया परन्तु जब करनैल फियर साहबके विषदिये जाने का चर्चाओर चरचाहुआ तो मैंने महाराजा साहबसेकहा कि हीरों की भस्म किस प्रकार हो सक्ती है महाराजा साहबने कहा तुमने खाकहोना हीरों का लिख दिया है मैंने कहाकि हां तब महाराजा साहब ने कहा कि उसवरक़ को हिसाबसे निकाल डालो इस विषय में मैंने नानावतिल से सम्मत पूछा उन्होंनेकहा किजब महाराजा साहबकी आज्ञाहै तो ऐसाही करो—महाराजासाहबने मुझकोयहभी आज्ञादी कि जबइस प्रकारकाखर्च लिखाकरोतो ऐसालिखो किकिसीकोअसलहाल न मालूम हुआ बारे नूरुद्दीन बैाहरसे जो दोबेर संखिया ली गई उसका मोल नहीं दिया गया केवल इतनाही इकरार कियागयाकि दवाईखाना उसको फिरसौंपाजायगा जब करनैलफियर साहबको विष दिये जाने का वृत्तान्त सर्वत्र प्रसिद्ध हुआतो नूरुद्दीन बैाहरने मुझसे कहा कि जिस बैाहरे की दूकानसे संखियालाया था वह दोसौ रुपया मांगताहै—ऐडवोकेटजनरलने कहा उसने कुछ और भी कहाथा—सरजण्टबेलनटायन साहबने कहाकि ऐसे प्रश्नसेमैं इन्कार करताहूं कि वहबातेंजो महाराजाके पीछेहुईं वहगवाहीमें दाखिल नहीं

हैं—साहब प्रेजीडण्टनेकहा—जो कुछबातें और काररवाईउस समय पर हुईवह सबगवाही में दाखिलहै ॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहाआपकी रायमें यहबातें ग्रहादतमें दाखिलहैं ॥

साहबप्रेजीडण्टनेकहाहांसुननेके योग्यहैंऔरजबउनकीतस दीकहेजायगी तो उसमसयगवाहीकेभीयोग्यहैंसरजण्ट बेलन टायनसाहबमैं अपकामतलब समझा आपचाहतेहैं किसबहाल मालुम होजाय उसकेपीछे देखाजायगा कि गवाहीकेयोग्य हैं वानहीं साहब ऐडवकेट जनरलने गवाहसे कहाकि तुममे और नूरुद्दीन बौहरेसे क्याबात्तीहुईथी गवाहने वर्णनकिया कि नूरुद्दीनने मुझसे कहा कि पहिली पुड़िया संखियाकी किसीके नामलिखी नहींगईहै और दूसरीपुड़िया मेरेनाम लिखीगई है जिस बौहरेके पाससे संखिया लायाथा उसने कहाहै कि मेरी किताबेंहिसाबकी जब्तहोगईं और रजीडन्सीको गईहैं यदि तुमचाहतेहोकि संखियेका बेचाजानाछिपारहे तो दो सौरुपये मुझकोदो और मैं उस बौहरेको देदूंकि वहमेरा नामनबतावे—सरजन्ट बेलनटायन साहबनेकहा क्या हुजूरऐसी बातसुनने के मजाजहैं—साहब प्रेजीडण्टने कहाकि हां मुझको अधिकारहै क्यों कि इनबातोंसे मालुमहोगा कि सच २ क्या हालहै ॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा हुजूर इस वृत्तान्त को सुनकर गवाहीकी तैारपर समझतेहैं परन्तुमैं यहबातें केवल गुफ्तगू समझताहूं कुछ गवाही नहीं समझता जो वार्त्ताकि महाराजासाहबके रूबरू नहींहुई वह समझी जासक्तीहै कि बनाई हुई है ताकि एक मनुष्य दूसरे को फंसावे ॥

साहब प्रेजीडण्टने कहा इसी वास्ते आपयह बार्त्ता करते हैंकि यहबातें बनाईहुई हैं ॥

सरजन्टबेलन टायनसाहबने कहामैं आपके सम्मुख यहबात पेशकरताहूं कि आश्चर्य्य नहींजो यहबार्त्ता बनाईहुई है।ऐसी

बातोंकी सिदाक़त जबकि दूसराकोई मनुष्य वहां न थाक्यों कर होसक्ती है परन्तु जो ज़ज़ूर उसको गवाही समझते हैं ाते मैं चुप हूं ॥

प्रेजीडेण्ट साहबने कहा जबतक कि प्रतिमनुष्य का हाल न सुनाजाय तबतक ऐसे मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात कठिन है और जबतक कि प्रति मनुष्यकी बात न सुनूंगामेरी समझमें क्योंकर आवेगा ॥

गवाहनेवर्णनकियाकि नूरुद्दीन बौहरेसे मैनेकहाकिदोसौ रुपयेतुम अपनेपाससे देदोतुमको दवाईखानेका काममिलेगा तो यहरुपया सुजराहोजावेगा नूरुद्दीनयह बात सुनकरचुप होरहा और फिरमैने नूरुद्दीनको नहींदेखा–नूरुद्दीननेमुझसे नहींकहा किवह किस बौहरेकी दूकानमे संखियालायाथा मैनेनौसारी में केवल एक बेररावजीको देखाथामालूम नहीं कि वह गायकवारके पास आया करता था यानहीं ॥

जबकरनैलफियर साहबके फोड़ानिकलाथामुझेअच्छेप्रकार स्मर्ण है महीना सितम्बर सन् १८७४ ई० था इस फोड़े का हालइस कारण यादहै कि मेरेसम्मुख सालिमने महाराजा साहबसे कहा था और उसने अपनी उंगली से बताया कि माथेमें फोड़ा है करनैलफियर साहब रावजीसे मरहमलगवायाकरतेथे रावजीने एकचुटकी संखियेकी मरहममें डालदी थीजबमरहमके लगानेसेकरनैलफियर साहबकेफोड़े में सोजिश हुई तोउन्होंनेमरहमके फाहेको उतारडालायहबात सुनकर महाराजासाहब मेरेरूबरू कुछनहीं बोलेजबकरनैलफियर साहबकेयह फोड़ाथातोमहाराजासाहबनेकुछ दवाईकेबनाने कोमुझको आज्ञादीथी उसीसमयमें सालिमकोमैने संखिया दीथीऔर महाराजासाहबने आज्ञादीथी कि हकीमसाहबके निकटबड़े २ चींटे, सर्प, और काले घोड़ेका मूत्रभेजदो वह कुछ दवाबनावेंगे मुझकोऔर कोईबात उसदिनकी जोमहाराजासाहबने कहीहो स्मर्णनहींमैनेयह सम्पूर्णवस्तु मंगाकर

हकीमसाहबकेनिकटभेजदीथी और हकीमसाहबनेएकशीशीमें कुछदवाबनाकरदीथीसाहब प्रेज़ीडेण्टनेकहाइसशीशीकीदवा कीवस्तुतोमालूम होगई परन्तुयहपूछोकि इसशीशी परडाटथी वा नहीं-एडवकेटजनरलने गवाहसे कहाकि तुमइसशीशीका हालबयानकरसक्तेहोगवाहने उत्तरदियाकि उंगलीके बराबर बड़ शीशीथी उसका गलाबामेरे निकट लायाथासुझको स्मर्ण नहींकिउसशीशीमेंडाटथा वानहींपरन्तुमैनेउसशीशीकीदवा को दूसरीगुलाबकीशीशीमें रखदियाथाऔर उसशीशीपररूई औरमोम लगाकर सालिमकोदेदियाथा मैंजानताहूं कि जो व्यवस्था रेज़ीडन्सीमें हुवाकरतीथी उसकीवृत्तिला महाराजा साहबकोहुवाकरतीथी रावजी सालिमकेद्वारा उनचिट्ठियोंको महाराजा साहबके पास भेजाकरता और मैंउन चिट्ठियोंको महाराजासाहब के सम्मुख पढ़कर फाड़डालताथा गवाहको कुछचिट्ठियोंके पुलिन्दे दिखायेगये गवाहने कहा कियहरोज-नामचेहैं ऐसे२चारपुलिन्दे अदालतमेंथे एकपुलिन्देमें ११९॥) का हिसाबहै यहहिसाब मिटाहुवाहै एककारकूनने मेरीआज्ञासे उसपर स्याही डालदीथी उसका नाम बलवन्तराव है और रावजीका पुत्रहै स्याहीडालनेका कारणयहथा कियह रुपया११९॥) सालिमके नामलिखा था जब विषदियेजानेका शोरपड़ा तोउससमय मैनेस्याही डलवादीथी इसीप्रकारऔर स्थानोंपरभी जहांऐसा रुपयालिखाथा स्याही डालदीगई थी साक्ष्य एडवकेटजनरलने उनपुलिन्दोंके कागजोंकोदेखा और जहां२ स्याहीपड़ीथी उसकी तसदीक़की॥

मैलवलसाहबने सुतरज्जिमसे कहाकि तुमकहीं२ गवाह का वर्णन छोड़जातेहो—गवाहने वर्णनकिया किजहां२ सालिमका नामआताथा अथवा किसीखर्चका व्यौरानहींकिया जाताथा उसपर मैंस्याही डलवा देताथा यह सम्पूर्ण रुपया करनैलसाहबके विषदेने या रेज़ीडन्सी के नौकरोंको बांटनेमें खर्च हुवा॥

बेलनटायनसाहब के प्रश्न ओदामोदर पंथ गवाह से किये ॥

प्र०—तुम कहतेहो कि जितने हिसाब तुमनेबनाये वहसब बनावटीहैं? उ०—बहुतसे बनावटीहैं सम्पूर्ण हिसाब बनावटके नहींहैं और जानबूझकर बनावटी बनायेगये । प्र०—यहहिसाबमहाराजासाहबकी आज्ञानुसार बनावटी बनायेगये? उ० महाराजासाहबकी आज्ञासे बनायेगये । प्र०—ऐसेअशुद्धहिसाबोंके बनानेके लिये तुमकोसमय २ पर आज्ञा होतीथीया खास २ हिसाब केलिये । उ०—जैसा मौक़ा होता था मुझको आज्ञामिलतीथी महाराजासाहबसे मैं पूछलेताथा कि अमुक विषय में क्या आज्ञा है । प्र०—तुम महाराजा साहबसे पूछ करके हिसाबों को गलत किया करते थे ? उ०—हां जैसा मौक़ा होताथा क्योंकि महाराजासाहब वाकिफहोतेथे जिस कामके वास्ते रुपयादिया जाताथा। प्र०—तुम वाकिफहोतेथे या महाराजासाहब? उ०—महाराजासाहब । प्र०—जब तुमने महाराजासाहबसे आज्ञा मांगी उन्होंने आज्ञादी थी? उ० हां । प्र०—यदि इन हिसाबों की तहक़ीक़ात होती तो तुम किसतरह साबित करसक्ते थे कि हिसाबों के ग़लत करने के लिये तुमने महाराजासाहबसे आज्ञालेली उ०—इससे अधिक और क्या साबित करसक्ताकि सम्पूर्णकार्य्य महाराजासाहब कि आज्ञानुकूल कियाकरता था । प्र०—यहबयान तुम्हाराहै परन्तु मैं पूछताहूं कि जैसे महाराजासाहब तुमपर यह अपराध धरते कि तुम उनको लूटतेहो और लूटनेके प्रयोजनसे तुम हिसाबको बदलते हो तो तुम क्योंकर साबित करते कि महाराजा साहब की आज्ञासे हिसाबको बदला? उ०—जो रुपया दिया जाताथा चार किताबोंमें लिखा जाताथा और इसके विशेष देने और लेनेवाला मौजूद था । प्र०—तुम इस हिसाबकेबदलनेमें महाराजा साहबकीआज्ञाकाहोना क्योंकर प्रकटकरसक्ते थे जो तुम कहतेहो वह तुम्हारा जुबानीबयान है ? उ०—सिवा हुक्म जुबानी महाराजा साहबके और कुछ

मेरेपास सुबूत नथा। प्र०—जोप्रश्न मैं तुमसे करत हूं उसका यह उत्तर नहीं जो तुमनेदिया मैं पूछताहूं किसिवायतुम्हारे बयान और महाराजासाहबकी आज्ञाकेकोईलिखीहुई आज्ञा तुम्हारेपासहै? उ०—ऐसी आज्ञाओं से महाराजासाहब के लाखोंरुपये खर्चहुयेहैं। प्र०—और हिसाबअशुद्धकियागया? उ०-जबकभी गलतकरनेका मौकाहुवा। प्र०-और तुमनेहिसाब गलत किया? उ०—महाराजा साहबकी आज्ञासे कारकुनसे हिसाब गलतकियाऔरबदलायागया। प्र०—परन्तु मैंतुमसेयह बात पूछताहूं तुमउसका समझबूझकर उत्तरदोकि जोतुमपर महाराजासाहब अथवा कोईऔर मनुष्य यह अपराधलगाता कि तुम महाराज साहब को लूटेखाते होतो तुमकिस प्रकार साबितकरते कि तुमको महाराजासाहबने इसभांतिके हिसाब गलतकरनेका मजाजकिया था? उ०-काग़जात से आपही साबित होसक्ता था। प्र०-सिवा काग़जातके और किसी भांति सेभी साबितहोसक्ता था? उ०—कागज़ दिहानीदपर रसीद लिखीहुई है। प्र०—तुम्हारे पास कोईलेख महाराजा साहब काहै जिसमेंउन्होंने तुमको ऐसा अधिकार दियाहो? उ०—मुहाफिजदफ्तर साहबके निकटहोगा मेरेपास कोईऐसालेख नहींहै। प्र०—मैंचाहताहूं कितुम इसप्रकारका कोईलेखदिखाओ जिससे विदितहो कि महाराजा साहबने तुमकोअधिकार दियाथा कि ऐसीकिताबोंको गलतकरो। उ०—मेरेनिकटकोईऐसालेख महाराजासाहबका नहींहै परन्तु लक्ष्मीबाई जोमहाराजासाहबकी तीसरीरानीहैं उनकालेखहै। प्र० तुम्हारे निकट महाराजासाहब का कोईऐसा दस्तखती लेख नहींहै? उ०—नहीं-लक्ष्मीबाई महाराजकी आज्ञासे दस्तखत करतीथीं और ऐसीआज्ञाओंपर महाराजासाहबकी मोहरभी है? प्र०—कोई दस्तखती कागज़ महाराजा साहबका तुम्हारेनिकट है? उ०—चारवर्षसे प्राईवेट सेक्रेटरी का महकमा मेरेआधीन हुवाहै उससमयसे महाराजासाहबनेकोई

कागज मेरे मुहकमेका दस्तखत नहीं किया। प्र०—परन्तु मैं तुमसे पूछताहूं कि यदितुमपर लेलेनेका अपराध क़ायमकिया जातातो तुमकिसप्रकार उससे छूटते? उ०—एक२ हिसाब पांचजगह लिखाजाताथा मैंउसीसेसाबितकरता कियहरुपया खर्चहुवाहै मैने तग़ल्लुब नहींकिया। प्र०—कुछरक़में महाराजासाहबके हाथकी लिखीहुईभी हिसाबमेंहैं? उ०—जबजमाखर्चका नक्शातय्यार होताथा तो महाराजासाहब उसपर दस्तखत कियाकरतेथे यहनक्शा महाराजासाहबके दस्तखतों के वास्ते हरवर्षमें तय्यार हुआकरताथा। प्र०—ऐसे दस्तखत का कोईकाग़ज तुम्हारेनिकटहै? उ०—हां। प्र०—तुमउसको पेशकरसक्तेहो? उ०—जो आप मंगवावें तो आसक्ताहै। प्र०—अच्छा इसबातको फिर देखाजायगा तुमकोकभी हिसाबकीजांचहोनेका सन्देहहुआ? उ०—किसमनुष्यसे। प्र०—शायदकोई मनुष्य जांचकरता? उ०—कुरक़ी होनेके पहिलेमहाराजासाहबके सिवायकोई मनुष्यमेरेहिसाबकी जांचकरनेका अधिकारी नथा। प्र०—पुलिसनेतुमसे कहदियाथाकि तुम्हारे हिसाबकी जांचहोगी? उ०—कुरक़ीकेपश्चात् पुलिसने वहकागजमुझको दिखायाथा किजिसपर स्याहीपड़ीथी औरकहाथा किइन हिसाबोंकीजांचहोगी। प्र०—पुलिसवालोंने क्यातुमसे यहकहाथा किक्यातुम्हारे हिसाबकी जांचहोगी? उ०—पुलिसने यहकहाथा किसबहिसाबोंकीजांचहोगी। प्र०—तुमकोक्या मासिकमिलताथा? उ०—मुझे दोसौरुपये मासिकमिलतेथे औरमेरेभाईको चारसौ रुपये मिलतेथे। प्र०—मैं पूछताहूंकि तुमनेयहसब बातेंक्योंकर क़बूलकींऔर तुमतो उसीदिन पकड़े गयेथे जिसदिन महाराजासाहब पकड़ेगयेथे? उ०—मैंउसी दिनसंध्याको पकड़ागयाथा। प्र०—तुमको मालूम होगा कि रावजी और नरसूआदिके इजहार मिस्टरसूटर साहबनेलिये हैं? उ०—हांमैं यहखबरें सुनाकरताथा। प्र०—मैंसमझताहूं कि यहखबरें तुमकोबहुत दिलचस्प मालूमहुवा करती होंगी

उ०—मुझको जोकुछ खबरमिलतीथी महाराजासाहबको सुना देताथा। प्र०—परन्तु तुमको भी तो यह बातें पसन्द आती होंगी? उ०—मुझसे उनबातोंका सम्बन्ध नथा। प्र०—इसविषय मेंहम फिरबार्त्ता करलेंगे—परन्तु खूनियोंके समूहमें तुमभीतो एकमनुष्यथे और तुमने मारडालनेके लियेसहायता भीकी? उ०—हांमैने सहायता की थी। प्र०—पस मैं समझताहूं कि तुमको ऐसेहालातके सुननेका अपनातअल्लुकभीथा? उ०—हां अपने और महाराजासाहबके बचानेकेवास्ते मुझको तअल्लुक था। प्र०—शायद तुमको अपना खयाल कमहोगा महाराजा साहबके बचानेका अधिकखयाल होगा? उ०—हांमैंयहसमझा था कि चूंकिअब कुलकुर्की होगईहै मैंबचजाऊंगा। प्र०—जो तुमकोअपना खयालकमथा और महाराजा साहबके बचानेका अधिक विचारथा तुमनेपूछाथा कि रावजी आदिने क्या इज़हारदिये? उ०—मैंनगर की खबरें सुनाकरताथा जबतकसाक्षिम कूटारहा वहसम्पूर्ण वृत्तान्त मुझसेआकर वहांकरताथा। प्र०—तुमने उसशीशीका हालभीसुनाहोगा जिसकावर्णनराव-जीनेकिया? उ०—मैंक़ैदमेंथा किसतरह सुनता। प्र०—परन्तु मैंउससमयका जिक्रकरताहूं जबतुम क़ैदनथे अर्थात्रावजीके इज़हारउस समय लियेथे जबतुम क़ैदनहीं हुयेथे? उ०—मैंने कुछहाल शीशीका नहींसुना। प्र०—क्यातुम कहतेहो कि मैंने नहींसुना कि रावजीको शीशीदीगई सावधान होकरउत्तर दो उ०—नहींमुझसे किसीनेऐसा नहींकहा। प्र०—किसी मनुष्य ने तुमसे शीशीका हालनहीं कहा? उ०—नहींकहा। प्र०—तुमने पुड़ियाका कुछहाल सुनाथा कि करनैलफियरसाहबके गिलास में डालीगई? उ०—हां। प्र०—तुमनेसुनाथा कि उसमें संखिया थी? उ०—हां। प्र०—और पिसाहुआ हीराउसमेंहै? उ०—हां प्र०—और यहकिरावजीने इसबात काइक़रार कियाहै कि मैंने विषकी पुड़ियाकरनैलफियरसाहबके गिलासमें डालदी और उनके मारडालनेका उद्योगकिया? उ०—हां मुझसे महाराजा

साहबनेकहाथा। प्र०—जबतुमको मालूमहुआ कि रावजी आदिकपहिरेमेंहैं औरउनहीलोगोंमेंसे तुमभीथे तुमनेवह कागज जिसमें इसप्रकारका जिक्रथा किसवास्ते फाड़नहींडाले? उ० क्याकौनकागजइससुआमिलेकाथा। प्र०—मुझकोतुम्हारेउलटे प्रश्नकरनेसेआश्चर्य्य नहींआया तुमनेवर्णनकियाहैकि कईकागजइससुआमिलेकेथे? उ०—क्याआपउनकागजोंके तरफदारकरतेहैं जिनकीनिस्बत मैंइजहारदेचुकाहूं। प्र०—क्यातुमको कुछसंदेह है कि उन कागजों की तरफमेरा दृष्टिकोण नहीं है उ०—पहिले मुझको समझलेना चाहिये,जो वह कागज एक जगहहोतेतो मैं उनको फाड़डालता। प्र०—जो कुछवर्णनकरते होजो वहठीकहै तो तुम्हारी कारवाई से अच्छीतरह मालूम होताहै कि वास्तव में विषदिया गया? उ०—हां। प्र०—तुमने उनको क्यों फाड़नहीं डाला? उ०—केवल दो कागजों में रिश्वतका जिक्रथा। प्र०—तुमयह जानतेथे कि रिश्वत के विषय में तहक़ीक़ात होरही है? उ०—हां मैं जानता था। प्र०—क्या तुमइस विषय में सौगन्द खासक्तेहो कि तुमको मालूमथा कि मिस्टरस्लटर साहब तहक़ीक़ात कर रहे हैं? उ०—हांमैं शपथ खासक्ताहूं। प्र०—उससमय तुमनेक्यों ऐसे कागजनहींफारडाले क्योंकि वह सब कागज तुम्हारे अधिकार मेंथे? उ०—सबकागज चाकनहीं होसक्ते थे क्योंकि अलग २ महकमों मेंथे सर्व स्थानोंसे उनकोसंग्रह करकेफार डालना असम्भवितथा। प्र० कौनसी बात उसमें बाधकथी कितुमने उनकागजों को नहीं फाड़ा? उ०—जबरूपये कीदिहानीद होतीथीतो दश २ जगह लिखाजाताथा इसस्टरतमें निहायत दिक्कतथी किसबजगह से कागज संग्रह होकर फाड़डाले जाते यह सुनकर सरजन्ह वेलनटायन साहबने सिक्रेटरीसे सम्पूर्ण कागज मंगवाये और अपने रूबरू रख कर कहा कि यह कागज अलग २ थे और अबएक किताबमें सिलेजुये हैं और उनके साथ तर्जुमा लगा

हुआहै यदि अलग २ करकेदेखे जावेंतो उनकी संख्याकमहै कौन सी बात बाधक थी कि तुमने कागज़ नहीं फाड़े। प्र० जो रुपया एक जगह दिया जाता तो फट सक्तेथे परन्तु भिन्न भिन्न समय और भिन्न भिन्न जगहपर रुपया दिया गया फिर किसतरह फटसक्तेथे। प्र०–परन्तु मैं जानताहूं कि एक प्रश्नका तुम उत्तरभूं बयान करो कौनसी बात बाधकथी कि तुमने कागजनहीं फाड़ेजिनकागजोंनेतुम्हारेऔरमहाराजा साहबके अपराधोंकी सिद्धकत की? उ०–मुजको इतना सावकाश नहींथा किउन कागजों कोफाड़ता।प्र०–अवकाशसे तुम्हारा क्या मतलबहै?उ०–मुझेऐसा अवसरन मिलाफिर मैंक्योंकरफाड़ डालता। प्र०–जोमनुष्य आपके नगरमें किसीको बिषदेता है औरउसपरअपराध साबितहोजाताहै तोउसकोक्यादण्डदिया जाताहै? उ०–दण्डदिया जाताहै। प्र०–यहतो मैंभीजानताहूं किदण्डदिया जाताहै परन्तु यहबताओ किफांसी दीजातीहै वाकौनसा दण्डदियाजाताहै? उ०–दण्डदिया जाताहै परन्तु मैंने क़ानून नहीं देखा। प्र०–तुमको कुछ भीखयाल है किक्या दण्ड दिया जाता है? उ०–मैं कुछ नहीं जानता। प्र०–मुझ को खयालथा कि तुम जानतेहोगे परन्तु बतलाओ कि तुम्हारे विचारसे क्या दण्डदिया जाताहै? उ०–जो कुछकि जजलोग उचित समझते हैं दण्ड दिया जाताहै। प्र०–कभी किसी को फांसीभी दीजातीहै? उ०–बड़ौदे में किसीको फांसी नहीं दी जाती है मैंने तो किसी को फांसी दिये जाते हुयेनहीं सुना। प्र०–परन्तु तुमजानतेहोकितुमको अपनीगरदन का भीखौफहै? उ०–मेरीगरदन का। प्र०–हांभयथा परअबनहीं रहा? उ० मैंआपसे वर्णनकर चुकाहूं कि जिस वजहसे मैं ने चाक नहीं किया। प्र०–मुझसे फिर बयान करो? उ०–ऐसे कागज कई महकमोंमें थे मुझको फाड़नेका अवसरनमिला। प्र०–वहसब कागज तुम्हारे अधिकारमें थे?उ०–हां। प्र०–तुमवह कागज़

मंगा सक्ते थे? उ०—जब २ महाराजा साहबको किसी बातके दरयाफ़्त करनेकी अवश्यकता होतीथी तोमंगालिये जातेथे। प्र०—महाराजा साहबका नाममतलो परतुमको कौनसी बात बाधकथीकि तुमनेनहींमंगवाये? उ०—वह मेरे क़बजे में थे। प्र०वहकागजकि तुम्हारे क़बजेमेंथे और तुम जानतेथेकिउन्हीं कागजोंसेमारनेके उद्योगसेपकड़े जाओगे तोतुमने क्योंउनको नहींफाड़ा? उ०—मुझको खयालथाकि कुर्क़ी नहोगी और मैं जानताथा किऐसासमय कभीआवेगा जोआजहै। प्र०—इसी कारण तुमने कागज न फ़ाड़े इसके सिवा कोई और कारण नथा? उ०—हांकोई और ऐसाहेतुनथा। प्र०—मेहरबानीकरके मुझकोउत्तरदो कि तुमनेक्यों खयालनहींकियाकितुमपरऐसा समयनआवेगाजोतुमने कागज़ानहींफाड़ेजोकुछ कागजमशकूक करदियेथे?उ०—मैंनेकई हिसाबोंपर स्याहीडाल दीथी। प्र० किसी बातकेछिपानेकेवास्ते?उ०-हां।प्र०—इसबातकातअल्लुक कुछसालिमसेभी था? उ०—हां। प्र०—और इसबातकेछिपाने का तअल्लुक इस कारगावईसे था? उ०—हांछिपाने केलिये। प्र०—तुमने कुछकिस वास्ते मशकूककिये और सब काग़ज़ात क्यों नहींफाड़े? उ०—मैंने कारकुन को आज्ञादेदी थी कि जैसाउचितहो करो। प्र०—परन्तु एक प्रश्न तुमसे करता हूं जोसब बातोंका सारांशहै बतलाओकि तुमजानतेहो कि तुमने यहसबबातें महाराजासाहबके फंसानेकेवास्ते ईजाद कींथीं? उ०—मैंने यहसबबातेंइसलियेकींथीं कियदिमहाराजासाहब पकड़ेजावें तो छूटजावें। प्र०—तुम सौगन्धखासक्तेहोकि यह सबउपाय तुमने महाराजासाहबके माखूज करने को ईजाद नहीं किये? उ०—नहीं—महाराज के अपराधी ठहरने के लिये यह उपाय नहीं किये। प्र०—सरदिनकररावने कहा काग़ज़ोंकी पहिली हालतसे महाराजासाहब माखूज नहीं होसक्तेथे परन्तु जबतुमने रक़मों पर स्याहीडालदी तो अपराधी बनने का कारणहोगया तुमने ऐसा क्यों किया? उ०

महाराजा साहबने मुझसे कहाकि तुम इनरकमों को मग्-वूककरो तो मैंने स्याहीडालदी—सरजन्बेलनटायन साहबने गवाहसे कहाकि मेरी ओर देखो मैंभी यही प्रश्नकरूंगा जो सरदिनकरराव ने किया। प्र०—जिसभांतिकी तुमरकमों को निकालतेहो अर्थात्बड़े २ धब्बे स्याहीके हिसाबपर डालकर तो लोगोंका ध्यान शीघ्रही स्याहीके धब्बोंपरजायगा? उ० मुझको उससमय इसबातका खयालन था—श्रीमान् महाराजासेंधिया ने कहा—पांचजगह हिसाब रहाकरता था पांचों जगहके हिसाब में ऐसेबड़े २ धब्बेपड़ेहुये हैं—परन्तु यहप्रश्न गवाहसे नहीं कियागया। प्र०—सरजन्बेलनटायनसाहब ने कहा मैं तुमसे दो एक और प्रश्नकरूंगा क्या तुमको इसबात का ध्याननथा कि स्याहीके बड़े २ धब्बे बुरे मालूमहोंगे? उ० अबमुझको भी बेमौका मालूमहोते हैं परन्तु उससमय कुछ इसबातका ध्याननथा। प्र०—यदि तुमजानतेथे कि कुछतहक़ीकातनहोगी तो स्याहीकेडालने का क्या कारणथा? उ० यहसबब था कि किसी ग़ैर आदमीको हाल न मालूमहो। प्र०—मुझसे वर्णनकरो कितुम अच्छीतरह जानते थे कि जब तुम इकरार न करोगे जेलखानेसे बाहर न निकलोगे? उ० हां मैं जानता था। प्र०—प्रथम तुम गोरोंके पहिरे में थे? उ०—दोदिनतक सेनापतीकी कचहरीमेंरहा। प्र०—तुमअकेले वहांक़ैद रहे वा कोई और भी मनुष्यतुम्हारे साथथा? उ० मेरेसाथ केवलएक सिपाहीथा। प्र०—केवलदोदिन और दो रात क़ैदरहे? उ०—हां। प्र०—मैंजानताहूं कि रातको तुम पलंगपर सोतेहोगे? उ०—जिसजगह मैंदिनको बैठाथावहीं रात्रिको सोरहा। प्र०—सिपाहीतुम्हारे साथरहनेकेवास्तेमिला था? उ०—उस सिपाहीका मुझ पर पहिराथा ताकि मेरी हिफाजतकरेऔर मैंभागनजाऊं। प्र०—इसके उपरान्ततुम्हारे साथक्या मुआमिला हुआ? उ०—मैं वहां से रेजीडन्सी में आया। प्र०—वहांसे तुम्हारे साथ लोगोंने क्याकिया? उ०

मुझको एक कमरेमें रक्खा जहां सिपाहियोंका पहिरा था। प्र०—पुलिसके हवालेकबसे कियेगये? उ०—१६—दिनकेपश्चात् जब मैंने सब बातोंका इक़रार किया। प्र०—आजकल जबतुम अदालतमें नहींहोते हो। क्या२करतेहो? उ०—मैं एक डेरे मेंरहा करताहूं जबवहां मनुष्य कहतेहैं बैठजाओ बैठजाता हूं जबखड़े होनेको कहतेहैं खड़ाहोजाता हूं। प्र०—अबतुम पुलिसकी हिरासतमें नहींहो? उ०—जहांमैंहूं वहांपुलिस के लोगोंका पहिराहै। प्र०—उनका क्यानाम है? उ०—मैं नहींजानता चौथेदिन पहिराबदला जाताहै? प्र०—जबयह मुकद्दमापूर्ण होजायगा तोतुम्हारा क्याहोगा?उ०—जोसाहब जजतजवीज करेंगेवही होगा। प्र०—स्पष्टरीतिसे कहोकिइस के क्याअर्थहै हैं? उ०—जो किजज साहिबों की रायहोगी वहीहोगा। प्र०—हम नहीं समझते कि तुम्हाराक्या मतलब है? उ०—मेरा यह अपराध है कि मैंनेसब बातोंका इकरार कर लिया यदि मैं निर्दोष हूं तो मैं छूटजाऊंगा नहीं तो जो कुछदण्ड होगामालूम होजायगा। प्र०—तुम्हारामतलब यहहैकिजिस प्रकार तहकीक़ातकी रूदादहोगी उसीप्रकार दण्डहोगायदिकमीशनके मेम्बरतुम्हारी एकबातका भीनिश्चय नकरेंतो क्याहोगा? उ०—मुझकोदण्ड मिलेगा। प्र०—यदि तुम्हारे बयान पर निश्चय करेंतो क्याहोगा? उ०—मुझको छोड़देंगे और छूटने का सार्टीफिकटदेंगे। प्र०—मुझसेवर्णन करोकि प्रथममें किसतारीख़को करनैलफियर साहबकेविषदेने का उद्योग हुआ था और इसविषय मेंकौन २ उपाय कियेगयेथे? उ०—जोउपाय कियेगये उनकामैं इज़हारमें वर्णन कर चुकाहूं। प्र०—परजो तुमने मिस्टररिचीसाहब के सम्मुख वर्णन कियाथा वहमेरे रूबरूभी वर्णनकरोकि कितने उपाय विषके देनेमें हुये? उ०—पांचउपाय कियेगयेअर्थात् चार तोले संखिया दो बेर करके और दोतोले पिसा हुवा हीरा और एक घीघीदवा की तय्यारकी गई। प्र०—जिस घीघीमें

तुम हकीमकी दवाकहते हो उसमें क्या था ? उ०—उसमें कालेसर्प और काले चींटोंका सततथा। प्र०—इसशीशीकाकौन साहमलाथा पहिला, दूसरा, तीसरा, चौथा, वा पांचवां,? उ०—मुझेस्मर्ण नहींकि कौनसाथा। प्र०--यादकरोकि कौन सा हमलाथा ? उ०—मैं किसतरह याद करसक्ता हूं। प्र० मैं उसबयान को देखरहा हूं जो तुमने मिस्टररिचीसाहब के रूबरू बयानकियाथा कि तीनबेर करनैलफियरसाहबके मारने के वास्ते उद्योगकियागया--प्रथमउसदवासेजोहकीमने बनाई थी, द्वितीय फोड़ेके मरहममें विष डालागया, तृतीय, संखिये के जरियेसे जब शर्बतमें विषडालागया ? उ०—हां मैंनेयही वर्णनकिया था। प्र०—क्या यह बातठीक है ? उ०—गलतकि सतरहहोसक्ती है। प्र०—किस तारीख़ को हकीमकेपास से तुम्हारेपास शीशीआईथी ? उ०—मुझेस्मर्णनहीं। प्र०—कोई तारीख़ तोयादहोगी तुम्हारी यादबहुतअच्छी है वर्णनकरो उ०—शायद आश्विनका महीना था॥

सुतरज्जिमसे पूछागया कि आश्विन कबहोता है—सुतरज्जिमने कहाकि अक्टूबर और नवम्बरमें होता है। प्र०—दिवालीके कितनेदिन पहिले ? उ०—इतना मुझको स्मर्णहोता तो मैं तारीख़ बयान करदेता॥

सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा कि माइलार्ड—मुझको गवाहसे और भी प्रश्नकरनेहैं परन्तु अबदोबजगयेहैं इसलिये टिफनका समय आगया, सोकमीशनके मेम्बर टिफनखाने के लियेगये, जबटिफनखाकर आयेतो सरजन्टबेलनटायनसाहब फिर प्रश्न करने लगे॥

प्र०—क्या संखियेके बेचने का निषेध था और महाराजा साहबकी आज्ञाकेबिना नहीं बेचा जाताथा ? उ०—संखिया फौजदारीके महकमे में मिला करती थी। प्र०—महाराजा साहब की आज्ञासे सदा मिलती थी ? उ०—जो मनुष्य कि फौजदारीका प्रधानहै वह इसबात को जानता होगा। प्र०

तुम इसबातको नहींजानते ? उ०—मैंने कभी फौजदारी का काम नहींकिया इसलिये मैंनहीं जनता। प्र०—तुमयह नहीं जानतेकि महाराजासाहब की आज्ञासे जितनी कि संखिया की आवश्यकताहोती थी मिलसक्ती थी ? उ०—हांमहाराजासाहबकी आज्ञासे संखियामिलसक्ती थी। प्र०—फिरकिस वास्ते महाराजासाहबकी आज्ञासे तुमनेसंखिया न मंगवाई उ०—ऊरसुजनीवद्याने कहाकि महाराजासाहब से आज्ञा लेकर मैं संखिया दूंगा। प्र०—परन्तु जब तुमको महाराजा साहबने आज्ञादीथीतो फिरसंखियेका मंगानाकौन कठिनथा उ०—महाराजासाहबने केवल जुबानी आज्ञादीथी कोईलेख न था। प्र०—तुमने तहरीरी आज्ञाक्योंनहीं लेली ? उ०—महाराजासाहबने मुझसेकहा था कि तुमलिखभेजो कि घोड़े की दवाकेलिये संखियेकी आवश्यकताहै। प्र०—तुमनेनूरुद्दीन बौहरेको हालमें नहीं देखाथा ? उ०—इस हालके पूछने से आपका क्या मतलब है। प्र०—तुम जानते हो कि इसहालके पूछनेसे जोकुछ मेरामतलबहै ? उ०—जबमैं छूटाहुवाथा या जबसे कि मैं क़ैदहूं। प्र०—तुमने नूरुद्दीनको अन्तमें कबदेखा था ? उ०—मैंआपका मतलब नहींसमझा। प्र०—तुममेरेप्रश्न को टालतेहो और उत्तरदेना नहींचाहते साहबप्रेज़ीडण्ट ने कहाकि गवाहसे साफजवाब लियाजाय ? उ०—जबमैंक़ैद था उससमय नूरुद्दीनको मेरे निकट लायेथे। प्र०—इसबात को कितनासमयबीता ? उ०—मुझेस्मर्णनहीं। प्र०—इसबातसे तुम्हारा क्यामतलबहै कि दोतीनदिनसे तुमनेउसकोनहींदेखा उ०—नहीं। प्र०—अबीर हफ्तेमेंउसको देखा ? उ०—नहीं। प्र०—जबतुम्हारा उसकासाम्हनाहुवातो उसनेतुमसे कहाथा कि तुम बराबर झूठबोलतेहो ? उ०—उसने कोईबात मुझसे ऐसी नहींकही जोकुछ उसनेमुझसे कहाउसको मैंवर्णनकरचुका। प्र०—तुमनेउसके रूबरू संखिये के मोललेनेका वर्णनकियाथा ? उ०—हांमैने उसकेरूबरू कहाथा किसंखिया

मोलली गई। प्र०—क्या उसने तुमसे कहा था कि तुम झूठ बोलते हो? उ०—मेरे रूबरू उसने कुछ नहीं कहा था। प्र०—उसने तुम्हारे रूबरू इन्कार नहीं किया? उ०—वह मेरे रूबरू पेश किया गया और फिर उसको ले गये। प्र०—तुम्हारे रूबरू किसने पेश किया था? उ०—एक अफ्सर था परन्तु मैं उसको नहीं जानता कि कौन था। प्र०—हिन्दुस्तानी अफ्सर था? उ०—हां प्र०—अकबर अली था? उ०—स्मर्ण नहीं। प्र०—अब्दुल अली? उ०—याद नहीं। प्र०—ध्यान करके याद करो अकबर अली था उ०—इस समय क्योंकर याद आ सक्ता है। प्र०—गजानन्द पतिल था? उ०—वह न था। प्र०—शायद अकबर अली या अब्दुल अली होगा? उ०—मुझको स्मर्ण नहीं शायद हो। प्र०—पस वह अफ्सर नूरुद्दीन को तुम्हारे सम्मुख लाये और कहा कि इस मनुष्य से तुमने संखिया मोल ली थी? उ०—हां प्र०—उसको फिर जेलखाने को ले गये? उ०—मुझको मालूम नहीं कि कहां ले गये। प्र०—उसको कोई अफ्सर ले गया? उ०—हां। प्र०—तुम्हारे सम्मुख गजाबा भी लाया गया? उ०—हां प्र०—अकबर अली उसको लाया था? उ०—अकबर अली नहीं लाया। प्र० फिर कौन लाया था? उ०—गजानन्द पतिल लाया था। प्र० जो कुछ उसकी निस्बत तुम्हारा बयान था उसके रूबरू भी तुमने उससे कहा था? ०—हां मैंने कहा और वह बैठा हुआ सुना किया। प्र०—उसको भी फिर तुम्हारे पास से ले गये? उ०—हां वह भी भेज दिया गया। प्र०—तुमने वर्णन किया है कि तुमने सालिम को शीशी दी थी? उ०—हां। प्र०—तुम जानते थे कि उसमें विष है? उ०—हां। प्र०—तुमने वर्णन किया है कि जब शीशी दी गई उस समय महाराजा साहब उपस्थित थे? उ० गजाबा महाराजा साहब की आज्ञानुकूल शीशी लाया था प्रेजीडेन्ट साहबने पूछा क्या महाराजा साहब उस समय उपस्थित थे गवाहने कहा कि अपने इजहार में मैंने बयान किया है कि गजाबा मेरे घरपर शीशी लाया था मिस्टर मैलबल साहबने कहा

गवाहसे इसतरह पूछा जायकि तुमने वहशीशी कब दीथी ? उ०—मैं महाराजासाहबके साथथा जिससमय अपनेघर को सालिमगया वहशीशी देदीथी। प्र०—सरजन्ट बेलनटायनसाहबनेकहाक्यातुमनहीं कहसक्तेकिजिससमय शीशीदीगईउस समय महाराजासाहब वर्त्तमानथे ? उ०—उससमय महाराजा साहब मौजूद थे मैंने अपने घरपर सालिमको शीशी दी थी। प्र०—शीशीके देनेकेसमय तुमने सालिमसे क्याकहाथा ? उ०—मैंने कहाथा कि इसशीशीको रावजीके पासलेजाओ। प्र०—क्या तुमने कहाथा कि रावजी इसशीशी को क्याकरें ? उ०—कुछकहनेकीआवश्यकतानथी वहजानतान था जिसवास्ते भेजीगई। प्र०—तुमनेउससे पहिलेकभी कहाथा ? उ०—नहीं। प्र०—तुमजानतेथे कि शीशी किस वास्ते दीगई ? उ०—हां। प्र०—बयानकरो किसवास्तेथी ? उ०—इसवास्ते किशीशीको दवाजल में डालदी जायकि स्नान करतेही शरीर में फफोले पड़जावें। प्र०—इससे तुम्हारा यहमतलबहै कि करनैल फियर साहबको देहमें फफोलेपड़जावें ? उ०—हां। प्र०—किसतरह से फफोलेपड़जाते ? उ०—जबशीशीको दवापानीमें पड़तीतेा निश्चंदेहफफोलेपड़जाते। प्र०—तुमने फिर सुना कि शीशीको दवाजलमें डालीगई ? उ०—मैंने नहींसुना मालूमनहीं कि डालीगई वा नहीं। प्र०—यादकरो कि यहबात कबहुईथी ? उ०—दसहरेके कईदिनपहिले या थोड़ेदिनपीछे। प्र०—तुमने कभीनहींसुनाकि उसशीशीकोदवाक्याहुई ? उ०—मैंनेकभी नहींसुना। प्र०—न तुमने कभीपूछा ? उ०—नहीं। प्र०—यशवन्तसदैव महलमेंआयाकरताथा ? उ०—जबकोई कामहोता उसदिन आता था और सोमवार और वृहस्पतिवारको सदा आयाकरता था। प्र०—और सालिम भी आयाकरता था ? उ०—हां जबकभी सवारीहुआ करतीथी आताथा अथवाजब कभी चिट्ठीलाता तेा दरमियानमें भी आया करताथा। प्र० तुमने सालिमसे कभी नहीं पूछा किजो शीशी करनैलफियर

साहबके मारडालनेको गईथी उसका तुमने क्याकिया ? उ० कभीनहीं पूछा ? प्र०—क्यातुमको पूछनेकी कुछ आवश्यकता नथी ? उ०—नहीं ॥

ऐडवकेटजनरलनेदुबारह इज़हारदामोदरपंथके लिये ॥

तुमनेअभी मेरेसाथीसे कहाहैकि पांचजगह हिसाब लिखा जाताथा ? उ०—हांसाहबकहाहै। प्र०—वहपांच जगह किसवास्तेहिसाबलिखेजातेथे ? उ०—साहब आपकोइससेक्यामतलब है। प्र०—मैंइस वास्तेपूछताहूं किमेरे साथीने तुमसेपूछा था कितुमने उनपांचोंजगहके हिसाबोंकोखो क्योंनदिया और धब्बे क्योंडालदिये?उ०—महाराजासाहबजुबानीमुझकोआज्ञादिया करतेथे औरउनके आज्ञापालन की याददाश्त लिखी जाती थीऔरयाददाश्त जहांसेरुपयामिलताथा वहीहिसाबमें दरज होतीथी औरफिरकच्चेखाते में दर्जहोतीथी फिर पक्केखाते में दरजहोतीथी फिरथैलीबन्दहिसाबमें दर्ज होतीथी। प्र०—क्या यहसब हिसाब तुम्हारे अधिकार मेंथे ? उ०—हांसाहब। प्र० तुमनेतोवर्णन कियाहै किजबसे तुम नौकर हुयेहो एक लक्ष रुपया तुम्हारीतहवीलसे खर्चहुआहै क्यायहबात सचहै? उ० हांसाहबयहबातसचहै। प्र०—क्या सम्पूर्णखानगी हिसाब महाराजकेतुम्हारेद्वारा होतेथे ? उ०—हांसाहब होतेथे। प्र०—इन चारबर्षतुम्हारी नौकरीकी अवधिमें जोमहराजनेहर मनुष्योंको रुपया दिलवाया किसीके दिलवानेकी तहरीरीआज्ञाभी महाराजनेतुमकोदीथी ? उ०-नहीं। प्र०—महाराज तुम्हारीहिसाब कीफर्दमें भीदस्तखत कियाकरतेथे ? उ०—हांसाहब थैलीबन्द हिसाबकी फर्दपर दस्तखत करतेथे। प्र०—थैलीबन्द हिसाब क्याबस्तुहै ? उ०—रोजमर्राकेखर्चका खाताहै। प्र०—तुमनेअभी कहा कि एक हिसाब तुमने खोडाला ? उ०—हां साहब वह हीरों का हिसाब था। प्र०—तुम्हारे इजहार होनेके पहिले तुमनेनरसू और रावजीके इक़रार करनेका हालसुनाथा ? उ०—हांसाहब सुनाथा। प्र०—मालूम होताहै कितुमनेइसी

सबबसे वह कागजतलफ करडाला ? उ०—नहीं साहब। प्र० उससमयसे जबसेकितुमने इकारार कियाहै और तुम कैदहो तुमने राजी और नरसूके मुंहसेकुछहालसुनाथा ? उ०—नहीं साहबकुछनहींसुना। प्र०—तुम्हारेइजहार जोलियेगयेतोक्या मरहठीभाषामेंलियेगयेथे? उ०—नहींसाहब उसकाअंगरेजी भाषामें उल्था कियागयाथा। प्र०—तुमकोवहसब सुनादिया गया था ? उ०—हां साहबसुना दिया गयाथा। प्र०—तुमने उसपर दस्तखत कियेथे ? उ०—हांसाहब कियेथे॥

इज़हार हेमचन्द फतह चन्द जौहरी॥

मिस्टर अनवरारटी साहबने इस गवाहके इजहार लिये उसनेवर्णन किया कि मैं बड़ौदेमें रहता हूं और पेशा जौहरी का करता हूं मैंने नानाजीवतिल को बहुधा देखाहै वहगायकवाड़ का नौकरहै नानाजीवतिल के पास मैं कभी जवाहिर नहीं लेगया। प्र०—जो तुम नहीं लेगये तो कौन लेगयाथा ? उ०—किस क़ीमतके। प्र०—तुम याकोई और मनुष्य तुम्हारी दूकान से कुछ जवाहिरात लेगयेथे ? उ०—किसवक्त। प्र० आखिर दसहरेमें ? उ० मैंआखिर दसहरेमें कभीजवाहिरात नहीं लेगया। प्र०—नानाजीवतिल के पास तुम कभी हीरे नहीं लेगये ? उ०—नहीं। प्र०—महाराजा साहबके महल को कभी हीरे नहीं लेगये ? उ०—क्या आप हाल का जिक्र पूछतेहैं। प्र०—हांहालका जिक्रपूछताहूं ? उ०—नहींमैंहाल में कभीनहीं लेगया। प्र०—व्यतीत दसहरेमें लेगयेथे ? उ० हांलेगयाथा। प्र०—किसने मंगायेथे ? उ०—नानाजीवतिल नेकहा कि कुछहीरे लाओ। प्र०—तुमकुछहीरे लेगयेथे ? उ०—हांलेगयाथा परन्तु मुझेवेपसंनमिले। प्र०—तुम किसके पासलेगयेथे ? उ०—नानाजी वतिलके पास लेगयाथा। प्र० उसके उपरान्तभी फिरकभी लेगये ? उ०—नहीं। प्र०—तुम कभीमहाराजा साहबके महलमें हीरेलेगयेथे ? उ०—नहीं। प्र०—उसकेपीछे महाराजा साहबके महलको हीरेलेगयेथे ?

उ०—नहींनानाजी वतिलने तुमसेअन्तके दसहरेमें कुछहीरे लियेथे ? उ०—नहीं। प्र०—तुमने कुछरुपया हीरोंके मोलका पायाथा ? उ०—मैनेकुछ रुपयानहीं पाया। प्र०—तुमनेदस-हरेके दिनोंमेंभी नानाजी वतिलसेभी कुछरुपया नहींपाया ? उ०—हांमैने कुछरुपया पायाथा परन्तु वहरुपया कार्तिकके महीने काथा॥

गवाहने वर्णनकिया कि मैंविनायकराव व्यंकटेशको जान-ताहूं-आषाढ़बदी ७ वा ८ को उनकेपास कुछहीरे लेगयाथा वहगुलाबीहीरेथे और ऐसे २ छोटेथे कि एकरत्तीमें छः सात हीरेचढ़तेहैं मैनेउनसे कुछरुपया पहिलेकाभी पायाथा—और गवाहने कहा कि मैने सात हजार रुपयेकी झण्डी शिवचन्द खुशहालचन्द के नामकीदी थी दो हजार रुपये एक मरतबा चारहजार एकमरतबा और दो हजारएक मरतबा और फिर दो हजारएक मरतबापाया इसप्रकार दसहजार रुपयाथाया जबमैं महिलसे लौट आया तो जिन २ लोगोंके हीरेथे मैंने उनको लौटादिये उनदिनों मैंनेदामोदर पन्थको कभी नहीं देखान मैंनेउनके हाथकभी हीरेबेचे औरन मैंने नानावतिल और विनायक राव के हाथ कभी बेचे मिस्टर सूटर साहबने जो मेरे इजहार लियेथे वहसुझे स्मरणहैं मिस्टर अनवरारटी साहबने कहा कि माईलार्ड—यदिआज्ञा होतो उन इजहा-रातमें जो इस गवाहने मिस्टरसूटर साहब के रूबरू दिये हैं प्रश्नकिये जावें—साहबप्रेजीडण्टने कहाकि उन इजहारातको आपशहादतकी भांतिक़रार नहीं देसक्ते सरजन्ट बेलनटायन साहबनेकहा मैंऐसेसवालपर इन्कारकरताहूंसाहबप्रेजीडण्ट नेकहा जो इजहार इस गवाहने मिस्टरसूटरसाहबके रूबरू दियेहैं वहपढ़कर गवाहको सुनादिये जावें सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा ज़रूरउचित समझतेहैं कियह इजहार पढ़कर सुना दियेजावें प्रेजीडण्टसाहबने कहाकिहांपढ़करसुना दिये जावें अगरयह गवाहगवाहीके देनेमें ताम्मुलकरताहै सरजन्ट

बेलनटाइन साहबनेकहा मेरामतलब इसइन्कारसे यहहै कि चूंकिअबयह गवाहशहादत देनेमेंताम्मुल करता है इसलिये सरकारी कौंसलियोंके तजवीजके अनुसार उसके रूबरूपहिले के इजहार न पढ़े जावें॥

साहब प्रेसीडण्टने कहा मैंने कौंसिलके मेम्बरोंसे सलाह ली उनकीरायहै किजो ऐडवकेटजनरल गवाहको याददिलावें किउसने मिस्टर सूटरसाहबके रूबरू क्याइजहार दियेथे तोकुछ सुनायका नहींहै—मिस्टर अनवरारटी साहबनेगवाहसे प्रश्नकिया कि तुमने मिस्टरसूटरसाहबके रूबरूजो इजहारदियेथे वह गुजरातीभाषामें थे वा अंगरेजी में थे वा दोनोंभाषाओंमें? उ०—मेरेइजहार गुजरातीभाषामें हुयेथे प्र०—वहइजहार तुमकोपढ़कर सुनादियेगयेथे? उ०—वह इजहार आपही सूटरसाहबने लिखेथे। प्र०—तुमकोपढ़कर सुनादिये गयेथे वा तुमने आपही उनकोपढ़ा? उ०—संध्या को इजहारलिखेगये और मुझसे दस्तखत करायेथे परन्तुसुनायेनहींगये मैंजानताहूंकि उसदिन मेराबयान ठीक२नहीं लिखागया मुझनेजबरदस्ती दस्तखतकरालियेथे। प्र०—तुमने सरल्यूइसपीली साहबके रूबरूदस्तखत नहींकिये? उ०—गजानन्दवतिलने मुझसेकहाकि तुमकुछ नबोलो और मुखसेकुछ बात न निकालो और दस्तखतकरदो गवाहसे फिरयही प्रश्न कियागया उसनेकहा कि सरल्यूइसपीली साहबकेरूबरू सुजकी पढ़कर नहींसुनायेगये। प्र०—क्या तुमने सरल्यूइस पीली साहब के रूबरू अपनेइजहार दस्तखत नहींकिये? उ०—नहीं गवाहको एककागज़ दियागया और पूछागया कियहइजहार तुम्हारा और दस्तखततुम्हारेहैं वानहीं गवाहने कहाकिनमेरे यह इजहार हैं नमेरेयहदस्तखत हैं गवाहसे फिरकहा गया अच्छीतरह ध्यानकर कहोसो गवाहनेबहुतदेरके पीछे कहा कि हां यह मेरे दस्तखत हैं॥

साहब प्रेसीडण्टने मुतरज्जिमसे कहा कि गवाहने अपने

दस्तखत होनेसे पहिले क्या इन्कार कियाथा मुरज्जिमनेकहा किहां दस्तखतसे और उनदोलकीरोंसे जो दस्तखत के ऊपर हैं इन्कार किया था, साहबप्रेजीडण्टने कहा क्या इसगवाह ने कहाथा कि मेरेदस्तखत नहीं हैं, सुतरज्जिम ने कहा हां, गवाहने यही कहा था मिस्टर अनवरारटी साहब गवाह से फिर पूछनेलगे। प्र०—यहदस्तखत और जोलकीर दस्तखत के ऊपर हैं तुम्हारी लिखीहुईहै ? उ०—हां सुतरज्जिमसे कहा गयाकि दस्तखतकेऊपर जोसतरलिखीहै उसको पढ़ो सोसुतरज्जिमने उसकोपढ़ा उसकामतलब यहथाकि मेरे रूबरू इजहारपढ़ेगये और सूटरसाहबके रूबरू दस्तखतकरता हूं, इजहारठीकहैं, लिखाहुआ ८ वीफरवरी सन् १८७५ ई०॥

गवाहने वर्णनकिया किमैंने लिखाया परन्तु मुझपर बड़ा अन्यायहुआ था लाचारहोकर मुझको दस्तखतकरने पड़े मैं गुजरातीभाषा में भलीभांति लिखपढ़ नहीं सक्ता मैं उसको यथायोग्य समझा भी नहीं कि इजहारों में क्या लिखागया मिस्टर अनवरारटी साहब सुतरज्जिम से बोले कि गवाह से पूछोकितुमनेमिस्टर सूटरसाहबकेरूबरूयहकहाथाकिदो तीन दिनपीछे दसहरेके नानाजीवतिलने जिनके आधीन गायकवार कानवाहिरखानाथामुझसे और और जौहरियोंसे कहलाभेजा किहीरोंकी कुछकमीहै तुमलाओ सोमैं और जौहरीउसीदिन हीरोंकी कनीलेगयेथे परन्तु दूसरेदिन वापिस देगये दोदिन के उपरान्त फिर नानाजीवतिलने मुझसे हीरे की कनीमंगवाईसोमैं लेकरगया और कीमतके ठहरनेके उपरान्तवहकनी मोललीगई इसके पांचचारदिन के अनन्तर नानाजीवतिलने फिर हीरेकी कनी मंगवाई परन्तु उसदिन जवाहिरखाने में स्थितनथे विनायकराव नानाजीकेसाले वहांथे उन्होंने हीरों को तोला और मोल चुकाकर दामोदरपन्थके निकट लेगये दामोदरपन्थनेकहाकि मोलअधिकहै परन्तु उनको मेरेनिकट रखजाओ अगरजरूरत होगी तो मोललियेजायंगे दोपुड़ियों

में हीरेथे उनमेंसे एकपुड़िया रक्खीगई और दोतीन दिनके पीछे दूसरी पुड़िया वापिसीमिली ॥

गवाहने वर्णनकिया कि मैंने मिस्टरसूटर साहबके रूबरू यह इज़हार नहीं दियेजो उन्होंने चाहासुझते लिखालिया जोकुछ कि मुझको इससमय इज़हार सुनाये गये सब अशुद्ध हैं मैंने सूटर साहबके सम्मुख कदापि ऐसावर्णन नहींकिया॥

मिस्टर अनवरारटी साहबने कहा तुमनेयह इज़हार नहीं दियेहैं कि दो तीन दिनके उपरांत जब कि मालूम हुआ कि करनैलफियर साहबके विष दिये जानेका उद्योग किया गया नानाजीवतिल ने मुझसेकहा था कि तुमनेजो हीरोंकीकनीका हिसाबकी किताबमें लिखा है उसवरक़ को फाड़डालो क्योंकि किसीमनुष्यको यहसन्देहनहोकि करनैलफियरसाहबकोहीरे कीकनी दीगईयहबात सुनकरमुझे बड़ाभयहुवा उसवरक़ोंको जिनमेंहीरेकी कनीका हिसाबथा उसीसमय निकलवा डालें और वहांनये पचेलगा दिये—यहसुनकर गवाहने कहा कि मैंने कभीऐसा बयानमिस्टर सूटरसाहबके सम्मुखनहीं किया मेरी किताबेंडेढ़ महीनेसे मिस्टरसूटर साहबके पासहैं ॥

मिस्टरअनवरारटी साहबनेकहा तुमने मिस्टर सूटरसाहबसे नहींकहा कि जो किताबें इससमय मेरेसाम्हने रक्खी हैं और जिनपर (ए) (बी) (सी) अक्षरोंका चिह्न हैं यहवही किताबेंहैं जिनमेंनवीन पचेलगायेगये ॥

गवाहनेकहाकि मैंनेनहीं कहा-मिस्टरअनवरारटीसाहबने कहा तुमनेमिस्टर सूटरसाहबसे यहनहींकहा कि अमुकरकम अमुकपृष्टमेंमिलेगीगवाहनेकहाकिसरकमकाआपवर्णनकरते हैंमिस्टरअनवरारटीसाहबनेकहाकौनरकमजोकिताबमेंलिखी हो? उ०—मैंने कुछनहीं लिखा। प्र०—तुमने मिस्टरसूटरसाहबके सम्मुख यह भी बयान नहीं किया कि हीरेकी कनीका मोल ३२७०) सिक्के बड़ौदाथे उनमेंसे ३०००) मुझकोनानाजी वतिल

नेदिये-यहरुपया दसऔर २४ पृष्टमेंजमाहै ? उ०-मैंने मिस्टर स्यूटर साहब से नहीं कहा और मैंने कोई ऐसा इजहार नहीं दिया जबसेमैंने इजहारदिये मेरेमकानपर कोई पहिरा न था जहांमुझको जानेकी इच्छा होती थी वहां जाता था गवाहको एककिताब दीगई मिस्टरअनवरारटी साहबने कहा कि यह किताब सम्वत् १९३० के लिये जंगदबही है ? उ०-हांसुतरञ्जिमने कहा जंगदबही उसको कहते हैं जिसमें जाकड़की चीजें लिखीजातीहैं-मिस्टर अनवरारटी साहबने पहिलीरकम २७०००) रुपये की पढ़ी जोबाबत फरोखहीरों के गायकवाड़ केहाथथी ? उ०-मुझसे जबरदस्ती गजानन्दवतिल नेयहरक़म लिखाईथी साहबप्रेजीडण्ट मिस्टरअनवरारटी साहबसेबोले इस बयान कोतुम सेक्रेटरी साहब को लिखादो-मिस्टरअनवरारटीसाहबने कहा निहायतसुनासिब है लिखादूंगा साहब प्रेजीडण्ट नेकहाअब साढ़ेचार बजगये हैं मिस्टरअनवरारटी साहबने कहा अभी कुछप्रश्नकरनेशेष हैं ॥

साहबप्रेजीडण्टने मिस्टरऐडवकेट जनरलसे कहा मैं आप केदुखतियार मेंहूं जबतक आपफरमावेंगे मैंसुना करूंगा मिस्टर अनवरारटी साहबने कहादोतीन प्रश्न औरहैं प्रेजीडण्ट साहबनेकहा बेहतरहै आपपूछ लीजिये-गवाहके तरफ मुखातिबहुये । प्र०-तुमनेगजानन्दसे यहरक़में कबदर्जकराईं ? उ०-जिसदिन पानी बरसताथा औरहमलोग डेरेमेंथे । प्र० जोबयान मिस्टरसूटर साहबके सम्मुख तुमनेकिया उससेकितनेपहिले ? उ०-बहुतपहिले । प्र०-बयानकरो कितनेदिन पहिले ? उ०-उसदिनकी संध्याको जबकिमैंने यहइजहार दियाथा जोलिखागया साहब प्रेजीडण्टने कहा गवाह क्या कहताहै समझ में नहीं आता गवाहसेफिर पूछागयाउसने कहाकिभोरके समयमैनेयहरक़म किताबमें दरजकीथीऔर संध्याको मैनेइजहार दियेथे ॥

मिस्टर सरजन्ट बेलन टायनसाहबने इजलासके बरखास्त

होते वक्त प्रेजीडण्टसाहबसे पूछा कि हमनेसुनाहैकि इजलास कावक्त तोआप दूसरा बदलना चाहतेहैं क्या यहबातदुरुस्त है—हांमेरी इच्छाथी परन्तुसमयका बदलना अच्छा नहोगा और चूंकि हमने अब काम शुरूकर दिया है इसी वक्त को रखनाचाहिये इसकेउपरान्त इजलास बरखास्त हुआ॥

तेरहवेंदिन का इजलास॥

आजकेदिन कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बरान् उपस्थितथे श्री मान्मल्हरराव दिनभर नहींआयेमहाराजा सेंधियामध्यान्ह केउपरान्त चलेगये सरल्यूइस पीली साहब थोड़ी देर सुबह केवक्त रहेहेम चन्द फतहचन्द का इजहार फिरशुरू हुआ मिस्टरअनवरारटी साहब फिर इसमनुष्यके इजहार लेनेलगे गवाहको एकहिसाबकी कि ताबदीगई और पूछागयाकियह रकम किसके हाथको लिखी हुईहै? उ०—मेरेहाथकी है। प्र०—तुमनेयहरक़म कबहिसाबमें दरजकी थी? उ०—जबमैंने और रक़में लिखीथीं। प्र०—तुमने यह रक़म क्यों लिखीथी? उ०—गजानन्दने कहा कि तुमइस रक़मको लिखो कि और रक़मेंअशुद्धनहों-मिस्टरअनवरारटी साहबनेमुतरज्जिमसे कहा कि इस किताबकी रकम तर्जुमाकरके पढ़ो सो मुतरज्जिमने पढ़कर सुनाई॥

जोशीपरमानन्दनरोननेएक अंगूठी चुन्नियोंकीजड़ीहुईमोल्ली जिसपर मीनाकियाहुआथा उसकीक़ीमत २१)रु० है॥

सरजनबेलनटायनसाहबके प्रश्न॥

सरजनबेलनटायनसाहबने कहा कि यदि आज्ञा हो तो मुतरज्जिम से किताब की कुछ रकमों को पढ़वाऊं—आज्ञा होने के उपरान्त मुतरज्जिमनेपढ़ा कि मल्हरराव गायकवार के नाम खर्चमेंलिखाहै १६७०)रु० हीरोंके लिये जो दामोदरपन्थको दियेगये—सरजनबेलनटायनसाहबने गवाहसे प्रश्न किया प्र०—गुलाबी और दूसरेरंगके हीरोंमें क्या अन्तरहोता

है ? उ०—कई प्रकारके हीरेहोते हैं। प्र०—तराशने में कुछ इखतिलाफहोताहै वा हीरोंके प्रकारमें कुछअन्तरहोताहै ? उ०—जोहीरे बलन्दीहोतेहैं उनमें अधिक चमकहोतीहै और गुलाबीहीरोंमें कमचमक होतीहै। प्र०—परन्तु मैं पूछताहूं कि तुमने जो रक़मकिताबमें लिखीहै वह शुद्धहै वा अशुद्ध ? उ०—गजानन्द ने मुझसे जबरदस्ती यह रक़मलिखवाई थी। प्र०—तुमसे और महाराजासाहब से हीरोंका लेनदेन कुआ करताथा ? उ०—उससमयमें कुछ लेनदेन नथा। प्र०—तुमने गायकवारको किसीसमय हीरेकी कनी दीथी ? उ०—नहीं। प्र०—तुमजानतेहो हीरेका बुरादा किस को कहतेहैं ? उ० बहुतछोटे २ हीरोंको कहतेहैं। प्र०—तुमने पीसेहुये हीरोंको देखाहै ? उ०—मैंने कभी नहीं देखा। प्र०—तुम्हारे इजहार मिस्टरसूटरसाहबके रूबरूहुयेथे तुमउनको पहिचानते हो ? उ०—उनको मैं नहीं पहिचानता। प्र०—जो तुम देखो तो पहिचानलोगे देखो वहबैठेहुयेहैं डरोमत उनकीतरफदेखो (इससेसमाजमें हंसीहुई) ? उ०—मेरेइजहार दोतीन साहिब लोगोंकेसम्मुख लियेगयेथे। प्र०—तुमने केवल पुलिसके सम्मुख अपनेइजहारदिये या दोतीन साहबोंके रूबरू ? उ०—प्रथम में मेरे इजहार पुलिसके रूबरूहुयेथे। प्र०—फिर क्याहुआ ? उ०—पुलिसके आदमी दोतीन साहिबोंकेरूबरू मुझेलेगये। प्र०—वहांजाकर तुमने फिर इजहारदिये या केवलदस्तखत कियेथे ? उ०—मैंनेकेवल गजानन्दके कहनेसे दस्तखत कियेथे। प्र०—यह दस्तखत सरल्यूइसपीली साहब के रूबरू तुमने कियेथेया उनकेपास जानेके पहिले किये ? उ०—पहिले मेरे इजहारलियेगये और वहांजानेसे पहिले दस्तखतभी कराये थे। प्र०—जब तुम सरल्यूइसपीलीसाहब के पासगये तो कोई कामबाक़ी नथा केवलयहीकि अपने इजहारपढ़ो और कहो कि मेरे दस्तखत है ? उ०—गजानन्दने मुझको बुलाया और दस्तखतकराये और कहा अगर तुम और कुछकहोगे तोमैं

तुमको क़ैद करूंगा। प्र०—परन्तु मैं तुमसे पूछताहूं कि सरल्यूइसपीली साहब भी उससमय उपस्थित थे कोई गलतीनहीं होसक्तीथी तुमने सरल्यूइसपीलीसाहबकेरूबरू कुछकहाथा? उ०—मैंयहभी कहचुकाहूं किमुझको धमकी दीगई और दस्तखत करालियेगये। प्र०—तुमने सरल्यूइसपीलीसाहबके रूबरू दस्तखत कियेथे? उ०—हां। प्र०—और सरल्यूइसपीलीसाहब के रूबरू अपने इज़हारपढ़कर दस्तखतकियेथे? उ०—मैं क्या करता गजानन्दने जबरदस्तीमुझसेदस्तखतकरायेथे। प्र०—तुम बयान करतेगये और गजानन्द लिखतागया? उ०—जो कुछ गजानन्दने चाहालिखलिया। प्र०—इज़हार लिखे जानेकेउपरान्त तुमको सुनायेगयेथे? उ०—नहीं। प्र०—गजानन्दने तुमसे कहाथा कि अगरदस्तखत न करोगे तो जेलखाने भेजदिये जाओगे? उ०—हां। प्र०—जबसे तुमगवाहीदेने केलिये यहां आये गजानन्दको तुमनेदेखा? उ०—नहीं। प्र०—कलउसको देखाथा? उ०—हां कलदेखाथा। प्र०—उसनेतुमसेकुछकहा था? उ०—हां कहा था। प्र०—क्या कहा था? उ०—उसने कहाथा कि तीनलाखरुपये का जमाखर्च तुम्हारे नामलिखा गयाहै वहगलतहै। प्र०—और भी कुछकहाथा? उ०—नहीं। प्र०—कलजब तुम यहांसे गवाही देकरगयेथे कहांरहे? उ० अपने घरको चलगया। प्र०—अबयह बातमुझसे पूछताहूं कि तुमनेयहबात सूटरसाहबसे कहीया नहींकि जबकितुमने सुना किकरनैलफियरसाहबको किसीने विषदिया तोनानाजीवतिलने मुझसेकहाथाकि तुमनेअपनी किताबमें हीरोंकीखरीदके बारेमेंलिखाहैउसकोदूर करदो?उ०—मुझसे नानाजीवतिलने नकहानउनसेमुझसे भेंटहुईऔर नमैनेकिसीके हाथहीरेबेचे प्र०—क्यातुमने मिस्टरसूटरसाहबसे यहभीकहाथाकिमैंनानाजीवतिलकी यहबातसुनकर अतिभयमानंजवाथा?उ०—नहीं साहब मैनेकदाचित् नहींकहा। प्र०—क्यातुमने उसकेकहने से अपनी बही की पन्नी बदलडाली? उ०—नहीं साहब ग-

जानन्दवतिलने जबरदस्ती बदलडाली। प्र०—अच्छा १० और २४ बहीका पन्नापढ़ो? उ०—हांसाहब वहांदोहजार रुपये कीरसीदहै। प्र०—यहदोहजार रुपयेतुमने किससेपाये? उ० नानाजीवतिलसे पायेथे। प्र०—यहरुपया तुमको नानाजीवतिलसे किसके मर्द्द मिलाथा? उ०—साहब मुझको झगडीका बाक़ीरुपया मिलाथा। प्र०—वहझगडी कितनेरुपये कीहै? उ० सातहजार रुपयेकीहै। प्र०—गजानन्दवतिलकेपासक्यासबतुम्हारे कागजथे? उ०—हांसाहब मेरेबारह बही खातेहैं सरजन्ट बेलनटायनसाहबने कहाक्या यहकिताब तुम्हारीहै? उ०—हां मेरीहै। प्र०—यहझगिडयां तुम्हारी दूकानकी हैं? उ०—हां मेरीदूकानकीहैं। प्र०—पहिली झगडीकी क्यातारीखहै? उ० पहिलीझगडी की तारीख १० आषाढ़शुदीहै और वह३०००) रुपयेकीहै और दूसरीझगडी ४०००) रुपयेकीहै। प्र०—यह कौनसम्वत्की झगिडयांहैं? उ०—सम्वत् १९३० कीहैं। प्र० तीसरी झगडीकौनतारीखकीहै? उ०—तीसरीझगडी४५०)रु० की है और वहकार्त्तिक शुदी ३० तिथि की लिखीहै॥

ऐडवकेटजनरल के प्रश्न॥

प्र०—तुमने सरजन्ट बेलनटायन साहबसे कहाहै कि मैने दोबेर हीरोंके बेचनेकाहिसाब जोमहाराजा साहबके हाथ बेचेहैं किताबमें लिखाहै और फिर तुमयहभी कहतेहो कि महाराजा साहब से मेरा कुछ लेन दैन नथा? उ०—महाराजा साहबसेकुछलेनदेन हीरोंका नथा। प्र०—देखोइसदृष्टको औरवर्णन करोकि किसके हाथका लिखाझआहै? उ० मुझको गुमाश्तेका नाम स्मर्ण नहीं है जिसके हाथ का लिखा झआहैमेरीदूकानकी यहरीतिहै कि जोमनुष्य दूकानमें आताथाउसीसे हिसाबलिखवा लेताथा। प्र०—यहरक़मजोकिताब मेंलिखीहै सहीहै? उ०—हां सहीहै ऐडवकेट जनरलने मुतरज्जिमसेकहा कि इसकोपढ़ो सोमुतरज्जिमने उसकोपढ़ा उसमें यहलिखाथा॥

आषाढ़शुदी १३ को नाना साहबकेहाथ २८०००) रुपयेके हीरेबेचे गये उसके उपरान्त तौल आदिका ब्यौरा लिखाहै। प्र०–२८०००) रुपयेकेहीरेजो तुमनेबेचे किसी आभूषणमें जड़े हुयेथे या अलगथे? उ०–उनहीरोंका हारथा। प्र०–हीरोंका हारबनकरकिसकोदियाजाताथा?उ०-बिनायकरावऔरनाना वतिलको ऐसीवस्तु दोजातीथी जोमनुष्य जवाहर खानेमेंमौजूदहोताथा वहउसको लेलियाकरताथा। प्र०–यहहारकिस के लियेबनाथा? उ०–किसी को दियागया या फेंकदियागया मुझको मालूम नहीं। प्र०–बिनायकराव गजानन्द ने किसके हिसाबमें यहहार लिखाहै? उ०–सरकारके हिसाबमें सररिचर्डमीड साहबने मुतरज्जिमसे पूछा कि किसकेहिसाबमें यह हारलिखाहै मुतरज्जिमने बयानकिया किगायकवारके हिसाब मेंलिखाहै–दूसरीरकमके लियेमुतरज्जिमने कहा कि एकरकम और भी लिखीहै आठसौ रुपयेएक मोतीके नगकेहैं। प्र०–तुम कहतेहो कि मिस्टरस्यूटर साहबने तुम्हारी गवाहीनहींलीदेखा मिस्टरस्यूटर साहब वह बैठे हुयेहै? उ०–मुझको स्मर्णनहीं। प्र०–तुमको स्मर्णनहीं कि इनसाहबने कुछप्रश्न तुमसेहिन्दुस्तानी भाषामें कियेथे। प्र०–जबमेरे इजहार नहीं हुयेतो प्रश्न कैसे करते–साहब प्रेजीडेण्टने मुतरज्जिम से कहा कि इस गवाह से कहो सीधा २ उत्तर देतथाचप्रश्न किया गया उसने उत्तर दिया कि नहीं ऐडवकेट जनरलनेकहा तुम हिन्दुस्तानी भाषा समझते हो वा नहीं? उ०–मैं गुजराती समझता हूं और हिन्दुस्तानी नहींसमझता हिन्दुस्तानीको मुसल्मानी कहतेहैं। प्र०–तुम्हारा मतलब यह है कि मैं हिन्दुस्तानी नहीं समझता? उ०–मैं केवल गुजराती भाषा समझता हूं। प्र०–क्या तुम हिन्दुस्तानी भाषा कुछ भी नहींसमझते? उ०–नहीं। प्र०–कुछ भीनहीं समझते? उ०–मैं नहीं जानता कि आप किस बोली को हिन्दुस्तानी कहते हैं हिन्दुस्तानी कैसी जबान होती है

सुतरञ्जिमने ऐडवकेट जनरल से कहा कि यदि अच्छा होतो गवाहसे हिन्दुस्तानीभाषामें कुछबार्त्ता करूं ऐडवकेटजनरल ने कहा नहींमैं आपकोतकलीफ नहींदेता सुतरञ्जिमने कहा कल मैंनेकईप्रश्न हिन्दुस्तानीमें कियेथे और गवाहने गुजराती भाषामें मुझको उत्तर दिया था—ऐडवकेटजनरल ने गवाहसे मुखातिबहोकरकहाकि कलतुमसे कुछप्रश्न हिन्दुस्तनीभाषामें क्यानहीं कियेथे ? उ०—नहीं मैं गुजरातीभाषा समझताहूं। प्र०—इनतीनपंक्तियोंकोदेखो जो तुम्हारे दस्तखतकेऊपर लिखी हैं यहतुमने किसमुकाम पर लिखी हैं? उ०—सरल्यूइसपीली साहब के बंगलेमें लिखीथीं। प्र०—क्या सरल्यूइसपीलीसाहब के रूबरू? उ०—हां। प्र०—तुमने सरल्यूइसपीलीसाहब से कहा था कि गजानन्दवतिल ने तुमसे कुछ कहाथा? उ०—नहीं। प्र० तुमने नहीं कहाकि गजानन्दवतिलने मुझपर अन्याय कियाथा? उ०—नहींकहा क्योंकि मुझकोधमकीदीथी। प्र०—तुमने कोई शिकायत सरल्यूइसपीलीसाहबसे नहींकी? उ०—मुझसेगजानन्दवतिलने कहा था कि अगरचुपचाप दस्तखत नकरोगे तो तुम्हारेलिये अच्छा न होगा। प्र०—तुम कहतेहो कि मुझको सिपाहियोंने बड़ा दुःखदिया और हरदिन मुझकोहिरासतमें रखतेथे? उ०—हां सुबहके आठबजेसे और रातके ८ बजेतक मुझको हिरासतमें रखतेथे। प्र०—किसजगह तुमकोहिरासत में रखतेथे? उ०—कभी रजीडन्सीके बंगलेमें कभीवृक्षोंकेनीचे जो गजानन्दवतिलके मकानके निकटहैं किन्तु कलरातको जब मैं अपनेघर आया तो तीनसिपाही रात्रिके समय मेरेघरपर आये। प्र०—किसवास्ते वह आये थे? उ०—मेरे बुलाने के वास्ते। प्र०—इसबातके कहनेके वास्तेकि आज तुम अदालतमें हाजिरहो? उ०—उन्होंने फौजदारीकेपास जानेकेवास्ते जानेके लिये कहाथा। प्र०—वहां तुमगयेथे? उ०—जब सिपाहीआये मैं घरपर मौजूदन था मेरे गुमाश्ते को पकड़ लेगये थे। प्र० फौजदारकेरूबरू पकड़कर लेगयेथे? उ०—रामचन्द्रफौजदार

के सम्मुख लेगये थे। प्र०—क्या फौजदार शहरमें रहता है? उ०—हां मुकाम मगड़ी में नगरके भीतर रहता है। प्र०—तुम कितनीबेर रजोडन्सीकोगये? उ०—एकबेर। प्र०—और कितनी दफाइत्तोंकेनीचेगये जोगजानन्दके घरनिकेकटहैं? उ०—हर-दिनमुझको लेजातेथे और इत्तोंके नीचे बैठाया करतेथे। प्र० कितने दिनतुम्हारे साथयह बदसलूकीहुई? उ०—डेढ़महीने। प्र०—क्या प्रतिदिन तुमको इसीप्रकार लेजाया करतेथे? उ० हां। प्र०—इसकिताबकोदेखो क्यातुमने इसमेंनवीनवरकलगाये हैं? उ०—मैने कोईनयापचानहीं लगाया। प्र०—नतुमनेइसमें पचेनिकालेन नयेपचे लगाये क्यायह बातठीकहै? उ०—हां ठीकहै। प्र०—तुमनेकिसी मनुष्यके मारफत वरकनिकलवाये? उ०—नहींमेरी किताब दो महीनेसे कुर्क है। प्र०—तुमको मालूमहै किकिसीऔर मनुष्यने भीइस किताब मेंसेनये वरक नहींनिकाले? उ०—मालूमहोताहै किसातया आठवरक्कनये लगाये गये हैं। प्र०—इसकिताबके किसभागमेंसे वरक्कनिकाले गयेहैं? उ०—देखिये यह वरक्कनये लगेहैं औरयह पुरानेहैं। प्र०—किसजगहसे वरक्क निकाले गयेहैं जहांअंगूठीकी फरोख्त लिखीहै? उ०—हांमालूम होताहै कियह रकम इसमें नहीं है। प्र०—तुमको मालूम नहीं कि किस मनुष्यने यहवरक्कनि-काले? उ०—मुझको मालूमनहीं। प्र०—तुमकोक्योंकर मालूम हुआकि वरक्कनिकाले गये? उ०—वरक्कोंकी रंगतमें अन्तरहै। प्र०—जो दो हुण्डीलिखी गईं अर्थात् तीन हजार और चार हजारकी उनकोकिसने लिखाथा और किसदूकानपर लिखा था? उ०—हेमचन्द फतहचन्दकीदूकान बम्बईमें लिखीगई। प्र०—यह दूकान भीतुम्हारी बम्बईमें है? उ०—हां। प्र०—यह रुपया किसको दियागया? उ०—शिवचन्द खुशालचन्द पूना के रहने वालों को यह रुपया दिलाया गया था। प्र०—यह कौनहैं? उ०—वहभी एक जौहरीहैं। प्र०—इसमनुष्यको हुण्डियोंकारुपया किसवास्तेदिलायाथा? उ०—शिवचन्दने कुछ

मालनानावतिलको दियाथा। प्र०—क्यातुमने नानाजी वतिल केहाथयह मालअपने हिसाबमें बेचाथा वादूसरेमनुष्यके हिसाबमें? उ०—मैनेअपनेहिसाबमेंबेचाथा। प्र०—यहजोझगिडयां तुमको नानाजीवतिलने दीहैंक्या उसमालके बदलेमेंदी हैं? उ०—हां साहब। प्र०—शिव चरणसे जोमाल मोललिया था क्यायह झगिडयां उसमालके पूरीक्रीमतथी? उ०—पूरीनहीं थी कोई सौयाडेढ़सौ रुपयाबाकीरहगयाथा। प्र०—क्या यह बाकीका रुपया शिवचरणको तुम्हारे बम्बईकी दूकानसेदिया गयाथा? उ०—हांसाहब। प्र०—क्यायहसबरुपयाजौलाई सन् १८७४ई०मेंदियागया? उ०—हांसाहब। प्र०—सिवाय इनदो झगिडयोंकेजिनकीसंख्या ३०००) और ४०००) हैतुमकोकोई औरझगडोशिवचरणकी देना है? उ०—कोई झगडीनहीं। प्र० अच्छाइन झगिडयोंकीतारीखबताओ? उ०—ज्येष्ठबदी १२ वीं और १३वींतिथि है। प्र०—अबयह बताओकितुमनेइनझगिडयों कोनिस्बत कितनारुपयावसूल पायाहै? उ०—दसहजाररुपयापायाहै। प्र०—सातहजारकी तो झगडीतुमकोदसहजार क्योंकरमिले? प्र०—उसमें नारायण व्यङ्कटेशका भीरुपयाहै प्र०—तुमनेनारायणव्यङ्कटेशका रुपयाक्यों मिलादिया? उ० वहनानाजीका सालाहै और नानाजीवतिलका वह हिसाब था। प्र०—अपनीकिताबका दसवांपृष्ठदेखो उसमें दोहजार रुपएकैसे लिखेहैं? उ०—हां यहभी शिवचन्द खुशालचन्द के रुपये हैं। प्र०—यह किसकेहाथलिखेहैं? उ०—मेरेहाथ के लिखेहैंइसकेअर्थ्ययहहैंकिमैंने नानाजीवतिलसेदोहजाररुपये पाए औरशिवचन्द औरखुशालचन्दके हिसाब में अदाकिये। प्र०—क्यायहदुरुस्त हिसाबहै? उ०—हां साहब यह हिसाब दुरुस्त है। प्र०—दमोला कौनमनुष्य है? उ०—यह नानाजी वतिलकानायबहै प्र०—इसकाक्या कारणहै किजबयहहिसाब नानाजीवतिलका थातोतुमने शिवचन्द खुशालचन्दके हिसाब मेंक्योंलिखा? उ०—इसवास्तेकिवहहिसावस्पष्टनथा। हीरेकी

विक्तरी जो तुम्हारी बहीमें लिखीहै यहदुरुस्त है ? उ०—साहब मुझे खबरनहींहैजोकुछ किताबमें लिखाहै वह दुरुस्तहै। प्र० तुम इनकिताबोंमेंबर बर अपनाकामकरतेथे?उ०—पहिलेइसी मेंकामकरताथा अबनेपैनेदोमहीनेसेकुर्क़ाहै। प्र०—अगरतुम नेबहीकेवरक़नहीं बदलेतो गजानन्दको वरक़बदलनेसे क्यामत-लबथा ? उ०—साहबमुझकोखबरनहींहै किउसनेयहकुछकिया वास्ते किया। प्र०—कलजो तुमघर जानेलगेतो किसीपुलिस वालेने तुमसेकुछ कहाथा ? उ०—हांसाहब एकसिपाहीनेमु-झको रोका और कहाकि तुमठहरो हमसाहबसे या गजा-नन्दबतिसे पूछलेंतो जानेदेंगे परन्तु फिरमुझको जानेदिया श्रीमान् महाराजा जयपुरने पूछा कितुमसे और उससिपाही से और क्याबार्त्ताहुई ? उ०—और कुछबात नहींहुई ॥ सम्पूर्ण समाज टिफनखानेके लियेबरखास्त हुई ॥

इज़हार नानाजीवतिल गवाह ॥

जबकमीशनके सम्पूर्णमेम्बर टिफनसे सुचितहोकर आयेतो नानाबतिल बुलायागया ऐडवकेटजनरलने इसकेइजहारलेना शुरूकिये उसनेबर्णनकिया कि मैंब्राह्मणहूं और गायकवारके जवाहरखानेकादारोगाहूं मैंदामोदरपन्थको जानताहूंअन्तके दसहरेके में दमोदरपन्थने मुझेआज्ञादीथी कि कुछहीरेमुक्त करनेके लियेदरकारहैं सोमैंने तीनचार जौहरियोंने मंगवाये थेल शाह—प्रतापशाह—और हेमचन्द तीन जौहरी मेरे पास हीरेलाये फतहचन्द हेमचन्दके हीरे दामोदरपन्थके दिखाने केवास्तेएक दिनको रखलिये उसकेदूसरे दिनजब और जौहरी हीरेलाये उनकोभी रखलिया जिससमय दामोदरपन्थको वह हीरेदिखाये गयेतो हेमचन्द फतहचन्दको कोठीकेहीरे उन्होंने पसन्दकरके रखलिये और बाक़ी जौहरियोंके हीरेमैंने लौटा दिये हेमचन्दके हीरे तौलमेंअड़सठ या साढ़ेअड़सठ रत्तीहोंगे उनकोतौलकर दामोदरपन्थके हवालेकरदिये और एक याद-दाश्तदफ़ाके रखनेकेवास्ते कारकुनोंनेबनाई छःसातदिनकेपीछे

दामोदरपन्थने मुझसे फिर कहा कि फतहचन्द की कोठीसे गुलाबी हीरोंकी कनीमंगवाओ सो मैंने हेमचन्दको कहलाभेजा वहआपही हीरेकीकनी लेकरमेरे निकटआया वहतिहत्तर वा चौहत्तररत्ती तौलमेंथी दामोदरपन्थकी आज्ञानुसारवह भीमोल लीगईइस कनीका जो मुल्यठहराया वहमुझे स्मर्ण नहीं जौहरी की किताबमें जो ३०००) रुपया कीमत लिखी हैवहठीकहै उनहीरोंमें कोईहीरा एकरत्तीकाथा और बहुत सेऐसेथे कि एकरत्तीमें दोतीनचारपांच तकतौलमेंथे तीनहजाररुपया दो दफेकरके पूर्व्वोक्त जौहरी को मैंने दिये और एकबेर दोहजार रुपयेदिये एकबेर एक हजार रुपया दिया यहरुपया दमोदरपंथ से एक याददाश्त के अनुकूल जिसपर मैंनेभी दस्तखत किये थे मिलाथा और नानचन्दके द्वारा यह रुपया हेमचन्द फतहचन्द को दियागया नानाचन्द दामोला मुहालके सर्राफहैं उनतीनहजार मेंसे एकहजार रुपयाअपने मकानपर खुद मैंने दिया॥

ऐडवकेटजनरलने मिस्टरनौरोजजीमुख्यमुतरज्जिम सेकहा कितुमअपने असिस्टेन्टोंका भलेप्रकारध्यानरक्खोक्योंकिबहुधा तर्जुमा अशुद्धहो जाता है उन्होंने उत्तरदिया किमुझको इस बातकाबड़ा ध्यानरहताहै इसरुपयेके लियेजोयाददाश्तेंमुरत्तिबहुईं वहआत्माराम कारकुनकेदफ्तरमेंहैं देवालीकेदिनों में दामोदर पन्थने उनयाददाश्तों को मंगाया था जब उनको लेकरमैं गया तो दामोदर पन्थने कहाकि इनको मेरे निकट छोड़जाओ मैंफाड़डालूंगा। प्र०—दामोदरपन्थने उनको चाक किया? उ०—मेरे सामने उनको नहीं फाड़ा॥

सरजन्टबेलन टायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—तुमने जो इजहारदिया वह अच्छीतरह समझमें नहीं आयागायकवारके दरबारमें तुमको क्याओहदाथा? उ०—क्या आपमेरी तनख्वाहपूछतेहैं। प्र०—मैंतुम्हारा ओहदा पूछताहूं?

उ०-जवाहरखानेका मोहतमिमहूं। प्र०-तुम्हारे अधिकारमें कौन कामहै? उ०-मैं जवाहिरात और जेवरकी रक्षा करताहूं जब महाराजा साहब पहिनते हैं उनको देदेता हूं। प्र०-कोई काम और भी तुम्हारे सुपुर्दहै? उ०-जवाहरखानेमें जो जवाहिरात की अवश्यकता होतीहै तो मेरेद्वारा मोल लिये जातेहैं। प्र०-तुम कहसक्ते हो कि यहहीरे किसलिये मोललिये गयेथे? उ०-मुजसे यह कहाथा कि यहहीरे भस्म करनेके वास्ते दरकार हैं। प्र०-तुमसे किसने कहा था? उ० दामोदरपन्थने। प्र०-इस भस्मकी क्या जरूरतथी? उ०-दवाके लिये। प्र०-तुमने कभी पहिलेभी सुनाथा कि हीरोंकी भस्म दवाके वास्ते बनाई जातीहै? उ०-मैने कभी नहीं सुना। प्र० तुमने अपनी सम्पूर्ण आयुमें हीरोंकी भस्म देखीहै? उ०-चार वर्ष से मैंनौकर हूं उससे पहिले कभी हीरेभीन देखे थे। प्र०-तुमनेअपनी सम्पूर्ण आयुमें सुनाहै किहीरों की राखहोतीहै? उ०-मैने कभी नहीं सुना। प्र०-न तुमने कभी सुना न तुमनेभस्म देखी? उ०-मैं नहीं जानता। प्र०-न तुमनेसुना? उ०-न मैने सुना नमैने देखा। प्र०-आजकल तुम कहां रहते हो? उ०-बड़ौदेमें रहता हूं। प्र०-तुमपर कोई गार्ड नियत है? उ०-मैंखानबहादुरकी हिरासतमेंथा। प्र०-इससे तुम्हारा यहमतलब हैकि तुमक़ैद थे? उ०-जिसदिन महाराजा साहब क़ैदहुयेहैं पुलिसवालोंने मुझकोबैठा रक्खाहै। प्र०-बैठाने से तुम्हाराक्या मतलबहै क्यातुम क़ैदमेंहो? उ०-पुलिस वालोंने मुजको बैठारक्खाहै मैंइसीको क़ैद समझता हूं। प्र०-क्योंबैठा रक्खा है? उ०-मैनहीं जानता। प्र०-तुमने पूछा कि तुमको क्योंबैठायाहै? उ०-मैंकिससे पूछता। प्र०-जिसनेतुमको बैठायाथा उससेपूछते? उ०-जिसने मुझको बैठायाथा उसनेहीरों का हिसाब मांगासो मैने बता दिया। प्र०-तुमपर और कोई जुर्म्महै या जहर खूरानी का जुर्म्महै? उ०-नहीं। प्र०-तुमपर

कोईजुर्म्म है ? उ०-मुझको जवाहरखानेका कामथा जबमहाराजा साहबक़ैदहुये मुजकोभीक़ैदकरलिया। प्र०-तुमने जो हेमचन्दसेहीरेमोललिये थेउसका हालपहिलेकिससेकहाथा ? उ०-मुजको लोग लश्करमें लायेथे जिस मनुष्यने पूछाउससे कहदियाउससेपहिले पन्द्रह यासोलहदिनतक मकानबारह रहा। प्र०-विस्तार पूर्वकवर्णन करो किपन्द्रहसोलहदिनतक तुमवहांक़ैदरहे ? उ०-पन्द्रहबीसदिन तकनगरमें रहामुजसे किसीनेनहींपूछा। प्र०-मैं पूछताहूं कि तहक़ीक़ात के पहिले तुमपन्द्रह सोलहदिनतक कैदरहेथे ? उ०-हांमकान परपहिरेमें क़ैदथा। प्र०-तुमकिसकी हिरासतमें थे ? उ०-सेनापती की कचहरी में था। प्र०-तुमपर किनलोगों कापहिरा था ? उ०-परदेसीसिपाहियों कापहिराथा। प्र०-जबतुम पन्द्रहबीस दिनतक क़ैदरहे तुम्हारेनिकट कोई दूजहार लेने आयाथा ? उ०-कोई मनुष्य नहीं आया मुजको बुलाया था। प्र०-कौन मनुष्य बुलाने आयाथा। उ०-कुछ सिपाही आयेथे। प्र०-तुम उनकेसाथगयेथे ? उ०-हांएकगाड़ी परसवार करकेगजानन्द वतिलके मकानपर मुजको लेगयेथे। प्र०-गजानन्दने तुमसेक्या कहा ? उ०-उन्होंने मुजसे हीरों का हाल पूछा। प्र०-क्या पूछाथा ?उ०-मुजसे पूछा था कि आश्विन के महीनेमें कितने हीरेमोललिये गयेथे। प्र०-जो हीरे हेमचन्दकी कोठीसे मोल लियेगयेथे उनकाहालभी तुमसेपूछाथा ? उ०-हेमचंदकेहीरों की कुछखसूसियत नहींकी सब हीरोंकी खरीदका हालपूछा था। प्र०-तुमने उनसे क्याकहाथा ? उ०-मैनेकहाथा किहीरे मोललियेगये। प्र०-तुमने रावजी और नरसूके दूजहारातका हालसुनाहै ? उ०-मैनेनहींसुना। प्र०-तुम वर्णन करतेहो कि जिसदिन महाराजा साहब पकड़ेगये उसीदिन मैं भीपकड़ागया ? उ०-हां, उसीदिन पकड़ा गयाथा। प्र०-तुम कहते हो कि मैनेनरसू और रावजीकी गवाहीका हालकुछ नहींसुना ?

उ०—मैंकुछनहीं जानता। प्र०—मैंमसेतु पूछताहूं कितमनेउनके इजहारों का कुछहाल सुनाथा? उ०—मैंउनको नहीं जानता न मैनेउनको कभीदेखा। प्र०—मेरे प्रश्नका उत्तरदो तुमनेनहीं सुना किरावजी और नरसूकी गवाहीहुई? उ०—मैनेकभी नहीं सुना। प्र०—तुमसौगन्द खाओगे किमैनेकभी नहीं सुना? उ० जबयहां तहकीकातहोचुकीतबमैं सुनाथा। प्र०—मेरा प्रश्न यह भीनहींहै मैंपूछताहूं कितुमने सुनाथा किनरसू और रावजीने क्या इजहार दिये? उ०—मैनेनहीं सुना न मैं जानता हूं कि उन्होंने क्या इजहारदिये। प्र०—तुमने यह भी नहीं सुना कि नरसू और रावजीने हीरोंके क्या इजहारदिये थे? उ०—मैंने दीवाली के उपरान्त सुनाथा कि विष दिये जाने का उद्योग हुआहै। प्र०—यदितुममेरे प्रश्नकाउत्तर नदोगेतोप्रलयपर्य्यन्त तुमसेप्रश्नकियेजाऊंगा मैंपूछताहूं कितुमने सुनाथा किराव-जी और नरसूके इजहार विषदिये जानेके विषयमें लियेगये थे उ०—उसी समय मैंने नहीं सुना पीछे सुनाथा कियह कैदहैं प्र०-अपनेबयानके पहिलेतुमनेसुनाथाकि वहकैदहै? उ०—मैंने नहींसुना। प्र०—गजानन्द वतिलनेभी तुमसेकहा कि उनलोगों नेक्या इजहारदिये? उ०—नहींकहा। प्र०—गजानन्दवतिल ने तुमसेकहाथा कि सचबोलना और सिवायसचके और कुछ न कहना? उ०—हां। प्र०—उसने तुमसे कहाथा कि अगर सच न कहोगेतो क्यानतीजाहोगा?उ०—हां,मुझको धमकाया था और कहाथा कि अगरसच न बोलोगे तो झूठका मजा चक्खोगे। प्र०—इसबातके कहनेसे तुमक्या समझते थे? उ० मैंसमझताथा कि मुझकोकैद करेंगे या कहीं और भेजदेंगे। प्र०—यदिहम तुम्हारेवर्णनपर निश्चय न करेंतो तुमजानतेहो कि तुम्हारे लिये क्यादण्डहोगा? उ०—सरकारकी जो कुछ इच्छाहोगी उसमेंक्या इन्कारहै। प्र०—परन्तु तुमक्या समझते हो कि ऐसीहालतमें तुमको क्या दण्डहो? उ०—जोसरकारकी

इच्छा हो वह दीदगुड़दे। प्र०—मैं जानता हूं कि जब पुलिस के पंजे से निकलोगे तो बहुत प्रसन्न होगे? उ०—सरकार की जो मरजी है उस में खुश हूं। प्र०—गजानन्द ने तुम्हारे इजहार लिखे थे या तुमने लिखकर अपने इजहार उनको दिये थे? उ०—मैंने लिखकर नहीं दिये जुबानी बयान किये थे। प्र०—जब तुम अपना बयान कर चुके तो तुमको लोग कहां लेगये थे? उ०—साहब के निकट लेगये थे। प्र०—साहब में तुम्हारा मतलब सूटर साहब हैं? उ०—उस समय सूटर साहब वहां नहीं थे। प्र०—तुम्हारे इजहार किसने लिये थे? उ०—और साहब लोग जो बंगले में थे उन्होंने मेरे इजहार लिये थे। प्र०—कुछ पता बतला और जिस्से स्पष्ट वृत्तान्त विदित हो कि यह साहब लोग कौन थे? उ०—मैं नहीं जानता परन्तु इतना जानता हूं कि सरल्यू इसपीली साहब भी उपस्थित थे। प्र०—सावधान होकर वर्णन करो कि सरल्यू इसपीली साहब उस समय उपस्थित थे जब कि तुमने बयान किया था? उ०—हां जिस समय मेरे इजहार लिखे गये थे पीली साहब उपस्थित थे प्र०—तुम्हारे इजहार किसने लिखे थे? उ०—दूसरे साहब जो वहां बैठे थे उन्होंने लिखे थे। प्र०—तुमने दोनों साहिबों के सन्मुख यह इजहार दिये थे? उ०—हां। प्र०—तुमको दामोदर पन्थ के इजहारों का हाल मालूम है? उ०—नहीं। प्र०—तुम कितने दिन ठैहरकर सरल्यू इसपीली साहब के निकट इजहारों के लिये गये थे? उ० बीस दिन के उपरान्त गया था॥

ऐडवकेट जनरल ने फिर नानाजी वतिल के इज़हार लिये॥

प्र०—तुमने अभी कहा है कि तुम पन्द्रह या बीस दिन सेनापती की कचहरी में परदेसी सिपाहियों के पहिरे में रहे तुम जानते हो कि वह सिपाही किस के नौकर थे? उ०—गायकवार के थे। प्र० क्या उनके पहिरे में सम्पूर्ण महल था? उ०—हां साहब सम्पूर्ण महल था और यह रक्षा करने के लिये आये थे। प्र०—पहिले तुम्हारे इजहारात गजानन्द वतिल ने लिये थे? उ०—हां, साहब

पहिले गजानन्द वतिलने लियेथे सरदिन करराव ने पूछा कि तुमजवाहर खानेके मुखतार हो ? उ०-हां साहब मैं जवाहर खाने का दारोग़ाहूं। प्र०-तुम्हारे पासकोई हिसाब हीरे के मोललेनेकाहै ? उ०-कोईनहीं। प्र०-जोजवाहरात मोललिये जातेहैं क्याउसका हिसाब तुमजवाहर खानेमें नहीं रखते ? उ०-हमारे यहांहिसाब नहीं रहताबह खजाने में रहताहै। प्र०-तुमकोई याददाश्त रखतेहो ? उ०-हांसाहब रखतेहैं।प्र० यदिवह याददाश्त अशुद्धहोतो उसकाक्या निश्चय? उ०-जोकुछ सरकार फरमावे वहीदुरुस्त है साहबप्रेजीडण्टने कहाकि अब साढ़े चारबजेका समयहै जलसाबरखास्त कियाजायसो जलसाबरखास्त हुआ॥

चौदहवें दिनका इजलास॥

आजके दिनकमीशन शरूहुई कमीशनके सम्पूर्ण मेम्बरान् उपस्थित थे मल्हरराव बिल्कुल नहीं आये महाराजा सेंधिया दोपहर से चलेगयेथे सरल्यूइस पीली साहब भी मध्यान्ह केपश्चात् चलेगये रघुनाथकेपुचआत्मारामके इजहार शुरूहुये मिस्टरअनवरारटीसाहबने गायकवारके जवाहरखानेके कारकुनको बुलाभेजा उसनेवर्णन कियाकि मैं रियासत गायकवारके जवाहरखाने का कारकुनहूं मेरा अफ्सर नानाजोदतिलहै मुझे स्मर्ण है कि दिवालीसे आठदिन पहिले कुछहीरे मोललियेगयेथेचारजौहरीहीरेलायेथे तीनजै हरियोंके हीरे लौटादिये गये और हेमचन्द्र के हीरे रखलिये गये थे-एक याददाश्त दफ्तरमें रखनेकेलिये बनाईगईथी परन्तु दो तीन दिनके उपरान्त नानाजोवतिलने उसको मुझसे लेलिया था फिर मैंने सुना कि करनैलफियरसाहबके विष दियेजाने का उद्योग हुआ है॥

सरजनबेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

प्र०-अबभी तुमको जवाहरखानेसे तअल्लुकहै ? उ०-हां।

प्र०—जवाहरखाने का अब कौनदारोग़ा है ? उ०—गणपति राय महाजन। प्र०—बयान करो कि हीरेकी कनी क्या वस्तु होती है ? उ०—छोटे २ हीरोंको कनीबोलते हैं। प्र०—क्या कनीउसको कहतेहैं कि जबहीरातराशाजाताहै और उसके छोटे २ टुकड़े करतेहैं ? उ०—हां। प्र०—तुमनेदेखा या सुना है कि हीरेको खाकहोसक्तीहै ? उ०—नहीं॥

साहबप्रेज़ीडण्टने कहा पसमालुमहोताहै कि तुमने कुटा हुआ हीरा नहीं देखा ? उ०—नहीं। प्र०—जवाहरखाने में कितनेवर्षसेहो ? उ०—बारहवर्षसे हूं। प्र०—महाराजासाहब बहुधाहीरेखरीदाकरतेथे ? उ०—हां। प्र०—छोटे और बड़े ? उ०—दोनों प्रकारके मोललिया करतेथे। प्र०—जेवरमें जड़े हुये मोल लेतेथे या अलग ? उ०—दोनों प्रकारके मोललेते थे। प्र०—महाराजासाहबके जवाहरखानेमें बहुतसेहीरे थे ? उ०—हां बहुतहीरे थे। प्र०—तुम्हारा बयानहै कि जो लोग हीरेलायेथे उनमेंसे हेमचन्द्रके हीरेमोललियेगये तुमक्योंकर जानतेहो कि केवल उसीमनुष्यके हीरे मोललियेगये ? उ० नानाजीवतिलने पसन्दकरके उनहीरों को मोल लियाथा। प्र०—सिवा नानाजीवतिलके और भी किसीमनुष्यने तुमसेहीरों का हालकहाथा ? उ०—जबहीरे मोललिये जातेथेतो नाना-जीवतिल मुझको बुलालेतेथे। प्र०—जबहेमचन्द्रने हीरेमोल लियेगये तुम उपस्थितथे ? उ०—हां मैंमैजूदथा। प्र०—उस मरतबेक्योंकर काररवाईहुई थी ? उ०—बिनयाकरावने एक याददाश्त अपने हाथ से लिखी और अपने पासरक्खी। प्र० और भी कुछहाल तुम जानते हो ? उ०—और मैं कुछनहीं जानता। प्र०—छोटे २ हीरे किसकामआतेहैं ? उ०—जड़ाऊ काममें लगतेहैं। प्र०—मिस्टरसूटरसाहब ने तुम्हारे इज़हार लियेथे ? उ०—हां लियेथे। प्र०—जोकुछ तुमने उनकेसन्मुख वर्णनकियाथा तुम्हारेविचारसे ठीकहै ? उ०—हां जो कुछमैं जानताथाबयानकिया। प्र०—जबयहहीरे मोललियेगयेथेतो

जवाहरखाने में बहुत से हीरे मौजूद थे? उ०—नानाजी-वतिल को जोजवाहरखाने के दारोग़ा हैं यह हालमालूम होगा। प्र०—तुम्हारा यहमतलबहैकि तुमकोकुछ हालमालूम नहींहै? उ०—हांमैं कुछ नहीं जानता—सरजन्बेलनटायन साहबने कहा (माईलार्ड) इसगवाहसे यह सवालकियाजावे कि उससमय मेंभी एकतलवार का क़बजाहीरों से जड़ाजाता था? उ०—हां, तलवार का क़बजा और मियान हीरों से जड़ाजाताथा और छोटे २ हीरेउसमें लगायेजाते थे। प्र० छोटे २ हीरेलगतेथे यावड़े २ हीरेजड़ेजातेथे? उ०—छोटे हीरे। प्र०—एक मिरजईभी तय्यारहोतीथी? उ०—हां, एक मिरजईमें भी छोटे २ हीरेजड़ेजाते थे। प्र०—तुम जानतेथे कि यहहीरे कहांसे आयेथे? उ०—जवाहरखानेमें थे। प्र० जवाहरखानेमें यहहीरेकबसेरक्खेथे? उ०—हमेशामोलियेजातेथे और इसी प्रकार हीरोंका जमाखर्चरहाकरताथा॥

बलवन्तराव रावजीके इज़हारात॥

बलवन्तराव रावजीने अपने इज़हारत ऐडवकेटजनरल के साम्हने दिये कि मैं खानगी खजाने सरकार में नौकर हूं मैं दामोदरपन्थके आधीन कामकरताथा हिसाबों के ऊपर जो स्याहीडालीगई मुझकोनहींमालूमकि किसनेडालीहै सरजन्बेलनटायनसाहबने उससे प्रश्न नहीं किये॥

रामेश्वरमोरा के इज़हारात॥

मैंस्वामी नारायणके मन्दिरका चेलाहूं मैंसबचेलोंका अफ़सर हूं मैने कोई रुपया ३१ दिसम्बर सन् १८७३ ई० का नहींपाया और मैनेकिसी समयमें ३३२) रु० नहींपाया यदि मैनेकभी रुपयापायाहै तो उसकीरसीद महाराजा कोदीहै उसकीरसीद दिखाई उसने इन्कारकिया कि यहमेरी रसीद नहींहै यहरसीद भोलानाथ पैंचारामको लिखीहै॥

सरजनबेलन टायनसाहबके प्रश्न॥

तुमने एक मरतबा कहाहै कि तुमने ११००) रु० पायाहै

और फिरतुमनेकहा कि ११२५) रु० पाये ? उ०—हांसाहब पायेथे। प्र०—उनकीरसीदें कहांहैं सम्पूर्ण मेम्बरोंको उनकी रसीदें दिखाईगईं और उसने तसदीक़ की॥

दूसरीबेर रामेश्वर मोराके इज़हार लियेगये॥

प्र०—११२५) रु० तुमकोकिस वास्तेदियेगयेथे? उ०—ब्रह्मभोज केनिमित्त दियेगयेथे। प्र०—इनरुपयोंके सिवातुमको और कभी भीब्रह्मभोजके वास्तेकुछ रुपयामिलाहै ? उ०—कभीनहींमिला प्र०—क्यातुमको कुछ रुपया पुण्य करनेके लिये मिलाथा? उ० हांसाहब ३७५) रु० मिलाथा। प्र०—तुमनेउसकी रसीददी थी ? उ०—नहींसाहब नहींदी कारकुन ३७५) रु० कीअठन्नियांचवन्नियां लायाथा इसीकारण इसकी रसीदनहींदी॥

दत्तेरिया रामचन्द्रके इज़हारात।

मिस्टरअनवरारटीसाहबने दत्तेरिया रामचन्द्रके इज़हारात लियेउसने वर्णनकिया कि मैंफौजदारीका नौकरथा मैंसंखिया फौजदारकी आज्ञासे दियाकरताथा एकबेर मेरेनिकट संखियेके वास्तेदामोदरपन्थकी याददाश्तआईथीजगजीवनदास नेयाददाश्तपर दस्तखत करके संखिया भेजदी जगजीवनदास फौजदारीके हाकिमहैं तीनसप्ताह बीतेहोंगे कि संखियाहमारेयहांसे भेजीगईथी॥

सरजगड बेलनटायन साहबके प्रश्न॥

प्र०—तुम्हारे यहांसे संखिया किसरीतिसे दीजातीहै ? उ० जबकि कारकुनकी याददाश्तपरफौजदारी काहाकिम दस्तखत करदेता है जब मिलती है। प्र०—क्या संखिया के देने में बड़ाबन्दोबस्त होताहै ? उ०—हां साहब संखियाके देनेमें बड़ा बंदोबस्त होता है। प्र०—प्रथम गायकवारकी आज्ञासे संखिया क्योंनहीं मिला ? उ०—उसयाददाश्तपर गायकवार के दस्तखत नहींथे। प्र०—तुमने तो अभी कहा कि कारकुनकी याददाश्त लिखने से मिलजाती है ? उ०—हां साहब पहिले यहीरीतिथी कि कारकुन की याददाश्त से संखिया मिलजाती थी परन्तु

अठारह महीनेसे गायकवार ने आज्ञादीथीकि हमारीआज्ञा विना संखिया नदीजायाकरे ॥

दत्तेरिया रामचन्द्र का दुबारह इज़हार लियागया ॥

प्र०—अच्छा यह बताओ कि इस याददाश्त में गायकवार केदस्तखतकहांहैं ?उ०—साहब इसयाददाश्तमें दस्तखत नहीं है प्र०—अच्छाकौनसी याददाश्त पर गायकवाड़ के दस्तखत हैं ? उ०—१९तारीखकी यादाश्तपर दस्तखत हैं ॥

भावपूना करके इज़हार ॥

रामकृष्ण सदाशिवको भावपूनाकरके उपनामसे विख्यात है बुलायागया और ऐडवकेटजनेरल ने उसके इज़हारलिये उसनेवर्णन किया कि तीसवर्ष से मैं बड़ौदेमें रहता हूं इस समय मुझको मीरजुल्फ़िक़ारअलीकी रियासतसे तअल्लुकहै ॥

मिस्टर होप साहब की ओर से मैं नौकर हूं मीरजुल्-फ़िक़ारअली सूरत के रईस नब्बाब जाफर अलीके पुत्र हैं और सरकार उनकी सुतवल्ली अर्थात् पालकहै उनकी कुछ रियासत बड़ौदे में भी है मीरजुल्फ़िक़ारअलीकी रियासतके देख भालके सिवायकुछ और काम भी मेरे आधीन है और कई सरदारोंकी ओरसे मैंसुफ़ारभी हूं करनैल फियर साह-बकोमैं जानताहूं दीवान साहब अर्थात् नानाकंवलकर ने करनैलफियर साहबसे मेरी मुलाकात कराईथी जब पूर्वोक्त साहबबड़ौदेके रेजीडण्टथे मैंबहुधा उनके निकटजायाकरता था एक चिट्ठी मिस्टर होप साहबकी करनैल फियर साहबके नाममैंलायाथा वहचिट्ठी मीरजुल्फ़िक़ारअलीके मुआमिलेसे सम्बन्धित थी मीरजुल्फ़िक़ारअलीका मुक़द्दमा उन दिनोंमें बम्बईमेंदायरथा इसदफामैं करनैलफियर साहबके पासजरू-रतसे गयाथा और बहुधा विना प्रयोजनभी जाया करताथा और कभीकभीकरनैलफियरसाहबको नगरकेहालकहसुनाता था जब करनैल साहब हवाखोरीसे वापिस आतेथेउससमय बहुधाऐसी बातोंकी इत्तिला दिया करताथा इसग्यारहवजेमैं

साहबके पासजाताथा मैनेकरनैलफियर साहबसे खबरोंकेवर्णन करनेमें कभीकुछभी रूपयानहीं पायामैनेसुना कि करनैलफियरसाहबके विष दिये जाने का इरादाहै जब करनैल फियर साहबने दोतीनदिनके पश्चात्मुझसे जिकर कियातोमैनेउनसे कहा कि बलवन्तरावसेसुनाहै कि जोविष आपको दियागया उसमेंतीन वस्तुयीं अर्थात्–हीरेकीरेत–तूतिया–औरसंखिया मिस्टरमैलबल साहबने पूछा कि रेतके क्याअर्थहैं गवाहमें कहा कि मैंपिसेहुये हीरेका रेत कहताहूं–मैनेजो कुछबलवन्तरावसे सुनाथा करनैल फियर साहबसे कहदिया किन्तु बलवन्तरावकोभी फियरसाहबके निकटलेगया था॥

साहबप्रेज़ीडेण्टने पूछाकि बलवन्तरावको करनैलसाहबके निकटतुम लेगयेथे–गवाहने कहाकि हांलेगया था औरकरनैल साहबसेमुलाकात कराईथी॥

बलवन्तरावने करनैलफियर साहबसे हीरेकेचूरेका वर्णन कियाथा बलवन्तराव बापू साहबका कारकुन है वह बड़ौदा रेजीडन्सीमें आयाकरताथा–बापूसाहब एकबाजारीस्त्रीके पुत्र हैंजोखाण्डेराव गायकवारकी नौकरथी बापूसाहब महाराजा साहबके बीर्य्यसेहैं बलवन्तरावने यहहाल मुझसे रेजीडन्सीमें कहाथा॥

सरजनबेलन टायन साहब के प्रश्न॥

प्र०–तुमकोवह तहक़ीक़ात होनायादहै जो जनरल मीड साहबके सम्मुखहुईथी? उ०–हांस्मर्णहै। प्र०–तुमनेबहुत कुछ पैरवीकी और गायकवारपर मुकद्दमेदायर करायेपरन्तु मुतरज्जिमनेतर्जुमाअशुद्धकियाऔर कहामैंकिगायकवारकेसम्मुख मुकद्दमेदायरकराये–मिस्टरमैलबल साहबनेजबएतिराजकिया तो मुतरज्जिम ने कहा कि बरखिलाफको इस देश में साम्हने कहतेहैं–गवाहनेकहा कि यदि मैं ऐसा न करतातो लोगोंके हक़मेंइन्साफ न होता॥

साहबप्रेजीडेण्टने कहायह प्रश्नका उत्तरनहींहै गवाहने कहा कि बहुतसे लोगोंकाहक़ गायकवारने छीनलियाथाजो ऐसा न कियाजाता कि तो लोगोंको हक न पहुंचता॥

प्र०—क्या हरएकसुकहमेंतुमगायकवारके बरखिलाफथे? उ०—मुझको केवल चारसुकहमोंसे तअल्लुकथा और सुकहमों सेकुछप्रयोजनथा। प्र०—हां, मैं पूछताहूं किजो सुकहमा तुम नेकिया वह गायकवार के बरखिलाफ था? उ०—हां, लोगों का रुपया गायकवार परचाहियेथा और वहनहीं देतेथेजो ऐसा न करता तो रुपया भी न मिलता। प्र०—परन्तु मेरे प्रश्नका उत्तरदो—तुमको जब अवसर मिलातो गायकवार के बरखिलाफ कारवाई की? उ०—जो मेरे विचार में दुरुस्त बातथी उसीतरह मैंनेकारवाईकी। प्र०—मैं तुमसे यहनहीं पूछता मेरेप्रश्नकाउत्तरदो? उ०—मैने कोईबातऐसी नहींकी जिससे गायकवार की हानि हो। प्र०—मेरे प्रश्नका अबतक तुमने उत्तर नहीं दिया तुमने कुल कारवाई गायकवार के प्रतिकूल की॥

प्र०—मैं नहींसमझा कि आपक्यापूछते हैं, सरजन्टवेलन-टायनसाहबने अदालतसे मुखातिबहोकर कहाकि मेरा प्रश्न तो स्पष्टहै उसका उत्तर मिलना चाहिये॥

साहब प्रेजीडण्ट नेकहा तुम मुस्तहक उत्तर पाने केहो परन्तु मैं नहीं देखता कि तुमको किसतरह से जवाब साफ मिलेगा। प्र०—मैं पूछताहूं जोसुकहमें तुमने कमीशनमेंपेश किये वह बरखिलाफ गायकवार के थे? उ०—यह सुकहमे ऐसे नथे जिनसे गायकवारकी कुछहानिहोकिन्तु वहसुक-हमे उससुकहमेकी बातथे जोगायकवारसे लोगोंकारुपया चाहिये था। प्र०—करनैलफियरसाहब जानतेथे कितुम उन सुकहमोंकी पैरवीकरतेहो? उ०—हांजानतेहोंगे। प्र०—कर-नैलफियरसाहबके पासतुम बहुधाजाते थे? उ०—हां, अकसर जाता था और अबभी जाताहूं। प्र०—तुम्हारी यहीप्रकृतिथी

कि तुमको कुछ न मिलता था तौभी उनको खबरें पहुंचाया करतेथे ? उ०—जो हालठीक २ मुझकोमालूम हुआ करता था मैं करनैलफियरसाहबसे कहदियाकरताथा। प्र०—तुम्हारी खबरें वहसुनाकरते थे ? उ०—हां सुनने न सुननेका उनको अखतियारथा सिवामेरे और मनुष्यभी खबरें पहुंचायाकरतेथे। प्र०—परन्तु जोखबरें तुमपहुंचातेथे उनको करनैलफियरसाहब अच्छीतरह सुनतेथे ? उ०—मेरीही खबरोंकोनहीं किन्तुकई मनुष्योंकी खबरोंको अच्छीतरह सुनतेथे। प्र०—तुमय हखबरें पहुंचायाकरते थे कि नगर और गायकवारके महलमें क्या होताहै ? उ०—जबसाहब हवाखानेजातेथे तो जोखबरें सुना करतेथे उनको वापिसआकर मुझसे पूछतेथे—मुझको जोकुछ मालूम होताथा मैं कहदिया करताथा। प्र०—सिवा तुम्हारे और मनुष्यभी फियरसाहबको खबरेंदियाकरतेथे और जोलोग खबरें पहुंचातेथे वह तुम्हारे नौकर थे ? उ०—मैं उनलोगों को किसवास्ते नौकर रखता साहब तीन २ चार २ कोसतक हवाखाने जायाकरते थे जोमनुष्य उनको मिलते उनसेपूछा करतेथे। प्र०—जोखरीता गायकवारने श्रीमान्वाईसरायको भेजाथातुमने उसका वर्णन किया था ? उ०—मुझको अच्छे प्रकारस्मर्ण नहीं। प्र०—याद करके बताओ। प्र०—जोआप-खरीतेकेलिये पूछतेहैंतो महाराजासाहबने बहुतसेखरीतेभेजे थे। प्र०—मैंउसखरीतेके लियेपूछताहूं जो करनैलफियरसाहब की बदलीके विषयमेंगया था ? उ०—मुझेस्मर्ण नहीं कि इस खरीते का करनैलफियरसाहबसे जिकरकिया हो। प्र०—तुम सौगन्धखासकेहोकि मैंनेजिक्रनहीं किया ? उ०—हां सौगन्ध खासकाहूं किजिक्रनहीं किया। प्र०—तुमउस खरीतेके हाल सेवाक्रिफ नथे ? उ०—मुझको किसतरहउसका हालमालूम होता। प्र०—मालूमहुवाकि तुमको उस खरीते काहाल कुछ भी मालूम नथा ? उ०—नहीं मुझको कुछभीमालूमनथा। प्र० जोकुछ करनैलफियर साहबने इसविषयमेंकहाहै उसकोसुनो

जब करनैलफियर साहबसे प्रश्न कियागया कि तुमनेभावपूना वारसे इसखरीते का हालजो दूसरी नवम्बरको भेजागया था सुनातो उन्होनेवर्णन कियाकि हां मैंने सुनाथा—पसकरनैल फियरसाहबने तो इकरार किया कि तुमसे सुनाथा तुमकिसतरह कहतेहोकि मैंने नहींकहा? उ०—मुझे स्मर्ण नहीं। प्र०—तुम सौगन्दखासक्ते हो कि मैंने नहींकहा? उ०—मुझे स्मर्ण नहीं कि मैंने करनैल फियर साहबसे कहा या नहीं। प्र०—तुमको औरखरीतोंकीभी इत्तिला नहींहुई नतुमनेकरनैलफियरसाहबसे उसका जिक्रकिया? उ०—जब मैंनेसुनाकि खरीताजाने वाला है मैंने कनैलफियर साहबसे कहा परन्तु मजमूनकेमालूमन होनेसे कुछमुफस्सिल हालखरीतेका नहीं कहा। प्र०—तुम क्योंकर जानते थेकि खरीतेलिखे जातेहैं? उ०—लोग दरबार में बातें किया करते थे वहां मैं सुनाकरताथा। प्र०—तुम गायकवार के नौकरों को जानताहो। उ० मैं बड़ौदे के सम्पूर्ण निवासियों को जानता हूं। प्र०—तुमसालिमको जानतेहो? उ०—हां इतना जानताहूं कि वहरजोडन्सीमें आयाकरताथा प्र०—तुमकभी गायकवार केमहल में सालिम की भेंटके लिये नहीं गये? उ०—नहीं। प्र०—तुमभी महलको नहींगये? उ०—जबकोई कामहोताथा चलाजाता था परन्तु जबसेकमीशन बैठीहै नहींगया प्रेजीडण्टसाहब ने कहा कौनसी कमीशन का जिक्र है? उ०—करनैल मीड साहबकी कमीशनका, उससे पहिले इससे अधिकन होंगया। प्र०—तुम दामोदरपन्थको जानतेहो? उ०—हांदूरसेदेखा है बात्तीनहींकी प्र०—वर्णन करोकि बापसाहब कौन हैं? उ० खाण्डेरावमहाराजाकी अविवाहितास्त्रीसे यहलड़काहै। प्र० यहमनुष्यगद्दीका दावीदार है? उ०—नहीं वह उसतनखाह का दावीदारहै जोउसको मिलाकरती थी। प्र०—परन्तु तुम जानतेहोकि अबउसको गद्दीका दावानहींहै? उ०—उसको क्योंकर गद्दीकादावाहोसक्ताहै क्योंकिवहमदखुला औरतसे

है। प्र०—तुम निश्चयकरके कहसक्ते हो कि उसको सिवा मासिक के और कुछदावा नहीं है ? उ०—सिवाय तनख्वाहके और कुछदावानहीं करताहै। प्र०—तुमसे गायकवारसेहाल और पहिलेसेभी कभी रंजिश होगई है ? उ०—थोड़ेदिन मुझको हिरासतमें रक्खाथा। प्र०—किसकारणसे ? उ०—मिस्टरसालमनसाहब एसिस्टेन्टरजीडण्ट को भावसेंधिया ने कुछरिश्वतदीथी इसलिये भावसेंधियाको सरकारने मैाकूफकरदिया प्र०—मुझसे साफ २ कहोकि गायकवारहालने तुमपर कुछ जुर्म्मकायम किया था ? उ०—मुझपर कोई जुर्म्मकायम नहीं किया नमुझको कभी क़ैदकिया॥

मिस्टररिचीसाहब के इज़हार।

मिस्टररिचीसाहबके इज़हार मिस्टरअनवरारटी साहबने लिये उन्होंने वर्णनकियाकि मेरानामजेम्सवैलटरिचीहै और मैं ऐसिस्टण्टऐजन्ट गवर्न्मरजनरलहूं जो बड़ौदेमेंरहताहै मुझको सिवलसरविसीमें तअल्लुकहै जबदामोदरपन्थ के इज़हार लिये गयेथे मुझे यादहै॥

साहबप्रेज़ीडण्टसे मिस्टरअनवरारटीसाहबने कहाकिदामोदरपंथनेमरहठी भाषामेंइज़हारदियाउसकोग्रहादतनहीं कहसक्ते मिस्टररिचीसाहबने कहा कि मरहठी भाषाको कुछ मैं जानतहूं मैंने उसकेइज़हारों का उल्था अंगरेज़ीभाषामें कियाथा और रजीडन्सीकेहिन्दुस्तानीऐसिस्टेन्टने मुझकोसहायतादीथी हिन्दुस्तानीअसिस्टेन्टका उल्थाठीकथा और मैंनेभी सही २ लिखा दामोदरपन्थने जोकुछ वर्णन किया मैं जल्दी २ लिखतागया और इसके उपरान्त मैंनेउसे दुरुस्तकिया अदालतमें जो इज़हार रक्खा है मेरेही हाथकाहै यह इज़हार २९—३० जनवरीका लिखाहुवाहै जबतर्ज़ुमा होकर दामोदर पन्थको सुनायागया मैं मैाजूद नथा—मिस्टरअनवरारटीसाहब ने साहबप्रेज़ीडण्टसे कहा कि मैं चाहताहूं कि २९ और ३० जनवरीके लिखेहुये इज़हारग्रहादतमें दाखिल किये जांय॥

सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा कि यह इज़हार किस क़ानून और कायदेके अनुसार गवाहीमें दाखिल होसक्ते हैं होसक्तेहैं अगरआमक़ायदेके अनुसारगवाहीमें दाखिलकिये जातेहैं तोयहक़ायदा आमनहीं है॥

प्रेजीडण्ट साहबने कहायह इजहार गवाहीमें दाखिलहो सक्ते हैं क्योंकितहकीकात कीतरफ आपकोगौरकरनाचाहिये सिवा इसकेमिस्टर रिची साहब इज़हार लेनेके अधिकारी थे और उनके लियेयहबेइज़हार काफीसमझे जासक्ते हैं फिर वह इजहार पेश होकर गवाही में दाखिल किये गये और उनके इज़हार भीदालिखेजुये जिनकी तसदीक होचुकी थी॥

सरजण्ट बेलनटायन साहबके प्रश्न।

प्र०—दमोदरपंथ आपकेचार्जमेंहैं? उ०—नहीं। प्र०—गजानंद वतिलके चार्जमेंहै? उ०—मिस्टरस्यूटर साहबके चार्जमेंहै प्र०—आपजानतेहैं किवह खास किस की हिरासतमेंहै? उ० मैंनहीं जनता॥

इज़हार अब्दुल अली॥

खानबहादुर अब्दुल अलीकेइजहार मिस्टरअनवरारटीसाहबने लियेउन्होंने वर्णनकियाकि मैं बम्बईकी पुलिस काइन्स्पेक्टरहूं दिसम्बरकेमहीनेमें मिस्टरस्यूटरसाहबके साथ बड़ौदेको आयाथाग्यारह दिसम्बरथी उसीदिनसे मैंबड़ौदे मेंहूं और मिस्टरस्यूटरसाहब कीसहायताकरताहूं यहसुनकर सरजण्ट बेलनटायनसाहबने कहाकितुमठहरोहमकरनैल फियरसाहब कोबुलाते हैं॥

करनैल फियर साहब बुलाये गये।

प्रेजीडण्ट साहबनेउनसेकहाकि आपकुरसीपर बैठें सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहाहां कुरसीपर बैठें परन्तु ऐसेस्थान परजहां मैंभी उनको देख सकूं करनैल फियरसाहब नेकहा हां मैं ऐसीही जगहपर बैठूंगा सरजण्ट बेलनटायन साहबने

करनैल फियर साहब से कहाकि आपकी शहादत मुल्तवी की गईथीकि आपने थोडेसे असलकागजों को मंगवाने का इकरार कियाथा आपने काग़ज मंगवाये यानहीं ? उ०—हां मंगवायेहैं सरजण्ट बेलनटायनसाहबने कहामेहरबानीकर-के मुजको दीजिये करनैल फियर साहबने वहकागज ढूंढ करजो ऐडवकेट जनरलके क़ब्जे मेंथे सरजण्टबेलनटायनसाहब कोदिये करनैल फियर साहबने कमीशन के मेम्बरों से कहा यदि आपकी आज्ञाहोतो सरकारी काग़ज़ कमीशनकेरूबरू पेशकरूं॥

प्रेज़ीडण्ट साहबने कहा मैं कुछ नहीं कहसक्ता आपको अखतियार है पेशकरने न करने का॥

करनैलफियर साहबने कहा पसऐसी अवस्थामें मुजकोपेश करने की आज्ञा नहीं है साहब प्रेज़ीडण्टने कहा मैं आपको पेश करनेको इजाजत नहीं देसक्ता ऐडवकेट जनरल को ज़िम्मे दारकरता हूं करनैलफियर साहबनेकहा किजोबात पूछनी होउसका उत्तर मैंदूंगा परन्तु काग़ज़ नहींपेश करूंगा॥

सरजन्टबेलन टायनसाहबने कहा इससे मालूम हुआ कि आप कागज के पेश करने से इन्कार करते हैं करनैल फियर साहबनेकहामैं इन्कारकरताहूं परन्तु जो आपइन काग़ज़ों कासम्बन्धी प्रश्न करेंगे उसका यथार्थ उत्तर दूंगा॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबनेकहा बहुतअच्छा आप बतला इयेकि इसकाग़ज़में यहलिखाहै यानहीं कोईभूलनहीं पाया जातापस इसबातका लिखना श्रीयुतगवर्नर जनरलको उचित हुवाकि करनैलफियरसाहबनेबेमौकाइसमुकद्दमेमेंदखलदिया॥

करनैल फियरसाहबने कहाकि यहइबारत इसकाग़ज में लिखीहुई है परन्तु कुछ इबारत छूटगई है॥

इसीतरह कहीं २ सरजण्ट बेलनटायन साहबने इबारतपढ़ पढ़ कर सुनाई करनैलफियर साहबने उसको तसलीमकिया

परन्तु यहभी कहा किजो खास २ और उत्तम २ बातें हैं वह छोड़दीगईहैं इसकेउपरान्तसरजण्ट बेलनटायन साहबने पूछा कि आप नूरुद्दीन बौहरे को जानते हैं ? उ०-मैं नाम नहीं जानताहूं परन्तु एकबौहरेका मुक़द्दमा उसकमीशन मेंदायर था जोपिछले वर्षमें जमाहुईथी। प्र०-शायद वहयही मनुष्य होगाआपजानते हैंकि गायकवारने इसमनुष्यको बहुतभारी दण्डदिया था ? उ०-हां यदिवही मुकद्दमा और उसीमनुष्य कोउसमुकद्दमेसे तअल्लुक है तोयहवहीमनुष्यहै। प्र०-उसके एक सम्बन्धीको गायकवारने बहुतसे बेदलगवायेथे और यह दण्डदेकरभीपांचहजाररुपयाजुर्म्मानाकिया? उ०-हां उसपर जुर्म्माना हुवा था परन्तु मुझे जुर्म्माने की संख्या स्मर्ण नहीं सरजण्ट बेलनटायन साहबने अधिष्ठाताओंसे कहाकि मैंनहीं चाहताकियह कागजकरनैल फियरसाहबका आममें मशहूर कियाजाय करनैल फियरसाहब जिसप्रकारसे चाहें इसका-गजको रक्खें साहब प्रेजीडेण्टने कहा कि नूरुद्दीन बौहरे के मुकद्दमेका करनैल फियरसाहबने कुछउत्तर नहींदिया सर-जण्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि करनैल फियर साहब उत्तर देचुके हैं इसके उपरान्त सरजण्ट बेलनटायन साहबने करनैलफियर साहबसे पूछा कि इस बौहरेने गायकवार के ऊपरनालिशकीथी वा नहीं ? उ०-हांउन दिनोंमें नालिश कीथी-प्रेजीडेण्टसाहबनेपूछा कि जिनदिनोंमें कमीशनएकच हुईथी उसने नालिशकीथी ? उ०-मैंनाम खूबनहीं जानता परन्तु एक बौहरेको जानताहूं॥

ऐडवकेटजनरलने दुबारह इज़हार करनैलफियर साहब के लिये॥

प्र०-यहफिकरेजोतुम्हारेसन्मुखपढ़ेगयेयहगवर्न्मेण्टरेजोल्यूशनसेचुनेहुयेहैंउ०-हांसाहबगवर्न्मेण्टरेजोल्यूशनसे चुने गयेहैं। प्र०-मालूमहोता है कितुम्हारे मुफादमतलबके फिकरे उसमेंसेनहींलियेगयेहैं ? उ०-हां साहब नहीं लियेगये। प्र० उस समयरेजोल्यूशन गवर्न्मेण्टसेजारीहुवाथा तोतुमकहांथे ?

उ०—मैं इङ्गलिस्तानमेंथा। प्र०—जबकिरैजोल्यूशनगवर्न्मेण्टसे जारीहुआ तोतुमको उत्तरदेनेका मौकाथायानहीं? उ०—मैं इङ्गलिस्तानमेंथामौकाकहांसेपाता। प्र०—तुमकोदूसरेजोल्यूशनकी खबरथी किकोईऐसा रेजोल्यूशन जारीहुवाहै? उ० साहब मुझेखबरनथी जबमैं इङ्गलिस्तानसे आयातब मुझेखबरहुई। प्र०—जबतुम इङ्गलिस्तानसेआये तोउससमयक्या सरकारने तुम्हारेनिकट रैजोल्यूशन उत्तरदेनेकेलिये भेजाथा? उ०—नहीं हमनेआप दरखास्तकरके मंगायाथा। प्र०—जबवह रैजोल्यूशन तुम्हारेमंगानेके अनुकूल आयातो तुमनेजो इलजामतुम्हारेऊपरलगायेथेसबकाउत्तरदिया? उ०—हांसाहब मैंनेसबका उत्तरदिया। प्र०—जबतुमइङ्गलिस्तानसे आयेतोक्या पहिले पालनपुरमें ठहरेथे? उ०—हांसाहब पालनपुरमें ठहराथा और जिसदिनसे मैंहिन्दुस्तानमें आया उसदिनसेमैंने पूरामासिकपायाथा। प्र०—बड़ौदेमें जोतुमआयेतो अपनीतरफ़ीपर आयेथे? उ०—हांसाहब तरफ़ीपर आयाथा॥

इज़हार गजानन्दवतिल॥

गजानन्दके इज़हार ऐडवकेटजनरलने लिये उसने वर्णन किया मुझकोसरकारसे रावबहादुर का खिताब मिलाथा मैं अहमदाबादमें पहिलेदर्जेका पुलिसकाइन्स्पेक्टरहूं मैं मिस्टर सूटरसाहबके साथ मुख्यकामपर नियतहुवाहूं मुझेस्मर्णहै कि १०दिसम्बरकोमैंबड़ौदेमें आयाथाउसीसमयसेमैंयहांहूंकेवल दोदिनकेलिये अहमदाबाद चलागयाथा जिसदिन गायकवार पकड़ेगये कप्तान जेकसनसाहबके साथमैं गायकवारके महल मेंगयाथा हमलोग ९ बजे दिनके गयेथे मैंने जाकर महल में तुरन्तही पहिरासान २ परनियत करदिया और जिस२ जगह परमाल और असबाबथामैंने मोहरलगादी जवाहरखाने और निजकेखजाने परभीमोहर लगाई गईथी कप्तानजेकसनसाहब और२आदमियों के सम्मुख यहमोहरें लगाईगईं दामोदरपंथ भीउससमय उपस्थित थे उसदिनमैंने औरभी बहुतकामकिये

इसलिये सम्पूर्ण वृत्तान्त विस्तार से वर्णनहीं जो कागजात निजकी कचहरीकेथे वहकईदिनतक बन्दरहेफिररजीडन्सी में मंगायेगये कुछकागज अबभीगायकवारके महल में बंद हैंजो कागजरेजीडण्टीमें मंगायेगयेवहपुलिसके पहिरेमेंरक्खेगये ॥

साहबप्रेजीडेण्टने पूछाकियह कागजरेजीडन्सी मेंकिसने मंगवायेथे? उ०—सरकारकी आज्ञानुसार गयेथे और जबयह मोहरेंतोड़ी गईं तोसम्पूर्ण कारकुन निजके महकमेके और मिस्टरस्कटर साहब उपस्थितथे जिसदिन दामोदरपंथ पकड़ा गया मुझकोयादहै किपकड़ेजानेके पीछे मैंने उसको देखाथा मैंनेउससेकहाथा किअगरतुमसच्ची २ हालबयान करोगेतो तुम्हाराअपराध क्षमाहोजावेगा किन्तुताजीरात हिंदकीजिस दफामें अपराधके क्षमापनका वर्णनलिखाहै वहभीमैंने उसको दिखाईथी इसके विशेष मैंने उससे यहभी कहाथा किनाना जीवतिल आदि ने तो अपने २ अपराधों का इकरार किया यहीबातेंदामोदरपंथसेमैंने कहीथीं और कहाथाकिभलेप्रकार समझकर इसका उत्तर दो-इसके उपरान्त कमीशन के मेम्बर टिफनखाने को गये भोजन से सुचित होकर फिर एकत्र हुये साहबऐडवकेटजनरलनेप्रश्नकियाकि तुमनेकहाकि दामोदर-पंथकोदेखा और उसकोसमझाया था तुमने उसकेपीछे भीउसे देखा? उ०—मैंनेदोतीन घण्टेके उपरान्त फिरउस को देखाथा जबसरल्यूइस पीलीसाहबने उसकाअपराध क्षमाकरदियातो उसकेइजहारहुयेथेयहमनुष्य डेरेमेंबुलायागयावहांमैंनेउसको देखाथा सरल्यूइसपीली साहब भी उसडेरेमें थे उसवक्त उसने इजहारदियेऔरमिस्टररिचीसाहबने उसकाइजहारलिखा था मैंहेमचन्दगवाहकोजानताहूं दामोदर पंथके इजहार केपहिले मैंनेउसकोदेखाथा।प्र०—कितनीमुद्दतकेपहिलेतुमनेउसकोदेखा था? उ०—पांचछः दिनपहिलेमैंनेउसकोदेखा उसकाबयान सब अशुद्धहै किमैंनेउससे जबरदस्तीइकरार कराया और यह भी गलतहैकि जोकुछजीचाहा मैंने लिखलिया और यह बयानभी

गलतहै किमैने उससेकहाकि अगरतू इजहार परदस्तखतन करेगातो तुझकोकैदकरूंगामैनेकिसी तरहकी उसकोधमकी नहींदीनमैने जबरदस्ती उससेकिताबों को छीनाजब उसने किताबें दींउनको मैनेरख लिया हेमचन्द फतहचन्दके इजहार मिस्टरसूटरसाहबके रूबरूलियेगयेथे उससमयमैंभी उपस्थित थासुझकोस्मर्ण है किजबवहइजहार देचुकाथातो मिस्टरसूटर साहबसरल्यूइस पीलोसाहबके रूबरू उसकोले गयेथे कोई रकम किताबमें मेरीआज्ञासे दर्जनहींहुई मुझेस्मर्ण नहीं कि पहिलीबेर किताबकोकबमैने देखाथा जब हेमचन्द फतहचन्द पहिलीदफा मेरेपासकिताबों को लायातो यह रकमें उसमें लिखीथीं मैनेकोई वरक़किताब कानिकलवायान कोई नया वरक़ उसकीजगह लगवाया मालूमहोताहै किमेरेपास किताबोंके आनेके पहिलेनये वरक़लगाये गयेथे मेरेपास इस किताबमें कोईतबदीली नहींहुई ॥

जबनरसूजमादारपकड़ागया मुझकोयादहै किरजीडन्सीमें मिस्टरसूटर साहबकी आज्ञानुकूल पकड़ा गयाथापर मुझेयह स्मर्णनहींकि किसमनुष्यने उसको पकड़ाथापरन्तु मेरेरूबरू वह गिरिफ्तार कियागयाथाइसके उपरान्त रावजीसेउसका सामना करायागया जो मैदानरेजीडन्सी के रूबरू है वहांमैं नरसूकेनिकट बैठाहुआइससमयमें प्रश्नकरताथा खानसाहब अकबरअली और अब्दलअली वहां वर्त्तमान थे मैने रावजी से कहदियाथा कितुमयहीबात कहदेनाकिमैने सबबातोंकाइकरारकरलिया जबरावजी नरसूकेनिकट आयातो उसनेभी कहदियामेरे विचारमेंकिसी पुलिसके आदमीने नरसूसे नहींकहाथाकि रावजीने क्याकहा रावजीसे जितना कि कहागया उतनाही उसने नरसूसेकहा ॥

सरजन बेलनटायन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—तुमने जो कुछ रावजीसे कहावह इसलिये कहाकि वहठीक२बयान करदे ? उ०—किसविषयमें। प्र०—इसीसुक-

इसमें। उ०—उनलोगोंका साम्हनाइसलिये कराया गया था कि ठीक २ हाल मालूम हो जावे। प्र०—यदि नरसूहर एक बातका इन्कार करता तो आपक्याकरते? उ०—अगरकोई सुबूतनहोता तो छुड़ादिया जाता। प्र०—तुम्हारामतलब यह है कि तुमनरसू को रिहाकर देते? उ०—हां जब साहब आज्ञा देते। प्र०—तुम बोलाओ किजबतुम महल में गयेतो सबकागज़कुर्क करलिये थे? उ०—हां। प्र०—मिस्टर सूटर साहब वाकोई दूसरा अफ्सर मौजूदथा जबकि किताबों को मोहरें तोड़ीगईं? उ०—उससमय मिस्टरसूटर साहब मौजूदथेऔर मैंभी था। प्र०—मैं तुमसे यह प्रश्ननहीं करतामेरा प्रश्नयहहै किजबकागज तुम्हारे अधिकार में थेतो मिस्टरसूटर साहबने उनको देखाथा? उ०—जिससमय मैंने उनकागजों कोदेखा तोमिस्टरसूटर साहबकोभी दिखादिया था। प्र०—कितनोसुहूततक तुम्हारे कब्जेमें यहकागजात रहे? उ०—मेरेकब्जे में कभी यहकागज नहीं रहे पुलिस और जंगीगार्ड में थे। प्र०—ऐयारेसमझ करउत्तरदो जबतुमनेखोलकर कागज देखे तोउससे कितनी देरपीछे मिस्टरसूटर साहब आये थे? उ० तुरन्तही मिस्टरसूटरसाहब आयेथे। प्र०—तुरन्तसेतुम्हाराक्या मतलबहै? उ०—दस पन्द्रहमिनटकेपीछे। प्र०—तुमने उनसब कागजोंको कुर्काकिया था? उ०—हां। प्र०—कुर्क से कितनी देरपीछे मिस्टरसूटर साहब आयेथे? उ०—किन कागजोंको आप कहते हैं। प्र०—वह कागज जो आपने कुर्क किये थे? उ०—जितने दफ्तरथे उनकेसब कागजों को बन्दकरके मोहर करदीगई थी। प्र०—उनदफ्तरोंमें कोई मनुष्य जाभी सक्ता था? उ०—मैं और कप्तान जेकसन साहब दफ्तरमें जासक्ते थे। प्र०—तुम हर एक काग़ज कोदेख सक्ते थे? उ०—हां। प्र०—तुम कहते होकि पाव घंटेतक मैं काग़ज देखता रहा उसके पीछे मिस्टरसूटर साहब आये? उ०—हां। प्र०—इस अवसरमें तुमनेसब कागजदेख लियेथे? उ०—जब मैंने देखा कि

कागजों पर स्याही पड़ीहै तो मैंने सूटर साहबसे इत्तिला की जबसूटर साहब आयेतो मैंनेसम्पूर्ण कागजोंको देखाकईबातें और भी उसमें से मालूम हुईं। प्र०—आप उसकिताब को तहरीर का हाल बयान करसक्ते हैं? उ०—हां, कुछ वरक़ उसकिताबसेनिकालकर नयेवरक़लगा दियेगयेथे। प्र०—किताबदिखाओ कि तुम्हारी क्यागरज़है? उ०—देखिये इसपंक्ति कालेख और पंक्तियोंकी निस्बत अलाहिदाहै। प्र०—परन्तुयह वरक़ एकदूसरेसे जोड़ेहुये हैं जब तुमने किताबों को कुरक किया इसकिताबकी यहीहालत थी? उ०—हां यहीहालत थी परन्तु उससमय वरक़ऐसे मैलेनथे अब हाथोंके लगने से मैलेहोगयेहैं। प्र०—तुमको क्योंकर मालूमहुआ कि बनिस्बत और पंक्तियोंके यह सतरनई लिखीहुई है? उ०—यह सतर हालकीलिखी मालुमहोती है। प्र०—तुम कहतेहो कि यह किताबगलतहै और एक सतरके लिखेजानेके कारण किताब गलतहोगई। उ०—इस पंक्तिपर कुछमैलाकुफनहीं इसीप्रकार कईस्थानपर अशुद्धहै और वरक़बदलेगयेहैं। प्र०—तुमनेकेवल एकही जगह दिखाया कि नवीनपंक्ति लिखीहुई है और भी सतरेंदिखाओ? उ०—आपको खयालकरना चाहियेकिसम्पूर्ण पत्रेजुड़ेहुये हैं और कोई पत्राफटा नहीहै। प्र०—किताब के अन्तमें जोजुज्व हैं उसमेंघोड़ेसे वरक़कमहैं और जितनेवरक़ किताबके और जुज़ोंमेंहैं उतने वरक़अन्तके जुज़में नहीं हैं? उ०—वहकिताबका भागदिखाओ जिसमें कहतेहो कि वरक़ निकालेगयेहै—गवाहने सुनकर वहहिस्सा किताबका दिखाया जहांसे वरक़ कमथे—साहब प्रेज़ीडेण्टने कहा इसजगह कोई निशानरखदोसो सुतरज़िमने अपनेदस्तखत करदिये सरजन्-बेलनटायनसाहबने किताबको उठाकर कहाकिस तरह तुम साबितकरसक्ते हो कि यह रक़म बदलीगई है? उ०—यह स्याहीनईहैऔरवहस्याहीपुरानीमालुमहोतीहै। प्र०—जवाहर खानेका अब कौनमनुष्य मोहतमिमहै? उ०—अबसे क्यागरज

है—सरजन्ट बेलनटायन साहबने तीनबेर कहा, अब, अब, अब ? उ०—अबगणपति रावमहाजन मोहतमिमहै। प्र०—यहमनुष्य तुम्हारे करीब कारिश्तेदार है ? उ०—वह मेरा समधी है। प्र०—तुमको अपनी आबरू का बड़ा खयाल है और लोगोंको यहसंदेह है किगवाही तुम्हारी बनावट की है ? उ०—ऐसा खयाल मेरे लिये कभी नहीं हुआ। प्र०—आयु भर में ऐसा इलजाम तुमपरकभी नहींलगा ?उ०—नहीं। प्र०—जबरियासत कोटाकीगद्दी नशीनीका मुकद्दमा था तो तुमवहां उपस्थितथे ? उ०—हांमैं वहां उपस्थित था। प्र०—वहांबड़ेदरजेके अफ्सर पुलिसतुमथे ? उ०—हांमैंअफ्सरपुलिसथा और मैंने कुलतहकीकातकी। प्र०—वहमुकद्दमा प्रथम मिस्टरकागलन साहबके सम्मुखपेशहुआथा ? उ०—जो मुकद्दमा मिस्टर कागलनसाहबके रूबरू पेशहुआ थामैंने उसकीतहकीकातनहीं की। प्र०—इससे तुम्हारायह मतलबहैकिजो मुकद्दमा मिस्टर कागलनसाहबके रूबरू पेश हुआ थाउसमें तुमखास असफ्र पुलिस थे ? उ०—उसमुकद्दमे कीतहकीकात मैंने नहींकी। प्र०—क्या तुमने उस मुकद्दमे कोभी तहकीकात नहीं कीजो मिस्टररिची साहबके रूबरू पेशहुआ था ? उ०—मैं एकदफा मिस्टर रिची साहबके रूबरू गयाथा मिस्टरमैलवल साहब ने मुतरज्जिमसे कहा कि गवाह ने मिस्टर कागलन साहब कानाम भी लिया था॥

सरजण्ट बेलनटायन साहबने कहा अफ्सोस है कि तुमसब कासब तर्जुमा नहीं करते तुमने मिस्टर कागलन साहब का नामनहीं लिया॥

गवाहने कहाकि यदिमैंआपका प्रश्नअच्छीतरहसमझूंतो उसकाउत्तर देसकूं। प्र०—मुझेआश्चर्य्यहै कितुम कोंकरजवाब साफदोगे मैंपूछताहूं कितुमउसमुकद्दमेमें जोमिस्टर कागलन साहबके रूबरूपेशहुआथा पहिलेदरजेकेअफ्सर पुलिसथे ? उ०—नहींमैंने उसमुकद्दमे कोपूरीतहकीकात नहींकीथीकुछ

तहकीक़ात में संयुक्त हुआथा शायद इतनीही तहकीकातके लियेमैंबुलाया गयाथा। प्र०—मिस्टरगजानन्द आपमेरे साथ अप्रतिष्ठासे पेशआतेहैं परन्तु मैंसाफ उत्तरके पानेके बिनानहटूंगा? उ०—मैं अपने प्रश्नको इससे अधिक विस्तारसे नहीं बयानकरसक्ता। प्र०—लज्जा मतकरो साफ जवाबदो क्या तुम उससुकद्दमे में मुख्यपुलिसअफ्सरथे? उ०—पहिले नम्बरका अफ्सर पुलिसथा और गवाहकी तौरापरउस में गया था। प्र०—पहिलेनम्बर सेतुम्हारा क्याआशयहै क्यायहमतलब हैकि तुमइस सुकद्दमेकी तहक़ीक़ातमें मुख्यअफ्सरपुलिसथे? उ० नम्बर से मेरा यह मतलबहै कि मुजसे ज़ियादा तनख्वाह का कोईमनुष्य गवाहों में नथा। प्र०—उस समयमें तुम्हारा क्या दरजाथा और क्यामासिक मिलताथा? उ०—यदि आपमुझ कोसनका पतादेंगे तोकहूंगा। प्र०—सन् १८७० ई० मेथा? उ०—सन् १८७० ई० मेपहिले दरजे का अफ्सर पुलिसथा प्र०—क्यामिस्टर कागलन साहबने कहा था किइस सुकद्दमेके गवाहीदेनेके विषयमें पुलिसनेभी कुछकाररवाई कीहै? उ० मैनेउस सुकद्दमेकी तहकीकात नहींकी मैं केवलगवाह था। प्र०—क्या मिस्टर कागलन साहबने तुम्हारेलियेयहबात कही थी? उ०—अगरकहीथी तोवह गलतीपरथे क्योंकि मैनेउस सुकद्दमेकी तहकीकात नहींकी केवलगवाहथा। प्र०—प्रेजीडेण्टसाहबनेकहाक्या उन्होंनेअपने मुखसेयह बातकहीथी? उ० मुझेस्मर्णनहीं शायदअपनी कचहरी में कहाहोगा। प्र०—जो कुछउन्होंने कहाथा उससेतुम्हारीतरफ इशाराथा? उ०—मैं नहींजानता किकिसकी निस्बतयहबातथी जबमुझको एकबात सेसम्बन्धनथासुझको उसकीतलाशकी जरूरतनथी। प्र०—यदि तुमसेसम्बन्धनथातो और किससेतअल्लुकथा? उ०—जिनपुलिसके लोगोंने तहक़ीक़ात कीथी उनही सेतअल्लुकथा और मैं केवलगवाहके तौरपरथा। प्र०—जिससुकद्दमे की तहकीकात मिस्टरजस्टिस वैसिट साहबनेकी वहतुमको यादहै? उ० हां

मुझेस्मर्णहैपरन्तुमुकद्दमेकी समाप्तकेसमयमैंमौजूदनथा। प्र० लेकिन बरवक्तफ़ैसलेकीकात मुकद्दमेके तुममौजूदथे? उ०—मैं मौजूदनथा जबमुकद्दमा दौरासुपुर्द्दहुआ उस समय मुझको तअल्लुक हुआथा। प्र०—इसवर्णनसे तुम्हारा क्याय़हमतलब है कितुमको उसमुकद्दमेसे कुछतअल्लुक नथा जिसकी समाप्त मिस्टरजस्टिस वैसटके रूबरूहुईथी? उ०—जबमुकद्दमे की समाप्तहुईथीमैं वहांनथापरन्तुमुकद्दमेको मैनेमुरत्तिबकियाथा। प्र०—तुमको स्मर्ण होगा कि मिस्टर जसटिस वैसट साहबने कहाथाकि सैकड़ों मुकद्दमेमेरे सामनेआये औरमैंने उनका निर्णयकिया परन्तु ऐसामुकद्दमाकोई नहींआया जैसा कि यहमुकद्दमाहै साफमालूम होताहैकि यहमुकद्दमा बनावट काहै? उ०—मैं आपके इसप्रश्नको नहीं समझा। प्र०—मेरा प्रश्न यहहैकि तुमजानते होकिमिस्टर जस्टिसवैसट साहबने इजलासमें यहकहाथा? उ०—कहाहोगा मैं उससमय वहां नथा। प्र०—तुमनेसुनाया औरप्रकारसे तुम्हेंइत्तिलाहुईहोगी कि साहबने तुमारी निस्बत ऐसा कहाथा। उ०—मुझको कुछ खबरनहीं सिवाइसकेमैंसाबित करसकताहूं किवहाअलेहकी बातोंपरमिस्टर जस्टिस वैसट साहब आगये यदि अदालतको स्वीकारहोतो उनकागजातसे जो मेरे पास वर्त्तमान हैं इस बातको प्रतीतकराद्दं॥

गजानन्द वतिलके दुबारह इज़हार हुये॥

प्र०—दरमियान उसवक्तके जबसेकि उनकागजोंपर मोहर लगाईथीऔरफिर वहमोहरतोड़ीगईतुम्हारेकबज़ेमें कभीवह कागज़आये? उ०—नहींआये। प्र०—तुमने उनकागजोंकोक्या कियाथा? उ०—साहबमैनेउनकागज़ोंको दोघण्टेतकदेखा। प्र० जबतुमनेउनकागजोंकी आजमाइशकीथी उससमयकोईकार-कुनभीथा? उ०—हांकारकुनथे। प्र०—जबतुमने उनकागज़ों परस्याहीके धब्बे देखे तोतुमने क्याकिया? उ०—मैनेउनका-गजोंको सूटरसाहबके पासभेजदिया। प्र०—तुमरिचीसाहबके

निकटक्योंगये थे? उ०-मैंकोटाके सुकहमेकेमङ्गेगयाथाअबसाढ़े चारबजगये इसलिये कमीशन बरखास्तहुई॥

पन्द्रहवें दिन का इजलास॥

११ बजेकमीशनके सम्पूर्णमेम्बर एकचङ्गयेसरल्यू इसपीकी साहबऔरश्रीमान्महाराजा गायकवार उपस्थित थे॥

हरजीवन दास पुरुषोत्तमदासके इजहार।

हरजीवन दासपुरुषोत्तमदासके इजहारात मिस्टर अनवरारटी साहबने लिये उसने वर्णन किया किमैं कारकुन जो किगुजराती भाषामें खजानेकाकाम देतेहैं उनका सरदारहूं मुझको हिन्दुस्तानीलिखने पढ़ने और हिसाब किताबमें बहुत अभ्यासहै पहिलेतखतोंके जुज्बनाये जातेहैंऔर एकजुजआठवरकों काहोताहै औरसारी बहीजुजों कीहोतीहै यदिएक पचाभी फाड़ाजावे तोएकजुजनष्ट होजाताहै मिस्टरअनवरारटी साहबनेपूछा कितुमहेमचन्द औरफतहचन्द कोबही को देखकर पहिचान सक्तेहोकि इसमेंसेकोई वरक़ फाड़ा गया है? उ०-हांसाहब इसमेंसे वरक़ निकालेहैं औरआठवांऔर सातवां जुजनवीन काग़जका जोड़ागयाहै॥

सरजन् वेलनटायन साहब केप्रश्न।

प्र०-क्यातुम सचकहतेहोकि इसमेंसेपत्रे निकालेगये हैं? उ०-हांसाहब छठेजुजमेंसे कईवरक़ निकाले गये है। प्र० छठेवरक़मेंसे कितने वरक़लियेगयेहैं उ०-साहबदोवरक़लिये गयेहैं। प्र०-कितनेपत्रे बदलाये गये हैं? उ०-तेरह पत्रेबदलायेगयेहैं औरवह अन्तमेंहैं। प्र०-वहकौनसा जुज़है? उ० सातवां जुज़है। प्र०-क्या अंगूठीका विषयउसमें लिखा है? उ०-हांसाहब उसीमें लिखाहै॥

ऐडवकेट जनरलने फिरउसके इजहारलिये॥

हमकोबताओ किकिसजगहसेपत्रे जातेरहे हैं? उ०-उसने एकपिन्सललेकर जहांसेकि वरक़ गयेथेप्रथमसे अन्ततक चिह्न

करदिये। प्र०—यहबताओ कहांकहां दूसरीस्याहीसेलिखा है? उसनेशीघ्रही जहां२ दूसरी स्याहीसेलिखाथा बतादिया॥

सूटर साहब के इज़हार॥

साहब ऐडवकेट जनरल ने फ्रेंक हैनरी सूटर साहब को बुलाकर उनके इजहार लेना शुरू किये उन्होंने वर्णन किया कि मैं कमिश्नर पुलिस और कम्पीनियन आफदी स्टार आफ इण्डिया का हूं ९ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को इस मुकद्दमेकी तहकीकातके लियेबड़ौदेको आयाथा जिसमें कि प्रसङ्गयाकि करनैलफियरसाहब को बिषदिया गया मेरे साथ खानबहादुर अकबरअलीऔर उनका पुत्र खानबहादुर अब्दुलअलीऔर रावबहादुर गजानन्दवतिलघेमैंभूलगया रावगजानन्दवतिल मेरेपहुंचनेके कईदिन पीछेआयेथे मुझेस्मर्ण है किमैने इसमुकद्दमेमें अमीनाआयाका इजहार लियाथा१९ दिसम्बरको ५बजेके समयउसके मकान पर जो बीवी साहबके अहातेमेंहैदेखाथा उसदिनउसने विस्तारसे वृत्तान्तवर्णननहीं कियान मैने उसदिन उसके इजहार लिये क्योंकिवह बहुत बीमारथी जोकुछ आयाने उसदिन मुझसे कहाथा मुझेस्मर्ण हैअर्थात्उसनेवर्णन कियाथाकिमैंश्रीमान् मल्हरावके पास दौड़फागईथीऔररुपयाभीपाया क्योंकिउसेउससमयबड़ेवेगसे ज्वरथासुझसेहाथजोड़करकहाकिमेरे इजहारफिरलीजियेगा मुझको बोलनेकी सामर्थ्य नहींहै मुझेस्मर्ण है किमेरे जानेके पहिलेकोई पुलिसका आदमी आयाकेपासनहींगया था १८ दिसम्बरको मैंनेआया का इजहार लियाथा अदालतमेंजो इजहार हैं मेरे लिये हुयेहैं औरमेरे हाथके लिखेहुये हैं मुझको सुतरज्जिम की जरूरत नहीं है मैं हिन्दुस्तानी भाषाभले प्रकार समझताहूं २१ दिसम्बरको मैनेअस्पतालमेंजाकरफिर आयाकेइजहार लियेइनदोनों इजहारों पर[डी]अक्षर का चिन्हलगायागया डाक्टर सीवर्डसाहब १९दिसम्बरको रेजीडन्सीमें आयेऔर मुझसेकहा किआयाको अबआराम है वह

आपको बुलातीहैसो २१ दिसम्बरको मैनेउसके निकटजाकर इजहारलिये मैने २४,२५,२६दिसम्बरको रावजीके भी इजहारलियेथे और२६दिसम्बरकोनरसूके भीइजहार लियेयहसब इजहार जोअदालतमें दाखिलहुये मेरेही हाथकेहैं नरसू२३ दिसम्बरको गिरिफ्तारहुवाथा वहरेजीडन्सीमें कैदकियागया और जंगीपहिरे उसपर नियतहुये उसदिनसे आजतक वह जंगी पहिरेमेंहै इजहारों केलिये जानेकेपहिले कोई वाइदा अपराध केक्षमा करनेका उससे नहीं कियागया जबउसका इजहार होनेवालाथा मैनेसरल्यूइस पीलीसाहबको भी बुला लिया सरल्यूइस पीली साहबने भीउससे कहाकि कोईअपराध तुम्हारा क्षमा न होगाकिन्तुजो अपराध तुम पर नियत होगा उसका दण्डदिया जावेगा॥

यहसुनकर नरसूजमादारनेअपनीपगड़ी उनके चरणों पर रखदीऔर कहाचाहे मुझको फांसी होजावेपरन्तु जोठीक२ हालहैवहआपसेवर्णनकरदूंगाऔरजोकुछ मैनेकियाहै याकतेरहुयेदेखाहै आपसेसाफ़२बयानकरूंगाजबवहबयानकरचुका तोउसको पहिरेमें भेजदिया उसदिन उसका इजहार नहीं लिखा गयाथा २३ दिसम्बर कोमैने उसके इजहार लियेथे जिसकमरेमें नरसूके इजहार लिखेथे वह रेजीडन्सी में खाने काकमराथा मैंखानेके कमरेके बराबरजोकमराहै उसमेंरहता थाजिसदिन रावजी कीपेटी देखीगई मुझको वहतारीखयाद है २५ दिसम्बरथी मुझेऐसा यादहै किमेरे वहां पहुंचने के पहिले पेटीमंगाई गईउस समयमैं अपनेकमरेमें गयाथाकि अफ्सर डटैकटिव(सुरागरसां)नेमुझको इत्तिलाकी किपेटीमें कोईकागज मालूम होताहै उस जगह परकुछ डोरे निकले हुयेथे मैने अपने हाथसे पुड़िया निकाली जब उसको खोल करदेखातोकोई श्वेतवस्तु मालूमहुई मैनेअपनेहाथसे उसेएक लिफाफेमें रक्खा और उसका हाललिखलिया और जब मैं बम्बई को गया उसको अपने साथ लेगयाजब दमोदरपन्त को

पहिले इजहार लियेगये तोमैंबड़ौदेमें मौजूद नथा मैने बम्बईसे फिरवापिस आकर ३—४—५ फरवरी सन् १८७४ ई० को इसके इजहार लियेइसके इजहारयहहैं सोसूटर साहबसे इजहार लेकर शामिल मिसल हुये और उसपर नम्बर २ (जी) अक्षर का चिन्ह कियागया फिर गवाह ने बयान किया कि मुझको थोड़े से हिसाब के कागज दिखलाना याद है उसमें कहीं कहींस्याहीके धब्बे पड़े हुये थे २० फरवरी को यह कागज़ हिसाब केदेखे थे यायायद जनवरी मेंदेखेहों तारीख अच्छी तरह स्मर्ण नहीं ॥

एकपुलिन्दा कागजकागजानन्द मेरेनिकट लायाथाऔर मुझसे कहाकि डेरेमें चलोहिसाबके कागज़ देखे जाते हैमैं दूसरे एकडेरेमें रहताथा औरहिसाबके काग़ज़ दूसरे डेरे में रहतेथे जबमैं वहांगया तोक्या देखा कि कई हिन्दुस्तानी कारकुन अर्थात्क्लर्क उनहिसाबके कागजों कोदेखरहेहैं मैने कुछकिताबेंऔरभी वहांरक्खी देखींजिसमें कई जगह परसियाहीपड़ीहुईथी वहांदेरतकमैंबैठारहा जोकारकुन उनकागजोंको देखरहेथेवह उन्हींकेलिखे हुये कागजथे और महल सेआयेथे उनमेंएकका नामबलवन्तराव थामैने हेमचन्द्रऔर फतहचन्द काइजहार लियाथा मुझको स्मर्णहैअदालतमें जो इजहार रक्खेहैं मेरेही हाथके लिखे हुये हैं ६ फरवरी को कारनैल वारटनसाहबके अहातेमेंयह इजहार लियेथेसररिचर्ड मीडसाहबने पूछाकि किसतारीख कोतुमने यह इजहार लियेथे गवाहने कहाकि ६ फरवरीको लियेथे उसनेहिन्दुस्तानीभाषामें इजहार दियेथे जिसदिन अंगरेजीमें मैने उसके इजहार लियेथेउसीदिनमरहटीया गुजराती बोलीमेंउसके इजहार लिखे गये थे मैने पूछा कि तुम हिन्दुस्तानी बोली जानतेहो जबउसने कहाकि मैं जानताहूं तोमैने हिन्दुस्तानी भाषा में उससे प्रश्नकिये ॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा क्या आपनेउसके इजहार हिन्दुस्तानी भाषामें लिखेथे ॥

गवाहने कहा मैने हिन्दुस्तानी बोलीमेंपूछेथे परन्तुअंगरेजीभाषामें लिखेगये जबउसके इजहार लिखेगये तो उसको हिन्दुस्तानी भाषामें सुनायेगयेथे ॥

मुझेस्मर्णहै कि उसने अपनेइजहार परदस्तखत भीकियेथे उसकोकिसी प्रकारकी धमकी नहींदी नकुछसख़्तीकी सिवा इन इजहारोंके औरभी कुछ बातें उसने मुजसे कीथीं उसके कानमें बालेपड़ेहुयेथे वहअति उत्तमथे औरउसमें हीरेजड़ेथेयदि मैने ऐसेबालेकभी बनेहुये नहींदेखे थे मैनेउससेपूछा यहबाले कहांके बनेहुयेहैं उसनेकहा बड़ौदेके बनेहुयेहैं यह बातें उसके इजहार होनेके पहिले हुई थीं इनपर मैने (ए) (बी) (सी) अक्षरोंके चिन्ह करदिये थे अदालत में जोकिताबें रक्खीहैं वहीहैं उनपर मेरेदस्तखत भीहैं ॥

जबहेमचन्द फतहचन्दकेइजहार कमीशनमें लियेगयेइसी हेमचन्द केइजहार मैनेलियेथे सोउसके अंगरेजी इजहार अदालतमें दाखिल किये ॥

औरउनपर (एच) अक्षर नम्बर२कानिशानकियागयासाहब प्रेजीडण्टने कहा यह इजहार दिये हैं जिनकी निस्बत सरजन्ट बेलन टायन साहब उज्रकरते हैं ॥

साहब ऐडवकेट जनरलने कहानहींयहवहइजहारनहीं हैं सरजन्ट बेलनटायन साहब मरहठी बोलीपरउज्र करतेहैं परन्तु उनइजहारों कोभीथोड़ी देरके पीछे दाखिल करूंगा इसकेउपरान्त सूटरसाहबनेवर्णन कियाकि बलवन्तरावजिसने हिसाबकी जांचकीथीकभी हिरासतमें नहींरहामैंउसकेनाम सेवाकिफ नहींहूं दोतीन दिनहुये कि उसके इजहार कमीशन के सम्मुख हुये थे ॥

सरजण्ट बेलन टायन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—मैने यहबात समझीहै कि पहिले आपने नरसूसे बातें

कीफिर उसको आपसरल्यूइस पीलीसाहबके रूबरू लायेऔर वहपूर्व्वोक्त साहबके रूबरू राजीहुआ किजोकुछ मैं जानता हूं वर्णनकरूंगा ? उ०—हां। प्र०—तुमनेउसदिन उसके इजहारनहीं लिखे ? उ०—उसदिन उसने केवल बयानकिया था लिखे नहींगये थे। प्र०—उस दिन जो बार्त्ता हुई कोई लेख आपके पासनहींहै ? उ०—उसदिनका लिखाहुवा कुछ हाल मेरेपास नहीं है। प्र०—उस दिन उसके इजहारों का लिखा जाना कुछकठिन था ? उ०—मैंइस मुकद्दमे में और २तहक्की-क्कात करता था उससमय मुझको सावकाश नथा। प्र०—मालुम होताहै किआपकी वह तहक्कीक्कात जरूरीथी ? उ०—हां बहुत जरूरीथी। प्र०—उसतहकीकात सेबढ़कर औरकोईबात नथी ? उ०—हां बढ़करन थी जोआपचाहें तोमैं अपनारोज नामचा दिखा सक्ताहूं किउसदिन मुझकोक्याकाम था। प्र० मिस्टर सूटर साहब मैं जानताहूं किउसदिन आप को बहुत कामहोगा रोजनामचेके दिखानेकी कुछ आवश्यकता नहींहै क्याआपने केवल इसीकारण इजहारनहींलिखे ?उ०—हांइसी कारणनहीं लिखेऔर मैंजानता था कि नरसूजंगीगार्ड में है औरकोई उसके पासनहीं जासक्ताहै नकुछसिखासक्ताहै। प्र० क्याआपके पुलिसके आदमीनहीं जासक्तेथे ? उ०—हांपुलिस केआदमी। प्र०—फिरआपके इसबातके कहनेसे क्या मतलब है किकोई मनुष्यनहीं जासक्ताथा ? उ०—मेरा मतलब यहहैकि कोईदूसरा मनुष्यउसकेपास नहींजासक्ताथा। प्र०—जबतुमने तीनदिन केपीछे उसकेइजहार लियेतो उसकाबयानवही था जोउसने पहिलेदिन वर्णनकिया ? उ०—हांवहीथा जोउसने २३ दिसम्बरको वर्णन कियाथा और २५ दिसम्बर कोउसको लिखलिया॥

गजानन्दवतिल फिरबुलाया गया॥

मिस्टर अनवरारटोसाहबने फिरउससे प्रश्नकिये उसनेवर्णन कियाकि मैं हेमचन्दफतहचन्दको जानताहूं कि उसने सूटर

साहबके सन्मुख इजहारदिये और मैनेगुजराती भाषामेंउसके इजहार लिखे और हेमचन्दने उसपर दस्तखत करदिये॥

सरजण्ट बेलन टायन साहबके प्रश्न॥

प्र०—क्याइसके पहिले कितुमने सूटरसाहबको बुलायाथा इसकेइजहारलेलियेथे? उ०—मिस्टरसूटरसाहबके आने केपीछे लियेथेकिन्तु सूटरसाहबने आपहीलियेथे और मैंउनकेसन्मुख लिखताजाताथा। प्र०—मेराप्रश्न यहहै कितुमने सूटरसाहबके आनेकेपहिले उसके इजहार लियेथेया सूटर साहबने उसके इजहार लिये याय्हकि केवल सूटर साहबने आकर आपही इजहारलियेथे और उनके आनेके पहिले तुमने बिल्कुल नहीं लिये? उ०—नहीं मैंनेलिखे और सूटरसाहबने आपही इजहार लिये। प्र०—कौनतारीख उसमें है? उ०—आठवींतारीख है। प्र०—परन्तु छठी तारीखभी तोलिखी है? उ०—हांछठी तारीख भीहै। प्र०—दोतारीखोंकेहोनेका क्या कारणहै? उ० छठीतारीखकोमिस्टर सूटर साहबने इजहार लिये और आठवीं तारीख को सरल्यू इस पोलीसाहबके रूबरू दस्तखत उसनेकिये इससे दोतारीखें हुई॥

ऐडवकेट जनरलने दुबारह इज़हार लिये॥

प्र०—क्यापहिलेगुजराती भाषामेंइजहारलियेथे और फिर सूटरसाहबनेअंगरेजीमेंलिखेथे? उ०—नहींसाहब पहिलेसूटर साहबने अंगरेजी में लिखे थे फिर मैंने गुजराती भाषा में उसकातर्जुमा किया और उससे दस्तखत कराये—प्रेजीडण्टने कहामैंयह समझा किपहिले अंगरेजीभाषामें उसकाइजहार लिखागयाऔर फिर गुजराती भाषा में उसका उल्था किया गया? उ०—हांसाहब अंगरेजीसे गुजराती भाषामें एकऔर मनुष्यउल्था करताथा और मैंलिखता जाताथा—एडवकेट जन रलने पूछातुमनेजब गुजराती भाषा में लिखलिया हेमचन्दको सुनायाभीथा? उ०—हेमचन्दने आपही उसको पढ़लिया और जहां२वहअटकामैनेउसकोबतादिया॥ प्र०—फिरउसनेक्यादस्त-

खतकिये ?उ०-हांसाहब उसने अपनेहाथसे उसपर दस्तखत कियेसाहबप्रेजीडण्टनेकहाकिहेमचन्द्रनेक्याहिन्दुस्तानीभाषा मेंअपनेइजहार दियेथे ? उ०-हांसाहब कुछहिन्दुस्तानी भाषा मेंइजहारदिये और कुछ गुजराती बोलीमें। प्र०-तुमतोकहते थेकिकिसी और मनुष्यने अंगरेजीमेंलिखकर गुजरातीभाषा में उल्थाकिया था-एडवकेटजनरलने कहा कि सरल्यूइसपी-लीसाहबको बुलाओ औरहम उनसे कुछ प्रश्नपूछेंगे और सर-ल्यूइसपोली साहब अपनीकुरसी परबैठें औरअपने इजहारदें॥

सरल्यू इसपीलीसाहबके इजहार॥

सरल्यू इसपीली साहबके इजहार ऐडवकेट जनरलने लिये उन्होनेवर्णन किया कि मैं एजण्ट गवर्न्नर जनरल हिन्द और इस्पीशियल कमिश्नर बड़ौदेकाहूं चौथी दिसम्बर कीसंध्याको बड़ौमेंपहुंचाथा बड़ौदेके पहुंचनेके पीछेपहिलेकाममेरा यह थाकिमैंने मिस्टरस्क्टर साहबको उसमुकद्दमे की तहकीकात केलिये बुलायाजो करनैल फियर साहबके विष दिये जानेका उद्योग हुवाथा और यह काररवाई उसहिदायतके अनुसार मैनेकी जोमुझको गवर्न्नमेण्टसे मिलीथी सो मिस्टरस्क्टरसाहब मेरेपास नियतहुये और८दिसम्बर कोवह मेरे पास पहुंचेमैंने उनकेरहने केलियेएक रेजीडन्सीमें कमरादेदियाथा जोकमरा इनदिनों खानेकाहै उन्होंनेअपनी तहकीकात शुरू की मुझे स्मर्णहैकिमैनेउससमय सुनाथा किरावजी हवालदारनेजोकुछ वर्णनकियाहै मैनेइसमुकद्दमे कीसबतहकीकात मिस्टरस्क्टर साहबके सुपुर्द करदीथी २३ दिसम्बर के सुबहको मिस्टरस्क्टर और रिची साहबमेरेपास आयेथेमेरी इच्छाथीकिबड़े दिनकी छुट्टियोंमें बम्बईकोजाऊंजब मुझेमालूम हुवाकि बहुतबड़ीएक बातप्रगट हुईहैतोमैंबम्बईन गया मिस्टरस्क्टर साहब भी २१ दिसम्बरको बम्बईजानेवालेथे मैनेउनसेकहाकि २३तारीखतक आपभी नजादिये उसदिन खानाहोने वालाहै फिरआप और

हमसाथचलेंगे-मिस्टरस्यूटरऔररिचीसाहब नेरावजीके बयान का मुजसेजिक्रकियाथा मैनेकहाकि रावजीको मैंभी देखना चाहता हूं जब मैने उसको देखातोउसने मुझसे वही वर्णन कियाथाजो अबकमीशनके सन्मुखदूजहार दियाजोकुछ उसके मनमें आयामुजसे कहाऔर किसी मनुष्यने रावजीसे एतिराज़नहीं कियादूसरे दिन वृहस्पतिवार थी जबमैं सीढ़ीसे उतरता था मैने स्यूटर साहब से कहाकि आपमेरेसाथ चलिये मैं शीघ्रही महाराजा साहबसे कहूंगाकि विषदिये जानेमें आपका नामभी आयाहै तबमिस्टर स्यूटरसाहब ने कहा कि नरसूनेभी सबबातोंको कुबूल कियाहै जब महाराजा साहब मेरेनिकट आयेस्यूटर साहबमेरेसाथ महाराजासाहबके पास गयेमैने महाराजासाहबसे सबबातें वर्णनकीं और कहा कि आपभीइसतरहसे तहकीकातमें सहायतादीजिये जिससेसब हालस्पष्ट मालूमहोजावे महाराजने सहायता देनेकाइकरारकिया जब महाराजा साहबचले गयेतो मैने नरसूको देखा वहखानेके कमरेमेंबैठाथामैं नियतसमयपर उसकमरेमें गया और जमादारसे मैनेकहा यदि तुमको यह खयालहो किसब हालवर्णन करनेसे तुम्हाराअपराध क्षमाहोजायगासोयहबात कदाचित् न होगीमैं अपनीयथाशक्ति तुमको दण्ड दिलाऊंगा फिरमैने कहाकितुमघोड़ीदेर अलगबैठकर अच्छीतरह सोचो और समझोफिरजो तुम्हारेमनमें आवे वर्णनकरना मैनेस्यूटर साहबसेभीकहाकि जमादारकोभी समझादोकि उसकाअपराधक्षमानहोगा घोड़ीदेरतकजमादार चुपबैठारहा फिरएक दीबेर मेरेपैरोंपर पगड़ी डालदी और उसने और भीकुछ बातें खुशामदकी कहींवह मुझकोवर्णनहीं उसनेकहा किसरकार चाहेमुजको मारेअथवा जीतारक्खे मैंजोकुछ सचहै सरकार केसम्मुखवर्णन करूंगा सोउसने उससमय बयानकिया परन्तु उसकाबयान लिखानहीं गया जोकुछउसने कमीशनके सम्मुख

बयानकिया वहीसुनसे कहाथा और जो इजहार श्रीमान् गवर्नरजनरलकी सेवामेंभेजेगये उसकामतलब उस इजहारके सहश्रथाजो २६ दिसम्बरको मिस्टरसूटर साहबनेलियेथे मेरे कहनेसे पहिलेदिन मिस्टरसूटर साहबने उसके इजहारनहीं लिखेथे मैनेकहाथा किअभी उसेध्यान करनेदो फिरमैनेउस विषयमेंकोई काररवाई नहींकी २६ दिसम्बरको संध्याकेसमय बाहरजाने केलियेकपड़े पहिनताथा और अपनेकमरेमें टहल रहाथा उससमय मैनेनरसूको देखाकि एकपुलिसके सिपाही केसाथ रेजीडन्सीके बागकीओर जाताहै थोड़ीदेरके पीछेबड़ा शब्दसुनपड़ा लोगरक्षियां और सहायता चाहतेथे जिसतरह से होसका मैं शीघ्रही सीढ़ी से नीचे उतरा जबबरामदे में पहुंचातो क्यादेखा कि नरसूदोतीन सिपाहियों समेतभागा हुवाआताहै मैने सिपाहियों से पूछाकि क्या हालहै उन्होंने उत्तरदिया कि यहमनुष्य कुवेंमें गिरपड़ा था॥

प्र०—यह कुंवाकुछ गहराहै और आपनेवह कुंवादेखाहै?
उ०—हांमैं उस कुंवेको जानताहूं और कुंवोंसे वहगहिराहै यहकुंवा पक्काबना हुवाहै दूसरेदिन रविवारको मैनेनरसूको देखाउसके किसीसंबन्धीने अरजीभेजीथी जबगवर्नर इण्डिया केपाससे मुझको गायकवारके पकड़े जाने की आज्ञा हुईतो गायकवारके महलमें जितनेकमरेथे सबपर मोहर लगवादी थीमैने कप्तान जेकसन साहब और एकपुलिसके हवालदार कोइस कामपरनियत कियाथा मुझकोउसहवालदारकानाम स्मर्णनहींहै गायकवारकी गिरफ्तारी केउपरान्तजोखास २ गवाहोंकेइजहार लियेगयेउनइजहारों कीतसदीकमेरेसन्मुख हुई कायदायह थाकि जबकिसी मनुष्यके इजहार होतेजाते येतो पुलिसके लोगइजहार कीसिदाकत के लिये गवाह को मेरेपासलातेथे जो गवाहपढ़ा लिखाहुवा तो अपने इजहार कोआपहीपढ़लेताथा जो अनपढ़हुवा तो उस को पढ़कर उस इजहार सुना दियेजाते थे वह सुनकर दस्तखत करदेता था

चौर मैं उसपरतसदीक लिखदेताथा दामोदरपन्थ कोपकड़े जानेकेपहिलेसे मैंजानताहूं एकबेरपहिलेउसकोदेखाथाचौर शायददोतीनबातेंभी मैंनेउससेकहीथींउससमयजबकिमैंउससेवार्त्ता करताथा गायकवार भीआयेथे मैंउनसे वार्त्ता करने लगा जबगायकवार मुझसे बिदाहोनेलगे तोकहा कि दामोदरपन्थ मेरेप्राईवेटसिक्रेटरी हैं मैंने गायकवारसे यशवन्तराव और सालिमके भेजदेने की दरखास्त कीथी यहदोनों मनुष्य रेजीडन्सीके अहातेमें क़ैदहैं दोबेर मैनेउनको बुलायाथाजब पहिलीबेर उनको बुलायातो मैंकुछकाम करताथावह गन्ती से शहर को वापिस आया जबवह भूल मुझ को मालूम हुई तोमैंनेउनको शीघ्रहीफिर बुलाया श्रीमान्महाराजासाहबके वकीलउनकेपास आतेजातेथे कुछमनाहीन थीमैंयशवन्तरावको अपनीजातसेनहींजानताहूं यहकहता हैकि मैं गायकवारका सरीफहूं इस मनुष्यपर कईअपराध लगे हैं गवर्न्मेण्टहिन्दकी अज्ञानुकूल उसकी तहकीकात मुल्तवीरक्खी है जब कमीशन का निर्णय मालूम होजावेगा तबदेखाजावेगा॥

सरजनबेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

प्र०—सरल्यूइस पीली साहबजब गायकवार आजाद थे तो आपनेउनकोकुछदेखाहोगा? उ०—निस्सन्देहमैनेउनको देखा है श्रीमान्महाराजा मल्हरराव प्रतिदिन वादूसरेदिनमेरेपास आतेथे। प्र०—जबआप बड़ौदे में आयेतो श्रीयुत वाइसरायके लेखसेविदितहोताहैकिआपको श्रीमान्मल्हरावकेप्रबन्धमें सहायता करनीअति कठिनमालूम हुई? उ०—मुझेहिदायतथी किजहांतक सम्भवहो श्रीमान्मल्हरावके प्रबन्ध में सहायता दूंऔर यहभी मुझकोआज्ञाथीकि करनैलफियर साहबने जो विष दियेजानेकीतहकीकातकीथी उसकोमैंपूर्ण करूं प्र०—सरल्यूइसपीलीसाहब जबआपसे और श्रीमल्हरराव से वार्त्ता हुई तो आप को मालूम होता था कि वह आपका मत मानते थे

और अपने आधीनी देशका उत्तम प्रबन्धकरना चाहते थे ? उ०-महाराज गायकवार तनमन से चाहते थे कि देशका अच्छा प्रबन्धहो और जोकुछमैं हिदायत करूंउसको वहकरें सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा मेरेसाथी ऐडवकेट जनरलने आपसे यशवन्तराव और सालिमके विषयमें कुछ पूछा थाइस लियेमैं आपकेकुछ कागजपेश करताहूं और निश्चय है कियह कागज ठीक और दुरुस्त होंगे यदिमें गल्तीपर हूं तो उससे मुजको इत्तिला दीजिये सो सरजण्ट बेलन टायन साहब यह कागज पढ़ने लगे ॥

चिट्ठी दादाभाई नूरुजी के नामपर ॥

माईडियर सर-यदिआप सालिम और यशवन्तरावकोमेरे निकट भिजवा दीजिये तो मैं आप का गुण मानूंगा-मिस्टर स्टरसाहब इस मुकद्दमेमे जिसकी किदून दिनों तहकीकात होरही है उनकी गवाहीलेना चाहते हैं ॥

दस्तखत ल्यू इसपीली साहब मुकाम रेजीडन्सी
लिखाहुआ २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० का ॥

सरजण्ट साहबने कहाकि सरल्यू इसपीली साहब क्याआपने नीचे लिखीहुई चिट्ठी उसी दिन पाई ॥

चिट्ठीबनामसर ल्यू इसपीलीसाहब महल
बड़ौदा २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० ॥

माईडियरसर-आपकी आज्ञानुकूल जोइस समय मेरेपास पहुंची मैनेसालिम और यशवन्तराव को गवाही देने केलिये भेजदिया ॥

आधीन दादाभीनूरुजी ॥

और एक और चिट्ठी भी आपकेपास दादाभाई नूरूजी की आई है वह यह है ॥

सरल्यूइस पीलीसाहबके नामपर ॥

माईडियरसर-मैंने सालिम और यशवन्तराव को आपके पास भेजदिया निश्चयहै किवह पहुंचे होंगेमैंमुन्तजिरहूं कि

आपकेपास से और कोईचिट्ठी आवे जिसकी मैंतामील करूं ॥

दस्तखत-दादाभाई नूरूजी ।

सरल्यू इस पीलीसाहब ने उत्तर दिया कि दादाभाईने यह चिट्ठी शायद इसलिये लिखी कि सालिम और यशवन्त राव नगरको लौटकरगयेथे ॥

सरजण्टबेलनटायन साहबने फिर एक चिट्ठी पढ़ी वह यहहै ॥

दादाभाई नूरूजीके नामपर ॥

माईडियरसर-मेहरबानी करके महाराजासाहबसे कहिये किसालिम और यशवन्तरावके घरकी तलाशीकी जायक्योंकि मालूमहुवा कियहलोग पूर्वकेरेजीडण्ट के विष देनेमें संयुक्त हैं और जोकि पुलिसकेकमिश्नर तहकीकातकरतेहैंइसीसेतलाशी की आवश्यकता है पुलिसकेकमिश्नर यहभी चाहतेहैं किआप अपनी कचहरीकेकिसी अफ्सरके द्वारा उनके घरकीतलाशी करावें इसचिट्ठी कोपुलिसकेकमिश्नरकेदो मनुष्यआपके निकट लेजावेंगे इनलोगों के सामने घरकी तलाशीहोनी चाहिये ॥

दस्तखत ल्यू इसपीलीसाहब
लिखाहुवा २३ दिसम्बर सन् १८७४ई० ॥

फिरसरल्यू इस पीली साहबनेऔर दूसरी चिट्ठीभेजी और महाराजा साहबनेफौरन् उसकी तामीलकी ॥

दादाभाई नूरूजीके नामपर ॥

माईडियरसरसाहब कमिश्नर पुलिसनेमुझकोइत्तिलादीकि यशवन्तराव और सालिमजो गायकवारके नौकरहैं जिनको कि आपनेभिजवा दियाथा वह विलाहाजिरी और इजहार साहबकमिश्नर पुलिसकेपाससे लौटकर शहरकोगये कमिश्नर साहबकहते हैंकिइन लोगों परविषदेने का अपराध साबित है इसलिये पुलिसके कमिश्नरसाहब चाहतेहैं किउनलोगोंको हिरासतमें रहनेकेवास्ते भेजदीजिये मेरीसलाह श्रीमहाराजा गायकवारको यहहैकि इससुकद्दमेकी तहक़ीक़ात मेंहर

प्रकारसे सहायता करें जिससे मुक़द्दमा साफ़ होजावे यदि श्रीमहाराजा गायकवार इनलोगोंको गार्डमें भेजेंगे तो उचित होगा॥

दस्तखत ल्यूइस पीली॥

इसके उपरान्त दादाभाई नूरूजीने नीचे लिखी हुई चिट्ठी सरल्यू इसपीली साहबके नाम भेजी॥

करनैल सरल्यूइस पीली साहबके नामपर

बड़ौदा लिखाहुवा २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई०॥

जिससमय आपकी चिट्ठी पहुंची तो तुरन्त महाराजा साहब ने यशवन्तरावको बुलवाया और उससे पूछा कि तुम और सालिम इनहार हुये बिना रेज़ीडन्सीसे लौट आये यशवन्तरावने कहा कि हमने एक चिट्ठीपट्टे वालेको दीपट्टेवालेने लौटकर कहा कि साहबने कहा कि सलाम बोलो यह सुनकर सालिमने उत्तर दिया कि साहबने हमको किसी आवश्यकताके लिये बुलाया है साहबसे पूछो कि किसवास्ते हमको बुलाया है उससमय नाना जीपट्टे वालेने आकर कहा कि तुमलोग लौट जाओ पस इससे प्रश्नोत्तरसे मालूम होता है कि कुछ गलती हुई मैंने उनलोगों से नहीं कहा कि तुम पुलिसके कमिश्नर साहबके पास जाना मैंने केवल आपके पास भेजा था जबमैंने महाराज को आपकी चिट्ठीका मतलब समझाया तो उन्होंने कहा कि अफ़्सोस है जो ऐसी गलती हुई सो महाराजा साहबने आज्ञा दी कि तुरन्त वहलोग आपके पास हाजिर हों और अबमैं एक कारकुनके साथ भेजता हूं यह कारकुन उनको आपके सुपुर्द करेगा श्रीमान् महाराजा साहब सदैव आपकी सहायता करनेके लिये तय्यार हैं और चाहते हैं कि यह मुक़द्दमा अच्छीतरह साफ़ होजाय॥

दस्तखत—दादाभाई नूरूजी

दादाभाई नुरूजीके नामपर

रेज़ीडन्सी लिखाहुआ २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई०॥

माईडियरसर—मैं अतिगुणमानता हूं कि आपने इतनी जल्दी

आपकेपास से और कोईचिट्ठी आवे जिसकी मैंतामील करूं ॥

दस्तखत-दादाभाई नूरूजी ।

सरल्यू इस पीलीसाहब ने उत्तर दिया कि दादाभाईने यह चिट्ठी शायद इसलिये लिखी कि सालिम और यशवन्त राव नगरको लौटकरगयेथे ॥

सरजण्टबेलनटायन साहबने फिर एक चिट्ठी पढ़ी वह यहहै ॥

दादाभाई नूरूजीके नामपर ॥

माईडियरसर—मेहरबानी करके महाराजासाहबसे कहिये किसालिम और यशवन्तरावके घरकी तलाशीकी जायक्योंकि मालूमहुवा कियहलोग पूर्वकेरेजीडण्ट के विष देनेमें संयुक्त हैं और जोकि पुलिसकेकमिश्नर तहकीकातकरतेहैंइसीसेतलाशी की आवश्यकता है पुलिसकेकमिश्नर यहभी चाहतेहैं किआप अपनी कचहरीकेकिसी अफ्सरके द्वारा उनके घरकीतलाशी करावें इसचिट्ठी कोपुलिसकेकमिश्नरकेदो मनुष्यआपके निकट लेजावेंगे इनलोगों के सामने घरकी तलाशीहोनी चाहिये ॥

दस्तखत ल्यू इसपीलीसाहब
लिखाहुवा २३ दिसम्बर सन् १८७४ई० ॥

फिरसरल्यू इस पीली साहबनेऔर दूसरी चिट्ठीभेजी और महाराजा साहबनेफौरन् उसकी तामीलकी ॥

दादाभाई नूरूजीके नामपर ॥

माईडियरसरसाहब कमिश्नर पुलिसनेमुझकोइत्तिलादीकि यशवन्तराव और सालिमजो गायकवारके नौकरहैं जिनको कि आपनेभिजवा दियाथा वह विलाहाजिरी और इजहार साहबकमिश्नर पुलिसकेपाससे लौटकर शहरकोगये कमिश्नर साहबकहते हैंकिइन लोगों परबिषदेने का अपराध साबित है इसलिये पुलिसके कमिश्नरसाहब चाहतेहैं किउनलोगोंको हिरासतमें रहनेकेवास्ते भेजदीजिये मेरीसलाह योमहाराजा गायकवारको यहहैकि इसमुकद्दमेकी तहक़ीक़ात मेंहर

प्रकारसे सहायता करें जिससे मुक़द्दमा साफ़ होजावे यदि श्रीमहाराजा गायकवार इनलोगोंको गार्डमें भेजेंगे तो उचित होगा॥

दस्तखत ल्यूइस पीली॥

इसके उपरान्त दादाभाई नूरूजीने नीचे लिखी हुई चिट्ठी सरल्यू इसपीली साहबके नाम भेजी॥

करनेल सरल्यूइस पीली साहबके नामपर
बड़ौदा लिखाहुवा २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई०॥

जिससमय आपकी चिट्ठी पहुंचीतो तुरन्त महाराजा साहब नेयशवन्तरावको बुलवाया और उससेपूछाकि तुम और सालिम इनहार हुयेबिना रेज़ीडन्सीसे लौटआये यशवन्तरावनेकहा कि हमनेएक चिट्ठीपट्टे वालेको दीपट्टेवालेने लौटकरकहाकि साहबनेकहाकि सलामबोलोयह सुनकरसालिमने उत्तरदिया किसाहबनेहमको किसीआवश्यकताकेलिये बुलायाहैसाहबसे पूछोकि किसवास्ते हमको बुलाया है उससमय नाना जीपट्टे वालेनेआकर कहाथाकि तुमलोग लौट जाओ पसइसप्रश्नोत्तरसे मालूमहोता हैकिकुछगलतीहुईमैंने उनलोगों सेनहीं कहाकितुम पुलिसकेकमिश्नर साहबके पासजाना मैंने केवल आपके पासभेजाथा जबमैंनेमहाराज को आपकीचिट्ठीकामतलबसमझायातो उन्होने कहाकिअफ़्सोसहै जोऐसीगलतीहुई सो महाराजासाहबने आज्ञादी कि तुरन्त वहलोगआपकेपास हाजिरहों और अबमैं एककारकुनके साथभेजताहूं यहकारकुन उनको आपके सुपुर्द करेगा श्रीमान्महाराजा साहब सदैव आपकीसहायता करनेकेलिये तय्यारहैं और चाहते हैं कि यह मुक़द्दमा अच्छीतरह साफ़होजाय॥

दस्तखत—दादाभाई नूरूजी

दादाभाई नुरूजीके नामपर
रेज़ीडन्सी लिखाहुआ २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई०॥

माईडियरसर—मैं अतिगुणमानताहूं कि आपनेइतनीजल्दी

सालिम और यशवन्तरावको गवाहीदेनेके लियेभेजदिया मैने पुलिसके कमिश्नरसे आपहीकहदियाहै कि यहलोगहिरासत में रक्खेजांय परन्तु इनलोगों को किसीतरहकीतकलीफन हो और कलउनकीगवाही अवश्यलीजाय जो पट्टेवालेनेउनलोगों सेसलामबोलने और चलेजानेको कहदियाथातोमेरी इत्तिला बिनाकहाथा मेरीओरसे श्रीमान् गायकवारका शुकरिया अदाकीजिये कि वहमेरा भरोसाकरतेहैं और हरप्रकारसेवह मेरी सहायता करेंगे यदि सम्भवहो तो कलसुबहके आठबजे आपमुझसे मुलाकात कीजिये॥

दस्तखत ल्यूइसपीलो॥

यहचिट्ठियां सुनकर सरल्यूइसपीलीसाहबने उत्तरदियाकि मुलका होना तो साफ प्रकट है उचितथा कि सालिम और यशवन्तराव पुलिसके कमिश्नर साहबके पासजाते—श्रीमान्महाराजा गायकवारने मेरीचिट्ठियोंके जल्दी २ उत्तरदिये प्र० क्याइसबातका निश्चयकरूं किजब गायकवारपर विषदियेजाने का सन्देहहुआ तो वहआपही आये और उन्होंनेअपने तईं सुपुर्द करदिया? उ०—वास्तवमें उन्होंनेवैसा नहींकिया। प्र० अबआप अपनीतौरसे वर्णनकीजिये कि क्याहुवाथा? उ०—पहिलीबेर २३ दिसम्बर को मैनेसुना कि गायकवार भी विष दियेजानेके सुक़द्दमेमें संयुक्तहैं जबवह २४ दिसम्बरको मेरी मुलाकातके लियेआये तो पुलिसके कमिश्नरसाहबके उपस्थित होनेके वक्त मैने जो सबहाल बीताथा उनसे कहदिया था और दरख्वास्तकी कि जहांतक होसके आपइस सुकद्दमेकी तहक़ीक़ात में सहायताकरें उन्होंने कहामैं प्रत्येक समय पर सहायताकरनेकेलियेतय्यारहूं। प्र०—जबसे आपनेयहबातउनसे कही और जबतकवह गिरिफ़्तार नहींहुये उनको किसीतरह की रोकटोक थी? उ०—कौन। प्र०—गायवार? उ०—नहीं। प्र०—आपनेउनकोक्योंकरगिरिफ्तारकिया? उ०—जबश्रीमान् वैसरायने मुझको हिदायतकी तबमैनेउन्हें गिरिफ्तार किया

प्र०—क्या आपही वहरेजीडन्सीमें आयेथे ? उ०—हांवहआप ही रेजीडन्सीमें आयेथे और मैनेसबहाल उनसेकहदियाथा प्र०—उससमयउन्होंने अपनानिर्दोष होनाबयानकियाथाऔर आपसे कहाथाकि मैंतय्यारहूं मुझको इससमय क़ैदकरलीजिये मैनेसुनाहै कि किसी काइदेका वर्त्तावहुवा था ? उ० हांमैं रेजीडन्सी की हद्दतक गया जब उनकी अमलदारी में पहुंचातो श्रीमान्वैसरायका इश्तिहार पढ़कर सुनाया और उनको गिरिफ्तारकिया यहसब बातें प्रतिष्ठापूर्व्वक हुईं। प्र० और बातोंमें गायकवारने यहभी कहाथा कि मेरेबैरीवहुत सेहैं ? उ०—हांकहाथा और यहभी कहाथाजो पृथ्वीमेरे पाओंके नीचेहै वहभी मेरीदुश्मनहै। प्र०—उसवक्तसे गायकवार हिरासतमेंहैं ? उ०—हांहिरातमेंहैं परन्तु प्रतिष्ठासहित प्र०—उनका असबाब सरकारनेसबजब्त करलिया ? उ०—जो असबाब महलमें था वह आरियतन् कुर्क़ुहवा है। प्र०—सम्पूर्ण असबाब कुर्क़ुहवा है ? उ०—हां और मैनेसम्पूर्ण असबाब पर इसवास्ते मोहरलगादी कि नष्टनहो और रक्षापूर्व्वकरहैजिस मनुष्यको और सरकार हिदायत करेगी उसको वह सबअसबाब वापिसदूंगा॥

ऐडवकेटजनरलने कहा अबग्रहादत खत्महोगई जो कमीशनके सम्मुख होनेवालीथी बेलनटायन साहबने कहा यदिस रल्यूइसपोली साहबकोगवाही कुछपहिलेसे पूर्णहोजाती तो मैं ऐडरेस शुरूकरता परन्तु अब ज्यादादेर होगई इस लिये कलके दिन निवेदन करूंगा॥

साहबप्रेजीडण्टने कहाअच्छा कलपेशकीजियेगा सरजन्ट बेलनटायनसाहबनेकहा यदि आपआज्ञादेंगे तोमैं एकलिखा हुवाबयान गायकवारका ऐडरेसके आरम्भ होनेकेपहिले पेश करूंगा—शेषअदालत बरखास्तहुई॥

———

सालिम और यशवन्तराव को गवाही देनेके लिये भेजदिया मैने पुलिसके कमिश्नरसे आपही कहदियाहै कि यहलोग हिरासत में रक्खेजांय परन्तु इनलोगों को किसीतरहकीतकलीफन हो और कलउनकीगवाही अवश्यलीजाय जो पहुंचालेने उनलोगों से सलामबोलने और चलेजानेको कहदियाथा तो मेरी इत्तिला बिनाकहाथा मेरीओरसे श्रीमान् गायकवारका शुकरिया अदाकीजिये कि वहमेरा भरोसाकरतेहैं और हरप्रकारसेवह मेरी सहायता करेंगे यदि सम्भवहो तो कलसुबहके आठबजे आपमुझसे मुलाकात कीजिये॥

दस्तखत ल्यूइसपीली॥

यहचिट्ठियां सुनकर सरल्यूइसपीलीसाहबने उत्तरदियाकि भूलका होना तो साफ प्रकट है उचितथा कि सालिम और यशवन्तराव पुलिसके कमिश्नर साहबके पासजाते—श्रीमान्महाराजा गायकवारने मेरीचिट्ठियोंके जल्दी२ उत्तरदिये प्र० क्याइसबातका निश्चयकरूं किजब गायकवारपर विषदियेजाने का सन्देहहुआ तो वहआपही आये और उन्होंनेअपने तईं सुपुर्द करदिया? उ०—वास्तवमें उन्होंनेवैसा नहींकिया। प्र० अबआप अपनीतौरसे वर्णनकीजिये कि क्याहुवाथा? उ०—पहिलीबेर २३ दिसम्बर को मैनेसुना कि गायकवार भी विष दियेजानेके सुक़द्दमेमें संयुक्तहैं जबवह २४ दिसम्बरको मेरी मुलाकातके लियेआये तो पुलिसके कमिश्नरसाहबके उपस्थित होनेके वक्त मैने जो सबहाल बीताथा उनसे कहदिया था और दरख्वास्तकी कि जहांतक होसके आपइस मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ात में सहायताकरें उन्होंने कहामैं प्रत्येक समय पर सहायताकरनेकेलियेतय्यारहूं। प्र०—जबसे आपनेयहबातउनसे कही और जबतकवह गिरिफ़्तार नहींहुये उनको किसीतरह की रोकटोक थी? उ०—कौन। प्र०—गायवार? उ०—नहीं। प्र०—आपनेउनकोक्योंकरगिरिफ़्तारकिया? उ०—जबश्रीमान् वैसरायने मुझको हिदायतकी तबमैनेउन्हें गिरिफ़्तार किया

प्र०—क्याआपही वहरेजीडन्सीमें आयेथे ? उ०—हांवहआप ही रेजीडन्सीमें आयेथे और मैनेसबहाल उनसेकहदियाथा प्र०—उससमयउन्होंने अपनानिर्दोष होनाबयानकियाथाऔर आपसे कहाथाकि मैंतय्यारहूं मुझको इससमय क़ैदकरलीजिये मैनेसुनाहै कि किसी काइदेका वर्त्तावहुवा था ? उ० हांमैं रेजीडन्सी की हद्दतक गया जब उनकी अमलदारी में पहुंचातो श्रीमान्वैसरायका इश्तिहार पढ़कर सुनाया और उनको गिरिफ्तारकिया यहसब बातें प्रतिष्ठापूर्व्वक हुईं। प्र० और बातोंमें गायकवारने यहभी कहाथा कि मेरेवैरीवहुत सेहैं ? उ०—हांकहाथा और यहभी कहाथाजो पृथ्वीमेरे पाओंके नीचेहै वहभी मेरीदुश्मनहै। प्र०—उसवक्तसे गायकवार हिरासतमेंहैं ? उ०—हांहिरासतमेंहैं परन्तु प्रतिष्ठासहित प्र०—उनका असबाब सरकारनेसबजब्त करलिया ? उ०—जो असबाब महलमें था वह आरियतन् कुर्क़ुहवा है। प्र०—सम्पूर्ण असबाब कुर्क़ुहवा है ? उ०—हां और मैनेसम्पूर्ण असबाब पर इसवास्ते मोहरलगादी कि नष्टनहो और रक्षापूर्व्वकरहैजिस मनुष्यकी ओर सरकार हिदायत करेगी उसको वह सबअसबाब वापिसदूंगा॥

ऐडवकेटजनरलने कहा अबग्रहादत खत्महोगई जो कमीशनके सम्मुख होनेवालीथी बेलनटायन साहबने कहा यदिस रल्यूइसपोली साहबकोगवाही कुछपहिलेसे पर्णहोजाती तो मैं ऐडरेस शुरूकरता परन्तु अब ज्यादादेर होगई इस लिये कलके दिन निवेदन करूंगा॥

साहबप्रेजीडण्टने कहाअच्छा कलपेशकीजियेगा सरजन्ट बेलनटायनसाहबनेकहा यदि आपआज्ञादेंगे तोमैं एकलिखा हुवाबयान गायकवारका ऐडरेसके आरम्भ होनेकेपहिले पेश करूंगा—शेषअदालत बरखास्तहुई॥

———

सोलहवें दिनका इज़लास॥

ग्यारह बजे कमीशनके मेम्बरएकत्रज़ये सम्पूर्ण मेम्बर श्रीयुतमल्हरराव और सरल्यूइसपीलीसाहब सहित उपस्थित थे॥

सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा माईलार्ड यदि आपकी आज्ञाहो तो मैं सूटरसाहब से कईप्रश्न और पूछूंसो सूटर साहबगवाहीकेलिये बुलायेगये प्र०—आपने क्योंकररावजीको पट्टा लेनेकेलिये भेजाथा? उ०—मैंने रावजी को नहीं भेजा प्र०—परन्तु तुमकोमालूमहै कि तुम्हारेआनेके पहिलेपट्टाआगयाथा? उ०—हांआगया था॥

साहबप्रेजीडण्डने सरजन्टबेलनटायन साहबसे कहाकि मं आपकेप्रश्नका मतलबनहीं समझा? उ०—मेरे प्रश्नका मतलब यहहै कि सूटर साहबने किसीको पट्टालेने के लियेभेजा था सूटरसाहब ने उत्तरदिया कि मैंने एक मनुष्य को भेजा था प्र०—तुमने आपही अपने हाथसे उस पट्टे को देखा? उ०—हां मैंनेआपही अपने हाथ से देखा॥

सरजन्टबेलन टायन साहबने कहाकि श्री मान् महाराजा मल्हरराव चाहतेहैं किएक लिखाहुआ बयान हमारा कमीशनके सम्मुखपढ़ा जावेसुझे निश्चयहै कि आपसब साहब मरहटीभाषा जानतेहोंगेयदिमेरा विचार ठीकहै तो मुतरज्जिम मरहटी भाषा में उस बयान को पढ़े सररिचर्ड मीडसाहब ने कहाकिश्रीमान् महाराजा जयपुरमरहटी भाषाको नहींसमझते हैं उल्थाकरने की आवश्यकता होगी॥

सरजन्टबेलन टायन साहबने कहा इससूरत में हिंदुस्तानी भाषामें उल्था होजावेगा॥

साहबप्रेजीडण्ड ने पूछा कि यह बयान किस भाषा में है सरजन्टबेलन टायन साहबने कहा कि मरहटी भाषा में है॥

साहबप्रेजीडण्ड के कहापरंतु आप कहते हैं कि आपके पास इसलिखेहुये बयानका अंगरेज़ी में उल्था भीहै सरजन्ट

बेलनटायन साहबने कहा-हां अंगरेज़ीमेंभी उल्था है उचित है कि यह बयान अंगरेज़ी में पढ़ा जाय और उसका उल्था हिंदुस्तानीभाषामेंहोता जाय साहबप्रेजीडेण्डने कहाउत्तम है कि प्रथम अंगरेज़ी भाषामें पढ़ाजाय और श्रीमान्महाराजा जयपुरकहते हैं कि अंगरेज़ीभाषामें पढ़ाजाना काफीहैफिर उसकाहिन्दुस्तानीभाषामें उल्थाहोताजावेगामिस्टर ब्राम्सन साहबने कहाअगरहुजूरइजाजत देंतोइसलिखे हुयेबयानको मैंपढ़ूंसोइजाजतहोनेके उपरान्त पूर्व्वोक्तसाहबने पढ़ना शुरू किया मेरेप्रतिष्ठितमित्रश्रीमान् गवर्न्नरजनरलने अपनाइरादा जाहिरकियाहैकिमुझको हरतरहसेमौकामिलेकिमैं उसबड़े-तबड़े कलंकको खण्डन करूं जो मुझपर लगायागयाहै अर्थात् करनैल फियरसाहब जो मेरेयहां रेजीडेण्ड थे उनके विषदेने का उद्योगकिया गया अबमैं बपास खातिर वैसराय के उस इच्छासे कि मैं अपनेतईं सम्पूर्ण सृष्टि के रूबरू इस अपराध से साफ करूं नीचेलिखा हुआबयान करताहूं॥

मुझकोकभीकरनैल फियरसाहबसे वैरनथा नअबहैऔरयह बातभीसही है किमैं और मेरेवज़ीरभलेप्रकारजानते थे कि करनैल फियर साहब ने ओहदे रेजीडंसी पर ऐसी कारर-बाईशुरूकीथीकि रियासतका उत्तमप्रबन्ध होना असम्भवित था मैं श्रीमान् बैसराय के खरीते २५ जूलाई सन् १८७४ ई० के लिखे के अनुकूलसबअपना कार्य्य करताथा और यहखरी-ता सन् १८७३ई० की कमीशनकी रिपोर्ट के अनुकूल मेरे पास आयाथा मैंने दादाभाई नूरूजीऔर बाला मुगेशवाकल और हुरजजी और अरदासियरदोबा और काजीशमशुद्दीनआदि अपनेवज़ीरों की सलाहसे २—नवम्बर सन् १८७४ ई०को कर-नैलफियर साहब के द्वारा श्रीमान्गवर्न्नर जनरल को खरीता भेजाहरचन्दकरनैल फियरसाहब नेउज्रकियेपरन्तु मैंअच्छी तरहजानता थाकि जब हुजूरगवर्न्नरजनलके सन्मुखठीक ठीक

हालपेशकिया जायगा तो मेरी दरख्वास्त पर बखूबी लिहाज होगासोयही विचारमेरा और मेरे सम्पूर्णवजीरों का था इस विचारको जियादह तरमजबूती इसकारण होगईथी कि एक बेरगवर्न्मेण्टबम्बईने करनैल साहब परबहुतबड़ी चश्मनुमाई कीथीहमाराखयाल गलतनथा क्योंकि२५नवम्बर सन्१८७४ई० को उनकीबदली काहुक्मआगया॥

इसस्थ्रतमें मुझकोनतो कोईतरफदारीथा औरनकोई पोली टीकलवजह थी जिसके सबब से इसअपराधका उद्योगकरता जिसकादोष मुझपर लगायागया है मैं सौगन्द खाकर वर्णन करता हूं किनमैंने अपनेआप और नकिसी और करिन्दे के द्वाराकरनैल फियरसाहब के देनेके लिये विष मंगाया ताकि उनकीजान लीजायऔर न मैंनेअपनेआप औरनकिसीकारिन्दे से यहकहा कि ऐसाइरादा कियाजाय और मैं कहता हूं कि अमीनाऔर नरसू औररावजी और दामोदर चिम्बक की गवाहीइस मुकद्दमे में गलत है॥

औरमैं यहभीवर्णन करताहूं किमैंनेखत: किसी रेजीडन्सी के नौकर कोनहींबहकाया कि वहजासूसकी तौरपर मुझकी खबरें दें औरनमैंने किसीमनुष्य को इस कार्य्य के लिये रुपया दियायह बात मैं नहींकह सक्ताकि रेजीडन्सीके नौकरों को कभी इनआम नहीं दियागया क्योंकि जबकभी कोई विवाह कार्य्यअथवाखुशी वा तेहवार हुवा तो उससमय पारितोषक दियागया अगरकभी किसी खफीफ अमरकी इत्तिलाहुईतो उसकाजिम्मेदार नहींहूं यहबात लोगोंकी बनाईहुईहै मैंने खत:किसी नौकरसे ऐसीखबरोंके लानेकोनहींकहा नमैंनेऐसा उपायकियाकि रेजीडन्सीसे खफीफ खबरेंमंगाईजावें॥

मैं अपनेतईं अभयहोकर कमीशनके रूबरू पेशकरताहूं आशा है कि जोमेरे प्रतिष्ठित मित्र श्रीमान् वैसरायने मेम्बर नियत कियेहैं वहहरसूरतसे मेरे मुकद्दमेका न्यायकरेंगे और जो कुछमुझसे प्रश्नकिया जावेगा मैं उसके उत्तरदेने में मौजूद

हूं—और मैं फिर सौगन्द खाकर दुन्काकार करताहूंकि मेरेशत्रु जोयहतबड़ा अपराधमुझपरलगानाचाहतेहैं वह सबग़लत है ॥

सरजएटबेलनटायनसाहबकी स्पीच ॥

खण्डन

सरजन्टबेलनटायन साहब कमीशन के मेम्बरों के रूबरू इस्पीचकहने के लिये श्रीमान् महाराजा मल्हरराव की ओर से इसभांति वर्णन करने लगे—कि श्रीयुतलार्ड और महाराजगान् और कमीशनकेमेम्बरोंपर प्रकटहो कि मैंनिश्चयमान कर खयालकरताहूं कि श्रीमान्महाराजा गायकवारपरबड़ी अनीतिसे बिना किसी मूलके सुकद्दमा खड़ा किया गया है अब श्रीमान् मल्हरराव को ऐसी अवसर मिलीहैकि वहऐसी अदालतसे अपने इन्साफकेदादखाहहों—अबयह बात जाहर हुई कि किस कदर बेबुनियाद यह तोहमत है—और यह बातप्रकटहुईकि किस छोटेमूलपर उनसे उनकी आज़ादागी छीनलीगई और वह अपनी प्रजाकीदृष्टिमें न्यूनहोगये और उसमनुष्यके सदृशजोसंगीन जुर्ममें क़ैदहोताहै उन्होने तकलीफें उठाईं और अबयहभी मालूमहुवाकि किस२ गवाहीसेयह अपराधउनपरकायमहै और वहशहादत किसतरहहासिल कीगई—मालूमहुआ कि वहलोगजोइससुकद्दमेकेपैरोकारहैं ऐसेदिलसेसुद्दईबनगये जिसकावर्णननहींहोसक्ता और मैंकाहताहूंकि पुलिसनेनिर्भयहोकर बहुतसीकाररवाइयां कीं ॥

अबहमको मालूमहुआकि इससुकद्दमेका क्यामूलहै और किसतरहकी शहादत है और कैसे २ गवाह इससुकद्दमे में गवाहीदेनेको आयेहैं—मैं निर्भयहोकर और स्पष्टरीतिसे वर्णन करताहूंकि कोई दूरअन्देश आदमी मेरे वर्णनाकोखण्डन न करेगा किसुखतलिफ बयान कदाचित् विश्वासके योग्यनहींहैं और वह बातें जो असम्भवित हैं और वह सुआमिले जो खयालसे बाहरहैं सबकामजमूआकियागया और एक ऐसा जुर्म्मक़ायम कियागया जो जमाने हालमें सुना नहीं गया न

ऐसाकोई मुकद्दमा किसीअदालतमेंपेशहुआ और यहबात मैं बेतामुलजाहिर करताहूं कि जोगवाह जुर्म्मकेसुबूतकेलिये पेशकियेगये उनकोकुछभी अपनेवचन और प्रतिष्ठाका विचार नहीं श्रीमान्महाराजा गायकवार की ओरसे जोमैं इसीच कहरहा हूं वह सबलोगों के दिलोंपर नक्शकरनाचाहताहूं किसही सुआमला क्या है मुझको एक २ गवाह की गवाही दूसरेके बयानसे मुख़्तलिफमालूम होतीहै और हरएक आदमीकी गवाही बेईमानी के साथ पाईजाती है और हरएक आदमीकी गवाहीसे झूठजाहिर होताहै जिनलोगोंने गवाहों के बयानको सुनाहै वहकहसक्तेहैं कि गवाहोंने बिल्कुलझूठी सौगन्दखाई कोईप्रतिष्ठित गवाहोंकी गवाहीपर निश्चय नहीं करसक्ता—माईलर्ड मैं वर्णनकरचुका हूं कि कुलशाहादतजो कमीशन में लीगई ऐसी मुख़्तलिफ है कि कभी सुनीनहीं गई हालके जमानेमें ऐसाकोई मुकद्दमा मेरीनजरसे नहींगुजरा मुझको यहांकी अदालतोंसे वाकफियत नहीं है शायद यहां की अदालतोंमें ऐसीबदजातीके मुकद्दमेदायरहोतेहों परन्तु और मुल्कोंकी अदालतमें ऐसेमुकद्दमेके दायरहोनेका हाल नहीं सुनागया मैं इसबातसे अफ्सोसकरताहूं कि उसबेचारे राजाकी आजादगीनिहायत बदनामीकेसाथछीनलीगई और इसकेविशेष उनकीबहुतबड़ी रुसवाईहुई औ इसअप्रतिष्ठाका उनकोबहुतबड़ा खयालहै—जबमैंशहादतपरनजरडालताहूंतो झूठ और बनावटका ढ़ेरमालूम होताहैजबमेरे रूबरूगवाहों केइजहारहुयेथे तोमुझकोअति आश्चर्य्य होता थाकि यहलोग किस २ तरहझूठ घड़तेहैं और चाहतेहैं कि एकझूठसे दूसरे झूठकी सिद्धकतहो और ऐसेझूठके बोलनेवाले समझतेथे कि सुननेवाले बेवकूफहैं जो कुछ हम कहेंगे वह निश्चय करलेंगे क्योंकि वहजानतेथे कि यहझूठ उसके विषयमें बोलतेहैं जिससेसरकार नाराजहै कायदायहहै कि जबकोई शख़्समग़लूब होजाताहै और उसकीनिस्बत यह विचारा जाताहै कि वह

अपनी जगह पर फिर क़ायम नहीं होगा तो यह नापाक कुत्ते भौंकते और घुर्राते हैं और जहां तक होसक्ता है बुराई करते हैं—एकज़मानेमें यूरपकी यहरीतिथी कि कभीकिसी मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ात नहीं करतेथे और उसीज़मानेमें एक प्रतिष्ठित मनुष्यको दोदुष्टमनुष्योंकी गवाहीपर फांसीदेदीगई एकका नामओटस और दूसरेकाडंगस फीलडथा यद्यपियहां केलोग पुनर्जन्ममरणपर निश्चयकरते हैं इसलिये मेरेविचार सेरावजी और नरसूआदिकने जो गवाहीदीहै उनकेशरीरमें उन्हींगवाहों तात्पर्य डंगस फीलड और ओटसके जीवप्रवेश करगयेहैं इनलोगोंने बिल्कुल झूठी गवाही इस बेदारमग़ज़ कमीशनके रूबरूदी॥

माईलार्ड-आपको निश्चय करना चाहिये कि मैं इसमुक़द्दमेको बड़तबड़ा मुक़द्दमा समझताहूं और उसकेखण्डनका ज़िम्मेदार समझताहूं कि मेरी तकरीरमें फर्क आगयाशायद मेरे समान और लोगोंको यह खयाल न हो जितनी तकरीर इस मुक़द्दमेमें होना चाहिये मेरी जिह्वामें उसके करने की शक्ति नहींहै॥

मैंनिहायत अफ़्सोसके साथइस बेचारे रईसकी हमदर्दी करताहूं और अधिकतर इसबातके खयालकरनेसे कि उसकी रिहाईमेरी तकरीरपर मौक़ूफहै मुझकोनिश्चयहै कि इसमुक़द्दमेका निर्णय मेरी इच्छाके अनुकूलहोगा क्योंकि ऐसेही फैसलेमेंइन्साफ़ और सच्चाईरहैमैंने जोयहकाम अपनेतअल्लुक़ कियाहै वह निहायत बड़ाहै और जिस समयसे अदालतमें एडरेस कह रहाहूं मेरा दिली और खास मन्शा यहहै कि सच्चाईज़ाहिरहो जब मुझको मदद की ज़रूरतहुई तो मेहरबानीसे मुझको मदद दीगई और इस कमीशनमें हरतरहका मौक़ा दियागया पसउन मौक़ोंके मिलनेसे बखूबी अदालतमें एडरेसपेशकरूंगा और जोबातमेरे मनमेंहै हरमनुष्यके मनपर नक़्शकरदूंगा और हरएक तकरीर को दलीलके साथबयान

करूंगा यहांतक कि हरएक्सकी रायमेरी रायसे इत्तिफा करे और जैसा मैं चाहताहूं वैसाही फैसलाहो—माईलार्ड आपने बहुत कमसुनाहोगा कि किसी वकीलने ऐसेदृतमीनानके साथ बयानकियाहो अदालतइसबातका खयालन करेकियहतकरीर मेरी अदालतकी अप्रतिष्ठा मेंहै यदि अदालतका फैसलामेरी रायकेप्रतिकूलहुआ तोमैं समझूंगाकि पहिलेसे मुझकोकच्चा खयालथा परन्तु मुझको दृढ़निश्चयहै कि आपसब साहबमेरी बार्त्ताको बखूबी समाप्तकरेंगे॥

माईलार्ड—जिस इश्तिहारको श्रीमान् वाईसरायने जारी कियाहै उसमेंइस तहक़ीक़ातकी एकहद्द करदीहै उसमेंबात खासलिखीहै कि कोईतहकीकात जबरदस्ती कीनहो केवलदो बातोंकी तहक़ीक़ातकी जावे कि गायकवार ने रेजीडन्सी के नौकरोंसे साजिशको या नहीं—दूसरेयहको कि जो अपराध गायकवारके मढ़ेहै वह ठीकहै या गलत पस इनदो बातोंके विशेष किसीदूसरे अमूकी तहक़ीक़ात नहोगी मैनेइन दोनों बातोंपर कमीशनके मेम्बरोंको इसवास्ते ध्यान कराया कि मैं जानताहूं कि गायकवार झूठ और दुष्टताके बादलमें छिपा हुआहै मैंबड़ौदेमें इसलिये नहीं आयाहूं कि गायकवारकी पिछलीकाररवाइयों परउज्रकरूं न इसलिये आयाहूं कि जो हरकतें व्यतीतसमयमें गायकवारनेकीं उनकोखण्डन करूंउन बातोंको यहांके निवासी अच्छी तरह जानतेहोंगे परन्तु इस बातका मैंविश्वास करताहूं कि कई बातें गायकवारकी आय मेंऐसी हुईंजिससे उनको और लोगोंपर भरोसा करनापड़ा और आपहीकाररवाई करनेका उनकोकम मौकामिला और न उनबातोंका वहप्रबन्ध करसके जिनका उनको चाहियेथा मैंकहता हूं कि यहबात केवल हिन्दुस्तानमेंही नहीहै किन्तु सम्पूर्णदेशोंमेंहै कि बहुधा रईसोंके पास खुशामदी और दुष्ट नौकरहोते हैं और वहनौकर रईसको लूटना और धोकादेना चाहते हैं और जबउनको सावकाश मिलताहै अपने इरादेसे

नहींहटते और रईस ऐसेहीलोगोंपर अधिक निश्चय करतेहैं पसविनासोच समझके ऐसाविचारना चाहियेकिआगेकेरईस नौकरोंने कोईहरकतकीतो मानोआपहीरईसने उसकोकिया मैंइसविषयमें कुछऔर वार्त्ता न करूंगा क्योंकि मुझको और विषयोंमें तकरीर करना बाकीहै परन्तुजो वार्त्ता कि मैंकर चुकाउससे इसबातके जाहिर करनेकी इच्छाथीकि गायकवारके नौकर किसतरहकेहैं उनलोगोंको निजके व्यवहारमें बड़ा अधिकार थाअबमैं इस बात की प्रार्थना करता हूंकि नीतिसे जोयूरुपके साहबोंकी मण्डलीहैं मेरीतकरीरको सुनें मैंपोलीटीकल सुआमिलों परवार्ता नहींकरना चाहता क्योंकिश्रीमान् वैसरायने जोकुछ काररवाई कीहै उसमें पोलीटीकल सुआमलोंका कुछ जिक्रनहीं औरपूर्व्वोक्तसाहब सबपर जाहिर करनाचाहतेहैंकिहिन्दुस्तानकीअमलदारीका प्रबन्ध प्रतिष्ठा पूर्व्वक होसकताहैयद्यपिसरकार ब्रिटिशकीऔर किसी रईससेबैरहोऔर ऐसेअमरकाफैसलाइसप्रकारसेहोकिसम्पूर्ण प्रतिष्ठितमनुष्यउसेप्रसन्नहोंवैसरायनेइसदूजलासमेंऐसेमनुष्योंकोनियतकियाहैकिजोबड़ेनीतिमानहैं अर्थात्हिन्दुस्तानीरईसोंको जो अपनेसाथीकी प्रकृतिकोभलीभांति जानतेहैं झूठीगवाही देनेकेविषयमें मेम्बरोंका खयालरुजूकरूंगाऔर उनलोगों के रूबरू साबित करूंगा कि जितनी गवाहियां गुजरीहै यहगलतहैं औरनिश्चय माननेके योग्य नहींहिन्दुस्तानी रईसोंके रूबरू यहबात पेशकरूंगा किउनको आजऐसे अधिकार दियेहैं और उनपर सचाई औरइन्साफकेकरनेका भरोसाकिया गयाहैजोकुछ यहइन्साफ करेंगे उससे सम्पूर्ण हिन्दुस्तानमेंधूमहोजावेगीऔरअपनेस्वदेशियोंसेयहकहताहूं किमुझको आपलोगोंसे हरप्रकार कीसहायता और न्यायकी आशाहै यदिप्रेजीडण्ट साहब इंगलिस्तान के निवासी हैं इस वजहसे मुझेबहुतहीखुशीहैऔरजब इंगलिस्तानके रहनेवाले

हैंतोहरतरहसेउनको आजादगीहासिलहै मुझकोआशाहैकि श्रीमान्प्रेजीडण्टसच्चाईसेकदाचित्मुंहनमोड़ेंगेऔर सिवाय नीतिकेऔरकुछअपनेअफ्सरकीतरफसेउनकोखयालन होगा। मैं इसबातपर प्रसन्नहूंकि यूरुपके प्रधान अतिनीतिमानहोते हैं और न्यायके मार्गकेविशेष दूसरीओर नहीं झुकते हैं ऐसे मेम्बरोंके साक्षीहोनेसे मैं अपनेको बड़ाभाग्यवान समझता हूं यद्यपिमेरी जिह्वामें इतनी सामर्थ्य नहींहै कि कमीशनके सहिबों के सन्मुखतकरीर करूं परन्तु उनके न्यायसे मुझे भले प्रकार निश्चयहै कि मेरेमनका मनोर्थसिद्धहोजावेगा॥

माईलार्ड-हुजूरकोस्मर्णहोगाकि पहिले इसबातकीगवाही गुजरीथीकि गवाहसिखायेगये परन्तु इससमय इसविषय में वर्णन नकरूंगा क्योंकि जोअपराध गायकवारको लगयागया उसमें तकरीरकरनेकी इच्छा नहीं है॥

गायकवारपर जोविषदेनेका अपराध लगयागया निस्संदेह उसकीगुफ्तगूकरनीजरूरहै-मैंनेपुलिसकी ओरध्यानकियाथा मैंदेखताहूं कि पुलिसवालोंकेलिये कोई क़ानून नहींहै और जोदुराचार पुलिसमेंहोतेहैं उसकेलियेभी कोईक़ायदा नहीं है—आमक़ायदायहहै कि जोदुराचार पुलिसके रूबरूहों जब तक उनकी सिदाकतदूसरा मनुष्य न करे वहगवाहीमें नहीं समझेजाते इसलिये अगरकोई मनुष्य पुलिसके सम्मुखकिसी बातका इकरार करेतो वह विश्वासके योग्यनहीं है जबतक कि दूसरामनुष्य उसकी तकदीक़ न करे इसबातका कानूनके बनाने वालोंको बड़ाभयहै कि गवाहोंको पुलिसवालोंसेबहुत बड़ी दूरतहो जाती है—हिन्दुस्तान के पुलिसवालों को हर प्रकारका अधिकार दियागया है जो चहचाहते हैं करतेहैं सो एकक़ानून इसबातका जारीहोना चाहिये जिसमें पुलिस के अधिकारोंकी हद्दकरदीजावे मैं नहीं देखताकि कोई जज अथवामजिस्ट्रेट पुलिसकेअखतियारोंको रोकसके छोटेसेछोटा पुलिसका सिपाही जोचाहता है सो करताहै इससुकद्दमेमें

नहींकहसक्ताहूंकि कितनेलोगहिरासतमेंरहे जिसकीनिस्बत पुलिसवाले कहतेहैं कि मुकद्दमे की तहकीकातकेलिये वह लोगहिरासतमें रक्खेगयेसो जबउनको ऐसेबेप्रमाण अधिकार प्राप्तहैं तो खाहमखाह लोगों के दिलोंमें किसकदर दूबरत होगी जाहरहैकि कोईमनुष्य अपनेघर और शरीरको अपना नहीं कहसक्ता जब पुलिसवालाचाहे गिरिफ्तार करले और जबतक चाहे उसको हिरासत में रक्खे प्रकटमें उसका कोई उपायनहीहै कोईमजिस्ट्रेट इसमेंदखलनहीं करसक्ताहै मजिस्ट्रेटकोयह अधिकार नहीं दियागया कि ऐसीबातों में मुदाखलतकरेउसमनुष्यको कुछहरजादे जो हिरासतमें रहाहो॥

मेरे विचार से शायद यहीहिन्दुस्तान का क़ानून है इसमें संदेह नहीं कि बड़ौदे में ऐसीही कारवाई होती है हमने बहुधादेखा है कि पुलिसको जिनलोगों कीशहादत दिलानी मंजूरथीउनकेसाथ ऐसाहीकिया विशेषकरइस मुकद्दमेमेंउनकी कारवाई प्रकटहैमुझकोपुलिसकी कारवाईपर बहुतसी वार्त्ता करनीपड़ेगी परन्तुएकबातकमीशन के मेम्बरोंके जेहन नशीनकरना चाहताहूं वहयह है जिससे बहुत बड़े अन्याय का संदेहहै किएकअफ्सरपुलिसमुकद्दमे के क़ायमकरनेका अधिकारीहै औरअपराधीको दण्डहोनेके वास्तेवह हरप्रकार के उपायकरता है और भी ऐसे अफ्सर पुलिस को इजहार लेनेके अधिकार हैं औरवह इजहारगवाही के लायकसमझे जातेहैं मनुष्यकी यहभी प्रकृतिहै कि जिसकिसी बातमें कोशिश करताहै अथवाकिसी वस्तुके पीछे दौड़कर उसको पकड़ता है यदि वहवस्तुउसके हाथ नहींआतीहै तो धोखेसे पकड़नाचाहता है पुलिसके कानस्टेबल यहीआदमीहैं जबउनमें इन्सानियत है वह भी ऐसीही कोशिशें करते होंगे यह बात दुरुस्तनहीं है कि एककागज जूडिशियलके महकमे का ऐसे लोगोंकोसौंपाजावे जिसकेमिजाजमें वहबातेंहैं जिस काऊपर मैं वर्णन करचुका हूं जिस मनुष्यके मिजाजमें तरफदारीहो

उसको ऐसेमुआमिलेनसोंपे जावें बहुतसे इजहार जो मैंने देखेउनसे यहबातप्रकटहै कि जबरदस्ती से इजहार लियेगये और जोमुख्यबयानथा वहइजहारोंमें नहींहै हरचन्द सैकड़ों झूठबोलेगये परन्तु झूठका झूठहीरहा इनबातोंकी सिदाक़त मैं अच्छीतरह कर सकाहूं और मेरे वर्णनसे आपलोगों को अच्छीतरह विदितहोजावेगा कि मेराबयान ठीक है हरएक इजहारमें पुलिसकीकाररवाई मालूम होतीहै—माईलार्ड अब एकदूसरामुआमिला पेशकरताहूं साहबप्रेसीडण्टका ध्यान उनबातोंपरदिलाताहूं वहबातेंकानूनऔर नीतिके सम्बन्धित हैं बहुधालोगपरस्पर अपनेघरोंमेंवार्त्ता कियाकरतेहैं किकुछ संदेहनहीं कि अमुकमनुष्य वास्तवमें अपराधीहै परऐसेकिसी विचार अंगरेजसाहिबोंके तबीयतोंमेंहैं जोआजकल बड़ौदेमें स्थितहैं अबउनसे यहबातपूछने के योग्यहैकि वह किसवजह से जानतेहैं किवहवास्तवमें अपराधीहैजबउनसे पूछाजायगा तो उनको मालूमहोजायगाकि हमारा विचार गलतथा॥

मैने बहुधा देखाहै कि लोगइसप्रकारके विचारवर्णनकरते हैं यद्यपि उनको असल हालसे कुछ वाकफियत नहीं बहुधा मैनेयहभी देखाहै कि कल्पित बातोंको सहीबातें समझते हैं और उनकल्पितबातोंको तहकीकनहींकरते अदालतकेसन्मुख कईबेर ऐसीबातें पेशहुईहैं जो निपट कल्पित हैं और उनके लियेपूछा नहींजाता कि उनकामूल क्या है इसबातके कहने से मेरामतलब उसबयानसेहै जोलोग कहतेहैं कि हमअमुकअमुकजुर्म्ममें अमुक मनुष्यके साथ संयुक्तथे मैंजानताहूंकि जब लोग इसतरहकाबयानकरें तो अच्छीतरहतहक़ीक़ात कीजाय और खासइस मुकद्दमेंलोगोंकी कल्पितगवाही मंजूरनहो जब तककिबखूबीसमझ नलीजाय मैं जानताहूंकिसम्पूर्ण अंगरेजी अदालतोंमें किन्तु उनअदालतोंमेंभी जहांअंगरेजी सरकार के कानून के अनुसार काररवाई होतीहै कायदा है कि जो मनुष्यअपने तईं अपराधीका शरीक जाहिरकरताहै उसकी

शहादतकी समाप्त नहींहोती जबतक कि उसके बयान की अच्छीतरह तसदीक न होजावे यहबात अति आवश्यक और ग़ौरकरने के लायकहै ॥

इसविषयमेंफिरभी गुफ्तगू करूंगा कोईक़ानून ऐसानहींहै यदिकोई मनुष्य अपनेतईं अपराधीका शरीक ठहरावे और वर्णनकरे तो उसके बयानपर जिसकेलिये अपराधी होनेका संदेहहै वहदण्डसे छूटनहींसक्ता। किन्तु उसकोभीदण्डहोगा

साहब चीफजस्टिस इसबातपर अच्छीतरह ध्यानकरेंगेक्यों कि यह बहुत बड़ी बातहै आशाहै कि मेरी इसरायसे सम्पूर्ण क़ानून जाननेवालोंकीरायमुत्तफिकहोगी उचितनहींहैकिजो मनुष्य दूसरेकी निस्बत गवाही देता हो उसकी गवाही अपराधीके सम्मुखलीजाय जैसेकिएक प्रतिष्ठित गवाहकामिलना जिसनेदेखाहो कि रावजीने करनैलफियर साहबके गिलासमें विषडाला बहुतकठिन है यदिऐसा कोईगवाह मिलतातोउस से रावजीकी निस्बत जुर्मसाबितहोता न गायकवारके निस्बत मेरेविचारसे दामोदरपन्थका इज़हार कुछ सहीनहींहै और शायदसहीहोकिउसनेनूरुद्दीनसे संखियामंगवाईऔरनूरुद्दीन सेउसकीसिदाकतकीजातीअथवा उनलोगोंसेतसदीककीजाती जिससेकि हीरेमोल लियेगयेतो इनबातों से दामोदरपन्थके निस्बतजुर्मसाबित होतान गायकवारपरआप शहादतमेंप्रथम सेअन्ततक देखेंगे नकोईगायकवारकी लिखीहुई चिट्ठीहै न किसीतरहसे साबितहोताहैकिगायकवार विषदेने में संयुक्त थेऔरकिसी प्रतिष्ठित गवाहने साफ़२ नहींकहा कि इसविष दिये जानेमें गायकवार कोकुछसम्बन्धथा इसविषय में मुझको बहुतबड़ी तकरीर करनी पड़ेगी मैं कमीशन के रूबरू साबित करूंगा कि गवाहों की गवाही निश्चय मानने केयोग्य नहीं है मैं कमीशन के रूबरू ऐसी तकरीरन पेशकरूंगा जिसको कमीशनके मेम्बरसुनेंवा उसकोतकरीरमन्तक्की तात्पर्य्य बाचा-लता कहे मैंवही तकरीर पेश करूंगा जो क़ानूनी हो और

सुननेके योग्य है लोगोंकोमैंनेबहुधाकहतेहुये सुनाहैकिबैरेस्टर औरकानून केजानने वाले केवल जबानीतकरीर करतेहैंऔर प्रायः लोग कहतेहैं कि ऐसी गुफ़्तगू करनी चाहिये जो सबके समझमें आवेनऐसीबात्तीकरनी चाहिये जिसको कोईनसमझसके मेराखास यहअभिप्रायहै किमेरी बातको हरकोई समझे किन्तु इस मुकद्दमेके लियेतो मुख्ययही आवश्यहै कि बिल्कुल क़ानूनी कारर्वाईनहोऔर इसतरहसे कारर्वाई कीजायकि जिस प्रयोजनसे कमीशन एकत्रहुई वह मतलब प्राप्त होइसविषय में गुफ़्तगूको ज़ियादह नहीं बढ़ाना चाहता जिस हालतमेंकि आजकलगायकवारहैं उसकोमैंपहिले बयानकर चुकाहूं जिनलोगों कीवजहसेउनकी यहदशाहै वहइसहालत केजिम्मेदारसमझे जावेंगेनिश्चयहै किऐसेलोगों कीकारर्वाई सेकमीशनमें कुछफर्क न होगा परन्तु उनकीकारर्वाईपर मैं केवलइतनी गुफ़्तगू करूंगाजिससे तजवीज कमीशनको सहायतामिले—कमीशनके मेम्बरोंका इसबात परध्यान दिलाताहूं किजबसे सरकारने गायकवारकीजायदादकुर्क़ करलीहै और जिसकेलियेसरल्यू इसपीलीसाहबरेजीडण्टने कहाथाकिथोड़ी देरकेपीछेछोड़दी जावेगी परन्तु अबतक छोड़ीनहींगई और गायकवार बहुत तंगदस्तहैं औरयहांतक किवह मुकद्दमेका खर्चनभी जैसा कि चाहिये नहींकर सक्ते इससमय वह बड़े कष्टमेंहैं इतनाही इशारह कमीशन के गौरकरनेके लियेकाफीहोगा परन्तुमैं निहायत नम्रतापूर्व्वक कमीशनके रूबरूयह कहताहूंकि कमीशन इसबातकाबखूबीलिहाजकरै क्यों कि गायकवार झूठीसौगन्धखानेवालोंके मण्डलमेंहैं और कमीशनके मेम्बरों कोविचारना चाहिये किजबसे करनैल फीयर साहबको कमीशन बैठोथीउससमय मेरेमवक्कलने कैसीकारर्वाईकी उसकमीशनमें जोकुछ कारर्वाई हुईथी मेरेऔर कमीशनके विचारमें उसकापूछना उचितनहींहै क्योंकिवह तहक़ीक़ात ऐसे मनुष्यकी है (अर्थात् करनैलमीड साहब)

जोबड़ेलायक अफ्सरहैंऔरउनका फैसलाअतिप्रशस्यहैपूर्वोक्त साहबने श्रीमान् वैसरायको जो कुछसहायतादी वहबेशक उमदातौरसे दीहोगी परन्तु उसकमीशनके बरखास्त होनेके पीछेजो गायकवारने काररवाईकी उसपर विचारकरनाचाहियेजबसे कमीशन खत्महुई उससमयसे देखाचाहियेकिगायकवार काचाल चलन कैसारहा उन्होंनेअपनीप्रजाके लाभ केलिये क्या क्या प्रबन्ध किया॥

जब पहिले कमीशन बैठीथी शायदवहभीगायकवारकेनौकरोंकी वजहसे काररवाईकीथीकोई मुख्यसम्बन्ध गायकवार काउससेन थाउसकमीशन मेंजोकुछ फैसलाहुआ अच्छाहुवा परन्तुमैं आपलोगोंसे पूछताहूंकि जिसमनुष्यने ऐसाबड़ाजुर्म्म कियाहो जिसकीतोहमतगायकवार परहैवह ऐसी काररवाई करेगाजैसे हालमें गायकवारनेकीहै नहींकदाचित् नहींकरेगागायकवारने सम्पूर्णकाररवाई उसके प्रतिकूल कीं यदि कोईमनुष्यकिसीके प्राणका वैरीहोताहै तोअपनी शत्रुताको प्रगटनहीं करताहै क्योंकि जोजाहिर करेगातो सबलोगोंको मालुमहोजावेगायदि गायकवार करनैलफ्रियर साहबके विष देनेका उद्योग करतेतोवह उनसेअतिप्रीति करते और जिन कागजोंसे शंका पाईजातीहै तोशीघ्रही उनको फाड़ डालते औरकोई बातऐसी बाक़ी न रखतेजिससे किसीबात का पतालगता परन्तु गायकवारने सबबातें स्पष्टरीतिसेकीं उनकेपास एक खरीता श्रीमान् बैसरायका करनैल मीड़साहबकी रिपोर्टके पीछे पञ्चंचा करनैल मीडसाहबनेअपनी रिपोर्टमें सम्पूर्ण तहकीकातके करनेकेउपरान्त लिखाथाकि गायकवारको कुछ मुद्दततक और सावकाश दियाजावे और उनसेशर्त्तलीजावे किउत्तम प्रकारसेप्रबन्धकरें पसश्रीमान् वैसरायने सन् १८७५ के अन्ततक सावकाशदिया कि गायकवारउत्तमप्रबन्ध करें॥

गायकवार कोउसखरीतेके आनेसे भरोसा होगयाथा कि ज़रूर ममदूह भलेप्रकार इन्साफ करेंगे और उत्तमप्रबंध का

मौकादेंगे फिर गायकवार को क्याप्रयोजन था किअपनेउत्तम प्रबन्धकी लियाकत केसाबितकरनेके पहिलेऐसी हरकतकरते सरल्यूइसपीली साहबने अपने इजहारमें वर्णन किया है कि गायकवार हरएकमेरीतकरीरको सुनतेथे और उसपरबर्त्ताव करतेथे औरश्रीमान् वैसरायने गो२ हिदायतें कींउनपरअमलकरना चाहतेथे ॥

जबसेसरल्यू इसपीलीसाहबयहां नियतहुये वह किसीतरह सेगायकवारसे अप्रसन्ननहुये इसलियेबिचारा जाताहै यदिकरनैल फियरसाहब सहीकरनेके बिनाउत्तम प्रबन्ध करानाचाहतेतौभी मुमकिन था करनैल फियर साहबसे बढ़कर कोई बदतरशख्स रेजीडन्सीकी पदवीके लियेदूसरा नहोगाउन्होंने निहायत खराबकाररवाई की और सोचेसमझे बिनाहरकाम कोकरबैठतेथे गायकवारको उनकीहरकतों की शिकायतकरनेका बहुतबड़ा मौक़ाथा मुझको उसमेंसेथोड़ासाजो मालूम हुआहै वहयहहै किफियरसाहब प्रतिक्षण औरप्रतिपलभावपूनाकरसे वार्त्ता किया करतेथे और उससे बहुतबड़ी मित्रताकोवर्त्ताव रखतेथे औरयह मनुष्यगायकवार के प्राणका बैरी थाइससुरतमें गायकवारको किसतरह निश्चय होताकि मेरे मुआमिलेमें इन्साफहोगा औरमैंभी यहबातजानताहूंकिइस अवस्थामें गायकवार कोनिश्चयहोनेकी वजहनथी यद्यपिकरनैलफियरसाहब कहते हैं कि भावपूनाकर अतिप्रतिष्ठित और सच्चाआदमीहै परन्तुमेरी रायउनकेवर्णनसे अतिकूलहै मैंउसकोएक जासूस समझताहूं किवहसदैव गायकवार के बरखिलाफ बातोंको ढूंढाकरताथा चाहोयहबात ठीकहो किकरनैलफियर साहबउसकोखबरोंके सुननेके वास्तेकुछ रुपया नहीं देतेथे परन्तु करनैल फियर साहब का उसको सुहलगाना उसकी जेबरुपयोंसे भरनेके वास्तेकाफीथा क्योंकि लोगजानते हैंकि यहमनुष्य साहबके कानमेंबातें करताहै और साहबउसकीबातोंको सुनतेहैंयह बहुतबड़ा शख्सहै गायकवारजानते

होंगेकि ऐसेशख्सके हाथमेंकरनैल फियरसाहबकी नकेल है जिसओरको चाहताहै फेरदेताहै औरजो बातें करनैलफियर साहबमेरे विपरीत करतेहैं इसी मनुष्यके कहनेसे करतेहोंगे गायकवारनेजो२-नवम्बरको खरीता लिखा उसके लेखसे कोई आश्चर्य्यकीबात नहीं है कमीशनके मेम्बरोंको सबतारीखें याद हैं।गोपरन्तुमैंकेवलजिकरकी तौरपरउनकोवर्णनकरताहूंक्यों कि२-नवम्बर यादरखनेके योग्यहैयह खरीताभले प्रकारसोच विचारकर लिखागया क्योंकिउसकी इबारतनिहायतउमदाहै औरउसमेंऐसामामलापेशकिया गयाहैकियोमान्वैसरायको मंजूरीके सिवायऔरकोई चारहनथा उसमेंदोतीनसुकद्दमोंके दृष्टान्त भीदियेगयेहैं और कई सुकद्दमों काजिक्र है जिसमें अनीतिछुई सोगवाहोंकी गवाहीसे मालूम होताहै कि उधर यहखरीतातय्यारहोताथा औरदूसरीओरसंखिया और हीरा पीसाजाताथाऔरएकबोतल औरएकशीशीमें दवातय्यारहोती थी जिसका जिक्रसिवाय अलिफलैलाके और कहीं सुनानहीं गयाऐसीबात का जिक्र उन्नीसवीं सदीमें सुना जानाबड़े आ-श्चर्य्यकी बातहैकिगायकवारपरतोहमतहै कियहबदमआशोंसे मिलतेथे औरउनको करनैल फियर साहबके विषदेनेके लिये बहकातेथे औरबयानहै कियहतरगीब उस समय गायकवार नेदीथी जबकि खरीताभेजचुकेथे औरजवाब केसुन्तजिरथे उ-सकाजिक्र मैंफिरकरूंगा औरउससमय विस्तार पूर्व्वक दृष्टान्त वर्णनकरूंगा मुझको अभीबहुत बड़ीबातोंका जिक्र करनाहैमैं आशारखताहूंकि जोमुख्यअपराधीहै उसकापतालगजाय अब जो गायकवार केजिम्मे अपराध लगागया हैवहकिसी तरह साबित नहींहोता किउन्होंनेकिया होजब यीमान् वैसरायके निकटखरीता पहुंचातोशीघ्रही गायकवार बड़ौदेको यीमान् वैसराय नेउत्तरदिया यदिगायकवाररेजीडण्ट साहबकोविष देतेतोउनकोकुछहाल पूछनेकीक्या जरूरतथी औरजोवास्तव मेंगायकवारने विषदिया तोइस तहक्कीकातकीक्याजरूरतथी

क्योंकि उन्होंने श्रीमान् महाराणी विक्टोरिया के क़ायम मु-क़ाम से ऐसीहरकत की और सरकार कोइतने बन्दोबस्त की आवश्यकता नथी परन्तुमेरे विचार में बिल्कुल गलत है कि विष दिया गया क्यों कि जब प्रकट में गायकवार और रेज़ी-डण्ट साहब से इतना रंज था कि उन्होने रेजीडण्ट साहब की बदली के लिये खरीताभेजा था तो फिर विषदेने की क्या हाजत थी—यह बातभी असम्भवित मालूम होती है कि जब गायकवार खरीताभेजचुकेथे तो जवाबके इन्तिजार के बिना विषदेने और इन्साफहोनेकी कोशिशकरते क्योंकि वहजानते थे कि जोमैं विषदूंगा तो जो दरखास्तखरीते में मैंने की है वहमंज़ूरनहोगी और वह यहबातभी जानतेथेकि अगर इस रज़ीडण्ट को मैंने मारडाला तो दूसरा रज़ीडण्ट नियतहो जावेगा और जो उनकी बदलीके लिये खरीता भेजागयातो विषदेनेकी क्याज़रूरतहै और गायकवारयहभी खूब जानतेथे कि अगर मैं विषदेने में संयुक्तहूंगा तो तहक़ीक़ात होने के समयकैसी मुश्किलेंहोंगी और तहक़ीक़ातहोकरजोसाबित हो जावेगा तो उसका परिणाम क्या होगा॥

अबगायकवारकी कारर्वाई पर ध्यानदेनाचाहिये कि जब सरल्यूइसपीलीसाहबने उनसे कहा कि तुमपर किसीतरह की निगरानीनहींहै जोचाहोसो करो और तुम्हारेइन्तिजाम में कोई बाधान करेगा तहक़ीक़ात होतीहै जो मुख्य अपराधी मालूमहोगातो वहपकड़ाजावेगा उससमय दामोदरपन्थउन का सक्रेटरीभी हिरासतमें नथा चाहे दामोदरपन्थकैसाही आदमीहो परन्तु चालाकी और समझमेंउसकेसंदेहनहीं वह अवश्य गायकवार सेकहताकि रावजी और नरसूपकड़ गयेहैं और तहक़ीक़ातहोरहीहै उससमय गायकवारकेपास रुपया था और हरप्रकारसे उनको अधिकारथा उसजमानेमें उन्होंने ऐसी कारर्वाई नहीं की जैसाकि कोई अपराधी करता है किन्तु ऐसीकारर्वाई करतेरहे जैसाकोई निर्दोषमनुष्यकरता

है और यहबात प्रकटनहीं कीगई कि नरसू और रावजी से उसजमानेमें महाराजासाहबने कुछ बातेंकीं और न किसी ने यह वर्णन किया कि महाराजा साहबने अपने विश्वसित मनुष्योंकेद्वाराउनको अलगकरदेनाचाहा नयह जाहरकिया कि महाराजासाहबने रिश्वतदेनेका उद्योग कियाहो अगर यह जुर्म्मउनकी निस्बतसहीहै तो वहइसतरह बैठेरहे जैसे कोईमनुष्य जानबूझकर सुरंग परबैठाहै और अपनेउड़ जाने का कुछभयनहींकरता वहसदैवसरल्यूइसपीलीसाहबसे मिलतेरहे और अपनी रियासतके उत्तम प्रबन्धकेकरनेकी कोशिश करतेरहे और सम्पूर्णकार्य्य पीलीसाहबकेसम्मत और श्रीमान् वैसरायकी हिदायतके अनुकूल करतेथे रोजमर्रा के काममें उनके कुछफर्क नहींआया जब वहसरल्यूइसपीली साहब की मुलाक़ातको जातेतोहमेशा वहांरावजी और नरसूको देखा करतेथेयहतो अप्रगटकारकुन गायकवारके प्रसिद्धहैंपरन्तुगायकवारनेउनसे कोईबात नहींकी और इसीतरहपर हरएक काररवाई करतेरहे जिसतरह कोईनिर्दोष मनुष्य निर्भयता से करताहै यहबात सरल्यूइसपीलीसाहबकी गवाहीसे स्पष्टहै क्योंकि उन्होंने गायकवारकोलिखाकि सालिम और यशवन्त रावको भेजदो और उन्होने शीघ्रहीदोनों को भेजदिया उस खतकिताबत पर कमीशन के मेम्बर गौरकरें—सरल्यूइसपीली साहबने जाहर करदियाथा कि उनदोनों मनुष्यों कोकिस वास्तेबुलाते हैं सो यहबात देखना चाहियेकि गायकवार ने उनदोनोंमनुष्योंको बेतामुलभेजदिया यदिवास्तवमें विषदिया था तो उनदोनो शख्सोंके भेजनेमें कुछखयाल नकरवा किन्तु गायकवारने उनसे कहदियाथा कि जो कुछतुमसे पूछाजावे और उसको तुमजानतेहो तो बयानकरदो यहबात भीप्रकट है कि सालिम और यशवन्तरावको किसीमनुष्यने तरगीबभी नदीथी और इसबातपर खयाल करना चाहियेकि सरकारी क़ानूनकैसाहै और पुलिसके अधिष्ठाताकिस सख़्तीसे तहक़ी-

क़ातकरते हैं—हरचन्द लोगोंने बयानकियाकि गायकवारको इच्छाकरनैलफियरसाहबके मारडालनेकी थी परन्तु आश्चर्य है कि उन्होंने इसमुकद्दमेकी तहक़ीक़ात में किसीतरह का दखलनकिया न लोगों को रिश्वतदी और न किसीको कुछ सिखलायाकि अमुकबात इस प्रकारसे कहनाकिन्तु सालिम और यशवन्तरावको भेजदिया और आपभीलिखभेजाकि जो बात मेरे योग्य हो उसके अंजाम को मैं मौजूद हूं आदिसे अन्ततक गायकवारकी ओरसेकोई काररवाई ऐसीनहीं हुई जिससेमालूम होकिउनके जिम्मे कुछक़सूरहै और किसीबात को गुप्तकरना चाहते हैं॥

माईलार्ड अबइसबातपर आपको ध्यानदेना चाहियेआशा है कि आप गायकवारपर रहमकरेंगे—जिस जमानेमेंकि मुकद्दमेकी तहक़ीक़ात होतीथी सालिम और यशवन्तराव गायकवारके नौकर और उनके अधिकारमेंथे यदिउनदोनों मनुष्यों को गायकवार कभी अलग करदेते कुछकठिनबात नथी इस के विशेष गवाहों के बयान से प्रतीत हुआ कि कुछ २ रुपया आयाआदिक की खबरोंके मिलनेके वास्तेअगस्त और सितम्बर में दियागया जब गायकवार खबरों के मिलने के वास्ते रुपया खर्चकरतेथे तो क्या उनलोगोंको रुपया नहीं देसक्ते थे जिन को करनैलफियरसाहबके मारडालनेके लियेतय्यार कियाथा उनलोगों को रुपयेकादिया जाना किसीके बयानसे जाहिर नहींहुआ और गवाहीमें एकअद्भुतबातयहहैकि नरसू और रावजीने कभी गायकवार से रुपया नहीं मांगा शायद इस लिये नमांगाकि अगरहम रुपयालेकर खर्चकरेंगे तो हमको हिसाबदेनापड़ेगा और सबसेबढ़कर यहबात है कि इसरईस ने अपनेतईं केवल पांचछः आदमियोंके सुपुर्दकरदिया और हरमनुष्यसे कहताथा कि ऐसाउपाय करो कि करनैलफियर साहबको विषदियाजाय इससूरतमेंमानो गायकवारने अपने जिम्मे मुकद्दमा लेलियाथा उनको क्या ज़रूरत थी कि प्रति

मनुष्य से अनेमन का हाल कहते इसइच्छा के पूर्णहोने के लिये एक मुख्तकाफीथा पांचछः मनुष्योंके एकचकरनेसे क्या प्रयोजनथा यहबातबिल्कुल बुद्धिके विरुद्ध मालूमहोती है कि गायकवार ने ऐसा कियाहो नरसू की गवाही से प्रकट है कि रावजी के साथ मध्यस्थरहा रावजी ने जितनाझूठ बोला उसने उसकी सिफारिश की जब उसको गायकवार के पास लायेथे तो गायकवार को उससे कुछलाभ नहीं हुवा जितनी कारेरवाईकी तोरावजीके बयानके अनुसार आपही रावजीने की मालूमहोताहैकि नरसू खाहमखाह जुर्म्मसंयुक्तहोताहै और नरसूबड़ा भाग्यहीन मालूमहोताहै वहकहताहै किमैं अपनीअभाग्यतासे ऐसी २ बातोंमेंफंस जाताहूं हरकदमपर उसको फन्देनजरआते हैं वह अपने अपराधको बड़ीलज्जासे प्रकटकरताहै यहमनुष्य अपनेतईं बड़ाधर्म्मिष्ठ प्रकटकरताहै यहमुकद्दमा इतनालंबाहै कि मुझकोभयहै किकोईबात छूट नजावेपरन्तु मैंइसबातका भलीभांति विचार रक्खूंगा आशा हैकि अगरमुझसे कोईभूलहोतो आपसब साहब उसकोबता-दें-इसमुकद्दमेके शुरूहोनेके समयजो ऐडवकेटजनरलने इसी-चकहीथी अबउसपर सबसाहबोंका ध्यानकराता हूं—पूर्व्वोक्त साहबकी इसीचनिस्संदेह अतिउत्तम और उनकी पदवीकी लियाकतके अनुकूल थी उन्होंने किसी बातपर बेजतपक्ष नहीं किया किन्तुबड़ीनम्रता और दृढ़ताके साथकहीथी॥

मुझको गायकवारकी ओरसेउस स्पीचमें कोई शिकायत नहींहैकिन्तु जहांतक सम्भवथा उनसाहबने मुझेसहायतादी॥

अबमैं मतलबकी तरफध्यानदेताहूं जिसमयऐडवकेटजनरल साहबनेस्पीचकहीथी और दरखास्तकीथी किमीशनके मेम्बर गायकवारपर जुर्म्मकायम करकेदण्ड विचारें॥

उन्होंनेअपने विचारसे गायकवारपर दोअपराध ठहराये थेपरन्तुउन्होंने अपनी सम्पूर्ण इस्पीच की कोईवजह करनैल फियरसाहबको विषदेनेकी नहींबयानकी शायदजानबूझकर

इसबातको उन्होंने नहीं बयानकिया-सोअबमैं वर्णनकरता हूं कि गायकवारको करनैलफियरसाहब केविषदेनेकी कोईवजह नथीशायद ऐडवकेटजनरलमेरेदोस्तने उसकोवजह बखूबीमालूमकीहोगीपरन्तु जबकुछमालूमनहुवाइसलियेउन्होंनेअपनी इस्पीचमें जिक्रकिया कि गायकवारने रेजीडन्सी केनौकरोंको बहकाया उन्होंनेयह नहींकहाकिनरसू और रावजीसेपरस्पर क्यावास्ताथाऐडवकेटजनरलनेअपनीइस्पीचमेंएकमनुष्यजिसका नामपेडरूहै जिक्रकियाकि आयाआदि नौकरोंकीएकसलाह थी और पेडरूकी और सलाहथी पेडरूकरनैलफियर साहबका खानसामांहै और २५ वर्षसे उनकेपास नौकरथा पेडरूके इत्बारपर जोग़ौर कियाजाय तोउसके बयानसे गायकवार जुर्म सेबरीहोतेहैं जोउनपर लगायागयाहै इसलिये यहबात ध्यान करनेके योग्य है कि ऐडवकेट जनरलने अपनीइस्पीचमें पेडरू कीनिस्बत किसतरह जिक्रकियाहै उन्होंनेजान बूझकर पेडरू का इसतरह जिक्र किया कि यह मनुष्य बड़ा प्रतिष्ठित और विश्वसित है मैं भी कहता हूं कि इन सम्पूर्ण झूठे गवाहोंमें जिन्होंने अदालतके सम्मुख गवाहीदी है पेडरू की गवाही पर किसी प्रकारका एतिराज़ नहीं होसक्ता जोपेडरूकी गवाही सहीसमझी जावेतो यह मुक़द्दमा खत्महोगया और जो कुछ गवाहोंने झूठीगवाहीका महलखड़ा कियाहै वहबिल्कुलगिर जावेगा रावजीजो झूठेगवाहोंका सरदारहै उसकी गवाही काएक २ अक्षरखण्डन कियागया रावजी और पेडरू केवर्णन मेंकितना अन्तरहै—पेडरू २५ वर्षसेकरनैल फियर साहबका विश्वसित नौकर था उसका प्रतिष्ठित होना साहब ऐडवकेट जनरलभी मानतेहैं उसने कमीशनके सम्मुख वर्णन किया कि रावजीने मेरेविषयमें जोवर्णन कियावह गलतहै और सरासर उसकीबनावटहै॥

माईलार्ड—मैं नहीं कहसक्ता कि रावजीकी गवाही किस प्रकारसे घड़ीगई पेडरूकी गवाहीने रावजीकी गवाहीकोडहा

दिया और ऐडवकेट जनरल की क़ाबलियत भी उसको खड़ा नहींरखसक्ती अबयह बातमालूम होना बाक़ीहै कि आपकी रायभी इस विषयमें मेरी रायके अनुकूल है वा नहीं—साहब ऐडवकेट जनरलसरकारकी ओरसे इसविषयमें बखूबी स्पीच करेंगे और पेडरू की गवाहोका भलेप्रकार वर्णन करेंगे॥

मेरेविचारसे चाहेऐडवकेट जनरल हजार तकरीर करेंगे परन्तु मेम्बरोंके जेहनपर बैठनाबहुतही कठिनहोगा कियाया मुमकिनहै कि पेडरूकी गवाहीपर निश्चयकियाजाय यारावजीकी गवाही ठीक समझीजाय और तुर्फामाजरा यहहै कि पेडरूकी गवाही प्रथम बम्बई के एक जस्टिस आफदीपीस और डिपुटी कमिश्नर पुलिस मिस्टर एडगन्टन साहब ने लीथी इसलिये पेडरू और रावजी की गवाही में देखना चाहिये कि कितना अन्तरहै ऐसा नहीं होसक्ता कि दोनों मनुष्यों की गवाहीपर विश्वास कियाजाय जरूरहै कि एकमनुष्यकी गवाही झूठहो और दूसरे की ठीकहो पेडरूकी गवाही में मुझकोकोई बातकहनी बाक़ीनहींहै परन्तुरावजीकी गवाही परमुझको एतिराजहै रावजीके निस्बतऐडवकेट जनरलसाहब नेउसका प्रतिष्ठित होनानहींकहा ऐडवकेट जनरलने मुकद्दमेके प्रारम्भ होनेके समयअपनी स्पीचमेंवर्णनकियाकिकरनैल फ्रियर साहबको शुरूमेंविषदिये जानेका उद्योगकबजूवारावजीनेअपनी गवाहीमें प्रथमअपने इरादोंकाबखूबी इजहारदियाकिमुझको तारीखें स्मर्णनहीं है परन्तु कमीशन के सम्मुख फिरबयान करूंगा परन्तु अजब बातहै कि साहबऐडवकेटजनरलनेउसका जिक्रनहींकिया शायदअकस्मात् उनसेयहबात छूटगई अथवाउन्होंनेयहसमझाहोगाकिरावजीकाबयानऐसा बेमूलहै किकमीशनके सन्मुखउसका वर्णननकरसके यदिऐडवकेटजनरलसाहबकायहीविचारथातोबहुतठीकहैऐडवकेटसाहबसितम्बरकेउद्योगकाकुछवर्णननहींकरतेहैं उन्होनेकेवल ६ और७नवम्बरकेउद्योगकाजिक्रकियाऔरकमीशनकेमेम्बरोंको

स्वर्ण होगा कि रावजीने अपने इजहार में ६ और ७ नवम्बर का जिक्र नहीं किया किन्तु उसने कहा है कि मैने ६ और ७ नवम्बर को विष नहीं डाला परन्तु फिर भी करनैल फियरसाहब की ऐसी हो दशा होगई जैसा कि विष के खाने से होती है अगर ६—७ नवम्बर को विष दिया गया तो चकोतरे की पर्व्वत में दिया गया रावजी का बयान है कि जो पुड़ियां मुझको मिली थीं उनको मैने ८ नवम्बर को पर्वत में डाल दिया कुछ संदेह नहीं कि बज्रधा झूठ के बोलने वाले अपनी बात को भूल जाते हैं और झूठ बोलने वाले मनुष्य बड़े भुलक्कड़ होते हैं जब ऐडवकेट जनरल ने प्रथम में इसी च कही थी उस में वर्णन किया था कि रावजीने ६ और ७ नम्बर को विष डाला परन्तु मैं नहीं कह सक्ता कि रावजीने मिस्टर स्टटरसाहब के रूबरू यह जिक्र किया था वा नहीं परन्तु उसने किसी न किसी अफसर के रूबरू अवश्य कहा होगा परन्तु जब अदालत में उसके इजहार लिये गये तो उसने ६ और ७ नवम्बर का कुछ वर्णन नहीं किया किन्तु उसने गलती से कहा कि ८ नवम्बर को सब पुड़ियां पर्वत में डाल दीं फिर ऐडवकेट जनरल ने हेमचन्द और फतहचन्द का जिक्र किया इस गवाह का दामोदरपंथ की गवाही के वक्त वर्णन करूंगा॥

ऐडवकेट जनरल कहते हैं कि संखिया और हीरा कूट कर सालिम को रावजी के देने के लिये दो दफे दिया गया परन्तु रावजी केवल एक पुड़िया के देने का जिक्र करता है पहिले उसको सितम्बर के महीने में एक पुड़िया दी गई और दूसरी बेर उसको दो पुड़ियां दी गईं रावजीने उसके तीन भाग किये उन दोनों पुड़ियों में से एक सफेद और दूसरी में गुलाबी कोई वस्तु थी गुलाबी वस्तु के निस्बत रावजीने इसलिये कहा था कि उसने सुना होगा कि गुलाबी रंग के हीरे होते हैं परन्तु जब संखिया और हीरे एक जगह कूटे गये तो फिर गुलाबी किस तरह आगया और जो पुड़िया उसकी पेटी में मिली तो अपनी बात के सही होने के लिये उसने बयान किया कि संखिया और हीरे मिलाये नहीं गये राव जी की प्रकृति अजब तरह की है इसने करनैल फियरसाहब को मार

नाभीचाहाथाऔर उसकोदयाभी आतीथी पेटीकाजिक्रभी मैं फिर करूंगा उससे स्पष्टप्रगटहोताहै कियह मुकद्दमाबनाया गयाहै ऐडवकेट जनरलसाहब पुलिसकी तहक़ीक़ातके विषय में कहतेहैं किगवाहोंमें परस्परकुछ वार्त्ता नहीं होतीथी इस वजह से वह कहते हैं कि गवाहों की गवाही बनावट की नहीं परन्तु मेरे विचार से यह सब बातें निरर्थ हैं निस्संदेह इतना ऐब गवाहोंमेंहै किवहबेमूल है वास्तव में गवाहों की वार्ता नहीं हुई परन्तु इन गवाहों को एक प्रतिष्ठित मनुष्य अर्थात् अकबरअलीने बुलायाथा और बखूबीउनको सिखा२ करहर एक बात को पूछा उनगवाहोंने २४ घण्टे के उपरान्त सबहाल बयानकरदिया यहकारवाई अकबर अलीकी मेरी समझ में नहीं आती कि किसतरह सब लोगोंने बेचैन होकर अपने मनका भेदउनसे वर्णन करदिया मेरेविचारसे यहसब गवाहियां बनाईहुई हैं और बनावट को मैं साबितकरूंगा और सबगवाह इसीवास्ते एकजगहकिये गयेथे कि उनकीगवाहियांघड़ीजावें गजानन्दकी निस्बतभी इससेअधिक और कुछ नहींकहसक्ता मुझको हरएक बातपर गजानन्दयाद आता है औरयदिकोई मनुष्य कहे किगवाहों की गवाही कैसी हैतो उसकेउत्तरमें मैंकेवलयही कह सक्ताहूं (गजानन्द) यहगवाह आपहीनहीं जानतेथे कि हम क्या वर्णन करतेहैं जैसीकिउन-कीगवाही बनाई गई उसीतरह उनकी याद भी दुरुस्त होती तोमैंकिसतरह गवाहीमें तकरीरकरता परन्तु मैं ऊपर कह-चुकाहूं किझूठेका स्वर्णबहुत खराबहोताहै यहगवाह मुख-तलिफ बयान करते थे अकबरअली अब्दुलअली गजानन्द ने अपनेमुल्कके हितकेलिये जो कारवाई कीहै विश्वासहै कि उसपरकमीशनकेमेम्बर कदाचित् निश्चयनकरेंगे इसकेउपरान्त ऐडवकेट जनरलनेइसतौर से जिक्रकियाथा किदामोदरपंत रावजीनरसू बड़ेदुष्टहैं और इसवजहसे अपने इजहारमेंइक़-रारकियाहै किखतासुआफहो और जो २ उन्होंनेदुष्टताकी

है उसको क्षमा कियाजाय परन्तु नरसूमें अपराधी और निर्दोष होना दोनों बातें पाई जाती हैं यह अपने अपराधसे ऐसा लज्जित हुआ कि कूवें में डूबना चाहा था और उसने वही मसलपूरीकी कि कूवेंमें सचाई मिलती है परन्तु सचाईके बदले उसको कांस्टेबलमिला क्योंकि उसके कूदने के उपरान्त कांस्टेबलभी कुवेंमेंकूदाथा—फिरऐडवकेट जनरलगायकवार का जिक्रकरते हैं जबकिवह ९ नवम्बरको करनैलफियरसाहब के पासआयेथे उन्होंने वर्णन कियाकि करनैल फियरसाहब का जीमतलाताथा और जोविषखाने वालेकी दशा होतीहै वही उनकीहालतथी लेकिनडाक्टर सीवर्ड साहबसे करनैलफियर साहबनेचाहेनहींसुनाकितलछटकेदूमतिहानकाक्यापरिणाम हुआ परन्तुजब करनैलफियर साहबकीमुलाक़ात गायकवार सेहुईतो करनैलफियरसाहबको सुनकरआश्चर्य्य हुआ किजो दशाउनकीथी वैसीहोबहुतसे लोगोंकी शहरमेंदशा है किन्तु गायकवारनेभीकहाकि मेरीतबीयतकाभीयहीहालहै हालांकि करनैलफियरसाहबने विषकाउनसेकुछभीजिक्रनहींकियाउस समयतक करनैलफियरसाहबको मल्हरावसे कुछसंदेहनथा मालूमनहुवाहोगा किमुजकोविषदिया जावेगायदिदामोदर पन्थकाबयानठीकहैकिउससमय मल्हरावबखूबीजानतेहोंगे कि करनैल फियर साहबकी क्या दशाहै क्योंकि दामोदरपन्थ कहताहै कि मल्हररावने मार्गमें मुजसेयह बार्त्ताकीथी जब गायकवारने करनैल फियरसाहबसे बयानकियाथा कि नगर में इसप्रकारका रोगहैतो उनको मालूम नहोगा कि डाक्टरी से मालूमहोजाताहै कि जो मनुष्य विषखाताहै उसकी क्या दशाहोजातीहै करनैलफियर साहबने जो डाक्टरसीवर्ड साहब कोचिट्ठीलिखीथी उसमेंउन्होंने लिखाथाकिपेटमेंपीड़ाऔरसिर घूमताहै और मुखमें तांबे का स्वादहै इस विषयमें ऐडवकेट जनरल वर्णनकरतेहैं कि गायकवार करनैलफियर साहबको निश्चयकराना चाहतेहैं कियहबीमारी किसीसबबसेथी जबमैं

करनैलफियर साहबकी गवाहीपर ध्यान करताहूं तोमैं कहसकताहूं कि गायकवार उसदिन जोकरनैलफियर साहबकी मुलाकातके लियेगयेथे वहदिन उनकी मुलाक़ात काथा कोई नईबात गायकवारने नहींकीथी औरन गायकवारकी बातों सेकुछफिक्र मालूमहोतीथी उसदिन मामूली बार्त्ता हुई यहां तकअपनेनिज ऐडवकेटजनरल की दूसीचपर गुफ़्तगूकी वहबिल्कुलक़ाबलियतसे भरीहुईथी अबवहकहतेहैंकि यहमुक़द्दमा नरसूऔर रावजीऔरदो मनुष्योंकी गवाहीपरहै वहइसबात कोमानतेहैं किरावजीऔरनरसूने जुर्म्ममेंमदद्की वहकहतेहैं कि इस मुक़द्दमेका निर्णय रोयदादपर होगा पूर्व्वोक्त साहब तीनप्रकारसे गवाहीकी सिदाक़त करते हैं प्रथमयह कि वह अलग २ रक्खे गये इस विषयमेंमैं पहिले गुफ्तगू करचुकाहूं जिस मनुष्यने नरसू की गवाही सुनीहोगी क्या वहकह सकेगा कि उसकी गवाही ठीक है उसकी गवाही से यह बात प्रगटहै कि एक समयमें वहबहुत बदज़ातथा परन्तु अबअपने कियेपर पछताताहै दामोदरपंथरावजी और नरसूकी गवाही केलिये बहुतकुछ सिदाक़त दाकारहै मेरेमित्र(एडवकेटजनरलसाहब) ने उसकीसिदाक़त नहींकी यदिपेडरू की गवाही ठीकहैतो रावजीको दरोगहलफ़ी अर्थात्झूठी सौगन्दखानेके अपराधमें दण्डहोना चाहियेकेवल तीनमनुष्यों कीगवाहीपर इसमुकद्दमेका दारमदारहै और उन्हीतीन मनुष्योंकीगवाही से गायकवारकीप्रतिष्ठा और मालऔर असबाब हरलियागया क्या उनलोगोंकीऐसीगवाहीहै कि जिसकी समाअतहो और गायकवारकोउसकीगद्दी औरउसकी जायदादछीनकर मुफ्तलिसकरदियाजायआपलोग जो कमीशनकेमेम्बरहैंकेवलजूरीके तौरपरहैं क्या आपसाहिबों को यहउचितहै कि सोचेसमझे बिना छोटे२ गवाहोंकी गवाहीपर गायकवार को फांसीदेदें ऐडवकेटजनरल चाहतहैं कि गायकवारको दण्ड दियाजावे

इनलोगों की गवाही बिल्कुल बेमूलहै सबसे पहिले करनैल फियरसाहबकी गवाहीका जिक्रकरूंग—माईलार्ड कटनुकेपल्टनेसेमेरी आवाजक़ाबूमेंनहीं है करनैलफियरसाहब इसअजब फिसाने में नामवर शख्सहैं मैंने उनके विषयमें एक शब्द भी सिवाइसके जो मुझेकहना आवश्यक है न कहा तो क्या और ऐसीबातनकहूंगा जिससे करनैलफियरसाहब खेदको प्राप्तहों करनैलफियरसाहब निस्संदेह प्रतिष्ठित और सत्यवादी और वीरहैपरन्तु जिसपदवीपर वहनियतथेवहउसके योग्यनथेइस ओहदेका काममहासूक्ष्मथा गायकवारजानतेथेकि उनपर किसीसमयमें ऐसी चश्मनुमाईहुईथी कि उनकीप्रतिष्ठा और कारस्वाई में फर्क आगया था और मालूमहुआथा कि वह प्रबन्ध नहीं करसक्ते हैं मुझको आशाहै कि यहबातें करनैल फियरसाहब के विषय में जियादहसख्त नहींहैं—फिर गवर्नर बम्बईनेउनको उसतेवरीकिया जोकि राज करनैलफियरसाहब के पासगया और जिसको मैंने अदालत में पेशकिया उससे करनैलफियर साहबके बदनाम करनेकी मेरीइच्छा नहींहै केवल इसीलिये पेश किया था ताकि साबितहो कि करनैल फियरसाहबउसपदवीके योग्यनथे जिसपरकिवहनियतथेऔर गायकवार इनबातोंको खूबजानते और समझतेथेकिजबउनको शिकायतहोगी शीघ्रहीबदलाये जावेंगे करनैलफियरसाहबने ऐसेलोगोंसेमुलाकातरक्खी जिनसेकि गायकवारमहाअप्रसन्न थेऔरवहलोगगायकवारकेप्राणकेवैरीथे जैसेकिउनमेंसे एक भावपूनाकरथाउनलोगोंकाबयानहै किहमकोकरनैल फियर साहबनेकुछरुपायानहींदियापरन्तु करनैलफियरसाहबकीसर परस्तीउनकेकमाखानेकेखियेकाफीथीमालूमहोताहैकिकरनैल फियरसाहबउनसेऐसामेलचोलरखनेकिजोकुछ वहलोग कहतेथेथेवहीकरनैलफियरसाहब करतेथे फिर करनैलफियर साहबक्योंकरकहतेहैं किभावपूनाकर प्रतिष्ठितमनुष्यहैमैं कदाचित्नहींकहसक्ताकिउनकोक्योंकरमालूमहुवा किभावपं-

ना करसत्यवादीहैक्योंकिवहगायकवारकेविल्कुलप्रतिकूलथा फिरकरनैलसाहबको यह खयालहुवाकिजिनलोगोंपर गायकवारजुल्मकरतेहैंउनकीनालिशसुननाचाहियेइससे मालूमहुवाकिसैकड़ों मनुष्यगायकवारकीशिकायतकियाकरतेथेजबहवाखाने जाते उससमयमें लोग शिकायत शुरूकरते थेनिदानजोमनुष्य गायकवारकीशिकायतकरताथाउसको बखूबी करनैल फियर साहब सुनतेथे कोई२शिकायतें बिल्कुल झूठ होतीथीं परन्तु साहबउनकी भीसमाश्वत करतेथे जबलोगोंकोयह मालूम हुआ किसाहब हरएक शिकायतको सुनतेहैं औरगायकवार सेअप्रसन्नहैंतो लोगोंने जाबेजा अरजियांदेनी शुरू करदींमैंअपर कहचुकाहूं किजबगायकवारने देखा किकरनैलफियर साहब किस २ प्रकार केलोगों सेमिलतेहैं औरप्रतिसमयऔरहरक्षणनभावपूनाकरसेवार्तीकरतेहैंऔरजिससेयहबात साबितहोतीथी करनैलफियरसाहब बिल्कुलभावपूनाकरकेवशमेंहैं समझे किउत्तमप्रबन्धकाहोनाअसम्भवितहैजोऐसान होतातोकोई कठिनता आगेन आतीजिस२उत्तमप्रबन्धके लिये श्रीमान् बैसरायने दोवर्ष की उनको मोहलतदीथी अगर करनैल फियरसाहब ऐसान करते तोकोई दिक्कतनथी परन्तु इसहालतमें अच्छेइन्तिजामका होना असम्भवितथा करनैलफियर साहब को यह संदेहथा किमुझ को विषदिया जावेगा परन्तु मालूम नहीं कि किस मनुष्यने उनको यह पट्टी पढ़ाई थी और किस तरह उनको यह खयाल हुआ कि करनैल फियर साहब को इस प्रकार के खयाल थे और गायकवार के मिज़ाज में दूसरी तरह की बातें थीं प्रकट है कि भावपूनाकर वाजारी गप करनैलफियर साहब को आकर सुनायाकरता और करनैलफियरसाहब हरबातका निश्चयकरलेतेथे सितम्बर वा अक्टूबर में फियरसाहब के माथे परफोड़ा निकलाथा इसमुकद्दमें में फोड़ेकेविषयमेंभी बहुत बड़ाजिक्र है और बहुतकुछ काररवाई फोड़ेकेनिस्बत बयान

ऊईइसफोड़ेकीदवा डाक्टरसाहबकियाकरतेथे करनैलसाहब उसजमानेकी शिकायतकरतेहैं किबहुधामेराजीमतलाताथा और फोड़ेमेंअति पीड़ाहोतीथी और उसपीड़ाका यहकारण मालूम हुवा किडाक्टर सोवर्डसाहब फोड़े पर क्लौडियम नाम औषधी लगाया करतेथे और क्लौडियमका यहगुण है किलगातेही बहुतपीड़ाहोतीहै ऐडवकेट जनरलबयान करते हैंकि रावजीने चकोतरेके शरबतमें कुछपुड़ियां डालदीं और बिलाकिसी शिकायत के करनैल फियरसाहब उसको पीगये हालांकि अगरकोई चकोतरेका खरावशरबत पियेगातो बेशक शिकायत करेगापरन्तु करनैलफियरसाहबने उसकोचुपचाप पीलिया और किसीप्रकारकी शिकायतनकी मालूम होताहै किकरनैलफियरसाहब केमिज़ाजमें अतिसंतोषथा तीनदिन तकउन्होंने शरबतनहीं पियायहभी नहींबातमालूम होतीहैकि जबकिसीमनुष्यको किसीखास वस्तुकाअभ्यास होताहैतोउसके इस्तैमालके बिनाउसको चैननहीं पड़ताआप साहिबोंकामत मेरेवर्णनके अनुकूलहोगा किकरनैलफियरसाहबने शरबत न पीनेको कोईमाकूल वजहबयान नकी जोकारण उन्होंनेवर्णन कियावहमेरे बिचारसे काफीनहीं है अगररावजी का बयान देखाजावेतो मालूमहोगा किउसने केवलहीरेकी कनीडाली थीसो उसकेनिस्बत डाक्टरोंने वर्णनकिया किउससेकुछदुःख नहीं पहुंचतापस ऐसेही खयालों से उनका शिर घूमनेलगा और जीमतलानेलगा और जोदशा सितम्बर और अक्टूबर में हुईथी वैसोही दशाहोगई रावजी का बयानहै कि ६, और ७, नवम्बरको मैने संखियानहीं डाली फिरकिसतरह करनैलफियरसाहबकी नबीयत बिगड़गई फिरभी करनैलसाहबचुप होरहे और किसीसे उन्होंने शिकायत नहीं की ९—नवम्बर को उन्होने शिकायतकी और संखियेके दिये जानेका संदेह हुवा परन्तुदोतीनबातें मेरे बिचारमेंनहीं आतींउनमेंसे एक यहहैकिकोई माकूलवजह करनैलफियर साहब को विषदिये

जानेकी नथी इसबात का खयाल और लोगोंके दिलोंमें भी आया होगा ऐसेखयालोंके विषयमें मैं बहुतसी बार्त्ताकरूंगा मुझको इसबात का भी आश्चर्य्यहै कि जिनलोगों को संखिया मिलसक्तीथी वह करनैलफियरसाहबके कमरेमें भी जासक्तेथे और करनैलफियरसाहबकी सबआदतों कोभी जानतेथे फिर क्यों अच्छीतरहसे विषदिये जानेका बन्दोबस्त नहींहुवा सब से अधिकअचम्भेकी यहबातहै कि मुद्दततक उद्योगहोतारहा और भलेप्रकार विष न दियागया जब गर्मतमें विष मिलाया गया तो करनैलफियरसाहब यहकहतेहैं कि तलछटका रंग स्याही माइलभूराथा और गवाहोंका यहबयानहै कि स्याही माइल नथा किन्तु हलकाभूराथा जबतलछट का इमतिहान कियागया तो जो सूरत करनैलफियरसाहब बयान करते हैं उसके प्रतिकूलथी करनैलफियर साहब ने गिलास कोमेजपर रखदिया थोड़ीदेरके उपरान्त उनकोसंदेहहुवा और तलछट को देखा आपको स्मर्णहोगा कि डाक्टरसीवर्डसाहबने उसके निस्बतक्याकहा मैनेउनसे इतनेप्रश्नकियेकि वहअप्रसन्नहोगये और कहा कितुमयहांक्या प्रलयतक रहोगे मैं भी जानताहूं किजोप्रश्नउनसे मैनेकियेउनसेउनकोआश्चर्य्यहुवाहोगाक्योंकि तलछट डाक्टरसाहबनेदेखा उसकारंग हलका भूराथा और जिस तिलछट के निस्बत करनैल फियरसाहब वर्णन करते हैं उनकी रंगत स्याहीमायल भूरीथी यहबात ठीक है किरंगत केविषयमेंबहुतसेलोगोंकेबयानमेंअन्तरहोजाताहै परन्तुइतना अन्तरनहींहोता जोकिडाक्टर सीवर्डसाहब और करनैलफिय-रसाहबके बयानमेंहै जिसप्रकारडाक्टर सीवर्डसाहबने संखिये की आजमाइशकी वह तरीकाभी अच्छानथाकिन्तु जिसप्रकार डाक्टर ग्रेसाहबने इमतिहान कियावहभी अच्छा न था यूरू-पयमें जब इसतरहका इमतिहान होताहै तोडाक्टरलोग सं-खियेको दूसरीवस्तुओंसे पृथक् करकेउसको मूलरूपमें लाकर दिखा देते हैं और ऐसा नहीं करते कि धातका सा छल्ला

बनगयाऔरउसको कहदिया कियहसंखियाहै पिसेहुये हीरे कीनिस्बत जोलोगबयानकरतेहैं वहबिल्कुल कल्पितहैजोलोग कहतेहैं कितलछटमें पिसाहुवा हीराथायहभी झूठहैहांकोई वस्तु उसमेंचमकती हुईथीऔर उससे शीशाभी छिलसक्ताथा परन्तुउसे हीरेकाचूर्ण कहनाबिल्कुल गलतहै औरइसबातका साबितकरना भीअसम्भवितहै उसकीनिस्बत खयालहै कि वह हीरेका चूर्णथाअगरयहउम्मैदकीजायकिडाक्टरीकीरूसेहीरे काहोना साबितहोजावेगा तोयहउम्मैदभीबेजाहै डाक्टरलोग इसकोकभी साबितनहींकरते निश्चयहैकि इसविषयमेंजोतहकीकात हुईहैकमीशनके मेम्बरउसपर किसीप्रकारका खयाल नकरेंगे यहबात निस्संदेह कुछसाबितहुईकि जोपुड़िया इमतिहानके वास्तेभेजी गईथीउसमेंसंखियाथा परन्तुयहबातदरयाफ्त करनेके योग्यहैकि यहपुड़िया वहीतलछटथी जोकरनैलफियर साहबकेगिलासमें सेनिकलीऔर इसविषयमेंकरनैल फियरसाहबने इजहारदियाहै किजबसे मैंने तलछटको देखा उसके पीछेकोई मनुष्य गिलासके पासनहींगया परन्तुकरनैल फियरसाहबके इसइजहारको मैंतसलीमनहीं करसक्ताक्योंकि जोकोई मनुष्य गिलासके पासजाना चाहतातो बहुतकुछमौक़ामिल सक्ता था मेरीइस सम्पूर्णवार्त्तासे यहप्रयोजनहै कि इससमुकद्दमेमें कैसीअद्भुत गवाहीं गुजरीहै औरइसगवाहीको वजहसे क्या२ विचारमनमें गुजरते हैं॥

दोपहरके उपरान्त दोबजेथे सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहाकि आजशनिश्चरवारहै अदालतको बरखास्त करना चाहियेऔरकहा कियदि प्रेजीडण्टसाहबको इच्छाहोतोमैंकुछ औरवर्णन करूंप्रेजीडण्ड साहबने कहाजोआपथकगयेहैंऔर दमलेनाचाहतेहैं तोबेहतरहैमेरीतरफसेजबरदस्तीनहींहैसरजन्टबेलन टायनसाहबने कहा खैर यहबात मेरेजिम्मेहै और अबमैं दमलेनाचाहता हूंप्रेजीडण्ट साहबने कहा कि पर्व्वोक्त सबबसे अदालतबरखास्तकीजाय परन्तुजबथोड़ासमय व्यर्थ

जाताहैतोमुजकोअफ्सोसहोताहैसरजन्टबेलनटायनसाहबने प्रेजीडण्टकाशुकरियाअदाकिया और कहाकिइससुकद्दमे में बहुतसी बातोंका खण्डनकरचुकाहूं और सोमवार कोकोशिश करूंगा किमेरीतरफसे खण्डनका कुछ संक्षेप होसक्ता हैया नहींइसके उपरान्त अदालत बरखास्त हुई॥

सचहवेंदिनका इजलास॥

आजग्यारह बजेकमीशन केमेम्बर एकचउये परन्तुश्रीमान् महाराजा सेंधिया चित्तकी उद्विग्नतासेगैरहाजिरथे सरल्यू-इसपीलीसाहब कमीशनमें उपस्थितथे और श्रीयुत महाराजा मल्हरराव भीसम्पूर्ण दिनबैठेरहे प्रेजीडण्ट साहबनेकहाकि अफ्सोसहैकिश्रीमहाराजासेंधिया चित्तकी उद्विग्नतासेआज न आसके॥

सरजन्टबेलनटायनसाहब स्पीचकहने के वास्तेउठे उन्होंने वर्णनकिया किमैंने शनिश्चरवार कीस्पीचमें वर्णनकिया था किमैने दोएकजगह भूलकीहै आजमैंउसगल्ती कोदुरुस्त करूंगा औरवहगल्तियां तारीखोंकीथीं जिससमय मैनेपहिले विषदेनेकोतारीखबयानकीथी तोअगस्त वासितम्बरकामहीना कहाथा परन्तुएक गवाहने किजिसकी गवाही कुछ निश्चय माननेके योग्यहै वहकहताहै किर्ट नवम्बरके पन्द्रह वा बीस दिनपहिले विषदेनेका उद्योग कियागयाथा और दूसरी बात यहहैकि अन्तकीबेर जोगायकवारकीओरसे रुपयेके देनेका बयानहुआहै वहजूलाईके महीनेमेंहै गतशनिवारकी स्पीच मेंजूलाई केपीछे कीतारीखमैने बयान कीथी परन्तुकागजों के देखनेऔर अपने दोस्तोंके बयानसेयहगल्तियां मालूम हुईं इनबातोंका मैंपीछेवर्णन करूंगाक्योंकि मैनेउन तारीखों को दुरुस्त करलिया—माईलार्ड—एकऔर बातयहहैजिसका जिक्र मैनेगौरकरनेकेबिना कियाथा यदिमुजको उसकेभूलके बयान

करनेकी इच्छानथीवहबात गिलासकीतलछटकेविषयमेंहैउस केलिये करनैलफियरसाहब आपहीवर्णनकरतेहैं किमैनेथोडा शरबतपीकर रखदियायागवाहोंकी गवाहियांदेखतेहीमालूम होताहै किपांच वा छः बेरविषदेने काउद्योगकरवा और एक दफेकरनैल फियरसाहबको कोईनकोई बातबाधक हुई और थोड़ीसीशरबतपीकरछोड़दिया करनैलफियरसाहबकाबयानहै किजबकभीशर्बतमें बिषडालागयाहमेशाउसकास्वादबदलगया इसीहेतुसे उन्होने शर्बतनहीं पियाऔरउनका बयान हैकिसं- खियाऔरहीरेकाचूर्ण शर्बतमेंपड़ाथा और इनदोनों वस्तुओंमें किसीभांतिका स्वादनहींहै सो कुछसंदेहनहीं है कि अगर यहचीजेंशरबतमें डालीगईंहोती तो अवश्यकरनैलफियरसाहब पीजाते और स्वादमें कुछफर्कनहोताऔर घण्टे आधघण्टे के उपरान्त उसकी क़ैफियत मालूम होती क्योंकि डाक्टरों की भी रायहैकी घण्टे आध घण्टे के उपरान्त विष अपना गुण करजाताहै इसविषयमें शनिवारको इत्तिफाकसे जिक्र नहीं कियाकमीशनके मेम्बरोंको स्मर्णरहे कि जब दामोदरपन्थ के इजहार आदिपर बार्त्ताकर चुकूंगा तो इसविषयमें भी तक़- रीरकरूंगा अबदामोदरपन्थके इजहारसे खण्डनकरना शुरू करताहूं साफजाहिरहै कि दामोदरपंथ से हरएक बातका मूलहै और विषआयातो इसीके द्वारा आया यहबात कहीं जाहिरनहींहुईकि किसीऔर मनुष्यने विषमंगानेमें कोशिश कीहो और दूसरेकिसी मनुष्यनेविषदियाकेवल इतनाहीपता मिलताहै कि दामोदरपंथने विषमंगाया इसके विशेष और किसीमनुष्यपर संदेहनहीं इसलिये उचितहै कि इसी मनुष्य के खण्डनसे प्रारम्भकियाजावे॥

माईलार्ड—दामोदरपंथ—नरसू और रावजीकी गवाहीके गुफ्तगूकरनेके पहिले मेरेविचारसे इसबातकाकहना उचित है कियहबातपूछी जायकि पहिलेइनलोगोंकी गवाहीक्यकरीं लीगई क्योंकि क़ायदा यहहै कि जिसतरह पहिले गवाहसे

बर्त्ताव होताहै वैसीही गवाही होती है उनकी गवाही ऐसे लोगोंके द्वारा लीगई जो आपही सुकद्दमेको तूल देनाचाहतेहैं॥

मैं ऐसीबात नहींकहना चाहताकि किसीमनुष्यको मुझसे जररपहुंचे परन्तु लाचारहोकर कईलोगोंका नाम इससुकद्दमेमेंजरूरीसमझताहूं मिस्टरसूटरसाहब बड़ेलायक़अफ्सरहैं और बम्बईमें बड़ेदरजेके ओहदेदार हैं उनको बखूबी मालूम होगाकि पुलिसके और अफ्सरोंमेंसे गजानन्दवतिल—अकबर अली अब्दुलअलीको अपने साथकिसवास्तेलानामुनासिब हुवा और यहबातभी उनको बखूबीमालूम होगी कि बम्बईके बहुत बड़ेअफ्सरने इनलोगोंकी काररवाईपर बहुत बड़ीचश्मनुमाई की थी चाहे वह चश्मनुमाई ठीक थीयागलत परन्तु सूटर साहबको इसविषयमें शंकाकरनी चाहियेथीकि इससुकद्दमेमें भी वैसीही काररवाई यह लोग नकरें क्या बम्बईमें और कोई अफ्सरपुलिस नथा जोउन्होंने दूसरीजगहसेएकपुलिसके अफ्सरको बुलायाउनकेबुलानेका प्रकटमेंकोईहेतुमालूम नहींहोता सूटरसाहबको इनलोगोंको इतना अधिकारदेना उचितनथा जिसतरहकि इनगवाहोंनेगवाहीदीहैमैं खासकर मेम्बरान् कमीशन का ध्यान इस बातपर दिलाता हूं क्योंकि इसबातपर तमामलोगोंका ध्यानलगेगा इनपुलिसके अफ्सरों को अखतियार था क जिस मनुष्यको जबतक चाहें हिरासत मेंरक्खें औरमिस्टर सूटरसाहबने जोचाहा उनगवाहोंकेइज़हारलिये॥

जिसप्रकार गवाहोंके इज़हारलियेगये हरएकका अलग२ जिक्रकरूंगा और यहभी प्रकट करूंगा किगवाहों पर जुल्म हुआहै और गवाहोंने यह गवाही दीहै॥

यठीकहैकि गवाहलोगअदालतमें नहींखेचेगयेकिन्तुउनको भयदिलाया गयाहै और कईगवाह चेहरेसे भयमान मालूम होतेथे वहलोग जानतेथेकि हमारेधन और प्राणकीकुशल नहींहै और जबतकहमहिरासतमें हैं कोईसूरतहमारे बचाव

की नहींहै जब तक कि हमपुलिस की खातिर बयान नकरेंगे हिन्दुस्तानकेशहरोंमें ऐसीबातकदाचित् जायज नरक्खीजाती परन्तु इस शहर में जो हिन्दुस्तान से अलग और क़ानून को नहीं जानता है रक्खीगई यहां के लोग बिल्कुल नहीं जानते कि अपनेछूटनेका कौनसा उपायकरें वह अपने तईं बज़तही अशक्तसमझते हैं और जानतेहैंकि पुलिसको सब प्रकार की सामर्थ्य है और हमपर प्रबल है ॥

पुलिसने अपनी कामियाबीके लियेकोई बातन भुलाई मैंने खूब गौरकरके इस तकरीरको पेश कियाहै मुजको आशाहै किजो कुछमैंने वर्णन कियाहै उसकीबखूबी सिदाकत होगी अब दामोदरपंथ के इज़हारों को खण्डन करता हूं मालूम होता हैकि हरएकबातकामूल इसीमनुष्यसेहै यहशख़्सबयान करता है किमुजको गायकवार ने इससुकद्दमे में मुख्यऐजेन्ट बनायाथा सोउचितहै किबडीसावधानीके साथइसशख़्सकी गवाही मंज़ूरकी जाय और पूछा जाय कि आया एक शख़्स कीगवाही निश्चयमाननेके योग्यहै वानहीं जिसतरह किमैंगुफ्तगू करताहूं उसीतरह औरलोगभी मुजसेबार्त्ता करेंमैंनहीं चाहताकि इससुमद्दमेमेंकोई कठोरबचन मेरीजिह्वा सेनिकले केवलउन्हीशब्दोंको बरताहूं किजो सुन्निकाना और लिखनेके योग्यहैं जोबातें मेरेमनमें हैंवहीकमीशन केमेम्बरोंकेभीजेहन नशीनहो जावेंतो दृढनिश्चयहैकिगायकवार चैनमेंरहेगा और यहसम्भवन होगाकि किसी देशके नीतिज्ञ गायकवारकेप्रतिकूलसुकद्दमे कानिर्णय करेंगेगायकवार तोक्याकिसीछोटे आदमीका फैसलाभीऐसी हालतमें प्रतिकूल नहींहोसक्ताजिस तरहकि गवाहीगुज़रीहै जोवहतसलीमकीजावे तोअफ़सोस कामुक़ामहै किवह अपना सिंहासन और राज मुकट अपने हाथसे खोवे मालूम होताहै किजिस दिनगायकवार नजरबन्दकियेगये उसीदिन दामोदरपंथ भी कैद कियागया परन्तु मजिस्ट्रेटकेसम्मुख उसकोनहीं लायेऔरनउन लोगोंसे उसका

मुकाबला कियागया जो उसपरअपराध धरतेथे उसबातकी बखूबीतहकीकात नहींहुई प्रथमहीसे वहसिपाहियों केपहिरेमें क़ैदकियागया सचहदिन तक वहक़ैद किया गयासचह दिनतक वहक़ैदरहा यदिकोईमनुष्य एतिराजकरेकि सिपाहियोंकापहिरा होनाकोई ख़ौफकामुकाम नहींहै परन्तुयह बात बिचारनीचाहिये किउसके मनमेंक्या २ सोचहोते होंगे और रोज बरोज उसकी तबीयतकैसी दूसरी तरह परहोती गईहोगी॥

मैं इसतरह का क़ैदकरना भी एक प्रकार की सख़्ती समझता हूं इस शख़्सने बयान किया कि मैंने यहबयान इसलिये किया कि कैदसे छुट्टीपाऊं और जोकुछ उसने बयानकिया उसकी निस्बत सहीहोने का सुबह नहीं है यह बात उसने सच और ठीक वर्णन की है-उसने यह भी बयान किया कि फिरमैं पुलिसकीगार्डके सुपुर्दहुवा उस समय उसको रावली और नरसूको गवाहीसे दुरुस्त हुई-वहखुदइक़रार करता है जोवह इन्कार भी करता तो यह इन्कार उसका निश्चय माननेके योग्यनथा और उसको मालूमहुवाथा किगायकवार परकौनसा अपराधहै अर्थात्उसको मालूमहुवाथा कि विष दिये जानेका अपराधहै जिसमें संखिया और हीरेके चूर्णका जिक्रहै सिवाइसके एकशीशीकाभी जिक्रहै यहीशख़्सकहता है किमैंने शीशी दीथी और कहताहै किशीशीके देनेके उपरान्तमालूम हुवा कि शीशीमें क्याहै यह इजहार उसने भले प्रकार जिह्वाग्रकर रक्खेथे इन बातोंपर कमीशनको मेम्बरोंको खूबग़ौर करनाचाहिये इसगवाहकी हालतयहहै किजोकोई मनुष्यकिसीसे कहेकि अगरतुम गायकवारको क़ैदकरादोतो तुमबरी होजाओ और अगर गायकवार बरी होजावेंगे तो तुमक़ैद होजाओगे-पुलिसने शायदयहभी सिखादिया होगा कि क़ैदहोना और छूटजाना तुम्हारेही आधीनहै यदिगाय-

कवारक़ैद होगयेतो तुम छूट जाओगे और थोड़ी जागीरभी तुमको मिलेगी ईश्वर जाने ऐसी झूठी सौगन्दसे आगेको क्या परिणामहो जोऐसे झूठोंको दण्ड नहीं दियाजाताहै तो मेरे विचारसे किसी अपराधीको दण्ड नहीं होतामैं नहींजानता कि दण्डक्या वस्तुहै जोदरोगहलफी और मारडालने के उद्योग मेंदियाजाताहै मैनेकभी किसीमुक़द्दमेमें नहींदेखा कि ऐसी साफ २ शहादत किसीमनुष्यने दीहो और इसशख़्सको अपने झूठबोलनेका कुछभी विचार नहुवा इससंसारमें अतिविचित्र बातेंहैं उनमेंसे एकइस मनुष्य कीभी गवाहीहै सब गवाहोंमें यहबड़ा चतुरहैपरन्तु जबवहगवाही देताथा और गायकवार कासाम्हना करायाथातो उसके मुखसे लज्जा और खेदके चिह्न प्रतीतहोतेथे और साफ मालूम होताथा कि यहशख़्स दरोग हलफीकररहाहै और उसकीझूठी सौगन्दखानाभी मैंसाबित करदूंगाइसमनुष्यनेकेवल अपनीहीगवाही नहींबनाईहै किन्तु औरोंकी गवाहीभीघड़ीहै विशेषकर हेमचन्दकी–इसमुक़द्दमे मेंप्रगटकरदूंगा कि पुलिसने बड़ीनिर्भयताके साथइस मुक़द्दमे मेंदखलकियाहैमुझकोहेमचन्दकीगवाहीमेंखासशुबहाहै और विशेषउसमौकेपरजबकिउसकेइज़हारमेंप्रश्नकियेगयेतो उसकेबयानमेंकितनाअन्तरहोगया मैं आखिरकरदूंगाकि इस शख़्सके इज़हारमें पुलिसने जियादहकारिस्तानीकीहै जोकि दामोदरपन्थ थीमान्मल्हरराबकाप्राईवेट सीक्रेटरीथा इस लिये वहहरप्रकारसे विश्वसितहोगा जोकुछ हाल वहबयान करताहै वहबिल्कुल गलतहै वहकहताहै कि हिसाबगलत हैं और उसके।बड़ा भयथाकि करनैलफियरसाहब हिसाबकी किताबें मंगवाकर नदेखें इसलिये जगहर२पर स्याहीडलवादी अगर गायकवारपर अपराधठहरायाजाता तोउसमनुष्यको अवश्यदण्डहोगा और उसनेहिसाबोंको मशकूक किय और इसबातको उसकेकोई अदालततसलीमनकरती किगायकवार के फायदेकेलिये मैंने ऐसा कियाहै क्योंकि यहबात बुद्धि में

नहींआतीकि पहिलेहिसाब लिखाजाय और फिरवहमशकूक कियाजावे यदि उसपर लेलेनेका अपराध कायम कियाजाता तो उसको कोई उज्र नहीं होसक्ता था उसके पास सिवाय जुबानी उज्रकेकिमैंने गायकवारकी आज्ञासेकिताबोंको मशकूक किया और कोई सुबूत नहीं है इसलिये उसका बयान निश्चय मानने के योग्य नहीं है—यदि कोई गायकवारके हाथका लिखा हुवा परचा वह पेशकरता तो निस्सन्देह उसके बयानका विश्वास होता कदाचित् निश्चय नहीं कि गायकवारके लिखेहुये परचेकेबिना वहकिताबोंको गलत करसक्ता इससे मालुम होता है कि दामोदरपन्थ ने खासअपने लाभ के लिये किताबों को गलतकिया गायकवार की कोईआज्ञा न थी यहशख्स कहताहैकि मैंआठबजे भोर से रातके दसबजे तक गायकवारके महलों में रहताथा और केवल भोजन के लिये अपने घर को आताथा यदि गायकवार इसमनुष्य को अपनाशरीक करना चाहते तो हरवक्त उससे सलाह करते परन्तु मालुम होता है कि इससे कभी किसी बात का मशवरह नहीं कियागया जोयह बातठीकहैकि गायकवार अपने नौकरोंसे सलाह कियाकरते थे और जो अपराध कि उनपर लगाहै अगर असलकरना चाहतेतो इससुआमिले को अपने नौकरों के सुपुर्द करदेते और आप किसीसे वार्त्ता न करते यह जरूरनथाकिवह प्रतिमनुष्यसेअपने कार्य्यमें गुफ्तगूकरते ताकि उनमेंसे कोईनौकर उनसे फिर जाताती इनके बरखिलाफगवाही देता मेरेविचारसे गायकवारने कदाचित् ऐसा नहींकिया और दामोदरपंथकि उनका प्राईवेटसीक्रेटरी और उसके वर्णन करनेके अनुसार गायकवार का वह मशवरह कारयाउचितथा कि यहकाम इसीमनुष्यके सुपुर्दकरें॥

इस मुक्तहमे में अजीबबात यह है कि गायकवार चाहते थे जितने जियादह आदमियोंसे इसबुरे सम्मत में बार्त्ताकरें उतनाही बेहतरहै किन्तु जाहिरकियागयाहैकि गायकवार

कवारक़ैद होगयेतो तुम छूट जाओगे और थोड़ी जागीरभी तुमको मिलेगी ईश्वर जाने ऐसी झूठी सौगन्दसे आगेको क्या परिणामहो जोऐसे झूठोंको दण्ड नहीं दियाजाताहै तो मेरे विचारसे किसी अपराधीको दण्ड नहीं होतामैं नहींजानता कि दण्डक्या वस्तुहै जोदरोगहलफी और मारडालने के उद्योग मेंदियाजाताहै मैनेकभी किसीमुक़द्दमेमें नहींदेखा कि ऐसी साफ २ शहादत किसीमनुष्यने दीहो और इसशख़्सको अपने झूठबोलनेका कुछभी विचार नहुवा इससंसारमें अतिविचित्र बातेंहैं उनमेंसे एकइस मनुष्य कीभी गवाहीहै सब गवाहोंमें यहबड़ा चतुरहैपरन्तु जबवहगवाही देताथा और गायकवार कासाम्हना करायाथातो उसके मुखसे लज्जा और खेदके चिह्न प्रतीतहोतेथे और साफ मालूम होताथा कि यहशख़्स दरोग हलफीकररहाहै और उसकीझूठी सौगन्दखानाभी मैंसाबित करदूंगादूसमनुष्यनेकेवल अपनीहीगवाही नहींबनाईहै किन्तु औरोंकी गवाहीभीघड़ीहै विशेषकर हेमचन्दकी–इसमुक़द्दमे मेंप्रगटकरदूंगा कि पुलिसने बड़ीनिर्भयताके साथइस मुक़द्दमे मेंदखलकियाहैमुझकोहेमचन्दकीगवाहीमेंखासगुफ़्तगूकरनाहै और विशेषउसमौकेपरजबकिउसकेइज़हारमेंप्रश्नकियेगयेतो उसकेबयानमेंकितनाअन्तरहोगया मैं जाहिरकरदूंगाकि इस शख़्सके इज़हारमें पुलिसने जियादहकारिस्तानीकीहै जोकि दामोदरपन्थ श्रीमान्मल्हरावकाप्राईवेट सीक्रेटरीथा इस लिये वहहरप्रकारसे विश्वसितहोगा जोकुछ हाल वहबयान करताहै वहबिल्कुल गलतहै वहकहताहै कि हिसाबगलत हैं और उसके।बड़ा भयथाकि करनैलफियरसाहब हिसाबकी किताबें मंगवाकर नदेखें इसलिये जगह२पर स्याहीडलवादी अगर गायकवारपर अपराधठहरायाजाता तोउसमनुष्यको अवश्यदण्डहोगा और उसनेहिसाबोंको मशकूक किय और इसबातको उसकेकोई अदालततसलीमनकरती किगायकवार के फायदेकेलिये मैंने ऐसा कियाहै क्योंकि यहबात बुद्धि में

नहींआतीकि पहिलेहिसाब लिखाजाय और फिरवहमशकूक कियाजावे यदि उसपर लेलेनेका अपराध कायम कियाजाता तो उसको कोई उज्र नहीं होसक्ता था उसके पास सिवाय जुबानी उज्रकेकिमैंने गायकवारकी आज्ञासेकिताबोंको मशकूक किया और कोई सुबूत नहीं है इसलिये उसका बयान निश्चय मानने के योग्य नहीं है—यदि कोई गायकवारके हाथका लिखा हुवा परचा वह पेशकरता तो निस्सन्देह उसके बयानका विश्वास होता कदाचित् निश्चय नहीं कि गायकवारके लिखेहुये परचेकेबिना वहकिताबोंको गलत करसक्ता इससे मालूम होता है कि दामोदरपन्थ ने खासअपने लाभ के लिये किताबों को गलतकिया गायकवार की कोईआज्ञा न थी यहशख्स कहताहैकि मैंआठबजे भोर से रातके दसबजे तक गायकवारके महलों में रहताथा और केवल भोजन के लिये अपने घर को आताथा यदि गायकवार इसमनुष्य को अपनाशरीक करना चाहते तो हरवक्त उससे सलाह करते परन्तु मालूम होता है कि इससे कभी किसी बात का मशवरह नहीं कियागया जोयह बातठीकहैकि गायकवार अपने नौकरोंसे सलाह कियाकरते थे और जो अपराध कि उनपर लगाहै अगर असलकरना चाहतेतो इससुआमिले को अपने नौकरों के सुपुर्द करदेते और आप किसीसे वार्त्ता न करते यह जरूरनथाकिवह प्रतिमनुष्यसेअपने कार्य्यमें गुफ्तगूकरते ताकि उनमेंसे कोईनौकर उनसे फिर जाताती इनके बरखिलाफगवाही देता मेरेविचारसे गायकवारने कदाचित् ऐसा नहींकिया और दामोदरपंथकि उनका प्राईवेटसीक्रेटरी और उसके वर्णन करनेके अनुसार गायकवार का वह मशवरह कारथाउचितथा कि यहकाम इसीमनुष्यके सुपुर्दकरें॥

इस मुक्रह्मे में अजीबबात यह है कि गायकवार चाहते थे जितने जियादह आदमियोंसे इसबुरे सम्मत में बार्त्ताकरें उतनाही बेहतरहै किन्तु जाहिरकियागयाहैकि गायकवार

ने कैसे २ लोगोंसे मुलाक़ातकी उनकमीशनके मेम्बरोंकामैं ख्याल करूंकरताहूं कि जो हिन्दुस्तानीहैं और ऐसे मुआमलोंकोखूबसमझतेहैं कि उनकीराय दरबारैमुलाकात गायकवारके और लोगोंकेसाथ क्याहै पूर्वोक्त मेम्बरोंसे इसबतकी प्रार्थनाकरताहूं कि हिंदुस्तानकी व्यवस्थजानकारीके कारण एकमुन्सिफानहरायदें यदिइन्साफ़के साथरायदेंगे तो गायकवारकोबड़ीबड़ी सहायतामिलेगी अगरकमीशनके मेम्बरकितावके ११२ पृष्टको देखेंगेतो अजीबकैफियतमालूमहोगीअर्थात् में गायकवारकी आज्ञाफौजदारकेनाम संखियेके वास्तेलिखी है दामोदरपंथका वर्णनहै कि गायकवारने आज्ञादीथी कि खारिशकेलिये संखियामंगाईजावे सोउसनेफौजदारको चिट्ठी लिखीपरन्तु संखिया नमिली यदि कमीशनके मेम्बर थोड़ासा ग़ौरकरेंगे तो यहबात सबझूठमालुम होगी अगर वहचाहते तोशीघ्रही संखियाआमक्कीथी जबफौजदारकी गवाहीअदालत में लीगई तो उसनेवर्णन कियाकि दामोदरपंथ की चिट्ठीसब तरहसे ठीकहै मालुम नहींकि क्यों संखिया नहींमिली सो दामोदरपंथका यह बयानसाफ गलतठहरताहै और दूसरी बेर जबचिट्ठीभेजीगई तो दामोदरपंथका बयानहैकि गायकवारने दस्तखतकिये परन्तु कदाचित् विचारमें नहीं आताकि उन्होंनेदस्तखत कियेहों जब लोगोंने पूछा कि संखिया किस लिये मंगाई जातीहै तो दामोदरपंथ का बयानहै कि मैंने कहदियाकि रजीडण्ट साहबको विषदेनेकेलिये मंगाई जाती है—मैं दामोदरपंथके इजहारकोविचारताहूं कि पुलिस का सिखायाहुवाहै उनलोगोंने उससेकहदिया होगाकि अगर तुम गायकवारपर अपराध साबितकर दोगे तो तुम्हारे लिये अच्छाहोगा इसलिये अपनेफायदेकेलिये उसनेयहसब गवाही दी है अगर वास्तवमें मंगाईगई तो उसने अपने किसीखास कामके लिये मंगाई होगी दामोदरपंथकी हालत इसवक्त देखना चाहिये क्योंकि करनैलफियरसाहब सदा तहक़ीक़ात

करतेथे कि गायकवारके महलोंमें क्या कारर्वाई होतीहै वह जानताथा कि अगरकरनैल फियरसाहब मेरीकिताबें मंगाकरदेखेंगे तो मुझपर बड़ी खराबी पड़ेगी यहशख्स कुछबदनामभीथा गायकवार उसकोरेजीडन्सीमेंभी नहीं लेजाते थे उसको सदाफिकर रहाकरतो थी पस आगेको इस बातपर ध्यानकरनामुनासिब होगा कि आया दामोदरपंथका बयान बनायाहुवा है वा उसनेही करनैलफियर साहब को मारडालनाचाहा था कईबातें खूबरूनहींआई उनको निस्बतकमीशनका खयाल रुजूकरूंगा कई मुआमिलेइस प्रकारके हैं कि उन पर बहुतही गौर कमीशन को करना होगा और अगर बखूबी गौर किया जायगा तो कमीशन को भी संदेह होगा और जो मुख्यहालहै वह प्रकट होजावेगा यदि दामोदरपंथ ने संखिया मंगाई थी तो अपने किसी काम केलिये मंगाई होगी और अगर फौजदार से संखिया नहीं मंगाई तो किसीवजहसे उसने आज्ञालिखालीहोगी जो गायकवार आपही संखिया मंगाना चाहते तो अवश्यही अपने आज्ञा पचपर दस्तखतकरते और आश्चर्यहै कि गायकवारको कहीं संखियानहींमिलतीथी जबदामोदरपंथने गायकवारसे कहा कि संखियानहीं मिलतीहैतो गायकवारजरूरहीताकीदकर के मंगाते जो गायकवार आप संखियामंगाते तो लिखीहुई आज्ञाकोकभीदफ्तरमें नरहनेदेते क्योंकिउनकोखयालहोता कि जबकभी इससुकद्दमेकी तहकीकातहोगी तो यहकागज गवाहीकी तौरपरहोजावेगा उनकोइसबातके कहनेकी क्या जरूरतथी कि जोसंखिया नहींमिलतीहै तो नूरुद्दीन बोहरे के पाससे मंगलो—नूरुद्दीनके बयानसेपुलिसकीएकऔर कारर्वाई प्रकटहोतीहै क्योंकि नूरुद्दीनने किसीसमयमें गायकवारपर नालिशकीथी अर्थात् गायकवारनेकिसीहेतुके बिना उसकोबेंतोंसे पिटवादिया और पांचहजाररुपये जुर्मानेकी लिया इससे प्रकट है कियहशख्स गायकवारके प्राणकावैरी

होगा दामोदरपंथने अपने वचनकीसत्यताके लियेइस मनुष्य को खूब चुनकर पेशकियाथा क्योंकि उसकोनिश्चय होगाकि खुशीसे बयानकरे किमैंने संखिया दीहैपरन्तु विदितहोता है दूरूहीन बौहरासुन्मिफमिजाज आदमीहैउसनेऐसाबयाननहीं कियाकि इसलियेकई महीनेसेयहशख्सकैदहै अकबरअलीका बयानहै किकिसीबातके जाहिरनकरनेसेयहशख्सक़ैदहै पुलिस केलोगोंसेजहांतक होसकाइसशख्सपर सख़्तीकीचाहै दूरुहीन गायकवारकाशचुकोंनहोपरन्तुइसमुकद्दमेमेंउसनेसच२बयान करदिया और उसनेहर प्रकारकी सख़्तीउठाई परन्तुएक नि-र्दोष आदमीको मारखुजनहीं कराय. अद्भुतयहै किसूटर सा-हबके सन्मुख प्रथममेंकोई इक्षहारनहीं लिखागया जबपुलिस नेगवाहोंकोखूबसिखादिया तबसूटरसाहबके सामनेगवाहीली गईकोई गवाही ऐसीनहीं गुजरीकि दामोदरपंथ ने संखिया मंगाई हो दामोदरपंथ का बयान है किमैंने संखियेको मंग-वाया वहदूरुहीनसे संखिया कामंगवाना कहताहै परन्तुमेरे विचारसे उसका यहबयान बिल्कुल झूठहै यदिवास्तवमें उसने संखिया मंगाईथी तोकिसीऔर शख़्ससे मंगाई होगी न दू-रुहीनसे परन्तुदामोदरपंथउसीके पाससेसंखिये कामंगवाना जाहिरनहीं करताथही संखिया जिसके लिये इतनी शुफ्तगू हुईबयान हैकि करनैल फियर साहबकी शरबतमें डाली गई और कई बौहरोंसे संखिये केमोल लेनेकाबयानहै और उनकी किताबें पुलिसके पासवर्त्तमानहैं जिस प्रकार कोकाररवाई करनीचाहियेथीवहकरसके थे इसकेउपरान्त हकीम कीदवा काइजहारहै दामोदरपंथका बयानहै किजिससमयमें रेजी-डण्टसाहबके मस्तकमें फोड़ाथा तो बड़े हकीमके छोटे भाई एकशीशीमेंदवा बनाकर लायेथे परन्तुबहुत मनुष्योंके होनेसे उन्होनेयह शीशीनदी वाकुछ इनआमकी इच्छा करते होंगे दामोदरपंथ कहताहै किइसकेपहिलेमहाराजासाहबनेमुझसे कहाथाकि कुछमक्खियांऐसी इकट्ठीकरके जिनसे फफोलेपड़

जातेहैं बड़े हकीम केपास फौजदार केद्वारा भेजदोमैंने नरायणराव कमकरसेकहा किअमुक प्रकार की मक्खियां इकट्ठी करके हकीम साहबके पासलेजाओ॥

दूसरेदिनमहाराजासाहबने मेरेसाम्हनेहरबियासेकहाकि हकीमसाहबको दवाबनानेके लिये कालेसापोंकीजरूरतहै सो हरबियासपेरोंको बुलालाया औरकुछसांप और मक्खियां हकीमसाहबकेपास पसन्दकरनेके लिये भेजीगईंतब हकीमसाहबने सर्प और मक्खियों को पसन्दकरके रखलिया तब महाराजासाहबने कहाकि हकीमसाहब कोकालेघोड़े के मूचको आवश्यकता है सो बापाजी कोजो मुख्य घोड़ोंके कामदार हैं आज्ञादीकि कालेघोड़ेका पेशाबहकीम साहबकेपासभिजवा दो यहबयान सुनकर बड़ाआश्चर्य्य होता है इसदेशके मनुष्यों को मैंनहीं जानता हूं यह बयान कहानीकी तौरपर मालुम होताहै मैं इसविषयमें कोईराय न दूंगा जोलोग यहांके रहने वालेहैं उनकीराय इसविषय में बहुतअच्छीहोगी मालूम होताहै कि ऐडवकेट जनरल जो मेरेयोग्य मित्र हैं उनकोइसप्रकारके इजहारसे कुछलज्जा प्राप्त हुई होगी क्योंकि उन्होंने यहसबबातें दामोदरपन्यसे सुनीं और उन्होंने किसी और प्रकारसे सिद्धांत नहीं कराई मैंजानताथा कि वह सपेरोंको बुलाकर पूछेंगेकि किसप्रकारसेसांपोंकाविष निकालाजाताहै और फफोलेवाली मक्खियोंका क्योंकर बर्त्ताव कियाजाता है और उनलोगोंकोभी बुलावेंगे जो इन वस्तुओंके संग्रह करने और पहुंचानेके लिये नियतहुयेथे परन्तु साहबने इन बुद्धिमानोंको अदालतमें नहींबुलाया गवाहीको रूसेमालूमहुवा कि किसी सफेद वस्तुसे इनसबवस्तुओं का अरक निकाल कर मिलाया गयाऔर दामोदरपन्थके वर्णनके अनुकूलउसकाइस प्रकारसे बर्त्ताव कियागया॥

श्रीमान्महाराजा साहबनेनानाकंवलकरसे कहाकिथोड़ी दवाईश्रीमतीकोलाओ सो दोतीन दिनके उपरान्त गजाबाग्री-

शीशी को लेकर जिसको हकीम साहब ने भेजा था गायकवार का भेजा हुआ आया मैंने उसमें से थोड़ी दवा निकालकर और दूसरी एक शीशी में करके सालिम को दी और कह दिया कि करनैल फियर साहब के देने के वास्ते यह जहर है इस मुकद्दमे में यह हाल अजीब है अब मैं कुल गुफ्तगू प्रथम से इस मुआमिले में करता हूं॥

दामोदर पंथ ने वर्णन किया है कि जो शीशी मेरे पास आई थी वह एक उंगली के बराबर लंबी थी और दूसरी शीशी में जो उन्होंने दवा दी वह आधी उंगली के बराबर थी और वह छोटी शीशी अतर की थी हालांकि अतर की शीशी ऐसी होती है कि अतर कम आता है और देखने में बड़ी होती है विचारना चाहिये कि जब दामोदर पंथ ने उसमें दवा डाली होगी तो बहुत थोड़ी दवा आई होगी और वह शीशी सालिम को रावजी के पास पहुंचाने को दे दी और जो कैफियत इसी शीशी की दवा की हुई वह सब को मालूम है॥

बयान है कि हीरे का चूर्ण विष के तौर पर बर्त्ता या गया मैंने बड़ी २ पुस्तकों में देखा परन्तु हमको कहीं से सूचित नहुवा कि हीरा भी एक विष है शायद यहां के लोगों के इसको विष के होने पर निश्चय होगा और बयान है कि हीरे इसी वास्ते लिये गये थे कि करनैल फियर साहब की शराब में कूट २ कर डाले जावें परन्तु जौहरी कहते हैं कि हमने जन्म भर में कुटा हुवा हीरा कभी नहीं देखा और इसी प्रकार दो तीन गवाह और भी वर्णन करते हैं जाहिर है कि ऐसी बहुमूल्य वस्तु ऐसे काम के वास्ते क्यों कूटी जाती सिवाय डाक्टर सेवरिंग साहब की किताब के और कहीं हीरे का विष होना नहीं लिखा उनका यह बयान है कि हिन्दुस्तान वाले कहते हैं कि हीरा खाने से आदमी मर जाता है मेरे विचार से हिन्दुस्तानियों की फक्कालेवाली मक्खियों और सांपों के अरक का यह लेख्याल है मालूम हुवा कि दामोदर पंथ ने कभी किसी को हीरे का चूर्ण नहीं दिया उसके निस्बत दामोदर पंथ का यह बयान है कि यह हीरे नाना जी वतिल के द्वारा मंगाये गये मैंने पुड़िया को नहीं खोला और खोले विना वह कहता है कि मुझसे नाना जी वतिल ने कहा था कि इसमें तीन मासे

विभाऊवा हीराहै और नौमाशेहीरे हैं फिरयह बयानहैकि मैंने यहहीरे यशवन्तराव को देदिये और उससेकह दिया कि करनैलफियरसाहबकी गर्दन में डाल देना परन्तुउसका यहभी बयानहैकि मैंनेउससमय कहदियाथाकि यहबातकुछ अच्छीनहींहै वाहक्या दर्दमन्दीहै कि विषदेना और यहभी कहना कि यहबात अच्छीनहींहै परन्तु इसजगहपर यशवन्त राव और दामोदरपंथकी गवाही प्रतिकूल है जिससेमालूम होताहै कि यशवन्तरावने कोईपुड़िया नहींपाई यशवन्तराव वर्णन करताहै कि मुझकोएक पाकिटमिलीथी और कहाथा कि इसके तीनभाग किये जांय—अब मैं इसविषयमें तक़रीर करताहूं कि गायकवारपर जो संखियेके देनेकादोष लगा है वहबिल्कुलगलतहै मैंकमीशनके साहिबोंसे पूछताहूं कि अगर गायकवारको हीरोंकेकटवानेकी इच्छाहोतीतो इतने मनुष्यों से बार्त्ताकरनेकी क्याजरूरतथी और गायकवारकोउसमनुष्य से कहने की क्या हाजतथी जिसने हीरे मोललिये कि तुम अपनी किताबको मशकूककर दो और ऐसे शककेडालने की कोईजरूरत न थी क्योंकि उससमय गायकवारकेपास छोटे २ हीरेमौजूदथेजोतलवारकीमूठऔरम्यानपरजड़ेजातेथेउनको कटवालेते—जन्मभर वह हीरे मोल लियाकिये और हजारों रुपयेका हीराउनके पासमौजूदहोगा इतनातूलदेनेसे उनको क्याप्रयोजन था और संखियेके मंगानेमें जो इतना तूलजड़वा यहभीबनायाजड़वाहै सैकड़ों झूठमिलाकर एकझूठबातकोसा-बितकरना चाहाहरचन्द यह सबकाररवाई जड़ेपरन्तु कोई गवाहउसकी सिहाकतनहीं करता दामोदरपंथ बड़ाचतुरहै उसनेखूबसोचकर बयानकिया कि ऐसीगुफ्तगू दूसरेमनुष्यके आगेक्योंकरते इससबकाररवाई का बयानकेवलदामोदरपंथ केदूकानदारसेहै जौहरियोंकी निस्बत बयानजड़वाहैकि उनसेहीरे ले लियेगये और उनको बिदाकरदिया यहबात जाहिरनहीं की कि जौहरियों से और गायकवार से कुछ वार्त्ता हुई हो

न जौहरियोंके इजहारसे मालूमहुवा किगायकवारसे और उनसे कुछबातेंहुईंसो किसीभांतिसे साबित नहीं होताकिगायकवारइसलेने देनेमें संयुक्तथे॥

माईलार्ड—दामोदरपंथके इजहारके विषयमें मैंने अपना बयानखत्म किया अब दामोदरपंथ के उस वर्णन के विषयमें गुफ्तगू करताहूं जोवह कहताहै कि कर्नेलफियर साहबके विष दिये जानेके विषयमें मुझसे और गायकवार से वार्त्ता हुई उसका यह बयान बिल्कुल गलत है और किसीतरह से उसकी तसदीक नहीं होती और जब दामोदर पंथ के इस बयानकी तसदीक नहींहुई तो गायकवार साफइन्कार कर सक्तेहैंकि कभीऐसीबातें मुझसेनहींहुईं मेम्बरान् कमीशनका खयालइसबातपर रुजूकरताहूं कि दामोदरपंथ की गवाही प्रथमसे अन्त पर्य्यन्त कैसीहैकि उसको गायकवारकी कुछ भी परवानहींहै परन्तु वहहरप्रकारसे अपनी बरीयतकरताहै और गायकवारपर अपराध साबितकरताहै परन्तु मेरेविचार से उसके इजहार उसी के बयानसे गलत ठहरते हैं हरएक काग़ज़गायकवारकाजब्त करलियागयादामोदरपंथके इजहारसे हीसाबितहोताहैकि कोईकाग़ज़फाड़ा नहींगयाऔर कोईकाग़ज़ इसप्रकारका नहींमिला जिसमेखुद गायकवार माखूज़हों परन्तु ऐसेकाग़ज़निस्संदेहमिलेहैं जिससेदामोदर पंथ आपही माखूज़होसक्ता है क्योंकि वह काग़ज उसी के लिखेहुयेहैं और गायकवार केहाथके नहींहैं जो गायकवार इनबातोंमें संयुक्तहोते तो अवश्यही उनकेहाथका कोईकागज निकलताकिन्तु प्रकटहै किगायकवार इनबातोंकोजानते भीनथे और दामोदरपंथ कीवाकिफकारी बखूबीसाबित हुई किप्रथमसेअन्ततक साफसाबितहैकियहमुकद्दमा गायकवार परखड़ा कियागयाहै आपसाहबों को उचितहै कि इसबात परखूबगौरकरें—जबइस मुकद्दमेके इजहारलिये जाते थे मेरे

विचार झूठहोना उसी समयसे साबितथा जहां २ किस्याही-डली गई है वहां २ दामोदरपंथका जिक्रथा ॥

दामोदरपंथ ने वर्णन किया है कि यह स्याही मैंने अपने हाथसे नहीं डाली किन्तुजो लोगकारकुनहैं उनसे कहदिया था जिसकारकुनका दामोदरपंथ नामलेतेहैं वहइन्कारकरता है इस कारकुनका नामबलवन्तराव है उसने सूटरसाहबके सम्मुखइस बातका इकरार किया था (मिस्टरब्रैन्सन साहबने बलवन्तरावके इजहार सरजन्टबेलनटायनसाहबको दिखाये) सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा कि मुझसे भूलहुई उसने सूटरसाहब के रूबरूभी इकरार नहीं कियाथा किन्तु उसने बिल्कुलइन्कार कियाकिमैनेकभी हिसाबपरस्याही नहींडाली और नमैं जानताहूंकि किसमनुष्यनेकिताबोंकोमशकूककिया ॥

माईलार्ड—मुझको यहभी निश्चयनहींहै कि दामोदरपंथ ने स्याहीडालीहो हरसूरतसे दामोदरपंथ ने किसीसे स्याही डालनेको कहाहोगा और इस प्रयोजनसे कहाहोगाकि जब स्याही डाली जावेगी तो हरशख्स का ध्यान इन्हीं शब्दोंपर जावेगा जो वास्तव में किसी रक़मके बदलनेकी इच्छा होती तो मैने सुना है हिन्दुस्तानी लोगबड़े दस्तकार होतेहैं इस तरहरक़मको बदलाते हैं कि बनावटका संदेहभी नहींहोता सो स्याहीके डालनेकी क्याजरूरतथी परन्तु इसबातपर मैंफिर तक़रीर करताहूंकि अगर दामोदरपंथको इसबातकेछिपाने की इच्छाथीतो किताबें क्योंनजलादीं और जोउसको रक़मों के बदलने का सावकाश नथा तो जलानेके लिये तो वक्तथा वहसबबनावटहै एक निर्बुद्धिमनुष्य भी मालूमकरसक्ता हैकि अदालत के धोकादेनेके लियेयहसबबातेंबनाईगईंहैंदामोदर-पंथकोखयालहोगाकि इसमुकद्दमे कीतहक़ीक़ात ऐसीअदा-लत केरूबरू नहोगीजैसीकी अबहुई यहशख्सबहुतही सूधाहै और अपनेइजहारोंको अपनेहीबयानसे खण्डनकरताहैकिसी भांतिसे उसके इजहार निश्चय माननेके योग्य नहीं हैं ॥

माईलार्ड-दामोदरपंथ पकड़े जानेके पहिले खूब जानता था कि रावजी और नरसुने क्या इजहार दिये हैं और इसबात कोमानताहैकि मैंनेसुनाहैकि करनैलफ्रियर साहबको जोविष दियागया उसमेंहीरे और संखियेका चूर्णथा सोअपनाइजहारखूबघड़सक्ताथा जिसमें हीरे और संखियेका सुख्यकरके वर्णनहोताऔर दामोदरपंथने थीथीकाभी जिक्र सुनाहोगा उसकेलिये भी एकबातबनालो मैंनेदामोदरपंथके इजहारकी सम्पूर्णकैफियत कमीशनके सम्मुख बयानकी मुझकोदृढ़ आशा हैकि कमीशनके मेम्बर नीतिपूर्वक सुकद्दमेका निर्णय करेंगे जितनासुझकोस्मर्णथा मैंनेठीक२वर्णनकिया और निश्चय हैकि साहबऐडवकेट जनरल जोबड़े योग्यऔरबड़े बुद्धिमानहैं अपनी स्पीचमें न्यायकोन छोड़ेंगे क्योंकि वहइस प्रयोजन से यहां नहींआयेहैं किएकनिर्दोष मनुष्यकोसिंहासनसे उतारेंउनसे ज़ियादहऔरकिसीमनुष्यसे मुझेआशानहीं हैकि वहअपनी स्पीचमें इन्साफ जाहिरकरे और निश्चयहैकिवहअपनीइस्पीच में किसीकापक्ष न करेंगे न केवल हिन्दुस्तानी किन्तु यूरुपके वानिसीभी उनकीइस्पीचकेसुन्तजिररहेंगे॥

माईलार्डअबफतहचन्द हेमचन्दकेइजहारोंकेविषयमेंवार्त्ता करताहूं कमीशन कोस्मर्णहोगा किजबयह मनुष्यअदालतमें आयाथा उसकेमुखसेकुछ भयप्रतीत होताथामैंनेअपनीसम्पूर्णआयु मेऐसाडरपोक गवाह नहींदेखाथा इससेप्रथमउसने पुलिसके सम्मुखअपने इजहारदियेथे अब उसने बयान किया कि सूटरसाहबके रूबरू जोमैंने इजहारदिये वहगलतथेऔर यहभी कहाकि मैंनेभय खाकर ऐसे इजहार दियेथेयहमनुष्य बहुतदिनों तकपुलिसकी हिरासतमें रहाजब उस पर बहुत सख़्तीकीगई और वह काबूमेंआगया तबउसकेइजहारलियेगये उसनेवर्णन कियाकि मैंनेएक वरक़फाड़डालाथा और पुलिस केकहनेसे नईरक़में उसपर लिखदीथीं उसनेयह भीकहाकि जबसूटर साहब केपासअपनेइजहार कोतसदीक करनेके वास्ते

जाताथातोपुलिसकेलोगोंने मुजसेकहदियाथाजो तुमदस्तखत नकरोगे तो जन्मबन्धि में रहोगेसोऐसीधमकियोंसे उसने सूटर साहब केरूबरू गलत बयानकिया॥

सरकार कीओर से यहगवाह इस प्रयोजन सेपेश कियागया ताकि साबित करेकि नानाजीवतिलने हीरे मोललिये औरउनका मोल ३०००) रु० दिये यहरुपया बचतकोमदसे दियागया इसरुपये केलिये दामोदरपंथ नेलिखाथा कि यहरुपयाब्रह्मभोजकेलियेदियाथा एकब्राह्मणइसीलियेबुलायागयाथा किदामोदरपंथने यहरकमगलत लिखीहै यहरुपयाब्रह्मभोजके लिये नहीं दियागया किन्तुइस रुपयेके हीरेमोललियेगये औरऐडवकेट जनरल साहबने इसविषय की सत्यता प्रतीत करनेके लिये किहीरे मोललिये गयेशिवचन्द औरखुशहालचन्दको बुलायाथा हेमचन्द फतहचन्द नेजो सूटरसाहबके रूबरू वर्णन कियाथा उसको कमीशन केमेम्बर सुनें मैंपढ़ता हूं दसहरेके दोतीनदिनके अनन्तर नानाजीवतिलने जिनको जवाहरखोने काचार्जहैमुजको औरऔर जौहरियोंके हीरेकी कनी लानेकेलिये आज्ञादी सोहम उसी दिन हीरेकीकनीलेगये औरनानाजीवतिल नेउनको देखकरअपनेपास रख लियादूसरे दिन क़ीमतके जियादहहोनेसे वह सब कनी लौटादीगई दो दिनके उपरान्त नानाजीवतिलने आज्ञा दीकि वहीकनी जोलौटाईगई फिरलेआओ इसलिये उसको मैं फिरलेगया फिरउसको तौलकर और मोलठहरा कररखलीगई उसके दोदिनपीछे नानाजीवतिलनेयह आज्ञादीकिथोड़ी कनी हीरेकी और चाहिये सोमैं उनकेपास लेगया नानाजी जवाहरखानेमें नमिलेपरविनायकरावको जोनानाजीके साझे हैं वहकनी देदी उन्होनेतौलकर उसकामोलठहराया और मुझको अपने साथ दामोदरपंथके पासलेगये दामोदरपंथने कहाकि क़ीमत जियादाहै अगरजरूरतहोगीतो रखलीजायगी इसमरतबे हीरोंकीदोपुड़ियांथी दोतीनदिनके उपरान्त

एकपुड़ियावापिसमिली और रखलीगई उसमसय उसनेकहा था कि एकपुड़िया रखलीगई और एक वापिस मिलीपरन्तु अब कहताहै कि दोनोंपुड़ियां वापिसमिलीं मालूमनहींकि पहिलाबयानठीकहै वा दूसराबयान इसकेसिवाय एकगवाहने वर्णनकियाहैकि करनैलफियरसाहबके विषदेनेसे दोतीनदिन पीछेनानाजीवतिलने मुझसेपूछाकि तुमने इनहीरोंकाबेचना किताबमें लिखाहै मैनेकहाहां उन्होनेकहा कि जोकिताबमें लिखलियाहै तो उनवरक़ों को निकालडालो क्योंकिउन्होंने कहा था कि करनैल फियर साहब के विषदिये जाने में इन हीरोंका वर्त्तावहुआ यहबात सुनकर मुझेबड़ा भयहुआ इस लियेमैने वह वरक़जिनमें हीरोंका बेचना लिखाथा निकाल डाला और उनकी जगहपर नवीनवरक़ लगादिये इनहीरों का मोलजो मिलनेवालाथा उसकी यहसंख्याहै ६२१०)रु० है उनमेंसे ३०००) नानाजीतिलने मुझकोदिये जो१० और२४ रोजनामचेके सफेमेंजमाहैं उसमेंलिखाहैकिशिवचन्दखुशहाल चन्दसेरुपयेपाये परन्तुमैं कमीशनकेसम्मुख यहबात जाहरकर नाचाहताहूं कि यह गवाहबयान करताहै कि कुछ लेनदेन नहींहुआ दोपुड़ियां हीरोंकीगईं थी दोनोंलौटादी गईंपरन्तु मिस्टरसूटरसाहबके रूबरू इसमनुष्यने कहाहै कि जिनवरक़ों में लेने देनेका जिक्रथा वहफड़ाडालेगये और उनकी जगह नयेवरक़ लगादियेगये परन्तु उनके सम्पूर्ण इजहारोंसे मालूमहोता है कि पुलिसने उनपर सख़्तीकरके खूबसिखाया है पुलिसने इस गवाहके साथ ऐसी काररवाई की है किहमने कभीनहीं देखी परन्तु हेमचन्द फतहचन्दने अदालत मेंइजहारदियाकि १०और २४ सफेकाजिक्र जोमेरे इजहारमें है जिसको सूटरसाहबके रूबरूमैनेबयान कियाथाकिवह पुराने सफेहैं नवीन नहींहैं पुलिसनेमेरे इजहार आपहीलिखलिये थेमैं कमीशनके मेम्बरोंका इसबातपर ध्यान दिलाताहूं और प्रार्थना करताहूं किमुनको इसगवाहके इजहारमें हर तरह

की सहायता देंक्योंकि मैंहिन्दुस्तान के मुआमिलों को नहीं जानताहूं इसमनुष्य के इजहारमें जोजाहिरीबातें हैं उनको पेशकरूंगा परन्तु इसबातका तहक़ीक़ात करना कि उसका कितनाबयानठीकहै कमीशनके मेम्बरोंकेतअल्लुकहै मालूमहोताहैकि हेमचन्दनेपूना के जौहरीसे कुछजेवर मोललियाथा उसका मोल लियाजाना नानाजीवतिल कोमालूम हुवा सो उन्होंनेअपने सालेकेलिये वहआभूषणमोललिया उसकामोल दसहजार रुपये थेउसीआभूण कामोल उसको हुण्डियां दी गईं ऐडवकेट साहबने उसकाबहुत कुछ वर्णन कियाहै परन्तु मुख्यहाल उनपरभी ज़ाहिर नहीं हुवानानाजी वतिल और सुनारकीजुबानी विदितहोताहैकियह पुलिसकी बनावटहैमेरे विचारसे जोइजहार मिस्टरसूटर साहबके रूबरू हुये बिल्कुल बनाये हुये हैं परन्तु अब हेमचन्दने अदालत मेंठीक२ बयान कियाकि सटरसाहबने जबरदस्ती मुझसेदस्तखत करालियेथे अदालतमें जोबयान गवाहनेकिया वहसब ठीकहै जबपुलिस वाले किसीमनुष्य कोपकड़कर कैद करतेहैं और हरप्रकारसे उसपर सख़्तीकरके कहतेहैं किजिस प्रकार से हमकहें उसी प्रकार गवाही दोगे तो छुड़ाये जाओगे नहीं तो रिहाई न होगी इसलिये वहमनुष्य लाचार होजाताहै सोइसी वजह से जो गवाही पुलिस में लीगई वह गजानन्द वतिल के भय और बहकानेसे हुई—माईलार्ड मेरीजुबानमेंपुलिसके शिकायत करनेकी सामर्थ्य नहींहै ऐसी काररवाइयां बहुत खराब हैं उचितहै किखूबउसका तदारुककियाजावेपहिले मैनेऐसी बातोंकावर्णन करनाउचितनसमझा परन्तु अब इसमुकद्दमे काहाल मैं खूब जानता हूंमेरे विचारसे आदिसे अन्तपर्य्यन्त यहमुकद्दमा लचरहै और जोझूठीसौगन्द इस मुकद्दमेमें हुई हो उसपर खयाल होना चाहिये प्रथम से अन्ततक जो हेमचन्दकी किताबमें लिखाहैवह महाजनीतौरसे बिल्कुलठीकहै और आश्चर्य्यहै कि पुलिस वालोंको इस बातकाभय न हुवा

कि जोहम वरक़ निकाल डालेंगे तो मालूम हो जावेगा क-मीशन मेम्बरोंको मालूमहुवा होगाकि इसगवाह पर कित-नीसख़्तकी गईहै क्योंकि जबवह अदालतमें आयाथा तो अति भयमानथाकिताबमेंलिखाहैकि ७-या ८-नवम्बरको मोललिये गये तो क्योंकरउस तारीखको हीरेमोललियेजाते और कर-नैल फ्रियर साहब को विषदिया जाता और अधिक अद्भुत हैकि दामोदपंथ और नानाजीवतिल केकागजमेंउसकाजिक्र नहो और केवलजौहरी की किताबके लिखेपर निश्चय किया जाय और उसकेलिये पुलिसका बयान होकि पुराने वरक़नि-काल दिये गये और नवीन लगादिये हेमचन्द कहता हैं कि पुलिसवालोंने जबरदस्ती करके मुजसे लिखवा लियाहेमचन्द अतिप्रतिष्ठित जौहरी है और गजानन्दजो अफ्सर पुलिस है उसकीकाररवाई सबजानतेहैं इससेअधिकमैं और क्या कह सक्ताहूं उचित है कि इस किताब पर भलेप्रकारध्यानकिया जावेकोई महाजनयह बातनकहेगा कि इसबात की तहरीर जोपुलिसमेंहुईहै ठीक है प्रथम से अन्ततक उस इजहार का खण्डन होताहै जोस्टरसाहबके रूबरूउसने वर्णन कियाथा हेमचन्दने अदालतमें साफनिर्भय होकरठीक२कहा इसलिये अदालतके रूबरू जोउसकेइजहार हुयेवहठीकहैं और स्टर साहब के रूबरू जो उसने बयान किया वह अशुद्ध हैं अबमैं नानाजी वतिल के इजहार पर कमीशन के मेम्बरों का ध्यान दिलाताहूं यहमनुष्यहीरोंकेमोललेने के विषयमें जो हेमचन्द से दामोदरपंथने लिये उसका मध्यस्थहै यह मनुष्य तसदीक करताहै कि एक पुड़िया लौटा दी गई और एक रखली गई परन्तु इसमनुष्यकेइजहारोंमें ऐसे प्रश्नहीं किये गये जिससे प्रगटहोताकिउसने अपनेसालेके लियेमोललिये थे—ऐडवकेट-जनरलसाहब ने कईप्रश्न उससेकिये थे परन्तुवहअसत्यवर्णन परदृढ़रहा-किएकपुड़िया लौटादीगई औरएकरक्खीगई ना-

नाजीवतिल कासुहर्र कहताहै कि नानाजीतिवलने मुझसे कहाकि मुझको याददाश्त देदो क्योंकि हीरे लौटा दियेगये इसगवाहने स्लटरसाहबके रूबरूसाफ २ बयान किया कि मैंने याददाश्त इसप्रयोजनसे वापिसदीथी कि फाड़डाली जावे यह बात सुनकरऐडवकेट जनरलसाहबकोआश्चर्य हुआ जिनवरक़ों केलियेगलत होनेका बयानहै औरवरकोंपर छिलनेकानिशान नहींहै हेमचन्दकहता है किपुलिसवालोंके कहनेसे मैंनेवरक़ निकालडाले थे गजानन्दवतिल कुछ हिंदुस्तानीभाषाजानता हैक्योंकिउसने कुछइज़हार हिंदुस्तानीभाषामें दियेऔरकुछ गुजरातीमेंयहबयान उसकाहैकिमैं हिंदुस्तानीभाषा कोनहीं जानताबिल्कुल गलतहै मेरेबिचार से इसगवाह की गवाही कुछ भीबिश्वास केयोग्य नहींहै करनैलफियरसाहब केइज़हार मेंदोतीनजगह चुकहैबड़े आश्चर्यकी बातहैकिऐसा ओहदे-दारअसत्यकहेऔरफिर उसकोदुरुस्त करेमेरेइसकहनेसे यह प्रयोजननहींहै किकरनैलफियरसाहब कीप्रतिष्ठा में धब्बालगे परंतु शायदवह घबरा गयेहोंगे सो इसी प्रकारमैं विचारता हूं कि औरगवाहों के इज़हार में भी ऐसाही समझा जावे शायद उन्होंने वह इज़हारदियाजो उनको बयान करने की इच्छानथी नानाजीवतिल कहताहै कि मैं नहीं जानता कि हीरेकाचूर्ण किसकोकहतेहैं न मैं नेसुना औरनमैंनेदामोदर पंथको दिया उसकायहबयानहै किदोपुड़ियां हीरे केचूर्णकी मैंने दामोदरपंथको दीं यहगलत है उसनेकेवल हीरों कीदो पुड़ियांदीथींइन पुड़ियों में कुछहीरे औरकुछ हीरे की कनी थी औरवहकहताहै किमहाराजा साहबके पास हीरे औरउसकी बहुत कनीथी इससे प्रतीति होताहै कि यदि महा-राजा साहब के पास बहुतसेहीरे थे तो उनको मोललेने की क्या जरूरतथी न संखिया मोललेने की तसदीक हुई और न हीरेके चूर्ण का किसी ने बयान किया जब यह दोनों बातें

साबित नहींहुई फिर और क्याबात बाकीरहगई नूरुद्दीन को विषके बेचनेसे इन्कारहै और हेमचन्द्रको हीरोंकी कनीसेपस झूठका खेमा जो खड़ाकिया गयाथा वह गिरपड़ा अब केवल दामोदरपंथकीगवाहीशेषरहीसोउसकीगवाहीकोदूसराकोई गवाह तसदीक नहीं करता आश्चर्य्य नहीं कि प्रथमसे अन्त तकउसका बयानगलतहो अथवा उसनेआपही विषदेनाचाहाहो मेरे विचारसे यह मनुष्य कदाचित् बरीनहीं होसक्ता वह भयमान असत्यवादी और दुष्ट प्रतीत होताथाजितनीकि वहदुष्टताकरे कुछ आश्चर्य्य नहींहै यहशख्स चालाकआदमी है उसने आपही करनैलफियरसाहबको विषदेनाचाहाहोगा इसमनुष्यका आवागमन करनैलफियर साहबके पासनथावह अपनेखामीका रुपया बहुत लूटताथा और किताबोंमें जाल बनाताथा इसलिये उसको बड़ाभयहुवा कि जोकरनैलफियर साहब मेरीकिताबों को देखेंगे तो बड़ाछल साबितहोगापस उसने करनैलफियर साहबको विष देनाचाहा और सालिम और यशवन्तरावको मुकर्ररकिया कि उनके हाथसे विषदिलवाये मैंनीतिकी रीतिसे चाहताहूं कि इसदुष्टको दण्डदियाजावे जिसने एकरईसको खराबी में डालाहै यहबेचारा रईस आप मेम्बरोंपर भरोसा रखताहै कि गवाहीपर खूबगौरकरके उसको निर्दोष समझें—इस के उपरान्त कमीशन के मेम्बरोंने कमीशनके बरखास्त किया और टिफनखानेकेवास्ते गये॥

जबटिफन खाकर वापिस आयेतो सरजन्ह बेलनटायन साहबनेफिर स्पीचप्रारम्भकी—दामोदरपंथके इजहारोंके विषयमें मैंकहचुका हूं किइसी मनुष्यकेबयान पर मुकद्दमेका मूल है परन्तु अद्भुत यह बातहै कि उसकेइजहार अन्तमेंलिये गये अबरावजी और नरसू की गवाहीका वर्णन करता हूं परन्तु रावजीके इजहारमें अभीकुछ वार्त्तानहीं करताहूं पूर्व्वमें मैंने कहाहै किदामोदरपंथने रावजीकेपासशीशी भिजवादीथीवह

अतरकी शीशीथी और कोईपतलीवस्तु उसमेंभरी हुईथीयह जाहिरनहींहुवा किजबशीशीरावजीके पासपहुंचीतो रावजी नेउसशीशी कोबदलकर दूसरीशीशीमें दवाडालदी परन्तु जो शीशीदामोदरपंथ केपासगईथी वहकेवलआधी उंगली केबराबरथी और रावजी के पास पहुंच कर वह बहुतबढ़ गई मेरे विचारसे यहयदयह बातठीकहो क्योंकि बहुत दिक्कतके पीछे यहबातमुजको दरियाफ्तहुई दूसरीकिसी शीशीका जिक्रसिवायइस छोटीशीशीके नहुवा कमीशन के मेम्बरों को भी स्मरण होगाकिमैनेअभीइसबातका कुछजिक्र नहीं कियाकिकरनैलफियरसाहबकेनौकरोंनेवास्तवमें करनैलफियरसाहबको विषदेनाचाहाथा यानहीं दामोदरपंथ के दूजहारों के विषयमें मैं खूबतकरीर करचुकाहूं और अब अदालतपर सुनहसिरकरताहूंकि जोकुछ कमीशनके मेम्बरों की रायहो-परन्तु रावजी कीशीशीको गुफ्तगूकरनी उचितसमझताहूं-बयानहैकिरावजीको ९ नवम्बरसे पन्द्रहदिन पहिलेयह शीशीमिलीथी परंतु जबउसकेपास पहुंचीतोवहबहुतबढ़ गईरावजीका बयानहैकि वहशीशी इसप्रयोजनसे दीगईथी कि करनैलफियर साहब के स्नानकेजलमेंडालदीजावे परन्तु वहकहताहै किमुजकोयह मालूमनथा किउसमेंविषहै वाकोई और वस्तुहै दामोदरपंथ के दूजहारसे मालूमहुवाकिउसमेंकौन२वस्तुथीं रावजीकेदूजहार सेपायाजाताहै किउसनेअपने नेफेमेंशीशी कोरक्खाजिस्सेउसके पेटपरफोड़ाहोगयाउसीसमयउसकोमालूम हुआ किजोफियर साहबकेस्नानकेजलमेंयह दवाडाली जावेगीतोउनकोबड़ाकष्ट होगायद्यपि यहशीशी करनैलफियर साहबके कष्टपहुंचाने के लियेथीपरन्तु रावजी भयमानहुआ और उसनेदवाको फेंककर शीशीकोरखछोड़ा ताकिउसमेंसंखिया घोलकरगिलासमेंडाले सोबयानहै किरावजीने दामोदरपंथकी प्रेरणाके अनुकूलइसी शीशीमेंसंखिया घोलकरडाला परन्तु मेरे विचारमें यहबातन

हींआतीकि जबवहशीशीअतरकीथीतो क्योंकरउसमेंसंखिया कोडालकर घोलाहोगा सिवा इस शीशीके और किसी शीशी का बयाननहींहै शायदयह बातरावजी भूलगयाकिजोमैंऐसा कहूंगातो लोगएतिराजकरेंगे मैनेइस शहादतपर खबध्यान कियासुजकोकिसी जगहपर दूसरीशीशीका जिक्रनहीं पाया जाताऔर असम्भवित मालूमहोताहै किऐसीछोटी अतरकी शीशीमें संखियाशर्बतमें मिलानेके लियेघोला गयाहो ऐसे २ गवाहोंकेबयानपर एकमुकद्दमा गायकवारपर जुर्म साबित करनेके लियेखड़ा कियागया है इसमेंमेरे कहनेपर कुछमौकूफनहीं मुकद्दमेमें बनावटकाहोना बिल्कुलसाबित होताहै यद्यपियह मुकद्दमागढ़ागया परन्तु यह खयालनहुआ किवह लोगजिनकी गवाहीलीजायगी किसप्रकाकेहैं सोझूठेगवाहों काक्रमटूटगया इनझूठे गवाहोंकी गवाहीएक दूसरेकेप्रतिकूलहै मैंअपने दोस्तऐडवकेट जनरलसे पूछताहूं किक्यावहदो शीशीथींजो दोथीं तोअतरकी शीशीक्याहुई॥

रावजीने वर्णनकियाहैकिदामोदरपंथके पाससे उसकोशीशीपहुंचीथी अबमैं कमीशन के मेम्बरों को इसबात पर ध्यान कराताहूंकिउनके बिचारमेंरावजी की गवाही कैसीहै जब यहशीशीअरकसमेत रावजीको करनैलफियर साहब के मारडालनेके लियेदीगई तोनिश्चय होसक्ताहै किजब उसीशीशीसे उसको कष्टपहुंचा तो उसनेशीशी कीदवाको फेंकदिया जो यहबात रावजी को निश्चय मानो जावे तो यह संदेह उपजताहै कि उसकोइच्छा करनैल फियर साहबके मारडालने कीथीमेरे बिचारसे यहसम्भव है कि दामोदरपंथ ने करनैल फियर साहब के मारने का इरादा किया हो और करनैल फियरसाहबके नौकरोंने न कियाहो मैं इस बातकी तसदीक नहीं कर सक्ता क्योंकि मुझको इस बातसे कुछ प्रयोजन नहीं है रावजी ऐसा दुष्ट नहीं है जैसा कि वह अपनेतईं जाहिर

करनाचाहताहै यहीदशानरसूकी है क्योंकि प्रकटहै किजब शीशीकेकारण रावजीको कष्टहुवा तो उसने शीशीकी दवाको फेंकदिया उचितथा कि सरकारकी ओरसे इनसब बातोंकी तसदीक़ कीजाती यहभी जाहिर किया गयाहै कि रावजीको उनदिनोंमें शीशी दीगईथी जबकरनैलफियर साहबके फोड़ा था—अर्थात् संखियेके देनेसे महीना डेढ़महीना पहिलेदीगई थी—रावजीने वर्णनकियाहै कि जबशीशीमिली नरसूउपस्थित था और नरसूने अपनेइज़हारमें बयानकिया है कि नवम्बरके आदिमें शीशीआईथी अर्थात् उनदिनोंमें जबकि अन्तकीबेर महाराजा साहबसे वार्त्ता हुईथी परन्तु यहबात गौर करने के योग्यहै कि रावजीने मिस्टरस्कटरसाहबके रूबरू अपनेबयानमें शीशी का कुछभी वर्णन न किया दामोदरपंथ ने दूबितदा में शीशीकाजिक्र कियाथा मेरेविचारसे जोकुछउसनेवर्णनकिया वहठीकहै और जोसहीहै तो कमीशनके मेम्बर उसपर खूब गौरकरेंगे रावजीने अपनेइज़हारमें बयानकियाहैकि मुझ-को हिदायत होगईथी कि संखिया शीशीमेंडालकर जलमिला याजाय और उसेअच्छीतरह हिलाकर शर्बतमें डालाजाय प-रन्तु वहइसबातका जिक्रनहींकरता कि यहशीशी दामोदर पंथके पाससे मुझकोपहुंचीथी और दामोदरपंथ अपनेइज़हार में कहताहै कि यहशीशीमैंने महाराजासाहबके पाससे पाई और मैंनेअन्तकी शीशीमें उसदवाको करकेरावजीकेपास भेज दिया और अद्भुतयहहैकि रावजीने प्रथम उसशीशीकाजिक्र अपनेइजहारमें नहींकियाथा दामोदरपंथ शीशीकोसूरतकुछ और बतलाताहै और रावजी और कुछकहताहै इसशीशी के बारेमेंबराबरअन्तरहै दामोदरपंथ जोबयानकरता है कि इस शीशीमें अमुक २ वस्तुका अरकथा इसका भी मुझको निश्चय नहीं है और यहभी बिश्वास नहीं आता कि थोड़ीसी संखि-या जो पानी में घुली हुई हो और वह शरीर में छूजाय तो

किसतरह फोड़ा होसक्ता है इस विषयमें मेरे मित्र ऐडवकेट जनरलने डाक्टरग्रेसाहब की गवाहीली और रावजीका फोड़ा उनकोदिखाया मुझेहंसीआतीहै किऐडवकेट जनरलकि सतरह चाहतेहैं कि यहबात साबितहोजावे डाक्टर ग्रे साहब ने फोड़ेकेचिन्ह कोदेखकर वर्णनकिया किहांतीन निशानपेटपर हैंपरन्तु जो गवाहीशीशी और उसकीदवाके निकलनेके बारे मेंहुईजिससे किपेटपर फोडाहोगया इनसबमें अन्तरहैडाक्टर ग्रेसाहबका नामसर्वदा इसबातमें विख्यात होगाकि उन्होंने हिंदूकेफोडेके निशानकोजोउसकी पेटपरथादेखामैंपहिले कह चुकाहूं किकेवलएक गवाहऐसाहै जिसकी गवाही निश्चय माननेके योग्यहै जहांतक इसशीशी और मक्खियों का जिक्र हैव्यर्थहै अगरयह मुकद्दमाआम तोरेकाहोतातोलोग इसको ठट्ठे और हंसीमेंउड़ा डालते और इतना तूल न करते परन्तु जबकि ऐसी गवाही परएक रईसको सिंहासनसे उतारेजाने कासंदेहहैतो इसबातपर खूबगौर करना चाहिये ऐसे लोगों की गवाही की तहकीकात ऐसे अफ्सरोंके रूबरूहोनीचाहियेथी जोनीतिमानथे नउनकेरूबरू जोचाहते थे किजिसतरहहोसके एकरईस को दुःखपहुंचे मैंशीशी के जिक्रको सलाम करकेपूर्ण करताहूं जो बिल्कुल लचर है ऐसाकभी किसीतवारीखमें लिखानहीं देखा गयाअब मैं रावजी की एक और काररवाईका जिक्रकरताहूं अर्थात् विषकीपुड़ियों काहाल कहताहूं यदिमैंकिसी जगहपर चूकजाऊं तो मेरेदोस्तऐडवकेटजनरल और कमीशनके मेम्बरमुझको बतादें ॥

बयानहै कियहविष की पुड़ियां रावजीके पास आईंहालां किउसकी कुछअसलियत नहीं है खयालहै किदामोदरपंथ ने यह पुड़ियां सालिम और यशवन्तराव को दीथीं और फिर बयानहुवाहै किछःसातआदमियोंके सामनेदीगईं उनलोगों कीगवाहीभी लीगईपरन्तु वहबयान बिल्कुलझूठाहै इससुक-

हमेमें अच्छीवार्ता करनेकेलिये उचितहैकि रावजी का इजहारपढ़ाजावे वहयहहै किप्रथमउसने मिस्टरसाहबके सम्मुख वर्णनकिया किसालिम और यशवन्तराव ने मुझसे कहा कि कि जो तुम महाराजा साहब के पास चलोगे और जो कुछ वहकहेंगे उसकोतुम करोगेतो तुमकोइतना रुपयादिया जावेगा कि तुमकोनौकरीकी आवश्यकता नरहेगी और जन्मभर अपनेपरिवार समेतघर बैठेखाओगे किन्तुतुम चाहोगेतोतुम्हें नौकरीभी मिलेगी और वहकार्य अच्छीतरह अंजाम दोगेतो एकलक्ष रुपयातुम्हें मिलेगा—करनैलफियर साहबका मारडालनामानो उसकार्यका सिद्धकरनाथा जबहम इसबातकेकरने परराजीहुयेतो महाराजासाहबनेहमसेकहाकितुमकोसालिम और यशवन्तके द्वारापुड़ियां मिलेंगीदो तीनदिनके उपरान्त जमादारनेदो पुड़ियां मुझकोदीं और कहाकि तीन दिनतक बराबरइन पुड़ियोंको बर्त्तायाजाय और इस बातको सालिम और यशवन्तरावने महाराजासाहबके रूबरूभी हमकोसमझा दियाथा कि क्योंकर पुड़ियोंका बर्त्तावहोगा दोतीनदिनतक मैंने पुड़ियोंकी दवाको नहीबर्त्तायाक्योंकि मुझको मौका न मिलाहम लोगोंने जबमहाराजासे बार्त्ताकीथी तोउसमें यह बात ठहरीथी कि करनैल फियर साहबको शर्बतमें विषदियाजायक्योंकि करनैलफियर साहबजब हवाखाकर आतेहैं तो शर्बत पीतेहैं—(कमीशनके मेम्बरोंको इसबातपर ध्यान धरना चाहिये) इसलिये दोतीनबेर पुड़ियोंको जबमौक़ापायाशर्बतमें डालदिया यहशख़्स और जगहपर अपनेइज़हारमें कहताहै कि सालिम और यशवन्तरावके कहने से इन पुड़ियोंकी कई छोटी २ पुड़ियांबनाईं और अपनीपेटीकी जेबमें रखलीं यह पूर्व्वोक्त इज़हारउसने मिस्टरसूटर साहबके रूबरूदिये और अदालतके सामनेबयान कियाकि जोदो पुड़ियां मुझकोमिली थींउनका सुखतलिफ रंगथा मैं समझा कि जो पुड़ियां श्वेत रंगकीहैंवहअधिक कष्टदायकहैं उससफेद पुड़ियामेंसेथोड़ी २

दवालेकर उसश्वेत पुड़ियामेंमिलाईऔर शेष उसश्वेतपुड़िया कोअपने पासरहने दियावही दवामेरी पेटीकी जेबमें है॥

अब विचारनाचाहियेकि इनदोनों वाक्योंमें कौनसा वाक्य ठीकहै क्योंकि इनदोनों वाक्योंमें बड़ाअन्तर है किसीतरहसे उसकेदोनों बयानसचनहींहैं वहकहताहैकि मुझकोशंकाहुई कि सफेददवा भूरीदवासे अधिककष्टदायक है यहबात पूछने के योग्यहै कि उसकोकिसकारण यहसंदेहहुवा क्योंकिवह कहताहैकि जबमुझको यह पुड़ियांमिलीं थीं तबमुझको कुछ मालूम नथा कि उनमें क्यावस्तुहै दामोदरपन्थके इजहारसे मालूमहुवाकि यहदोपुड़ियां अन्य २ रंगकेदवाकी नथींकिन्तु पुड़ियोंको दवामिला कर उसको दीगईथी रावजीको केवल इतनाकामबाक़ी था किउसको तीन जगहकरके तीनदिनतक शर्बतमेंमिलायाकरेमालूमनहींकि यहदोपुड़ियांक्योंपेटीमेंरह गईं और यहदवा एकप्रकारकी नहोगी कईप्रकारकीहोगी रावजीने वर्णनकियाहैकिमैंने सफेद दवाकोअलगरक्खा और उसश्वेतपुड़ियामें से थोड़ी २ दवामिलादीथी परन्तु मैं कहताहूंकि जब यहदवायें मिलीहुईंथीं तोउनकोफिर मिलानेकी क्याजरूरतथी और फिरएकसफेदपुड़िया क्योंकरबचरही क्या सुखतलिफ बयान उसका मानने के योग्यहै इसकेसिवा जिसतरह उससे कहा गयाथा उसनेक्योंनहीं सबपुड़ियोंको शर्बतमेंडालदीं और एकसफेद पुड़ियाके रखछोड़नेकी क्या जरूरतथी जिसतरह कि बयानहुवा है कि होरेकाचूर्ण और जहर दोनोंमारडालने वालेहैं तो फिरक्यों एक पुड़ियामें से थोड़ीसी वस्तुडाली और थोड़ीरहनेदीजबकरनैलफियरसाहब के विषदेने केलिये रावजीको नियतकिया गया और उसको पुड़ियांदीगईं तो यहउचितथा कि जो दवाजियादह मारने वालीथी उसको जियादहडालता और जोकमथी उसकोकम डालता यदिमिस्टरसूटरसाहब और इसमनुष्यका बयानठीक है तो पेटीमें दोपुड़ियां निकलतीं और इनपुड़ियों में केवल

संखिया न होतो किन्तु होरे काचूर्णभी होता ऐसे इजहार पर ध्यान करने से बिल्कुल अन्तरपाया जाताहै कोई मनुष्य नहींकहसक्ता कि कौन बयानठीक और कौन गलतहै आप साहिबोंकोस्मर्ण होगा जोबयानजुवाहैकि जबगजानन्दनेदामोदरपन्थकेदफ्तरमें कुछकागज मशकूक देखेतो शीघ्रही सूटर साहबकोबुलायाऔर जबअकबरअलीनेरावजीकीपेटीसेपुड़िया निकालीतबभी सूटरसाहब बुलायेगये अजीबबातयहहै किजब कोईबात पूछीजातीथी तोमिस्टरसूटर साहब बुलाये जातेथे उनकेसाम्हने कभीकोई नईबातनहींपूछी गईरावजी इसपुड़िया को रखकर बिल्कुलभूलगयाथा परन्तु अकबरअली तोबड़ा चतुरहै उसनेपूछा कि जिस तरह शीशीसे देवा निकाल कर पेटपर निशानपड गयाउसी प्रकारपुड़ियाका निशानपेटीमें नपड़गयाहोइसीहेतु उसनेरावजीसे पूछाकि तुमपुड़ियाकहां रक्खाकरतेथे रावजी बेचारह भूलगया और उसेस्मर्णनरहा उसनेकहा कि मैंपेटीमें रक्खा करताथा सोपेटी मंगाई गई जिसतरह रावजी पेटीमें पुड़िया रखकर भूलगया इसीतरह जोहरएककातिल हिन्साके शस्त्रको रखकर भूलजायाकरेतो क्या अच्छीबातहै परन्तु इसबयानसे पहिलेकुछ और वर्णनहो चुकाहै कि जबकरनैल फियरसाहबने यहबातपूछी किहमको विषदियागया तो सालिम उसी समयघोड़ेपर सवार होकर भागाजुवा आया और रावजीसे कहा कि जो कोई पुड़िया शेषहोतो फेंकदेना॥

कल्पनाकीजिये यदिरावजी पेटीमें पुड़ियाको रखकरभूल गया था तो सालिमके कहनेसे अवश्य याद आजाता परन्तु रावजीका ऐसा क्याहाल होगयाथा कि उससमयभी उसको स्मर्ण न आयाअकबरअलीने मिस्टरसूटर साहबसे कहा किजो पेटीकी तलाशी लीजायतो जरूरकोई पुड़िया निकलेगीमिस्टरसूटरसाहबको अकबरअलीका इतनानिश्चयथा किउन्होंने आज्ञादी कि तुमजाकर पेटीलेआओ आपनहीं गये हालांकि

उनकोआपही जाना उचितथा वास्तवमें अकबरअलीने सूटर साहबको बड़तअच्छीरायदी उचितहैकियहपेटी अजायबखाने मेंरक्खीजावे और अकबरअली चिड़ियाखाने में बन्दकियेजांय ताकिइसपटी और अकबरअलीको सहस्रोंमनुष्यदेखें जबअकबरअलीने पेटीकोटटोलातो तुरन्तही मालूमहुवा कि जेबमें एकपुड़ियाहैइसलिये मिस्टरसूटरसाहबबुलायेगये मुझकोबड़ा आश्चर्यहोताहैकि मिस्टरसूटरसाहबने किसीप्रकारका विचार नकिया और इससुआमिलेको ऐसेमनुष्यको सौंपाजिसको वहजानते थे कि बड़ा चालाक है और जहांतक होसकेगा लोगोंकेफंसानेमेंकोशिशकरेगाअकबरअलीनेवर्णनकियाहैकि ईश्वरकी कुदरतसे यहपुड़ियापेटीमें मिलगई परन्तुयह ईश्वर की कुदरत अकबरअलीके हाथोंसे प्रकटहुई जिसतरह मैंने जाहिरकिया है कि दामोदरपन्थका इजहार संखिया और होरेकेचूर्णके विषयमें गलतहै उसीतरह रावजीका इजहार भी पुड़ियाकेनिकलनेमें झूठहै मैंपहिलेकह चुकाहूंकि थीथी का निक्रजबतककि दामोदरपन्थसे रावजीने नहींसुनाजाहिर नहीं किया॥

पुड़ियोंके इस्तैमाल करनेके बारेमें एकपुड़िया का बर्त्ताव एकप्रकारसेवर्णनकरताहै और और पुड़ियोंका बर्त्ताबदूसरी रीतिसेकहताहै और अन्तकोबेर एकपुड़िया केवलसंखियेकी पेटीसेनिकलना मशहूरहै यह इसभांति के बयानहैं कि जिस मनुष्य को थोड़ीभी बुद्धिहै उसको कदाचित् निश्चय नहोगा सिवाइसके जबउसबयानमें अकबरअलीसा मनुष्यसंयुक्तहोतो सिवाझूठ और गलतकारर्वाईके और कोईबात नहींसमझी जाती मैंकमीशन और संसारभरके साम्हने अकबरअली पर यहअपराध कायमकरताहूंकि उसने यहपुड़ियापेटीमेंरक्खी और पुड़ियारखनेकेउपरान्त मिस्टरसूटरसाहबकोजोप्रतिष्ठित अफ्सरहैं बुलायाताकिवहपुड़ियाके निकलनेकीपेटीसेसिद्धकतकरें रावजीकी गवाहीप्रथमसेअन्ततकबिल्कुलबनावटहै॥

कुछसंदेह नहींकि पेडरू एकप्रतिष्ठित गवाह है उसकी प्रतिष्ठामें कोईधब्बा नहींलगा परन्तु यहमनुष्य जातिकापुर्त्त-गीजहै और किसीहिन्दूने उससे साक्षिग्रनकी होगीऔर इस पुर्त्तगीजी गवाहने पुलिसकी कारर्वाईके पहिले गवाहीदी यदिपुलिसको अवसरमिलतोतो इसमनुष्य सेभीअपनीइच्छाके अनुकूल गवाही दिलाते मिस्टर ऐडगन्टन साहबने पेडरूकी गवाहीलीथीयहसाहब अतिप्रतिष्ठित औरविख्यात नीतिमान हैंपेडरू काबयानहै किमैने केवल एकबेर रुपया पाया और सौगन्दखाकर कहताहै किरावजीकेइजहार गलतहैंअबकमी-शन कोअखतियार हैकिपेडरूकोमाखूज करेवाछोड़दे परन्तु किसीप्रकार सेनिश्चय नहींकि २५ वर्षका नौकरकिसी हेतुके विना अपनेखामी केमारने काउद्योगकरे इसकेविशेषऔरभी बहुतसी गलतियां रावजीके इजहार में साबित करसक्ता हूं रावजीने वर्णनकियाहै किगायकवारने पेडरूसे वहीबातेंकीं जोसुनसे कीथीं उसनेअपने इजहारमें बयानकिया कि गोवा नगरसे आकरदोतीनदिनपीछेपेडरू गायकवारके निकटगया था इसलिये विदितहोताहै किई-वा-७ नवम्बर कोगयाहोगा अर्थात् जबकि रावजी औरनरसू का बयान हैकि हमगये थे इसकेउपरान्त कमीशनकेमेम्बरोंने अदालतकोबरखास्तकिया॥

अठारवें दिनका इजलास॥

दूसरेदिन फिरकमीशनके मेम्बर अदालतमेंएकत्रहुयेऔर सरजन्टवेलन टायनसाहब ने फिरइसीत्र प्रारम्भकी उन्होंने वर्णनकिया कि कमीशनके मेम्बरोंका खयाल इसबातपर रुजू करताहूं किरावजीऔर नरसूकीगवाहीकरनैल फियर साहब के सामने किसप्रकारसे लीगई मैंनहीं चाहता कि कमीशन केमेम्बरों कावक्त वृथाखोऊं केवलइतनी वार्त्ताकरनी चाहता हूं जोउचितहै और जिससे अपराध काखण्डनहो और इसके विशेष जिसकामकेलियेमैं यहांआयाहूं औरमुझको मेहनता-

ना मिलाहै उसको मनसेदेना चाहताहूं रजीडन्सीमें बहुतसे ऐसेनौकर हैं जिनकी प्रतिष्ठित पदवीहैं प्रथम में रेजीडन्सीके नौकरोंने एकनिर्दोष मनुष्य कानाम लियाकिसी तरहसेउसकीनिर्दोषता पर भय और लज्जान हुई ऐसे लोगोंका हाल लिहाजकरनेकेयोग्यहै किपहिलेआपही मारडालनेपरतय्यार होंऔर फिरएक निर्दोष मनुष्यपर अपराध लगावें और अब महाराजासाहबपर अपराध धरतेहैं इससम्पूर्ण गवाहीमेंऐसी दुर्गन्धआतीहै किसुजकोमहाग्लानि होतीहै और सबबनावट मालूमहोतीहै इनसबगवाहोंने सम्मत करकेकिस प्रकारसेफौज पर बहुतान बांधाथा अबसुजको रावजीकी बाकी गवाही पर बार्त्ताकरनीहै शीघ्रीऔर पेटीकेविषयमें मैंवर्णन करचुकाअब छोटी२ बातोंके केलियें कुछबार्त्ता करनी बाक़ी है॥

अबमैंपुलिसकी कारर्वाई परवार्त्ताकरूंगा मालूमहोताहै कि पुलिसनेरावजीकेनिरबतभी और गवाहोंके सहायकारर्वाई की यहमनुष्य २२-तारीखकोपकड़ागया और उसीदिन की संध्याकोउसने कबूलकियाकि मैंने करनैलफियरसाहबको विष दियामालूमहोताहै कि उससेमुआफी कावाइदाकिया गया अर्थात्यहकि जो वहजुर्म्मसे इकबालकरेगा तो उसकाअपराधक्षमाहोजावेग परन्तु उसनेयह सबबातें अकबरअली की कुछगुफ्तगूके पीछे कबूलकीं और कबूलकरनेके उपरान्त उसको सरल्यूइसपीलीसाहब और सूटर साहबके निकट लेगये रावजीने उससमय कबूलकियाजब अकबरअली और पुलिसके लोगोंने उसको भय दिलाया था क्योंकि अकबरअली अब्दुल् अली और गजानन्दने सम्पूर्ण कारर्वाई तहक़ीक़ातके करते कीथी इनलोगोंके विषयमेंमुझकोलाचारीसे बयानकरनापड़ताहै मिस्टरसूटरसाहब को मैं बरीकरता हूं परन्तु यहसाहब गजानन्दकि प्रकृतिको जानतेथे और जानतेथे कि गजानन्द एकबेर बदनामहोचुकाहै और भलीभांतिजानतेथेकि जोइस मुकद्दमेकी तहक़ीक़ात ऐसेलोगों को सौंपीजावेगी तो वह

बहुतसख्तीकरेंगेक्योंकिउनकोकिसीकीपरवानहीहै वहजानते थे कि गजानन्दकैसा आदमीहै और उसपर क्या २ अपराध लगाहैयहउचितथा कि पहिले सूटरसाहबगवाहोंकीगवाही लेते फिरउसको पुलिसकेसुपुर्दकरते क्योंकिजबपुलिसनेपहिले से उनको भय दिलायातो जोचाहा उनसे इकरारकरालिया गोशो और पेटीका किस्सातो मैं कहाचुका हूं जो कमीशन केमेम्बर ऐसीमेरीबड़ी तकरीरसे क़ायलनहींहैंतो मालुमनहीं कि और किसबात्तों से क़ायल होंगे रावजी २२ नवम्बर को पकड़ागया और २३,२४,२५,नवम्बरको तीनबेर उसके इज़हारलियेगये इसकेउपरान्त सरल्यू इसपीलीसाहबके सम्मुख इसवाइदेसेलेगयेकि तुम्हाराअपराधक्षमाहोजावेगा—ढिठाई क्षमाहो—यहअजीबबात है कि दामोदरपंथ इसमुकद्दमे का मूल और रावजी उनका कारकुन ठहरा दिया गया है उन लोगोंका अपराधतो क्षमाहो परन्तु नरसूजिसकाथोड़ा सा अपराध है उसका अपराध क्षमान हुवा मेरे विचार से नरसूका अपराध क्षमाहोना चाहियेथा नहूनदोनोंका क्योंकि नरसूकुवेंमेंभी गिरपड़ा और कहताहैकिमैं दुर्भाग्यतासेखूनियों कासाथी हुवाहूं मेरेविचारसे नरसूने मारनेकाउद्योग नहीं कियाऔर उसकेहकमें इन्साफनहीं हुवासुझको आशाहै कि यहमनुष्य उसदण्डसे बरीकिया जावेगा जिस सज़ाका उसके निस्बत सुआफनहोनेकी वजहसे गुमानहै ॥

अगस्तसन् १८७३ ई० मेंपहिले रावजीकी महाराजा साहबसे मुलाकात हुईथी बयानहै कियह मुलाक़ात सालिमके कहनेसेहुईथी उसदफे कुछविषका वर्णननहुवाकेवलइतनाहीं बयानहै कि सालिम चाहताथा कि रेजीडन्सीके कुछ नौकर वश्यमेंहोजावें और वहांको खबरें दियाकरेंमालूमहोताहै कि जबपूर्व्वमें कमीशन बैठीथी तो रावजीने सालिमसे कुछ खबरों की इत्तिलाकीथी फिरसालिमने अपनाविवाह कियाऔररुपयों कोमांगासोकुछ रुपयाउसको दियागया परन्तु यहप्रगटनहीं

हुवाकिसिवायखबरोंके और किसी बातकोभी उससेदरखास्तकी गईरुपयेकी सिदाक़तके वास्तेसुनार पेशहुवा थोड़ा २ रुपया आयाआदि कोभी दियागया अजीबबातहै कि जबनरसू और रावजीको रुपया लेनेका मौका मिलाथा उन्होंने रुपया नहीं लिया जब कार्य्यकरचुके अर्थात् विषदेदिया तोफिरक्योंउन्होंने रुपयेकी दरखास्त नहींकी यहगिरिफ़ बड़तबड़ीहै यहभी इन लोगोंकी दुष्टता और झूठका कारणहै—गोश्ो और संखिया और होरेके चूर्णके विषयमें वर्णनकियाहै कि दियागया परन्तु अजीब बातहै कि इन लोगोंने उसमेंसे कुछबाक़ी नरक्खा इस मुक़द्दमेमें जितना कि महाराजा साहबका सम्बन्धहै बिल्कुल ग़लतमालूम होताहै बयानहै कि यशवन्तरावने पांचसौरुपये रावजीकोदियेथे और वह रुपयाजुग्गा लायाथा उसकीगवही ऐडवकेटजनरलसाहबने पेशकी परन्तु जुग्गाकीगवाहीमें अन्तर है इसलिये वह विश्वासके योग्यनहींहै एक और मनुष्य कार भाई नामक के विषय में नरसू ने वर्णन कियाहै कि वह भी उनकेसाथ एकबेर गायकवार के महलको गयाथा जूदनवीस के लेखसे मालूम होताहै कि कारभाईमई—जून वा जूलाईमें उनकेसाथ गयाथा परन्तु अक्टूबर नवम्बरमें जानासाबितनहीं होता यहगवाह इसलिये पेशकियागयाकि विषदिये जानेकी गवाहीकी सिदाकतहो दोशख्स नरसू और रावजी की तमदीक़ गवाहीके लियेपेशकीगई परन्तु उनदोनोंके बयानमेंभी अन्तरहै कोईगवाही साफ़ २ पेशनहींहुई जिससे रावजी और नरसूके बयानकी सिदाक़तहो केवलइतनाही साबित होताहै कि वह गायकवारके महलोंमेंगये और पांचसौ रुपयारावजीको मिलाथा फिरकुछ साबित नहींहोता कि रावजी को एक कौड़ीभी दीगई इससे मालूम होताहै कि पांचसौ रुपये खबरोंकी इत्तिलाके लिये दियेगये थे उनलोगोंने विषदेनेके लिये कुछरुपया नहींपाया इनदोनों गवाहोंने वर्णनकियाहै कि जब हमविष देचुके तो हमको महाराजा साहबसे रुपये

मांगनेका मुहनपड़ा और नरसू कहताहै कि आठसौ रुपये मैंनेपाये परन्तु यहरुपया महाराजासाहबने अपने विवाहकी खुशीमें दियाथा इसलिये इसरुपयेका जिक्रकरना व्यर्थहैक्यों कि इसरुपयेको विषदेनेसे कुछतअल्लुक नथा निश्चयहै किइन बातोंका खयाल कमीशनके मेंम्बरोंको पहिलेसेहुवाहोगाइस से अब वार्त्ताकरनी कुछआवश्यक नहींयहरीतिहै कि जबकोई मनुष्य किसी कामको करताहै तो उसको उजरत की उम्मैद रखताहै परन्तु इनलोगोंने विषदिया और मेहनतानेसे निरासहुये ऐसीगवाही कोईनहीं गुजरी जिससे साबितहोकि उजरतपानेकी आशाहै उन्होंने वर्णनकियाहै कि जबहमविषदे चुके और रेजीडन्टसाहबके विष दियेजानेकी इल्लतमें हममाखूनहोगये तो हमको कुछभीनहींमिलादोनों अरब्मवर्णनकरतेहैं कि हमसे वाइदा हुवाथा कि जो जहरखूरानोमें हम कामयाबहोंगेते प्रत्येकमनुष्यकोलक्ष२ रुपयाइनआम मिलेगा परन्तु इसदेशकेनिवासी ऐसी प्रतिज्ञाको कि जबतक उनको नक़्दरुपया नमिले नहींमानतेहैं यहबड़े निर्बुद्धि मनुष्यथेजो ऐसी प्रतिज्ञाको मानलिया नरसूके बयानसे स्पष्टहै किउसने इससुआमिलेमें बहुतकम काररवाईकी और अन्तकोलज्जित होनाप्रगट कियारावजी जोदामोदरपंथ काहालबयानकरता है केवलइतनाही कहता है किमैं दामोदरपंथको जानता था परन्तुमेरी जानसेउससे मुलाकात नथीकैसी अद्भुत बात है किएक मनुष्य खूनकरने में संयुक्त हो और आप मुझाकातन रखताहो दामोदरपंथ अपने इजहार में बयान करता है कि रावजीमेरे घरपर आया और कुछकिताबें रेजीडन्सी से चुरा करलायाथा जबतकमैंने उनकीनकल नलेली वह मेरेमकानपर ठहरारहा ऐसे इखतिलाफ सेयहबात जाहिरहै कितीनआदमियोंनेइन लोगोंको सिखायाएक कोगजानन्दनेदूसरेको अकबरअलीने तीसरेको अब्दुलअलीने उन्होने मुकद्दमे को अवश्य खड़ाकर दियापरन्तु यहनसमझेकि जबखूबतहकीकातहोगी

तो निस्संदेह अन्तरपड़ जावेगा इनलोगों को इसबात से बड़ा पश्चात्तापहोगाकि हमने पहिलेक्योंन समझ लियाइस इखतिलाफसे साफसाबित हैकि मुकद्दमा झूठा है ऐडवकेट जनरल साहबकहेंगे किगवाहों कीप्रतिकूल गवाही से यह बातसाफ जाहिरहै किउनका बयानठीकहै परन्तु नहीं यदिसही होता तोकुछअन्तर नहोता न इतनाइखतिलाफ जोउनके बयानसेसाबितहुवा उनकेबयान कोमैंक्योंकर निश्चय मानूंकिप्रथमसेअन्त तकबिल्कुलविपरीतहैमैंकमीशनकेसाम्हनेइतनीवार्त्ताकरचुका हूं, अब कमीशन का समयवृथा नष्टनहीं करना चाहता करा नैलफियर साहबने अपनी गवाहीमें वर्णनकिया है कि उनका शिरघूमाकरताथा और जेहनकुन्द होगयाथा कोईबात उनकी समझमेंनहीं आतीथी और इसबातका उनकोबड़ा आश्चर्य्यथा परन्तुमुजको यहअचम्भा हैकिइनजहरकी पुड़ियोंकाबयानउस वक्तहैजबकिवह अच्छे होगयेथे करनैलफियर साहबकीराय यह रायहोकिवह इसी विषसे बीमार पड़गये परंतु मेरीराय नहीं है गवाहीसे साबितहुआकि ६—नवम्बरसे पन्द्रह दिनपहिले उनकीयहदशाहुईथी सिम्बतरमेंउनके एकफोड़ाभी निकलाथा करनैलफियर साहब इसबातका निश्चय कराना चाहतेहैंकि लोगमुजको थोड़ा २ विषदेतेथे किमुजको धीरेधीरे मारेंगी-शीकाबयानमैंकर चुकाहूं रावजीकहता हैकिमैंनेउस शीशी कीदवाका बर्त्ताव नहीं किया और उसकोफेंकदियाइसलिये करनैलफियर साहब कोजो कष्टहुवा वह न शीशीकी दवासे और न विषसे हुआअब मैंसम्पूर्ण महाराजगानको इसबातका ध्यान दिलाताहूं कि ५ नवम्बरको किजबनरल गायकवार के महलमें गयाथा तो महाराजा साहबने उसकोबुरी २गालियां दीथीमैं चाहताहूं कि उनगालियोंकाउल्था दोनों महाराजा साहबोंके रूबरू किया जाय ताकि उनको मालूम होकिऐसी गालियां महाराजासाहबकीजिह्वासे निकलीहोंगी वानहीं॥

दोनोंमहाराजा साहबजानते होंगेकिऐसी गालियांहिंदुस्तान के रईसमुखपर लातेहैंवानहीं मैंनेसुनाहै कि यहगालियांबहुतहीफोहशथींमैंने उनकेगन्दे होनेसेउनका अंगरेजी में उल्थानहींकराया क्योंकि ऐडवकेटजनरलसाहबनेकहाकिइनगालियोंकाउल्थाहोनाव्यर्थ है इसलियेमैंचाहताहूं कि वहगालियांदोनों महाराजा साहिबोंके रूबरूबयानकी जावें-ऐडवकेटजनरल साहबने कहाकि वह गालियां हिंदुस्तानी भाषामें लिखीहुईहैं-सरजएट वेलनटायन साहबनेकहा कियदि हिंदुस्तानीभाषामें लिखीहैंतो काफीहैं उम्मेद है कि जोदरखास्त मैंने महाराजोंसे कीहैवहस्वीकार हो॥

अबएक और बातपर कमीशनके मेम्बरोंको ध्यान दिलाता हूंरावजी कहता है कि नरसूजीने जोसुजको पुड़िया दीथी उसमेंकोई स्याहीमाइल बस्तुथी और बयानहै किकालीवस्तु करनैलफियर साहबके गिलास मेंडाली गई इसबातपर ध्यान करनाचाहिये किदामोदरपंथने यशवन्तराव और सालिमके द्वारापुड़ियां भेजीथीं नरसूकी निसबतबयानहै कि इसमनुष्यकोसदैवपुड़ियां दीगईं और उसनेरावजीको दींइसलियेस्पष्ट प्रकटहैकि दामोदरपंथने करनैलसाहबको मारडालनाचाहाथा और फिर सालिम और यशवन्तको गवाही में संयुक्तकिया थाताकिजो कुछउसने तगल्लुब किया है उससे बचारहे और महाराजासाहब अपराधीबनें यहलोग इसमुआमिलेमेंमहाराजासाहबका जिक्रनहींकरते हैं यदि दामोदर पंथ परजुर्म रक्खाजावे तोइसमनुष्यपरक्रम पूर्वक ऐसीगवाहीहैकिउसपर हरप्रकारसे अपराध साबित होसक्ताहै हरमनुष्यकी गवाहीसेसाबितहै किदामोदरपंथने विषदियाइसबयानसे मेरा यह प्रयोजन नहींहै किविषका दियाजाना मानताहूं परन्तु जो विचारमेरे मनमें उपजतेहैं उनकोकमीशनके रूबरू पेश करताहूं जोउस समयमेंदामोदरपंथ की हालतहोगी उसकोजानताहूं क्योंकिरेजीडन्सी मेंदामोदरपंथ केजानेकी मनाहीथी

और उसको धमकी दी गई थी कि तुम्हारे हिसाब किताब के कागज देखे जावेंगे इससे साबित होता है कि इसी मनुष्य ने रेजीडन्ट साहब को मार डालना चाहा था और मेरे विचार से यह बात असम्भवित नहीं है महाराजा साहब को रेजीडण्ट साहब के मार डालने से कोई लाभ नथा मैं सम्पूर्ण बजह बयान कर चुका हूं कि साहब रेजीडण्ट के मार डालने में दामोदर पंथ का फायदा नथा नम-हाराजा साहब का परन्तु जब रेजीडन्सी के नौकरों का विचार आता है तो मेरी समझ में नहीं आता कि उनको अपने हाकिम के मार डालने से क्या फायदा था क्योंकि उनको अपने हाकिम से कभी कोई शिकायत नहीं हुई यदि रेजीडण्ट साहब मर जाते तो वह सब आफत में पड़ते नरसू मौकूफ हो जाता और जो करनैल फियर साहब मौकूफ हो जाते तो भी उनको क्या लाभ था इन लोगों से बढ़कर और चलाक आदमियों का भी जिक्र हुवा है जैसे कि भावपूना कर जो करनैल फियर साहब के कान में प्रति समय फूंका करता था और प्रति व्यवहार में जानकारी जाहर करता था उसने करनैल फियर साहब से खरीते का हाल बयान किया उ-सको करनैल फियर साहब के मौकूफ होने का संदेह होगा रे-जीडन्सी के नौकर चाहते होंगे कि करनैल फियर साहब रेजी-डन्सी की पदवी पर कायम रहें और उनकी जान लेना नचा-हते होंगे भावपूना कर को खूब मालूम हुवा होगा कि जो करनैल फियर साहब को बिघ्न देने से सूचित किया जावेगा तो वह न बदलेंगे क्योंकि जब एक बेरह की बात प्रारम्भ हो जायगी तो सरकार को फियर साहब से गायकवार का बैर प्रतीत होजावेगा रावजी ने अपनी गवाही में वर्णन किया है कि जो वस्तु जियादह मोहलक थी उसको मैंने फेंक दिया अर्थात् शीशी को दवा और संखिया भी थो ड़ी डाल दी और बयान करता है कि जो पुड़ियां मुझको मिली थीं वह स्याही माइल थीं और करनैल फियर साहब भी कहते हैं कि तल छट स्याही माइल था परन्तु डाक्टर सीवर्ड साहब कहते हैं कि उसकी रंगत हलकी भूरी थी एक बात और है कि अगर संखिया का अर्क व

ज़वातेा संखिया का श्वेतरंग होता है करनैलफियर साहब संखियाका होना इसहेतुसेभी बयानकरते हैं कि उनकेमुंहमें तांबेकाभी स्वाद आगयाथापरन्तु डाक्टरने जोतलछटकोदेखा तेा कोईवस्तु उसमेंऐसी नहींमिलीकि जिसकातांबेकासा स्वाद हेा—ऐडवकेटजनरलसाहब इसविषयमें कहेंगेकि डाक्टरसीवर्ड साहब और डाक्टरग्रेसाहब ने किसभांति संखिया तलछटमें पाई परन्तु इस विषयमें मैं अधिकवार्त्ता नहीं करसक्ता जब कोशिशकीगई तेा कुछसंखिया मिलीजो इतनी कोशिशनकी जातीतेा कदाचित् संखिया न मिलती करनैलफियर साहबने गुप्तयह खबरपाई थी कि मुझको लेाग संखिया देने वाले हैं किन्तु यहांतक उनकेज्ञातहेागयाथाकि संखिया और तूतिया और हीरेका चूर्ण उसमें मिलाहुवाहै यहखबर भावपनाकर ने बलवन्तरावसे सुनकर उनसे कहीथी परन्तु अजीब बात है कि ऐडवकेटजनरल साहबने इसबात की शिकायत करने के वास्ते बलवन्तराव को नहीं बुलाया संखिया और हीरे का तांबेकेसदृश स्वादनहींहै—यदि ऐडवकेटजनरलसाहब इसबात को साबितकरें कि तलछटमें तूतियाथातेाहीरे औरसंखिये काही होना जोमशहूरहै गलतठहरेगा नरसुबयान करता है कि इसपुड़ियाकी रंगतस्याहीमाइलथी और ऐसाहीकरनैल फियरसाहबभी वर्णनकरतेहैं-परन्तुडाक्टरग्रेसाहब और डाक्टर सीवर्डसाहब कहतेहैंकि भूरारंगया इसइखतिलाफ के बारेमें कोईक्याकहसके क्यासबलेागअंधेहेागयेथे जोहलकेभूरेरंग को स्याहीमाइलबयान किया और क्यारजोडन्सी के नौकरचाहते थेकि अपनेहाकिमसे दिल्लगीकरें यहबड़तबड़ासुआमिलाहैकि पुड़ियाके रंगमेंइतना इखतिलाफहै मेरेविचारसे शायदलेागों नेबाजार में मशहूर करदिया कि फियर साहबको विषदिया गयापरन्तु वास्तवमें विष नहीं दियागया—नरसू २३—नवम्बर कोपकड़ागया २४—दिसम्बरकोरावजीसे उसकासाम्हनाकराया गया—गणानन्द अकबरअली अब्दुलअली उससमय उपस्थितथे

परन्तु सूटरसाहब उससमय नथेगजानन्द इसबारे में कहता है किमैंनरसूको मैदानमें लियेऊंयेबैठाथा और बड़ा अक्बरअली और अब्दुलअलीभी उपस्थितथे रावजीबुलाया गयाऔर उससे कहा कि मैंनेसबबातोंका इकरार करलिया॥

गजानन्दआदिने बहुतबड़ीकोशिशकी परन्तु उनसबकीकारस्वाई प्रकटहोगई उन्होंनेएकबेर चाहाथाकि सरकारनरसू कामी अपराधक्षमा करदेपरन्तु मिस्टरसूटरसाहब और सरल्यू इसपीलीसाहबने कहाकि तुम्हारा अपराध कदाचित् क्षमाने होगापरन्तु उसका जुर्म्मसबसे कमथा उसनेकुछ जबानीबयान कियाथा मिस्टरसूटर साहबकहतेहैं कि उससमय मैंनेबहुतसे कामकेहोनेसे उसकाबयान नहींलिखा यद्यपियह सबसेज्यादां आवश्यक कार्य्यथा कि सब कामोंको छोड़करयह कामकरना चाहियेथा क्या इसकामको वह अपनाकाम नहीं समझतेथे चाहेयह बयानठीक था यागलत परन्तु वह बयान एकखूनी काथा हरप्रकारसे उचितथा कि तुरन्तही लिखलिया जाता जब सूटरसाहबको मुख्य इसी मुकद्दमेसे तअल्लुकथा और जो कामउसवक्त करतेथे इसीमुकद्दमेसे सम्बन्धित होगा इससेबढ़ करऔर कौनसा कार्य्यहोगा किएक मनुष्यजो फिलहाल इकरारकरता था इस इजहारके न लेनेका मिस्टरसूटर साहब कोई माकूल उत्तरनहीं देसक्ते॥

सरल्यू इसपीलीसाहबका बयानउनके बयानकेप्रतिकूलहैवह कहतेहैं किमैंने इसवजहसे नरसूकीगवाही फौरन् नहींलिखवाईकि मैंचाहताथा किवहखूब ग़ौरकरें किमैं क्या लिखाना चाहताहूं वहबयान नहीं करते किसूटरसाहबको सावकाश केकमहोनेसे उसकेइजहार नहीं लियेगये॥

इसके उपरान्त पुलिस वालोंके पहरे में क़ैद कियागया॥ इस अन्तर में पुलिस को कारवाई करने का और अवसर मिलाहोगा पुलिसनेजोबागमें कारवाईकीवहप्रकट होचुकी है और जबनरसू कुंवेमें गिराथा उसकाखूब हालमालूम हो-

चुकाहै परन्तु जबनरसू पुलिसके गार्डमेंथा तोवह क्योंकरकुवें मेंगिरा क्या वह कुवेंके बराबरही खड़ा हुवा था जो गिरपड़ा हालांकिमशहूरयहहै किपुलिसके आदमी उसके साथथे और उनमेंसे भागकर वह कुवेंमें गिरा यह अद्भुत बात मालूम होतीहै मिस्टरसूटर साहबवर्णन करतेहैं कियहमनुष्य पलटन केगार्डमें थापुलिसके लोगइसके पासजासक्ते थेक्या यहअसम्भवितहै किपुलिसवालोंने उसकोन सिखायाहो मैंनहीं चाहता किउसके इजहारकमीशनके मेम्बरोंको फिरयादिलाऊं क्यों किउसने प्रतिप्रश्नके उत्तरमें भीयहीबयान कियाकि मेरेभाग्य में यही लिखा था नरसू के बारे में मुझे और कुछ कहना बाक़ी नहीं है॥

इससम्पूर्ण मुकद्दमेकी तहक़ीक़ातमें कोई और हेतुजाहिर नहींकियागया किविषदिये जानेका क्याकारण था नौकरअपने स्वामीसे अतिप्रसन्नथे क्याउनको प्रतिज्ञाही परनिश्चय आगया थाकि हमकोरुपया मिलेगा और उनकेहाकिमने जोमेहरबानीकी थी उसकोविस्मर्ण करगये और शर्बतमें विषडालदिया यदिउनकाहाकिममरजाताताकातिलबनतेऔरकिसीसूरतसे नबचसक्ते दामोदरपंथ के विषयमें खूब बयान करचुका हूं इन लोगोंकी यहसबगवाही बेमूल और गलतहै और किसीप्रकार से निश्चयमानने केयोग्यनहीं है महाराजा.साहबके लियेबहुत लोगइसबात पर तय्यारहुयेकि उनकेहकमें झूठबोल२ करउन कोफांसे इनलोगों को मुआफीका वादादिया गयापुलिसवालोंको अपनीतरक्की कीआशा होगी हरप्रकार से लोगचाहते हैंकि इस बेचारे रईसको दण्डदिलावें मुझको उचित मालूम हुवाकि करनैलफियर साहबके इजहारबयान करनेके पहिले इनसब गवाहोंके विषयमें जिक्रकियाजाय॥

अबकमीशनके मेम्बरोंको उनजवाबों परध्यानदिलाताहूं जो करनैलफियर साहबने मुझकोदिये यहबातप्रकटहै किजबतक

बहुतसे प्रश्न नकिये जावें और ज़ोर नडाला जावेठीक २ हाल मालूमनहीं होसक्ता करनैलसाहबने वर्णनकियाहै किसालिम और यशवन्तराव दोनोंरेजीडन्सीमें आयाकरतेथे और कहते हैंकि मुझकोसंदेह हुवाथा किमरहममें कोईवस्तु डालदीगई थीजिसके सबबसेमेरा फोड़ाबढ़गया और बरवक्त गौर करनेके करनैलसाहबको सन्देहहुवा किउसमें संखियाडालीगई परन्तु मरहममें संखियेका डालाजाना मैंनेबिल्कुलगलत और खंडन करदियाहै फिरवह उनदिनोंका जिक्र करतेहैं जिनदिनों में शर्बतमें विषदियागया थावहअपनी तबीयतका हालसितम्बर और अकटूबरका बयानकरतेहैं और कहते हैं कि ६— या ७ नवम्बरको विषदिये जानेकाउद्योग हुवापरन्तु गवाही सेसाबितनहीं होताकि इनतारीखोंमें उद्योगहुवाहो·जाहिरहै कि आदमीका खयाल कितना दौड़ताहै जोकुछ उनकी तबीयत कीहालत इनतारीखोंमें हुईथी वहबिल्कुलखयालथा-शर्बतके पीनेके उपरान्त वह अजीब तरहशर्बतकेफेंकने काबयानकरतेहैं उचित यहथा किजोमनुष्य शर्बत बनाता था उसको बुलाकर कहते कितूने यह शर्बत कैसा बनायाहै यदि सब शर्बतको करनैलसाहब रहनेदेते और डाक्टरसाहबको दिखा कर इमतहानकराते तो उचितथा मालूमहोताहै किडाक्टर सीवर्ड साहबनेभी बहुतढीलकी क्योंकि उन्होंनेतलछटकोछान लियाऔर पानीको फैंकदिया करनैलसाहब यहभी कहते हैं कि जहांमैंने शर्बतफेंकाथा वहांएक खिड़कीथी और खिड़की के आगे बरामदा था वहांबरामदे में मालूमहुवा कि संखिये और हीरेकाचूर्ण शर्बत में मिला हुवाथा सबसे बढ़कर यह बातहै किजबदो तीनदिनपीछे बरामदेकी धरती खुरची गई तो उसमट्टीमें छोटे और संखियेका चूर्णमिला आशाहै कि कमीशनके मेम्बरउसखुरचीहुई मट्टीपरअपनाखयालज़ियादा रुजूनकरेंगे परन्तु छांजो तलछट गिलास में रहगया था वह

गौरकरनेके योग्यहैकरनैल साहबकहतेहैं किजबमैंने शरबत फेंकदियाते।कुछतलछट स्याहीमाइल गिलासमें रहगयाऔर फिरअपनी तबीयतका हालवर्णन करतेहैं किवहीदशाहोगई जोपहिले हुईथी यह साराकिस्सा अति अद्भुतहै शरबत का फेंक देना और किसी मनुष्य को नबुलाना और मुखमें तांबे का सास्वाद होना और तलछट का स्याही माइल होना यहबातें अजीबगरीब मालूम होतीहैं निश्चयहै कि यहइजहार सुनकरकमीशनके मेम्बरोंको बड़ाआश्चर्यहोगा मैंपहिलेवर्णन करचुकाहूं कि करनैलफियरसाहबने अपनी एकचिट्ठीमेंलिखा कि मैंने ठीक खबरपाईहै कि मुझकोविष दियाजायगा ऐसी खबरोंके पानेसे मनुष्यका हृदयबहुत फिरसक्ताहै उसीदिन उन्होंने जल्दीकरके गवर्नमेण्टमें लिखभेजा कि मुझको विषदिया गया फिर करनैलसाहब वर्णनकरतेहैं कि महाराजासाहबसे औरहुमेक्या२बातेंहुईं महाराजासाहबने उनसेकहाकिमिठाईखानेसे मेरीभी ऐसेहीदशाहोगईहै किन्तुउन्होंने यहभी कहाकि नगरमें यहरोग बहुतफैला है महाराजासाहबने यह वर्त्ताशुरू नहींकीथी किन्तु करनैलसाहबनेही इसबातको छेड़ाथाजो वार्त्ता महाराजासाहबने की उससेयह विदितनथा कि महाराजासाहब करनैलसाहबको टालदेंताकिउनकोजाहिरहोकिमुझकोविष दियागया यदिविषकादियाजानाठीक है तो कोईवजह जाहिरनहीं कीगई कि महाराजासाहबको मालूमहो कि करनैलफियरसाहबको ९ नवम्बरको विषदिया गया डाक्टरसीवर्डसाहब और करनैलफियरसाहबकी जो गवाही लीगई उससे यहबातजाहिरहै कि मानोलोगोंने दिन और समय विष देनेका नियत करलिया था परन्तु वास्तवमें कोईसमय नियतनहींहुआ था किन्तुयह कहागया था कि जब अवसरमिले विषडाल देना डाक्टर सीवर्डसाहबने अपने बचपनके विचारों को इस वास्ते बर्त्ताया कि जो कुछ उनके खयालहैं औरोंकेभी हृदयपर नक्श होजावें जब महाराजा

साहब कर्नेलफियर साहबके सामने आये तो उनके मुखसे कोईबात ऐसीनहीं पाईजातीथी जिससे यहबात मालूम हो कि वहइसउद्योगमें संयुक्तहैं और नमहाराजासाहबकीकोई ऐसी हरकत साबितहुई जिससे मालूमहो कि उन्होंने कभी ऐसाउद्योगभीकियाहो उन्होंने कर्नेलफियरसाहबसे उसदिन इसतरहभेट कीथी कि जैसीसर्वदा कियाकरतेथे और ऐसी मुलाक़ातनहीं की जिसमेमालूम हो कि वह मारडालने में संयुक्तहैं हिन्दुस्तानीरईसोंकी प्रकृतिकोमैंभलेप्रकारनहींजानतापरन्तु इतनाहीजानताहूंकि जैसीतबीयतहमलोगोंकी है वैसीहीउनकी भी होतीहोगी जब खयालकरतेहोंगे तो भय और चिन्ताअवश्यहोतीहोगी और यहभयउनकेमुखसेविदित होजाताहोगाहा खेदहैकि लोगोंने श्रीमान्महाराजा गायकवारको अपराधीबनाकर बुरी २ बातेंको—अंगरेजी आदि भाषाकेसामाचारपत्रोंमेंऐसीगलतबातेंलिखींकि हरएकमनुष्य कारुधिर जोशमेंआगया मैं उसदेशकानिवासीहूंजहां बिल्कुल आजादीहै यदिवहांकिसी अखबारमें ऐसालिखाजाताते। उस एडीटरको दण्डपर दण्डहोता और यहविचारनकिया जाता कि बड़े अखबारका एडीटर था क्योंकि उसने अपने लेख से सरकारकाध्यान न्यायसे फेरदिया मैं फिरकहताहूंकि गायकवारकी ओरसे कोईकाररवाई ऐसी नहींहुई जिससेमालूम होकिगायकवार ने विषदियाहैवा किसीप्रकारसेवहअपराधी है—कर्नेलफियरसाहबकेकानलोगोंने बहुतदिनोंसेभड़कायेथे विशेषकरभावपूनाकरने। टिफनसे पहिले कर्नेलफियरसाहब इन्कार करतेथे कि भावपूनाकरने मुझको जहरकी इत्तिला नहीं की परन्तु टिफनखाने के उपरान्तइकरारकियाकि इसी मनुष्यने मुझको इत्तिलादी थी जब भावपूनाकर बुलायागया तो उसनेकहाकि मैंने असुकमनुष्यसे सुनकरइत्तिलादीपरन्तु वहनहीं बुलायागया जिससेउसने सुनाथा—गायकवारपरजो दूसराअपराधहै किरजीडन्सीके नौकरोंसे खबरोंके पानेकेलिये

मेलचोल कियागया इसमें यहबात पूछनीहै किइसतरहमेल चोलकाकरना किसीमनुष्यकीहानिकेलियेहुवाथा या नहींपरन्तु करनैलफियरसाहबनेभीखबरोंके मालूमकरनेकेवास्ते लोगों से मेलरक्खाथाइसबातसे किसीमनुष्यको इन्कारनहीं होसक्ता किभावपूनाकर करनैलफियर साहब का मुखबिर नथा चाहे इसशख्स को रुपयानहीं दियागयापरन्तु करनैलसाहबउसकी हरएकबातको सुनतेथे गायकवार को इतना नागवारहोता होगाकि जोमनुष्य मेरावैरी है उसीसे रजीडण्टसाहब मैची रखतेहैं यहबातसाफजाहिरहै कि जब खरीतातय्यार होताथा तो करनैलफियरसाहबको इत्तिलाहोगईथी इसीप्रकारउनको गायकवार की हरएक काररवाईसे खबरहोजाती थी चाहे उन्होनेभावपूनाकर को कुछनहींदिया परन्तु भावपूनाकर ने गायकवारके नौकरोंको रुपया देकरहालात दरयाफ्त किये होंगे महाराजासाहबको रजीडन्सीके खबरोंसेकुछअधिकलाभ नथा जैसे कि आयाने एक चिट्ठी लिखी जिसमें रजीडन्सी में खानाहोनेकाजिक्रयाभलाउससे महाराजासाहबको क्यालाभ था परन्तुकरनैलफियर साहबको बड़ेहालमालूम होतेथेहर प्रकार महाराजासाहब मजलूमहैं और करनैलफियर साहब की जियादती मालूम होतीहै और आयाका जो बयानहै उस पर कदाचित्निश्चय नहीं है महाराजासाहब उससे इन्कार करते हैं मैं आपसे पूछता हूं कि महाराजासाहब आया से क्या बातें करते थे आयाको सरकारी पोलीटीकल मुआमिले मालूम होसक्तेथे जोवह इत्तिला देती महाराजा साहब खूब जानतेहोंगे कि आया को इस मुआमिलेमें कुछ सम्बन्धनहीं है ऐडवकेट जनरल साहब ने जाहिर किया है कि आया से भीविषदेनेका कुछजिक्रहुवा था फिररावजी और नरसु विष देनेमेंसंयुक्त कियेगये परन्तुगवाहीसे यहबात प्रगट नहीं कि रावजी और नरसु और आयासेकुछ वार्त्ताहुईहो और गाड़ो वानोंकी गवाहीसे मुझकोइन्कारनहींहै जिन्होंनेबयान किया

है कि हम गायकवार के महल में लेगये मेरे कहने से यह मतलब है और ऐडवकेट जनरल साहब भी यही समझे हैं कि आश्चर्य नहीं जो इन लोगों की गवाही ठीक हो और आया को सवार करके लेगये हों। और आया गायकवार के नौकरों को मुलाकात के वास्ते गई हो और उसने तरह २ के जटल काफिये उड़ाये हैं। परन्तु आया का यह बयान कि मैं महाराजा साहब के पास गई थी बिल्कुल गलत है आया ने जो पुलिस के मेंडजहार में अपने जाने की तारीख वर्णन की है उस तारीख में इख्तिलाफ है क्यों कि अदालत में उसने कुछ और बयान किया है मालूम होता है कि जब पुलिस ने उस पर सख्ती की तो आया ने उनकी इच्छा के अनुकूल वर्णन कर दिया यह अजीब बात है कि आया उस जमाने में नहीं गई जबकि नरसू और रावजी ने अन्त की बेर विष का बयान किया है कि नरसू और रावजी ने ५—और ६—नवम्बर को विष दिया उन्हीं तारीखों को आया से भी जिक्र किया गया था और उस से जो विष के दिये जाने का जिक्र किया था उस को नरसू और रावजी के विष देने से कुछ तअल्लुक न था आया से कहा गया था कि तुम अपनी तौर से अलग जाहिर दो कहीं बयान है कि आया ने बिल्कुल इन्कार किया इस इन्कार पर कमीशन को लिहाज रहे शेखदाऊद कहता है दिवाली से तीन चार दिन पहिले अर्थात् ५—६—७ नवम्बर को आया से वार्ता हुई थी और आया भी कहती है कि इन्हीं दिनों में मुझ से और महाराजा साहब से वार्त्ता हुई थी और विष देने का जिक्र आया था वह इस तरह अपने बयान को लिखाती है कि मानो करनैल फियर साहब की वजीर आजिम थी और बड़े रौब और बड़े मरतबे की और तह है कमीशन आप ही विचार सक्ती है कि उस का इजहार कुछ ठीक और कुछ अशुद्ध है नौकरों का बुलाना दोनों ओर से हुआ करनैल फियर साहब के नौकरों ने गायकवार के सेवकों से मेल किया और गायकवार ने करनैल फियर साहब के नौकरों को बुलाया मालूम होता है कि कोई समय बड़ौदे में ऐसा बीता है कि दोनों ओर से खबर देने वाले नौकर रक्खे गये

सन् १८३० ई० से सरकारने तो खबर देने वालोंको नौकर रखना तो मौकूफकर दिया परन्तु शायद करनैल फियरसाहबके विचार से यहबात अबभी उचितहै ॥ आयाके इजहार खत्मकरनेके पहिले बयानकरना चाहताहूं कि किस २ प्रकारसे बजारी अफवाह उड़ सक्ता है इस अफवाह को सुनकर गायकवार और करनैल फियर साहब दोनों को चिन्ताऊई होगी सही है कि गायकवार जहां दीदा आदमी है परन्तु ऐसीखबरोंके सुननेसे चिन्तातहोगये होंगे और करनैलफियर साहब का सुनको बड़ा आश्चर्य्य है कि यद्यपि वह ऐसीरियासत में ऐसे प्रतिष्ठित पद पर थे जो बजाय एक सलतनत के समझी जासक्ती है परन्तु उन्होने सबलोगों कीबातोंकोसुना औरझूटेमनुष्योंसे मुंहलगाया उनकाएकखबरदेने वालासुख्य ऐसा मनुष्यथा जो गायकवार के प्राणका बैरीथा आयानेजो प्रथमबेर सूटरसाहबके रूबरू इजहारदिये उसमेंबीमारीका उसनेकुछजिक्र नहींकिया परन्तु उसकेपीछे वहरोगीहोगई औरअस्पताल कोभेजीगईआयाने वर्णन कियाहै किमैनेकिस प्रकार रमजान केमहीनेमें महाराजा साहबसे बातेंकीं आया कायह बयानकितना लचर है १८—दिसम्बर कोजो आयाके इजहार लियेगये उसमें आयानेनहीं वर्णनकिया कि महाराजासाहबने मुजसे कुछविष देनेका जिक्रकियाथा और मुलाकातेंजो आयाकी महाराजा साहबसे हुईं उन में केवल जादूका जिक्रहैजबआया अस्पतालमेंथीबीमारहोनेपरभीबड़े तूलसेइजहार दियेडाक्टर सीवर्ड साहब नेभीकुछ आयाका जिक्र कियाहै मालूमहोताहै किउनको आयाका बहुत बड़ा खयालथा इसबात कोवहमानतेहैं परन्तु मेरीबुद्धिकाम नहीं करतीकि उनकोआया काइतनाक्योंखयाल थाशायदआयामें कोईऐसीबातथी जिससे साहबकामनआकर्षितथा औरकिसी बातपर उनका मन मोहितहुवाहोगा परन्तु जबवहकमीशन केसम्मुखआई तोउसकी मायामई दृष्टिने किसी परकुछफलन

कियामुजको उसकेदेखनेकाखूबमौका मिलापरन्तु मुजपरभी असरन हुवाडाक्टरसाहब जानतेथेकिवहगायकवारकेमहलों में जाया करतीथी परन्तु उन्होंने इसबातका कुछ विचार न कियाउसका इलाजएकडाक्टर साहबकरतेथेपरन्तु फिरभी उनडाक्टरकीइत्तिला केबिना उसके पासडाक्टरसीवर्डसाहब गये जबइसका कारणपूछागयातो उन्होंनेवर्णन कियाकि वह डाक्टर साहबमेरे मित्रथे मुझेपूछनेकी कुछ आवश्यकतानथी बहरहाल वहआयाकेदेखनेको गयेजब उसको देखातोमालूम कियाकि उसको कोईशारीरकरोगनहींहै केवल उसके हृदय परसदमाहै इसविषयमें डाक्टरसीवर्डसाहबखूबबयान करतेहैं उन्होंनेआयाको समझाया कि तुम अपने मनका हाल मुजसे कहोतुम्हारे दिलको तुम्हारेपेटको आरामहोजावेगाकिसी समयमेंउसे पलस्टरलगाया था और जब उसनेअपने मनका हालबयान करदिया उसके लिये ऐसा मुफीद हुवा जैसेकि कैकीदवा दीगईफिर उसकोआराम होगया डाक्टरसूटरसा-हब(इसजगहपर मिस्टरसूटरसाहबको डाक्टरसूटर साहबक-हनाचाहिये) बुलायेगये और उन्होंने उसका इजहारलेकर उसकाइलाज किया डाक्टर सीवर्ड साहब शारीरक रोगका इलाजकरतेथे और डाक्टर सूटरसाहब रूहानी इलाजकरते थेमैं विचारताहूं किडाक्टर सीवर्डसाहब मिस्टरसूटरसाहब से किसतरह कहतेहोंगे किमेरेहाथसे जबतकवह आरोग्य नहोगी इलाजकिये जाऊंगातुम उसकारूहानी इलाजकरो क्योंकिउसका मनबेकरार है-निदानउसके इजहार लियेगये उसकामतलब यहथाकि जबमैं तीसरीदफे महाराजा साहब केमन्दिरोंमें गईतो महाराजासाहबने मुझसेपूछाथा किसा-हबको कोई ऐसी दवादी जासक्ती है जिससेमेरी उनसे प्रीति होजावेउसकाबयान हैकिगायकवार मुजकोटटोलतेथे मैंइस बातका उनको क्या उत्तरदेती हूं अबमैं लार्डचीफ जस्टिससे पूछताहूं किआपने कभीऐसा फिकराकिसीके इजहार मेंसु-

नाहै टटोलनेका शब्दकिसी आयाकेमुखसे आपनेसुनाहैपरन्तु आयानेलज्जासे इन्कारकिया सोविचारनाचाहिये किआयाने अपनाइन्कारकिस राहतसेड.क्टरसीवर्ड साहबके रूबरूबयान कियामैंअबभी कमीशनमेम्बरोंका खयालरुजूकरताहूंकिआपने कभी ऐसाझूठसुनाहै किआयानेकहा हो किलाखों रुपयेकर-नैलफियरसाहबपर न्योछावरहैं आयाअपने तईंबड़ी पण्डिता समझतीहै यहबेचारी टुइखी बाजारकी गय सुन २ कर बातें बनाया करती थी क्या महाराजा साहब को इतनी भी बुद्धि नहींहै जो ऐसीस्त्री से वह बार्त्ताकरते उसके इजहार मेंजो थोड़ेसे प्रश्न किये गये उनसे मालूम हुवा कि उसका बयान बिल्कुलगलत है जोकुछबातें हुईंथीं तो शायद इतनीही हुई होंगीकि करनैलफियरसाहब परकुछजादू कियाजायकि वह मरेवशहोजावें-प्रथममिष्टरसूटरसाहबके सम्मुखयह प्रश्नकिया गयाकि तू विषके देने का हालभी जानतीहै-सो विचारना चाहियेकि पहिलेही ऐसीस्त्रीसे इसभांति का प्रश्नकरना क्या जरूरथा उसनेखाहमखाह उत्तरदियाकि मुझसेजिक्र आया था साफजाहिर है कि मिष्टरसूटरसाहबने उसको सिखाया और अकबरअलीने उसकोधमकाया कि विषका जिक्रकरना उसकेइजहार आदिसे अन्ततक बिल्कुल वाहियातहै मैं उसके इजहारपरखूबगौरकरके यहबयानकरताहूंकि उसकेइजहार में कोईबात गौरकरनेके योग्यनहींहै-ऐडवकेटजनरलसाहबने पूछाथा कि गायकवार की रसाईसालिम और यशवन्तराव तकहोसक्तीहै इसकहनेसे उनका यहमतलबथाकि महाराजा साहब चाहते हैं कि सालिम और यशवन्तराव को अपना गवाहठहरावें परन्तु मुख्यवृत्तान्त यहहै कि महाराजासाहब ऐसीकारवाईकीकुछपरवानहींकरतेऔरउनकेसलाहकारभी यशवन्तरावऔरसालिमये उनकोगवाहीदेनेकीसलाहन हींदेते बड़ासन्देहहैकियहलोगदामोदरपन्थकेसाम्हनेहोंक्योंकिवहभी दामोदरकीतरहसवालकरतेरहेऔरअपनेखामेकोलूटतेरहे॥

शायद यहलोगभी दामोदरपन्थ के सदृश बयान करतेहों मेरेदोस्त ऐडवकेटजनरलसाहबने सोचेबिचारेबिना उनगवाहों को बुलायाजिनकी प्रतिष्ठापर बदनामीका धब्बाथा इसलिये सालिमके बुलानेमें क्या उज्रथा और क्यों यशवन्तरावकीगवाहीनली यह शख्स रावजीसे बढ़कर दुष्टनहींहै यदिऐडवकेटजनरल साहबजानते कि यहलोग किसीबातकी सिदाकत करेंगेतो अवश्यही उनकोबुलाते अगर महाराजा साहब इन गवाहोंको बुलातेतो मैंकदाचित् बुलाने नदेता और जोप्रतिष्ठितगवाहोंकी अवश्यकता होती तो और बहुत गवाह बहम पहुंच सक्तेथे मुजको गायकवार की ओरसे मुकद्दमे के खड़ा करनेकी जरूरत नहींहै किसी प्रतिष्ठित गवाहने गायकवार कोमाखूजनहीं किया मैंउनलोगोंकी गवाहीकभी नलेताजो थोड़ेदिनोंतक पुलिसमेंरहे—माईलार्ड—मैने इस सुआमिलेमें ठीककाररवाई कीहैयागलत मैनेबिल्कुलइन्कारकिया कियह लोगगायकवारकी ओरसे कदाचित् गवाहन ठहरायेजावेंगे गायकवारपर जोअपराध ठहरायेगयेथे उनसबका मैनेखण्डनकरदिया अबकोई जुर्म्म गायकवारपर बाक़ीनहीं रहा कोई गवाहीऐसी नहींगुजरी जिसकानिश्चय कियाजाता मैंउतना हूं कि आप साहिबों ने मेरी तकरीर को गौर से सुना जो कुछकि बार्त्तासुजसे होसकी मैनेकी मैंखूब जानताथा कि इस मुकद्दमे मेंभी खण्डन करने की जिम्मेदारी है किसी मुकद्दमे मेंऐसा सबकाध्यान नलगा जैसाकि इसमुकद्दमेको सबसाहब गौरसे देखतेहैं और इसमुकद्दमेकी काररवाई पर अंगुश्तनुमाईकरतेहैं मेरेविचारसे ऐसोपदवीका मनुष्यजैसाकिगायकवारहैपहिलेहीबेर जुर्म्ममें गिरिफ़्तार हुवाहै और उसकीऐसी काररवाईहुईहै? हिंदुस्तानकी इतिहासकी पुस्तक देखनेसेविदितहोताहै किकैसे २ गवर्न्नरजनरल साहिबोंने अपने तौरसे रईसोंको दण्डदिया और अनीतिकी परन्तु अब श्रीमान्वैसरायने उचितसमझा किजो एक रईसपर कलंकलगा है उसकी

खूबतहकीकातहो और वास्तवमें ऐसे २ जोउनपर कलंकलगे उसकी तहकीकात होनी अवश्यथी इसीलिये अंगरेजी और हिंदुस्तानीरईसों कोयहमुकद्दमा सौंपागया ॥

माईलार्ड—यहबात देखकर मुजकोअति प्रसन्नताऔर धीर्य्य प्राप्तहुवा यहमुकद्दमा बहुत बड़ाहै मेरे विचारसे हरएक कौंसलीइस मुकद्दमेकोबड़ा मुकद्दमा कहेगा मैंफिर कमीशन केमेम्बरोंका अतिगुण मानताहूं और कहताहूं कि आपयहन विचारेंकि मुझसे बढ़कर और कोई स्पीच नहीं कहसक्ता है आपकृपा पूर्वक इजहारोंपर खूब गौरकरें उनसेसाफजाहिर होजावेगाकि गायकवारनिपट निर्दोषहैं यहमनुष्य इनदिनों गद्दीसे अलग कियागया और उसकी दुर्दशाको उसकीप्रजाने देखाकिसी मनुष्यकी इतनीसामर्थ्यनहीं किउसकेपासजाकर उसकी सहायताकरे और धीर्य्यदेवा उनकेलिये कोई फायदे कीबात कहे ॥

उन्होंनेसौगन्द खाकरवेक्षहूरीजाहिरकर दीमैंनेजोउसका कौंसली हूं इसमुकद्दमे की सम्पूर्ण गवाहीको खण्डन किया अबइस बातकीइच्छा रखताहूं कि अंगरेजीनीतिके अनुकूल उनकान्याय चुकादियाजावे छोटेसेजेबकाटनेवाले को भीऐसे गवाहोंसे सजानहीं होसक्तीजैसे कि इसमुकद्दमेमें गुजरेफिर क्योंकरएकरईसगद्दीसे उताराजासक्ताहै ॥ऐडवकेटजनरलसाहबनेकहा उत्तम होकि कमीशनके मेम्बर टिफनखाने के लिये उठेंफिरमैं अपनाएडरेसपेश करूंगायदि कमीशनीकीआज्ञा होतो अभी प्रारम्भ करूं फिर कमीशनके मेम्बरोंने टिफनखाने केलिये अदालतको बरखास्त किया ॥

ऐडवकेट जनरल साहब का उत्तर ॥

कमीशनके एकत्रहोतेही मंडन ऐडवकेटजनरल साहब उठे और उन्होंने कहा—माईलार्ड चीफजस्टिस और कमिश्नर और दूसरे साहब अबमुजको उचितहैकिमैं आपसबसाहिबों का

खयालउनबातोंपरदिलाऊंजिनको सरजएटबेलनटायनसाहब नेअपनीविस्तृतस्पीचमें गायकवारकी ओरसेबयानकियाहैजो गवाहियां पेशहुईं उनकोदुरुस्त न समझतातो मुजको इससमय उत्तरदेने में बड़ाकष्टहोता मुजको यह बात देखकर अत्यन्त धीर्य्यहुवा किमेरे एकयोग्यमित्रने गवर्न्नमेएटकी इसकाररवाई अर्थात् कमीशन के नियत करनेको बहुत पसन्द कियाहैऔर उसीप्रकारसे उनके मवक्कलको भी पसन्दहै मेरेमित्रजानते हैं कि इसमुक़द्दमे की तहक़ीक़ात केवास्ते इसकमीशन सेबढ़कर दूसरीकोईरीतिनथी और जोइसकमीशनका फैसलागायकवारकेप्रतिकूलहुवा तौभीगायकवारवा औरकिसीमनुष्यको शिकायतकामौकान होगा सरजन्टबेलनसाहबने कहा है कि इससे बढ़करऔर कोईकमीशन मैंनेनहीं देखीसरजएट बेलन टायनसाहबने अपनीयह लियाकत जिसकेलिये वहमशहूरहैं सबइसमुक़द्दमेमें खर्चकीजो कमीशनका फैसलागायकवार के प्रतिकूलहोगातो कोईमनुष्यनहीं कहसक्ता कि सरजएटबेलनटायनसाहबने मुकद्दमेको भलीभांतिखण्डन नहींकियाअथवा थोड़ेबोलनेसेइसमुकद्दमेकाफैसलाउनकीइच्छाकेविपरीतहुवा मेरेदोस्तनेकई जगहपर गायकवारकी हमदर्दी जाहिरकी है परन्तुतारीफयहहैकिवावजूदहमदर्दी करनेके उनकीवार्त्तामें किसीप्रकारका अन्तरनहींपड़ा सरजएटबेलन टायनसाहब न केवलइंगलिस्तानमेंबिख्यातहैंकिन्तु यूरुपभर उनकी उत्तमवाचालताकोजानताहै जोकुछकिउन्होंनेहमदर्दी जाहिरकीनिश्चय है किसबलोगोंके हृदयपर उसकाअसरपहुंचाहोगा इस लिये जो फैसलाइसकमीशन काहोगा बहनकेवल संसारभर किन्तु श्रीमहाराजासाहब भी प्रसन्नतासे अंगीकारकरेंगेसरजन्टबेलनटायन साहबनेजोकुछ इसरईसके लियेवर्णन किया मुझकोभी सुनकर आश्चर्य्यहुवा क्योंकि सरल्यूइसपीलीसाहब नेवर्णन किया है कि महाराजासाहब प्रतिष्ठा पर्व्वक पहिरे

मेंहै और यहबातदुरुस्तहै फिर उनपरक्याजुल्महुवा और उनकीजायदाद थोड़े दिनोंके वास्ते कुर्कहुईहै इससेउत्तमऔर कोईकारर्वाई नहींहोसक्तीथी मेरेदोस्त जानतेहोंगे कियेमीमान् गायकवारका राज्यसे मुअत्तिलकरना और उनकीजायदादका कुर्कहोना उचित था गवर्न्मेण्ट इण्डियाने यहसब बातें अपना कामसमझकर कीहैं और उनबातोंकेकरनेसे किसीप्रकारकी जियादती समझीनहीं गईहै यदि ऐसा नकिया जातातो गवर्न्मेण्टइण्डियाके लिये यह समझाजाता कि उसने अपना पूराकाम नहींकिया गायकवाकी ओरसे जोलेख पेशहुवाहै उसकामज़मून निहायत उमदाहै परन्तु उससंपूर्ण लेखका यहमतलब है कि मैंने अपराध नहींकिया और इस बयानकी तसदीक सौगन्दकी रूसे भी हुई इसलिये कमीशन के मेम्बरइस लेखको जैसाचाहें समझलें—केवलइतनाहीखयाल होसक्ताहै कि गायकवारने शायदऐसा कहाहो मैं अपने मित्रकी इन्कारर्वाईपर कुछअंगुश्तनुमाई नहींकरना चाहता वास्तवमें मेरेमित्रनेइज़हार के खूबरग औरपेश्तअलग किये उनकी तकरीरसे यहसाबितहुवाकि गायकवारने करनैलफियर साहब को विषदेना नहीं चाहा किन्तु पुलिस ने यहचाहा कि गायकवारपर अपराधलगे मुझकोपहिले से यह खयाल था कि सरजन्बेलनटायन साहब इसमूलपर मुकद्दमे को खण्डनकरेंगे परयह निश्चय न था कि इसतरह साफ़ २ पुलिसको कलंक लगावेंगे वहकहतेहैं कि जितनीगवाहियांपेश हुईं वहसब पुलिसकी बनाई हुईहैं—अर्थात् गजानन्द वतिल अकबरअली—और अब्दुअलीकी बनाईहुईथी॥

मुझको आश्चर्य्य है कि मेरेदोस्तकोमिस्टरस्टरसाहब के इस इलज़ाममेंसंयुक्तकरनेसेकुछसोच नहुवाकमीनकेमेम्बरोंकोक्षण होगाकिसरल्यू इसपीलीसाहबनेवर्णन कियाथा कियहांआतेही और हिदायतोंमेंसेमुझकोएकहिदायतयह भीमिलीथीकि

इसमुकद्दमेकी तहकीकातभी कराई जावे इस लिये उन्होंने गवर्न्मेण्ट को लिखकर मिस्टरस्यूटर साहबको बुलायातथाच मिस्टर स्यूटर साहब ९—दिसम्बर को कुछ पुलिस के अफ्सरों सहितजिनका मैं ऊपरनाम लेचुका हूं यहांआये और कई लोग पीछेआये इसलिये उचितहै किउन लोगोंका कुछजिक्र किया जाय॥

अकबरअली ४४ वर्ष से नौकर है उसने सरकारी नौकरी सन् १८३१ ई० मेंकी और उमदा २ कारगुजारियोंके करनेसे उसकोसरकारसे खानबहादुरका खिताबमिला और इस ४४ वर्षकी अवधि में उससे कोई ऐसी बात नहीं हुई किसरजण्ट बेलनटायनसाहब उसकोकलंकलगावें जबअकबरअलीअदालतके रूबरू आयातो हरप्रकार से पाक और साफथा अब्दुलअली जोअकबरअलीकापुत्रहै २० वर्षसे सरकारका नौकर है उसनेभीऐसे२ कामकिये किउसको सरकारसेखानबहादुरी का खिताबदियागया इसबीसवर्षकी अवसरमें उससेभी कोई ऐसाअपराध नहींहुवा कि सरजण्टबेलनटायन साहब कुछ वार्त्ता करसकें गजानन्दवतिल भी बहुत वर्षों से सरकारी नौकर है उसने भी अपनी क्रिया कौशिल्यसे रावबहादुर का खिताब पाया है॥

सरजण्टबेलनटायनसाहबको लोगोंने बहकायाकि गजानन्दवतिलसे कोटाकी रियासत कीगद्दी नशीनीके विषय मेंप्रश्न करने चाहियें यह मुकद्दमा मिस्टर कागलनसाहबके सम्मुख पेशहुवाथा और गजानन्दवतिल उसमें गवाहकी तौरपरथे॥

मिस्टरजस्टिस बेस्टसाहबने जोअपने विचारांश का फिकरा लिखाहै उससेकुछ पुलिसको सम्बन्धनहीं है सोइनतीन सरकारीनौकरोंकी निसबतजोबड़ेयोग्य और अपनेसम्बन्धीक्रिया में कुशलहैं लोगोंने उनकोसिखायाहैकि यहलोग गायकवार के शत्रुहैं और गायकवारपर मुकद्दमासाबित करनाचाहते हैं

जोतोहमत किपुलिसके अफ़सरों को लगाईहै निश्चय है कि कि कमींशनके मेम्बर उसका कुछ विचार नकरेंगे कोईवजह उनपर कलंकलगाने की नहींहै उन्होंने कोई काम ऐसानहीं कियाहै जिससे उनकोलज्जा प्राप्तहो॥

मेरेदोस्त सरजन्टबेलनटायन साहबने बड़धायह भीकहा हैकि लोगपुलिसके अफ़सरोंकोकलंकलगाते हैं परन्तु उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया यदि सरजन्ट बेलनटायन साहब इस देशको जानते तो थोड़ीसी बातें जोउन्होंने मुंहसे निकालींकदाचित् मुखपर न लाते विशेष कर ऐसी बातें जोपुलिस के लिये इलजाम की तौरपर कहीं हैं बहुतसे लोगों की राय पुलिसके लिये अच्छीनहीं है विशेष कर वहलोग अधिक तर नापसन्दकरते हैं जिनका चालचलन खराबहै वहलोग कभी पुलिसकोअच्छानहीं कहेंगे क्योंकि पुलिसकेलोग ऐसे२ लोगों की सर्व्वदादेखभालीकरतेहैं मेरे मित्रकोलोगोंने सिखाया है कि मिस्टरस्कूटरसाहब जानबूझकर उस कमरेसे चलेगयेजब कि रावजी की पेटी देखी जातीथी और उनकेचलेजानेसेयह प्रयोजनथाकि अगरपेटीकी तलाशी अकबरअलीको सौपूंगा तो उसमेंसे कोई नकोई बस्तु अवश्यनिकलेगी—सरजन्टबेलनटायनसाहब अतिप्रतिष्ठितमनुष्यको यह कलंक लगाते हैं मेरे विचारसे सरजन्टबेलनटायनसाहबके सलाहकार खराबथेयहां के लोग मिस्टरस्कूटरसाहबको खूबजानतेहैं क्योंकि बहुतकालसे वह यहांहैं और उनकोक्रियाकुशलतासे कम्पीनियन आफ़दी स्टारआफ़इण्डियातमग़ा मिलाहै चाहेयह तमग़ा छोटेदरजे का है परन्तु ऐसेहीतमग़े कमीशनकेमेम्बर पहिनेहुयेहैंचाहो बहुतमग़े कुछ बड़े दरजे के पहिने हुये हैं इस बात को भी जानेदो यदिवह इंगलिश जन्टलमैन* हैं सरजन्ट बेलनटायन

---

* अर्थात् रईस॥

साहबको चाहियेथाकिउनकोऐसी तोहमतसेबरीरखतेपरन्तु उनको इसबातका भी कुछ विचार न हुवा॥

मिस्टरसूटरसाहब को अपनी प्रतिष्ठा का बड़ा खयाल है जिस तरह मुझको और मेरे मित्रको अपनी २ प्रतिष्ठाका है कोईमनुष्य नहीं चाहताकि वह बदनाम हों॥

सरजन्टबेलनटायनसाहबने जोइसप्रकार कीवार्त्तापेशकीहै उससेमुकद्दमेके खण्डनमें कुछमदद नहींहुई मिस्टरसूटरसाहबकेलिये कदाचित् ऐसानहीं समझा जासक्ता कियह अपने आधीनी मनुष्योंके हाथमेंएक खिलौनाथे और न यह खयाल होसक्ताहै कियहअपने हृदयमें गायकवार कीखराबीऔरअप्रतिष्ठाको चाहतेहैं यदिमिस्टर सूटरसाहब की कारवाई बुराईके योग्यहोतीतो जबउनकेइजहारमें प्रश्नकिये गयेथेतो क्योंउनको इलजाम नहीं दियागया तब सरजन्ट बेलनटायन साहबकुछन बोले मैनेबड़े अफ्सोसके साथ उनबातोंको सुना जोमेरे दोस्तने अपनीस्पीचमेंमिस्टरसूटर साहबके लियेवर्णन कींउनपुलिस केअफ्सरोंकी कारवाई जिनको गवर्न्मेण्टने इसमुकद्दमेमें नियतकिया था किसी प्रकारसे एतिराज और गुफ्तगूके लायकनहींहै गवर्न्मेण्ट उनकीक्रिया कुशलताको खूबजानतीहै औरसुनको निश्चयहै जबखूबगौर किया जावेगा तो उनपर किसी प्रकार का अपराधन लगेगा मुझको अपने मित्रसे यहबातभी पूछनीउचितहै कियुलिस को गायकवार परमुकद्दमा खड़ाकरनेसे क्यालाभथा क्यामेरे दोस्तयहांइस बातके कहनेको आयेहैं कियगवर्न्मेण्टकीहिकमत अमलीयह थीकि अवश्यहो मल्हरराव कोगद्दीसे उतारदें हालांकिऐसा बिचारनथा और नहोगा पुलिसके लोगकेवल इसलिये आये थेकिवास्तवमें विषदियागयावानहीं यदिबम्बईके पुलिसवालों को मल्हरराव केगद्दीसे उतारनेकी इच्छाथी तोवहदामोदर पंथके द्वारासुगमता पूर्व्वक गद्दीसेउतार दिये जातेहालांकि पुलिसको गायकवार के खराब होनेसे कोई फायदा नहीं है

और कोई वजह गायकवार पर तोहमत रखने की न थी ॥

गवाहोंकी गवाहीसे साफ़प्रकट है कि जितनी तहकीकात हुई वह सबठीकहै इसलिये मैं चाहताहूं कि मेम्बरान् कमीशन अपनेमनसे वहबातेंदूरकरदें जो पुलिसकेलियेवर्णनकीगईं इससुकद्दमेको पुलिसने नहींबनायाहै यदिपुलिसने गवाहों कोसिखाया होतातो गवाह एकही बातकहते थोड़ासा जो अन्तर है वह कदाचित नहोता इससे प्रकट है कि पुलिसने सिवायअपनेकामके और कोईकाररवाई नहींकी पहिलेथोड़ा पतालगाया फिरबहुतसे हालमालूम हुयेपहिले गाड़ीवालों सेकुछपतालगाया वहपरस्पर बातें करतेथे कि हम आयाको गायकवारकेपासलेगये फिरदामोदरपन्थने इकरार कियाजित नाहाल मालूमहोता गयापुलिससेभी तहकीकात बढ़तीगई ॥

मेरेदोस्तने अपनीस्पीचमें थिकंजा आदिका वर्णनकियाहै कि पुलिसने गवाहोंको क्याकष्टदिया परन्तु यहबात अद्भुतहै कि पुलिसने इतनीसख़्तीकी और इससख़्तीके लियेरेजीडन्सीका एककमराजोखानेके कमरेकेबराबरहै सुकर्रर याबहुधासरल्यू-इसपीलो साहब वहां आयाजाया करतेहोंगे क्या सरल्यूइस-पीलीसाहबकोभी मेरेदोस्त इससख़्तीके करनेमें शरीककरतेहैं यह कमरा अलगनथा उसमेंसे सब लोगों का आवागमनथा पुलिसको कबऐसी अवसरमिली जोगवाहोंपर सख़्तीकीसुझको निश्चयहै कि इसविषयमें जोमेरेमित्रने वार्त्तापेश कीहैउसको कमीशनके मेम्बरनमानेंगे जोनमानेंगेतोजो अपराधगायकवार परधरागयाहै तोवह ठीकहै ॥

दूसरी बात यह है कि सरल्यूइसपीली साहब बड़ेदिन की छुट्टियोंमें बम्बईको जाने वालेथे परन्तु जब उन्होंने सुना कि रावजीने किसीबातको कुबूलकियाहैतो उन्होंने अपना जाना मुलतवीकिया यदिवह चले जातेतो कुछ तहकीकात नहोती इसबातसे प्रकटहैकि पुलिसकी इच्छासुकद्दमेके खड़ेकरनेकी नथी-माईलार्ड-दूसरीबात जिसकोमेरे मित्रवर्णन करतेहैंयह

है कि बहुत से गवाह जो पेशहुये हैं वह गायकवारके संयुक्त थे इसलिये उनकीगवाही निश्चय माननेके योग्य नहींहै हर मनुष्य जो अदालत की काररवाई को कुछ भी जानता है वह जानता होगा कि ऐसी गवाही में बहुत से सन्देह हैं परन्तु इनलोगोंकी गवाही इसप्रकारसे लीगईकि किसीप्रकार का संदेह नहींहोसक्ता और हिंदुस्तान में कोईऐसा कानून नहींहै कि मनुष्यकी गवाही जो अपराधमें संयुक्तहो ठीक समझीजावे–इङ्गलिस्तानमें यहरीति है कि जबकोईमनुष्य जो अपराध करनेमेंसंयुक्तहो गवाहीदेताहै तो जजसाहब जूरी को हिदायतकरतेहैं कि जबतक ऐसेमनुष्यके बयानकी सिदाकत नहोजावे तो जूरीउसका निश्चयनकरें परन्तु श्रीमान् लार्डचीफजस्टिस इसबात कोभी जानतेहोंगे कि यदि जजजूरी के लोगोंको ऐसीहिदायत नकरे तो कुछहानि नहीं है॥

हिंदुस्तानमें अगर अपराधीकेसम्बन्धीके बयानपर मुख्यअपराधीको दण्डदियाजावे तो वहअनरीति दण्ड नहींहै–मैंने इसको इसलिये कहाकि मेरेमित्र सरजन्हबेलनटायनसाहबने जोस्पीच दी उससे सबलोगों को मालूम होगया था किजर्म्म के शरीककी गवाही तसलीम के लायक नहींहै इसके विशेष इसमुकद्दमेकी गवाही बहुतकुछ होचुकीहै॥

मेरेमित्रने गायकवारकी काररवाई केलियेबहुतकुछ कहा हैतोअर्थात्जबउनको मालूमहुवाथाकिकरनैलफियरसाहब को विष दियागयाहै तो उन्होंने रावजीका बयान नहींसुना था जबउनसे कहागया किआपका नामविषदेनेमें शामिलहै तो मेरेमित्रकहतेहैं कि महाराजासाहबकी बातेंनिर्दोष मनुष्यके सदृशथीं और उन्होंने रेजीडण्टसाहबके बुलानेके अनुसार उसीसमय सालिम और यशवन्तराव को भेजदिया परन्तु मैं कहताहूं किउनके भेजनेसे वहक्योंकर इन्कार करसक्तेथेदादाभाईनूरूजीको जोउनके दीवानथेसालिम और यशवन्तराव

केवास्ते लिखागयाथा—कुछ संदेहनहींहै किउन्होंने महाराजा साहबको सलाह दीहो किआपदोनों मनुष्योंको भेजदीजिये इसकेसिवाय महाराजासाहब आपहो जानतेथे कि इनलोगों का भेजना उचितहै और सिवाय इसके और कोईबातअच्छी नहींहै महाराजासाहबकी इसकारवाईसे उनकीनिर्दोषता प्रतीत नहींहोती इसमेंभी संदेह नहींहै कि महाराजासाहब लड़ाईका निशान खड़ाकरसक्तेथेया भागसक्तेथेपरन्तु इनदोनों सूरतोंमें जुर्म्मका इकरार मुतसव्विरथा इसलियेएशियाकेनिवासियोंकी प्रकृतिके अनुकूल उन्होंने कारवाई की और एशियाहीके निवासीनहीं किन्तुहरमनुष्य जोऐसीदशामेंहोता वहइसी तरहकरता जैसाकि महाराजा साहबनेकियासिवाय इसकेऔरकोई उनको उपायनथा किचुपचापहोकर मुकद्दमे कापरिणाम देखेंयदि दामोदरपंथके इत्तहार देखे जावें तो उनकोखूब मालूमहोगा किगायकवारने क्या२ बातें कीं और वहक्यों चुपहोरहे गायकवार पहिलेसे केवलयही बात नहीं जानतेथे कि ९-नवम्बर को बिषदेने का उद्योगहोगा किन्तु उनको यहभीमालूम हुवाकि उद्योगहुवा और निष्फलहुवा गायकवार इसमुआमलेकी कारवाई कोगौरसेदेखतेथे और औरक्षणप्रति क्षणकीवह खबरमंगाते थे दामोदरपंथने वर्णन कियाहै किकभीतो गायकवार प्रसन्नहोतेथे औरकदापिभयमान होते और महाराजाने रावजीकी बुद्धिकी बड़ी प्रशंसा कीऔर खुश हो२ कर कहतेथेकिमैं भले प्रकार जानताहूं कि तुमपर अपराध नलगेगा जब सालिम और यशवन्तराव रेजीडन्सीसे उनकेपास लौटआयेतो गायकवारको कैसीप्रसन्नताहुई परन्तु जबवह फिरबुलायेगये तो गायकवारको भय होगया औरउनके भेजनेके समयउनको खूबसमझा दिया कि तुम्हारेसाथ जोचाहेंकरें परन्तु तुमको ईबातन कहना दरहकीकत इनलोगोंपरगायकवार काएतिवारगलतनथा क्योंकि उन्होंनेअबतक कोईबातमुंहसे नहींनिकाली उन्होंने गायक-

वारकी ओरसे कुछगवाहीभी नहींदी गवाहीसे अबतककोई बातनहींपाई गईजिससे गायकवार काबरीहोनासाबित हो औरन उनकीकिसी अपनीकाररवाईसे पाया जाताहै किमहाराजा साहबपरजो अपराधलगाहै वहगलत है उनपरजो चार दोषलगायेगयेवहयहहैं पहिलेमल्हरारावने कारिन्दोंके द्वारा वा अपने आपरेजीडन्सीके नौकरोंसे जो करनैलफियरसाहबके पासथे गुप्त वार्त्ताकी किवहकिसी बुरे कामकोकरें ॥

दूसरे—क्या मल्हरारावने रेजीडन्सीके नौकरोंकोकुछरिश्वत दी या दिलाई ॥

तीसरे—यहरिश्वत इसप्रयोजन सेदीया दिलाईकि करनैल फियरसाहबकेनौकर सुखबिरोंकी तौरपर कामदें किकरनैल फियरसाहबको दुःख पहुंचेवा विषदेकर उनको मारडालें ॥

चौथे—क्यावास्तवमें करनैलफियर साहबको विषदिये जाने काउद्योगकियागयाथा और क्यायहबातमल्हरारावनेसिखाईथी

माईलार्ड—तीसरे और चौथे अपराध में विषका वर्णनहै पहिलेऔर दूसरेजुर्म्ममेरेजीडन्सीके नौकरोंकोरिश्वतदेनेका बयानहै जिससेकि उनको रेजीडन्सीकी खबरेंमिला करें मेरे दोस्तने अपनीस्पीचमें एकछोटे अपराधके लिये जिक्रकियाहै परन्तु जोबड़ा अपराधहै उसका कुछ जिक्रनहीं किया और जो गायकवारने लेख पेश कियाहै उसमें कुछ बातोंका इक़रारभीहै और वहबयानयहहै—मैं सौगन्दखाकर वर्णनकरता हूंकिमैंने अपनेआप वाकिसीनौकरकेद्वारा करनैलफियरसाहब के प्राणलेने के वास्ते अथवा उनकेप्राणलेने के उद्योगसे विष नहींमंगाया औरनमैंनेअपनेआप वाकिसी विश्वसित मनुष्यके द्वाराऐसेइरादेकी तरगीबदी और मैंबयानकरताहूंकि अमीना आया और रावजी और नरसू और दामोदरपन्थकीगवाही बिल्कुल गलत है ॥

और मैं यहभी कहताहूं कि मैंने अपनेआप किसी रेजीडन्सीकेनौकरसे यहबातनहींचाहीकि सुखबिरकी तौरपरकाम

करे और रेज़ीडन्सीमेंजितनी कारर्वाई होतीहैं उसकीमुझ-को इत्तिलादे न मैंनेइनलोगोंको इसकामके वास्ते रिश्वतदी नदिलाई ॥

मैं उन इनआमों का ज़िक्र नहीं करता जो समय २ पर रेज़ीडन्सीके नौकरोंको दियेगयेपरन्तुजबकभी कोईविवाहअ-थवात्यौहारहुवा तो पारितोषकदियागया रेज़ीडन्सीकेनौकर मेरे महलमें और मेरेमहलसे रेज़ीडन्सीको आतेजाते होंगे परन्तु मैंनेइससुआमिलेमें बार्त्तानहींकी और न मैं जानता हूं किरेज़ीडन्सीकेनौकरोंको कितना २ रुपयादियागया मैंनेकभी इसबातकी आज्ञानहींदी कि ऐसाउपाय किया जाय जिससे कि रेज़ीडन्सीकी खबरें मेरेपास आयाकरें ॥

माईलार्ड—आपको पूर्व्वोक्तवर्णन से मालूमहुवा होगाकि वह यहनहीं लिखतेकि नमैंने अपनेहाथसे रिश्वतदी अथवा अपनेविश्वसित मनुष्योंसे रेज़ीडन्सीकेनौकरोंको दिलवाईवह बड़े २ जुर्मोंकेलिये लिखतेहैं और इसबातसे इन्कार करतेहैं कि मैंनेस्वत: ऐसा नहीं किया परन्तु इनआमकादेनामानते हैं उनकायह इकरार बहुतबड़ाहै उनकेसम्पूर्ण बयान का यह सारांशहैकिमैंनेस्वत:किसीनौकरसेकोईबुरीबातनहींकहीऔर नमैंने अपनेहाथसे किसीकोरुपयादियापरन्तु एकपेचदारतौर से वह रुपयेकादिया जानाकहतेहैंकि अपनेनौकरों से रुपया दिलाया मुझकोउचित नहीं है कि इसबातकाविस्तारकरूंकि उनखबरों मेंजो गायकवारके पासआईं और उनमेंजो करनैल साहबकेपास पहुंचींक्या अन्तरहै चाहेदोनों प्रकारकीखबरों मेंबड़ा अन्तरहै सरकारकी ओरसे जोरेजीडण्ट नियतथेउनके पासजोलोग आतेथेवह आपही उनको हरएक खबरदेते थे परन्तुएकहिंदुस्तानी रईसकाखबरोंके मिलनेके वास्तेरेजीडन्सी के नौकरोंको रिश्वतदेना और बातहै और गायकवारने यह कारर्वाई बुरीबातोंके वास्तेकीथी रिश्वतदेने कामहाराजा साहब आपभी इकरारकरतेहैं और गवाहोंकी गवाहीसे भी

उसकीसत्यता सूचितहोती है मुझकोनिश्चयहै कि कमीशन के मेम्बरोंको इसबात का आश्चर्य्यनहोगा किरेजीडन्सीके नौकर महाराजासाहब केपासगये और नइसबातमेंआश्चर्य्यहै किजो अमीनाआयाने वर्णनकियाहरएक गवाहकाबयान ठीकहैकि नजरबागकी तरफसे रेजीडन्सीके नौकरगये और जिसकमरे मेंशीशे रक्खेहैं वहां महाराजासाहबसे मुलाकातहुई गवाहोंने यहनहीं वर्णनकियाहै किहमने गायकवार का सम्पूर्ण भवनदेखाहै और उसकोसैरकीहै एकबेर प्रश्नकिया गयाथा कितुमने कमरों कोभी देखाहै गवाहोंने इन्कार किया जिस कमरेका यज्ञजिक्र करतेहैं उसीकमरेका जिक्रदामोदरपंथ भीकरताहै उससेबेहतर और कौनशख्स जाननेवाला होगा और इसबातकी सिद्धाकत इसतरहसे होतीहै कि उनदिनों महाराजासाहब उसीकमरेमें रहाकरतेथे आज मेरे मित्रने अपनी तकरीरमें यशवन्त और सालिमको कुछ बुराई की है यहदोनों मनुष्य गायकवारके नौकरहैं जब गायकवार रेजी-डन्सीको जातेथे यहभी उनकेसाथहोतेथे इसलिये कुछआ-श्चर्य्यनहीं कि वह गायकवारके विश्वसित हैं और वह रेजी-डन्सीकेनौकरोंसे मिलगयेथे मेरेदोस्त इसबातको मानतेहैंकि गाड़ीवालोंने जो इजहार दियेहैं उनमें कुछ एतिराज करें परन्तु आपसाहिबोंको स्मर्णहोगा कि पहिलेइस मुकद्दमेका पता एक गाड़ीवाले की जवानी लगाथा इसके लिये सरजन्ह बेल्लनटायन साहब कहते हैं कि आया महल के नौकरों से मुलाकात करनेके लियेगई होगीजोऐसा होताउसकोराचिके समयवहां जानेकी क्या जरूरतथी रावजीको सदैवभयथा और अपनेसाथकिसी नकिसीमनुष्यकोलेजाताथा कभीजुग्गाकोभी लेगया और कभी कारभाईको मेरेमित्र कहते हैं कियहबात असम्भवितहै किऐसाबड़ाईसएक आयासेवार्त्ताकरे परन्तुजो हिन्दुस्तानी दरबारके नौकरहोतेहैं उनसेरेजीडन्सी केनौकरों सेबड़ा अन्तरहै एकदरबार कामुख्यनौकर अर्थात्दामोदरपंथ

महलमें नहींरहताथा इसलियेमल्हरराव कोसुनासिबमालूम हुवाकिरेजीडन्सीके नौकरोंसेसाजिश करेंताकिवहां कीखबरें मालूमहुवाकरें इसलियेराचिकेसमयउचितसमझागयाक्योंकि किसीकोकुछखयाल नहुवाहोगा और जानतेहोंगेकि रेजीडन्सीके नौकरअपनेकिसी कामको जातेहैंकिसीमनुष्यकोमहाराजासाहब के पासराचिकेसमय जानेसे कुछ गुमान नथा॥

मेरेमित्र अपनीतकरीरमें यहबात पेशनहीं करतेकि ऐसे मौकेपर महाराजा साहबके बजाय और किसी मनुष्यने ऐसी बातेंकीहोंगीऔर ऐसीगुफ्तगूवहक्योंकरपेशकरतेक्योंकिमहाराजासाहबकापहिचाननाकुछ ऐसाकठिननथाजिसमनुष्य नेएकबेरभी महाराजासाहबको देखाहै उसकोयादहोगाइसलियेजो कमीशनके विचारसे सबगवाहोंकी गवाहीगलतहैतो आयाकी गवाहीभी गलतहै नहींतो उसकीगवाहीकी तसदीक़ होगई है और तीनबेर आयाका गायकवार के निकट जानासहीहै परन्तुहां उनलोगोंने जोमहाराजासाहबकेबातों के होनेके इजहारदियेथे उनकीसिदाकत एकदूसरेकेबयान से होसक्तीहै जोखत आयाने लिखवायेथे उनसेउसके इजहार की बखूबीसिदाकत होसक्तीहै आयाने यहपत्र अपने पतिको महाबलेश्वर नगरमें भेजेथे जबकि वह बाहरथी और जबको आया केघरकी तलाशी हुई तबयह पत्रमिले उनपर हरएक डाकखानेकी मोहरहै क्याइन मोहरोंपर भी मेरेमित्र गजानन्दका नामदेखतेहैं जबकि उन्होंने और जगहपर गजानन्द की कारवाईदेखी इनखतोंसे साबितहैकि महाराजासाहब से आयासेखतकिताबत होतीथी इससे साबितहुवाकि महाराजासाहब और रेजीडन्सीकेनौकरोंमें खतकिताबत औरगुप्त बार्त्ताकिसी बुरेकामकेलिये होतीथी॥

इसबातका कदाचित् खयाल नहीं होसक्ता कि एकरईस खानसामां आदिको इतनोरिश्वतदेकि जोबातेंमेजपरहों उन की खबरें वहपहुंचायाकरे इसकारवाईसे कोईउत्तम प्रयो-

जनहोविशेषकरके उससमयकी कारर्वाई जबकि मीडसाहब की कमीशन बड़ौदेमेंबैठथी—पसऐसी खबरोंकेमिलनेका प्रबन्ध कमीशनके दिनोंमेंरहा क्योंकि महाराजासाहब जानतेथेकि जैसी २ खबरें मुझको मिलेंउसी प्रकारका मैं इन्तिज़ामकरूं यशवन्तरावनेभी और चिट्ठियोंमेंसे एकचिट्ठीकोतसलीमकिया किन्तुवहराजीथा कि जो गवाहीलीजावेतो वहअपने स्वामी के प्रतिकूलगवाही दे यशवन्तरावने वहदुकानशराबकीबताई जिसको महाराजागायकवारने जारीकिया था जबसर्राफ से पूछागयातो उसनेभी बयानकिया कि एकबेर जबकि दामोदरपंथ नथे तो महाराजा साहबने मुझसे एकचिट्ठीको पढ़वाया जोरेज़ीडन्सीसे आईथी पढ़नेके उपरान्त जब दामोदर पंथआगये थेतोमैंने वहचिट्ठीउनकोदेदी वहकहताहैकि इस प्रकार की खत किताबत रेज़ीडन्सीसे हररोज़होतीथी॥

दामोदरपंथभी इसबातको तसदीककरता हैकि यहकारर्वाईरेज़ीडन्सीकी केवलरोजमर्राकेबातोंकीनथी क्योंकिउस कीबड़ी २कारर्वाइयां हुईंक्योंकि दामोदरपन्थने बर्णनकिया हैकि रावजी यमुनाबाईको अर्जीचुरालायाथा और दामोदर पन्थने उसकीनकल लिखलीथी यहकाग़ज़ बहुतबड़ाथा और रावजीनेफिरउसको करनैलफियरसाहबकोमेज़पर लेजाकर रखदिया था—महाराजा साहबने पंखेवाले और हवालदार और आया और नौकरोंको इस प्रयोजनसे बुलवायाथा कि करनैल फियरसाहब ऐसेछोटे २ नौकरोंके बुलानेमेंकुछशंका नकरेंगे उनकोइसबातका निस्संदेहखयालथाकि जहांतक होसकेफियरसाहब और बेबीसाहबकी मेमकेरूबरू महाराजा साहबकी प्रशंसा कीजावे॥

उन्होंने पेडरू खानसामां को भी बुलायाथा क्योंकि यह मनुष्यबहुत पुरानानौकरथा और साहबकी प्रकृतिखूब जानता थाऔरचंकिवह खानसामांथा मेज़पर जितनी किबातें होती होंगीउनको सुनाकरता होगा॥

माईलार्ड—क्या आप समझतेहोंगे किजो रुपया उनलोगों कोदियागयाथा वहरिश्वतमें नथामेरे अतिप्रवीण मित्रकहते हैंकिपांचसौ रुपयेएक छोटीसी रकमथी हांकईलोग उसको थोड़ारुपया समझतेहैं परन्तु जिसमनुष्यका दसरुपये मासिक है उसकेविचारमें यहथोड़ारुपया नहीहैइसबातपर उज्रनहीं कियागया कियह रुपयारावजीको नहींमिला॥

दलपतराय मुहर्रिर इसरुपयेका दिया जाना साबित करताहै यशवन्तरावको अपने पाससे रुपयेदेनेकी क्या जरूरत थी सरजन्टवेलनटायनसाहब ने कहा है कि यशवन्तराव एक छोटाआदमीथा और आश्चर्यनहीं कि दामोदरपन्थका नौकरहो—परन्तु मैंकहताहूं किउसको क्याप्रयोजनथा कियह रावजीकोखबरोंके मंगानेकेलिये रुपयादेता और इतनाबज़त रुपयाअर्थात् पांचसौका दियाजाना बज़तबड़ीबातहै॥

सरजन्टवेलनटायन साहब कहतेहैं कि यह पांचसौ रुपये तबदियेगये जबविषका कुछजिक्र नथा—कमीशनके मेम्बरोंको स्मर्णहोगा कि यशवन्तराव गायकवारका विश्वसित नौकर था और इसमनुष्यने रेजीडन्सीके नौकरोंको महाराजासाहबके रूबरू पेश कियाथा इसलिये प्रकटहै कि जोरुपयाइन लोगोंको दियागया महाराजासाहबने दिया और दामोदरपन्थनेनहींदिया यहपांचसौ रुपयेरावजीको खबरोंकेपहुंचानेकेलिये दियेगयेथे जबवह नौसारीसे लौटकर आयातो आठ सौरुपये उसनेपायेथे जोपरस्पर नरसूने और उसनेबांट लिये इससूरतमें दोमहीनेके बीचमेंबड़ी २ दोरक़में उन्होंने पाईं॥

यहरुपया महाराजासाहबके विचारमें अधिकनथा परन्तु जिनलोगोंका मासिकदसबारह अथवा चौदह रुपये होतो उनके लिये बज़त है और चार २ पांच २ सौ यकमुश्तपाना निहायत गनीमत समझतेहोंगे पेडरूकहताहै किजबमैंगोवा कोजाताथा तोपचास रुपयेमुझको मिलेथे परन्तु यहजाहर नहीं कियागया कि यह रुपये उसको किस लिये मिलेहोंगे

फिरशेखकरीमजो आयाके साथथावहभीमेजकेकामपरनौकर थाजबवह आयाकेसाथ गयातो सौरुपये उसकोभी मिलेथे ॥

दामोदरपन्थके हिसाबदेखतेही आपको मालूम होगा कि निजकेकोषसेइतनारुपयादियागया किसिवायरिश्वतकेपारितोषकका सन्देह माचनहींहोसक्ता १९जनवरीसन् १८७४ई० को छ:सौ रुपये यशवन्तरावको दियेगये और उन्ही दिनोंमें यशवन्तरावने पांचसौ रुपये अपने नौकर दलपतको दियेथे और दलपतने बहीरुपये रावजीको दियेछ:सौ रुपयोंमेंसेसौ रुपये यशवन्तनेदस्तूरके मुआफिक दून मुआमिलोंके रखलिये आपको उस कागजके देखनेसे जिसपर (ए)अक्षरका नम्बर है मालूमहोगा कि हजाररुपया कोषसेदिलायागया यहरुपया तब दिलाया गयाथा जबकि महाराजासाहब नौसारीसे लौट कर आयेथे दूसराकागजदोसौरुपयेके दिलानेकेलियेहै जिस पर[एन]अक्षरनम्बर अ काचिन्हलगाहैउसकी तारीख१५ मई सन् १८७४ई० है यह रुपयाबहहै जोकरीम और आया को दिलायागया सिवाय इसकेउनदिनोंकुछरुपयानिजके कोष से सालिमऔर यशवन्तराव को दियागया जबकि रेजीडन्सी के नौकर रुपये का पानाबयानकरते हैं इसबातका कुछ खयाल नहींहोसक्ता कि यहरुपया दामोदरपन्थने अपनेकिसी कामके लिये सालिमऔर यशवन्तरावको दियाहो वा यहकिसालिम और यशवन्तराव दामोदरपन्थ के विश्वसित थे यद्यपि यह रुपया दामोदरपन्थ के कोषसे दिया गया परन्तु महाराजा साहब की आज्ञा से दियागया ॥

यहप्रकटहै कि रावजीको अवश्यही रुपया मिला औरवजूहातसे पुलिसकेखयाल रुजूहोनेकी एकवजहयहभीथी उसने बहुतकुछ अक्टबर और फरेवरी और मार्चमें जेवर बनवाया इसमें सन्देह नहींकि यहरुपया गायकवारकेखजानेसेउनकी आज्ञाके अनुकूल रेजीडन्सीके नौकरोंको इसप्रयोजनसे दियागयाथा कि वहलोग खबरें पहुंचायाकरें श्रीमान् गायकवार

के उज्जपरकुछखयाल कियाजाताहै जबवह कहतेहैं किरेजी-डन्सीकेनौकरोंसे मेरीकुछबातचीतनथी परन्तुइसबातसे इन्कारनहींकरते कि किसीनकिसी प्रकारसेउनकोखतकिताबत थी उनकोइनआमदेनेसेभी इन्कारनहींहैइससे पारितोषककेदेने का जुर्म्म आपही अपनी जुबानी इक़रार करतेहैं—माईलार्ड मेरेमिचने बर्णन कियाहै कि गायकवारके सम्मतीबड़ेखराबथे इसबातकोमैंभी मानताहूं वास्तवमें महाराजासाहबके सम्मती बड़े दुष्टथे मैंदामोदरपन्थकी ओरसेकोईउज्जपेशनहींकरता॥

सरजन्टबेकन टायनसाहबने जोकुछ कहा उसको सुनकर नसुझको दामोदरपन्थकी ओरसेक्रोधआया और नकुछअफ-सोसहुवा दामोदरपन्थने जोइजहार दिये उससे मालूमहुवा किवहखराबआदमी है और उसने बुरे २ कामकिये परन्तु गायकवारको क्या कहाजावे कि उन्होंनेऐसेमनुष्यकोअपना प्राईवेटसीक्रेटरीनियतकिया औरविषदियेजानेकीतहकीकात केप्रारम्भ होनेकेप्रथम उन्होंने सरल्यूइसपीली साहबके रूबरू पेशकरके कहाथा कियह मनुष्यमेरा प्राईवेटसिक्रेटरी और बहुत बिश्वसितहै क्यायह कहकरभी गायकवार इन्कार कर सक्तेहैं कि यहमनुष्य हमारा प्राईवेटसिक्रेटरी नथा औरजो कामइसने कियेउसमें हमारीआज्ञानथी—सालिम और यश-वन्तरावकेलिये सरजन्टबेकन टायनसाहब कहतेहैंकियहदोनों मनुष्यबड़े दुष्टथे उन्होंने दामोदरपन्थकी आज्ञामानी परन्तु ऐसाखयाल कबहोसक्ताहै किप्राईवेटसिक्रेटरीकी आज्ञामान-ते और महाराजासाहबकी आज्ञाउल्लंघन करते इसमें कुछ सन्देहनहींहै कि यहसब काररवाई हुईहै जो एक गवाहने ऐसाबर्णनकियाकि सबकाम मैंनेअपनेस्वामीकीआज्ञासे किये तो कदाचित् उसकी गवाही झूठनहीं होसक्ती मेरे मिचने कहाहै किदामोदरपन्थ यशवन्तराव और सालिमने विषदेने काउद्योग किया होगा और महाराजा साहब पर अपराध लगायापरन्तु यहबात नहींहै महाराजा साहबको इनलोगों

से बढ़कर और आदमी इस कार्य्य के लियेन मिलते अर्थात् एक प्राईवेटसीक्रेटर और दो विश्वसित नौकर॥

सरजन्हबेलनटायनसाहबने इसविषयमेंसंदेहकेतौरपरकहा किशायद ९–नवम्बरकोकरनैल फियरसाहबको विषदियागया औरतलछटकी रंगतकेलियेबहुतकुछबार्त्ता कीहैपरन्तु डाक्टर सीवर्डसाहबके इजहारसे विषहोनेकी सत्यता सूचित होगई यद्यपि सरजन्हबेलनटायनसाहबने इसअम्बकेलिये बहुत कुछ बयानकिया परन्तुउनकी सबबातेंवृथाहैं यदिकमीशनके मेम्बर उसगवाही परगौरकरेंगे जिसमेंतलछट काजिक्रहै तोमालूम होगाकि जबगिलासमें तलछट देखागयातो वहस्याहीमाइल था औरउसमेंकुछ गर्बतभीथा चूंकि चकोतरे काग्रर्बतथाइस सेउसकीरंगतगुलाबीथी औरजबकरनैलफियरसाहबने उसको देखातो कुछबिषपी चुकेथे औरउनका शिर घूमरहाथा और नेत्रोंमेंअश्रु भरआयेथेसो करनैलफियरसाहबकी ऐसीहालतथी किवहभलेप्रकाररंगको पहिचानसके डाक्टरसीवर्डनेनिश्चंदेह तिलछटकोभलेप्रकार अवलोकनकियाऔरएकबात औरहैकि जिस गिलासमें यहग्रर्बतथाउसकाभी रंगस्याहीमाइलथायदि श्वेतरंग कीबस्तुभी उसमेंडालीजाती तोकालीहोदीखतीऔर मिस्टरअनवरारटीसाहबने वर्णनकियाहैकिकईलोगोंकोरंगत कीतमीजनहींहोतीहै जोकिकरनैल फियरसाहबनेयहगिलास तिरछाकरके तिलछटको देखाथानिश्चयहै किगिलासकीछाया इसतिलछट परभी पड़ीहोगी करनैलफियरसाहब का बयानहै जबकिवहबिषपियेहुयेथे जोकुछहोपरन्तु डाक्टरसीवर्डसाहब हरप्रकारसेसावधानथेउन्होंनेतलछटखूबगौरसेदेखाडाक्टरसा-हबकरनैलसाहबके बुलानेसेआयेथे जबउनसेतलछटकीपरीक्षा केलियेकहा गयातोउन्होंने जिसतरह उचितसमझा उसकी परीक्षाकी पहिलेजब उन्होंनेउसको प्रकाशमें देखातो उसकी गतभूरी प्रतीतहुई मेरेमित्र सरजन्हबेलनटाइन साहब राव

जीका बयानकहते हैंकि जबपुड़िया मुझकोमिली थीतो उस कीरंगतस्याही माइलथी परन्तुयह बात सबको मालूम हैकि हिन्दुस्तानी आदमीरंगको खूबबयान नहींकरसक्ते जबउससे प्रश्न कियागया किजो टोपियां अदालतमें रक्खी हैं उनमेंसे किसरंगकेअनुसारपुड़िया कारंगथातोउसनेउसटोपीकीरतफ सैनकीजिसकी रंगतभूरीथी जिसतरह किडाक्टरसीवर्डसाहब नेतलछटका इमतिहानकिया कुछसंदेह नहींकि इससे उत्तम आजमाइश होसक्तीथी और डाक्टरोंके मानिन्द आजमाइश की इसपरीक्षाके आनन्तरमालूम हुवाकिउसमें संखिया और हीरेकाचूर्ण हैडाक्टरसीवर्डसाहबने नलकीमेंडालकर संखिया निश्चयकी और खुर्दबीनसे पिसेहुयेहीरेकाहोनामालूम किया इससेबढ़कर संखिये की अजमाइश नहोसक्ती थी सहीहै कि डाक्टरसीवर्ड साहबने संखियेके छल्लेको जलाकर फिर उसको मूल रूपमें नहींलायापरन्तु इसछल्लेसे संखियेकाहोनासाबित होताहै यदिसंखियान होतीतो छल्लानपड़ता डाक्टरग्रे साहब नेकेवलएकही रीतिसेसंखियेकी परीक्षानली किन्तु कईप्रकार सेउसकोआजमाया और संखियेकोअलगकर दिया इससेबढ़ कर और आजमाइश नहोसक्तीथी इनसबबातोंसे कमीशनके मेम्बरोंको खूब मालूम होगा कि ९—नवम्बरको शर्बतमें विष मिलायागया और जबडाक्टरसीवर्ड साहबने जलके संयोग के पहिलेतलछटकोहिलायाथातोउसमेंसेगुबारसा मालूम हुवा॥

सरजन्टबेलनटायनसाहब इस बात को साबित करना चाहते हैं कि तलछटमें संखिया नथी किन्तु डाक्टर साहब ने जो जल डाला था उसमें संखिया थी परन्तु उनकी यह दलील इस बातसे रद्द हुई कि गोविन्द ने अपने इजहार में वर्णन कियाहै कि मैने पानीके कूजेको उसी दिनभरकर रक्खा था और मुखधोने की जो सुराहियां थीं उनमेंभी नवीन जल भरदियाथा फिर क्योंकर संखिया अथवा संखियेके सदृश कोई

वस्तु उसमें आसक्ती है हीरेके चूर्ण के लिये मेरे मिचने वर्णन कियाहै किवहहीरेका चूर्ण नथा यद्यपिउसकीवैसीहीपरीक्षा नहींली जिसतरह कि संखियेकी हुईथी परन्तु यहबात प्रगट है कि उसके जर्रे निहायत चमकते हुये और ऐसे कठोर थे कि जब दोशीशेके बीचमें रखकर रगड़े गयेतो शीशाछिलगया उसके लिये सरजएटबेलनटायनसाहब ने वर्णन किया है कि हीरेके सिवाय और भी बहुतसी कठोर वस्तुसंगखारा आदि होती हैं जिस से शीशा छिलजाता है परन्तु सरजएटबेलन टायनसाहब ने इस विषयमें जियादा तकरीर नहींकी इससे मालूमहोता है किवह कायल होगये परन्तु यहबात तो एक निर्बुद्धि मनुष्य भी कहसक्ता है कि संगखारा में इतनी चमक नहीं होसक्ती जैसी कि हीरेमें होतीहै सरजएट बेलनटायन साहबने डाक्टरग्रेसाहब के इजहारमें कुछजियादह प्रश्न नहीं किये क्योंकि वहजानतेथेकिजो अधिकप्रश्नकरूंगातो डाक्टर ग्रेसाहब मुजको क़ायल करदेंगे तो उसकी एक बातयहहै कि डाक्टर ग्रेसाहबको हीरेका हाल कुछमालूम नथा किन्तु उन्होंने आपही कहाथा कि यह चमकतेहुये जर्रे हीरेके हैं जो गवाही इनदोनों डाक्टरोंकी लीगई वहअलग२ लीगई और दोनोंने अपनी२ रीतिसे तलछट की परीक्षाली और दोनों की रायइसबात पर इकट्ठीहुई किसंखिया और हीरा मिलाहुवा था दोनोंडाक्टरोंने साफ२ बयानकिया किबहुतकुछआजमाइश कीगईऔरसिवायसंखिये और हीरेकेतीसरीकोईवस्तु मालूम न हुईजबकि डाक्टरग्रेसाहबनेकहाकिजो शर्बतगिलासका फेंक-दियाहै वहांकी मट्टीखुरचकरभेजदो तो वह मट्टी डाक्टरसी-वर्डसाहबके रूबरूखुरचीगई और डाक्टरग्रेसाहबके पासभेजी गई डाक्टरग्रेसाहबने जब उसकोभी आजमायातो उसमेंवही चीजेंमिलींथीं जोपहिली तलछटमेंमिलीथीतोइसमेंकुछसंदेह नहींहैकिकरनैलफियरसाहबको ९नवम्बरको विषदियागया॥

अब साढ़ेचार बज गये यदि प्रेजीडएट साहब के विचार

से उचितहोतो कमीशन बरखास्तकी जावे-तथाच अदालत बरखास्त हुई ॥

उन्नीसवें दिनका इजलास ॥

जब कमीशनकेमेम्बर एकचुके तो ऐडवकेटजनरलसाहब फिरस्पीचकहने लगे-उन्होंने वर्णनकियाकि मैंने कलकेदिन इसबातको साबितकियाथाकि महाराजासाहबने रेजीडन्सीके नौकरोंकेसाथ खबरोंकेमंगानेकेलिये मेलकियाथा और सालिम और यशवन्तरावकेद्वारा रिश्वतेंदेकरइसबुरे कामपरतय्यार कियाथा जिसका जिक्रतीसरे और चौथे जुर्म्ममेंहैं मैंनेइसबात को भी साबितकिया है कि ९-नवम्बर को करनैलफियरसाहब के विषदेनेका उद्योगकिया गयाथा और जो वस्तुकि शर्बतमें डालीगई वह हीरा और संखियाथा एक और बातपर कि अगरचे वहबड़ीबात नहींहै कमीशनकेमेम्बरोंको ध्यानकराता हूं वहयहहै कि करनैलफियरसाहबने खबर पाईथीकि उनको तूतिया और हीरे का चूर्ण दियाजावेगा और भावपूनाकरने बलवन्त राव से इसबात को सुना था परन्तु जब डाक्टरों ने आजमाइश की तो हीरा और संखियामिला तूतिया नथा सरजन्बेलनटायन साहबने इसविषयमें बहुतकुछ गुफ्तगूकी है और कहतेहैं किअगर तूतियाहोता तोउसी समयमुखमें तांबेका स्वादआजाता परन्तु विचारना चाहिये कि करनैल फियरसाहबको तांबेकास्वाद फौरन् नहींआगयाथा और डा क्टरोंने साबितकियाहै कि जिसमनुष्यको संखिया दीजातीहै कुछदेरके पीछे उसके मुखमें तांबेका स्वाद आजाताहै बेशक तांबेके जौहरका उसमें संयोग होना साबित नहींडाक्टर ग्रे साहबभी अपनी गवाही में कहतेहैं कि जो तांबे का जौहर होतातो तुरन्तही उसका मुखमें स्वाद आजाता इसविषयमें करनैलफियर साहबने ४८ और ४९ पृष्ठपरसाफ २ बयानकिया है करनैलफियर साहबआपभी कहतेहैं किमेरेमुखमें शीघ्रही तांबेका स्वादन आयाथा और किसीगवाही सेभी साबितनहीं

होता कि तांबेका जौहर शर्बत में डालागया होजो तलछट डाक्टरग्रेसाहब को भेजागया और फिर खुरचकर मट्टी भेजी गई उसमें डाक्टर साहबने ढाई चावल संखिया निकाली थी करनैलफियर साहबकी गवाहीसे खूबसाबित होगयाकिउस समयसे जबसे कि उन्होंने शर्बत पियाथा और उससमयतक किउन्होंने डाक्टरसीवर्ड साहबको तलछटदी किसीमनुष्यको गिलासके पासजाने और हाथलगानेका मौक़ा नमिलाथाफिर क्योंकरउसमें कोई वस्तु पड़सक्तीथी इससे प्रगटहै कि करनैल साहबके पलटनेके पहिले(हवाखोरीसे)गिलासमें संखियाडाली गईदूसरी एकबात जिसपर कि कमीशनके मेम्बरोंका खयाल रुजूकरना चाहताहूं यहहै किजो मानाजावे कि ९ नवम्बरको करनैलफियर साहबके गिलासमें विषडालागया तो यहबात बुद्धिमें नहींआती किछोटा आदमीउनके गिलासमें हीराऔर संखियाडाले जिस मनुष्यने हीरेका चूर्ण डालावह बड़ारुपये वालाहोगा किन्तुयहबातभी साबितहुई किवह शख़्सजानता था कि जितनीजरूरतहो रुपयाखर्च कियाजावे परन्तु मेरीजो इच्छाहै वहकिसी भांति पूर्णहो सरजन्बेलनटायनसाहब ने इस बातमें तक़रीरकी है कि भावप्रनाकर वा दामोदरपन्थने हीरा और संखिया करनैलफियर साहबके गिलास में डाला परन्तु किसीभांतिसे नहीं होसक्ता कि ऐसी बहुमूल्यवस्तु यह लोगडालतेपरन्तु हां होसक्ताहै कि गायकवारने हीरेका चूर्ण डालाहो उनको निश्चयथा किजो करनैलफियर साहबकोहीरा दियाजावेगा तो शीघ्रही मरजावेंगे क्योंकि वह जानतेथे कि हीरा निहायत मोहलकशैहै गायकवारकोहीराऔर संखिया दोनोंमिलसक्तेहैं संखियाहर मनुष्यको मिलसक्तीहै परन्तु हीरा बड़ीक़ीमती चीजहै इतनारुपया और कौनशख़्स खर्चकरसक्ता था अबमालूम हुवाकि एक मनुष्यने किसी हेतुके बिनाआठ पौंड संखिया मोल लिया परन्तु बड़ौदे में संखियेके मिलनेमें

दिक्कत होतीहै और सरजन्बेलनटायनसाहब ने कहा है कि फौजदारीके महकमेके सिवायऔर कहीं संखियानहीं मिलतीहै और दामोदरपन्थने एकफ़र्द पेशकियाहै जोउसीकेहाथका लिखाहै और वह कहताहै किमैंने महाराजा साहब की आज्ञासे इसकागज़को लिखाथा इस कागज़में ४ अक्टूबरसन् १८७४ ई० लिखीहै उसपर गणपतिराव और यशवन्तरावके दस्तखतहैं उसमेंयहभी लिखा हुवाहै कि फौजदारीसे आज्ञा केबिना संखिया नहीं मिलसक्ती है दामोदरपन्थने इसबातको सबित कियाहै कि अरदासियर वदिया फौजदारने कहा कि मैं महाराजासाहबसे पूछकरसंखिया दूंगा मिस्टर हरसुखजी अति प्रतिष्ठित मनुष्य हैं वह गत सप्ताह में बड़ौदेको आयेथे वहमुक़द्दमेके खण्डन करने के लिये नहीं बुलाये गयेथे परन्तु फिरभी वह कह सक्ते हैं कि दामोदर चिम्बक को फौजदारसे संखियानहीं मिलीथी और जोउसने अदालतमें पेशकिया है वहठीकहै—संखियेके मंगानेके लियेघोड़ेकी खारिशकाबहाना किया गयाथा परन्तु हक़ीकतमें साबित होगया कि करनैल साहबके देनेके लियेसंखिया मंगाईगईथी महाराजासाहब ने उसकागज़पर इसलिये दस्तखतनहीं कियेकि अगरमैंदस्तखत करूंगातो तहकीकात होनेपर मुझपर मुक़द्दमाखड़ा होजावेगा इसलिये उन्होंने दामोदरपन्थ से कहा कि जहांसे होसके संखियाले आओमेरे मित्रकहतेहैं किहीरेगायकवारके पास नयेजोबाहरसे मंगवायेगये उनदिनोंमें एकतलवारके मियान कब्जेपर हीरेजड़े जातेथे परन्तु कमीशनके अधिष्ठाताओं को खूबमालूम करनाचाहिये किकितने हीरे इस तलवारके कब्जे और मियानमें खर्चहुये होंगे क्योंकिजो कारीगर इसकब्जेको बनातेहैं वहीहीरोंके खर्चोंका हिसाबरखते होंगेऔरउनको भयहोगा कि अगर कोई हीरागुम होगया तो हम लोगपूछे जावेंगे औरजो कनीहीरेकी फ़तहचन्दसे मोल लीगई वहइस

वास्ते मोल लीगई कि तलवारके कब्जेपर लगाई जावेगी यह एक धोखाथा हालांकि वह पीसकर करनैलफियर साहब के शर्बतमें डालीगई मेरे दोस्तने फतहचन्द की गल्तियां करनैल फियर साहब की गलतियों के मद्दश्य बयान की है और कहतेहैं कि जिसतरह करनैल साहब इज़हार के वक्त घबरा गये थेउसीभांतिसे हेमचन्द फतहचन्द घबरागया होगा क्याखूब कहांकरनैल फियरसाहब की पदवी और कहां हेमचंद फतहचंदकी हैसियत–मेरेमित्र कहतेहैं कि दसहरेके दिनोंमेंआज्ञाहुईथी किहेमचंद फतहचंदछोटे २ हीरेलाकर पेशकरेतथा वह और जौहरीहीरे लाये अब फतहचंद कहता है कि वह हीरेमुझको लौटादिये गये परन्तु दामोदरपंथ कहताहै कि हीरेरखलिये गयेथे हेमचंद और दामोदर पंथ दोनोंने कहा हैकिजब हीरेनिकालेथे हमकोमालूम नथाकि क्योंमंगाये थे दामोदरपंथ और नानावलिल जोजवाहर खानेके दारोगाहैं और आत्माराम और रघुनाथजो जवाहरखानेके मुख्यमुहर्रर हैं वहसाबित करतेहैं कि हीरेमोल लियेगये दामोदर पंथने इसविषयमें ऐसावर्णनकिया हैकि हरगिज ऐसा नहींहोसक्ता इसलिये साबितहुवा कि २० अक्टूबर सन् १८७४ ई० कोहीरे कीकनी खरीदीगई॥

सरजन्टबेलनटायनसाहब ने उसका इस प्रकार से खण्डन कियाकि हेमचंदकहताहै कि मुझको हीरे कीकनी वापिस मिली और फिरनदीगई इससे साबित हुवा किहीरे कीकनी और संखियाजो करनैलफियर साहब की शरबतमें मिलाया गया महाराजासाहब के यहां उनही दिनोंमें खरीदा गयाथा जबकि रावजी और नरसूकहतेहैं किहमको पुड़ियामिलीथीं, कोईतकरीर ऐसीपेशनहीं होसक्ती जिससेउन लोगोंकाबयानगलत होसके–सरजन्टबेलनटायनसाहब नूरुद्दीन बौहरेका बहुतकुछ जिक्र करतेहैं और कहतेहैं किअगर नूरुद्दीनबौह-

रेसे दामोदरपंथने संखिया मोलली थीतब वहशख्स दामोदर पंथ के इजहार की सिदाकत के लिये क्यों नहीं बुलाया गया परन्तु मैं कहता हूं कि यदि मेरे मित्र चाहते तो नूरुद्दीन बौहरे को दामोदरपंथ की गवाही के खण्डन करने के लिये बुला सक्ते थे मैंने नूरुद्दीन की गवाही का लेना कुछ अवश्य न समझा अगर सरजन्हबेलनटायनसाहब चाहें तो उसकी गवाही अबमैं लेसक्ताहूं वह कहते हैं कि नूरुद्दीन गायकवार का शत्रु था परन्तु मालूम नहीं होता कि नूरुद्दीन का बैर गायकवारसे क्योंकर साबित होसक्ताहै सुनाहै कि नूरुद्दीन बौहरा जबकि पहिले कमीशनजमा हुईथी नालिशीथा परन्तु यहसाबित नहींहुवा कि उसकी नालिशकी समाप्त हुईथी वा नहीं खैरइससे कुछप्रयोजन नहीं कि नूरुद्दीन गायकवारका शत्रु था वा नहीं परन्तु सरजन्हबेलनटायनसाहब ने उसकी गवाही क्योंनहींली और दामोदरपंथके इजहारको क्योंखण्डननहींकिया क्योंकिगायकवारके जितनेवकीलहैंजिस मनुष्यके पासचाहें जासक्ते हैं इसीतरह नूरुद्दीन के निकट भी जासक्ते थे और उससेहाल पूछसक्ते थे परन्तु जब दामोदरपंथ केइजहार खण्डननहींहुये तो उसके इजहार कायमरहे नूरुद्दीनका बुलानावन बुलाना सरजन्हबेलनटायनसाहबके तअल्लुकथाजोउसका बुलानामेरेजिम्मे होतातो मैंबुलाता कमीशन केमेम्बरोंनेइसविषयमें दोनोंओरकी तकरीरकोसुना जोकुछउनकी रायहोगी वहलियादह सुनासिब होगी माईलार्ड अब कमीशनके मेम्बरोंका खयाल दूसरीतरफ रुजूकरताहूं वहयह है कि ९ नवम्बरको करनैलफियरसाहबकाविष दियाजानामैंने साबितकरलियाऔर यहभीजाहिरहैकि जिनतारीखोंमेंहीरे औरसंखियेकेखरीदकाजिक्रहैलोगोंनेबयानकियाकिउन्हींदिनोंमें महाराजासाहब केनौकरोंके पासउन्हींकी आज्ञानुसार यहसब वस्तुउपस्थित थींइसलिये साबित हुवा कि आपहीम-

महाराजासाहबने इनवस्तुओंको मंगायाथा जोवहनमंगातेतो क्योंकरनौकरों केपासहून चीजोंकाहोना साबित होता यह बातभी गवाहों सेसाबित हुई किचाहेा सालिमने रावजीको यहपुड़ियादीथीं और रावजी ने ९ नवम्बरको करनैल फियर साहबके मरबतमें उनकोडाला-सबगवाहीमें रावजीकानाम लियागया दूसरेकिसी मरबतका जिक्रनहीं हुवा चारप्रकार केगवाह इससुकद्दमेंके कायमकरनेके वास्ते ठहराये गयेहैंजो करनैलफियर साहबको विषदेसके हैं पहिलेरेजीडन्सीके नौकर उनकेलिये मेरेमिचने वर्णनकियाहै किवह अपने हाकिम सेराक्षीथे वहक्यों उनकोविष देतेपरन्तु उनकीतकरीर सेयह बातभी प्रकटहोती है किवह इसविषदेने के कुछवानी सुबानीनथे-और किसीवैरसे उन्होंने विषनहींदिया जोदिया लोभ सेदिया॥

दूसरे-भावपूनाकर-मैंनहीं कहसक्ता किजहर खूरानीकी तोहमत उसपरक्योंकर होसक्तीहै मैनेकितनाही गवाहीपर गौरकिया परन्तु उसके लियेकोई इशारह भी नहींपाया गया और मुझको इसकीभी कोईवजह मालूमनहीं हुईकिमेरेमिच भावपूनाकर को गायकवार कावैरी ठहराते हैं और कहते हैं कि करनैल फियर साहब सदा उसकी बातें सुना करते थे और वह उनका जालूम था भावपूनाकर और करनैलफियरसाहब दोनों की गवाहीलीगई थी कोईबात ऐसी मालूम नहींहुई जिससे भावपूनाकर पर अपराध लगायाजावे किन्तु साबित हुवा कि यह शख्स प्रतिष्ठित और बिश्वसित है और मुद्दतसे बड़ौदेमेंरहताहै उसनेअनेक प्रकारकी नौकरीमीकी और उसकेकाममेंभी कोईकसूर नहीं हुवा-इनदिनों वह सूरतदेशमें मिस्टरहोपसाहबका एजन्टहै और जुलफिक्कारअली असमर्थ बालकके रियासतके प्रबन्धके लियेजो रियासतबड़ौदे मेंहै नौकरहै यदियह मनुष्यबिश्वसित नहोता तोमिस्टरहोप

साहबउसको क्यों नौकररखते–भावपूनाकर एकचिट्ठीसिफा-
रशकी करनैलफियर साहबके नामलायाथा मिस्टरहोपसाहब
ऐसेहाकिम नहींहैं किजो यहमनुष्य योग्यन होता तोउसकी
सिफारिश करते वह कदाचित् ऐसे मनुष्यको नौकर नरखते
भावपूनाकर का केवल मिस्टरहोपसाहब कोही निश्चय नहींहै
किन्तु बहुतसे साहूकार और सरदारोंका यहनौकररहायह
शख्समुद्दतका नौकरहैऔर मीरजाफरअलीके पुत्रकीरियासत
काइन्तिजाम करताहै उसनेजो कुछ काररवाई की वह सब
को मालूमहै किसीमनुष्यको उसकेकामपर एतिराज नहींहै
किन्तु हर मनुष्य उसकी प्रशंसा करताहै जब करनैल मीड
साहब की कमीशन इकट्ठी हुई तो इस मनुष्य ने अपने मव-
क्किलों की तरफसे चारदावे गायकवार पर पेश किये थे और
यह बात कि करनैलफियर साहब उसकी हरएक बात को
सुनतेहैं जबउससे यहप्रश्नकियागया कि करनैलफियरसाहब
केपासतुमजातेथेतो उसनेकहा हां मैंबहुधाजाताथा औरजब
सरजन्बेलनटायनसाहबने करनैलफियरसाहबसेयहीपूछातो
उन्होंनेभी उत्तरदियाकि हांमैंइस मनुष्यको प्रति दिन देखा
करताथा और वह अपनेकार्य्यकेलिये आयाकरता था दोनों
मनुष्योंने साफ २ उत्तर दिया सरजन्बेलनटाइनसाहबने जो
कहाहै कि इस मनुष्यने खरीतेके तैय्यार होनेकी इत्तिला दी
यहबातभी कुछआश्चर्य्यकीनहींहै क्योंकि वहहरएक सरदार
आदिकेपास जायाकरताथा और सरदारलोग दरबारमेंजाते
थे इसशख्सने सरदारोंसे सुनकर करनैलफियर साहबसेजिक्र
कियाहोगा उसने यहनहींकहा कि खरीतेका मजमून क्याहै
क्योंकिउसका मजमून नजानताथा इस इत्तिलाके देनेमें कौ-
नसीबुरीबातहुई क्योंकि खरीता रेजीडण्टसाहबके द्वारा भेजा
जाताथाऔर यहरीतिहैकिसबखतकिताबत सरकारीरीतिसे
गवर्नर बम्बईवा गवर्नरजनरलसे होतीहैतो रेजीडण्ट साहब

केद्वारा होतीहै और सदैवउसके साथ अंगरेजीमें तर्जुमाहोताहैसिवायइसके और कोईबात भावपूनाकरकी नहींहैनहीं मालूमकि मेरे दोस्त भावपूनाकर पर क्योंअपराध लगाते हैं यहबात उनको कहनेकेयोग्यनथी कि भावपूनाकरकरनैलफियरसाहबका जासूस है और जोकुछ वह कहता था करनैल साहब करतेथे यहकुछभउनका निहायत सख्त है क्या उन्होंने करनैलफियरसाहब को कटपुतली ठहराया था किजिसतरह भावपूनाकर चाहताउनको नचाताइस विषयमें कमीशनको खूबध्यान देना चाहिये और भावपूनाकर के लियेजो खयाल हैंउनको कमीशनके मेम्बरदूर करदेंक्योंकि भावपूनाकर की मनसेयही इच्छाहोगी कि करनैल फियरसाहब बड़ौदे में रहें और सहीसलामत रहेंनयह किउनको विषदेकर मारडालें और कबरमेंगाड़े इससेवह मेरेमिचका कच्चाखयाल रहकुवा जोउन्होंने वर्णन किया किवह चाहताथा किसंखिया दियाजावे और जबउसे पीनेनपायें किमैंउनको खबरकरदूं जोऐसाहोतातोदोहरीखूराक संखियेकीजोदीगई नदीजाती और भावपूनाकर विषकेपीने परदौड़ाआता और गिलासकोकर नैलसाहबके हाथसेछीनकर नपीनेदेता नयह किकरनैलफियरसाहब शरबतको कुछपीकर कुछफेंकचुके और तलछटडाक्टरसाहब कोदेचुके और हाजिरीके खानेकावक्त बीतगया तब भावपूनाकर नेभीसंखियेका कुछजिक्रन किया किन्तु करनैलफियर साहबनेही उससेकहा थाइसलिये यहबात बिल्कुलगलतहैजो खयालकिया जावेकि भावपूनाकरको इसमुआमलेसे कुछ सम्बन्धथा ॥

सरजन्हबेलन टायन साहब नेकईबेर अपनी स्पीचमें यहजिक्र कियाकि दामोदरपंथ चाहताथा किकरनैल फियर साहबको विषदें ताकिजोहिसाब निजके गायकवारके हैंउनको वह न देख सकें क्योंकि तोहमत लगाई गईथी कि दामोदर पंथने

बहुतकुछ लेलिया था और यह खबरभी उड़ीथी कि करनैल फियरसाहब हिसाबकी किताबें मंगवानेवाले हैं इसलियेमेरे मिचकहतेहैं कि यहवजह बहुतबड़ीथी कि दामोदरपन्थ करनैलफियरसाहब को विषदेना चाहता परन्तु जितने इजहार लियेगये उनमें इसबातका कहींजिक्र नहींहै—कमीशनकेमेम्बरोंको खूबमालुम होगा कि गायकवारके निजके हिसाबोंका मंगवाना असम्भवितथा करनैलफियरसाहबको गायकवार के निजकेसुआमलोंमें दखलदेनेका अखतियारनथारेजीडण्टसाहबको सरकारनेजितनेअधिकार दियेहैंउनमें इसबातकाजिक्र नहींहैकि और कामोंमेंसे रेजीडण्टसाहबका यहभी एककामहै कि महाराजासाहबके निजकेहिसाबोंको देखाकरेंदामोदरपन्थके हिसाबकिताबको गायकवारके निजके हिसाबसे तअल्लुक था इसलिये दामोदरपन्थको कुछभयनथा कि करनैल फियरसाहब उसकीकिताबोंको मंगाकर जांचकरेंगे जो करनैलसाहब किसीहिसाबकी जांचकरते तो उसहिसाबकी जांच करते जो सरकार अंगरेजी और महाराजासाहबसे तअल्लुक होता और नकि उनकिताबोंको जिनमें निजकाहिसाबनहीं यहबातभी जाहिर नहींकीगई कि करनैलफियरसाहब कोअधिकारथा कि जो किताबें रियासतकीहैं उनकोभी जांचकरें इसलिये यहविचार गलत है कि दामोदरपन्थने किताबों की जांचके भयसे करनैलफियरसाहब को विषदिया और यहबात भी बिल्कुलगलत हैकि दामोदरपन्थने कुछतगल्लुब नहींकिया वा धोखादेकर वृथाखर्चकिया उसकोऐसी बातोंका कुछसबूत नहींहै आश्चर्यनहीं जो उसनेऐसा कियाहो क्योंकि जबकोई मनुष्य अपनेतईं खूनीका शरीककरताहै तोजोकुछ उससेधोखा वा छलहो कुछआश्चर्यनहीं परन्तु कोईदगा अथवा इस प्रकारका उद्योग साबितनहींहै और हिसाबकी रूसेभीनहीं पायाजाताकि उसनेकोई तगल्लुब कियाहो॥

मेरेमिचने इसबातपर बहसकीकि जोजक्म खूजानेपरजा

रीछये उनपर गायकवार के दस्तखत नहींहैं परन्तु ऐसेदस्तेांकी कुछ आवश्यकता नथी क्योंकि महाराजासाहबऐसे छक्मोंपर दस्तखत नहीं करतेथे दामोदरपन्थ को हिसाबकी तहकीकातका कुछभयनथाक्योंकि पांचजगहपर हिसाबरहा करतेथे जिनरक़मोंकेलिये लेलेनेका सन्देहहै उनकेलियेवह कागज़ वउचर पेशकरताहै कमीशनके मेम्बरखयाल करेंगेकि खजानेपर छक्म सादिरहोनेकी क्या रीतिथी पहिलेयाददाश्त लिखी जातीथी कि किसचीजके वास्ते रुपयेकीज़रूरतहैफिर दामोदरपन्थ के दस्तखत होतेथे दामोदरपन्थ लिख देताथा कि महाराजासाहबकी इजाज़त होगईहै॥

तीसरे यहकि उसयाददाश्तपर उसमनुष्यकी रसीदहोती थी जिसको रुपयादियाजाता था इसलिये दामोदरपन्थहर प्रकारसे बरीथा जबकभी उससेपूछागया कि अमुक याददाश्तकी रक़म कहांलिखीहै तेा उसनेशीघ्रही बतादिया कि अमुक पृष्टपर लिखीहै इसकेबिशेष रोजनामचा—सप्ताहिक—मासिक—वार्षिक पचरहाकरताथा जिसरक़मके देखनेकी ज़रूरतहेाती तेा इनकाज़ों से उनका पतालग जाता हिन्दुस्तानी हिसाबकी रीतिऐसीहै कि जो एकरक़मको भी लेलियाजाय और कोईमनुष्य उसको गुप्तकरनाचाहे तेा सम्पूर्णकितावोंमें उसरक़मको दुरुस्तकरना पड़ेगा और महकमेके सम्पूर्णलोगों को रिश्वत देनीपड़ेगी॥

जो यह बात भी मानीजावे कि महाराजा गायकवारके नौकर ऐसेईमान्दार नथे जैसाकि खजाने वालोंको होना चाहिये इससे किसीबातका छिपाना और जियादह कठिन था—दामोदरपन्थके लिये गफलतका अपराध धरना मेरेदोस्तकी केवल कल्पनाहै और उसका कोई मूल नहीं है मेरे विचारसे जो दामोदरपन्थने इज़हारदियेहैं उनकी सिदाक़त खूबहेागई करनैलफियरसाहबको ऐसीकितावोंके मंगवाने की क्यावजहथी मेरेदोस्तकी सारीतकरीरइसबारेमेंखण्डितहेागई

दामोदरपन्थ कईबेर महाराजासाहब के साथ रेजीडण्ट साहबके पासगया परन्तु आपउनको नजानताथा रेजीडन्सी के मार्गमें जो धर्म्मशालाहै बहुधा वहांउतर पड़ताथा महाराजासाहबने इसशख्सको रेजीडण्टसाहबके रूबरूपेशकिया परन्तुउसने साहबसेभी कुछबातें नकीं इसलिये इसको करनैलफियरसाहबके मारडालनेका कोईप्रयोजन नथा औरजो कुछ तम्बू कथा तो गायकवारकी वजहसे था॥

माईलार्ड अब चौथे मनुष्यका वर्णनकरताहूं जिसने विष दियाहो—महाराजासाहब से मेरेमिचने बयान कियाहै कि जबमैने मुकद्दमेके प्रारम्भमें स्पीचकीथी तो मैने उसमें नहीं कहा कि करनैलफियरसाहबके विषदिये जानेका क्याहेतुथा उनका यहबयान ठीकहै शायद मुजसे उससमय भूलसेरह गया मैनेइसबातका उसवक्त खयाल नहींकिया मुझको सरकारने इसप्रयोजनसे यहांनहींभेजाथाकि मुद्दइयोंकी तरह सेवार्त्ताकरूं किन्तुकेवल तहकीकातकेलिये भेजाथाकिजितनी गवाही बहमपहुंचे उसको कमीशनके रूबरूपेशकरूं कमीशनके साहिबोंके बिचार में जो उचितहोगा रिपोर्टकरें और इसबातको निश्चयकरें जो महाराजासाहबपर अपराधलगाहै वहसहीहैयानहींमेरे विचारसेमहाराजासाहबकोविषदेनेका बड़ाप्रयोजनथाऔर बहमनसेकरनैलफियरसाहबकोविषदेना चाहतेथे सिवाय इनगवाहियोंके जोकमीशनके रूबरू गुजरीं सरजन्टबेलनटायन साहबने ऐसे २ लेखदेखे जिनसे साफजाहिरहैकिगायकवार चाहतेथे कि जिसतरह होसके करनैलफियरसाहबको दूरकरदें इस विषयमें कमीशनकाध्यानदूसरी दिसम्बरके खरीतेपर दिलाताहूं इसखरीतेमें श्रीमान्गायकवारने लिखाहै कि करनैलफियर साहब मेरे खराब करनेपर तय्यारहैं और हरप्रकारसे दिक्कतेहैं और जोउनका मन चाहता है वही करते हैं अगर सरकार मेराफैसला इन्हीपर रक्खेगी तो कुछ इन्साफ नहोगा इससे साफ जाहिरहै कि

यद्यपि गायकवारने नहींलिखा कि मुझको करनैलफियरसाहबसेनिजका बैरहैपरन्तु गायकवार करनैलफियरसाहबकेरेजीडन्सीके पदपररहनेसे बहुतकुछ उज्रकरतेथे और विचारतेहैं कि जोकरनैलसाहब इसपदपररहे तो मेरेलियेअन्याय होगा ऐसे मुकद्दमेमें यहबातमालुमकरनी अतिकठिनहै कि निजके बैर से इस बात की दरखास्त हुई यापोलीटिकल् खयालातसे गायकवार अपने खरीते में लिखते हैं कि मुझको करनैलफियर साहबसे निजकाबैर नहींहै मैंनेअपने वजीरोंसे इसबातकाखूबमशवरह कियाकि जबतक करनैलफियरसाहब यहांरहेंगे तबतक उत्तमप्रबन्ध काहोना असम्भवित है॥

मैं कितनाही उत्तम प्रबन्ध करनाचाहता हूं परन्तु वह बाधकहोते है मैं चाहताहूं किजो हिदायतें ५ वीं जूलाई सन् १८७४ ई० के खरीतेमें कमीशन की सन् १८७३ ई० के रिपोर्टके अनुसारमुझको हुईहैंउन्हींके अनुकूलकिया करूं पर लाचारहूं जब करनैलफियरसाहब गवाहकीतौरपर कमीशनके रूबरू बुलायेगये तो उनसेकोई ऐसाप्रश्न नहीं किया गया कि आपने क्यों अच्छा इन्तिजाम नहोने दिया और बाधक हुये मिस्टर दादाभाई नूरजीमिस्टर वालालंगशन वाकलऔरहुरमुजजीअरदासियर वदियाइनतीनोंमनुष्योंका खरीतेमें जिक्रथा परन्तु जब वह कमीशनके रूबरू आये तो उनमेंसे किसीमनुष्यने भी बयान नकियाकि अमुक कार्य्यके करनैलफियरसाहबबाधकहुयेथे इसलियेगायकवारनेजोलिखा है कि बाधाकरतेहैं बिल्कुल गलतहै यहखयालशायद गायकवारका है परन्तु उनकेकिसी वजीरका नहीं है गायकवार लिखते हैं जोकि मैं और मेरे वजीरजानतेथेकि किसीसमय में करनैलफियर साहब पर गवर्न्नरबम्बईने चश्मनुमाई कीथी (शायदयहबयान गायकवारकाबेसिर और पैरकेरेजो ल्यूशन पर होजो गवर्न्नर बम्बईने किसीसमयमेंलिखाथा और धोखे सेउन्होंने उसकोहासिलकिया क्योंकि गायकवार यहनहीं

कहतेकिमुझको कहांसेमिला) करनैलफियरसाहब दूसरेजो-ल्यूशनकेलिये कहतेहैंकि मेरेद्वारा यहरेजोल्यूशननहींआया सिवा इसके गायकवार को सिंध की कारवाईसे क्यावास्ता था फिर उनकोक्योंकर मालूमहुवा कि बलिहाजउस पहिले की चश्मनुमाईके करनैलफ़ियरसाहब बदलजावेंगे इसरेजोल्यू-शनको दादाभाईनूरूजीने सरल्यूइसपीली साहबको दिखाया था यहरेजोल्यूशन गायकवार के दिखानेकेवास्ते दियाहोगा इससेएक और जुर्म्मभी गायकवार पर ठहरताहै कि गाय-कवारकेवल रेजीडन्सीके नौकरोंसे बुरीखबरोंको नहीं पूछते किन्तु एक और सरकारी अफ्सरोंके पाससेभी खबरें मंगवाते थे अमीनाआया नरसु रावजीके इजहारकी तसदीकहोगई क्यों कि गायकवार हरएक छोटी बड़ीबातको पूछनाचाहते थे यहबात दरयाफ्तनहींहुईकि गायकवारके पासकिसतारी-खको यह रेजोल्यूशन पहुंचा परन्तु गायकवारको इसबातका विचारहोना चाहियेथाकिचाहेकरनैलफियरसाहब परसिंध में चश्मनुमाईहुई थी परन्तु सरकार को पूर्ववत् निश्चय था क्योंकि सरकारने उनको बड़ौदेकारेजीडण्टनियत किया और यह पदवीसिंधसे बड़ेदरजे और अधिकमासिककी थी॥

और सबनौकरों को अपनीनौकरीके दिनोंमेंकभी न कभी चश्मनुमाईहोजातीहैपरन्तु करनैलफियरसाहबकीचश्मनुमाई के लिये इतनी खसूसियतहै कि यह रेजोल्यूशन चश्मनुमाई काउससमय जारीहुवाथा जबकि करनैलफियरसाहब लखडन मेंथे तबकरनैलफियरसाहबको उसके खण्डनकरनेका मैक़ान मिला परन्तु जबवह हिन्दुस्तानको आये और ऐसे रेजोल्यू-शनका प्रचार उनकोसूचितहुवा तो तुरन्तही उन्होंने सर-कारसे नकललेकर उसको रद्दकिया और सरकारनेउसको मानलिया अगर करनैलसाहब उससमय हिन्दुस्तानमेंहोते तो कदाचित् यहरेजोल्यूशनजारी नहोता गवर्न्मेण्टने बव-जहहिकमतअमली के सिन्धमें उनकोनियत नहींकिया और

पालनपुरमें उनकोभेजदियाजोउनको सिन्धमें मासिक मिलताथा वही पालनपुरमें भी पाते थे यदि गायकवार में कुछ भी बुद्धिहोती तो जबकरनैलसाहब बड़ौदेमें रेज़ीडण्टनियत हुयेथे तोमालूमकरलेते किसरकारकी कुछ अप्रसन्नता हैया नहींतोकरनैलसाहबबड़ौदेमें रेज़ीडण्टनियतनहोते और जो कारर्वाईकरनैलफियरसाहबने नौसरीमेंकीथीउससेभीगायकवारको मालूमकरना चाहियेथाकि गवर्न्मेण्ट को उनका बड़ानिश्चयहैजबनौसारीमें गायकवारका विवाहहुवा था तो गवर्न्मेण्टकी आज्ञानुसार करनैलसाहब उसविवाह में संयुक्त न हुये महाराजासाहबने ९—मई को एक खरीता लिखकर गवर्न्मेण्ट में भेजा जिसमें करनैलफियरसाहब की बहुत कुछशिकायतथी इसमेंलिखा थाकि करनैलफियरसाहब मेरे विवाहमें संयुक्त नहुये इससे मेरी अतिअप्रतिष्ठाहुई परन्तुमैं कहताहूंकि इसशिकायतका क्या परिणाम हुवा॥

गवर्न्मेण्टने उसका उत्तरलिखाकि करनैलफियरसाहबने गवर्न्मेण्टकी आज्ञा से यह कारर्वाईकी और सरकार को उनकी कारर्वाई पर बड़ाभरोसा है इसउत्तरसे गायकवार को अगर कुछ नहीं तो इतना मालूमकरना चाहियेथाकि गवर्न्मेण्टकरनैलफियरसाहबकी कारर्वाईसे प्रसन्नहै उस में यहभी लिखाथाकि जोकारर्वाई करनैलफियरसाहबकरेंगे उसको सरकार सर्व्वदा पसन्दकरेगी और सरकार को इत्तिला और आज्ञाके बिना कोई कारर्वाई नहीं करते॥

मैंसम्पूर्ण मेम्बरोंका खयालएक तारीखपर रजूकरता हूं अर्थात् महाराजासाहब का विवाह मई महीने में हुवा था और १९—अक्टूबरको पुत्र उत्पन्न हुवा जोकि करनैलफियरसाहबने उस बालक की माता को रानी न माना था उसके लड़के को क्योंकर युवराज और गायकवार का लड़का तसलीमकरतेसाइसीतारीखकेपीछेगायकवारइसबात कीशिकायत करनेलगेकि साहबसुझपरबड़ीअनीतिकरतेहैं इससेप्रकटहैकि

उससमय में गायकवार के दिलका क्या हाल था वह बहुधा कहा करतेथे कि इन्हीकी कारवाई से सरकाने लक्ष्मीबाई को मेरीरानी नहीं माना इससे सरकार मेरेपुत्रको युवराज न मानेगी सोइनही हेतुओं से गायकवार को करनैलफियर साहब के बदली कराने की इच्छाहोगी ॥

१९—अक्टूबर को जब उनके पुत्रपैदा हुवा उनके मनमें करनैलफियरसाहबकी ओरसे फर्क आगया ॥

माईलार्ड— आपविचार करेंकि पूर्वोक्तहेतुओंसे गायकवारकी कारवाईसाफजाहिरहै और यहभी प्रकटहै किजो गायकवारको अच्छाइन्तिजाम करनाहोतातो अपनेप्राईवेट सिक्रेटरी से मशवरह न करते किन्तु दादा भाई नूरूजीसे सलाहलेते ॥

निजके मुआमिलोंसे पूर्वोक्तसिक्रेटरी से मशवरह करने का मुझायका नथा इसबातमें आश्चर्य नहीं है कि एकतरफ दादाभाई नूरूजीसे उमदामजमून के खरीतेलिखातेथे और दूसरीतरफदामोदरपन्थसे दूसरामशवरह करते गायकवारने सबलोगों में यहबात प्रसिद्ध कररक्खीथी कि करनैलसाहब मुझपर बड़ाअन्यायकरतेहैं और दूसरीनवम्बरको जोखरीता गायकवारने गवर्न्मेण्टमें भेजाथा गायकवार को खूबउम्मेदनथी कि हमारी दरखास्त मंजूरहोगी गायकवार ने और शिकायतोंमेंसेयहशिकायतभी कीथी किकरनैलफियरसाहब से सम्पूर्णसरदार और प्रजा अप्रसन्नहै तथाच करनैलसाहब से इसविषयमें पूछागया उन्होंने उत्तरलिखाकि यहगायकवारका लेखबिल्कुल गलतहै दादाभाईनूरूजी मौजूदहैं उनसे खरीतेके मजमूनको तसदीक करानाजरूरथा परन्तु सरजन्टबेलनटायनसाहब ने उनको बुलाकर खरीते की तसदीक नहींकी और न करनैलफियरसाहबसे इसविषयमेंप्रश्नकिये ॥

माईलार्ड—करनैलफियरसाहब और गायकवारसे जोकुछ बातेंहुईं उनसेसाफ जाहिरहै किगायकवारकोकरनैलफिय-

रसाहबकी बदलीहोनेका निश्चय नथा किन्तु खरीते भेजनेसे तीनदिनके उपरान्त गायकवारने करनैलफियरसाहबसे कह दियाथाकि यह खरीता मैंने नहीं लिखा है उस तहरीरसे मैं अलगहूं और इसकहनेसे उनका यहप्रयोजनथा कि खरीते में जो दरखास्तकी थी वहमंजूर नहोगी रंजबढ़ाना फजूलहै यद्यपि गवर्नमेण्टने गायकवारकी प्रार्थना स्वीकारकी तथापि यह नलिखाकि करनैलफियरसाहबको क्योंबदलदिया गायकवारका यह खयालकरना बेजाहै कि सरकारनेमेरीदरखास्त पर करनैलसाहबको बुलालिया मालूमहोताहै कि उनदिनों में गायकवारको दोकाररवाई मंजूरथीं॥

अर्थात् दादा भाईनूरूजीके द्वारा खरीता भिजवाना और दामोदर पन्थ से काररवाई करनी यह बात गवाही से साबित नहींहुई किगायकवारको अपनेखरीतेपर भरोसाथा कमीशनके मेम्बरोंको पूर्वोक्तवार्त्तासेमालूमहोगा किगायकवारकोनिहायत खाहिशथी किकरनैलफियर साहब बड़ौदेसे बदलजांय इससेबढ़कर उनकीइच्छा क्योंकर जाहिरहोगीकि गायकवारको यहभीमालूमथा किकरनैलफियरसाहबएक रिपोर्ट भेजनेवालेहैं—खरीतेका एकमन्शा यहभीथा कि करनैलफियरसाहब यहांसे बदलजावेंगे तो दूसरा रेजीडण्टउसको लिखेगा॥

निश्चयहै कि कमीशनके मेम्बरोंको इसमेरी तकरीरसेमालूमहुवाहोगा कि गायकवारको करनैलफियरसाहबकीतब्दीलीकेलिये कौन२ वजहथीं और गायकवारने जितनीकाररवाई करनैलसाहबके बदलनेकेलिये की उसका यहबहुत बड़ा कारणथा अर्थात् खरीतेके भेजनेका मुख्ययहप्रयोजनथा कि जिसतरहहोसकेकरनैलफियरसाहब रिपोर्टनभेजेंजो२ सुबहमेकी तरदीदपेशहुई उससे यहबातभी प्रकटहैकिगायकवार चाहतेथे कि करनैलसाहब बदलजावें अबमैं ९—नवम्बरकाजिक्र करताहूं कि उसदिन गायकवारकी क्यादशाथी गायकवारकी

यह रीति थी कि सोम और वृहस्पतिवार को फियरसाहब के पासजाया करतेथे गवाहीसे यहबात साबित नहींहै कि जब वहरेजीडन्सीको गये तो उनकोमालूमथा कि करनैलफियर साहबको विष दियागया—परन्तु यहबात खूब प्रकटहै कि जब गायकवार रेजीडन्सीसे लौटआतेथे तबउनकोविषदेनेकाहाल मालूम होगयाथा क्योंकि जब करनैलसाहब डाक्टरसाहबको चिट्ठीभेजचुके तब सालिम घोड़ेको उठायेहुये यशवन्तराव के घरको जाताथा डाक्टरसोवर्डसाहबने उसको मार्गमेंदेखा जब करनैलफियरसाहबने गिलासमें तलछट देखाथा तो रावजी को चिट्ठीदीथी कि तुमडाक्टरसाहबके पासलेजाओ परन्तुउ-सने यह चिट्ठी महमूदको दी और आपनगया क्योंकिउसको मालूमहोगयाथा कि करनैलसाहब भीतर क्याकररहेहैं और उनको क्यादशा होगईहै महमूद सालिम को मार्गमेंमिला उसने सालिमको एकरुपया बिसकुटलानेकेलिये दियाथासा-बितहुवा कि सालिम घोड़ेको दौड़ाकर नगरको गयाहै क-रनैलफियरसाहब सातबजे हवाखोरीसे लौटआतेथे औरसात और साढ़ेसातबजेके बीचमें उन्होंने गर्बतपिया और कुछफेंक दिया उससमय सालिम नगरकेओर गयाथा इसबातकानि-श्चयहोना कठिनहै कि वहक्यों नगरकोगया परन्तुइतनाकह सक्तेहैं कि वहरेजीडन्सीकोआया औरवहांसेमहाराजासाहब की इत्तिलाकेलिये वहलौटगया कि रेजीडन्सीमें क्याहोरहा है और डाक्टरसोवर्डसाहब बुलायेगयेहैं यदि वह रेजीडन्सी को नआता तो यहहाल उसकोमालूम नहोता मुझको नि-श्चयहै कि महाराजासाहबको रेजीडन्सीमें आनेके पहिलेख-बरहोगईथी कि करनैलफियरसाहबको विषदियागया और यही हेतुथा कि गायकवार चुपहोरहे॥

सरजन्हवेलनटायसाहबनेवर्णन कियाहैकिजबमहाराजासा-हबकरनैलसाहबके पासगये तो उनको किसीबातसे कुछ तर-हदनहीं पायाजाताथा जोकि वह पहिलेसे खबरको मालूम

कर चुकेथे तो उनको दृढ़ रहने के लियेबहुत अच्छा मौक़ा मिला था करनैल साहब ने अपने इज़हार में सही २ वर्णन कियाहै कि ९ नवम्बरको महाराजासाहबसे पहिले मैंने उन की कुशलप्रश्नकी तभीसे बीमारीका जिक्र आयाऔर करनैल साहब को चित्त की उद्विग्नता का देर तक जिक्ररहा इसमें सन्देह नहींहैकि जब गायकवार रेजीडन्सीसे लौटकरजातेथे तो उनको मालूम होगया था कि करनैल फियर साहब को विष दिया गया क्योंकि मार्गान्तर में महाराजा साहब ने दामोदरपन्थसे कहाथा तथाच उसकेइज़हारमें यहभीलिखा है कि जबमैं और महाराजासाहब रेजीडन्सीसेलौट आये थे तो महाराजासाहबनेकहाथा किरेजीडन्सीमें बड़ाशोरऔर ग़ुल होरहा है जब मैंने उसका कारणपूछा तो महाराजा साहब ने उत्तरदिया किनरसूहमेशाबाहरे बैठारहातथा और जबकोईमनुष्य आताथा तो सीटी बजादिया करता था परन्तु आजकेदिन वहबाहर नथा इसलिये शोर औरगुलहोरहा है॥

रावजीप्रति दिनआया करताथा परन्तु आज नहीं आया उसनेजल्दी करकेडालदिया मैंनेपूछाकि उसनेक्या डाला यह सुनकर महाराजा साहबने मेरीबात कोटाल दिया और कुछ और बातेंकरनेलगेफिरमहाराजासाहबनेकहा किसालिमरा-वजीकेघरको गयाहै ताकिपुड़ियों कोलेकर बुढ़िया की रोटी सेंडालदे मालूम नहींकि सालिमने पुड़ियोंको फेंकिदिया या नहींयह मुआमला बहुतखराबहै देखियेक्या होता है अगर दामोदरपंथसही२कहताहैतो महाराजासाहबको रेजीडन्सी केपहिलेमालूम हुवाहोगाकि विषदेनेका उद्योग किया गया है और यहभीमालूम हुवाकि गायकवारने उसीदिन तीसरे पहरकोनानाकुंवलकर आदिसे कहाथा मैंनेजो दामोदर पंथ केइजहारका फिकरापढ़ा वहउसका बनाया हुवा नहीं मा-लूमहोताहै और नवहऐसा मालूमहोताहै जैसाकि मेरे मित्र कहतेहैं कि पुलिसका सिखाया हुवा है जितनी गवाहियां

गुजरीं उससे प्रकट है कि दामोदरपंथने यह बात ठीक २ वर्णन कीहै क्योंकि उसनेअपने स्वामीकेलाभके लियेजरूर करके ऐसी बातोंपरग़ौर कियाहोगा इसलिये उसका यहबयान गलतनहीं होसक्ता सिवाइसके दामोदरपंथ के इजहारसे यहभी मालूम हुवाकि ९ नवम्बरको जबकरनैल साहबको विषदिया गयातो शीघ्रही गायकवार को इसबात की इत्तिला होगई थी शहर और कम्पूमें हरमनुष्यको खबरहोगईथी किकरनैलफियरसाहबकोविष दियागया परन्तु मालूमनथा किकिसने विषदिया जोगायकवारने विषनदियाहोता और उनकामन साफहोता तोफौरन्गाड़ी परसवार हो करकरनैल साहब के पास जाते और इसबातकी मुबारक बादी देतेकि वह जहर से बचगये परइस मौकेपरजो महाराजा साहबने कारवाईकी वहबेकुसूरआदमीके मानिन्द नहीं है अर्थात् वृहस्पतिवार तक वह ठहरेरहे और उसदिनजब मुलाकात कोगये तो और बातोंमें साधारणतौरपर विषकाभी जिक्रकिया उसकेदोदिन उपरान्त उन्होंनेसरकारी तौरसेखरीता भेजा कि मुनको आपके विष देनेकाहाल अब मालूम हुवा जो मेरेलायक कोईबात होतो उसकामके करनेकेलिये मैंउद्यतहूं इस खरीतेमें यहनहींलिखाकि मैंने कबसुना॥

दामोदरपंथ सचकहताहै कि महाराजा साहब ने ९ नवम्बर को यहखबर पाईथी और यह बात गलतहै कि सालिम और यशवन्तरावने बाजारीखबर सुनकर गायकवारके रूबरू बयान कियाथा दामोदरपंथ ने अति विस्तार से वर्णन किया हैकि गायकवार क्योंकर रेजीडन्सीसे घड़ी २ की खबरमंगाया करतेथे और रावजीके छूटआने पर कितने प्रसन्न हुये और जबवह दुबारह गिरफ्तारहुवातो कितनी उनको चिन्ताहुई जबस्टर साहब बडौदे में आयेतो गायकवार को रावजीके लयेजितनी चिन्ताहुईथी उतनीहीसालिम और यशवन्तराव

केलिये फिकरहोगई महाराजासाहब ने सालिम और यशवन्तरावको कईबेर बुलाकर समझाया था कि तुमकोई बात न जाहर न करनाइस अवसरमें महाराजा साहब को इसबात केदरयाफ्त करनेका खूबमौक़ा मिलाथा कि मुख्य विष देने वालाकौन है॥

२३ दिसम्बर को महाराजासाहब से इत्तिलाकीगई कि आपकानाम विषदिये जानेमें शामिलहै उससमयसे जबतक कि वहगद्दीपर रहेउन्होंने बहुधा दामोदरपंथ को आज्ञादी कि उनरक़मों को मिटादो जिनसे विषदेने का पतालगता होतो उसी समय हिसाबके कागजोंमें जहां २ सालिमका नामथा स्याहीडाली गईऔर वरक़फाड़े गये॥

जबदामोदरपन्थसे पूछागया कितुमने सबवरक़ क्योंनिकाल डालेतो दामोदरपन्थने उत्तरदिया कि पांचजगह परहिसाब रहताथा क्योंकर सब जगह से कागज निकाले जाते जो याददाश्त दफ्तरसे निकाल दीजाती तोक्या फायदाथा पांच जगहका लिखाहुवा हिसाबक्योंकर निकलसक्ताथा बड़ीबेढंगी बात थी कि उन्होंने स्याही डालकर उनरक़मों को मिटाया जिससे पता लगसक्ता था कदाचित् इस बातका निश्चय नहीं होसक्ता कियह कामपुलिसवालों ने कियाहो क्योंकि पुलिस कोमालूम नथा किहिसाबोंके कागजोंमें किसजगह परविष देनेका लिखाहै इसलिये खूब साबित हुवाकि गायकवारकी आज्ञासे इन रक़मों पर स्याही डालीगई-और गायकवार आपभी इसजुर्म्मके करनेमें संयुक्तथे॥

इसगुफ्तगूके उपरान्त मुजकोगवाहीका जिक्रकरना जरूर है क्योंकि सरजन्टवेलनटायन साहबने गवाहीमें बहुत कुछ तकरीरकीहै परन्तु मेरी इच्छा है किएक २ मनुष्यकी गवाही सच्चाईकोपड़ंचाऊं और सरजन्टवेलनटायन साहबकी तकरीरको खण्डनकरूं॥

माईलार्ड—आपकीराय मेरीरायके अनुकूलहोगी कि सब हिन्दुस्तानियोंकी यहरीतिहै कि वहकिसी तारीख़आदिपर लिहाज नहीं रखते जो कुछ उनके मुंहमें आताहै कहदेतेहैं हिन्दुस्तानकी अदालतोंमें ठीकबातके मालूमकरनेकेलियेबड़ी दिक्कतहोतीहै विशेषकर उससमय जियादह मुश्किलहोती है कि कौन गवाह ठीक कहता है और कौन अशुद्ध वर्णन करताहै॥

मेरेविचारसे सिवाय दामोदरपन्थके और कोई गवाहसिखायाहुवा नहींहै आया और दोनों पट्टेवाले कम दरजे के आदमीहैं इसअवस्थामें आश्चर्य्यनहीं किचाहौ वहलोग सही कहतेहैंपरन्तु कुछएक दूसरेकी गवाही में अन्तर है जिसतरह कियूरोपियन गवाही देतेहैं और उनके खयालात सही होतेहैंहिन्दुस्तानियोंके नहींहोसक्तेक्योंकि पहिलेसेयूरोपियन कोताकीदके साथशिक्षा होतीहै हिन्दुस्तानी लोगवैसी शिक्षा नहीं पाते—जैसे किसरजन्बेलनटायनसाहबने तारीख़का तखकराकिया कि तीन गवाह एक तारीख़ कहतेहैं और दो गवाह दूसरी तारीख़ बतातेहैं आप साहबों को यह बातभी मालूमकरनी चाहिये कि जबएक बातहोजातीहै तो उसके पीछेदिन वा तारीख़का याद रहना कठिन है बहुधा हिन्दुस्तानीलोग जबपरस्पर वार्त्ताकरतेहैंतो इसतरह कियाकरते हैं कि अमुक तेहवार से दस पन्द्रह दिन के पीछे अथवादस पन्द्रह दिन पहिले फलानी बात हुई थी—सोयह लोग बहुधा तेवहारोंपर हरकिसी बातकी गिनती रखते हैं पश्चात्ताप है कि इनलोगोंका ऐसा स्मर्ण खराबहै कि वह बातको बखूबी स्मर्णनहीं रखतेजिन जजसाहिबों को ऐसी गवाहियोंसे काम पड़ताहै तो वहऐसी गवाहियोंको फज़ूलनहीं समझतेकिन्तु समाश्रतके लायक समझते हैं ९—नवम्बर के पहिले जबआया गायकवारके पासगई थी तो उसकाबयानहै कि एकमहीना

यावीसदिनपहिलेमैंने सुनाथाकिकरनैलफियर साहबको विष दियेजानेका इरादाहै-अब्दुल्ला उसका पतिअपने इजहार में लिखाताहै कि १५ वा १८ रमजान कोथी॥

शेखदाऊद कहताहै कि देवालीके चारदिन पहिलेआया गईथी ऐसेन्यूनअन्तरसे उनका बयान गलतनहीं होसक्ता इस बातका कदाचित् निश्चयनहींहै कियहगवाह पुलिसकेसिखाये हुयेहैं जोउनको पुलिसने सिखायाथा तो सब गवाह एकमत होकर एक तारीख़ बयानकरते हालांकि तीनतारीखेंगवहों ने बयानकीं और वहीसही मालूम होतीहैं सो ऐसानहीं हो सक्ताकि इसमें किसीप्रकारकी गलतीका संदेह होसके-यदि गवाहपुलिसके सिखायेहुये होतेऔर तीनतारीखें भीउन्होंने सिखादीथीं तो पुलिस के लोग बड़े चतुरथे और उनकी बुद्धि सम्पूर्ण मनुष्योंकी बुद्धिसे अति तीव्रथी वहजरूर पूरीतालीम करते॥

एकदूसरी बातयहहै कि जो गवाह रेज़ीडन्सी के नौकरहैं उनकेलिये मेरेमित्रने वर्णनकियाहै किपहिलेसे उनकाइरादा करनैलफियरसाहबके विष देने का खुदथा तथाच जबसे मैंने उनकी गवाही सुनीमेराभी वहीखयालहै यहबात स्पष्टहै कि कोईमनुष्य अपनेस्वामीको प्रसन्नहोनेपर मारडालनेका उद्योग नकरेगा इनलोगोंका खौफज़ाहिरहै कि जब रावजीको विष सौंपागया तोउसने महाराजासाहबसे पूछाथा किविषशीघ्र-ही तासीरकरेगा परन्तु उससे कहागया कि नहींतीन चार महीनेके पीछेअसर करेगा सिवा इसकेजब रावजीको पुड़ियां दीगईथीं तोउससे कहागयाथा कितुम पुड़ियोंको मिलालेना वह समझाकि पुड़ियामें जो श्वेतवस्तुहै वह संखिया है इस-लिये उसनेउस पुड़ियोंमेंसे केवल एकहीचुटकी लेकरहीरेके चूर्णमें डालदी क्योंकि उसको यहभयज़रूवाहोगा कि अगरक-रनैलफियरसाहब मरजावेंगे तोबड़ा शोरगुलमचेगा औरमैं

खराबीमें पड़जाऊंगा जो थोड़ी संखिया दीजवेगी तो बीमार होकर इङ्गलिस्तानकोचलेजावेंगे—इसउपायसे महाराजासाहबकोइच्छापूर्णहोजावेगी और मुझ को मेरापारितोषक भी मिलजावेगायहगुफ़्तगू सिरफविषकेलियेही नहींहैकिन्तुघीघी केलियेभी कहताहूं कि वहघीघीजिसकेलियेमेरेमित्रकहतेहैं कि उसमेंहकीमजीकी दवाथी अर्थात् जबरावजीने देखाकि घीघीकी दोतीनबूंदोंनेमेरेउदरपरफफोलेडालदिये और उससेबड़ी जलनहोरहीहै तो अपनेबचावके लिये घीघी कीदवाको फेंकदिया॥

कमीशनके मेम्बरों को इसबात परभी ग़ौरकरना चाहिये कि जबपहिले महाराजासाहबने उनलोगोंसे विषदेनेकेलिये कहाथा तबलोग राज़ीनहींहुयेथे परन्तु जब महाराजासाहब ने उनको खूबकाबूकरलिया तब विषका जिक्रकिया कईदिन तक यहलोग महाराजासाहबको खबरें देतेरहे और महाराजा साहब उनको इसके बदले रिश्वतें दिया किये जब खूब रिश्वतदीगई तब महाराजासाहबने उनसे विषदेनेका जिक्र किया यह किसीभांतिसे इन्कार न करसके क्योंकि रावजीऔर नरसू उनके वशमें थे जो यह लोग महाराजा साहबका कहना नमानते तो यह सम्भवितथाकि महाराजासाहब रावजी और नरसूको उसके खबरके परचे के समेत जो वह लोग रेसीडन्सी से भेजा करते थे करनैल फियर साहब के पास भेज देते और कहते कि आपके नौकर इनआम की आशा से मेरेपास यहखबरें भेजतेहैं या जब कि रावजी कचहरी से कागजचुराकर लायाथा तबरावजी को उस कागजके समेत भेज देते और कहते कि देखिये यह मनुष्य कागज चुराकर लायाहै औरहमसे रुपयेलेने की इच्छारखता है इससूरत में उनलोगों को सिवायइसके कि मारडालने का इक़रार करें औरकुछ उपाय नथा आयाऔर लोगों को मालूमनथा कि रावजी औरनरसू गायकवार की ओरसे कारवाई कररहे

हैं इसीतरह से एक ओरमहाराजा साहब दादाभाईनूरूजी जीसे कारस्वाई करतेथे औरदूसरी ओर दामोदर पन्थसे ॥

उन्होंनेरावजी औरनरसूजीको एकदरजे में करार दिया था और आयाआदिको दूसरे दरजे में—और अजीब बात यह है कि गायकवार ने दामोदरपन्थको इस कारस्वाई में सरगरोह ठहराया था परन्तुरावजी आदिको दमोदर पन्थ से अलगरक्खा हर मनुष्य को एक दूसरे से न मिलने दिया वास्तवकरके गायकवार की होशियारी में कुछ संदेह नहीं उन्होंने खूबसोंच समझकर यह कामकिया था ॥

करनैल साहब वर्णन करते हैं कि ६ और ७ नवम्बर को मेरी८ नवम्बरकीसी दशाहोगई थी रावजीने शायदउसदिन शर्बत में विष नडालाहो औरकिसी मनुष्यने डालदियाहो ॥

सरजन्ट बेलनटायन साहब ने इसबारे में जिक्र किया है कि करनैलफियरसाहब को विषकाहाल सुनते २इतनावहम होगयाथा कि जबवहकुछभी अलील होतेथे तोउनको विष के देनेकासंदेह होताथा ॥

मिस्टर सूटर साहब ने जब रावजी को बुलाया तो उसने वर्णनकिया कि मैंने ९-नवम्बर के पहिले दो पुडियां डाली थीं क्याआश्चर्य्यहै कि वह-६ और ७-नवम्बरको डालीहों ॥

करनैलफियरसाहबको कुछ मालुम नथा कि मेरे शर्बतमें संखिया डालीजातीहै रेजीडन्सीके सम्पूर्ण सरकारीनौकरोंके साथउनकेनिजकेनौकरभी रिश्वतदेकरसंयुक्तकरलियेगयेथे ॥

माईलार्ड-सरजन्टबेलनटायन साहबने सब गवाहोंकोग-गवाहियोंको बिल्कुल गलतकरदिया और अदालतसेप्रार्थना कीहै कि किसीगवाहकी गवाही तसलीम नकीजावे ॥

पहिले मेरेविचारसे यहउचितहै कि अमीनाआयाकी ग-वाहीपर ग़ौर कियाजावे ॥

पहिले अमीनाआयाकोगवाही मिस्टरसूटरसाहबने लीथी किसी पुलिसके और मनुष्यने उससे कुछबातभी नहीं की जब

मिस्टरस्टटरसाहबने पहिले उसकेइजहारलियेतो आया बी-मारथी उससमयजोउसने वर्णन किया उस्कोभी वर्णनहोगा जैसामिस्टर स्टटरसाहबको यादहै जबमिस्टर स्टटर साहबने सुनाकि कईगाड़ीवालेआयाको सवार करकेरमजानकेमहीने मेंगायकवार केपासलेगये तोउसीसमय वहआयाकेपास गये परन्तु उसको बहुतबीमार पाया जब उससेकुछहाल पूछातो निश्चयहुआ किआया महाराजासाहब केपासगईथी औरकुछ रुपयाभी उसने पायाथा केवल इतनाही हाल पूछकर मिस्टर स्टटरसाहब चुपहोरहे क्योंकि स्टटर साहब उसके बीमारहो जानेसेउससे जियादह हालनपूछसके उसकेदो दिनकेउपरान्त आया और जियादह बीमारहोगई और उसको अस्पताल में लेगयेतथाच मिस्टरस्टटरसाहब भीउसकेपास हस्पतालमें गये और उसकेइजहार लिखलिये जिसपर (डी) अक्षर नम्बर २का निशानहै अगरयह खयालकिया जायकिपुलिसने वहइजहार आयाकेजो उसने १८ दिसम्बरको दियेथे बनायेहैंतो बिल्कुल गलतहै क्योंकि जबउसको बड़ेजोरका बुखारथा तो क्योंकर पुलिसकेलोग उसको सिखाते इसके सिवाय पुलिस वालों को इससुकदमेका हालमालूमनथा तोवह क्यासिखाते ॥

पहिले पुलिसको शेखदाऊद गाड़ीवाले से पतालगाथा कि वहआयाको गायकवारके पासलेगया था फिर आयाके इज-हारलिये गयेफिर और लोगोंसे पूछागया जबमालूमहुवाकि इनलोगोंके इजहारोंमें कुछफरकनहीं हैइससे तहकीकातका सिलसिला आगेकोचला पुलिस का सिपाही जिसके पहिरे में आयाथीएक छोटासासिपाही था उसको आयाकेसिखाने की बातमीथी डाक्टरसीवर्डसाहबजो आयाकेदेखनेकोगयेथेइस विषयमें मेरेमित्रने बहुतकुछ कहाहै यहसुनकर मुझकोबड़ा आश्चर्य्यहुवा परन्तु यह बातकुछ अजीबन थी डाक्टर सीवर्ड साहब को योंही साधारण रीत से आया के देखने को गये

क्योंकि आयाडाक्टरसाहबकेमित्र कीनौकर थी उनके आने और आयाकेदेखनेमें मेरेविचारसे कोईबेमौक़ा बातनहीं जब उन्होंनेआयाको देखातो डाक्टरी की रीतिके अनुकूल मालूम कियाकि दैहिकरोगतो अधिकनहींहै उसकेमनमें कोई बात हैउसको वहप्रकट करनाचाहती है और इसीहेतु से उसेबड़े वेगसेज्वर आगयाहै—डाक्टरसीवर्ड साहब और मिस्टर स्टर साहबमें कोईगुप्तभेद की बातनथी जब डाक्टरसीवर्ड साहब कोमालूम हुवा किआया कुछ कहना चाहती है तो उन्होंने तुरन्तहीमिस्टर स्टरसाहबको बुलायाजब मिस्टरस्टर साहब अस्पतालमेंगये तोकलमकागज़ अपनेसाथ नहीं लेगये थे जो कुछआयाने उनसेकहा उसकोमिस्टर स्टरसाहबनेसुन लिया और दूसरेदिन उन्होंनेउस बयानको लिखलिया अब सरजन्ट वेलनटायनसाहबकहते हैं किवहदूजहार जो आयाने मिस्टर स्टरसाहबके रूबरूदियेथे उनदूजहारों से मिलाये जावें जो उसनेकमीशन के रूबरूदियेथे शायदसरजन्ट वेलनटायन साहबके रूबरू उसमें कुछअन्तर होगा परन्तुमेरे विचारसे कुछ अन्तर नहींहै॥

जोदूजहार कि मिस्टर स्टर साहब ने लिखेहैं उनके लिये स्टरसाहब कहतेहैं कि मैंने आयाका बयानसुन लिया और अंगरेजी में लिखलिया लफ़्ज़ीतर्ज़ुमा नहीं किया॥

सरजन्टवेलनटायन साहबकहते हैं कि आयाने कोई ऐसा लफ्जनहींकहाहोगाजिसकामतलबटटोलने का होप्रन्तुमालूमनहीं किसरजन्ट वेलनटायनसाहबऐसी उलझी हुईतकरीरक्यों करतेहैं आयाकेइस कहनेसे यह प्रयोजन था किमहाराजासाहब चाहतेथेकि मेरे मनका हाल मालूम होजावे तबवह विषदेनेका जिक्रकरें और जबकमीशनके रूबरूआया केदूजहारलिये गये तोउस समयभी उसनेयही मतलब अपना बयानकियाहिंदुस्तानीलोगजादू और मंत्रपरबड़ाविश्वासरखते

हैंजोकिकिसीहिंदुस्तानीसेपूछाजावे किमंचऔरजादूक्यावस्तु हैतोबहुत कुछहाल वहसमझावेगा और उसपर अपनानिश्चयप्रकटकरेगा इसीप्रकार महाराजासाहबने आया से पूछा थाकिजो करनैलफ्रियर साहबपर कोईमंच अथवाजादू किया जावेतो असरकरेगा यानहींइससे उनकायह प्रयोजन थाकि जोकोई वस्तुहमतुमको देंतोतुम साहबके खानेमेंडालदोगेसर-जन्ट बेलनटायन साहब इसबातकाभी जिक्रकरतेहैं किपुलिसवालोंने आयापर सख्तीकीथी यहबातबिल्कुल गलतहै आया ने इस सख्तीका कहीं जिक्रनहीं किया पुलिसवालों ने केवल इतनाही आयासे कहाथा कि तुमनेधूमकर रक्खी है इसबात को आया समझी थी कि कुछ पुलिस वाले मुझको धमकाते हैंजब उससे कमीशनके रूबरू धमकी का हाल पूछा गयातो आयानेकहा कि मुझकोकिसी मनुष्यने नहीं धमकायाआया से यहभीपूछागयाकि तुमको किसीमनुष्यने पहिले धमकाया था तो आयाने कहामुझको किसीने नहीं धमकाया॥

मेरेविचारसे आयाकी संपूर्णगवाही निश्चयमानने के योग्य है औरकोई सन्देहउसमें नहींहै॥

पुलिसने उसकोकदाचित् नहीं धमकाया किन्तु साधारणतौरसेउससे सबबातें पूछीं।

दूसरागवाह रेजीडन्सीका एक चपरासी है यह चपरासी बहुतबड़ा गवाहहै अर्थात्रावजी जिसनेबहुतबड़ी गवाहीदी हरचन्दयह मनुष्यरेजीडन्सी का एकचपरासी था परन्तुउसने बाजारमेंबहुत रुपयाखर्च किया जबपुलिसने तहकीकातकी औरमालूमहुवाकिइसमनुष्यने बहुतसारुपयाउठायाहैतो २२ दिसम्बरकोयहमनुष्य पकड़ागया जो कुछउसने इजहारदिया वहसफे ८०-तहरीर जूदनवीस में मौजूद है उसमें रावजी ने खूबसाफ तौरसे बर्णन किया है कि स्टरसाहब के सन्मुखकहोंकर उसने इजहार दिये और मिस्टर स्टर साहब

ने भी अपने बयान में उसके इजहार की सिदाकत की॥

साईसार्ड—आपको याद होगा कि सरल्यूइसपीली साहब रावजी के इजहारों के लिये क्या कहते हैं उसके इजहार के पहिले असली इजहार दरयाफ्त होने की कुछ आशा नथी कि किस मनुष्य ने विषदिया है इसलिये मिस्टरसटर साहब और सरल्यूइसपीली साहब—२३—दिसम्बर को बड़े दिनकी छुट्टियों में बम्बई जाने वाले थे जबरावजी के इजहार से मालूम हुआ तो सरल्यूइसपीली साहबने कहा कि इस मनुष्य के बयान को मैं कलसुनूंगा आया बहुगलत है या सहीतथा च दूसरेदिन उन्होंने रावजी को बुलाया और आप उसकी बातों को सुना सरल्यूइसपीली साहब कहते हैं कि रावजीने उससमय उसी तरह बयान किया जैसा कि कमीशन के मेम्बरों के रूबरू इजहार दिया जबरावजी से उसका बयान सुनागया तो सटरसाहब ने उसको गिरिफ्तार किया और मालूम हुवा कि इस मनुष्यने बाजार में बहुतसा रुपया खर्च किया है इसी मनुष्य के बयान पर नरसूपकड़ा गया जहां और रेजीडन्सी के नौकर कैद थे उसी जगह रावजी और नरसू भी कैद किये गये नरसूएक पुलिसके अफ्सरके साथ रावजी के पास भेजागया और दोनों का सामना कराया गया रावजीने कहा कि मैंने गलत २ पानी में कबूलकरलिया तू भी इकरारकर इससे पहिले रावजी और नरसूकी कुछ वार्त्ता नहीं हुई॥

रावजीके इजहार भी लिखे नहीं गये थे और कोई मनुष्य ऐसा नथा जो नरसूको इत्तिला देता कि रावजीने क्या इजहार दिये मिस्टरसटर साहब और सरल्यूइसपीली साहबने उसका बयान जुबानी सुनलियाथा फिर क्योंकर पुलिसके लोग नरसूको सिखाते ताकि एक दूसरेका इजहार मुताबिक होजावे नरसू चालाक आदमी नहीं है कल्पना करो कि पुलिसने नरसूको भी सिखाया परन्तु उसका ऐसा स्मर्ण नहीं है जो उसको कुछ याद रहा है। अगर पुलिसवाले इतनी बातें किसी लिखे पढ़े को सिखाते

उसकोभीयाद रहना कठिन था इसलियेमेरे विचारसे उसके इजहारबिल्कुल ठीकहैं और किसी प्रकार की बनावट उसमें नहीं पाई जाती ॥

सरजन्टबेलनटायनसाहब ने रावजी के इजहार पर बहुत कुछगुफ्तगू की है जिसमें उसनेपेडरू का जिक्रकिया हैपरन्तु रावजीने अपना इजहारसाफ तौर से लिखाया है ॥

सरजन्टबेलनटायन साहब पेडरू के बिषय में कहते हैं कि सच्चागवाह एकयहीहै दूसरा कोई गवाह सच्चा नहींहै ॥ रावजी पेडरूपर तोहमतरखताहैकिवहमेरे साथगायकवार केमहलकोगयाथापरन्तु पेडरूजानेसे इन्कारकरताहै परन्तुमुझ कोइसका कारणमालूम नहींकि सरजन्ट बेलनटायन साहब क्योंकरकहतेहैं किपेडरूकीगवाहीनिश्चय माननेके योग्यहैमैने सबगवाहोंको पेशकियापरन्तु किसी गवाही की खसूसियत नहींकी कि असुकगवाह निश्चयमाननेके योग्यहै और असुक गवाह वेएतिवारहैं और इनही लोगोंके इजहारपरगवर्नमेण्ट इण्डियाने इस मुकद्दमेकी तहकीकातकी आज्ञादीथी मैं इस बातको तसदीक नहींकरसक्ता किअसुक गवाह प्रतिष्ठित है और असुक गवाहप्रतिष्ठितनहींहै बहरहाल पेडरू २५ वर्षका पुराना नौकरहै और कमीशनको अखतियारहै कि उसगवाह कोप्रतिष्ठित गवाहसमझे यह मनुष्य कहताहै किराव जीने जोकुछ मेरीनिस्बत बयानकिया वहबिल्कुल गलतहैयहशख्स कहताहै किमैं कभी महाराजा साहबकेपास नहीं गया वह खूबजानताहै किजोमैं इकरारकरूंगातो मुझकोकष्ट भुगत नापड़ेगाअगरइस शख्सकेइजहार मिस्टरऐडगन्टनसाहबकेरू बरूलिये गयेतो जरूरनहींहै किउसका बयानसचही छोड़न साहबकी जितनी प्रशंशाकीगई वास्तवमें वह इसी प्रशंसाके योग्यहैं अगरपेडरू मिस्टरस्टर साहबके रूबरू इजहारदेता तोनिश्चयहै किठीकठीक बयानकरता मिस्टरस्टर साहबकी

आज्ञासे यहमनुष्य मिस्टरऐडगैन्स्टन साहबकेपासगया उसको खानसाहब लिगयेथेजबउसको मालूमहुवाकि जोमैं इकरार करताहूं तोमेरेलिये हानिहोगी तब उसनेइनकारकियाथाकि मेरीनौकरीऔरप्रतिष्ठा बनीरहे परन्तु बिषदियेजानेके पहिले बहुतसे लोगवर्णन करतेहैं किपेडरू महाराजा साहब कानौकरहै औरमहाराजा साहबउसका बड़ा सन्मानकरतेथेकिन्तु उसनेवर्णनकियाथा किमैंने महाराजासाहबमेंकुछ पारितोषकपाया यदि इस मनुष्यने कोई काम नहीं किया और किसी कामकी महाराजा साहबको उससेआशा नथीतो उसको क्यों पारितोषक दियामहाराजा साहब को निस्संदेह इससे कुछ आशाहोगी औरउन्होने किसीकाम के लिये कहा होगा कमीशनकेमेम्बरों कोपेडरू केइजहारसे साबितहुवा होगाकि यह बहुतसे हालोंको जानताथा परन्तु किसी बातका उसनेइकरारनहींकिया रावजीने जोइजहार दिये वहबिल्कुल ठीकहैं पेडरूकहताहै किमुजसे सालिमने कईबेर महाराजा साहब केपास चलनेको कहा परन्तु मैनेइकरार नहींकिया॥

प्रेजोडएट साहबने प्रश्नकियाकि जोइजहार आया केमिस्टर स्कूटरसाहबके रूबरूलियेगये उसमेंकुछ जिक्र पेडरू काथाऐडवकेट जनरल साहबने कहा किजब आया के इजहार मेंप्रश्न कियेगयेतो उसनेपेडरूका कुछजिक्र कियाथा और १७वें पृष्ठमें बयान लिखाहुवाहै॥

मिस्टरवैन्सन साहब सेपहिलेआयानेकहाथा किपेडरूऔर रावजीने मुजसेकुछ कहाथाजब उससेफिर पूछा गयातो कहा किमुजसे करीम औरदूसरे एक मनुष्यने कहाथा परन्तु इजहारके होनेकेसमय करीमसेकुछ प्रश्नहीं कियेगये॥

साहब ऐडवकेट जनरलने कहा यहगल्तीमुतरज्जिम कीथी औरमालूम नहींकिमेरे मिचनेक्योंइसबातको विचारा परन्तु गवाहीसे साफसाबितहै किपेडरू बिषदिये जानेमें संयुक्त था जहांतक कहोमकेपेडरू कोनिस्बत अधिककहनामुजकोमंजर

नहीं है परन्तु इतनाही किजो आवश्यक और उचित है ॥

अगरपेडरूविष देनेमेंसंयुक्त न थातो उसको पारितोषक क्यों दियागया और यहबातभी दरयाफ्त तलबहैकि रावजी काक्या प्रयोजनथा कि पेडरू को अपराध लगाता रावजीने पेडरूका जिक्र नरसूआदिके सहशकिया ॥

अबदो बजगयेहैं जोमंजूर होतो थोड़ीदेरके लियेअदालत बरखास्तहो तथाचअदालत टिफनखानेके वास्तेबरखास्त हुई ॥

टिफन खाने के उपरान्तजबअदालत एकच हुईतोसाहब ऐडवकेट जनरल फिर तकरीर करने लगे प्रेजीडण्ट साहब ने पूछा किजाहिर कियागया है किनरसूकी गवाही २३ दिसम्बर को लीगई परन्तुमिस्टर सरल्यू इस पीली साहबके बयान से मालूम होता हैकि २४ दिसम्बरको उसके इजहार लिये गये—साहब ऐडवकेट जनरलनेकहानरसू के इजहार मिस्टर सूटर साहब केरूबरू२३ दिसम्बर को हुये थे ॥

प्रेजीडण्टसाहबने कहा मिस्टरसूटर साहबनेवर्णनकियाहै किजबनरसूके इजहारलिये गएतो सरल्यूइसपीलीसाहबउपस्थितथेसाहबऐडवकेट जनरलनेकहा—२४दिसम्बरकोबृहस्पतिवारथा और महाराजासाहबकी मुलाकातकादिनथाइसलिये मिस्टरसूटर साहब गलतीपर हैं और सरल्यूइसपीली साहब ठीक कहतेहैं कल्पना कीजिये कि २४दिसम्बर को नरसूके इजहार लियेगये तौभी अदालतको किसी प्रकार का एतिराज नहींहै ॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबबहुत कुछ शीशीका जिक्रकरते हैं परन्तु मेरेविचारसे मेरेदोस्त बड़ीगलतीपर हैं दामोदरपन्थकी गवाहीसे प्रगटहै कि जबउसके पासगजाबा शीशीलाया तो यह शीशी कुछ बड़ीथी इसलिये दमोदरपन्थ ने इसशीशी की दवादूसरी छोटीशीशीमें करदी इसशीशी में गुलाब का अतररहताथायहशीशीखासगुलाबकेअतरकीनथीअर्थात्जैसा मेरेमित्रकोखयालहैकिदोतीनकतरेअतरके उसमेंहोंगेऔरजो

टरकी और ईरानमेंजियादहविकतीहै अगरऐसीछोटीशीशी होतीतो वहइसकाममेंनलाईजातीदामोदरपन्थअपनेइजहार-मेंवर्णनकरताहैकि वहशीशीएक उंगलीकेबराबरथीइसलिये मेरेदोस्तकाखयालबिल्कुल गलतहै यहशीशीबहुतछोटीन थी औसतदरजेकीथीउसमेंअधिकवस्तुआसक्तीथीयदियहशीशीइ-तनीबड़ीथीऔरउसकेमुखपर रुईऔरमोमलगाकरवा याइसवा-स्तेजबरावजीने उसकोनेफेमें रक्खाहोतो शायदथोड़ीबू देंवा-हरनिकलींहों और रावजीके पेटपरवह दवालगगईहो डा-क्टरग्रेसाहबने रावजीकापेटदेखा और कहाकियह निशान पेटपरविषसेमालुमहोताहै और कहाकिजिसतरहकी शीशी से इसनिशानका होनाबयानहुवाहै उसशीशी से यहनिशान पड़गया हो॥

इसनिशानके लियेबहुतकुछ बयानहुवाहै सुतरज्जिमने ग-लतीसे तर्जुमाकिया कि पेटपरफफोला या परन्तु जोतर्जु-माशुद्धहोता तो फफोला न लिखाजाता किन्तु फोड़ासमझा जाता क्योंकि जबपेट अथवा शरीरकाकोई भागजलजाता है तोफफोलापड़ता है फोड़ानहींहोता इससेखूबतसदीक हुवा किजहरकीबजहसे रावजीकेउदरपर फोड़ाहुवाथा सिवायइ-सके जबडाक्टरग्रेसाहब ने रावजीकेपेटको देखकरअपनी राय बयानकीतो तबतक दामोदरपन्थके इजहार नहीं हुयेथेफिर क्योंकर रावजीजानता कि दामोदरपन्थ क्या कहेगा॥

हकीमने जोदवाईबताई थी और दवा और जहरों में से एकसंखियाभी थी रावजीको मंजूरन था कि करनैलफियर-साहबको कोईऐसी वस्तुदीजावे जोतुरन्तही अपनाकाम कर जावेइसीसे उसशीशीकी दवाफेंकदी अगरउसको अपनीअप्र-तिष्ठाका विचार न होतातो नहानेकेसमय दवाकोडाल देता परन्तु उसनेदवाको फेंक दिया और नरसूसे कहा होगाकि मैंनेदवा टपमेंडालदी ताकि वहमहाराजा साहबसे शिका-यत न करे॥

कुछसंदेहनहीं किजब करनैलफियरसाहबके माथेपर फोड़ा थातो महाराजा साहबके राजीकरनेके वास्ते निस्संदेह फोड़े कीदवा में संखिया डाला होगा क्योंकि करनैलफियर साहब फोड़ेपरमल्हमलगातेथे तोउसमें संखियेकाडालदेनाकुछकठिननथा फिरउन्होने महाराजासाहबसे बयान किया होगाकि हमनेइसप्रकारकी कारवाईकी और उससमय दामोदरपंथ नेसुनाहोगानहींतो दामोदरपंथकोकरनैलफियरसाहबके फोड़े काहाल क्यामालूम होता क्योंकि ऐसा नहीं होसक्ता था कि दामोदरपंथ एकगलत बयानकरता जिसकीतारीखवगैरहसब दुरुस्त होतीं कि करनैलसाहबने क्योंकर फाहा लगाया और किसतरह उनकोउसमें जलनमालूमहुई—कितनाही मेरेमित्र नेरावजीके इजहारको बहुतकुरेदन करनाचाहापरन्तु जितनाकिउन्होंने रद्दकरनाचाहाउतनीही उसकेबयानको मजबूतीऔर सिदाकतहुई और रावजीके इजहार और उसकी बातरद्दनहीं होतीजब शीशीदीगई थीतो रावजीने अपनेइजहारमेंशीशीके दियेजानेकी तारीखबयानकी यहतारीखकरनैलफियरसाहबके फोड़ेकेदिनोंसे मुताबिकहै यदियह विचार कियाजावे कि यहसब बातेंपुलिस की गढ़ी है तोडाक्टरसीवर्डसाहब और पुलिससे साजिशहोगी और उन्होंनेकहदिया होगाकि मैंनेफोड़े का किसभांति से इलाज किया और इस बात काभीनिश्चयनहीं आताकिपुलिसने क्योंकर दामोदरपंथ कोसिखायाहोगा और क्योंकर दामोदरपंथने मिस्टररिचीसाहब और कमीशनके सम्मुखएक मावयानकिया॥

सरजस्टबेलनटायनसाहब ने पेटीकेलिये भीबहुत कुछजिक्र कियाहै मेरेमित्र यहबात प्रगटकरना चाहतेहैं किमिस्टरसूटर साहबकोभी इससुआमलेमें साजिशथी और वहचाहतेथेकि जुर्म साबित होजायपरन्तु मैंनहींकहसक्ता कि मिस्टरसूटर साहबने इसतरहकामेल क्योंकियाहोगा मेरेविचारसे यहबात

असम्भवितहै अकबरअलीएक तजुरबेकार अफ़सरहै जबउसने सुनाकिरावजी पुड़ियोंको अपनीपेटीमेंरक्खा करताथातोतीव्र बुद्धिसेउसने उसपेटीको देखना चाहाथा कि मालूम करे कि आयापुड़िया काविष बाहरनिकालकर पेटीमें रहगयाहै या नहींक्योंकि उसकोमंजूरथा किवखूबी इसबातको साबितकरे किउसने विषदिया वानहीं रावजी के इकरार परही मंजूरीं थाकि उसपर एकबज़त बड़ाअपराध कायमकिया जावे और अकबरअलीके लियेकदाचित् खयालनहीं होसक्ता कि उसने कुछ चालाकी कीहै क्योंकि उसको उससमय मालूमथा कि मिस्टरस्कटरसाहब आवेंगे और फिरलौट करचले जावेंगेकमीशनके मेम्बरोंकोस्मर्ण होगाकियह सबबातेंक्योंकर हुईंयह बात विचारमें नहीं आती किवहशख़्स पेटीके लेनेको गयाथा उसनेविषकी पुड़ियापेटीमेंरखदीहो जबपेटीमंगवाईथी मिस्टरस्कटरसाहब उस कमरेमें थे जहांकि तहकीकात होती थी और उन्होंनेविचारा होगाकिपेटीमें क्या निकलेगा इसलिये मुंहधोने और वस्त्रबदलने केलियेदूसरे कमरेमें चलेगये क्यों किहाजिरीका समयआगया था और मुखकेधोने और कपड़ा केबदलनेमें पन्द्रहअथवा सोलह मिनट ब्यतीत हुयेहोंगे इसी समयान्तरमें पेटीआई और उसकोदेखा गया अकबर अलीने उसपेटीको सबजगहदेखाजब उनकोकहीं जेबआदिनमालूम हुईतो रावजीसे पूछाकिगुप्त जेबइसमें कहां है और पुड़ियों को कहां रखता था जब रावजीने जेबको बताया तो उन्होंने उंगलियांडाल करउसको फाड़ातो उसमेंसे एकपुड़िया निकलीतुरन्तही मिस्टरस्कटर साहबको उन्होंनेबुलाया औरमिस्टर स्कटरसाहबने उसपुड़ियाको जेबसेनिकाल करदेखातो उसमें उसीभांतिका विषथा जैसाकि करनैलफियर साहबकेगिलास मेंडालागयाथा जो पुलिसने कुछकाररवाई कीतो वहक्योंकर मालूम कर सक्तेकि अमुक प्रकार की संखिया करनैलफियर

साहबको दीगईहै कदाचित् विश्वासनहीं आताकि पुलिसके लोगइतने चालाकहैं इसलिये मुझकोनिश्चयहै कि कमीशनके मेम्बर सरजन्हबेलनटायनसाहबकी इसतक्रीरपर कुछखियाल नकरेंगे यहपेटी रावजीसे ९–नवम्बरको लीगई और भोदरको दीगई तबसे भोदरके पास यहपेटीरही खानबहादुर अकबर अलीने सीधी २ कारर्वाईके सिवाय और कोईचालाकी नहीं की जबपुड़िया पेटीमें मिलीतो खानबहादुर अब्दुलअली और गजानन्द बतिल उपस्थितथे सरजन्हबेलनटायन साहबने उन दोनोंमनुष्योंसे प्रश्नकिये मेरेविचारसे जोविषकी पुड़ियारावजीकी पेटीमें मिलीउसमें कोई चालाकी नहींहुई उसपुड़िया में वहीविषथा जो उसने करनैलफियरसाहबको दियाथा॥

सरजन्हबेलनटायनसाहबको चाहियेथा कि रावजीके इजहारपरखूबग़ौर करकेएतिराज करतेजो इससुकद्दमेमें पुलिस की कारर्वाई होती तो इसपुड़िया में संखिया और हीरेका चूर्णभी अवश्य होता न केवल संखिया इससंखियेका मिलना रावजीके बयानकेमुआफिकहै क्योंकि उसनेबयान कियाहैकि थोड़ी २ संखियाहीरेके चूर्णमें मिलाई घी और बाकीको रख छोड़ाथा तथापुलिसको वहीपुड़िया मिली फिर क्योंकर यह बातहोसक्तीहै कि पुलिसने चालाकी करकेपुड़ियाको रखदिया यहभीकच्चा विचारहै॥

कमीशनके मेम्बरोंको स्मर्णहोगा कि रावजीने वर्णनकिया कि मैंअपनेदुश्मनको एकहीबेरमारडालना नहींचाहताथा रावजीने थोड़ी २ संखियापुड़ियोंमें डालीथीजब करनैलफियर साहबने ९–और १० नवम्बरको इजहारलिये तोउसने फ़ौजपर तोहमत रक्खीथी कि उसने विषदियाहै यहतोहमत उनकी वृथाथी परन्तु जबखयाल कियाजाताहै कि पहिलेफ़ौज कईबेर माखूज होचुकाहै और यहशख्स बदसुआश मशहूरथा इसी सिवनौकरोंको उसकेविष देनेका निश्चयथा कमीशनकेमेम्बरों

को स्मर्ण होगा कि फैजू महाराजा साहब के दरबार का नौकर था और उसका एक पुत्र भी महाराजा साहब के पास नौकर था यह लड़का बिल्कुल कम उमर था तनख्वाह मिलने के लिये उसका नाम नौकरों में था इसी वजह से रेजीडन्सी के नौकरों का गुमान फैजू के लिये गलत न था ईश्वर न चाहे रावजी के ओर से मैं कुछ उज्र नहीं करता हूं किन्तु केवल इतना ही जाहिर करता हूं कि सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा है कि उसका इजहार निश्चय मानने के योग्य नहीं है और मैं कहता हूं कि उसका इजहार निश्चय मानने के लायक है जो कमीशन के मेम्बर सब इजहार को गलत करदें तो उसका इजहार भी गलत है नहीं तो मेरे विचार से उसके इजहार में कोई झूठ और गलती नहीं है॥

ऐडवकेट जनरल साहब ने कहा कि चार बज गये हैं और जब तक कि ऐड्रेस को संक्षेप न करूंगा पूर्ण न होगा प्रेजीडण्ट साहब ने कहा कि आप उसे मुख्तसिर न कीजिये आज अदालत बरखास्त को जावे-सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा मैं ठीक २ कहता हूं कि मेरे दोस्त ने एक क्षण भी अपने वक्त में वृथा न खोया सो अदालत बरखास्त हुई॥

बीसवें दिन का इजलास॥

जब कमीशन एक चर्च हुई तो प्रेजीडण्ट साहब ने कहा कि श्रीमान् महाराजा सेंधिया और सरदिनकरराव अलील हैं इस लिये वह अदालत में नहीं आ सके जो कुछ आपकी स्कीम होगी वह उनके पास भेजी जावेगी॥

ऐडवकेट जनरल साहब ने अपना अफ्सोस जाहिर किया कि दो कमीशन के मेम्बर आज अदालत में न आ सके परन्तु आशा है कि मेरी स्कीम पर वह खूब गौर करेंगे॥

मेरी समझ में नहीं आया कि नरसू के इजहार क्यों निश्चय मानने के योग्य नहीं मेरे मित्र सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा है कि नरसू एक फर्जी लगवाहथा उसकी गवाही की कुछ आवश्यकता

नथी यहगवाह इसलिये पेशकिया गया था कि रावजी की गवाहीको तसदीककरे—मेरा यहखयाल सरजन्हवेलनटायन साहबकेअनुकूलनहींहैमेरेविचारसे नरसू की गवाहीनिहायत जरूरीथी क्योंकि उसकीगवाही विषदियेजाने के विषयमें ली गई इसकेविशेषवह घरमेंरहता था और उसीके द्वारा खबरें आयाजाया करतीथीं अर्थात् जोखबरें रावजी महाराजासाहबको भेजाकरताथा इसलिये कमीशनके मेम्बर इसबात पर खयालकरेंगे कि इसमनुष्य की गवाही बहुत जरूरीथीसिवा इसके नरसू रावजी हवलदारका अफ्सरथा जोवह इसमुआमलेमें संयुक्त नकिया जातातो और चपरासियोंकोभयरहता महाराजासाहबने नरसू को गालियांदीथीं और कहाथा कि तूने विषदेनेमें बड़ी देरीकी महाराजासाहबने नरसूसे कहा था कि रेजीडण्टसाहबकी डेवढ़ीपर तुमसदा बैठेरहाकरोजब रावजी किसीकाग़ज केलेनेकोभीतरजाय अथवाविषकेडालती समय कोईगैरशख्स आजाय तोसीटीबजादेना परन्तु सोमवार को नरसू अपनेइसपछिरेपर नथा महाराजासाहब को संदेह हुवाकि किसीमनुष्यने रावजीकोविषकीपुड़ियाशर्ब्बतमेंडालते हुये देखलिया और असलबातयह है कि उसदिन ५ बजेतक नरसूरेजीडन्सीमें नहींआयाथा और उसदिन रावजीने भोर को शर्ब्बतमेंविषडालदिया था इसीलिये महाराजा साहबको चिन्ताहुई और मार्गान्तरमें उन्होंने दामोदरपंथसे कहदिया था इनसबबातों से पायाजाताहै कि यह मुक़द्दमा पुलिसका बनायाहुवा नहींहै जोकुछ तहकीक़ात से जाहिरहुवा वही असलियत मुकद्दमेकी है अब कमीशन के मेम्बरों को मालूम होगयाहोगा कि नरसू किसलिये नियतकियागयाथा यद्यपि वह पुरानानौकरहै परन्तु उसमेंकुछभी बुद्धिनहींहैमालूम होताहै कि इसमनुष्यने पुरानेनौकर होनेसे जमादारी की पदवीप्राप्तकी नकिसी कारगुज़ारी से ॥

सरजन्टबेलनटायन साहब उसके कुवेंमें गिरनेपर बड़ाहास्य करतेहैं कुवेंकेगिरनेमें जोगवाही पेशहुई उसमें बड़ाअन्तरहै नरसू वर्णन करताहै कि जिसदिनमेरे इजहार लिये गये मै कुवेंकी ओरजाताथा मेरेमनमें यहआया किइतनीबड़ी अवधि के उपरान्त मेरे भाग्यमें यहबदनामी लिखीथी जबमैंने वहां अपने साथियों को देखा तो नेच मेरे सामनेन होसके तो मुझे यही उचित मालुम हुवा कि ऐसे जीने से डूब मरना उत्तमहै सरजन्टबेलनटायनसाहबने अपनी स्पीचमें इस बात कोभी साबित करनाचाहाहै कि नरसूका यहभी एक फरेब है यदि वास्तवमें वह कुवेंमें गिरा तो अकस्मात् गिरा जान बूझकरनहीं गिराथा सरजन्टबेलनटायन साहबको मंजूरथा कि सरल्यूइसपीकीसाहब वहबयान नकरें जो उन्हों ने बयान किया कि मैंनेनरसूको आतेहुयेदेखा और वहबिल्कुलजलमें भीगाहुवाथा जोमनुष्य उसकुवेंको देखेगा वहीयहबातकहेगा कि इसकुवेंमें अकस्मात्सेगिरना असम्भवितहै नकोईमनुष्य यहकहेगा कि पुलिसकी बनाई यहबातहै यहबातबिल्कुल गलतहै नरसूको वास्तवमें बड़ीलज्जाहोगी और उसकोमंजूर नहोगा कि अपनामुख किसीको दिखाऊं इसलज्जासेभी उस के इजहारोंकी तसदीकहोगी क्योंकि अगरवहठीक२ बयान करता तो उसकोकिसबातकी लज्जाहोती हरमनुष्यकोस्वीकार होगा कि सरदिनकररावने उससे कैसे २ प्रश्नकिये जिनलोगों ने उससमय सुना उनकोभी निश्चयहोगयाथा कि यहमनुष्य जोवर्णनकरेगागलतनहोगा उसनेहरदफे यहीकहाकि ईश्वर को वर्त्तमान समझकर ठीक२ कहताहूं और इसीलियेउस-से कहा गया कि जो तू ठीक कहेगा तो तेराअपराध क्षमा कियाजावेगा उसनेइसका भी यही उत्तरदिया कि सरकार मेरी माता पिताहै जो चाहेकरें मैंअबभी सचकहताहूं दा-मोदरपन्थकी गवाहीपरमेरेमिचनेबहुतकुछ एतिराजकियेहैं यहमनुष्य गायकवारका अतिविश्वसित नौकरथा गायकवार

और दामोदरपन्थमें कोईरंजभी नथा जबइसमनुष्यको गायकवारसे कोईबैर नथा तो क्याकारणहै कि वहगायकवार पर ऐसा अपराध लगाना चाहे—अखीर मरतबा गायकवार दामोदरपन्थको पोलीसाहब के पासलेगये और उसको पेशकर केकहा कि यहमनुष्य मेरा प्राईवेटसिक्रेटरी है इससे साफ जाहिरहै कि गायकवार और दामोदरपन्थमें कोईरंजनथा जिस दिन गायकवार पकड़े गये उस दिन दामोदरपन्थ भी पकड़ागया उसको अपनेस्वामीपर झूठेतोहमतके बनाने का अवसरनमिला यहबात असम्भवितहै कि पुलिसके नौकर इतने आदमियोंको सिखाते और सबसे एकहीप्रकार की गवाही दिलाते-माईलार्ड-मुकद्दमेंके हाल और गवाहोंकीगवाहीके देखनेसे मेरेविचारमें सिवायइसके कि गायकवार पर जुर्म्मसाबितहै कमीशनसे और कुछफैसला नहोगा औरजितने गवाह गुजरे सबने ठीक बयानकिया सरसन्टबेलनटायन साहबने जो २ एतिराजकिये वहबिल्कुल फजूलथे उनकीकतरीर इर गिज समाअतके लायकनहीहै हेमचन्द फतहचन्दने अदालतके रूबरू बारम्बार झूठी सौगन्दखाई पहिलेकुछबयानकिया और फिरकुछकहा सिवाय हेमचन्द फतहचन्दके और सब गवाहोंने एकसी गवाहीदी अबकमीशनके मेम्बरों को इखतियारहै जैसाचाहें वैसालिखें सरजन्टबेलनटायनसाहबनेसालिम और यशवन्तरावकेलियेभी कुछअच्छाबयाननहीं किया यहदोगवाह गायकवारकेविश्वसितथे जबवेआपहीफिर गयेऔरउनकीगवाहीसरजन्टबेलनटायनसाहबनेनहींली और बाक्कीक्यारहगया इससेजियादह मुझकोहिदायत नहींहै इस लियेमैंऔर कुछनहीं कहसक्ता सबसाहिबों सेमेरीअखीरअरजयहहै कियहरईस जोमाखूज हुवाहै हमदर्दीके लायक नहींहै छोटी२ बातोंकाजिक्र करनामैंने उचितन समझा जो बातेंमुख्यथीं उन्हींकाकहा आशाहैकि कमीशनके मेम्बर खूब इन्साफ करेंगे मैं कमीशनके मेंम्बरोंका शुकरिया अदाकता

हूंकि उन्होंनेमेरे एडरेसको मनसेसुना अबमेरी प्रार्थनाहैकि आपखूब इन्साफ करें १२बजे ४५ मिनटपर एडवकेट जनरल साहबकोसीव सम्पूर्णहुई इसकेउपरान्त कई क्षणसब लोग चुपरहेफिर कमीशनबरखास्त हुई॥

रेजोल्यूशन मईसन् १८७२ ई०॥

टाइम्ज आफ इण्डियाके ऐडीटरसाहब के नामपर-क्योंकि मैंकमीशनके इजलासमें गवाहीकेलिये नहींबुलाया गयामैं रेजोल्यूशन मईसन्१८७२ई०केविषयमें लिखताहूंकियहठीक हैकिमैंनेरेजोल्यूशन मईसन्१८७२ई०कापाया उसका हाल इसतरह परहैंकिमिस्टर हरीचन्दचिन्तामणि जोथीमान्गा-यकवारके इंगलिस्तानमें एजन्ट हैं उन्होंने उसको एकनकल इंगलिस्तानसे लेकरमेरे पासभेजीथी और वह हमारे पास जूनमहीनेमेंआई और हरीचन्दचिन्तामणिने २४ जूनकोलार्ड सेलसबरी साहबके सम्मुखपेशकिया इसकाजिक्र मैंने एकबेर सरल्यूइस पोलीसाहबसे भीकिया और उन्होंने सुनसेवह मं-गवाईकरनैल फियरसाहब जोकहतेहैं किहमने इस बिषयमें शिकायत नहींकी वहबिल्कुल गलतहै हमनेकई बेरकरनैल फियरसाहबसे कहाकिआप राज्यके प्रबन्धमेंहमको सहायता दीजिये परन्तु उन्होंने उसकाकुछ बिचारनकियासोदूसरीन-वम्बरको खरीतालिखागयासरल्यूइस पोलीसाहबनेएकसप्ताह केबजतनवीन प्रबन्धकिये और हमको बनिस्बत करनैल फियर साहबके तीनमहीनेके सरल्यूपोली साहब से एक सप्ताह में बजत सहायता मिली करनैल फियर साहब कहते हैं कि २ नवम्बरके खरीतेमें बिल्कुल हालत गलातलिखे थे हांलाकि जो कुछ उसमें हाल लिखे थे वह सब ठीक हैं॥

दस्तखत—दादा भाई नौरोजी

दामोदरपन्थके उन इजहारोंका उल्था जोउसने पुलिसकेरूबरूदियें ॥

दामोदर चिम्बक ब्राह्मणजोपहिले महाराजा गायकवार कोसेक्रेटरीथा इसतरहइजहार देताहैकि यशवन्तरावयेवली मालिम और रावजी करनैलफियरसाहबके विष देनेमें शरीक हैं आश्विनमहीना जोदसहरेके निकट है महाराजाने मुजसे कहाकिथोड़ी संखियाफौजदारीसे मंगाओ और कहाकियह संखियाघोड़ेकी खुजलीके वास्तेमंगाईजातीहै परन्तु फौजदार से संखिया नमिली महाराजासाहबनेकहाकि कम्पसेमंगाओ मैने कहाकि इसके मंगानेमें पासकी आवश्यक होगीमहाराजासाहबने कहाकिकुछ परवाहनहींहै मैनेदोतोले संखियाबूरूहीन बोहराकेद्वारापाई महाराजासाहबने मुजसेकहा थाकि तुमबूरूहीनसे इकरार करदेनाकि महाराजा उसको सिलाखानेकी दारोग़गी देंगे पहिले उसनेनहीं बताया कि उसनेसंखिया कहांसेपाई मैने महाराजाको संखिया दिखाई और पूछाकिमैंउसकोकिसेदूं महाराजानेकहाकितुम सालिम कोदेदोवह उसकोऔषधीबनावेगामैने सालिमकोदेदीइसके उपरान्त महाराजाने कहाकि एकतोला भरहीरा मंगाओ और कहाकिइस दवाकेलियेउसकी भस्म कीजावेगीमैनेनानाजीवतिलको आज्ञादी किएकतोलाभरहीरा लाकरमहाराजाकोदिखाइये उसनेतोला भरहीरा महाराजको लाकर दिखाया औरमहाराजाने कहाकियह हीरायशवन्तको देदो मुजको अबमालूम हुआकि महाराजाने यहहीरा इसप्रयोजन केलियेमंगाया था पहिलेतो महाराजने मुजसेकहा था कि यहहीरा स्वामीअकलकोट के ताजकेलिये दरकार है और दूबारह मुजसेकहा कितोला भरहीरेका चूरहहमकोलादो मैने नानाजीवतिल सेकहाकितोला भरहीरेका चूर्ण लादो मुजको खूबस्मर्ण नहींहैपरन्तु इतनायादहैकि नानाजीवतिल वाबिनायकराव ने दूसरेदिनसंध्या कोहीरेका चूर्णला दिया महाराजासे मैनेपूछा कियहचर्ण क्याकियाजावे उन्होंने आ-

चादीकि यशवन्तको देदोजब हीरेकाचूर्ण मैंयशवन्त कोदेने लगामैने उससेपूछाकियह चूरहक्याहोगा उसनेकहाकियह चूरहकरनैल फियरसाहबके शर्बतमें मिलायाजावेगा ता कि वहमरजावें यहबात करनैल फियरसाहबके विषदियें जानेके पांचछः दिनपहिले हुईथीजिसदिन विषदियागया मैं महाराजाके साथरेजीडण्ट साहबके यहांगयाथा औरमैंसेवकधर्म्मशालामें ठहरारहा और महाराजासाहब रेजीडण्ट की भेंटको गयेजब वहांसे लौट आयेतो मुजसे कहा किविषका देनाआज मालूमहोगया सालिम औरयशवन्त रावकाआना जानारावजीके पासजाहिर होगयाऔरजबयह बात मालूम हुई तो सालिमरावजीके घरगयाऔरसम्पूर्ण पुडियांजोरावजीके घरपरथी फेंकदीं मैनेमहाराजासे पूछाकिक्योंकरयह बात प्रगटहोगई उन्होंने उत्तर दियाकि नरसूजमादार आज केदिनपहिरेपरनथा जबकोई आताथातो नरसूसोटीबजादेता थाऔरवह कियहांपर नथाइसलिये यहभेद मालूमहोगया औरदिनोंसे महाराजासाहब आजजल्दी आयेथेमैं फिर घर चलागया औरमध्याह्नकेसमय मैनेमहाराजाको लक्ष्मीबाईके महलमें देखाकि महाराजा और नानासाहब इसी विषका जिक्रकररहेहैं औरदोपहरकेउपरान्तमैं औरमहाराजाऔर नानासाहब सवारहोकर कहींगये तोमहाराजा मार्गमेंकहनेलगे कि खबरदार जोजिक्र हमकररहेथे किसीसेन कहनाऔर इसकीतलाश रखनादूसरेदिनमहाराजानेसालिम और यशवन्तराव से बहुतकुछ समझा कर कहाकि तुम कभी इसकाइकरार न करना इसकेउपरान्त वहफिर सवारहोकर गयेऔर हमसेऔर नानासाहबसे मार्गमेंकहने लगेकि रावजीतो छूटगया अबकुछ भयनहीं है जब करनैलफियरसाहब कीजगहपर करनैलपोलीसाहबआयेतोमहाराजा कहनेलगे कि आज रावजीने मुजको दूरसे सलाम किया था और वह चाहताथा किजोकुछउससेप्रतिज्ञा कीगईथी वहपारितोषक

उसकोदियाजावे परन्तुमहाराजा कहने लगे किमैंने उससे कहा किजबयह कुलमुआमलादूर होजावेगातब तुमको पारितोषकमिलेगा फिरजब सूटरसाहब यहांआये और रावजीपकड़ा नहीं गया तो महाराजा ने सुना कि सूटर साहब बम्बईको लौटगये इसबातको सुनकर महाराजा साहब अति प्रसन्नहुये और कहने लगेकिअब कुछभयनहींहै हमसबबरी होजावेंगे परन्तुरावजी जबपकड़ागया तोमहाराजानेमुझसे कहाकि रावजीका अपराधक्षमाहोगया और उसने सबबातें अपने इजहारमेंकहदीहैं तुम कदाचित्किसीबातकाइकरार नकरना और नानाहरेवा और सालिम और यशवन्तराव से भी मैंनेसमझादिया है जबकि रेजीडन्सीसेसालिम और यशवन्तरावकेगिरफ्तारीका हुक्मआया तोमुझकोबड़ाभय हुवा और मैंनेनानासाहबसे कहाकिहम और तुमभीइसीतरहसे पकड़ेजावेंगे संध्याके समय मुझको महाराजासाहबने कहाकि उनदोनों मनुष्योंको रेजीडन्सीमें मैंनेभेज दिया है और उनसेकहाकितुमकभी इकरारनकरना और फिरमुझसेकहनेलगे कि जोतुम इकरारकरदोगे तो गोविन्दराव कालीके सदृशतुम्हारे टुकड़े२ होजावेंगे और यहीबातनानाहरेवासे भी उन्होंनेकहीथी मैंनेसुनाथा कि नानाजीवतिल ने हीराहेमचन्द्रसेमोललियाथा जबमैंनेउसहिसाबको महाराजा साहबके दस्तखतकेवास्ते पेशकियातो उन्होंने कहा कि स्वामीनारायणनामकेजोब्राह्मणखिलायेगयेहैं और जोसातहजाररुपयेका हीरामोललियागयाहैतोउसमेंसे आधी रकमको अर्थात्तीन हजार पांचसौ रुपये तो ब्राह्मणोंके नाम बढ़ादो और तीन हजारपांचसौ रुपयेहीरोंकी खरीदके नामरहनेदो और यह लिखदोकिहीरेदेवाकेलियेलियेगयेहैं परन्तुजबकिविघ्नहोनासाबितहोगयातोमैंने महाराजसेकहाकिहीरादेवामेंनहींपड़ता हैअबहम क्या करें उन्होंने कहाकि उसकागजको फाड़डालो मैंने नानाजीवतिलसे कहा और इन्होने उत्तरदिया किहमने

उनवरकों कोनिकाल डाला है मैंने इसबात की महाराजासे इत्तिलाकर दीहै यहहिसाब किसीभी खातेमेंनहीं रहताथा किन्तु कागजके बन्दों पर रहता था जबकि मैंने फौजदार से संखिया मंगायाथा तोज़ुर्जजी वद्या वहांका कारकुन था उसने कहा कि महाराज के पूछनेके बिनामैं तुमको नदूंगा परन्तु फिर उससे मैंने नमंगाई वह कागज कि जिस पर मेरे दस्तखतथे वहफौजदारके दफ्तरमें रहा और जबहमनेमांगा तोवहांसेवापिसनआया करनैलफियरसाहबसेऔर महाराजा से बज़त दिनोंसेबैरहोगयाथाऔर लक्ष्मीबाईकामहाराजामे विवाहहोने सेतो और भीअधिकबैर होगया था जब किमैं नौसारीमें थातो मैंने देखाकिरावजी सरकारी कागज महाराजाकेपास लेगयावह कागज यसुनाबाईकेथे जिनमें महाराजाकीशिकायत उसने फियरसाहबको लिखीथी सुजसेमहाराजानेकहा किइनकी नकलकर लोसोरातोंरात मैंने उनसब कागजोंकी नकलकरली वहजोनकल मैंनेकरलीथी अबउसकोमैंने फाड़डाला यहविचार करकिऐसा नहो कोई देखले फिर करनैलसाहब बड़ौदे मेंआये और करनैलफियर साहब कोउन दिनोंज्वर भीआता था और शिरमें फोड़ाभीनिकला था मैंनेएकदिन महाराजाको सालिमसे बातेंकरते ज़ुयेसुना सालिममहाराजासे कहरहाथा कि साहबकेफोड़ेकेप्लास्टरमें वहदवा मिलाईगई और साहबके फोड़ेमेंबड़ीजलनहै महाराजानेकहा किमैं रावजीसे सुनचुकाहूं और रावजीने प्लस्तर में वहदवा मिलाई थी थोड़े दिनके उपरान्त बड़े हकीमके छोटेभाई एकबोतलमें विषकीदवा बनाकर लाये परन्तु वहां बज़तसे मनुष्यथे इसलिये उन्होने वहदवा सबकेरूबरू नहीं दीएक दिन संध्याको महाराजानेमुजको आज्ञा दी कि बड़े हकीमकेछोटे भाईने बर्रें मंगाई हैं तुम फौजदारोंको हुक्मभे जो कि जो लोग बर्रें पकड़ते हैं वह बर्रें पकड़ कर हकीम साहबके पासलेजावें और मैंने नरायणरावबाबाकसकरको जो

किफौजदारीमें नौकरहै आज्ञादेदो हैदूसरेदिन महाराजाने हरेवासे कहाकिबड़े हकीम साहबके छोटे भाई दवाकेलिये सर्पमांगते हैं दोतीनदिनके उपरान्त सपेंवाला आया और हरेवासांपोंको लेकरहकीम साहबको देआया नारायणराव बरेंलाया और वहभीहकीम साहबके पास भेजदीफिर हकीम साहबनेकहाकि मुझकोघोड़े कापेशावलादो और मैने बापा जीकेआज्ञादी और उसनेहकीम साहबके पासपहुंचा दिया उसी समय फौजदारी के दफ्तर से संखिया भी मिला परन्तु मुझेस्मर्णनहीं किकितना थाजबयह वस्तुहकीम साहबकेपास पहुंचगईतो वहएक शीशी तैय्यार करकेलायेऔर महाराजा नेवहशीशी सालिमको देदी वहशीशी अतरकीथी मुझेमालुम हुवा किवह करनैफियर साहबके फोड़े में लगानेके लिये दी थीतीनबेर करनैलफियर साहबके मारनेके लियेउद्योगकिया गयापहिले हकीम साहब की दवासे दूसरे पलाण्डु में विष मिलानेसे और तीसरेपर्वतमें विषमिलाने से मैंनेदोवेर नूरु-द्दीनबैहरासेसंखियापाईथी जबमुझेमालुमहुवाकि मुकद्दमेकी तहकीकात होरहीहै तोमैने नूरुद्दीनसे पूछा कि वह संखिया तो तुमने मेरेनाम नहीं लिखीहै उसने कहा मैने तो नहीं लिखीहै परन्तुकम्पूमें जिसमनुष्यके पाससे तुमलाये थे उसने तुम्हारे नामलिखीहै जो दो सौरुपये तुम हमको दो तोहम उसकागजसे तुम्हारा नामनिकालडालेंमैनेकहाकिअच्छातुम अपनेपाससे दोसौरुपये देके हमारा नाम निकलवादो मैंदो सौरुपये तुमको अपनेहिसाबसे भुजराढूंगा क्योंकिमैं कम्पूवाले को नहीं जानताहूं परन्तु मुझेनिश्चय नहींहै कि उसनेरुपया देके मेरानाम निकलवाया हो॥

दामोदर पंथ अपने इज़हार देरहा है

लिखा हुवा ३० मई सन् १८७५ ई० का।

वह बयान करताहै कि यशवन्तराव और सालिम रुपये ले जाया करतेथे और रेजीडन्सी के नौकरोंको दियाकरते थे

और उनरकमों को और हिसाबमें लिखादिया करतेथे जब यहदोनों मनुष्य गिरिफ्तारहुयेतो महाराजने कहाकि जो रकमेंमशकूक हैं उनकोबदलदो अथवा निकालडालो याछोल डालो परन्तु हिसाब तोकाई जगहपर लिखाजाता था इस लिये उनरकमोंपर मैंने स्याहीडालदी यशवन्तराव और सालिम रेजीडन्सी के नौकरोंको डेढ़वर्षसे रिश्वतदेते थे चार महीनेहुये कि एकलाख बीसहजाररुपये प्रेमचन्दरायचन्दको दियागयाथा यहरुपया लक्ष्मीबाईके लड़काहोने परदियागया था और रुपया गवर्नरसाहबके रिश्वतदेने को दियागयाथा कि गवर्नमेण्ट लक्ष्मीबाईके पुत्रको मल्हरावका वारिसतसलीम करे परन्तु यहरुपया नहीं दियागया और प्रेमचन्द रायचन्द ने यह रुपया अपने पासरखछोड़ा और यह रुपया खानगी हिसाबमें लिखागया इसीअवसर में एकबाबू कलकत्तेसे बुलायागयाथा और उसकोएकबेर बीसहजार रुपये और दूसरी बेर पच्चीसहजार रुपयेके नोटदियेगये कि वहभी इसीलड़के के वारिसहोने में कोशिशकरे और यह रुपया लक्ष्मीबाई के हिसाब में लिखा गया बाबू और मोतीलाल से बड़ीदेर तक अंगरेजीमें बातेंहुवाकीं और पच्चीसहजार रुपये उसी रुपये में से मकनपुर में दियागया जो जो संगीनजुर्म्म महाराजाने किये उनमें किसीकी सलाहशामिल नहीं थी भावसें धिया गोबिन्दराव बिनायक और और मनुष्य जो मारडालेगये उस में मैं शरीकनथा वह फौजदारीके द्वाराहुये थे मैं जबसे कि महाराजाका विवाह लक्ष्मीबाईके साथहुवाथातबसे इसजगह पर नियतहुवा हूं पहिले मैंखानगी हिसाबकिताबमहाराजा के रखताथा वहकागज मेरेहाथका लिखा हुवा फौजदारीके महकमेकेलियेहै और महाराजाकी आज्ञाभी इसीमेंहै॥

३०—फरवरी सन् १८७५ ई०।

वह बयान करताहै कि महाराजाके क़ैदहोनेकेएकसप्ताह के पहिले महाराजाके साथ सरल्यूइसपीलीसाहब की मुला-

कातको आयाथा महाराज की प्रकृतिथी कि प्रतिदिन तीन दफा हवा खानेको जातेथे और मैंसदा उनकेसाथ जाताथा और जब कभीमहाराजा रेजीडन्सीको जातेथे तोमैंसेवकधर्म्म शालाके वहांठहर जाताथा और जबमहाराज वहां से लौट कर आतेथे तोफिर सवारकरके मुझको मेरेघर पहुंचादिया करतेथे जो महाराजकी गाड़ीहांकता था उसका नामरत्न-सिंहहै मुझेमहाराजके पास फियरसाहब की आयाके आने का हालभी मालूमन था परन्तु जबकि वह कैदहोगई तोम-हाराजने मुझसे कहा॥

५—फरवरी सन् १८७५ ई०॥

मैने उन्तीसवीं जनवरी के दूजहार में वर्णनकिया है कि दोबेर हीरेकी कनीमोल्लीगई परंतु मुझकोउसके मोललेने की ठीकतारीख मालूमनहीं इतनातोस्मर्णहै कि एक२सप्ताह के पश्चात् मोल्लीगई सालिम और यशवन्तरावने जोरुपया रेजीडन्सीके नौकरोंको दियाहै वहरुपया मेरेयहां मेवा और आतिशबाज़ीके नामसेलिखाहै और मेवा और आतिशबाजी नहीं आई और न सालिम और यशवन्तराव का काम लाने का था यह काम महाराजाने सालिम रावजी और यशवन्त राव के हाथ में दिया था कि किसी भांति से फियर साहब मारडालें जावें जो खबरें रेजीडन्सी से महाराजा साहब के पास आतीथीं वह सालिमलाता था और मैं उन खबरों को पढ़ के सुनाता फिर वह फाड़ कर फेंक दी जाती थीं वह दोरुक्में बीसहजार और पच्चीसहजार रुपयेको जोकलकत्ते के बाबू को दीगईं थी वह मुसम्मात भीकूकेनाम मेरे हिसाब लिखीहुईहैं और यहस्त्रीलक्ष्मी बाई के रिश्तेदारोंमें हैं और महाराज की यहभी मदखूला है बलवन्तरावहरकर जबकि महाराजके नायब दीवानथेतो महाराजऐसे मशवरेकीउनसे सलाहकिया करतेथे और उनहीके सम्मतसे गोबिन्द नायक

और भावसेंधिया आदिमारडाले थे (ए)अक्षरसे लेकर (एफ) तक जो कागज सरकारमें हैं उनसबमें मेरा दस्तखतहै और महाराजकीआज्ञासेलिखेगयेहैं और (जी) अक्षरसे(क्यू)पर्य्यन्त भीमेरीही आज्ञासे लिखेगये हैं यह सबरुपया महाराज की आज्ञासेसालिम और यशवन्तराव कोरेजीडन्सीके नौकरोंकी रिश्वतकेलिये दियागयाहै॥

पहिली याददाश्त सूरतका एकहजार रुपया और १८॥) फीसद बट्टासिक्के चेहरे शाहीसे अधिक करके दिया गयाहै तो कुल रुपया ११८८॥) हुवा और एकबेर दो हजार रुपये बाबाशाहीदियागया है तोसब रुपया ३१८८॥) हुयेयहरुपया माघशुदीपंचमीसम्बत्१९३० मुताबिक२५ नवम्बर सन्१८७३ई० कोदियागया और यह रुपययशवन्तराव कोदियागया॥

दूसरा हिसाब श्रावणशुदी अष्टमी सम्बत् १९३० ई० कोयह रुपया अहमद बाद को भेजा गया था और यशवन्त रावको दिया गया था-तीसरी याददाश्त-दस रुपया दिया गया और १॥।=) बट्टे के दियेदियेगये तोसबरुपये ११॥।=) दिये गये और ७) बाबाशाही दिये गये तो सब रुपया १८॥=) दिये गये इसीभांतिसे सालिम और यशवन्तराव कोभी रुपये दिये जाते थे ई दिसम्बर सन् १८७३ ई० को यशवन्तराव को रुपयादिया गया२००)रुपया सूरतका दिया गया और प्रति सौ पर १९ रुपया बट्टादिये गयेतो २३८) रुपये हुये-लिखा हुवा२-माघ शुदी सम्वत् १९३० ई—दिसम्बर सन् १८७३ई०के अनुकूल—हिसाबलिखा हुवा,२२ माघ सम्वत् १९३० तथा १३ दिम्बरसन्१८७३ई०केअनुकूलजो अहमदाबादसेयशवन्तराव,के द्वारा असबाब मोललियागया और सरकारने उसकोरुपयेके देनेकेलिये आज्ञादीआजउसको १०७४)रुपया दियाजाता है और ३०१) दियाजाताहै उसकीरसीदसालिमसे लीगई॥

हिसाबलिखाहुवा३०वींजीअक्षद तथा३०पौष सम्वत्१९३०

१९ जनवरी सन् १८७४ ई० के अकूनुल यशवन्तराव के द्वारा खास असबाब बंबई से मोल लिया गया और सरकार की आज्ञासे ६००) रुपये दियागया रसीद २१ वीं जीहज्जह तथा ९ फरवरी सन्१८७४ई० के अनुकूल सालिमके हाथसे लीगई-माघकी २४ वीं सम्वत् १९३० मुवाफिक नवम्बर दिसम्बर सन् १८७३ ई० सालिमको अहमदाबादसे असबाब के लानेकेलिये सौरुपया दियागया है ॥

हिसाबमाह जीअकद अर्थात् पौषसम्वत् १९३० तथा २४ दिसम्बर सन् १८७३ ई० के अनुकूल आतिशबाजी और बस्त्र सालिमने बंबईसेभेजी और सरकारने उसकी कीमत के देने के लिये आज्ञादीउसके अनुकूलसूरतके रुपयेदियेगये और जो कुछकि बट्टालगावहभीदियागया और कुलसूरतके ३००) रु० दिये गये और बट्टे केवास्ते फी सैकड़े १८॥) के हिसाब से ५९।) दियागया सबरुपया ३५९।) दियागया जीहिज्जे महीने कीछठी अर्थात् महीनामाघ सम्वत् १९३० २५ जनवरी सन् १८७४ ई० के अनुकूल सालिमको बंबईसे असबाब लानेकेलिये महाराजकी आज्ञानुसार सूरतका ४००) रु० दियागया और बट्टा १८॥) रु० फीसदीकेहिसाबसे सब ४७५) रु० दियागया २५ मुहर्रम अर्थात् फागुन सम्वत् १९३० तथा १५ मार्च सन् १८७४ई०के अनुकूलसालिमअहमदाबादसेअसबाबलाया और सरकारने उसकेखरचके लिये आज्ञादी नक़द रुपया १२४४) दियागया और ५०) उसकेखर्चके लियेदिया गया ॥

२५ अप्रैलसन्१८७४ई०तथा वैशाखशुदी नवमी सम्वत्१९३० के अनुकूल १०००) रुपये चेहरेशाही दिया गया यह रुपया किसी असबाब के लिये जो सालिम बम्बई से लाया था दिया गया और उसकीरसीद उससेलीगई१५मई-सन् १८७४ ई० तथा ३० वैशाख सम्वत् १९३० सरकार की आज्ञा सेसालिम को १२७४) रु० बम्बईसे किसी असबाब के लानेकेलिये दिये

गया जिसमें से १०००) कलदार दिया गया और बाकी का रुपया बाबाशाही दियागया २२—जेठसम्वत् १९३१ तथा ८ वीं जून सन् १८७४ ई० के अनुकूल सालिम बम्बई से सेवा लाय और नीचेविस्तृत रकमउसकोदीगई १००) नकददियागया और फिर २०१) दियागया और २५०) एकदिया गयायहसब रुपयाचेहरे शाहीदिया गया और २५०) सूरतका दियागया और उसका बट्टा प्रतिशत पर १९॥) रु० के हिसाब से ४८॥) दिये गयेतो सबरुपया २९८॥) दियागया॥

२४ रज्जब तथा श्रावण सम्वत्१९३१और८वीं सितम्बर सन् १८७४ ई० कोसालिमकेद्वाराअहमदाबादसेसेवामंगायागया और उसको चेहरे शाही रुपया दिया गया नकद १००) रु० और १९॥) रु० और दिये गये तो कुल रुपया ११९॥) रु० दिया गया॥

हिसाबपहिली महीनेआश्विन्सम्वत् १९३१ तथा १३ अक्टूबर सन् १८७४ ई०के अनुकूल सालिमके द्वाराअहमदाबादसे सेवा मंगाया गया १२७५) नकद दियागया और रसीद लेलीगई दामोदरपथ्यकहताहैकिवहदो याददाश्तजोअभीतुमने दिखाई हैं बहनानाजी वतिलने मुझकोलिखीथी और मुझसे दरखास्त कीथी कि हेमचन्द फतहचन्दसे जोदोबार हीरेकाचूर्ण लिखा गयाहै उसकेबारेमें क्याकियाजावे मैंने उनको उत्तर लिखाहै कि यहहिसाबखानगी खर्चमें डालदिया जायहेमचन्द फतह चन्दसे २९ जनवरीको ९५०) रु० काहीरा लियागयाहै औ बड़ौदेके रुपये ९९३२॥=) ३ पाई दीगई॥

इति

—o⊂o—

रेजोल्यूशन ॥

श्रीमान् महाराजा मल्हरराव गायकवारअपनीग द्दीसे उतारेगये और थोड़ेदिनोंकेलियेगवर्न्मेण्ट ब्रिटिशने बड़ौदेका प्रबन्धकरना अपनेऊपरलिया कि तहकीकात की जावे और उसदोषकी माहियत मालूम कीजावे जो दोष कि विष दिये जानेके बहकाने के लिये मल्हरराव पर लगाया गया था कि पूर्व्वके रेजीडण्टकरनेलफियरसाहब सी-बी-कायमसुकामगवर्न्मेण्ट ब्रिटिशइण्डियारियासतबड़ौदाकोविष दिलवायागया इसबातकोइच्छाथी कि महाराजाकोअपनीबरीयतकामौका मिले और वहअपने ऊपरलगेहुये अपराधको रद्दकरें ॥

सरआर कौचसाहब चीफजस्टिस बंगाल और श्रीमान्महाराजा ग्वालियार और श्रीयुत महाराजा जैपुरवीरेश और करनैलसरआर मीड़साहब चीफकमिश्नर मैसूरऔरकरग और राजासरदिनकरराव और मिस्टर पी०एस०मेलवलसाहबबंगाल केसिवल सरवन्टपूर्व्वोक्त जुर्म्मकी तहकीकातके लियेकमीशन के मेम्बर नियत हुये थे जिसे कि तहकीकात करके श्रीमान् वैसराय और गवर्न्नरजनरलबहादुर कौंसलको रिपोर्टकरें कि उनकेविचार में मुकद्दमे की रोयदाद क्योंकर पाई गई और मुख्यहालत उसकी क्या है ॥

गवर्न्मेण्ट इण्डिया चीफजस्टिस और कमीशनका अतिगुण मानतीहै कि उन्होंने ऐसेबड़े काम और संगीन मुकद्दमे की कारवाई अपने जिम्मेली ॥

कमीशन के मेम्बरों के प्रतिकूल रायकी रिपोर्ट गवर्न्मेण्ट इण्डिया के फैसले के समेत जो बड़ेगौर और कौंसलियों की तकरीर करनेके उपरान्त तैहुईहै सम्पूर्णमनुष्योंकी इत्तिलाके लियेप्रसिद्ध कीजातीहै ॥

हुक्महुवा कि नीचेलिखाहुवा रेजोल्यूशन पूर्व्वोक्तकागजों के सहित हिन्दुस्तानके सेक्रेटरी आफिस्टके अवलोकनके लिये

भेजा जावे और गजट आफ इण्डिया में मुद्रित हो—हस्बुलहुक्म श्रीमान् वैसराय और गवर्नर जनरल॥

दस्तखत-सी-यू-एचीसन
साहब सेक्रटरी गवर्नमेण्ट इण्डिया॥

रेज़ोल्यूशन।

नीचेलिखे हुयेकागज़ पढ़ो॥

पहिले—इश्तिहार लिखाहुवा १३वीं जनवरी सन् १८७० ई० का जिसमें महाराजा मल्हरराव गायकवार मुअत्तिलहुये कि इस जुर्म्मकी तहकीकात जो पूर्व्वोक्त महाराजा ने बहकाकर रेजीडण्ट साहब को विषदिया कीजावे॥

दूसरे—इश्तिहार लिखाहुवा १५ फरवरी सन् १८७५ ई० का जिसकेअनुकूल कमीशन तहकीकातके लिये नियत हुई थी॥

तीसरे—मुकद्दमेके कागज उन कागजोंके सहित जो उर्दू से उल्था हुयेहैं॥

चौथे—नोट छपी हुई याददाश्त कौंसिल की तकरीरों के बाबत॥

पांचवें—रिपोर्ट सररिचर्डकौच साहब॥

सर आरमीडसाहब—आरपी—एस० मैलट साहब दस्तखती ३१ मार्च सन् १८७५ ई०

छठे—भिन्न राय श्री महाराजा सेंधिया लिखा हुई २७ मार्च सन् १८७५ ई०॥

सातवें—इथक राय श्रीमान्महाराजा जयपुर लिखीहुई २७ मार्च सन १८७५ ई०॥

आठवें—राय जुदागाना राजा सरदिनकरराव लिखीहुई २५ मार्च सन् १८७५ ई०॥

दफा० १—ऊपरलिखे हुयेकागज पढ़ेगये—यहसब रेजोल्यूशनमें क्रमपूर्व्वक हैं जिनमेंमालूम होगाकिमहाराजा मल्हरराव

कीहरकतोंकी क्योंकर तहकीकात और कारर्वाई कीगई॥

और यहां पर सम्पूर्ण कागजों को नकल करना सिवाय तूलके और कुछफायदा नहीं इसलिये नकलनकीके वलसिर्फ़ उन्हीं कागजों जरूरीका बयान करना जरूरहै जिससे कि फैसलेकी सूरत पैदाहो॥

रईसों और कमीशनके मेम्बरोंनेअति परिश्रम और तहकीकातकी और कमीशन को बरखास्त किया और अपनी २ रायलिखी अबगवर्न्मेण्टइण्डियाको पहिलेगवाहोंकी गवाही और कौंसल और अन्यकमीशनके मेम्बरोंकी तक़रीरपर खूब गौर करके इस कारर्वाई कानतीजा लिखाना शेषरहगया॥

दफ़ा २—सररिचर्ड कौचसाहब और सररिचर्डमीडसाहब और मिस्टर पी० एस० मैलवल साहब आदि तीनों कमीशन के मेम्बरों की राय इसबात परमुत्तफिक है किजो अपराधगायकवारपर लगायेगयेथे वहसबसाबित होगये यह सबसाहब अपनीरायमें साफलिखतेहैं किखूबगौर करकेमालूम हुवा कि मल्हरराव ने अवश्य विषदेनेका उद्योग किया था और जिन लोगोंनेयहकाम किया उन्होंनेमल्हरराव के बहकानेसे किया॥

दफ़ा ३—महाराजा सेंधियाकेलिखसे रियासत और मल्हरराव के नौकरोंमें गुफ्तगूका होना और विषदेनेका सबूत जिसको श्रीमहाराजा तसलीमकरते हैं पायाजाता है परन्तु महाराजासाहब इसबातको स्पष्टनहीं लिखतेकि करनैलफियर साहबको अवश्यविष दियागया और महाराजाके रातदिनकी गुफ्तगू नौकरों और महाराजासाहबके बारमेंयह फिकरा लिखा है किकुछ बरीबातनहींहै कि ऐसा आवागमन और पारितोषककी प्रार्थना विवाह वा त्यौहार पर बहुधा हुवा करत है और इसबातकी सिफारिशकी इच्छा रखतेहैं किरेजीडण्टसाहबहमसे प्रसन्नरहें और हिंदुस्तान के रईस बहुधा रेजीडण्ट की कारर्वाइयोंको खुफियापूछतेहैं और उनकी रियासतसे सुतासम्बन्धक है उनपर अधिकतर शफकतरखते हैं॥

और वह समझते हैं कि गायकवार का तअल्लुक विष दिये जानेमें साबित नहीं है वह इस विषयमें यूं लिखते हैं कि विष दियेजानेके उद्योगमें सबसुकद्दमा जो मेरे रूबरू कायम हुवा मेरी समझ और विचारमें विष दिये जानेका जुर्म्म महाराजा के जिम्मे साबितनहीं है॥

दफ़ा ४—श्रीयुत महाराजा जयपुरसमझते हैं किरेजीडन्सीके नौकरोंको कुछरुपया मिला और करनैल फियरसाहबको विष भी दियागया और महाराजा और नौकरोंकी बार्त्ताके विषय में वहयोंलिखते हैं कि अमीना आया और अन्य नौकरों के बयानसे साबितहुवा कि रुपया मल्हारावकी आज्ञासे भिन्न२ समय और और नौकरों को दियागया परन्तु इससेयह नहीं पायागया किरियासतकेनौकरोंसे किसीअनुचित कामकेलिये साजिश कीजावे और यूं ही गायकवार ने पारितोषक दिये थेजैसेकि बहुधा विवाह और त्यौहारों आदिमें देतेहैं और महाराजासाहब ने कईगवाहियों के नुक़्तके विषय में बहुत कुछ मजमूनलिखाहै उनकाबयान आगेकियाजावेगा॥

अन्तमें उन्होंने यह लिखाहै कि पूर्वोक्त प्रमाणोंपर गौर करनेसे मेरेमनको किसीप्रकारसे निश्चयन हों कि गायकवार इसजुर्म्ममें जरासी भीखूनहों हरचन्दकि करनैलफियरसाहब के शर्बतके गिलासमें विष मिला और सुखतलिफतीन शरीक जुर्म्म अर्थात् रावजी दामोदरपन्त और नरसूने गवाहीदी॥

दफ़ा ५—राजा सरदिनकररावकी राय श्रीमान्महाराजा सेंधयाके सदृशहै इसलिये उसका विस्तारपूर्व्वक यहां लिखना कुछआवश्य नहीं है॥

दफ़ा ६—कमीशन के मेम्बरोंमेंसे कोईभी यहनहीं कहता कि रावजीके सिवायकिसी अन्यमनुष्यने नरसूकी सहायता से विष दियाहै॥

दफ़ा ७—जो इससुक़द्दमेका फैसला मेम्बरोंकी रायपरही कियाजाता तोउसका यहपरिणामहोता कि गायकवार को

अपनाबरीयतका मौका हाथआता परन्तु इसविषयमें उनका परिश्रम उनकेप्रतिकूल हुआ कमीशनके छः मेम्बरोंमेंसेतीनमेम्बरों की यहरायहै कि गायकवारपर जुर्म्म साबितहै इसलिये ऐसे तीनमनुष्य जिनकोइसदेशकी प्रकृति और कारवाईसेएकपूरा तजुर्बाहोचुकाहै और जिन्होंने तहकीकातकरने और गवाहोंके हासिलकरनेके उपरान्त इसमुकद्दमेमें अपनीरायदी कि जिस को तहकीकातके लिये हमसर्कारसे हुक्मथे उसशख्सपर जुर्म्म साबित होगया और तीनोंरायें मुत्तफिक्कहैं और जब वहराय कि अफ्सरबालानेखण्डनहींकी पसमेंमाकहसक्ताहूंकि थोड़ीसेथोड़ी इसशख्सपरबहुतबड़ी तोहमतरहेगी जिसकी निस्बत वहजुर्म्म साबूत लिखतेहैं॥

दफा ८—परन्तु गवर्न्मेण्ट इण्डिया उचितनहींसमझतीहै कि इसको कमीशनके मेम्बरोंकी रिपोर्टपरखत्मकरदे इसकमीशन का इजलास जोडीशलनथा यह कमीशन केवल तहक्कीकातजुर्म्म और गवाहोंआदिके इजहारलेकरगवर्न्मेण्टको इत्तिलाकरे जो सम्पूर्ण कमीशन के मेम्बरोंकीभी एकरायहोती तौभी गवर्न्मेण्ट इण्डिया अपनेइतमीनानके लिये खूब प्रथमसे अन्तपर्य्यन्त मुलाहिजाकरती और भले प्रकार अवलोकन करके अपनीराय लिखती॥

यदि कमीशनकीराय मुखतलिफहै इसलिये गवर्न्मेण्टइण्डियाके विचारमें उचितमालूमहोताहै कि केवल अपनीराय नलिखे किन्तु मुख्य २ अपने सब विचार लिखे जिनसे कियह नतीजा हासिल हुवा॥

दफा ९—राय तीन मेम्बरों को जिन्होंने अलग २ रिपोर्ट लिखीहै उनसे कुछगवाहोंकी गवाहीमें और मुख्य २ बातोंमें जो गवाहीके कमजोरीके सबबसों इख्तिलाफ पाया जासक्ता था गवर्न्मेण्ट इण्डिया इनदोनों बातोंमें पहिलीबातपर अपनाखयाल फजूकरेगीयह इच्छा नहींहै किसब गवाहियों का जिक्रहो हां निस्संदेह जरूरीबातोंपर बहसकीजावेगी॥

दफा १०—पहिले इसबातपर लिहाज करनाचाहिये कि रियासतके नौकर और गायकवार में वार्त्ताके होनेका सुबूत क्या है यहगुफ्तगू राचिकोनिर्ज्जनस्थानमें हुवाकरतीथी और इसीगुप्तबातकेलियेबहुतसे रुपयेके देनेकावादा कियागयाथा आजादगवाहें की गवाहीमें यहबात तहकीक हुईहै गवाही उनकीमीधी सादीगुजरी और यह गवाही ऐसीहै कि जिसे मुख्यबातें मालूमहुईं और इजहारातमें जबसवालात हुये तो इनकीगवाहीमें जरासा फर्क नहीं हुवा और उसी प्रकारसे वहउत्तर देतेरहेजबकभी मौकाहुवाउनकीगवाहीकी परीक्षा लीगई॥

अर्थात् पूछा कि तुमकोकौन २ लोग किस २ मकान पर लेगये और तुमकोयादहै कि जबरुपया तुमकोदिया गया तो वहांकौन २ मनुष्यथा इनप्रश्नोंका उन्होंने उत्तर बखूबी दिया कोईगवाही सख्तलिफ इसबारेमें नहींगुजरी॥

सचतो यहहै कि गायकवार भी इस सच्चीबात से इन्कार नहीं करते-उन्होंने अपने लेखमें जोबड़ी एहतियात से लिखा है उसमें लिखते हैं कि इससे उनको इन्कारनहीं है अर्थात् अपनेआप वार्त्ता करनेसे यारुपयेकेनदिलानेसे परन्तु वहकहते हैं कियहकाररवाई मैनेइसप्रयोजन सेनहींकी किसुनकोरेजी-डन्सीकी रोजानाखबर मिलतीरहे॥

दफा ११——प्रकटमें गवर्न्मेण्ट के विचारमें कोई गवाही वगैरह ऐसोनहींहै जिससेरावजीका बयान खण्डन होसके कि उसीने अपनेहाथसे करनैल फियर साहबको विष दियाहै या गवाहीनरसूकीरहकीजावेकि उन्होंनेरावजी को मददीथी॥

दफा १२——गवर्न्मेण्ट इण्डियाको मालूमहोताहै किइस सूरतमेंदो बहुत बड़े अमूजो हरगिज किसी सूरतसे रद्दनहीं होसक्तेसुबूतहोगयेपहिलेयहकिगायकवार अपनेआपगुप्तरा-चि केसमय रेजीडन्सी के पांचनौकरोंसे वार्त्ता करतेथे॥

और उन्होंने रावजीनरसूऔरअमीना कोजोतीनों रियासत

के नौकर ये रुपया दिया दूसरे यह एक बड़ा इरादा कियागया किकरनैलफियर साहब को पूरीखूराक पुड़ियाके जहरकीदीगई और रावजीऔरनरसू के द्वारा विषदिलायागया गवर्नमेण्ट इण्डियासमझतीहै कि कोई मेम्बर उनकमीशन के मेम्बरोंमेंसेजिन्होंनेअपनीरायअलग२ लिखीहैबिल्कुल इनदोनों बातों सेइन्कारनहीं करतेहैं और जिनबातोंको उन्होंनेनहीं मानाहै उनसेभीसाफहाल पायानहींजाता ॥

दफ़ा १३—जबयह अमरफैसलहोचुके और सुबूत उनका सब होचुकातो गौरकामिल करनेपर सुक्ष्महमा दूर पहुंचता हैपहिले२ तोयहसुबूतकियागयो और इसका निश्चयनथा किऐसे मनुष्यगायकवारसेरियासत केनौकरोंसे खुफियागुफ्तगू करें परन्तु जब यहसाबित होगयातो यहबातदरयाफ्ततलब रही कियायह वार्त्ता उन अपराधोंसेअलग या उसीकेलिये थी ॥

इसकाकोई हेतुवर्णननहींकियागया किरावजीऔरनरसू नेऐसाकिया केवलइतनाही बयान हुवाहैकि पारितोषक की प्राप्तिकेलिये ऐसा अमलकिया गया सो इन्हीं दोनों बातों से इसकामूल और अन्तखयाल करलेना चाहिये और यहदोनों बातें मिलीहुईहैं और एक दूसरेसे पैदाहोती हैं ॥

दफ़ा १४—यहबात ठीकहैकिउनतीनोंमेम्बरोंने जिनकी राय अलग २ लिखीहै गायकवारऔर रेज़ीडन्सीकेनौकरोंसे बातेंहुईं उसको बेमूलसमझतेहैं उनकी राय दफ़ा ३—और ४ मेंहै चाहे हिन्दुस्तानीरियासतोंमें कोईरीतिहो परन्तु गवर्नमेण्टइण्डिया समझतीहै कि इनमेम्बरोंने उनबातोंपर जो गवाहीमेंहैं और गायकवारकी नुक्सान पहुंचाने वालीहैं बखूबीगौरकरनेके बिना लिखीहै ॥

दफ़ा १५—किसीगवाहीसे इसकासुबूतनहींहै कि गायकवारने रेज़ीडन्सीके नौकरोंको आमतौरपर विवाहपरपारितोषक दियाहो जोसबलोगोंको इनआमदेते और थोड़ा २ देतेतो बुरीबातनहींथी शहादतसे साफजाहिरहै कि खास२

लोगोंको जिनसे वार्त्ताहवा करतीथी गायकवार ने इनआम दिया और नौकरोंके दरजोंके खयालकरनेपरयहइनआमजियादह मालूमहोताहै जैसे कि रावजीको इतना इनआमदियागया जो उसकोवार्षिक तनखाहसे चारगुण अधिकथाइस से जाहिरहै कि गायकवारका दिलीमन्शायहथा कि केवल रियासतके नौकरोंका दिलहीहाथमेंनलें किन्तु उनकोरिश्वत तें और बड़ेकार्य्यपर उनकोउद्यत करें॥

दफ़ा १६—इसकेविशेष यहबातभी प्रकटहै कि गायकवार आपभी अपनेतईं उसबातसे अलगकरें जिसकाजिक्र श्रीमान् महाराजासेंधिया करतेहैं अर्थात् खबरोंकेमिलनेकेलिये रुपयादेना—गायकवारने अपनेबयान तहरीरीमें लिखाहै कि मैं बयानकरताहूं कि मैंनेअपनेआप किसीरेजीडन्सीके नौकरसे नहीं कहाथा कि वहमुझको खबरें पहुंचायाकरे और रेजीडन्सी की जासूसीकरें और नमैंनेकभी इसकामकेलिये रुपया दिया औरन दिलवाया मैं उनइनआमोंके विषयमेंजोकभी २ बिवाहवा त्यौहारआदिमेंदियागयाहै कुछ बहसनहीं करसक्ता छोटे२सुक्कह्मोंकीखबरेंरेजीडण्टकीमेरेयहांआतीहोंगी और इसीप्रकारसे यहांसेभी रेजीडन्सीकोबहुतसी जातीहोंगीपरन्तु मैंनेकभी रेजीडन्सीके नौकरोंसे ऐसीखबरोंके पूछनेकेलियेवार्त्ता नहींकी और नमैं आपजानता हूं कि उन खबरोंके लिये कुछ इनआमदियागयाहो और नमैंने आज्ञादी कि गुप्तसमाचार रेजीडन्सीकी कारवाईके मुझको मिलें॥

दफ़ा १७ और जियादहगवाहोंसे यहभी मालूमहुवा कि जोकुछ रुपया रेजीडन्सीकेनौकरोंको दियागया वह छिपाकर दियागयाथाकि किसीको इसबातकी खबरनहो गायकवारके बहीखातोंमेंकहीं इसरुपयेके दियेजानेका जिक्र नहींहै परन्तु बहुतसीरक्कमें २०नवम्बर सन् १८७३ ई० से १३ अक्टूबर सन् १८७४ ई० पर्य्यन्तकी लिखीहुई हैं जिसेप्रकटहै कि भिन्न २

समय में सालिम और यशवन्तराव को भी बहुत कुछ रुपया दिया गया ॥

और लिखाहैकि पूर्व्वोक्त दोनों मनुष्योंकेद्वारा वस्तुओंकेमोल लेनेकेअर्थरुपयादियागया परन्तु यहरक़मकित।बमेंअशुद्धकरके लिखीहै क्योंकिदरयाफ्तकरनेसे मालूमहुवा किकभीकोईवस्तु इनकेद्वारामोल नहींलीगई सालिम और यशवन्तराव गायकवारके दो विश्वसितनौकरहैं और इन्होदोनोंकेद्वारा रेज़ीडन्सीके नौकरोंको रुपया दियागया ॥

गायकवारका प्राईवेटसिक्रेटरी दामोदरपन्थ वर्णनकरता हैकि रेज़ीडन्सीकेनौकरोंको इसीप्रकारसे रुपयादिया जाताथा यहबातभीठीकहै कि जो इसगवाह अर्थात् दामोदरपंथ का गुमानबदहोतो कुछ आश्चर्य्य नहीं परन्तु इसबारेमें वैसाही बयानकरताहै जैसाकि इनकागज़ों के देखनेसे पायाजाता है सिवायइसके इसबयानकोकोई रद्दनहींकरताजोउसकाबयान गलतयाझूठहोतातो सुगमतासे तरदीदहोसक्ती थी ॥

दफा १८ अबयहबात दरयाफ्तलब है कि और गवाहीसे भीकुछ सम्बन्धपाया जाताहै यानहीं और जो पाया जाताहै तोउनदोबड़े वजूहातसेजिनकापहिलेजिक्रहे।चुका क्यासम्बन्ध है अर्थात् क्या गायकवार रेज़ीडन्सी के नौकरोंसे गुप्तवार्त्ता करताथा और रुपयाउसने इसप्रयोजनसे दियाहै और दूसरे यहकि रावजी और नरसूके द्वारा करनैलफियरसाहबको विष दिया गया ॥

निस्संदेहरावजी और नरसूनेगवाहीदी उनकेबयानसे विष का दियाजाना साबितहोगया और गायकवारकी रेज़ीडन्सी को इसप्रयोजनसे रिश्वतदेनी कियह करनैलफियरसाहब के मनको महाराजसाहब के तरफसे नरमरक्खें अन्तको इत्तिला पातेर करनैलफियरसाहबके प्राणपरनौबतपहुंची जोयहबात ऐसीनहीं हैतो रावजी और नरसूने बड़ाछलकिया और झूठ के पुतलेको गढ़कर बखूबीआरास्ताकिया ॥

दफ़ा १९—इनगवाहों के बयानों की कोईवजह निश्चय न किये जानेकीनहींहै लोगकहतेहैंकि जिसने यहअपराधकिया वह शरीकजुर्म्महै और इनलोगोंकी गवाहीसे भी प्रकटहैकि यहबड़ेदुष्टहैं कि जिन्होंने अपनेदयावानस्वामीके प्राणलेनेकी फिकर की और अपनेसाथियोंको इलज़ामदेनेसे नचूके ॥

यह बातठीकहैकि ऐसेबयानसे इनकी गवाहीपर बड़ातबड़ा संदेहआगया और जिनलोगोंको उनकी गवाहीपर गौरकरना मुनासिब आया वहइक़रारकरेंगे परन्तु लिहाज़रहेकिबेरोकगवाही बुरे २ कामोंमें जुर्म्मके शरीक मनुष्यों से मिला करतीहै ॥

जो इसगवाहीसे इसबातपर इन्कारकियाजावेकि वहकिस मनुष्यनेदी अर्थात् शरीकजुर्म्मने जोएतिबारके लायकनहीं तो ऐसा इन्कार बुद्धिके प्रतिकूलहै और सबकी रीतिके विपरीत और बड़धाठीकमालूम नहींहोता ऐसीगवाहीकेलिये उचित् है कि इसकी परीक्षा लीजावे कि सच झूठ दोनों अलग २ मालुम हो जावें ॥

दफ़ा २०——इसमम्पूर्ण मुक़द्दमेमें इसबातपरखयालकरना चाहियेकि कईबातें जोसाबित होगईहैं उनका समझना उचितहैजबहम को यहदिखता है कि खुफिया कारर्वाई एक ओरहोरही है और जाहिरा एकतरफतो खयालहोसक्ता है कि वहीशख़्सखुफिया और अलानिया कारर्वाई कररहा है इसकोकिसीप्रकारस्पष्टता पूर्व्वकदिल नशीनकरलेना चाहिये इसलियेगवर्न्मेण्ट इण्डिया नीचेलिखेहुये अम्बकरारदेती है ॥

(क)——गवाहोंके बयान तसलीम करनेऔर निश्चयमाननेके योग्य हैं ॥

(ख)——जोहालातउन्होंने बयानकियेवह उनकेअनुकूलहैं ॥

(ग)——क्या यह हाल एक दूसरे केबयान मेंखासअम्ब में मुताबिक हैं ॥

(घ)——जबयह लोगज़ाहिरी हालबयान करतेहैं क्याउन

के बयानमें मुताबिकत होसक्तीहै और जोकुछ उन्होंने वर्णन कियावह एक कलमा एक दूसरे के मुताबिक है जो आजादाना गवाही लोगों नेदी क्या इनलोगोंकी गवाही सेउनकी गवाही मुताबिक है ॥

(ङ)—क्या इनगवाहोंको इसहालके बयान करनेमें कुछ लाभ है जो उन्होंने बयान किया ॥

(च)—क्यायहबात किसीसूरत से जाहिर होसक्ती है कि आपुसमें एकदूसरेसे साजिश हुईहै ॥

(छ)—क्या यहबात प्रगटकीगईहै और इसबातका सम्भव है किइनको किसीहाकिमने सिखाया है ॥

(ज)—जबइन लोगों से इजहारमें प्रश्नकिये जातेथे तोउन की ऐसी दशाथी कि जैसे सच्चा मनुष्य बोलता है या उसके प्रतिकूल थी ॥

(झ)—क्या इनकी गवाहीकाखण्डन गायकवारकी ओर से साफ २ और बेगानातौरसे हुवा यानहीं ॥

(२१)—(क)—कोईबात असम्भवित नहींहै किइनगवाहों के बयाननिश्चय न कियेजावें और जब पूर्वोक्तदो अमूसाबितहो गयेतोकुछ जियादागवाही की आवश्यकता नहीं है थोड़ी२ गवाहीपरहसर होसक्ताहै शायदलोग जानेंगे कि जबगायकवारनेरावजी को अपने अनुकूल करलियाथा तो उनकोनरसू केसंयुक्तकरने की क्याजरूरतथी पस इससूरत में इन्होंने एक शरीक जुर्म्मको और बढ़ाया यह होसक्ता था कि गायकवार सिवायइसके और उपाय करते इसबातको मालूमकरनाअति कठिनहै कि गायकवार नेऐसी काररवाई क्योंको इसका यह उत्तर होसक्ताहै किरावजी सरकारी कम्पू मेंरहता था और नरसूनगरमें रहताथा नरसूगायकवार के यहांसेखबरें बखूबी लासक्ता था और उनकोरुपा पूर्व्वक रावजी के पासपहुंचा सक्ताथा इसकेसिवाय नरसू रावजीका अफ्सरथा और प्रति समयकरनैलसाहबकी अरदलीमें बरामदे में रहताथाइसलिये

साफ़ ज़ाहिर है कि जो नरसूजमादार न मिलालिया जाता तो रावजी को पकड़े जानेका बड़ा भय होता ॥

(२२)—(ख)—गवर्न्मेण्ट इण्डिया के विचारमें इन बयानोंके अवलोकनसे किसीभांतिका अन्तरनहीं पायाजाता है ॥

गवाहोंकेबयानको आदिसे अन्ततकबीच में बड़ातफ़ासिला होगयाथा और उनकेबयानमें कहींफरकनहींज़रा और एक अति प्रवीण बैरिस्टरने इजहारात परऐसे २ कठिन प्रश्नकियेथे हरचन्दकिइनसेखूब २ प्रश्नज़ियेपरन्तु पहिलेकेबयानमें कुछभी अन्तरनपड़ा तारीखोंमें निस्संदेह कुछ इखतलाफ़हैक्योंकियह बातसाफ़प्रगट है और बुद्धिमानलोग खूबसमझसक्तेहैं कि अनपढ़मूर्ख मनुष्योंको खाससमय और तारीखकायादरहनाकठिन है रावजीके बयानसेपाया जाताहैकि वहअपनेअनुचितकर्म से अतिलज्जित होकरपश्चात्ताप करताथा सोयहबातकुछआश्चर्य की नहींहै किसंगीनसुज़ाहमेमें पहिले ऐसेखयाल ज़ुआकरते हैं कई बयान रावजीके मुवाफ़िकहै जैसे कि शीशीकाहाल जो उसनेबयानकियापरन्तुऐसेबयानसेउसकेपहिलेके बयानमेंकुछ अन्तरनपड़ा अर्थात् उसबयानमेंकिजैसेगायकवारसे गुफ़्तगू होना और रुपयेकाप.ना और अशखासमौजूदाकाजिक्र और गायकवारका बहकानाकरनैलफियरसाहबके विषदेनेकेलिये और उसके पास विष की पुड़ियाका पहुचाना ६ नवम्बरका जो तत्कछट करनैल फियरसाहब के गिलास में निकला यह सब पहिली तकरीर के अनुकूल रहा और पुनर्वर्णनमें कहीं भी कुछ अन्तरन पड़ा और कमीशनके तीनों मेम्बरोंने अपनी रिपोर्ट मेंभी कहीं इसका जिक्रनहीं किया कि किसी गवाह केबयानमें अन्त रहा ॥

दफ़ा २३—(ग)इनदोनों गवाहोंकीगवाही खास२ अमरों मेंपरस्पर अनुकूलहै और छोटी २ बातोंमेंअन्तर है यहकदाचित्साबित नहींहोताकि परस्परयह दोनोंमिल गयेहोंजोइन के बयानमें अन्तरहोताती। हांनिस्संदेह यहकहाजाताकियह

होनें मिलगये होंगेकेवल तारीखोंमें इखतिलाफहै और इसमें इखतिलाफ है किगायकवारके पासकईदफे गयेथे और उस जगहपरभी अन्तरपायागया जिसकामको दूसरेमनुष्यने किया है गवर्न्मेण्टइण्डिया की राय कमीशनके मेम्बरों के अनुकूल है जिसको उन्होंने ३४ और ४२ दफ़ोंमें बयान किया अर्थात्वह लिखतेहैं किजोरावजी और नरसू के बयानमें अन्तरहै उससे यहप्रकट नहींहोता कि इनका बयान गलत है किन्तु सहीस-समझाजाताहै और यहभी मालूम होताहै किगवाह आपसमें नहींमिले और न पुलिसनेउनको सिखाया है॥

दफ़ा २४(घ)–गवर्न्मेण्टइण्डिया इनलोगोंकेबयानमेंबहुतसी मुताबिकत पातीहै और अम्बजाहिरीहै और यहादतेंगुजरी हैं वहसब एकसीहैं जो उनलोगोंका बयान ठीक नहोतातो कभीमुताबिकत न होती॥

जिसकमरे और जिसमहलमें वहगये थे और गायकवार से वार्त्ताहुईथी गवाहउसको शुद्धतापूर्व्वक बयानकरतेहैं और यहजिक्रकिपांचसौ रुपयेरावजी को दियेगयेथे यहभीठीक है इसकीतसदीकजुग्गा और करभाईसे जो रावजीआदिके साथ गयेथे होती है और जो चिट्ठी पेश हुई उससे भी सिदाकत हुईकि रावजी और नरसूने खबरें महाराजा कोपहुंचाईंसि-वायजुग्गा और दिलपतके गवाहोएकदूसरेकी अनुकूलहैऔर यहलोग उस रुपये के वलसूलकी सूरत भी बयान करते हैं इसमेंभीरावजीके लियेरुपयेका पानासाबितहोताहै यह खर्च हैजबतककि बहुतसी आमदनी हाथ नआवे तबतक क्योंकर सैकड़ोंरुपये खर्चकरसक्ताहै और इन्हींखर्चोंके कारण लोगों कोसंदेहहुआ था और इसीसेवह पकड़ाभी गया॥

दफ़ा २५—एक गवाही जाहिरी और बहुत बड़ी जिसका विस्तारपूर्व्वक बयानहोना उचित मालूम होताहै ९ नवम्बर कोजबकरनैल साहबकेनौकरोंसे तहकीकातकी गईथीतोर-

वजीकीचपड़ास लेलीगईथी और एककमरेमें लटकादीथी १५ दिसंबरको वहीचपड़ास एकऔर मनुष्यमुसम्मा भोदरकोदी गईउससमय किसीकोयह खयालनथाकि रावजीकोई किस्सा बयानकरेंगेया कुछभीनकहेंगे रावजी २२ दिसंबर को पकड़ा गया और २४ और २५ को उसके इजहार लियेगये अकबर-अलीअफ्सर सुरागी पुलिस बंबईका वहां उपस्थित था उसने अपनेमनमें समझाकिरावजी जिनपुड़ियोंका इजहारकरताहै शायदउनका कुछनिशानमिले इसलिये उसने रावजीसे पूछा किपुड़ियाकहां रखतेथे रावजीने कहा किमैं अपनी पेटीमेंर-खताथा इसकहनेसे भोदर बुलायगया जोचपड़ास और पेटी पहिनेहुयेथा यहचपड़ास १५ दिसंबरसे उसके पासथी पूर्वोक्त भोदरसे अकबरअलीने चपड़ासली और रावजीसेपूछा कितुम पुड़िया कहां रखतेथे रावजीने ठिकाना बताया अकबरअली कोढूंढ़नेसे एक पुड़िया कागज की डोरेसे बन्धी हुई मिली उसनेतुरन्तही मिस्टरस्टर साहबपुलिसकेकमिश्नर को जोदूरसे कमरेमें थेबुलाया॥

स्टरसाहबने कागजकी पुड़िया निकाली और खोलकर-देखाउसमें किसीवस्तु का सफैद चूर्णथा इमतिहान करने से मालूमहुवा कियहसंखिया थी॥

डाक्टरग्रे साहबलिखतेहैंकिइसकेकईप्रकारहैंपरंन्तु यहसंखि-याउसीप्रकारकीहैजैसीकरनैलफियरसाहबकोगवर्नमेंटदीगई॥

दफा २६—रावजीनेउससमय तक उसका कोई जिक्रनहीं कियाथा कि उनपुड़ियोंमेंसे कोईपुड़िया बाक़ीहै उसनेबयान कियाथा कि मुझकोदोदफे पुड़ियांमिलीथीं॥

पहिलीबार तोदो पुड़ियां मिलीं और दूसरी मर्त्तबा एक पुड़ियामिली—दूसरी मरतबा बाक़ीएक पुड़िया ९-नवम्बरको साहबके गवर्नमें डालदी और वहदोनों पुड़ियांपहिलेकी दो तीनदफ़ा करकेगवर्नमें मिलाकर ९ नवम्बरके पहिले देचुका

याजबपेटी उसनेअपनी देखीतो यादआया कि मैंने सबपुड़ियां नहींडालींथी कुछबच रहाथा-इसने इसबातको विस्तारपूर्व्वक कमीशनके रूबरू वर्णन किया॥

दफ़ा २७-गायकवारके कौंसलीने इसबातका सुबूतचाहा कि इसमेंपुलिसकी कुछबनावटहै परन्तु गायकवारके फ़ायदे की कोईगवाही इसबारेमें नहींहुई पुलिसको क्या प्रयोजन था बावजूद बयानरावजीके जोकहताहै कि मैंने पुड़ियांखर्च करडालीं और पुड़िया पेटीमें रखली और यहभी जरूरथा कि केवलसंखिया होतोया हीरेका चूर्णभी और क्योंकरयह वहीसंखिया पैदाकरते जोकरनैल फियर साहबको दीगईथी और वहपेटीतक क्योंकर पहुंचीजो १५ दिसम्बरसे भोदरके पासथी पहिलेइन सबबातोंका सुबूतकरना उचितहै फिरपुलिसकी साजिश समझते॥

दफ़ा २८-(ङ)-ऐसे बयानोंसे जोगवाहोंने वर्णन कियेहैं क्यालाभहै यहकिसीने बयाननहींकिया कि इनगवाहोंसे और गायकवारसे कुछवैरथा या उसकी खराबीमें इनका लाभथा सहीहै कि रावजीसे प्रतिज्ञा की गई थी कि जोसच २ इस मुकद्दमेका हालकहेगा तोउसका अपराधक्षमाहोजावेगा यहदुरुस्तहै कि ठीक कहनेसे झूठ कहनेमें रावजीका बहुत फ़ायदाथा जोजराभी उसकेबयानमें गलतीहोती तोजिनमनुष्योंका इसने नामलियाथा तो लोग अपनी बरीयतके लिये उसकेवचनको खण्डनकरते॥

नरसूने अपनेप्राणसे हाथ धोकर इजहार दिये थे-उससे कहदिया गयाथा कि तुम्हारा अपराधक्षमा नहोगा सो यह बातमालूम होसक्ती है किजो उन्होंने गलत बयान कियातो अपनेही लिये बुरा किया क्योंकि उनमेंसे एक मनुष्य कोभी क्षमाकी आज्ञान थी॥

दफ़ा २९-लोग यह कह सक्ते हैं कि करनैल फियरसाहबसे जो गायकवार को वैर था रेजीडन्सी के नौकरों को

मालूम होगा और रावजी और नरसूयह समझते होंगे कि जोहमगायकवार को माखूज करेंगे तो करनैलफियर साहब हमसे प्रसन्न होंगे॥

परन्तु इसबातपर लिहाजकरना चाहिये कि गायकवार केमाखूज होनेसे पहिले करनैलफियरसाहब बड़ौदे की रेजीडण्टीसे बदलचुके थे जबसाहब मैासूफ बड़ौदेकी रेजीडण्टीसे बदलचुकेथे तोऐसे इजहारोंके देनेसेइनलोगोंको निस्बतखुशनूदी महाराजा को क्या फायदा था—इससब हेतुओं से साफ जाहिरहै कि इनलोगोंने जोइकबाल कियाइसमें कुछसाजिश एक दूसरे की न थी॥

जब इन लोगों को मालूम हुवा कि पुलिस ने सही तहकीकात करना शुरू की तो उन्होंने यह उचित समझा कि अपने तईं पुलिसके सुपुर्दकरदें और जो कुछ जानते हैं उस को सच २ कहदें॥

दफ़ा ३०—(च)—यहबयानकि आपुसमें साजिशहुई है शहादतआम और खाससेखण्डन कियागयाहै जोयहउनकेइजहार जिनकेविषयमें रावजी और नरसूसे मशवरह होगयाखयाली थे तो कभीनिश्चय नहीं कि जबगायकवार के एक अतिचतुर और योग्यबैरैस्टरने इजहारमें प्रश्नकियेतो उसकेबयानमेंकुछ फतूरनहीं आया और कुछभी अन्तर न हुवा॥

यहप्रश्न इसइजहारमें बतौर सुनासिब हुयेजो बालभरभी इसमें गलती होतीतो फरेबका परदा जरूर खुलजाता और कोईबनावटकाम नआती और किसीमुआमिलेमें मुताबिकत नहोती हांकेवल इतनाही अन्तरहै जैसे कि एकहालकोदस मनुष्यवर्णन करें॥

गवर्न्मेण्टइण्डियाने इसको पहिलेही खयाल करलियाहै कि इसमेंइतनाही अन्तरहैजैसेकि सहीमुआमिलोंमेंभिन्न २ गवाहोंके बयानसे हुआ करतेहैं रावजी और नरसू २२ दिसम्बरसे अलग२ करदियेगयेथे और एकके बयान की कुछ भी

दूसरेकोखबर नथीऔर जब नरसूरावजी के रूबरू २२ दिसम्बरको आयातो रावजीने नरसूके साम्हनेकहा कि हमनेगले गलेपानी में सब क़बूलदिया॥

दफ़ा-(३१)-(छ)-शायदकिसी को यह संदेह हुआ कि यहबयान रावजी और नरसूका किसी पुलिस के अफ़्सर के सिखाने से हुआ है तथाच ऐसीदलीलें गायकवार के वकील कीओरसे पेशहुई हैं गायकवार के कौंसलीपुलिस की कारवाई में धब्बालगातेहैं[सूटरसाहब से लेकर छोटेपुलिस के नौकरतक]किन्तुवह कहते हैं कि पुलिसने सख्तीकी और यहभीकहते हैं कि पुलिसकी सवगवाहीबनाईहुई है इसका कारणयहथा कि हेमचन्द गवाहजोहीरे के मोललियेजाने के सबब बुलायागया था उसनेबयान कियाकि मुझसे जबरदस्ती गवाहीलीगई यहगवाह वहथाजो हवालात में नहींगयाथा उसने जोकमीशन के रूबरूगवाही दीउससे अपनेपहिले की गवाहीरद्द की और बयानकिया कि मुझसे सख्तीकरकेगजानन्दवतिल ने गवाही दिलवाई इसगवाह के विषयमें कमीशनके तीनमेम्बरोंने एकहीराय लिखीहै अर्थात् वहलिखतेहैं कि इसमनुष्यकी गवाही में कुछभी अन्तर नहीं पाया जाता इसलियेऐसे मनुष्यकोगवाही लिहजकरने के काबिलनहींहै कमीशन के मेम्बरों के रूबरू इस मनुष्य ने अपने दस्तखत से इन्कारकिया और उसकोपहिचान नसकाकिन्तुयहझूठबोला कि हिन्दुस्तानी मैं जानता नहींहूं तीनों कमीशन के मेम्बर इसपर सख्तीके होनेका इन्कारनहीं करते इस विषय में मैं कमीशनके मेम्बरोंकीराय गवर्नमेण्ट भी तसलीम करतीहै॥

यहांइस बातका विस्तारकरना उचितहै कि पहिले इजहारगजानन्दवतिलने नहींलिये थेकिन्तुमिस्टरसूटरसाहबने लियेथेऔर दोदिनके पीछेहेमचन्दने सरल्यूइसपीलीसाहबके रूबरूअपनेदस्तखतकियेथेतब उसनेउनदोनोंसाहिबोंके रूबरू पुलिसकी सख्तीका बयाननकिया नहींतो उसीसमय सरल्यू

इसपोलो साहब उसके तरफदार होजाते और गजानन्द के पंजेसे उसकोछुड़ादेते इसबातपर सिफारिशकरनेसे और दूसरे बयानी इखतिलाफी इसकीसे जिसमें कि यह बिल्कुल अपनी बरीयत चाहता है गवर्न्मेण्ट इण्डिया के विचारसे इस के इजहार समाअतके काबिल नहींहैं॥

दफ़ा ३२—जबहेमचन्दकीगवाही नमानीगई तो कोईऐसी गवाही बाकी नहींरही कि जिसे पुलिसकी सिखावट और बनावट पाई जातीहै उनकोक्याप्रयोजनथा कि इससुक़द्दमें को ऐसागढ़ते और रावजी और नरसूको सिखाते और गवाहोंको आरास्ताकरते समझमें नहींआताकि क्योंयह उनपर दोषलगायागया उनको क्याइसबातकाखयालनहोगा कि जो ऐसीबनावट करेंगेतो सरकारब्रिटिश क्याहमसेप्रसन्नहोगी॥

मिस्टरसूटरसाहब-अकबरअली-अब्दुलअली-और गजानन्द वतिल बम्बईके बड़ेनामवर और प्रतिष्ठितहैं मिस्टरबेलनटायनसाहबको लोगोंने बहुतकुछ सिखायाथा कि गजानन्दके मुक़द्दमेमें खूबवार्त्ताकरें परन्तुवहइस इरादेसे कामयाबनहुये यहपुलिसके सम्पूर्ण नौकर सरव्यूइसपीलीसाहबकी आज्ञासे कारवाई करतेथे जो कुछभी इनकोबुरी कारवाई साहब को मालूमहोती तो आपही इनलोगोंको अच्छीतरह खबर गीरीकरते जबसे नरसुगिरिफ्तारहुवाथातबसेवहफौजकेगार्ड में कैदरहा नकि पुलिसकी गार्डमें किसी गवाहीसे यहबात प्रकटनहींहै कि पुलिसकेलोग उसकेपासजासक्तेथे और उस को सिखासक्ते थे इसलिये गवर्न्मेण्ट इण्डियाके विचार में यहआताहै कि रावजी और नरसूने जोबयानातकिये उसको पुलिसने नहीं बनायाथा गवर्न्मेण्ट इण्डियाकी रायऐडवकेटजनरलकी रायकेअनुकूलहै॥

और मिस्टरबेलनटायनसाहबनेपुलिसकेविषयमेंगुफ्तगूकी वह बिल्कुल फजूलथी और एकक़बोदलील यहहैकि जिससुक़द्दमेको वहखण्डन करारहेथे वहआपहीबहुत कमजोरथा॥

दफ़ा ३३—(ज) इनमनुष्योंके इज़हारोंकेदेनेके वक्तऐसीदशा थी जिससेकि उनपर झूठबोलनेका सन्देहमाचनथा किन्तु गायकवारकेवकीलनेभी कोईऐसाबयाननहींकियाजोगवाहों की परेशानी से पायाजाता किन्तु इनतीनों कमिश्नरोंने भी जिन्होंनेएकही रिपोर्टपरदस्तखतकिये वहलिखतेहैंकिनरसूने ठीक २ बयानकियाहै और अपनेदुष्कर्मसेअति लज्जितथासर दिनकरराव जो उसकेसजाति हैं उन्होंने नरसूसेखूब प्रश्नकिये उसमेभी मालुमहुवा कि वहसच्चही बोलताहै इज़ारतरहसे सर दिनकर रावनेउसको सख़्तपकड़ा परन्तुकहीं फरकनदेखा और उसको अपने पहिले बयानपर साबितपाया गवर्न्मेण्ट वही प्रश्नोत्तर नीचेलिखतीहै॥

प्रश्नदिनकरराबका—तुम २४ वर्षसे नौकरहोक्यातुम महाराजासाहबके पास कमीशनके एकचहोनेकेपहिले अक्सरजाया करतेथे?उ०—जबसे कि पहिली कमीशन एकचहुई तबसे मैंजाताथा और उसमेपहिलेकभीनहींगया खाण्डेरावकेपास मैंकभीनहींजाताथा केवल साहबकेसाथ कचहरीमें जाताथा प्र०—जब महाराजने तुमकोविष देनेकेलिये बहकायातो तुम जानतेहोगे कि यहबहुत बुरीबातहै तुमने अपनेस्त्रीपुत्र और कुटुम्बके निर्वाहका कोईबन्दोबस्त किया? उ०—मैनेकुछनहीं किया इसपर ऐडवकेटजनरलने कहाकि तर्ज्जुमा दुरुस्तनहीं होता उन्होंने कहा कि गवाहने यहभीतो कहाथा किसिरफजुबानी मेराइतमीनानकियाथा। प्र०—किसीको विषदेना बुरीबातहै क्याकोई मनुष्यदसबारह आदमियोंके रूबरू ऐसा कामकरताहै? उ०—दस बारह आदमी नथे दो हमलोगथे और दो महाराजाके नौकरथे। प्र०—जो संखिया तुमको दी गई वहमिकदारमें कमथी या जियादहथी और क्यातीनबेर विषदियागया? उ०—मैंने अपनी आयुभरमें किसी को विष नहीं दिया था एक पुड़िया मुझको दीगई थी और यह कहाथा कि रावजीको देदेना मुझसे यह नहीं कहाथा कि

कितनी दीजावे रावजीसे यहबात कहीगईथी। प्र०—वहकौन नौकरथे जिन्होंने कहाथाकि फौजपर तोहमत रखनीचाहिये उ०—किसीनेनहींकहाथा लोगोंने फौजका नामलिया मैनेभी उसीकानाम लिखवादिया। प्र०—किन २ मनुष्योंनेफौजकानाम लियाथा? उ०—अब्दुल्ला—पेडरू और हम्माल— इसी प्रकार पांचछः मनुष्योंने नाम लियेथे। प्र०—जबमहाराजा से पहिले तुम्हारीमुलाकात हुईथीतो महाराजासाहब जानतेथेकितुम बदजातहोपरन्तु ऐसेनाजुक मुआमिलेमेंफिर तुम्हारायोंकर निश्चयकिया? उ०—रावजी सालिम और यशवन्तरावनेमेरी ओरसे महाराजका इतमीनान करदियाथा। प्र०—क्या तुम हिन्दूहो? उ०—हां। प्र०—तुम्हारी क्याजातिहै? उ०—तिलंगनकमाती। प्र०—तुमपुलिससे डरतेहो? उ०—क्योंमेरेडरनेका क्याकारणहै जब मैंसच वर्णनकरताहूं। प्र०—तुमजानतेहो कि मैंअपराधीहूं? उ०—हांमेरी बदकिसमतो है मैंभी धरीकजुर्ममहूं। प्र०—जो तुम्हारासरकारअपराधक्षमाकरदेगी तोतुमईश्वरको सर्वत्र वर्त्तमान जानकर सचकहोगे? उ०-मैं कुछ मुआफीके सबबसेसचनहीं कहताहूंचाहेसरकार मुआफ करेयानकरे मैंसच्चही कहूंगा और अबभी सचकहरहाहूं॥

प्रेजीडण्ट साहबबोले किसरदिनकरराव काप्रश्नथाकिजो सरकारतुमकोमुआफ करदेगीतो तुमइससेबढ़कर सत्यबोलोगे इसपरउत्थाकरनेवालेने तर्जुमाकरकेगवाहको सुनायाइसपर गवाहनेकहा किजोमैंने कहासब सचहैऔर इससेबढ़कर क्या सचकहूंगा सरकार चाहेमुझकोमारडाले याछोड़दे॥

सरदिनकरराव प्रश्न——तुमने एक मनुष्य के पास २४ वर्ष नौकरीकी अबतुमने उसकेसाथ बुराईकीतुमअपना बयानइस तरहकरोकि मानोईश्वर केसामने कहरहेहो जोकुछतुमको कहना होसाफ औरसचकहो कुछभय मतिकरो? उ०—जो कुछमुझको कहनाथा निर्भयहोकर सच २ कहा॥

प्रेजीडण्ट साहबबोले किक्यातुम ईश्वरके सामनेसचकहते

हो मुतरज्जिमने उसेसमझाकरके गवाहकोसुनाया गवाहनेकहा किईश्वरके सम्मुखमैं कहताहूंकि मैंनेजोकुछवर्णनकियाऔर जहांतककि मैंजानताथा वहसचथा औरइसबयानमें कुछभी मैंनेझूठ नहींकहा॥

इसबयान परगवाहो खत्महुई औरगवाह बैठाया गया॥

दफ़ा ३४—झ—अबयहबात पूछनेके लायकहै कि इनलोगों कोगवाही गायकवारकी औरसेक्योंकर खण्डनहुई उत्तरइस कायहहै किगायकवारके वकीलकोयह उचितमालुमहुवाकि गवाहोंके बयानमें कहींजो अन्तरहै यातारीखेंभी खिलाफ हैं उनपर व्यंगकिया जाय और गवर्न्मेण्टके नौकरोंपर तोहमत-रक्खी नकिउन आदमियोंको जातेकि गायकवारका जुर्म्मग-लतथा तो उसकोखण्डन करते और सफाईके गवाहगुजरानते किमल्हरराव कीबरीयत होती अच्छीतरहसेतो खण्डन नकर-सके पसपिरफ नुकताचीनी पर कमर बांध ली॥

रावजी नरसू औरअमीना आयाआदिके बयानके अनुसार महाराजा का गुप्त बार्त्ताका करनासुबूत हुवा और उससम-मय दोमनुष्य अर्थात् सालिम औरयशवन्तराव की मौजूदगी मालुमहुई औरसबसुआमिले इन्हींके द्वाराहुवा करतेथे यह लोग गायकवारके बड़ेविश्वसितथे इनको गायकवारने रुपया भीबहुत सादियाकि खुफिया काररवाई करें जब यहलोगगि-रिफ्तार कियेगयेतो फौजीगार्ड कीहिरासत मेंथेपुलिस मेंन थेऐडवकेट जनरल नेवर्णनकिया औरकिसीने उनकेबयान को रद्दनहीं कियाकि इनलोगोंसे औरपुलिससे वार्त्ता होतीथी परन्तु गायकवारके वकीलजब चाहतेथे उनके पास जातेथे औरवह उनसे खुफियाबातें करतेथे परन्तु उन्होंने कुछनहीं कहाऔर गायकवार कीतरफ होकर कोई गवाही नहींदी जिससे गायकवारकी बरीयतहोती हो॥

गवर्न्मेण्ट केवकीलों कोइनलोगोंसे अधिक गवाही लेने कीजरूरत नमालुमहुई गायकवारकी औरबातथी वहआप-

होसचझठ जानतेहोंगे औरसालिम औरयशवन्त रावकेऔर सेभी उनकोनिश्चय होगाकि वहसब मुक़द्दमेको जानते हैं॥

मल्हरराव काबयानहै किहमने करनैलफ्रियर साहबकेजाहरदेनेकेलिये कोई गुप्तकाररवाई नहींकी औरसालिम और यशवन्तराव इसबातको खूबजानतेहैं जोऐसा यातोयहलोग क्यों नबुलायेगये और क्यों रूबरूइजहारनहुये जबसच२बयान करदेते तोगायकवार कीबरीयत होती गायकवार के वकील इनकेन बुलानेकायह हेतुकहतेहैं किगायकवार और उनके वकीलइस शख़्सको दमोदरपंथ काशरीक नहींकहसक्तेहैंइस सूरतमें इनका हिरासत मेंरहना अच्छाहै निकलना अच्छा नहींहैजो इसबयानसे यहप्रयोजन हैकि पुलिसने काररवाई कीतोयहभी कहसक्तेहैं किगार्डकी फौज और पुलिस कीभी साजिशहै परन्तुगवर्न्मेण्ट इण्डिया यहं कहतीहै किगायकवारकेन बुलानेकी वजहसे सालिम और यशवन्तरावकोकिवह साफ़२ बयानकरेंगेइससे औरभी तसदीक इसअमरकीहोती हैकिरावजी औरनरसू काबयान ठीकथा और गायकवार के जिम्मे अपराध लगा॥

दफ़ा ३५—अबयह देखना बाकीहै कि रावजीकी गवाही औरनरसू की गवाहान ग़ैरकीगवाहीसे क्यामदद मिलतीहै इसबातका लिहाजरहे किगायकवार औरनरसू आदिकी मुलाकात काहोना औररुपये काद्दियाजाना साबितहैसोइससे बढ़कर क्यागवाही होसक्तीहै इससेरावजी औरनरसू की गवाहीको बज़त बढ़कर मदद मिली॥

दफ़ा ३६—कुछ इनलोगोंकी गवाहीको आयाकी गवाही से मददमिलीहै जोएक नासमझ और डरपोकगवाह है परन्तु इसके बयान और सचाई में कुछभी फरक नहीं आसक्ता जब अन्तमेंउसकी और गायकवारकी वार्त्ताशायद व्यतीत अक्टूबरमें हुईथी तो जिक्रहुवाथा कि यहशरीकहो और करनैलफ्रियरसाहब केमनकेरुजू करनेमें कोशिशकरे॥

मालूमहोताहै कि उससमयविषका जिक्र नहीं किया गया परन्तु यहभी साफनहींहै कि अमीनाआयाक्योंकरसमझी कि विषकाजिक्रहै क्योंकिजब मल्हरराव ने कहाकिकरनैलफियर साहबकोजो जादूकीपुड़िया और कुछ और दिलरुजू करनेके लियेदेंतो तोतूउनकोदेदेगी तब अमीना आयाबिल्कुलडरगई और उसने गायकवारसे निषेध किया कि करनैल फियरसाहबकेलिये कभीऐसा उद्योगनकरना नहीं तोबड़ी खराबीमें पड़ोगेयह कहकर चलीगई और फिरकभीनहीं आई॥

दफा ३७—अमीना आया के इजहार की सिदाकत उसके पति शेखअब्दुल्लाने की उसकाबयान है कि अमीना आयाने मुझसेदूसरेदिन कहाकिगायकवार कहतेथेकि कौनसी वस्तु दीजावेकि साहबका और मेरा एक मनहोजावे और जोफरकआगया है वहदूर होजावे इसपर मैंने कहाकि साहबको कोईवस्तु खानेको नदेना॥

दफा ३८—गायकवारके सिक्रेटरी दामोदरपंथ की गवाही भूलनी न चाहियेइस गवाहकेबयान कीहालत अच्छीनहीं है क्योंकिवह इसअपराधमें संयुक्तहोनेका इकबाल करताहै जो इजहार उसनेदिये मुआफीके वादेसेदिये और यहइजहार उसनेकैदसे तंगआकर इसतौरपर दियेथे॥

कमीशनके तीनोंमेम्बरोंने जिनकीकिरिपोर्ट मुतफिक है उन्होंनेबड़ीएहतियातसे दामोदरपंथकीगवाहीकोलिखाहैपरन्तु वहयहसमझतेहैंकिमुख्यकाममेंतोमुताबिकतहै और कुछअन्तरनहींगर्न्मेंटइंडियाखूबगौरकरकेलिखतीहैकिदामोदरपंथकीगवाहीकी और गवाहोंकीगवाहीसेसिदाकतहोगई॥

दफा ३९—पहिले कागज परजिसपर कि (जेड) अक्षरका चिह्नहै वहनिस्संदेह असलीहै उससेप्रकट है कि ४ अक्टूबर सन् १८७४ ई० को दामोदरपंथको किसी मुख्यकार्य्य के लिये संखिये की जरूरत थी और उसके लियें दामोदरपंथ कायह बयानहै किगायकवारको विषचाहियेथा परन्तु संखियागा-

यकवारकी लिखीहुई आज्ञाके विना नमिलीपरन्तु इस बयानसे दामोदरपंथ की निर्दोषता नहीं होती जब तक किकोई गवाह और नपञ्चे ॥

दफा ४०—दूसरे गायकवारके जवाहरखाने के रक्षकनाना वतिलजो करनैलफियरसाहबके विषदेनेमें माखूज नहीं हैं उसकेबयानसे मालूमहुवा कि २० अकटूबरके कई दिन पहिले हीरेकी खरीदियथी यहकिसी छोटेसे कामके लिये आवश्यक नथाकिन्तु एकदमके लियेचाहियेथा किपीसाजाना उनका बयानहै किमैंनेकभी ऐसीभस्म नहींदेखी थी यह भी साबित हैकि बहीखाते गायकवारके यहांथेवह भी मशकूक करदिये गयेहैं जिससे कि कोईकाररवाई छिपकरहो परन्तु कागजचिह्नित(टी)अक्षरसेमालूम हुवाकि हिसाब मशकूक कियेगयेथे यहदरबारहखरीदअल्मासके हैं सिवायइसके रामेश्वरभूराजी ब्राह्मण और नानाजीवतल और उनके मातहत आत्माराम कीगवाही से भी साबितहुवाहै कि हीरेमोल लियेगये परन्तु फिरभीहीरेके खरीदनेपर और गवाहियों काहोना उचितहै ॥

दफा ४१—दामोदरपंथकी गवाही पहिलेहीरे और संखियेके मोल लिये जानेके विषय में ली गई है इसलिये सुप्रत इस्काकमेटी केमेम्बरोंमुतफिक रायपरहैउनकीराय है किशायदसंखियामोल लीगईहो परन्तु हीरेका खरीदकिया जाना साबित होगया इसलिये गवर्नमेण्ट इण्डिया दामोदर पंथ की रायपर कुछध्यान नहीं करती क्यों कि गायकवार को संखिया याहीरेका मिलना कुछ कठिन नथा ॥

दामोदरपंथ ने आपही सरकार के रूबरू हीरे और संखिये का खरीद कियाजाना बयान किया गवर्नमेण्ट ने इस प्रयोजन से तहकीकात की थी जो अपराध गायकवाड़ के जिम्मे लगाये गयेथे जो वह साबित होगयेतोनिस्संदेहगायकवाड़र लिये बदनामी और और खराबी का सबब है ॥

दफ़ा ४२—गवर्न्मेण्ट इण्डिया अब उचित समझती है कि उन तीनों कमीशनके मेम्बरोंको सुफ़ाश्लिलवजह जिन्होंने अलग२ रिपोर्टलिखी है कि गायकवारपर अपराध साबित नहीं है उनकीतकरीर की विवेचना कीजावे॥

दफ़ा ४३—श्रीमान् महाराजा सेंधिया कहते हैं कि उन गवाहोंमें से जिनकासम्बन्ध इससुकद्दमे में नहींहै केवलतीन गवाह रावजी नरसू और दमोदरपन्थ ऊपरकहे हुये जुर्मोंको गवाही देते हैं और उनके बयान में नुक्स और अन्तर है शायद महाराजा साहब अमीनाकी गवाहीको भूलगये जैसे किपहिले बयान कियागया है शहादत अमीनाकी जरूरी है और उसकी गवाही से बड़ाजुर्म साबितहोता है गवर्न्मेण्ट इण्डियाको रावजी नरसू और दमोदरपन्थकी गवाहीमें कुछ भी अन्तर मालुम नहीं होता न जानिये महाराजा साहब किसबयान से अन्तर जानतेहैं खासअमरमें इनकाबयान एक साहै यहबात केवलतीनयाचार गवाहएकखास जुर्मपर गवाहीदेतेहैं और गवाहीके सवालोंमें साबित कदमरहते हैं तो यह प्रयोजन नहीं है किचूंकि गवाहकमहैं इसलिये उनकी गवाहीनिश्चय माननेके योग्य नहींहै॥

दफ़ा ४४—फिर महाराजा कहते हैं कि गवाही पेंडरू और अब्दुल्लाकी अपराधी के मतलबको सुफ़ीद है गवर्न्मेण्ट इण्डिया के विचारसे अब्दुल्लाकी गवाही गायकवारके सुफ़ीद नहीं है और पेंडरू गवाह को रावजीने सुजरिम किया था पर न्तु उसने इसकारवाई से बिल्कुल इन्कारकिया यहकेवल रावजीकी एकबातको खण्डन करताहै अर्थात् अपनी शिरकत उसकेसाथ कुछबयाननहीं करताकि जिसे गायकवार मालूम हों और न उसकीगवाही ऐसीहैकि जोगायकवारकोबरीयत का सबबहो और इसगवाही को रावजी तसदीक करता है कि गायकवारके नौकररेजीडन्सीके नौकरोंकेयहां आते जाते थे वह इसबातको मानताहै कि गायकवारने मुझेरुपये दिये

थे और यहरुपये कुछ त्यौहार या विवाहमें नहींदिये केवल इसीलियेदिये कि हमेशा गायकवारके यहां आवेंजावें परन्तु इसने सालिमके कहनेको न माना॥

दफ़ा ४५—फिर महाराजा कहतेहैंकि सालिम और यशवन्तराव और कंवल कर गजाबा और नूरुद्दीन बोहरा और हकीम जो अदालत में पेशनहीं कियेगये यह गायकवार के सुफीदमतलब है परन्तु हालइसका यहहै किनूरुद्दीन बोहरा एक अत्तार है दमोदरपन्थ कहताहै कि संखिया जो करनैल फियरसाहब को दीगई वह इसीकी दूकान से मंगाईगई थी और नूरुद्दीनकी बेकसूरीका कोई लेखनहीहै जोवह बुलाया भी जाता तो यातो वहकहता कि मंगाईगई है या इन्कार करता कि नहींमंगाईगई परन्तु जैसेपहिले बयानहोचुकाहै कि ऐसे इजहारात दमोदरपन्थ पर गवर्न्मेण्टको कुछ लिहाज नहींहै और यहदमोदरपन्थके बयानमें कि उसनेनूरुद्दीन की दूकानसे संखियामोलली कहीं निशानभी नहींहै क्योंकि सिदाकतनहीं की इसलिये नूरुद्दीन नहीं बुलायागया उसके नबुलाये जानेसे केवल इतनीबात हुई कि नूरुद्दीनकी दूकान से संखियेका मोललिया जाना साबित नहुवा किन्तु नूरुद्दीन बोहरेकी अदालतमें हाजिरहोने से कुछ मुकद्दमे को जरर न पहुंचा॥

दफ़ा ४६—और गवाहोंके निस्बत दूसरी बातहै इस से पहिले लिखागयाहै किसालिम और यशवन्तराव गायकवार की ओरसे अदालत में नहीं आये जाहिरी सबबयह है कि गायकवारने इनको इसलिये पेशनहीं किया कि वहसबहाल जानतेहैं ऐसानहो कि ठीक२ मुकद्दमेको बयान करदें और इसीखयालसे कंवलकर गजाब और हकीम भी नहीं बुलाये गयेवह सब लोगविषकीतय्यारी में प्रवृत्तथे जोहाल दामोदर पंथको मालूमथा तो निश्चयकरके वैसाही हाल वह लोग भी जानतेहोंगे॥

जोदामोदरपंथने झूठबयानकियाथा तोऐसा होसक्ताथा कि गायकवार इन लोगोंको बुलवाते और साफ २ इनसे गवाही दिलवाकर दामोदरपंथकी गवाहीका खण्डनकरते गायकवार को खूबमालूम होगा कि यह गवाह उसके कलामको खण्डन करसक्तेहैं या नहीं॥

दफा ४७—महाराजा सेंधियाको यहबात दिक्कततलब मालूमहुई कि थोड़ा २ बिषक्यों दियागया जिसमेंइतना जमाना बीता इसके लियेभी वैसाही बयान होसक्ताहै जैसा कि और बातोंकेलिये बयानहुवा यहतो मालूमहुवा कि थोड़ा २ बिष दिया गया और नवम्बर की ९ तारीखको अधिक दिया गया और सिवायइसके कि रावजीको भयथा कि जोएकही बेरबिष दियाजावेगा तोतुरन्तही उसकाअसर होजावेगा और परदा खुलजावेगा और थोड़ा २ देनेसे बहुत दिनोंमें असरहोगा॥

बिषदिये जानेका मूल तहकीकनहींहुवा क़रीनेसे समझा जाताहै कि छः सात सप्ताह पहिले से बिष देना प्रारम्भहुवा जबठीक अवसर मिलीतब बिषदिया रावजीके बयानसे मालूम हुवा कि दोमरतबा उसकोमौका नहीं मिला और इसकाम केलिये उसकोबहुत होशियार रहनापड़ा॥

दफ़ा ४८—फिर महाराजा लिखतेहैं कि इसकासुबूत कुछ नहींहै कि तांबा, संखिया, और हीरा मोल लियागयाथा न कोईकागज दस्तखती महाराजा साहबका इसबिषय मेंहै॥

दफ़ा ४१—और ४५—मेंबयानहोचुकाहै कि ऐसीखरीदारी का सुबूत करनाफ़जूलहै और कागजका जवाबयहहै कि यह बात असम्भवितहैकि ऐसाकागज महाराजाने लिखाहो॥

गवर्न्मेण्ट इण्डियाको किसीप्रकारसे ऐसेलेखके कागजका निश्चयनहींहै॥

दफ़ा ४९—श्रीमान् महाराजाजयपुर और सरदिनकरावके गवाहीके लियेउज्र महाराजासेंधियाके समानहैं और जोउनके कुछजियादह उज्रहैं वहयहहैं॥

दफ़ा ५०—श्रीमान् महाराजाजयपुरविचारतेहैं कि रावजी ने बयानकिया कि मुजको और नरसूको गायकवारने एक २ लाखरुपयेके देनेकावायदाकिया और नरसूवर्णनकरता हैकि बड़ेभारी इनआमका वादूदा था रुपये की संख्या बयान नहीं करता गवर्न्मेण्ट इण्डिया इसदुखतिलाफके लियेनिश्चयकरती है कि रावजी और नरसूके बयानमें कुछसाजिश नथी॥

मुख्ययह बातहै कि पारितोषक कीतो प्रतिज्ञाकी गईथी और यहदोनोंकी गवाहीसे साबितहै शायददूनआम दूनदोनों के मुखतलिफ सुनादिये गयेहोंया उनदोनोंकी समझमेंअन्तर हो क्योंकि सालिम और यशवन्तराव भी इसवार्त्तामें संयुक्तथे ऐसानहीं होसक्ता कि रावजी और नरसूकी साजिश होगई होतीतो नरसूभी एकलाख रुपयेके इनआमका इकरारकरता न कि केवलपारितोषकका इकरार॥

दफ़ा ५१—श्रीयुत महाराजाजयपुरठीकतौरसेजाहिरकरते हैं कि याददाश्तें दामोदरपन्थके दफ्तर से आईं उसमें कुछ रुपये का जिक्र नहींहै जोहीरे या संखियेके मोललेनेके लिये दियागयाहो॥

इस रक्कममें ब्रह्मभोज और दूसरे पुण्यके खर्च लिखेहैं और काफीगवाही इसबातकीहै कि रुपयाऐसेही कामोंमेंखर्चहुवा परन्तु गवर्न्मेण्ट इण्डिया यहनहीं कहसक्ती कि महाराजा की राय ऐसी क्यों है क्योंकि किताब से वरक निकाले गये और फाड़ेगयेइससे मालूम होताहै किकिसीवस्तुका छिपाना मंजूर था जैसा कि (टी) अक्षर के कागज से साबित होता है किताबकेवरकोंके बदलेजानेमें कुछसंदेहनहीं पायाजाता और नकोई गवाहीउसकी तरदीदमें है जिसवाक्यके लियेलिखा हैकि दिसम्बर सन् १८७४ ई० में तीनहजार छः सौ तीसरुपये तेरह आनेछः पाई दिया गया सुसम्मी मजकूर बुलाया गया और पूछने पर उसनेकहा किमुजको कभी ऐसा रुपया नहीं

मिलायह शख्सएक का गजजिसपरकि [वाई] अक्षरका चिह्न है पेशकरता है और उसक रूसे रुपयेपानेका इक्रारालकरता है कियह रुपयापूर्वोक्त कागजके लिखेजाये के अनुकूल नाना-जीवतिल गायकवार के जवाहर खानेके दारोगाको दियागया और पुण्यके सीगेमें लिखा गया किभेद नखुले थी मान्महा-राजा जयपुरके विचारसे किताबका लेखठीक है और दामो-दरपंथ का बयान गलत परतु दरवारे तसदीक बयानदामो-दरपंथके दफ़ा ३८ में लिखा गया है ॥

दफ़ा ५२—श्रीयुतमहाराजा जयपुर कहतेहैं कियहबात प्रसिद्ध थी कि करनैलफियर साहबको विषदिया गयाउस मे तांबाभी था परन्तु जबउसके जुज़अलग किये गयेतोतांबेका कहीं निशाननथा गवाहीमें तांबेका जिक्रन था भावपूनाकर बाजारी खबरें सुनकर करनैल फियरसाहब से कहताथा कि ऐसा २ विषआपको दियागया ॥

दफ़ा ५३—गवर्न्मेण्टइण्डिया नहींसमझती कि श्री मान् महाराजा जयपुरने क्याविचार के यह लिखा कि कोई खुरत मालिम और यशवन्तसे पूछनेकीनथी उन्होंने पुलिसके सम्मुख बयान किया या नहीं जो गायकवारके वकील वा कमीशनके मेम्बरभी कुछ हाल पूछना चाहते तो पुलिस के अफ़्सर और दूसरे मनुष्यभी उनकी बातों का उत्तर देते ॥

दफ़ा ५४—सरदिनकरराव तारीखों की तफावत परएति-राज़ करते हैं और रावजी और दामोदरपंथ के इज़हारों का मुक़ाबिला करते हैं और कहते हैं कि इन्होंने खिलाफ वर्णन किया परन्तु गवर्न्मेण्ट इण्डियाके विचार-से किसीमें अन्तर नहीं पाया गया ॥

दफ़ा ५५ —परिणाम यह हैकि हरचन्दश्रीमान् महाराजा सेंधिया और सरदिनकरराव और इनदोनोंसे श्रीयुतमहारा-जा जयपुर कीराय कामिल है परन्तु गवर्न्मेण्टइण्डिया की

रायतीनों यूरोपियन मेम्बरों के अनुकूल है यह रिपोर्ट अति उत्तम और नीति पूर्व्वक लिखीगई है और निश्चय मानने के योग्यहै इसमेंलिखाहै कियहगवाही ऐसीनहींहै किजिसका निश्चयनहो और कुछइसका खण्डननहींहुवा और गायकवार के कौंसली नेभी किसी गायकवार के एजन्टको नहीं बुलाया कियह गायकवारकी निर्दोषता साबितकरें और आखरवक्त तक कहा किहमारा कामनहीं है किहम मुकद्दमे कोतूल दें परन्तु गवर्न्मेण्ट इण्डियाको इसबारेमें और खयालहै उसके निश्चय करनेकीखास वजहयहथी कि गायकगवारको अपनी बरीयतके हासिलकरनेका मौकादियाजावे गवर्न्मेण्टइण्डिया के विचारमें उचितथा किकौंसली गायकवारके मुकद्दमेको कायमकरते और जोगायकवाके प्रतिकूलथी उसको रद्दकरते परन्तु ग़रीनेसे मालूमहोताहैकिउनकीसामर्थ्यसेहोनाइसकाबाहर थानहींतो जरूरवह पैरवीकरते गायकवारके कौंसिलने यह वर्णन किया परन्तु तकरीर नहीं की कि शायद दामोदरपंथ और भावपूनाकर इसजहरखूरानी केबानोसुबानीं हो इसबात कोबड़ी सावधानी से एकसम्मत कमीशन के तीनोंमेम्बरोंने कईबातोंसे खण्डन किया है॥

दफ़ा ५६—इसलिये गवर्न्मेण्टइण्डिया बड़े अफ़्सोस और लाचारहोकर अपनीमजबूतराय बयानकरती है कि वहजुर्म्म जो तहकीकातके पहिले गायकवारपर लगायेगयेथे तहकीकातसे साबितहुये और वास्तवमें मल्हारावने रावजी और नरसुको विष देनेकेलिये यहकाय—गवर्न्मरजनरलइन्द बहुलासकौंसिल॥

दस्तखत—सी—यू—ऐचीसनमाहब
सीक्रेटरी गवर्न्मेण्टइन्दे—सुकामशमला
फारनडिपार्टमेण्ट—पोलीटीकल

अंगरेज़ीमेम्बरोंकी रिपोर्ट ॥

१—सबसेपहिले उन तारीखों का बयान करना पसन्दीदा मालूम होता है जिन से इस मुकद्दमे के कई सम्बन्धी हाल मालूम हुये तथाच वहतारीखें नीचे लिखी हैं ॥

करनैलफियरसाहबने १८—मार्च सन् १८७३ ई० में बड़ौदे की रेज़ीडन्सीका कामशुरूकियाथा जो बदइन्तिज़ामीकी शिकायतें करनैलफियरसाहब रेज़ीडण्टमहाराजागायकवार की गवर्न्मेण्टमें कीथीं उनकी तहकीकातके वास्ते नवम्बर के प्रारम्भ से २४ दिसम्बर सन् १८७३ ई० तक कमीशन ने इजलास किया ॥

महाराजागायकवार लक्ष्मीबाईसे अपना विवाह करनेके वास्ते करनैलफियरसाहबके समेत २—एप्रिल सन् १८७४ को नौसारी को गये और १६—मईको लौटआये ७—मईको विवाह हुवाथा १६—अक्टूबर सन् १८७४ ई० को लक्ष्मीबाईसे एकपुत्र उत्पन्नहुवा ॥

जोखरीता महाराजागायकवारने श्रीमान्वाइसरायबहादुरके नाम करनैलफियरसाहब को तब्दीलीके लिये भेजाथा दूसरी नवम्बर सन् १८७४ ई०का लिखाहुवा था ॥

जो खरीताश्रीयुत वैसरायबहादुरने महाराजागायकवार के नाम जिसमें इत्तिला तब्दीली करनैलफियर साहब और तकर्रुरीकरनैलसरल्यूइसपीली साहब के सी—एस—आई—के भेजाथाबह २५ नवम्बर सन्१८७४ कालिखा हुवाथा ॥

दफ़ा २——जोगवाही मिसलके साथहै उससेहमारेविचारमें यहबात साबित है कि९—नवम्बर सन् १८७४ ई० को करनैलफियर साहबको विषदेनेका उद्योगइस भांति कियागयाथा कि सफेद संखिया और हीरे का चूर्ण उस शर्बत के गिलास में जिसको करनैल फियर साहब हमेशा प्रभात को हवाखाने के उपरान्त पियाकरते थे मिलादिया गया करनैल फियर साहब उसदिन सुबह को सातबजे पांच मिनट-

पर लौटआये और रावजी चपड़ासियों काहवालदार उनसे मिला और उसने साहब को सलाम किया फिर करनैलफियरसाहब उसकमरे मेंगये जिसमें उनका दफ्तर रहता था और जहांवह कपड़े आदि पहिना करते थे यह एक छोटा सामकानहै और रेजीडन्सीके खासमकानों के निकटहै जबकरनैल साहब उसकमरेके भीतरगये तो उन्होंने अपने नियम के अनुसार शर्बतका गिलासहाथ धोनेको तिपाई पर रक्खा हुवापाया और दोयातीनघूंट पीकरउन्होंने गिलासकोफिर रखदिया फिरवह लिखनेकेलिये बैठ गये और बीसमिनट या आधघण्टेमें एकहीबेर जोमतलाने लगाकरनैल साहब ने इस विचारसे कियह शर्बतमेरे नासुआफिकहै और इसअन्देशे से भीकि ऐसानहोजो और ज़ियादा पीनेकोउनकाजीचाहे शर्बत दफ्तरके कमरेसे बाहर बरामदेसे फेंक दिया बहुतसा शर्बत बरामदेमें रहाऔर थोड़ासा बहकर बरामदेके बाहर पहुंच गयाजब करनैलफियर साहबने फिरउसगिलासको हाथधोने कीतिपाई पररक्खा देखातोउनका खयालउस तलछटकेरंग कीतरफ गयाजो गिलासमें बाकीरह गयाथा और जिसमें से थोड़ीसी गिलास केऊपर अबतक बहरही थी करनैल साहब बयानकरतेहैं कियहतलछट स्याहरंग कीसी थी और जबउन्होंनेगिलास कोउठाकर देखातो उनकेदिलमें यह विचार उपजा किसुजको विषदिया गया उस समय अनुमान साढ़े सातबजगयेथे करनैल साहबनेशीघ्रही डाक्टर सीवर्ड साहब केनाम जोरेजीडन्सीके सरजनथे एकरुक्का इस विषयकालिखाकिजल्दी मेरेपास आइये तथाच डाक्टरसाहब आध घण्टे यापौन घण्टेमेंया अनुमान आठबजे केकरनैल फियरसाहबके मकान परपहुंचे करनैल फियरसाहबने वह गिलास जिसमें कुछशर्बत बाकीथा डाक्टरसाहब कोदेदियायहशर्बत करनैल फियरसाहबके बयानकेअनुसार चायपीनेकेडेढ़याद्योचमचों के बराबरथाऔरडाक्टरसीवर्डसाहबकेवर्णनकेअनुकूलमेवाआदि

खानेके चमचेसे कुछ कमथा जब डाक्टर सीवर्ड साहब ने गिलासको हिलाया और रोशिनीमें उसकोदेखा तो उनको तलछटमें कुछ झिल्लीसी मालूमहुई और जब कि उन्होंने उसमें थोड़ासा जलमिलाया तो उनको तलछटके चमकतेहुये अजज़ाओंपर रंगत की झलक दीखी करनैलसाहब ने अपनी तबीयतकीकैफियत डाक्टरसीवर्डसाहबकेरूबरूबयानकीऔर डाक्टरसीवर्डसाहब गिलासकोबाक़ीशर्बतकेसमेतअपनेघरको इसबातकी तहकीक़ात के करनेकेलिये लेगयेकिउसशर्बतमेंकौन वस्तुमिलीहुईथीकरनैलफियरसाहबनेवर्णनकियाहैकिजबमैंने शर्बत चक्खाथातबसेउससमय तककि वहडाक्टरसीवर्डसाहबको दिया कोई मनुष्यभी उसकेपास तकनगया जोकैफियत करनैलफियरसाहबको अपनीतबीयतकी मालूमहुईथी उसको एक चिट्ठीमें लिखकरउसीदिन ग्यारहबजे डाक्टरसीवर्डसाहबकेपास भेजदिया जो नीचेसंक्षेपसे लिखाजाताहै॥

यद्यपिमैंनेउसशर्बतकेजो गिलासमेंथाकेवलदो या तीनघूंट पियेथेतौभी अनुमान आधघण्टेके जैसाकिमैंने आपसे बयान कियाथा मुझकोखिलाफ मामूलमेदेमें कुछशिकायत मालूम हुई और उसकेसाथ सिरघूमनेलगा और दृष्टिमेंचक्करमालूम हुवा जिसकेसबबसे खयालों मेंफ तूरपैदाहुवा और मुहमेंभी एक नागवारधातका स्वादमालूमहोनेलगा और मुंहमेंथूक आनेलगी पहिलेकईदिनसे मेरी ऐसीदशा नहींहुईथी और मैंनेउसको कुछ बुखारसे (जोअब बिल्कुल जातारहाथा) और कुछ इसविचारसे मन्सूबकिया कि जिनफलोंका हररोज़ मेरे लिये शर्बत बनायाजाता था वहताज़ेनथे॥

करनैलफियरसाहबने वर्णनकियाहै कि उसधातकातांबेका सास्वादथा और वहबयान करतेहैं कि यहस्वाद शर्बतके पीने से जीभालेकेऊपर बिल्कुलसाफथा और जिसकाजायका कुछ खराबनथा अनुमानपौनघण्टेके उपरान्त मुझकोमालूमहुवा॥

दफ़ा ३—डाक्टरसीवर्डसाहबनेउनउपायोंको बयानकियाहै जो प्यालेको तलछटके जुज़तहकीक़ करने के लिये किये गये अर्थात् जब डाक्टरसीवर्डसाहबने अनुमान एकतिहाईहिस्सेके तलछटलेकर जोतौलमें एकदोग्रीनकेबराबरथा और जिसको रंगतरजरदीमिलीहुई भूरीथी उसमेंथोड़ासा कोयलामिलायाया और उसको एक नलीके अन्दररखकर अस्परटलेमट पर गर्म्म कियाजिसकायह नतीजाहुवाकि नलीपर एकधातकासाघेरा बनगया और जब डाक्टरसाहबने उसनलीको फिरगर्म्म किया तो उन्होंने उसीहल्केके ऊपर और नीचे कुछ सफेदसी वस्तु देखीजिसमें खुर्दबीनसेदेखकर अष्टकोणबिल्लौरकेसेरेजेमालूम हुये यहगयाहबयानकरताहै किधातकेहलके और हश्तपहलू बिल्लौरके जर्रोंसे बराबर संखियेकाहोना पायाजाताहै और वह यहबयान करताहै कि किसीविषसे यहसबरूपपैदानहीं होसक्ते तलछटमें छल्लेका उठनाभी उसीजहरकी निशानीहै॥

बाक़ी तलछटको जिसकाडाक्टरसीवर्डसाहबनेइम्तिहान नहीं कियाथा डाक्टरसाहबने१०नवम्बरकोडाक्टरग्रेसाहबके मीकलऐनैलायर्जगवर्न्मेण्ट बम्बईकेपास भेजदिया और सोखनेवाले कागज़में छानकर और उसकोगरमीदेकर चूरेकी रूहश्त करदिया॥

दफ़ा ४—कोयलेके द्वारा इम्तिहान् करनेके थोड़े दिनके उपरान्त जैसाकि पहिले जिक्र हुवा डाक्टरसीवर्डसाहबने उस वस्तुके जरियेसे जो नलीमें रहगई थी एकबेर और इम्तिहान किया अर्थात् उन्होंने उसकोनलीमेंसे निकालकर कुछ पानो परडालदिया जबकि भारीजर्रेनीचे बैठगये तो साहबनेबज़त जल्दउनजर्रोंको बाहरफेंकदिया जो ऊपरतैरतेथे डाक्टरसाहब ने कईदफे यहीक्रियाकी और फिर तलछटको एकचकरके शीशे के कई टुकड़ोंपररक्खा जिसको उन्होंने कमीशन के रूबरू भी पेशकिया इनशीशोंको उन्होंनेएक दूरबीनकेनीचेरक्खातो मालूमहुवाकितलछट खासकरचमकदार बिल्लौरी रेज़ोंसे संयुक्त

थी जबउन्होंने एकसाफ शीशे का टुकड़ा उनटुकड़ों मेंसे जिन पर तलछट रक्खीहुईथी एक शीशेपररक्खातोमालूमहुवा कि वह खुरचीहुईथीतथाच उन्होंनेयही तजुर्बाकमीशनके रूबरू किया जबसाफ शीशेकाटुकड़ा उसशीशेसे रगड़ागया जिस पर तलछटथी तो तुरन्त वहकटगया डाक्टरसीवर्डसाहब बयानकरतेहैं कि मैंने तांबेके वास्ते इम्तिहान नहीं किया था किन्तु केवल संखियाके प्रतीतकरनेके प्रयोजनसे कियाथाऔर तलछट का जहरीलाहिस्सा संखियाथा कुछहीरेका चूर्णनथा जो तलछटप्याखेके अन्दरसे निकलाथा उसको डाक्टरसाहबने तौला नहीं था॥

दफा ५—जो चूरहडाक्टरसीवर्डसाहबने १० नवम्बरको डाक्टरग्रेसाहबकेपास भेजाथाउसकीपरीक्षाके परिणामके बयान करनेसे पहिले उनदोनोंपुड़ियोंकाभी जिक्रकरना जरूरहै जो डाक्टरसाहबकेपास भेजी गईथीं उनमेंसे पहिलीपुड़ियामें उस बरामदेकेफर्शका खुर्चाहुवा चूनाहैजिसमें करनैलसाहबनेशर्बतको फेंकाथा करनैलफियरसाहब की गवाही और उनकी डाक्टरग्रेसाहब केनामकी लिखीहुई चिट्ठी सेप्रकट होताहै कि डाक्टर ग्रेसाहब की रायके अनुसार जिसका इजहारउन्होंने डाक्टरसीवर्ड साहबसे और डाक्टरसीवर्डसाहबने करनैल साहबसे कियाथा करनैल फियर साहबने १५ नम्बरके प्रभात को अपनी मौजूदगीमें एकचपड़ासीसे जितनीतलछट उस बरामदेके फरशपर मिलसकी जहां गिलास का शर्बतगिरा था उस सबको खुरचवाया और उसकीएक पुड़िया बांधकर करनैल फियरसाहब ने बड़ी एहतियात के साथ १६ नवम्बरको डाक्टर ग्रेसाहबके पासभेजदी दूसरीपुड़िया २५ दिसंबरकोमिस्टरस्टरसाहब पुलिसके कमिश्नरकी मौजूदगीमें रावजीकी पेटी में मिली जिसको मिस्टर स्टरसाहब अपनेसाथ बम्बई को लेगये और ३० दिसम्बरको डाक्टरग्रेसाहब को देदिया॥

दफा ६—डाक्टरग्रे साहब कैमीकल असैनिलायर्क गवर्न्मेण्टबम्बईकी गवाहीका संक्षेप नीचेलिखाताहै डाक्टरसाहब के पास तीनों पुड़ियां जिनका ऊपर वर्णन हुवा ऐसी हालत और ऐसीरीतिसे पहुंचींजिससे यहखयालनहीं होताकिमार्गमेंउनमें कुछछल कियागया॥

पहिलीपुड़िया जोडाक्टर सीवर्डसाहबने उनकेपासभेजी थी उसमेंडेढ़ग्रीनचूरहभूरे रंगकासाथाजिसमेंकुछ २ चमकतेहुये जर्रे थेडाक्टर साहबने उसमेंसे थोड़ेसे चूरेको गरमी के द्वारा साफकिया और जबखुर्दबीनसे उसकोदेखातो अष्टकोण विल्लौरके सेजरें मालूमहुये डाक्टरसाहबने उनजर्रों को जलमें जोशकिया और उसमेंसे थोड़ासाजल लेकरचांदीका तेजाब ऐमोनासुरैत उसमेंमिलाया तोउसके सबबसे एक पीलेरंग कीवस्तुएकत्र होगई॥

थोड़ेसेजलमें साहबनेतांबेका तेजाब ऐमोनियो सलफटमिलायातो वहजलकर एकजर्दीमाईल सब्जवस्तु जमगईवाकी केजोशकिये हुयेजलमें ग्रेसाहबने तेजाब मारीअटेक ऐसड़ मिलाकर फिरउसको जोश दिया और गन्धक की हाईड़ रोजिनग्लसको उसमेंछोड़ा तोवह जमकर चमकती हुई जरदरंगकी वस्तु होगई—फिरडाक्टर साहबने उनतीनोंजमी हुईवस्तुओंमें नौसादर मिलादिया और वहसबगल गईं परन्तुतीसरीजमीहुई वस्तु के एकहिस्से को रहने दिया—उसको डाक्टर साहबने बहुततेजमारी एटक एसडकेसाथ मिलाया और वह नहींगली॥

इसपरिक्षासे डाक्टरसाहबको इस बात का निश्चय होगया किसफैद जर्रे जो इसक्रियासे दृष्टिपड़ेथे वह सफैद संखिया के जर्रे थे॥

जोचूर्णडाक्टर सीवर्डसाहबने डाक्टरग्रे साहबके पास भेजा थाउसको और प्रकारभी साहबने परीक्षाकी अर्थात् उन्होंने

थोड़ासा चूर्णजल और मारीएटकएसड के साथ जो थकिया और जोशकरते दोटुकड़े साफ तांबेके उसमें डाल दिये कई क्षणके पश्चात्तांबेके पत्तरपर भूरेरंगके धात केसे ज़र्रे इकट्ठे होगये डाक्टरसाहबने इन तांबेकेपत्तरोंमें से एकटुकड़ेकोसुखाकर एकनलीमें उसको गर्मकिया जिसकेतरफों परअष्ठकोण ज़र्रे बिल्लौरके इकट्ठे होगये इनज़र्रोंकीभी वहीक्रियाकीजो पहिलेवर्णन हुवा और वहभी वैसेहीहोगये॥

दफा ७—जोचूर्णडाक्टरसीवर्डसाहबने डाक्टरग्रे साहबके पास भेजाथाउसके एकभागमें साहबने कोयला मिलाकर भी धातकेजुज़ोंकोअलगकिया और जिसनलीमें उन्होंने यह इम्तिहान किया उसको उसघेरेके समेतजो उसपर बनगया था और जिसकोवहसंखिये केहोनेकी अलामत बयानकरतेहैं कमीशनके सम्मुखपेशकिया डाक्टरसाहबने इसहलक़को गरमी नहींदी जिससे वह सफेदसंखिया होजाता॥

दफा ८—जो चमकते हुये ज़र्रे इस चूर्ण में थे जो डाक्टर सीवर्ड साहब के पास से आया था उनकोडाक्टरग्रे साहब बयान करते हैं कि ऊपर कहे हुये तजुर्बों का उन पर कुछ असर नहीं हुवा और उन्होंने एक खुर्दबीन से उनको देखा और पहिली दफायह बयान किया कि शायद वह शीशे का चूर्ण है जबकि १२ नवम्बर को उन्होंनेसोखनेवाले कागज के टुकड़े पर उनको देखा तो खाली आंखसे देख कर उन्होंने यहखयाल किया कि इतनी चमकके सबबसेवहहीरे केज़र्रे थे डाक्टर साहबने सम्पूर्ण तेज़ाबों और खारोंमें उनकेगलानेके लियेकोशिश की परवेहनहीं गलेऔर फिरयहसमझेकि वह हीरेका चूर्णथा यहतहकीक़ातउन्होंनेअपनी तरफसे कीक्योंकि १३ नवम्बरको उनकेपास इस मज़मून की कोई इत्तिला नहींआई थी कि उसचूरे में शायदहीरेकाचूर्ण भी होगा॥

दफ़ा—९—दूसरीपुड़िया जोकरनैल फियर साहबने (आई) नम्बरके कागज़ के साथ भेजी थी वह १७—नवम्बर को डा-

क्टर ग्रे साहबके पास पहुंची उसमेंसातग्रेन मट्टीथी परन्तु जबं उन्हींरीतों से उसकीपरीक्षा की जो पहिलीपुड़िया के निस्-बत अमल किया था तो उसमें संखिया और रेत और हीरे का चूर्णसाबित हुआ जो पुड़ियाडाक्टर सीवर्ड साहबने भेजी उसमेंडाक्टर ग्रेसाहब को एकग्रेन और जो करनैल साहब ने भेजीथी उसमेंसवाग्रेन कुलसवादो ग्रेन संखिया निकला डाक्टर ग्रे साहब बयान करतेहैं कि जोसंखिये का असरहो जावेतो ढाईग्रेन में एक तरुणमनुष्य मरसक्ताहै और बहुत सूरतों में उसकाआधे घण्टेसे लेकर एक घण्टे तक असर होता है बड़ी मोतबिर सनद पर यह बात मालूम होती है कि मनुष्यकी देहपर हीरेके चूरेका कोईमोहलकअसर नहीं होता है डाक्टर ग्रे साहबका विचार हैकितलछट में जोएक झिल्लीसीपैदाहुई जिसकाजिक्र डाक्टरसीवर्डसाहबने किया है वहअवश्य करकेगिलासमें संखियेकेहोनेका नतीजाहै॥

दफ़ा१०—तीसरीपुड़ियाजोमिष्टरसूटरसाहबने३०—दिसम्बर सन् १८७४ई० को भेजी थी उसमें डाक्टर ग्रेसाहब को उसीप्रकार और स्वरूप कीसात ग्रेन संखिया मिली थी जो बाकी दोपुड़ियों में पाईगई थी यहबात साहबमैासूफनेदूरबीन के द्वाराअवलोकन करकेमालूम की थी॥

दफ़ा११—जोमनुष्य संखियेकेविषसेबीमार होतेहैंउनके मुख में धातकीवस्तुओं का स्वाद होना एक ऐसीबात है जिसका तर्जुबाखास डाक्टरसाहब को एकदफा होचुका है और जिस का हमेशा उन सुक़द्दमों में हवाला दिया जाता है जो कैमीकलबहैसियत ऐनेलाय के उनके पास भेजेजाते हैं और डाक्टरसाहब ने उसकोइसवास्ते खायाहैमालूमकर कि उस में कुछ स्वादहै या नहीं परन्तु उसको बेमजापाया डाक्टरग्रे साहब ने चूर्णमें तांबेके निश्चय करने के वास्ते कोशिशकी थी परन्तुउसका कुछचिह्न मालूमनहुवा॥

दफ़ा १२—डाक्टरग्रे साहब कहते हैं किसंखियेके खाने को

निशानियांसिरघूमने और जी मतलाने और वमन और दस्त और मेदे में जलनहोतीहै और वह यहभी कहतेहैं कि जोबराबर थोड़ा२ संखिया खायाजावेतो नेचोंसे पानी जारीहोजाता है और जो संखिया जखमसे लगायाजावे तोउसरोगी कोमारने का हेतुहोजाताहै वह यहभी विचारतेहैं कि करनैल साहबने थोड़ा२ संखियापिया होगापरन्तु यहभी जी मतलाने के लिये काफीथा और जी मतलाने सेमुखमेंपानीऔर थूकअधिकआने लगतीहै ॥

दफा १३—मुकद्दमेके इसहिस्सेसे यहसम्बन्धी बातभी जिक्र करनेके योग्यहैकि करनैलफियर साहबने अपनीगवाहीमें कहाहैकि वह सितम्बर सन् १८७४ ई० सेभी अलील थेअर्थात् उनको जुकामथा और उनके माथेपरएक फोड़ाथा जिसका इलाजडाक्टर सीवर्डसाहबकरतेथे डाक्टरसाहब उसफोड़ेपर प्लास्टरलगातेथे और बाकी प्लास्टर एकमेज परउनके दफ्तर केकमरेमें रक्खारहताथा. सो आपकी करनैल फियर साहब तेजाब क्लौडियन इसरीतिसे फोडेमें लगाया किजिस फाहेसे उन्होंनेउसको लगायाथा उसकेछुटानेमें बड़ीमुश्किलहुई एक दिनप्रभातको आठयाए बजेकेबीचमें यहबातहुई उससमयकरनैल साहबअपनेदफ्तरमें हाथधोनेकोतिपाईके निकटखड़े थे और वहांसे उन चपड़ासियों पर नजरपड़ी जोउस कमरे केबरामदेमें खड़ेहुयेथे प्लस्टरलगानेसे पहिले और उसकेपीछे भी करनैलसाहबको कुछज्वरथा और उनका शिरभारी था और उनकेनेचोंसे बहुतसापानी जारीथाइससे उनको संदेह हुवा कि अक्टूबरके प्रारम्भसे उनकाशरबत उचित प्रकारसे तय्यारनहीं कियाजाता ॥

६—नवम्बर को उन्होंने एकयादोघंटे शरबतके पिये और उनको अपनी तबीअत नासुआफिक मालुम हुई और उनका सिर भारी होगया और आंखे मालुम होनेलगीं अन्तको उन की तबीअत की वहीकैफियत होगईजो अक्टूबरके प्रारम्भ में

हुईथी ७ नवम्बरकोभी उन्होंनेथोड़ासा शरबतपिया और वह यहबातजानतेथे किउसदिनभी उनकी तबीयत की वहीदशा थीजैसी कि पहिलेदिनथी ८ नवम्बरको उन्होंने शरबत नहीं पिया क्योंकि अगलेदिन उनको अपनी तबीयत बहुत नासाज मालुम हुईथी॥

जोअलामतें करनैलसाहबको सितम्बर और नवम्बरकेबीच मेंमालुमहुई थीउनकाजिक्र कईगवाहोंकी गवाहीकेलिहाज सेजोउस तहकीकातमें अखीरपर पेशकीगई थी कुछजरूरी मालुमहोगा॥

दफ़ा १४—यहबात जाहिरहैकिजिसहालतमें सवादोग्रीन संखियाप्याले कीतलछट और बरामदेकी खुरचनमें निकला थातोगिलासमें उतनेअनुमान सेजोमारडालनेकेलिये काफी हैबहुतजियादा संखिया डाला गयाहोगा क्योंकि यह नहीं होसक्ताकि जितना संखिया शरबत में मिलाहुवा था वहसब बरामदेमें मिलगयाहो और जोमिकदार संखिये की डाक्टर सीवर्डसाहबके तजुर्बोंमें सफेदजर्रोंकी सूरतमें जाहर हुईथी वहनामालुम है॥

दफ़ा १५—जबकियह बातसाबितहोगईकि वास्तवमेंकरनैल फियरसाहबके गिलासमें विषमिलाया गयातोअब यहबातगौर करनेके लायक है किकिस मनुष्यने विषदिया अब्दुल्लाखां जो पन्द्रह या सोलह वर्षसे करनैलफियरसाहब के पासनौकरथा शरबतके तय्यारकरनेका कामउसकेतअल्लुक था परन्तु उसकी गैरहाजिरीमें खानसामा उसको तय्यारकिया करताथातथाच ८नवम्बर सन् १८७४ ई० को अब्दुल्लानेयह शरबतखालिसअरक सेतय्यारकरके गिलास को दफ्तरके कमरेकेभीतर हाथधोने कीतिपाईपर रखदिया उस समय अनुमान साढ़े छः बजेप्रभातकेगोविन्दबाबू यलपा दफ्तरकेकमरे को साफकर रहेथे अब्दुल्लाउस दिनकेलिये अपने स्वामीके कपड़ोंको लेकरकमरे से चलागया गोविन्दबाबू रेजीडन्टीका नौकरबयान करता है

कि मैंने और यलपाने ९ नवम्बर सन् १८७४ ई० के भोरको जब कि करनैल फियरसाहब हवाखानेके लिये बाहर गयेथे दफ्तरके कमरेको साफकियाथा और मैंनेहीताजा जलउस बोतलके भीतरभरा जो हाथधोनेकी तिपाईपर रक्खीहुईथी और निश्चय देहवही बोतलथी जिसमेंसे डाक्टरसीवर्ड साहबने थोड़ासाजल उसगिलासमें डालाथा जिसमें तलछटथी और मैंनेयह जलउसमट्टीके बरतनमेंसे लियाथाजो मकानके बरामदेमें रक्खारहताथा और जिसमेंसे रेजीडन्सीके यूरोपियन बाशिन्दोंको जलदियाजाताथा और मैंकरनैलफियरसाहब के लौटनेके पहिले अनुमान सातबजेके कमरेसे चला आयावह बयानकरता है किमैंने अब्दुल्ला को कमरेके भीतर आतेहुये और अपने स्वामीके कपड़ोंको दुरस्तकरतेहुये और बाहरजाते हुयेदेखा परन्तु मैंनेउसको शरबतलाते हुये नहीं देखा लक्ष्मण दरयावसिंह चपड़ासी कमरेसेबाहरथा गोबिन्द बाबूने कहाहै कि अब्दुल्लाकेचले जानेके उपरान्त रावजीहवालदार करनैलफियरसाहब केदफ्तरके कमरेमेंआया और पांच या छः मिनटतक उसके भीतर ठहरारहा और इससमयान्तरमें उसनेकागजोंकीरद्दीकोकी उसटोकरीकोजोलिखनेकीमेजके निकटरक्खीहुईथी खालीकरके एकदूसरी टोकरी के अन्दर कागजभर दियेजो उसकमरेके भीतररक्खीहुईथी जिसमेंहोकरदफ्तरके कमरेमें जातेथे इस जगहपर इस बातका जिक्र करनाचाहिये और कमीशनके बाजेमेम्बरों कोभीउससेजातीवाकफियतहै किदफ्तरका कमरालम्बाई चौड़ाई मेंछोटा है यलपानेगोविन्दबाबू केइसबयानकी तसदीककी है किवहभी उसदिन भोरको दफ्तरके कमरेके सफाईमें प्रवृत्तथा परन्तु इससे अधिक उसनेऔर कुछहाल बयान नहींकिया लक्ष्मण दरयाव सिंह वर्णन करता है कि मैंने ९—नवम्बर के प्रभात को करनैल फियर साहबके लिखने की मेज दुरुस्त की और उससे सुचित्त होकर मैंउसी स्थान पर बैठगया जो चपड़ा-

सियोंके लिये नियतहै और मैंने और कोईबात नहीं देखी॥

दफ़ा १६—पसइस बातकेसंदेह करनेकाकोई हेतु मालूम नहीं होताकिइनमेंसे किसीमनुष्यने शर्बतमेंविषमिलायाहो और रावजी आपहीमुक्रिरहै कि मैंनेविषमिलाया इसलिये हमारीरायमें इसविषयमें उसकीगवाहीका ठीकसमझना-चाहिये॥

दफ़ा १७—अबरावजी और २ गवाहों की गवाहीपर बत-फसीलगौरकरनाजरूरहैकियह बातनिश्चय होकि रावजीको करनैलफियरसाहबको विषदेनेकी तरग़ीबदीगई और जोयह बातठीकहै तोकिसमनुष्यने उसकोबहकाया॥

दफ़ा १८—रावजीकी गवाहीनीचे लिखीहै॥

एकयासवावर्षका समयबीताकि करनैलफियर साहबनेमु-जको चपड़ासियोंका हवालदारनियतकियाथा और मैंबड़ौदे कीछावनीके बाजारमें रहाकरता था सन् १८७३ ई० की कमीशनके इजलासके शुरूहोनेकेदो महीनेपहिले सालिमने बार २ मुझसेकहाथा कितुममहाराजा गायकवारके मिलने केलियेचलो अन्तकोमैं राजीहोगया उससमय(अर्थात् कमी-शनकेइजलाससे दोमहीने पहिले)सालिम और यशवन्तराव केसाथजो मुझकोशहर में अपनेमकानपर मिलाथा महारा-जगायकवारके महलकोगया और सालिमऔर यशवन्तरावकी मौजूदगीमें महाराजासाहबसे मुलाकातकी महाराजागाय-कवारने मुझसेकहाकि तुमहमको रेजीडन्सीकी खबरेंभेजाक-रो और जोतुमखबरेंभेजोगेतोहमतुमकोपारितोषकरदेंगेऔर यहपूछाकि नरसूसे जोरेजीडन्सीके चपड़ासियोंका जमादार है तुम्हारीदोस्ती है यानहींतथाच रावजीने खबरोंका भेजना मंजूर करलिया और यह कहा कि नरसू मेरामित्र है और महाराजा साहब के कहने से उनसे यह इकरार करलिया किमैं नरसू को आपकी मुलाकात के लिये लाऊंगा दूसरे-दिनरावजीने नरसू से उस मुलाकात और बुलाने का जिक्र

किया परन्तु नरसूनेअवकाशके नहोनेकाबहाना करदिया॥

दफ़ा १९—इस गवाहकी गवाही का जियादहतो जिक्र करनेसेपहिले इसबातकाजिक्रकरनाउचितहोगा किसालिमएकअरबीहै और बड़ौदेनगरमेंरहताहै और वहगायकवार केपाससवारोंमें नौकरथा और सदैव उनकीसेवामें हाज़िर रहताथा महाराजाका जासूस यशवन्तराव खासकासिद है और नगरमेंरहता है और जिस कमरेमें इससुलाकात का हाल बयानकियागयाहै यहवहीकमराहै जिसकेभीतरमहाराजा गायकवार और रेज़ीडन्सीके नौकरोंमें सब मुलाकातें हुईथींउसमकानको कमीशनकेकई मेम्बरोंनेअवलोकनकिया है वहएक छे टासा कमरा तीसरी मंज़िलपर है और उसके भीतर एककोनेकेतरफसे एकसूक्ष्मसीढ़ीकेद्वारा जातेहैयहसीढ़ी एकछोटेकमरेकेभीतरतकहै और उसमेंकोईदरवाजानहींलगा हुवाहैदरहकीकतयहमकान राजासाहबसेसलामऔरमुजरा करनेकाकमरा हैऔर उसमेंकेवलएकदरवाजाहैजिसमेंहोकर गायकवारकेमुख्यकमरेका मार्गहैउसमुख्यकमरेमें महाराजा गायकवारकाएकपलङ्गऔरखानकरनेकीएकचौकीऔरनहाने धोनेका सामान था मुजराईके कमरेमेंकई शीशे दीवारों पर लगेहुयेहैं और उसमें एकनीचीऔर चौड़ीलकड़ीकीबेंचपड़ी हुईहै कहतेहैंकि महाराजा गायकवार रेज़ीडण्टोके नौकरों से मुलाकातकरते वक्तहरएक मौक़ेपर आ बैठतेथे अब हम फिररावजीके बयानका जिक्र करते हैं॥

दफ़ा २०—रावजीने सन् १८७२ई०के कमीशनके इजलाससे पहिलेतीनयाचारदफे और कमीशनके इलासकेसमयमें तीन मरतबे गायकवारसे मुलाकातकीइनमेंसे हरएकमौक़ेपरवह फिरयशवन्तरावकेमकानको और वहांसेयशवन्तराव और सालिम केसाथमहाराजागायकवारके महलकोजाताथाइनमुलाकातों मेंरावजी महाराजागायकवारसे उनमनुष्योंका जोरेज़ीडण्टी कोआयेथे और जोहाल वहांहोतेथे और जोशिकातेंगायकवार

के प्रबन्धकी रेज़ीडण्टी और कमीशनके सम्मुखकी जातीं उनका ज़िक्र किया करता॥

दफ़ा २१—उनमेंसे एकमुलाकातमें जोशुक्रवारको कमीशनके इजलासके समयमें हुईथी रावजीने गायकवार से कहा कि मेराविवाह होनेवालाहै और गायकवारने यशवन्तरावको यहहिदायतदीकि वह उनकोइसबातकी याददिलावे—तथाच दूसरेदिन भोरको जबकि गायकवार रेज़ीडण्टीको गये यशवन्तनेरावजीसे कहाकि मैं तुम्हारेलिये पांचसौरुपयेलाताहूं तुममेरेमकानपर संध्याकोआकर उसरुपयेको लेआनासोरावजी संध्या को यशवन्तराव मकानपर रेज़ीडण्टीके पंखाकुली जुग्गाकेसाथगया और वहांदलपतयशवन्तरावकेमुहर्रनेजुग्गा के सान्हने पांचसौ रुपये उसको दिये उस समय यशवन्तराव बालाखानेपरथारावजीनेउसमेंसेचारसौरुययेका अपनेविवाह के लियेजेवरमोललिया और बाकी सौरुपये जुग्गाकेपासजमा करदिये कोई ऐसी गवाही मिसल में शामिल नहीं है जिससे सिवाउसमुलाकातके जिसमें पांचसौरुपयेके मिलने का ज़िक्र कियागयाहै ऊपरलिखीहुईमुलाकातोंमेंकिसीऔर मुलाकातोंकीनिसबतरावजीकेबयानकी तसदीक़होतीहो परन्तुआगे को यहबात साबितहोगईकि इनपहिलीमुलाकातोंमेंएकस्त्री अमीनानामी आयाजोपहिले करनैलफियरसाहबकीमेमसाहिबाकेपास और फिरमिस्टरबोवीसाहब एसिस्टण्ट रेज़ीडण्ट बड़ौदेकीमेमसाहिबाके पास जो करनैलसाहबकी लड़कीथी आयाकी तौरपर नौकररही थी श्रीमान्गायकवार के पास आया जायाकरतीथी परन्तु पांचसौरुपये दियेजानेकी तसदीक़केलिये यहादतमौजूदहै और अब रावजी के बयान को छोड़ना और इसमुआमलेमेंध्यान देना उचितहै॥

दफ़ा २२—भगवानका पुत्रजुग्गा वर्णनकरताहै कि चौदह या पन्द्रहमहीनेबीतेअर्थात् अनुमानदिसम्बर सन्१८७३ई०के कि मैं रावजीकेसाथ एकदिनसंध्याको यशवन्तराव के मकान

में गया था (यहबात स्मर्ण होगी कि नवम्बर और दिसम्बर सन्१८७३ ई०में कमीशन का इजलास होरहाथा) और यशवन्तरावकेकारकुनया मुहर्ररने पांचसौ रुपये रावजी कोदिये थेजिसमेंसेचारसौ रुपये रावजीने लिये और मुझको सौरुपये अमानतकेतौरपर सुपुर्दकर दिये॥

दलपतमुहर्ररवर्णन करताहैकि बारह या चौद्द हमही ने सुनेकि मैंने पांचसौ रुपये बड़ौदे के सेक्रेटर यशवन्तराव को आज्ञासे आठबजे रात्रिको रावजी और जुग्गाकोदियेथे उससमय यशवन्तराव बाला खाने परथा और इसी वजह से वह वहां नथा॥

रावजीनेदजेबाके द्वारअपनेविवाहके लिये आभूषणतय्यार कराया था वहबर्णनकरताहै कि उसदेवालीजो २० अक्टूबर सन् १८७३ ई० को सुईथी मैंनेशिवलाल वठिलसुनार को रावजी केलिये चान्दी और सोनेके कईप्रकारके जेवरोंकेतय्यार करने के वास्ते मुक़र्ररकियाथा यहजेवरदोयातीन मौकोंपरतय्यार होकरउसकेहवालेकियेगये औरदजेबानेउनकेद्वाराआभूषणों कीफेहरिस्त सुनारसेकीमत समेतप्राप्तकी जबअबकीकमीशन तहक़ीक़ातहोरहीथी दजेबाने इसफेहरिस्तकोपुलिसकेहवाले करदिया और उससेविदित होताहैकि शिवलाल ने रावजीके लियेनवम्बर सन् १८७३ई० औरमार्चसन् १८७४ई० केमध्यमें पांचसौअट्ठावनरुपये छः आनेकाआभूषणबनवाया॥

शिवलाल वठिलआभूषणों कीतय्यारी केसमयऔर उनकी तफसील केनिस्बतदजेबाके बयान की तसदीक करताहै और बयानकीरूसेउनकी कीमतचारसौ पिचहत्तररुपयेया पांचसौ रुपयेबयान करता है दजेबा और रावजीने समय२ परआभूषणोंकीपूरीकीमत शिवलाल कोदेदी॥

दूसरेसुनारदलाब नामेने यहइजहार दियाहैकिमैंनेरावजी केलिये जूनऔरअगस्त सन् १८७४ ई०के मध्यमें कई प्रकारके

कीमतीआभूषण उन्नामी रुपये आठ आनेके तय्यार कियेथे ॥
शिवलालवठिलऔरदलावने उसआभूषणको पहिचानलिया जोउन्होंनेतय्यार कियाथा औररावजी उसकोतसलीम करता हैकियह मेराहै॥

इसजगह परयहबातकहनेके योग्यहैकि रावजीकामासिक केवलदस रुपयेथा ॥

दफ़ा २३–अबफिर रावजी कीगवाही कावर्णनकियाजाता हैजिसमें उनमुलाकातों कावर्णनहै जो१८७३ई० कीकमीशनके बड़ौदेसे चलेजानेके उपरान्त औरश्रीमान् महाराजा गायकवारके नौसारीके जानेके समय हुईथीं ॥

रावजीवर्णन करताहै किबड़ौदेसे कमीशनके चले जानेसे आठयानौदश दिनकेउपरान्त ३जनवरीसन् १८७४ई०केनिकट मैनेनरसू जमादार सहितगायकवारसे उनके महल में मुलाकात कीथीसालिमनेपहिलेसे रावजीको यहसूचितलादीथी कि मैने नरसू को आनेपर राजी करलिया है उस दिन रविवार थी और जिस प्रकारसे प्रबन्ध किया गयाथा उसके अनुसार नरसू(जिसकाघर बड़ौदेनगर मेंथा)यशवन्तरावके घरकोगया रावजीयातोजुग्गाके साथऔर याकरभाईकेसाथगया नरसूके बयानसेमालूम होताहैकि यहमुलाकात १९और २४जनवरी सन्१८७४ई० केदरमियानमेंहुईथी ॥

जोरेजीडन्सीमें पंखाकुलीकाकाम करतेथेमकानसे चलकर यशवन्तरावके मकानकोगया औरवहां उसनेनरसू और सालिमको बैठेपाया औरयह सबमनुष्य उसके और उसके साथी जुग्गापाकरभाईकेसाथ महाराजाकेमहलपरगयेयहांपहुंचकर सालिममहाराजगायकवारको बालाखानेपरइत्तिलाकरनेगया औरथोड़ीदेर केउपरान्तउसनेयशवन्तऔरनरसूकोमहाराजा गायकवारके सम्मुखबुलाया इसमुलाकातमें रावजीनरसूऔर यशवन्तराव औरसालिमथे रावजीनेइसवार्त्ता कोवर्णनकिया

है जोइससमयमें गायकवार और नरसूमें लड़ाईथी अर्थात् गायकवारनेनरसूसे कहाकितुम शहरमेंरहतेहो इसलियेतुमकोहररोजरेजीडन्सीकी खबरेंलानीचाहियें और जोतुम बड़ौदेकेएक पुरानेरहनेवालेहो और सरदारोंको जानतेहो इसलियेतुमउन सरदारों कानाम हमकोबतादिया करोजो रेजीडन्सीमें आते जातेहोंनरसू जमादारइसबात परराजी होगया और यहकहा कि हम और रावजी दोनों सालिम के द्वारा खबरें भेजा करेंगे इसपर महाराजा गायकवार ने यह इच्छा जाहिर की किजो कोई बातअति आवश्यक इत्तिलाकरने केलायक होतो उसको लिखकर भेजना चाहिये जब जमादार शहर को अपने घरआवेगा वहउस चिट्ठीको अपने साथलेता आवेगा और सालिमको देदेगा नरसूने गायकवारसे कहा कि मेरे भाई को पिन्शन बन्द होगई है आप उसका कुछ बन्दोबस्त फरमाइये गायकवारने नरसूसे कहा कि तुम इस विषय की एकअर्जी रेजीडण्टसाहब को दो और हम प्रतिज्ञा करते हैं कि जो रेजीडण्टसाहब उसकाहमसे जिक्रकरेंगे तो हमकुछ उसकाबन्दोबस्त करेंगे उससमयनरसू के दो भाई गायकवार महाराजाके पासएकरिसाले के खांडर और जमादारथे ॥

२४—जुग्गा और करभाई दोनोंयहवर्णन करते हैंकि हम गायकवारके महलको रावजी और नरसू और यशवन्तराव और सालिमके साथ गये थे और जबयह मनुष्य महाराजा गायकवार से मुलाकात करने के लिये ऊपरगये तो हमको नीचेछोड़गये उसमनुष्य कोपहिचान का कोई वसीला नहीं है जो इसमैंके परइन मनुष्यों के साथगया था परन्तुइसमें कोई बातनहीं होसक्ती कि वहयातो जुग्गा था या करभाई था नरसूनेकेवल यहवर्णन कियाहै कि एक मनुष्य रावजीके साथथा परन्तुउसने उसकानाम नहीं बतलाया ॥

दफ़ा २५—फिररावजीने यहवर्णनकियाहैकिमैं और नरसू फिरचारपांच दफामहाराजा गायकवार की भेंटके लियेउन

के नौसारी जानेके प्रथम (२अप्रेल सन् १८७४) को गयाथा और उनमौकों पर हमको महाराज गायकवार को रेजी-डण्टी की कारवाई की खबरदी इस जगह यह बात वर्णन करनीचाहिये कि नरसूने इससमय इसप्रकारकी एकमुला-कात का अर्थात् अपनी दूसरी मुलाकात का जिक्र किया

दफ़ा २६–रावजी वर्णन करतेहैं किमैं और नरसू करनैल साहबके साथनौसारीको गयेथे और वहांहमने और शख्सों मेंसे सालिमऔर दामोदरपन्थको भीदेखारावजी नेसालिम के द्वारानौसारी में गायकवार से एकबेर मुलाकात कीऔर गायकवार ने भावपूनाकर और और मनुष्योंकाहाल उससे पूछा जोरेजीडण्टीको जातेथे ॥

दफ़ा–२७–अबहम रावजी के बयानका उनमुलाकातोंके सबबबयान करतेहैं जो उसकीऔर गायकवारकी नौसारे से लौट आने के उपरान्त (१८ मई सन् १८७४ ई० के निकट लौटआयेथे) हुईंथीं और हमकोमालूम होताहै किरावजी के वर्णनके अनुसारउनमुलाकातों में जो अबतकहुईं महा-राजगायकवार ने केवलरेजीडण्टी की खबरेंपूछीं और नौ-सारीसेलौट आनेके अनन्तर पहिली दफ़े महाराजानेसाहब विषकाजिक्र किया ॥

दफ़ा२८–रावजी वर्णनकरताहै किमैं नौसारीसे लौटकर कभीतोपेडरू डसौजाके और कभीनरसू के साथ महाराजा गायकवार से मुलाक़ात करने गयाथा पेडरू करनैल फियर साहबका खानसामांथा और इसकामपर पन्द्रहवर्ष से और कुलछब्बीस वर्षसे उनकेपास नौकरथा पेडरूएक महीने की छुट्टीलेकर गोवाकोगया था और उसकेसाथ जो तीन मुला-कातेंमहाराजा साहबसे हुईं उनका होना रावजीने पेडरू के गोवाकोजाने से और एक काहोना उसके लौट आने के पीछेठहराया है रावजी वर्णन करताहै कि पेडरू ने मुझसे महाराजाके महलको चलनेकी दरखास्तकी थी और पेडरू

से सालिमने कहाथा रावजीनेपहिली मुलाकातका और जो वार्त्ताउस समयमहाराजा गायकवारके साथ हुईथी उसका जिक्रकियाहै और यह कहाहै कि उससमय महाराजनेउस वार्त्ताकोपूछा था जो रेजीडण्टोके खानेकी मेजपर होती है और यहइच्छाको थी कि पेडरूसालिम के द्वाराउनकेपास खबरेंभेजदिया करे बाकी दो मुलाकातोंका कुछब्यौरावर्णन नहींकियागया है रावजी बयान करताहै कि महाराजागायकवारके साथ पेडरू की पिछली मुलाकात गोवासे लौट आनेसेदोतीनदिनपीछे हुईथीअब जोगवाही पेडरूनेकमीशन के सम्मुखदीहै उसमें उसने गोवासे अपने लौटने की तारीख़ बयाननहीं कीहै परन्तु जोजहार उसने मिस्टर ऐडजण्टन साहबबम्बई के डिपुटीकमिश्नर पुलिसके रूबरू—५—जनवरी सन्—१८७५—ई० कोदियाथा उसमेंउसने वर्णनकिया हैकि मैं—३नवम्बर—सन्—१८७३को छुट्टीपरसे बड़ौदेको लौटआया रावजी ने उस गुफ़्तगू को बयान किया है जो पेडरू और महाराजा गायकवार में हुई थीं महाराजा गायकवार ने पेडरूसे इसबातके पूछनेके उपरान्त कि वहगोवासे कबलौट आया यह कहा कि जो हम तुमको कोई वस्तु दें तो क्या तुम उसको करदोगे पेडरूने उत्तर दिया जोहो सकेगा तो मैं करदूंगा फिर गायकवारने यशवन्तरावसे वार्त्ताको और यशवन्तराव ने एककागज़ की पुड़िया महाराजा साहब को देदी जिसको महाराजा साहबने पेडरूको देदिया पेडरू ने पूछा कियह क्या है गायकवार ने कहा कियह विषहै और इस को करनैल फियर साहब के खाने में मिलाना चाहिये पेडरूने यह बहाना किया कि जो करनैलफियर साहब इकबारगीमरजावेंगे तोमैं पकड़ाजाऊंगा और तबाहहोजाऊंगा तब महाराजागायकवार ने पेडरूको भरोसादिया कि इकबारगी कोई बात न होगी किन्तु करनैल फियरसाहब दोया तीन महीनेमें मरेंगे रावजी यह निश्चय प्रगट करताहै कि

पेडरूने उसपुड़ियाको अपने पासरहने दिया परन्तु वह यह बातनहीं जानता कि उसने इसबातपर अमल किया यानहीं पेडरूनेरावजी से कहाकिगोवाके मेरेआनेसे पहिले सालिम ने मुझकोरुपया दिया—पेडरूनेअपने इज़हारमें इस बात को मानाहैकिमैं और बड़ौसारी कोगया और सालिम ने उससे ताकीदकरकेमहलको चलनेकेलिये कहापरन्तुवह वहांकेजाने या महाराजागायकवारके साथवार्त्ताकरनेसे इन्कार करता है वहइसबात को तसलीम करताहै कि गोवाके जानेसे थोड़े दिन पहिले मैंने सालिम से राह के लिये खर्च मांगा था और सालिम ने साठरुपये बड़ौदे के सिक्के के मुज को दिये थे और यह कहा था कि महाराजा गायकवारने उस रुपयेको उसके राह खर्चके लिये भेजा है वह इस बातको भी मानता है कि मैंने रावजी को साठरुपये मिलने की इत्तिलादी थी हालां कि मैं उससे कुछ स्नेह नहीं रखता था किन्तु केवल उसकी और मेरीबोलचालथी यहबातअभीतकबेतहकीकहैपेडरूमहलको गयावानहीं या जो मुलाकातेंमहाराजा गायकवारकी उसके साथहुईं रावजीभीउसकेसाथ गयायानहीं इसविषयमेंरावजी के बयानकी तसदीककिसी प्रकारसे नहींहोती॥

दफ़ा—२९—रावजीवर्णन करताहैकि उसकीपहिली मुलाकातमहाराजा गायकवार के साथनरसू के नौसारीके लौटने परदोंया तीनदिन के उपरान्त हुई थी उस दिन निश्चयकरके २०-मा२१-मार्च सन्-१८७४ई० होगी करभाई पंखाकुली उसके साथ गयाथा नौसारी से लौट आने के पन्द्रहदिन के उपरान्त रावजीकोनरसू से तीनसौरुपये उसइनआम के हिस्से कीतौर पर मिलेजो महाराजा गायकवारने उनको दिया था॥

दफ़ा—३०—रावजी कहता है कि जबकरनैल फ्रियर साहब के माथेपर फोड़ाथा—सितम्बर या अक्टूबर सन्-१८७४ ई० उससमय में नरसूके साथ गायकवार की मुलाकात के लिये

गयाथा गायकवारने मुझकोएकशीशी दी जिसमें जलकेसदृश एकसफ़ैद अरकथा और यहकहा कि तुम इसको करनैलफियरसाहब के स्नानकरने वा हाथ मुंह धोने के जलमें मिला दो इसशीशी का मुखरूई और मोमसेबन्धा रावजीने इसशीशी को अपने पाजामेके बीचमेंरखलिया और कमरबन्दसे उसको खूबजोरसे पेटमें बांधलिया रास्तेमें चलनेके झुकने से इसमेंसे कुछअरक रावजीके पेटपर गिरपड़ा तो उससे पेट पर शोथ होगया जिसमें बड़ीसोजिस होतीथी रावजी इस शीशी को अपनेसाथ रेजीडन्सीमेंलेगया और नरसूके प्रश्नकरनेपर यह उत्तरदियाकि मैंने इसशीशीके अरकको करनैलफियर साहब के पानीमें मिलादिया परन्तु रावजीकहताहै कि मैंनेयहएकसवारके भरोसेकेलिये कहदियाथा जो हरदिन इसबातके मालूमकरनेकेवास्ते कि मैंनेवहकामकिया या नहीं मेरेपास आयाकरताथा हालांकि मैंने उसअरकको यह विचारकर फेंकदियाथा कि उससे मेरेहाकिमको कष्टपहुंचेगा रावजी ने नरसूको वहसूजनदिखाई जो उसकेउदरपर होगईथीयह शीशी एकसंदूककेनीचे रक्खीहुईथी जो रेजीडन्सीके बरामदे में उस बेंचकेपास रक्खारहताथा जहां अरदलीका चपरासी बैठताथा यह बोतल रावजीकी तर्जनीउंगलीके बराबर लम्बी और पतलीथी डाक्टरग्रे ने जिनसे कि रावजीके पेटके सूजन की गवाही लीगई यह कहाहै कि जो तीन निशान नाफसे ऊपर उसजगहपर दीखतेहैं जहांकमरबन्द बांधाजाताहै वह यातो तेजाबकाहक या गरमलोहेके लगनेसेपैदाहोतेहैं और संखियाकाहकहै और संखियेसे दुखपहुंचसक्ताहै और इसी प्रकारकेचिह्न होजातेहैं जैसे कि रावजीकोपेटपरहैं इसशर्त्त पर वहचमड़ेसे एकघण्टेतक मिलारहे चाहेचमड़ेपर पहिलेसे कुछजखमनहो डाक्टरग्रेकी यहरायहै कि जो यहसमझाजावे कि शीशीमें संखियाथा तो जो निशानरावजीकेपेट पर होगयेहैं वहउसीतरह पैदाहोगयेहोंगे जैसा कि रावजी

ने कहाहै हमशीघ्रीकेलिये अपनीरायतबदेंगे जब कि हमदा-मोदरपन्थकी गवाहीपर ध्यानदेंगे॥

रावजीकहताहै किजिससमयमेंनरसूने मुझकोतीनसौरुपये दियेथे उससे चारपांच महीनेके उपरान्त मैंएकबेर संध्याको महाराजागायकवार की मुलाकातके वास्तेगया इसहिसाब से मालूम होता है कि यह मुलाकात अक्टूबर या नवम्बर सन्१८७४ई० में हुईहोगी रावजी यहखयाल करताहै कियह मुलाक़ातर-नवम्बरसे पन्द्रहयाबीसदिनपहिलेहुई होगीराव-जीनेयहभीकहाहै कि जिसकमरेमें यहमुलाकात हुईथी वह महाराजासाहबकागुसलखानाथा और उससमयसन्ध्याकेसात बजे होंगेया कुछदेर होगईहोगी और उससमय सालिम और यशवन्तराव और नरसू उपस्थितथे जो कुछ वार्त्ता हुईथी उस को रावजीने नीचेलिखेके अनुसार वर्णन कियाहै॥

महाराजासाहबने हमसे कहा कि साहब हमपर बड़ाअ-न्यायकरतेहै मैंतुमसेकुछबात कहनाचाहताहूं क्यातुमउसको सुनोगे फिर महाराजासाहब ने हमसे कहा कि साहब क्या भोजनकिया करतेहैं तबमैंने कहा वह कोई वस्तु मेरेसाम्हने नहीं खातेहैं महाराजा साहब ने फिर हमसे कहा कि जो मैं तुमकोकोई वस्तुदूंतो क्यातुम उसको खानेमें डाल दोगे हमने कहाकि उसकाक्या असरहोगा यहबात नरसूनेकहीथीइसके अनन्तर महाराजासाहब ने हमसेकहा कि मैं सालिमके हाथ एकपुड़िया भेजूंगा इसपर मैंने महाराजासाहब से कहा कि उसकाक्या असरहोगा और जब कि मैंनेयहपूछा कि यहक्या वस्तुहैतो महाराजाने कहा कि यहविषहै तबमैंने महाराजा सेकहा कि जोमैं इसकोमिलादूं और साहबको एकही बेरकुछ होजावे तोक्याहोगा महाराजानेकहा इसकाअसर जल्दी न होगा किन्तु दो या तीन महीनेमें उसका असर होगा फिर महाराजाने हमसेकहा कि मैंतुममेंसे हरएकको लाख २ रुपये

दूंगाजो तुमइसकामको करदोगे और मैंतुमको नौकरीदूंगा और तुम्हारे सन्तान और कुटुम्बको पालूंगा तुम किसी तरह से मत डरो मैंने खुद महाराजा साहबसे पूछा कि मैं क्योंकर इसचिपको मिलादूं महाराजाने उत्तरदियाकि तुमएकछोटी शीशीलेकर उसमेंथोड़ासाजल और चूराडालो और उसको खूबहिलाकर मिला दो फिर मैंने महाराजासाहब से पूछा जोमैं चूरेकोइसरीतिसे मिलादूं तो उसका क्या असरहोगा महाराजाने कहाकि जोतुम हिलानेकेबिना तुमउसकोग़र्बत में मिलादोगेतो ऊपरआजावेगा इसलियेमिलाने से पहिले हिलानाचाहिये फिरसालिमसवार और यशवन्तराव दोनों ने कहाकिजो तुमइसकामको करदोगेतो तुम्हारेलियेअच्छा होगा तुम कुछ भयमतकरो महाराजाने कहा कि इसकी तीनपुड़ियांबनाओ और इसको तीनदिनमेंबर्त्ताओउससमय मुझकोकोई चूर्ण नहींदिखायागया परन्तु महाराजाने कहा कि मैं सालिम और यशवन्तराव के हाथ जमादार के घरपर भेजदूंगा मैंनेकहा बहुत अच्छा॥

दफ़ा ३२—इस मुलाकातके दूसरेदिन नरसू एक पुड़िया लायाजिसमें दो प्रकारका चूरहथा एक सफेद और दूसरा गुलाबीरंगका और उसको रावजीको देदियादोनों पुड़ियों कोमिकदार जैसा कि गवाहने अदालतके रूबरूजाहिरकिया चाहपोनेके दो चमचोंके बराबरथी चाहेसफेद चूरह दूसरे चूरेसे कुछजियादाथा फिररावजीने इनदोचूरोंमेंसे तीनचूरे बनाये अर्थात् गुलाबीरंगके चूरेके तीनहिस्सेकिये और उसमें थोड़ा२ सफेदचूरामिलायाजिसको वहसफेद संखियासमझता थाइससूरतमेंथोड़ासासफेदचूराबचरहा और रावजीनेउसको कागजमें बांधकर अपनेपरतलेके भीतरएक पोशीदाजेबमेंरख लिया और तीनपुड़ियोंको दूसरीजेबमें रावजी वर्णनकरताहै कि मैंने इन तीन मिले हुये चूरोंको एक २ करकेतीन दिन बराबरकरनैलफियरसाहबकी ग़रबतमेंदफ्तरके कमरेमेंजाकर

इसतरह मिलादिया कि पहिले एक शीशी में पानीभर कर चूरेको खूब हिलालेताथा ॥

दफ़ा ३३—इसजगहपर संखियेकेचूर्णकेनिकालनेकेसुआमले पर ध्यानदेनाचाहिये जिसकेलिये सदरमेंयहजिक्रकियागयाहै कि यहवहतीसरी पुड़ियाथी जिसका इमतिहान डाक्टर ग्रेसाहबने किया करनैलफियर साहबने यहकहाहै कि मैंने रावजीको ९—नवम्बर की संध्याको केवल संदेहमेक़ैदकियाथा और रावजी यहकहताहै कि मैं ११—नवम्बर को छुड़ादिया गया परन्तु मुझको कामकरने की आज्ञा नहुई और इसीसे मैंअपनेघर चलागया रावजीने यहभी कहाहैकि मैं ९—नवम्बरकीभोरको अपनी गिरिफ्तारीसे पहिले सुआत्तल करदियागयाथा और मैंनेअपने परतले को दफ्तरमें रखदिया जिसमें करनैलफियरसाहब काम कियाकरते थे मिस्टरबोवी साहब जोउनदिनोंमें असिस्टण्ट रेजीडण्टथे कहतेहैंकि जब सेरावजीसेपरतलालेलियागया तो उसनेउसको एकखूंटीपर उस कमरे के भीतर टांग दिया तो करनैलफियर साहब के दफ़्तरके पासहै और निस्संदेहयही बयानठीकहै ॥

पुलिसने २२—दिसम्बर सन् १८७४ ई० कोरावजीको गिरफ्तार किया क्योंकि जो खबरें उसको फजूलखरची की बलिहाजउसकी आमदनीकेपुलिसकेपास आतीथीं इससेपुलिसके मनमें उसका बड़ासंदेह होगया था—२४—२५—२६ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को मिस्टर सूटरसाहबने रावजीके बयान को लिखलिया और २५—दिसम्बर को अकबरअली हेड अफ्सर पुलिसबम्बई ने रावजीसे पूछाकिजो चूरातुमसहलों से लाते थे उसकोतुम कहांरखतेथे रावजीने उत्तरदिया कि मैं उन कोअपने परतले में रखताथा जो अबभोदर के पासहैजो मेरी जगहपर नियतहुआ है सो भोदर शीघ्रही बुलाया गया और वहरेजीडन्सीके उसकमरेमें आया जहांपुलिसकेलोग मिस्टर सूटरसाहबके मातहत जो वहींरहतेथे तक़ीक़ात कररहे थे

और उसने परतलेको उतारकर अकबरअलीको देदिया उस समय मिस्टरसूटर साहब कपड़े पहिन रहे थे अकबरअली ने फौरन् उसपरतलेको टटोला और जबकिउसको उंगलीएक कागजके टुकड़े मेलगी जो पाकिटमें रक्खाहुवाथातो उन्हों-ने तुरन्तही मिस्टरसूटरसाहबको बुलाया जो दूसरे कमरेमें थे और उनकेसाम्हने संखियेकीपुड़िया और एकटुकड़ाडोरे का मिला रावजी अकबरअली और दामोदर और मिस्टर सूटरसाहबके बयानसे साफ जाहिरहै कि रावजीको उसपु-ड़ियाका बिल्कुल खयालनरहा औरजबतक उसपरतलेमेंनहीं मिली तबतक उसकाखयाल नहींआया सो इसबातके संदेह करनेका कोईकारण नहीहै कि इसपुड़ियाके निकालनेकी निस्बत जिससे रावजीके दरहकीकत उसबयानकी तसदीक होतीहैजोउसने बक्कीदोपुड़ियों के लियेकिया है पुलिसकी ओरसेकोईबनावट औरफरेबहुवाहो रावजी वर्णन करताहै कि मैंइससफेद चूर्णको संखियाजानताथा और मैने गुलाबी चूरेमेंसे थोड़ा २ हरएक पुड़ियामें इसविचारसे मिलादिया कि कहीविषकाअसर जल्दीनहोजावे ॥

दफ़ा ३३——अबहम महाराजा गायकवारकेसाथरावजी कीअन्तकी मुलाकात काजिक्र करतेहैं रावजीकहता है कि यह मुलाकात नरसू केसाथ सालिम के पैगाम पर६ नवम्बर सन् १८७४ ई० शुक्रवारको हुईथीपहिले वह यशवन्तरावके मकानको और वहांयशवन्तराव सालिम और नरसूकेसाथ म-हाराजाके महलकोगया और यहसब लोगमहाराजा गायक-वारकी मुलाकातपर उपास्थितथे जिसकमरेमेंमुलाकात का होनाबयान कियागयाहै वह गुसलखानाहै गायकवारनेइस हेतुसेरावजीको बुराभला कहाकि इसनेकुछनहींकियाजिस परररावजीने उत्तरदियाकिमैंअपना कामकरचुकापरन्तुउसके परिणामके जाहिरनहोनेका कारणमेरी समझमेंनहीं आया गायकवारने कहाकिमैं तुमको कोईऔरवस्तु मिलानेकेलिये

देना चाहताहूं जबकि रावजी विदाहोनेकोथा तोसालिमने कोईवस्तुउसके हाथमें रखदीजिसको उसने नहीं देखा दूसरे दिनअर्थात् ७नवम्बर सन्१८७४ ई०शनिवारको नरसूनेराव जीको एकस्याही माइल भूरेरंग का चूर्णएक कागजकेटुकडे मेंबन्धाहुवा दियाट नवम्बरसोमवारको रावजी रेजीडन्सीको नहींगयापरन्तु बहभोरके साढ़ेनौबजेट्तारीखको गया और सब चूर्णकरनैल फियरसाहब केगिलासमें मिला दिया उसने पहिलेउस चूर्णको थोड़ेसेजलके साथमिलाकर खूबहिलाया थारावजी कहताहै कि इसपिछलेचूरे के मिलनेसे दोदिनप-हिले पेडरूने महाराजा गायकवारके पाससे एकचूरापाया था(उसपिछली मुलाकातमेंजो रावजीकेसाथमहाराजासा-हबके पासहुईथी)सोयह चूरहजोरावजीकाबयान ठीक हैतो पेडरूको ५नवम्बरको मिलाहोगा रावजीबयान करताहै कि मैनेसब चूराएकहीबेर देदियाक्योंकि उसकी मिकादारथोड़ी थीमैने यहनहीं खयाल कियाकि इसका असर जल्दी होगा सिवा इसके मुझकोजल्दी करनेकीताकीद कीगईथी॥

दफ़ा ३४—अबहम रावजीकी गवाही का वर्णन करते हैं रावजीकमीशनके सम्मुखइसबाइदेपर किजोवहठीक २ कहदे तोउसका अपराधक्षमा होजावेगा एकनाकिस गवाहकेतौर परहाजिरहुवा है और इसकेविपरीत सरल्यूइसपीली साहबने नरमूसेसाफ२ कहदियाथाकितुम्हाराअपराधक्षमानहोगाऔर जोबयानया इकरारइसने पुलिस और सरल्यू इसपीली साहब के रूबरू २४—दिसम्बर सन् १८७४ ई० को कियाथा वहइस प्रयोजनसे पूर्वोक्त मासकी २६—तारीखतक लिखा नहींगया (जैसाकि सरल्यूइसपीली साहबनेवर्णन किया है)कि उसको इसमुआमलेपर गौरकरने की मोहलतमिले और वह किसी कारणसेएक ऐसेबयानकरने की तरफमाइलनहो जोतहकी-कातकरनेके वक्तसाबितनहोसके पसइसवजहसेउन बातों की तरफध्यानदेनाअवश्यहैजिनसेरावजीकी गवाहीकीसबसिदा-

कतकी तसदीकहोती होतथाचहमको मालूमहोता है जिन सूरतोंमेंनरसू अदालतके रूबरूहाजिरहुवाहै उनके लिहाजसे वहएक सच्चागवाहै और उसकेतौरके देखनेसेहमारे हृदयमें सच्चाईका असरहुवानरसू और रावजीकी गवाहीमें निस्संदेह कहीं २ दूखतिलाफातहैं परन्तु यहदूखतिलाफ दूस प्रकारके है कि जब कोई मनुष्य ऐसेहालों कोबयान करताहै जिनकोहुये बहुतदिनहुये होतो उनके जहूरमें आनेका एहतिमाल होताहैदूसबातके साबितकरनेके लियेकिजिनगवाहों कीगवाही केनिसबतकोई संदेहनहीं होसक्ताहै उनकेबयानमेंभी दूखतिलाफकाहोना सम्भवितहै उनबजूहातोंका जिक्रकरना काफी होगाजोमिस्टर सूटरसाहब और सरल्यूदूसपीलीसाहब नेदूसबातकीबयानकीहै किनरसूकाबयानउसीदिनक्योंनहीं लिखा गयाजबकिउसने पहिलीदफे कियाथा मिस्टरसूटरसाहब यह बातकहतेहैं किमुजकोउसदिन उसकेलिखनेका अवकाशनथा और सरल्यूदूसपीलीसाहब यहकहतेहैं मैंनेदूससबबसे उसको नहींलिखाकि मुजकोयह आज्ञाथी किनरसूको दूस मुआमले परगौरका अवकाशदियाजावे॥

दफ़ा ३५—नरसूकहताहै किमैंरेजीडन्सीके चपड़ासियोंका जमादार चौदहरुपये मासिकपरहूं और दूसओहदेका अनुमानसचहवर्षसे कामकरताहूं और मेरीरेजीडन्सीकीनौकरी की सम्पूर्ण अवधि ३० याचौतीसवर्ष है मेराघरबडौदे नगरके भीतरहै और मैंरेजीडन्सीको साढ़ेसातबजेया आठबजेप्रभात केसदाजायाकरताथा और साढ़ेछःबजे या सातबजे या आठबजेरात्रिकोलौट आताथाउसने रावजीके दूसबयानकी तसदीककीहै कि सन् १८७३ ई० केकमीशनके इकट्ठीहोनेके पहिले याउसकेकरीब महाराजागायकवारकेपास जानेकीदूससेप्रार्थनाकीगईथी उसनेमहाराजा गायकवारके साथपहिली मुलकातोंके सबजरूरीबातोंमें तसदीकीहै जिसकेलियेरावजीनेयह

बयानकियाहै किवहमुलाकात नरसूकेसाथ कमीशनकेउठजा-
नेकेउपरान्तहुईथी इसपहिलीमुलाकात और नौसारीके जाने
केबीचमें नरसूनेरावजी के साथ महाराजागायकवार केसाथ
संध्याको केवलएकही मुलाकात काइकरारकिया है हालांकि
रावजीने चारपांचमुलाकातों काजिक्रकियाथा नरसूकहताहै
किमैंनौसारीमें महाराजासाहबके पाससिवाय हमराहीरेजी-
डण्टसाहबके कभीनहींगया और रावजीने यहबातनहींकही
किनरसूमहाराजा गायकवारके पासनौसारीमें मेरेसाथ गयो
किन्तुनरसूने एकऐसीबातकहीहै जिसका जिक्र रावजीनेनहीं
किया और यहएकइसबातका उत्तमप्रमाणहै किजोगवाही
रावजी और नरसूनेदीहै उसमें उन्होंनेकिसीप्रकारकी चश्म-
पोशीनहीं की नरसू कहता है किरावजीने नौसारी में दोसौ
पचासरुपयेमुजको पारितोषक दिलवाये और जबनरसूनेयह
कहाकिमैं यहांइसरुपयेको लेकरक्याकरूंगा इसलियेरावजी
नेइसरुपयेकोसालिम कोदेदिया जोउससमय बडौदेको जाता
था और जब नरसू फिर लौटकर आया तो उसने यह बात
तहकीककिवहरुपया मेरेहीवास्ते मेरेभाईको दियागया या
नहींयद्यपि इसकिस्सेकी सिदाकतका कोईसुबूत नहींहै और
रावजी नेभीइसका कुछजिक्र नहींकिया तथापि हमको उस
पर निश्चय नकरनेका कोईकारण मालूम नहींहोताहै और
इसनेनिस्संदेह यह नतीजा निकाला जाताहै कि यह रुपया
गायकवारके पाससे आया ॥

द फ़ा३६——नरसूनेकहाहै किमेरी पहिलीमुलाकातनौ-
सारीसे लौटनेके उपरान्तहुई उसकाखुलासा बयानरावजी
केबयानके अनुकूलहै परन्तु नरसूने इसमुलाकात की तारीख
जनयाजलाई सन्१८७४ई०मेंऔररावजीनेमईसन्१८७४ई०
में बयान० की है हिन्दुस्तानी गवाहों का बयान जमाने के
लियेसदा अशुद्धहोताहै सोइसप्रकारके इखतिलाफसे उनकी
गवाहीअनिश्चय नहींठहर सक्तीनरसू वर्णनकरताहैकि राव

जीने गायकवारसे कुछबार्त्ता करनेके उपरान्त यहरायदीकि लक्ष्मीबाईसे जोमहाराजाकाबिवाहहुवाहै उसकाकुछपारितोषक देनाचाहिये और इसी हेतुसेमहाराजा गायकवारने पारितोषक केदेनेकाइकरार करलियातथाच उसके दस अथवा पन्द्रहदिन के उपरान्त सालिम आठसौ रुपये नरसूके पासलाया जिनमेंसे चारसौरुपयेउसनेरावजीको देदिये(जिनमेंसे सौ रुपये जुग्गाकोदिये) चारसौ रुपयेअपनेवास्तेलेलिये नरसूनेअपने भागसेसे सौरुपयेसामिल कोदियेऔर तीन सौ रुपयेअपनेवास्ते रहनेदिये परन्तु जुग्गाने इससौरुपयेके पाते काकुछजिक्र नहीकियाहैजिसकाहवाला नरसूनेदियाहैऔर इससे शायदयह नतीजा निकला जासक्ताहैकि यहरुपयाउसकोनहीं मिलाहालांकि यहबात मानताहै किमैंरावजीनरसूयसवन्तरावऔरसालिमकेसाथएक दफामहाराजाके महल कोगयाथा यहबात स्पष्ट होगी कि रावजीनेनरसूसे तीनसौ रुपयेके मिलनेका इक्रार कियाहै॥

दफ़ा ३७—रावजी कहताहै किनरसू तबमेरे साथथा जब कि मैं महाराजा गायकवार से उन दिनोंमें मुलाकातकरनेके लियेगया और महाराजाने मुझको शीशी दीथी परन्तु नरसू वर्णनकरताहै कि मैंने शीशीको नहींदेखा यह शीशी उसनेरेजीडण्टीमें देखीजहां रावजीने उससेयह बयानकिया कि मैंने विषकोजो उसकेभीतरथा जलमेंमिलाकर पिलाया और वहयह बातजानताहै कि यहशीशी इस सन्दूक़के नीचे रक्खीहुईथी जोरेजीडण्टीमें चपड़ासियोंके बैठनेकी बेंचोंके निकटरक्खा हुवाथा॥

दफ़ा ३८—तबतक नरसूके रूबरूजहरका कुछजिक्र नहीं किया गया अब नरसू उन पिछली दो मुलाक़ातोंका हाल कहताहै जोरावजीकी पिछलीदो मुलाकातोंसे मुताबिकहैं अर्थात्एक मुलाकात नवींनवम्बरसे बीसया पच्चीसदिनपहिले हुईथी जोक़रीब २ उससमयकेहै जोरावजीने वर्णन कियाहै

मुलाकातकी जगह गायकवारके प्राईवेट मकानका मुजराई कमराहै नकि गुसलखानाजैसा कि रावजीने वर्णनकियाहै इसबातके निश्चयकरनेका कोईकारण मालुमन हीं होता कि इन मुलाकातोंमेंसे कोई मुलाकात भीतरके कमरेवा गुसल खानेमें हुई हो हम निश्चय करतेहैं कि यह सब मुलाकातें मुजराई कमरेमें हुईंनरसू वर्णन करताहै कि कारभाई मेरे साथथा परन्तु रावजीने कारभाईका कुछ जिक्र नहीं किया कारभाईकी गवाहीमे यहबात साबितनहींहोती कि वहइस बेरनरसुथा और मनुष्योंके साथ गयाथा यानहीं कोईमनुष्य यहदावा नहींकरता कि मैं महाराजा गायकवारके सम्मुख गयाथा जोमनुष्य इन मुलाकातमें वर्त्तमानथे जिनका नाम नरसूने बयानकियाहै उनके नाम उननामोंके अनुकूलहै जो रावजीनेबयानकियेहैं और नरसुकी गवाहीके नीचेलिखेहुये खुलासेमें उसगुफ्तगूका जिक्रहै जोइसमौकेपरहुई और जो मुख्य २ बातोंमेंरावजीके बयानकेअनुकूलहै महाराजाने राव-जीसे कुछ बार्त्ताकी मैं उपस्थितथा और मैंनेवह बार्त्तासुनी और उसमेंसंयुक्तथा महाराजाने कहासाहब आपबहुतअप्र-सन्नहोजाताहै इसबातका कुछबन्दोबस्त करनाचाहियेयशवन्त रावनेकहा कि महाराजा साहबकी यहइच्छाहै कि तुमको कोईवस्तु देंगेतुम उसकोमिलादो महाराजाने कहा कि हां कोईऐसा उपायकरना चाहियेजिससे वहवस्तु साहबके उदरमें पहुंचजावे मैंने कहा कि भोजनसे मुझकोकुछ तअल्लुकनहीं हैमैं यहबात नहीं करसकूंगा फिर रावजी ने कहा जो तुम चाहोतोमैं उसेशर्बतमें मिलादूंगा जिसकोसाहब बयानकरते हैं महाराजानेकहाबहुतअच्छातुमइसकेकरनेमेंकोशिशकरो महाराजाने कहा कि मैं तुमको एकपुड़िया भेजूंगा उसको रावजीको देदेनाचाहिये यशवन्तराव और सालिमने कहा कि जोकुछ महाराजा साहब कहतेहैं जब वह वस्तु हमको दीजावेगी तोहमउसको लेआवेंगे महाराजानेकहा कि जो

यहकाम होजावेगा तो तुम्हारे लिये अच्छाहोगा रावजीने फिरवही बातकही इनशब्दोंसे कि तुम्हारेलिये अच्छाहोगा यहप्रयोजनथा कि तुमखानेपीनेसे खुशरहोगे और नौकरीके मोहताज न होगे महाराजाने यहकहा और सालिम और यशवन्तरावने फिरवही बातकही यहमुलाकात दसमिनटया पावघण्टेरहीहोगी मुझकोयह स्मर्ण नहींहै कि यहमुलाकात पन्द्रहदिनया बीसदिनया पच्चीसया एक महीने इससेपहिले हुईहोगी करनैलफियर साहबको अपने प्यालेमें विष मालूम हुवाउस मुलकातमें मुझकोकोई पुड़िया नहीं दीगई जबवह मुलाकातखत्म होगईतो सालिमने दूसरेदिन एकपुड़ियामेरे घरपर मुझकोदी यहपुड़िया मेरीतर्जनी उंगलीके बराबरथी और अहमदाबादके कागजकी बनीहुईथी॥

दफ़ा ३६—नरसूने रावजीकेसाथ महाराजा गायकवारसे पिछलीमुलाकातकी तारीखदूसरी यातीसरी नवम्बरबयानकी है परन्तु रावजी कहताहै कि वहछठी नवम्बरकीथी नरसू अपनेनियमसे आठबजे रात्रिके यशवन्तरावके मकानपरगया और वहांसे रावजी और नरसू और करभाई और जुग्गायह सबएकत्र होकरमहाराजाके महलको गयेतथाच यशवन्तराव और सालिमने उनको महाराजा गायकवार के सम्मुख पेश कियाजो मामूलसे सुजराई कमरेमें उपस्थितथे महाराजाने कहा कि तुमकच्चेहो तुमनेअबतक कुछकाम नहींकिया मैंने कहा कि इस बातको रावजी जानताहै फिररावजीने कहा कि मैंने उसवस्तुको मिलादिया और जो आपकी दवाअच्छी नहोतो मेरा इसमें क्या इखतियार है महाराजाने रावजीसे कहाबहुतअच्छामैं एकदूसरी पुड़ियाभेजूंगा परन्तु तुमउसको ठीक २ मिलामदो और अच्छे प्रकार डालदो रावजीने कहा बहुतअच्छा यशवन्तराव और महाराजा साहबदोनोंने कहा कि कलसालिम यहपुड़िया तुम्हारे पास लावेगा तुमउसको रावजीको देदोफिरनरसूने बयानकियाहैकि सालिमनेमुझको

दूसरेदिन एकपुड़िया पहिली पुड़ियाके सदृशअपने मकानके पासदी और मैंने रेज़ीडेण्टीमें पहुंचकर उसको रावजीको देदियारावजी बयानकरताहै जबमैं महलमे बिदा होनेकोथा तबमालिमने जमादारके हाथमें कुछ वस्तुदीथी जिसको मैंने नहींदेखाथा इस जगहपर ऐसा इख़्तिलाफ पायाजाताहै जो साफ़ २ दूरनहीं हुवा॥

दफ़ा४०—नवींनवम्बरको नरसूआठबजेप्रभातकेरेज़ीडेण्टी को गया और डाक्टरसीवर्ड साहबके चले जाने के उपरान्त रावजीने उससेकहा कि मैंने शर्बतके प्यालेमें विषमिलादिया है और डाक्टरसाहबने (अर्थात्सीवर्डसाहब) उसकोलेलिया नरसूरेज़ीडेण्टीमें तबतक कामकरता रहाजबतक कि पुलिस ने २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को उसे गिरिफ्तार किया

दफा—४१—अबउनचिट्ठियों की निस्बतजो रावजीने महाराजासाहब के महलको भेजीं रावजी और नरसूको गवाही काजिक्रकरनाउचितहै नरसूवर्णनकरताहैकि सन्१८७४ई० की वर्षाऋतु में अर्थात् जूनसे ले सितम्बर पर्यन्त मेरेसाथ रावजीकेपासने बीसयापच्चीस चिट्ठियांजिन में रेज़ीडेण्टी के आनेजानेवालोंकेनाम और२ खबरेंलिखीथींसालिमकेपास पहुंचाने के लियेआईं और मैंने उनको उसके पास पहुंचा दियायहचिट्ठियां सोमवार और वृहस्पतिवारको नहींलिखी गईंथींरावजी कहताहै कि मैंने इसप्रकार की कईचिट्ठियां भेजीथींउनमेंसेकईतोअपने हाथसेलिखीथीं और एकदोजुग्गा से लिखवाईथीजुग्गाने इसबयानकी तसदीककीहै और एक चिट्ठीकोपहिचानकर यहकहाहैकिरावजी और नरसूकेकहनेसे मैंने उसकोलिखाथाकागज़नम्बरी(न)वहचिट्ठीहै जिसमें उनमुलाक़ातोंकीइत्तिलाहै जोकईमनुष्योंने रेज़ीडेण्टसाहब सेकीं और जो परस्परवार्त्ताहुई उसकाबयानहै यहचिट्ठीसालिमके घरमेंपाईथी जैसाजुग्गनलाल और इमामअली और मुन्नेभाईके इजहारोंसेसाबित हुआ॥

दफ़ा ४२—जो गवाही पेश कीगई है उससे यहीनिश्चय होता है कि रावजी और नरसू को अपनी गिरिफ्तारी के उपरांत वार्त्ताकरने की कोई अवसर नमिली सो उनकीगवाहीकोई जातीवाकफियतका नतीजा है जबनरसू सरल्यू इसपीलीसाहब के रूबरू हाज़िर हुआ और २४ दिसम्बर को गवाही दी तब रावजीका बयानलिखा नहींगया था यहबातनहीं होसक्तीहै कि जो नरसूकहना चाहताथा उसकीनिस्बत पुलिसने उस को सिखाया या पढ़ायाहोयह दोनोंगवाह प्रश्नोत्तरकेसमय अपनेवाक्योंपर स्थिररहे और हम निश्चय करते हैं कि जिन मुआमिलोंमें वहसंयुक्त हैं उनकीनिस्बत उनकी गवाहीसच्च है जब सरदिनकररावनेनरसूको उसकीगवाही के पूर्णहोने पर सौगन्द दिलाई किवह निर्भय होकर ईश्वरकोवर्त्तमान जानकर सत्य वृत्तान्त वर्णन करदे तो उसने कहा कि मैंने बिल्कुलसचबात बयानकरदी और मुआफीकेवाइदेसे, मैंसिवाय इसके और कोई बात नहीं कहसक्ता हमको यहभी मालूम होताहैकि जबमिस्टरसूटरसाहबने २६दिसम्बरसन् १८७४ई० को नरसू का बयान और इकरारलिख लिया तो नरसूइस लज्जासेकि उसनेऐसे मनुष्यके प्रतिकूलगवाहीदी जिसकोवह और रावजी दोनों एकमफीकाना बयानकरतेहैं रेजीडण्टी के अहातेके कुंवेंमेंगिरपड़ा नरसूने अदालतके सम्मुख इसबात के बयानकरनेमें ताम्मुलकियाकि उसनेवास्तवमें अपनेतईं कुंवें में गिरादिया और यह कहाकि अपनेहमजोलीनौकरों की दशा देखनेसे मेरादिमागपरेशानहोगयाथा और मैंअकस्मात् कुंवेंमेंगिरपड़ापरन्तुकुंवेंकेअवलोकनसे यहबातसुस्पिकलहमारे समझमें आतीहै किवहइत्तिफाकिया कुंवेंमेंगिराहै इसबातके खयाल करने की माकूल वजह यहहै कि वह जान बूझकर कुंवेंमें गिर पड़ा॥

दफ़ा ४३—अब दामोदरपन्थको गवाहीपर देखनाचाहिये वहहरदिन महाराजागायकवारके महलकोप्रभातकेसातबजे

जाताथा और दसबजेरात्रि पर्य्यन्तरहताथा और उसको दो सौरुपये मासिकमिलताथा वह महाराजागायकवारकाप्राईवेटसिक्रेटरथा वहवर्णन करताहै कि महाराजासाहबके सब निजकाहिसाबकिताब मेरेआधीनरहाकरताथा॥ भाद्रकृष्ण पक्ष(सितम्बरऔरअक्टूबरसन्१८७४ई०)में महाराजागायकवारने सुझकोदोतोले संखियाखुजलीके इलाजकेलियेहिदायत की उसकेलियेफौजदारीके सर्रिश्तेकोलिखनेकीआज्ञादी इस विषयमेंएकहुक्मजारीकियाथा किसंखिया केवलफौजदारी के सर्रिश्तेसे और हमेशामहाराजागायकवारकीआज्ञासेमिल-सक्ताहै तथाचदामोदरपन्थने सर्रिश्ते फौजदारीके अफ्सरको एकचिट्ठीभेजी जोअदालतमेंपेशकीगईयहचिट्ठीचौथीअक्टूबर सन् १८७४ई० की लिखीहुई है और उसमें यह हिदायतहै कि घोड़ेकी दवाके लियेदो तोलेसंखिया मंगानेके लियेपास भेजाजावे तो शहरके गणिपतिराव बलवन्त फौजदारके पुत्रने अपनेपिताकी ओरसेइसपर दत्तेरिया रामचन्द्रके नामपांचवीं अक्टूबरको नीचेलिखी हुईएक आज्ञा लिखी (श्रीमत्सरकार महाराजाने दोतोले संखियामोल लेकर देनेकी आज्ञादी है सोइसमनुष्यको संखियादेदो और क़ीमतलेलो) दामोदरपन्थ कहताहै कि मैंने घोड़ेकाजिक्रइससबबसे कियाथा कि मुझको गायकवारने यहहिदायतकीथी हुरमुझजी विद्याहजूर फौ-जदार था और उसने दामोदरपन्थसे कहा कि मैंश्रीमहा-राजाकी आज्ञालेकर संखियादूंगा दामोदरपन्थने महाराजा सेयहबात कही और महाराजाने उससे कहाकि जिसतरह होसके नूरुद्दीन बैाहरेसे जो बड़ादेकी छावनी में रहताथा और जिसके आधीन महाराजागायकवारका शफाखानाथा संखियालाओ तथाचदामोदरपन्थने यातो उसीदिन यादूसरे दिन (५—वा ६—अक्टूबर सन् १८७४ई०) को नूरुद्दीनबैाहरे से एक पुड़िया मंगाई जिसमेंदो तोले संखिया बयान किया गयाहै और महाराजा गायकवारकी आज्ञासे थोड़े दिनोंके

उपरान्तउसको सालिम को देदिया महाराजा गायकवारने कहा कि सालिमखुजलीके वास्ते उसकी औषधी तय्यारकर लावे फौजदारीके सर्रिश्तेसे कोई संखिया नहीं आया और दत्तेरिया रामचन्द्र जो महाराजा गायकवारके सर्रिश्तेफौजदारीमें नौकरथा यहकहताहै कि क़ागज़नम्बरी (ज़्याद) मेरे पासआया और वह तबतक दफ्तर फौजदारमें रहाजब कि पूर्व्वोक्तसर्रिश्तेके हालकेअमलने अपनी गवाही देनेसेतीनसप्ताहप्रथम उसकोमंगालिया और उस क़ाग़ज़पर संखियानहीं दियागया क्योंकि पिछले अठारह महीनेसे यहहुक्म जारीथा कि महाराजा साहबकी आज्ञाकेसिवाय संखिया और और ज़हरनहीं दियाजावेऔर इसकागज़मेंमहाराजागायकवार काहुक्मनथा हालांकि उसकीपीठपर यहलिखाहै किमहाराजा गायकवारने आज्ञादी ॥

दफ़ा—४४ फिर दामोदरपन्थने यहबयान कियाहै कि संखियालानेके आठदिनके उपरान्त महाराजा गायकवारने मुझको एकतोले हीरेके मंगाने और यशवन्तरावको उसके देने को आज्ञादी तथाच मैने नानाजी वंतिलके पाससे जो जवाहरखाने का सुहर्रर्था एक पुड़ियामंगाई जिसमें हीरे बयानकिये गयेहैं और महाराजा साहबकी आज्ञाके अनुसार उसपुड़िया यशवन्तराव को देदी ॥

दफ़ा ४५—वह यहभी कहताहै कि इससे आठयाचार दिनके उपरान्तगजाबा जोनानाकंवलकर गायकवारके साले और मौरूसीवजीरका नौकरथा मेरेपास एकछोटीसीशीशी लायाहै जिसमें कुछदवाथी गाकयवारने पहिलेसे दामोदर पन्थको यह आज्ञादी थी कि वहवड़ी२ च्यंटिया और सर्प और कालेघोड़ेका मूत्र हकीम के पासभेजदे तथाचबोतल के भीतरइनहीं वस्तुओंकी मिलीजुई दवाहकीमकी बनीजुई थी और जो किमहाराजा गायकवारने दामोदरपन्थसे कहा था कि वह उसको एक और बोतलमें खालीकरदे इसहेतु

से दामोदरपन्थने अपनी छोटी शीशीमें स्वीकरलिया जो स्वाभाविक गर्मी के बराबर थी और जिसमें अतररहा करताथा इसबात में संदेह है कि आया गवाहने अतर गुलाब का या केवल अतरका शब्द कहा जिसमें गुलाबका अतर मिला हुवाहै यह बातकुछ विशेषके लायक नहींहै और इसपर यहबात आश्चिरहै कियह छोटीशीशी उनमासूकी गोलियों में से नहीं है जो बरोदेमें मशहूर हैं और जिनमें थोड़ीसी बूंदे आती हैं दामोदरपन्थ ने उस दवाको छोटी शीशी में डालकर उसका मुखबन्द और मोमसे बन्दकरदिया और महाराजागायकवारके जुबानीआज्ञा के अनुकूल दूसरे दिनउसे मालिमकोदेदिया औरसालिमको कहाकियहशीशी रावजीको देदे दामोदरपंथको यह समय ठीकर स्मर्ण नहींहै जबकि उसनेयहशीशी देदीपरन्तु उसको निश्चय हैकि अगस्त सन्१८७४ई०केउपरान्तउसनेयहशीशीदीथीऔर यहयहकहता हैकि मैंनेदसहरेके निकट(२० अक्टूबर सन्१८७४ ई०)शीशी को दियाथा यहयहभी कहताहै कि मैंइसबातको जानताथा कि शीशीके द्वारा करनैल फियर साहबको विषदिया जावेगा जिस रीतिसेयहशीशी रावजीकेपास पहुंचीउसको हमठीक २ नहीं समझसके परन्तु, हमनिश्चयकरते हैंकि महाराजा गायकवारके पाससेउसकेपास गुप्तवा प्रगटएक शीशीआई जिसमें यह कष्टदाई अरक था जिससे करनैल फियर साहब को कष्ट पहुंचाना समझा गया था॥

दफ़ा ४६—फिर दामोदर पंथ ने महाराजा गायकवार की आज्ञासे दोतोलेसंखिया नूरुद्दीन बोहरेसे औरमंगवायाऔर उसेभी सालिमकोदेदिया॥

दफ़ा ४७–दामोदरपंथने महाराजा गायकवारकी आज्ञासे एक तोलाखीरा नानाजीवतिलसे और मंगाया तथाच नाना जीवतिलने एकपुड़िआ दामोदरपंथकोदी औरयहकहा किइ-

समेंतीनमासे हीरेका चूर्णऔर ६मासेहीराहै दामोदरपंथने महाराजा गायकवारकी आज्ञासेइस पुड़ियाकोयशवन्तराव कोदेदिया उसने दामोदर पंथके एकप्रश्नके उत्तरमें यहबयान कियाकि इसकाचूरह बनाकर करनैलफियर साहबको दियाजावेगायह हीरोंकी पुडियाह नवम्बरसन्१८७४ ई०सेपांचया सातदिन पहिलेयशवन्तरावको दीगईथीगायकवारनेदामोदरपंथसे कहाकियह हीरे अकलकोटके बड़ेपुजारीके ताजके लिये हैं ॥

दफ़ा ४८–इसजगह परयह बातप्रगट हैकि किनूरुद्दीनबौहरेसेहीरेकेप्राप्तकरने कीनिस्बतदामोदरपंथ केबयानकी तसदीकके वास्तेकोई गवाही नहींहै परन्तु यह बात महाराजा गायकवार संखिया प्राप्तकरनाचाहतेथे दामोदरपंथकी गवाही और कागज नम्बर (रद) सेसाबित है औरहमारेबिचारसे इसबातकी बड़ीशङ्काहै किदामोदरपंथनेउसीरीतिसे संखिया प्राप्तकी जैसेकि उसनेवर्णन कियाहै हमारेबिचारमें रावजी औरनरसूकी गवाहीसे यहबातभी सावितहै कि जो करनैल फियरसाहब कोबिषदियागया वहसालिमके पाससे आयाथ औरयहभी बड़ीशङ्काहै किजोसंखिया दामोदरपंथ नेसालिम कोदियाथा वहवही संखिया है जो करनैल फियर साहब को बिषदेने केलिये बर्त्तीयागया जबकि दामोदरपंथ केबयानकी तसदीक़के लिये कोई गवाही नहीं है तोहमनहीं कहसक्ते हैं कि यहबात सावित है किजो संखिया रावजी ने मिलाया था वह वही संखिया है कि जिसके लियेदामोदरपंथ वयान करताहै किमैनेउसको नूरुद्दीन वौहरेसे लियाथा औरसालिम को देदिया था ॥

दफ़ा ४९–हीरोंके खरीदनेकी गवाही नीचेभीलिखी है अर्थात् नानाजी वतिल महाराजा गायकवार के जवाहर खानेकादारोगा वर्णनकरता है किपिछले दसहरेसे(२० अक्टूबर

सन् १८७४ ई०) कईदिन पहिले मैंने दामोदरपंथ की आज्ञासे अढ़सठ यासाढ़े अरसठ रत्तीचपटे गुलाबी रंगके हीरे फतह चन्दके पुत्रहेमचन्द सेमोललिये उसने इसखरीदकी याददाश्त तय्यारकरनेकेवास्ते एकमुहर्रिरकोहिदायतकी इससेसातयाआठ दिनकेउपरान्त उसनेदामोदरपंथकीआज्ञासेहेमचन्दनेअनुमान चौहत्तररत्ती हीरे उसी प्रकारके मोल लिये और उसीयाद-दाश्तमें उनकीखरीदभी लिखलीगई इनदोनो प्रकार केहीरों केखरीदनेके उपरान्त दामोदरपंथको देदियेगये और दामोद-रपंथने उसगवाहसे यहकहा कि इनहीरों का चूरह बनाकर दवाकेतौरपर इस्तैमाल किया जावेगा उनकी सबकीमत छः हजारतीन रुपयेथी नानाजी वतिलने हेमचन्द को तीनहजार रुपयेनीचे लिखेकेअनुसार दियेथे अर्थात् दोहजार रुपयेना-नचन्दसर्राफ और मेलामहल के द्वारादो रक़मोंमें से जिनकी जमातीनहजार छः सौउन्नीस रुपयेतेरहआने तीनपाईहैदिये गये और यहरक़में रौशिनीकी वचत और उनअशरफियोंकी फरोख़्तसेजो नजराने की तौरपर दी जाती थी और महाराजा गायकवारके हिसाबमें जमाकीजातीथीं प्राप्तहुईंथी और एक हजार रुपये नानाजी वतिलने दियेथे वहकहता है कि जिस याददाश्तमें इनहीरोंकी खरीद लिखी गईथी उसको आत्मा-रामसुहर्ररने लिखाथा और करीब देवालीके (९-नवम्बर सन् १८७४ ई०)को दामोदरपंथ उसयाददाश्त कोलेगया इसीस-बबसेहीरे जवाहरखानेके किसीहिसाबमें नहींमालूमहोते हैं आत्माराम सुहर्रर महाराजा गायकवार के जवाहरखाने का सुहर्ररऔर नानाजीवतिलकामातहतहैकहताहै किपिछली देवाली से आठदिन पहिले हीरे हेमचन्दसे मोललियेगये थे और व्यंकटेशके पुत्रविनायक रावजीने उनकीएक याददाश्त तय्यारकीथी और जबतक कारनैल फियर साहब को विषदेने कीखबर प्रसिद्धहुई तबतक वहयाददाश्त उसीके पासरहीथी

फिरनानाजी वतिलउसको मेरेपाससे लेगयाउस गवाहनेयह भीकहाहै किमहाराजा गायकवारके जवाहरखानेमें बहुतसे अलग और जड़ेहुयेहीरे मौजूदथे और जबयहहीरेमोललिये गयेथेतबएक तलवारकाकबजा और पेशकब्ज और एकजाकेट परछोटे २ हीरे जो महाराजा गायकवार के जवाहरखाने से लियेगये थे मोललिये जातेथे इसीभांति के हीरे हरसालजि-यादह मौजूदरहते थे उसनेप्रश्नोत्तर के समयमें यहभीबयान किया कि जबकि नानाजी याददाश्तको लेगया तो उसकेउ-परान्त मैंने हेमचन्दसे यह पूछा कि उसके हीरे उसके पास लौट आगयेया नहीं उसनेउत्तर दिया किलौटआये नानाजी वतिलने याददाश्तके लेजानेकेसमय यहकहाथा कि यहहीरे मोलनहीं लियेजावेंगे किन्तु मैंउनको लौटादेना चाहताहूं॥

दफ़ा ५०—दामोदरपंथने उनहीरोंकीकीमत देनेकेविषयमें जोनानाजीवतिलकेपास सेउसकेपासआयेनीचेलिखेकेअनुसार बयानकियाहै अर्थात् महाराजागायकवारने उनकीकीमतके देनेकी दामोदरपंथको जुबानीआज्ञादी औरउसने नानाजीव-तिलको यहहिदायतकी किजो रुपया महाराजागायकवारके निजके हिसाबके विषयमें उसकेपास आताहै उसमेंसे उसरु-पयेको देदेकुल उसरुपयेकी संख्याजो निजके हिसाबमेंजमा कियागयाथा तीनहजार छःसौ उन्नीसरुपये तेराआनेतीनपाई बयानकीगईहै दामोदरपंथ वर्णनकरताहै कि उनहीरोंकेबा-बत जौहरियोंको कीमतदेनेकीआज्ञा दिसम्बर सन्१८७४ई० की लिखीहुईहै जिसमेंयह लिखाहै कि तीनहजार छःसौती-स रुपये तेरहआने तीनपाई महाराजागायकवार ने सिवाय नारायणके मन्दिर के ब्रह्मभोजके लिये दिये हैं दामोदर पंथ कहता है कि यह बनावटी आज्ञा थी और जिस प्रयोजन के लिये यह रुपया दरकार था उसके छिपाने केलिये यहआज्ञा दीगईथीइसबातके बाबतकि वास्तवमेंऐसाहीहुवाहोगा कुछ

संदेह नहीं होसक्ता क्यों कि रामेश्वर जिसका नाम पूर्वोक्त आज्ञा में रुपया पाने वास्ते और दावत के मोहतमिम के तौरपर बयान किया गया है वर्णन करता है कि मेरे पास यह रुपया नहीं आया और दामोदर पन्थ के इस बयान की तसदीककीहै कि पानेवाला सदाआज्ञा पत्रकेसाथ एकरसी-दखगादिया करताथा तथाच उसने एकअसल झक्मकाहवा-लादियाहै नम्बरी (म) जिसपर उसकी रसीदमौजूदहै और झक्मनम्बरी (घ)को आज्ञापर कोई रसीद नहीहै परन्तु इस मेंसंदेहहै किआया काग़ज़नम्बरी(घ)का रुपयावास्तवमें उस रकमके बराबरहै जो कागज़नम्बरी (घ)में की गईहै क्योंकि पहिले तो कागज़ नम्बर (द,च,ध) का मजमूआ तीनहजार छ:सौ उन्नीस रुपये तेरह आने तीन पाई है और कागज़ नम्बर (घ) का मजमूआ तीनहजार छ:सौ तीस रुपये तेरह आने तीन पाई है और दूसरे यह कि कागज़ (घ) ३१ दिसम्बर सन् १८७४ ई० का लिखाहुवा और कागज़ (द) पहिली जनवरी सन् १८७५ई०का लिखाहुवा है परन्तुयह बातसाफ जाहिरहै कि नानाजीवतिल को जैसाकि वहतस-लीमकरता है वह रकमें वसूल हुई जो कागज़ (द) (घ) (ध)में लिखा है और यहभी प्रगट है कि कागज़ (घ) के द्वारा दामोदरपन्थ को एकरकम ऐसी मिलती जो खुफिया कामोंमें काम आसक्तीहै वास्तवमें दामोदरपन्थने स्पष्टवर्णन कियाहै कि खुफिया कार्य्योंकेलिये समय२पर बहुतसा रुपया अलग करदिया जाताथा कागज़(क)से लेकर(द)पर्य्यन्त जो २४ नवम्बर सन् १८७४ई० से १३ अक्टूबरसन्१८७४ ई०तक लिखेहुयेहैं साजिशी झक्महैं जोसालिमे और यशवन्तरावके नाम उसअसबाबकी क़ीमतदेनेकेवास्ते जारीकिये गयेथेजिन का मोल लियाजाना महाराजा गायकवार के लिये बयान कियागयाहै और उनके साजिशीहोने कासबूत दामोदरपन्थ के वचनके अनुसार यहहै कि उन्हीवस्तुओं और सौदागरोंके

नामका कुछविस्तार नहींहै जिससे वह मोलियागया नम्बर (क) सेलेकर (द) तकऔर नम्बर (घ) में यह इखतिलाफ है कि पहिले कहे गये कलमोंमेंसे हरएकआज्ञामें पानेवालेकी रसीद है और (घ) में नहीं है इसेयह प्रकट हुवा कि कागज (घ) केवलबलिहाज मतलबके है साजिशीनहींहै किन्तुवहइस प्रयोजन से बनाया गया है कि जिसमनुष्य को रुपया दिया गया था उसकानाम जाहिरनहो और उससेदामोदर पन्थकेइस बयानकी तसदीकखयाल की जातीहै कि हीरेजवाहिरातके हिसाबमें जमानहींकिये गये क्योंकिमहाराजा गायकवारने यहकहाथा कि वहदवाके लियेहैं और इसमजमून कीकेवलएकयादद्दाश्त जवाहरखानेमें तय्यारकीगईथी जिसकेलिये महाराजा गायकवारने उससमय जबकि दामोदरपन्थनेनवीं नवम्बर को करनैलफियर साहबको विषदेने के उद्योगके उपरांत उसकोबुलाया महाराजा गायकवारने यहहिदायतकी थी कि वहनष्टकर दीजावे इसलिये दामोदरपन्थने नानाजी वतिलसे अलगकरने को कहा और उसने उसको अलग कर दिया और यह रक़म स्वामीनारायण के नामलिख दीगई ॥

दफ़ा—५१ अब हीरों के विषय में हेमचन्द की गवाही पर नजरडालनी बाक़ीहै इसगवाह ने नाकिस तौर से गवाही दीहै और उसकीगवाही परआमतौर से एतिबार नहीं हो सक्ताउसका यह बंशामालूम होताथाकि हीरोंकीखरीद के हरकिस्मके तअल्लुक़से इन्कार करेवहयह बातमानताहै कि वहहीरेकीदोपुड़ियां विनायकराव (महाराजा गायकवार के नौकरनानाजी वतिलकासाला) के पास—३१—अक्टूबरयापहिलीनवम्बर—सन्—१८७४—ई० को लेगया परन्तु वहकहता है कि वहपुड़ियां मुझकोलौटा दीगईं वह दामोदर पन्थयानानाजीवतिल या विनाकराव के हाथहीरोंके बेचनेसे इन्कार करताहै वहतसलीम करताहै कि १ दिसम्बर सन्१८७४ई० को मैंने नानाजीवतिलकेपास सेदोहजाररुपयेऔर दूसरीतीसरी

संदेह नहीं होसक्ता क्यों कि रामेश्वर जिसका नाम पूर्वोक्त आज्ञा में रुपया पाने वास्ते और दावत के मोहतमिम के तौरपर बयान किया गया है वर्णन करता है कि मेरे पास यह रुपया नहीं आया और दामोदर पन्थ के इस बयान की तसदीककीहै कि पानेवाला सदाआज्ञा पत्रकेसाथ एकरसी-दखगादिया करताथा तथाच उसने एकअसल हुक्मकाहवा-लादियाहै नम्बरी (म) जिसपर उसकी रसीदमौजूदहै और हुक्मनम्बरी (घ)को आज्ञापर कोई रसीद नहींहै परन्तु इस मेंसंदेहहै किआया काग़जनम्बरी(घ)का रुपयावास्तवमें उस रकमके बराबरहै जो कागजनम्बरी (घ)में की गईहै क्योंकि पहिले तो कागज़ नम्बर (द,च,ध) का मजमूआ तीनहजार छ:सौ उन्नीस रुपये तेरह आने तीन पाई है और कागज़ नम्बर (घ) का मजमूआ तीनहजार छ:सौ तीस रुपये तेरह आने तीन पाई है और दूसरे यह कि कागज़ (घ) ३१ दिसम्बर सन् १८७४ ई० का लिखाहुवा और कागज़ (द) पहिली जनवरी सन् १८७५ई०का लिखाहुवा है परन्तुयह बातसाफ जाहिरहै कि नानाजीवतिल को जैसाकि वहतस-लीमकरता है वह रकमें वसूल हुई जो कागज़ (द) (घ) (ध)में लिखा है और यहभी प्रगट है कि कागज़ (घ) के द्वारा दामोदरपन्थ को एकरकम ऐसी मिलती जो खुफिया कामोंमें काम आसक्तीहै वास्तवमें दामोदरपन्थने स्पष्टवर्णन कियाहै कि खुफिया कार्य्योंकेलिये समय२पर बहुतसा रुपया अलग करदिया जाताथा कागज़(क)से लेकर(द)पर्य्यन्त जो २४ नवम्बर सन् १८७४ई० से १३ अक्टूबरसन्१८७४ ई०तक लिखेहुयेहैं सालिशी हुक्महैं जोसालिमे और यशवन्तरावके नाम उसअसबाबकी क़ीमतदेनेकेवास्ते जारीकिये गयेथेजिन का मोल लियाजाना महाराजा गायकवार के लिये बयान कियागयाहै और उनके सालिशीहोने कासबूत दामोदरपन्थ के वचनके अनुसार यहहै कि उन्हीवस्तुओं और सौदागरोंके

नामका कुछविस्तार नहींहै जिससे वह मोखलियागया नम्बर (क) सेलेकर (द) तकऔर नम्बर (घ) में यह इखतिलाफ है कि पहिले कहे गये झक्कोंमेंसे हरएकआदमी पानेवालेकी रसीद है और (घ) में नहीं है इससेयह प्रकट हुवा कि कागज (घ) केवलबलिहाज मतलबके है साजिशीनहींहै किन्तुवहइस प्रयोजन से बनाया गया है कि जिसमनुष्य को रुपया दिया गया था उसकानाम जाहिरनहो और उससेदामोदर पन्थकेइस बयानकी तसदीकखयाल की जातीहै कि हीरेजवाहिरातके हिसाबमें जमानहींकिये गये क्योंकिमहाराजा गायकवारने यहकहाथा कि वहदवाके लियेहैं और इसमजमून कीकेवलएकयाददाश्त जवाहरखानेमें तय्यारकीगईथी जिसकेलिये महाराजा गायकवारने उससमय जबकि दामोदरपन्थनेनवीं नवम्बर को कर्नेलफियर साहबको विषदेने के उद्योगके उपरांत उसकोबुलाया महाराजा गायकवारने यहहिदायतकी थी कि वहनष्टकर दीजावे इसलिये दामोदरपन्थने नानाजी वतिलसे अलगकरने को कहा और उसने उसकोअलग कर दिया और यह रक़म स्वामीनारायण के नामलिख दीगई ॥

दफ़ा—५१अब हीरों के विषय में हेमचन्द की गवाही पर नजरडालनी बाक़ीहै इसगवाह ने नाकिस तौर से गवाही दीहै और उसकीगवाही परआमतौर से एतिबार नहीं हो सक्ताउसका यह मंशामालुम होताथाकि हीरोंकीखरीद के हरकिस्मके तअल्लुक़से इन्कार करेवहयह बातमानताहै कि वहहीरेकीदोपुड़ियां विनायकराव(महाराजा गायकवार के नौकरनानाजी वतिलकासाला) के पास—३१—अक्टूबरयापहिलीनवम्बर—सन्—१८७४—ई० को लेगया परन्तु वहकहता है कि वहपुड़ियां मुझकोलौटा दीगईं वह दामोदर पन्थयानानाजीवतिल या विनाकरावके हाथहीरोंके बेचनेसे इन्कार करताहै वहतसलीम करताहै कि ३ दिसम्बर सन्१८७४ई० को मैंने नानाजीवतिलकेपास सेदोहजाररुपयेऔर दूसरीतीसरी

जनवरी सन् १८७५ ई० को फिर दोहज़ार रुपये और उसके पास से पाये परन्तु वह वर्णन करता है कि यह रुपया झवेरी के लेन देन की निस्बत था झवेरियों का लेन देन शिवचन्द खुशहालचन्द के नाम से जो पूना के कोठी वाले हैं हिसाब किताब में लिखा जाता है और नानाजी वतिल ने इस कोठी से सातहज़ार रुपये का असबाब मोल लिया था और हेम चन्द की दूकान से इतने रुपये की झवेरियां लेकर भेजी थीं यह खूब साबित नहीं होता कि ३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को और २–३ जनवरी को जो दो २ हज़ार रुपये दिये गये वह झवेरियों की लेन देन की बाबत थे किन्तु निश्चय करके यह मालुम होता है कि वह रुपया हकीकात में हीरों के वास्ते दिया गया था जैसा कि नानाजी वतिल ने कहा है हेमचन्द इस बात को मानता है कि दोहज़ार रुपये जो २–३ जनवरी सन् १८७५ ई० को दिये गये थे वह देहादमेला को कारकुन के पास से आये थे जैसा कि नानाजी वतिल ने कहा है और रुपये के अदा करने की तारीख़ नानाजी वतिल के इस बयान के अनुसार है यह रुपया उस रकम का एकटुकड़ा जो झक्कनवम्बर (घ) लिखा झआ पहिली जनवरी सन् १८७५ ई० में दर्ज है और दोहज़ार रुपये ३–दिसम्बर सन् १८७४ ई० को दिये गये उसके विषय में नानाजी वतिल वर्णन करता है कि मैंने यह रुपया हेमचन्द को दिया था परंतु मैंने एक झवेरी और नकद रुपया एकहज़ार वापिस पाया और बाकी एकहज़ार रुपया उसके पास जमा किया गया और हेमचन्द तसलीम करता है कि मैंने व्यङ्कटेश के पुत्र विनायक राव और नानाजी वतिल के साले को एक झवेरी सातसौ पचास रुपये को ८ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को करदी थी और उस झवेरी पर एकसौ पचपन रुपये दस आने बेशी के लिये थे और चौरानवे रुपये छः आने विनायक राव को दिये गये थे जिसका कुल एकहज़ार रुपया झवा इससे यह बात साफ साफ प्रगट है कि इस मुआमिले को जिसमें नानाजी वतिल के पास

एक हजार रुपये जमारहे हीरों की कीमतसे कुछ सम्बन्धन था या यहकि नानावतिल ने इससे पहिले कि कुछ रुपया हीरों के मोल लेने के लिये उसको दिया गयाहो दर्जकर लियाहेमचन्द्र की किताबों से दामोदर पन्थ के उसबयाकी तसदीक में जो उसने हीरों के मोललिये जानेके विषय में कियाहैबज़ुत कममदद मिलतीहै उनमेंसे केवल एक किताब हमारे रूबरूपेश की गईहैउसकिताब में कुछबनावटकीगई हमइसविचार का कोईहेतुनहीं पातेकिपुलिस को सालिश करनेसे कुछ प्रयोजन था इस किताब में ७, और ८, नवम्बर सन् १८७४ ई०—में यहलिखा है कि नानाजीने दामोदरपन्थकेवास्तेछः हजारदो सौ सत्तररुपयेके हीरेमोललिये और हेमचन्द्रइस बातकोमानता है कियहरकममेरेहीहाथ की लिखीहुईहै परन्तुवह वर्णनकरता है कि गजानन्द्पुलिसकेइन्स्पेक्टर ने जबरदस्तीसे मैनेयह रक़मउसदिन संध्याको जबकिमैंने मिस्टरसुटर साहबके रूबरू पहिले अपना बयान किया(ई-फरवरी सन्-१८७५ई०)लिखीथी पूर्व्वमें हमवर्णन करचुकेहैं किहमको निश्चयनहीं है कि गजानन्दवतिलनेइस भांतिकोजबरदस्ती कीहोक्योंकि यहरक़में उसबयान से कुछ प्रतिकूलहै जो हेमचन्द्र ने मिस्टरसुटर साहबके सम्मुख किया और यहबातभी विचारमें नहीं आतीकि गजानन्द जो अति चतुर और बुद्धिमान है उसनेइस प्रकारकी खिलाफ़ बयानी कीहो परन्तुहम इस मूलपर कियह किताब बदलाई गई है कुछनिश्चयनहीं करनाचाहते हेमचन्द्र कीगवाही काकेवल एकभाग जिसको इससुक़ह्मे से बड़ासम्बन्ध है वह यहहैजो महाराजासाहबके महलको हीरोंकेलेजाने और तीनहजार रुपयेके देनेसेसम्बन्धित है ॥

दफ़ा ५२—हीरोंके मोललेनेकेविषयमें हमयहनतीजानिकालतेहैंकि हमारेविचारमें इसबातके निश्चयकरनेका उत्तम हेतुहैकिदामोदरपंथनेअक्टूबर और नवम्बरसन् १८७४ई०

में महाराजा गायकवार की आज्ञा से नानाजी वतिल के पाससेहीरे मंगाये और उनकोयशवन्तरावको देदिया और नानाजीनेउनहीरोंको हेमचन्द्रसे मोललिया और महाराजासाहबके महलके हिसाबकिताब और हेमचन्द्र के हिसाब किताबमें इसभांति कीसाजिसकी गईहैजिससेहीरोंकामोल लियाजाना छिपजावे बड़ौदानगर केनिवासी हिन्दुस्तानियों केवासियोंके सहशहीरेकी मोहलकतासीर परनिश्चय करते हैंचाहो प्रगटमें इसप्रकारके निश्चय मानने कीकोई माकूल वजहनहीं मालूमहोती पसअबयह बातगौर करने की पैदा होतीहै किदामादरपंथने महाराजा गायकवारके जवाहर खानेसे हीरेक्यों नलियेजहां हमेशाहीरे मौजूद रहतेथेइस प्रश्नका केवलयही उत्तर होसक्ताहैकिनयेहीरोंके मोललिये जानेका छिपाना उससेकिवह एकऐसेजवाहरखाने सेलिये जावेंजिसका रक्षकइस सुआमिजे को अपने हिसाब किताब में जाहिर करना अपना फर्ज़ समझता जियादह तरसुगम खयाल कियागया ॥

दफ़ा ५३—दामोदरपंथ उसदिन संध्याकोजबकिमहाराजागायकवार कैदकियेगये (१४जनवरी सन्१८७५ ई०)पकड़ागयाथाऔरदोदिन पर्य्यन्तमहाराजाकेमहलमेंसेनापती केदफ्तरमें कैदरहा और फिर रेजीडन्सीको भेजदिया गया जहांवह सोलहदिन तकअंगरेजी सिपाहियोंकेपहिरेमें और फिरपुलिसके पहिरेमें रहावह उससमय महलमें उपस्थित थाजबकि महाराजा गायकवारकी गिरिफ्तारीके उपरान्त उसके कागजों केसिरपर मुहरकीजातीथी वह वर्णनकरता हैकिजबकि मैं अंगरेजी सिपाहियोंके पहिरेसे तंग आगया और यह बिचारभी मेरेमनमें आयाकि मैंकिसीभांतिसे कैद सेछूट नहींसक्ता इसहेतुसे मिस्टररिचीसाहबऐसिस्टरेजीडण्ट के सम्मुख२८और३० जनवरी कोइकरार करलियाऔर इसइकराकी तसदीक सरल्यूइस पीजीसाहब केरूबरू२फर-

वगीसन् १८७५ ई० कोकी गईइसइकरार कावही मजमूनहै जोउसने इसकमीशनके रूबरूबयान किया और यह इकरार उसनेउस समय कियाथा जब कि सरल्यूइस पीली साहब ने उससे मुआफिकी प्रतिज्ञाकरली ॥

दफा ५४—उस के इकरारके उपरान्त उसका वहसंदूक जिसमेंमहाराजा गायकवार के निजके कागज बन्द थे उसके सामने खोलागया और कईकागज उसकेभीतरसे पायेगये वहवर्णनकरता है कि यद्यपि अपनी गिरिफ्तारीसे पहिले मुझको सालिमकी जुबानी वह बातें मालूम होजातीथी जो रावजी और २ मनुष्योंके बयानको वह सुना करता था तथापितबतकजबकिमैंने अपना इकरार मिस्टर रिची साहबके रूबरूकिया हरगिज रावजी और नरसूके इकरारोंकाकोई व्यौरे वारहाल मालुमनहींहुवा इसयहबात नहीं कहसक्ते किइस बयानको ठीक माननाचाहिये परन्तुउसके प्रतिकूल कोईगवाहीपेशनहींकी गईहैप्रगट होकि दामोदरपंथकरनैल फियरसाहब के जमानेमें कभी रेजीडन्सी को नहींगया और वह महाराजा गायकवारके साथ एकहीबेर सरल्यूइस पीली साहब केरेजीडण्ट नियत होने केउपरान्त गयाउसने रावजीको कभीमहलमें नहींदेखा परन्तु वह बयान करताहै किसालिमने महाराजा गायकवारसे मेरे सामने उससमय जबकि करनैलफियर साहबको सितम्बरके महीनेमें फोड़ाथा महाराजा गायकवारसे यहबात कहीकिमैनेरावजी कोउस प्लास्टर मेंजोफोड़े परलगाय जाताहैसंखिये केमिलाने परतय्यार कियाथा और इससे फोड़ेमें जलनपैदा हुई औरकरनैलफियरसाहबने इससबबसे प्लास्टरको अलगकरदियादामोदरपन्थने इसगुफ्तगूका जिक्रकियाहैजोउसकेवचनकेअनुसार महाराजा गायकवारके साथकई दफे ९—नवम्बरसे लेकर उसकोगिरिफ्तारीके जमानेतक हुईथी यदि यहवार्त्ता वास्तवमेंहुई और उनके विषयमें उसका बयान ठीकहै तोउ-

सेमालूमहोताहै कि महाराजागायवारको वह खबरमालू-
मथी जो ९—नवम्बरको करनैलफियरसाहब के विषदियेजाने
का उद्योग प्रसिद्धहोगयाथा ९—नवम्बरकी वार्त्तामेंएकऐसी
बातहै जिसकीतसदीक खारिजीगवाहीसे होतीहै और उस
से इनमुलाकातों के विषय में दामोदरपन्थके बयानकी मदद
होती है जबकि महाराजा गायकवार ९—नवम्बर के प्रभात
को रेजीडन्सीसे लौट आते थे तो उन्होंने दामोदरपन्थसे
कहा कि सालिमआज प्रभातको रावजी के मकान पर इस
प्रयोजन के लिये दौड़ा गया कि जो विष की पुड़िया बाकी
रहीहों उनकोलेकर अग्निमेंजलादे अकेलेजुग्गाने जो बड़ौदे
के सदरबाजारकी छावनीकी सफाईका मोहतमिमथा जहां
रावजीरहाकरताथा सालिमको सदरबाजारकीओर नगरसे
जाताछवा९-नवम्बरकेसुबहको और पांचमिनटकेउपरान्तनगर
केतरफसे आतेछये देखा और मुहम्मदअलीबख्स रेजीडण्टी
के चपरासीनेसालिमसे रेजीडण्टीके मुकामपर इससेपहिले
किकरनैलफियरसाहब हवाखानेसेलौटआवें कुछवार्त्ताकीऔर
जबवह सदरबाजार से डाक्टरसीवर्डसाहबके मकानसे विदा
होकर जहांवह करनैलफियरसाहब की चिट्ठीलेकरगयाथा
रेजीडण्टीको लौटआताथा तो उसनेमार्गमें सालिमको श-
हरकीतरफ आतेछयेदेखा अबअकेलेजुग्गा और मुहम्मदअली
बख्शकी इस गवाहीसे चाहे यहबात साफ २ साबित नहीं
होती कि सालिम ९—तारीखके प्रभातको रावजीके मकानको
गया परन्तु उससे मालूम होताहै कि वह अवश्य गयाहोगा
और जो सालिममहाराजा गायकवार के पास इससेपहिले
किमहराजासाहबउसदिन भोरकोनियमके अनुसाररेजीडण्ट
साहबके मिलनेको आवें वापिस पहुंचगयाहोगा इससबब से
वहबात जो महाराजागायकवारने दामोदरपन्थसे बयानकी
अर्थात् यह कि सालिम रावजीके मकानको इस प्रयोजन से
गयाथा कि जोकुछ चूरह बचाहो उसकोजलादे अवश्यठीक

मालूम होता है और यह बात अतिकठिन समझमें आती है कि जो बयान महाराजागायकवार ने दामोदरपन्थसे किया था उसको अपनेमनसे बनाया हो ॥

दफ़ा ५५—दामोदरपन्थ यहभी वर्णनकरता है कि महाराजागायकवारने मेरे साम्हने बराबर यशवन्तराव और सालिमको यहताकीदकी कि वह विषदेनेके विषयका कुछजिक्रनकरे यहमनुष्य इसतहकीक़ातमें सुहई या सुहआअलेह की ओरसे गवाहीकी तौरपर बुलाये नहीं गयेहैं दामोदरपन्थनेउसरीतिकोवर्णनकियाहै जिसकेअनुसार उसके खानगी सरिश्तेमें हिसाबरहताथा इसजगहपर केवलइसबातका जिक्र करना काफीहोगाकि सबसेपहिला कागज वहयाददाश्त है जिसमेंरुपयेकेदेनेकेबाबतआज्ञाहैऔरजिसपरपानेवालेकीरसीदहै इसयाददाश्तसे हरदिन एकरोज़नामचा और रोजनामचेसेमाहवारीहिसाब और माहवारी हिसाबसेवर्षकाहिसाब तय्यार किया जाता है याददाश्त और रोजनामचा सुगमता पूर्वकनष्ट होसक्ते हैं परन्तु जबकि एक दफ़ा मासिक हिसाब तय्यार होजावे और वार्षिक हिसाबमें संयुक्त करदियाजावे तो किसी खास रक़म के पता मिटाने में बहुत सी दिक्कत हो जाती है और यही कारण है जो दामोदरपंथने प्रश्नोत्तर के समय उनसम्पूर्ण कागजों के नष्टन करने के विषय में बयान की जो किसीतरह परउनसुआमिलों से सम्बन्धित हैं जोइस तहकीकात के सबबसे छुये हैं चार रोजनामचों में रक़मों के मिटानेका इरादाकिया गयाथा दामोदर पंथ कहता है कि मैंनेबलवन्तराव क्लार्कसे कहाकि जिस जगह पर सालिम का नामलिखाहै वहांरोशनाईडालकरमिटादो बलवन्तराव रक़मों केमिटानेसे इन्कार करताहै यहरक़में बड़ीबेतमीज़ी से मिटाईगईं चाहेउनका कुछचिह्न भी बाक़ीन रहा दामोदर पंथबयान करताहै कि मैंनेइन रक़मों को इन सुआमिलों में सालिमका नामछिपाने और महाराजागायकवार कोबचाने

के लिये मिटवाया था और यह काम मैंने गायकवार की आज्ञासे कियाथाव्ह अब तसलीमकरताहै कि यहबात अति अनुचितथी क्योंकि रोशनाईके दाग़जल्दी दीखतेहैं यहकाग़ज़दामोदर पंथ के उनकाग़ज़ों के हिस्से थे जो महाराजा गायकवार की गिरिफ्तारी के दिनमहल में मोहरबन्दकिये गये थे और गजानन्द और मिस्टरसूटरसाहब की गवाहीसे मालूम होताहै कि जबयहकागज़ दामोदरपन्थके साम्हनेलेगये तो वह उसी दशामें थे जैसेकि वह हमारेरूबरू पेशकिये गयेअन्तमें दामोदरपन्थ वर्णनकरताहै कि नूरुद्दीनकोसंखिये केलिये कुछरुपया नहींदिया गयाक्योंकि उस संखियेकेदेनेके बदले उससेयह प्रतिज्ञाकी गईथीकि महाराजा गायकवार के शफाखानेमें उसको कुछकामदियाजावेगा नूरुद्दीनगिरिफ्तार कियागया है परन्तु उसकी गवाही नहींलीगई॥

दफ़ा ५६—इस मुक़द्दमे में बाकी गवाही अमीना आया और उनमनुष्यों कीहै जोउससे सम्बन्धरखते हैं पहिले आया फ्रियरसाहब कोमेमसाहिबा के पास नौकर रही और मार्च सन् १८७४ ई० में उनके साथ बम्बई कागई इसके अनन्तर वहांएकमहीने बम्बईमेंरही और बड़ौदाकेलौट आने के उपरान्तमिस्टरबोवी साहबकी मेमसाहिबा के पासजो उनदिनों मेंबड़ौदे में रहतेथेनौकर होगईवह कहती है कि मैंने तीन दफ़ा महाराजा गायकवार से उनके महल में मुलाकात की और वहांसंध्याका समयथा जबकि पहिली मुलाकात उसने रेजीडन्सी के चोबदारफ़ौज के साथ उस समय की थीजबकि सन् १८७३ ई० की कमीशन उठने को थी और वह बयानकरती है किमैं फ़ौजके कहने सुननेसे गईथी अमीना और फ़ौजकोसाथिमने गायकवारके सम्मुखपेशकिया जो अकस्मातउनकोमार्ग में मिलगया था गायकवार ने अमीनासे पूछा कियायातू ने मिस्टरफियरसाहब की मेमसाहिबा कीजबानी कमीशनके विषयमेंकोईजिक्रसुनाहै और उसको यहहिदायत

कीकि जो कुछ मेमसाहिबा ने जिक्र कियाहोतो सालिमऔर यशवन्तरावके द्वाराउसकी इत्तिला भेजदीयद्यपिफ़ैज़ूइसबात से इन्कारकरता है कि उसने अमीना आया को महाराजा गायकवार के पासजानेके लियेतय्यारकिया तथापिवहबयान करताहैकिमैं महाराजा गायकवार के पासउसके साथगया और कारभाई उसवक्त गाड़ीवान था मैंनेवह वार्त्तासुनीजो आया और महाराजागायकवार के बीचमेंहुई गायकवार ने आयासे कहा कि वह मिस्टरफियरसाहब की मेमसाहिबा से उनकीसिफारिश करेंक्योंकि बहुतसे मनुष्यरेजीडण्टसाहब से उनकी निस्बत अरज़कर रहेथेआया ने उत्तरदियाकि मैं फियर साहब की मेमसाहिबा से कुछ अरज़ नहीं कर सक्ती कारभाई कहताहै किमैंअमीनाआया और फ़ैज़ूको इसदफ़े गाड़ीमें सवारकराके महाराजासाहबके महलको ले गया॥

दफ़ा ५७—आया वर्णनकरतीहै कि मैनेजून सन् १८७३ई० मेंदूसरी मुलाकात महाराजा गायकवार के नौसारीसेलौट-आनेके उपरान्त सालिम और करीमकेकहनेसे कीथी उसके साथ करीमगयाथा सालिम मार्गमें उनकेसाथहोलिया और आया और करीमको गायकवारकेपासलेगया महाराजा गा-यकवारनेआयासे पूंछा किमिस्टरबोवी साहबकी मेमसाहि-बानेहमारेविवाहके लियेजो नौसारी मेंहुआकुछतुमसे जिक्र कियाहैअमीनानेउत्तरदियाकि मैंनेकुछनहींसुना परन्तुजब मिस्टरफियरसाहबकी मेमसाहिबाइङ्गलिस्तानसेलौटआवेंगी तोआपकेलियेकुछबेहतरी होगीक्योंकि यहमेमसाहिबाऔर करनैलफियरसाहब आपसे अतिप्रसन्न हैं फिरमहाराजागा-यकवारनेकरीमसे कहाकितुममेरी निस्बतमिस्टर बोबीसाहब से कुछखैरके बचनकहो जबअमीना और करीमविदाहोने को हुयेतो महाराजागायकवारने सालिमसेकहाकि तुमउनको कुछदेदो तबसालिम ने करीम से कहाकितुम कल यशवन्त रावकेमकान को आना तथाच दूसरे दिन संध्या को करीम

अमीनाके पासआया और कहा कि मेरे पास दोसौ रुपयेहैं जिसमेंआधेरुपये उसनेदूसरे दिनसुबहको अमीना आयाको देदियेअमीनाने विचारकियाकि यहदूनआमउसीविवाहका है जोनैसरीमेंहुवा जोबयानआयानेमहाराजाकी मुलाकात और शुफ्तगूआममग्याकी निस्बतकियाहैउसकी तसदीककरीमनेकीहै परन्तु वहबयानकरताहैकि महाराजागायकवार ने अमीनासेपूछाकि हमसेरेजीडण्टसाहब बिवाहके करने से (जिससेकि महाराजासाहबका प्रयोजनलक्ष्मीबाईकेविवाहसे था)अप्रसन्नतोनहीहैंवहवर्णनकरताहैकि मैंदूसरेदिन यशवन्तरावके मकानकोगयाऔर वहांसालिमनेमुझकोदोसौरुपये नैसारीकेबिवाहके पारितोषकेदियेजिसमें आधेमेरेलिये और आधे अमीनाके लियेथे तथाचमैंने सौरुपये अमीनाकोदेदिये इसगवाहने आयाके इसबयानसेकि उसनेअमीनासेमहाराजा साहबके पासजानेकी दरखास्तकीथी इखतिलाफकियाहैऔर वहबयान करताहै कि वह मुझको लेगई इसदफेपर सन्दल नामेगाड़ीवानथा और उसनेइसबातकोसाबितकियाहैकिवह अमीनाऔर करीमको गाड़ीमें सवारकरकेमहलकोलेगया॥

दफ़ा५८—आयावर्णन करतीहैकितीसरीमुलकात रमजान मेंहुई और उसकेपतिने मुलकातकी तारीखउसमहीनेकीपन्द्रहवींया अट्ठारहवींबतलाईहै सन् १८७४ ई० में रमज़ानबारहवीं अक्टूबर सन्१८७४ ई० को शुरूहुवाथा इससेअब्दुल्लाके बयानके अनुसार यहमुलाकात सत्ताईसवींया तीसवींअक्टूबर कोहुईहोगी अमीनाकहतीहै किसालिममेरेपास इसमज़मूनका पैगामलायाकि महाराजागायकवार तुमसे मिलना चाहतेहैं तथाचमैं और मेराखिदमतगारलड़काछुट्टूएकगाड़ी में बैठकर जोमेरे पतिनेमंगादी थी महाराजासाहबके पास गई और मार्गमें मैंने सालिम को बुलाया और उसके साथ महाराजागायकवार के रूबरूगई और महाराजा साहब के साथमुझसे नीचेलिखीहुई वार्त्ताहुई॥

पहिले महाराजासाहब ने मुझसेपूछा कि क्यामेमसाहबा ने बच्चे के लिये कुछ जिक्र कियाहै मेमसाहबासे मिस्टरबोवी साहिबकीमेमसाहिबासे प्रयोजनहै और लड़केसे मुराद उस लड़केसेथी जोमहाराजासाहबकेयहांउत्पन्नहुवाथामैंने कहा मेमसाहबानेकुछनहींकहा और मुझको कुछहालमालूमनहीं इसकेअनन्तर मैंने महाराजासाहब सेकहाकिजबमेमसाहिबा आपकेपास लौटआयेंगी तोआपकेलिये कोईबेहतरीकीबात-होगी मेमसाहिबा और करनैलफियर साहब दोनोंखैरखाह हैं पस जोसाहब कहैं तुमको उसपर अमलकरना चाहियेऔर कुछ भयमानमतहो फिर सालिमने कहा कि कोई जादू भी काम देसक्ताहै यानहीं सो सालिमने सबसे पहिले जादू का जिक्रकिया अर्थात् सालिमने कहा किजो कोई जादू किया जावे तो क्यासाहबका मन फिरजावेगा परन्तु उसकाठीकर मतलब मेरीसमझमें नहींआया फिर मैनेसालिमसे और महा-राजासाहबसेभी कहाकि आपसाहबकेलिये कोई जादूनको-जियेक्योंकि साहबको उसका कुछ असरनहोगा और इसका मैने यहसबबयान किया किसाहब लोगकेवल ईश्वरको मानतेहैं फिर सालिमने मुझसेकहा कि कोई वस्तु साहबको खिलादी जावे तोतुम्हारे विचारसे उसका क्या असरहोगा उसकेसुनने से मुझको अत्यन्त भयहुवा क्योंकि उससेपहिले मैनेदोमनुष्यों की जुबानी कुछजिक्र सुनाथा फिर मैने कहा कि महाराजा साहब अबआपसे बिदाहोतीहूं मैंउससमय महाराजा साहब को यहां नहींदेखती जो वहपहिले मौजूदहोते तो वहमेरे बयानको तसदीक करतेफिर सालिमने मुझसेकहा किजोकुछ महाराजा साहबकहैं तुम उसको कानलगाकर सुनो जोतुम उनकाकहना करोगी तो तुम्हारीशेष आयुकेलिये तुमकोनि-र्वाहकाद्वारा खुलजावेगा फिरसालिमनेमुझसे कहाकितुम्हारे पतिकीभी नौकरी होजावेगीऔर तुमको आगेनौकरीकरनेकी कुछ आवश्यकतान रहेगी इसके उत्तरमें सालिमसेमैने कहा

कि मैं आजतक उपवासनहीं करतीरही हूं मैने अपनाजन्म अंगरेजी नौकरीमें बिताया है जब मैंमहाराजा साहबसे बिदा होनेकोथी तो मैने महाराजासाहब से कहा कि जो कोई मनुष्यऐसे रेजीडण्ट साहबपर जादू करने के लिये कहे तो उस पर आप मेहरबानी न कीजिये क्योंकि जो साहब को कोई दुःखपहुंचेगा तो आप तबाह होजावेंगे तब मुजकोयह खयाल आयाकि महाराजा साहब इसबातपर क्रोधितहोगये क्योंकि उन्होंने सालिमसे कहा कि तुम इसआयाकोलेजाओ तथाचमैं और सालिम सीढ़ी परसे उत्तरकर वहां गये जहां गाड़ी ठहरी हुई थी"यह बात स्मर्ण होगी कि लक्ष्मी बाई के सोलवीं अक्टूबर सन् १८७४ ई० को पुत्र उत्पन्न हुवा था जब सालिम दूसरीदफा रेजीडण्टीको आया उसने अमीनासे कहा कि मैंनेपचासरुपये तुम्हारेबिस्तरेके नीचेरखदियेहैं तथा चवह रुपये उसने वहांपाये छुट्टी ने आयाके इसबयानकी कि वह इसदफे उसकेसाथ महलको गई मददकी है और इसी-तरह दाऊद गाड़ीवान ने भी उसकी तसदीक की है जो मुलाकात की तारीख पिछली दिवाली से दो या चारदिन पहिले बयान करताहै सन् १८७४ई० की दिवाली ९-नवम्बर सन् १८७४ ई० को हुई थी॥

दफ़ा ५९—अब्दुल्ला अमीनाकापति वर्णनकरताहै कि सालिम रेजीडण्टीके अहातेमें फौजकेमकानपर पानीपीनेकोजाया करताथा मुझसेमेरी स्त्रीने पहिली और दूसरी मुलाकात का जिक्रकिया और मैं इसबातको जानताथा कि उसको सौ रुपयेमिलेथे औरअब्दुल्लानेइसगुफ्तगूकामतलबबयानकिया है जो गायकवार और अमीनाकी तीसरी मुलाकातमें हुईथी और जिसकाजिक्र अमीनाने उससे कियाथा अब्दुल्ला यहबात जानताथा कि उसकीस्त्री को तीसरी मुलाकातके पीछे पचास रुपयेमिलेथे जिनदिनोंमें अमीना बम्बईमें औरवह बड़ौदेमेंथा

तो एकचिट्ठी अमीनाकेपाससे उसकेपास आईथी और इसमें महाराजागायकवारके नाम एकखतथा॥

दफ़ा ई०—कईचिट्ठियां जो अमीना और अब्दुल्लामें आईं गईं जबकि वह सन् १८७४ ई० में अलग २ शहरोंमें रहतेथे अदालतके रूबरू पेशकीगईं इनसब चिट्ठियोंमें सालिम और यशवन्तराव या उन मुआमिलों का जिक्र है जो बड़ौदे की रियासतसे सम्बन्धितथीं चिट्ठी अक्षर [घ] लिखीजुई २९ मार्च सन् १८७४ ई०में जो अमीनाकी ओरसे अब्दुल्लाके नामलिखी गईहै आयासे पूछागयाहै कि उसकेपास वह कागजपहुंचा वा नहीं जो उसकी पहिली चिट्ठीमें लिपटा था अमीना और अब्दुल्ला और अब्दुल रहमान उर्फ़रहीम साहब जिन्हों ने यह चिट्ठियां अमीना के वास्ते लिखी थीं बयान करते हैं कि यहचिट्ठी महाराजा गायकवार के नाम थी अब्दुल्ला कहता है कि मैंने यह चिट्ठी अमीना को बम्बईमें महा बलेश्वर को जाते लौटादी और इस विषय में संदेह करने का कोई हेतु नहीं है कि अमीनाने इस प्रकारकी चिट्ठी लिखीथी जिसका मतलबअब्दुल रहमानने अपनीयादसे यहवर्णन कियाहै कि इसमेंमहाराजागायकवार से रुपये मांगे और यह लिखा था कि बम्बईके गवर्नर साहब के मकानपर एक दावत हुई और वहां अमीना ने कुछ हाल तहकीक किया और अन्तपर यह शब्दथे कि तुम भयमान मतिहो यह चिट्ठी पेश नहीं की गई परन्तु यहबात साफप्रगटहै कि यहचिट्ठी कदाचित् महाराजा साहब को नहीं दीगई प्रगट होकि करनैलफियरसाहबने वह बयानकियाहै कि जबकरनैल साहबमार्च सन् १८७४ ई० में बम्बई में थे तो वहसाहब गवर्नरबम्बई के साथ खानाखाने के लियेगये थे॥

दफ़ाई१—हमनिश्चय करतेहैंकि अमीनातीनबेर महाराजा गायकवार की मुलाकात के लियेगई जैसा कि पहिले बयान

हुआ और इसप्रकार की वार्त्ता जैसीकि उसने बयान की है इसकी और महाराजा साहबकी हुई ॥

दफ़ा ६२—जबमुद्दईकी ओरसेबयान खत्महोचुका तो महाराजागायकवार के वकीलने उनकी ओर से एक लिखा हुवा जवाबदावा पेशकिया नतो महाराजा गायकवार की ओरसे गवाहबुलायेगये और न कमीशनके रूबरूउनसेकोई प्रश्नपूछा गया तथाच उनकेबयानका मुख्याशय नीचेलिखा है ॥

मुझकोकरनैलफियरसाहबसे कभीखतःवैरनथा औरनअबहै यहबात निस्संदेह सचहैकि मुझको और मेरेवज़ीरों कोयह निश्चयथा किजोरीति करनैलफियरसाहबने इख़्तियारकीथी उस से यहबात असम्भावित थी कि जो प्रबन्धमैंने उसहिदायत के अनुसारजो सन् १८७३ ई० की कमीशन की रिपोर्ट पर जो २५-जूलाई सन् १८७४ ई० के खरीतेके द्वारा मेरे पास भेजी गईथी तजवीजकिये थे और जिनकेपूरा करने में कोशिश कर रहाथा इनकी खातिरख्वाह तकमीलहो इस विचारसे और दादा भाई नौरोजी और बालामंगेश वैगल और हुरमुज़जी और शेरोबिदया और काज़ीशहाबुद्दीन और अपनेवज़ीरोंसे बड़ीदेर तकसम्मत करके मैंने २—नवम्बर सन् १८७३ ई०को खरीताकरनैल फियरसाहब के द्वारा श्रीमान् वैसरायकेशरण में भिजवाया और उनकेकहने सुननेपर मुझको निश्चय था कि जब असलहकीकत श्रीयुतवैसराय को मालूम होगी तो मेरी अरज़पर कृपादृष्टि होगीमेरेसम्पूर्ण वज़ीरों को भी यहनिश्चय था और जो सख़्तम्बोइ गवर्न्मेण्ट बम्बई ने रेज़ीडण्ट साहब कोकीथी उसके जाननेसे हमारा यहनिश्चय दृढ़होगया तथाच २५ नवम्बर सन् १८७४ ई० को करनैल फियर साहब बड़ौदेसे बदलाये गये इस से प्रगट होता है कि हमारी यह राय कुछ गलत नथीप्रसनतो कोईनिज दैहिकन कोईदेशका सबब ऐसा था जो मुझको इस अपराध के करनेपरतय्यार करता जिसका

इलज़ाममेरे ऊपरलगाया गया है और मैं सौगन्द खाकर यह बात वर्णनकरता हूं कि मैंने कभी न तो स्वतः और न किसी अपनेएजण्ट केद्वारा इसप्रकार कीहिदायत की और मैं बयान करताहूं किइसविषयमें अमीनाआयाऔररावजी और नरसू और दामोदरपंथकीसम्पूर्ण गवाही बिल्कुल गलत है मैनेरेजीडन्सीके किसीनौकर कोरेजीडण्टके जासूसकाकामदेने या जो कुछ रेजीडण्टीमें होताथा उसकी सुनको इत्तिलादेने की कभी हिदायत नहीं की औरन मैने इनको किसी प्रयोजनके लियेरुपया दियाऔर नरुपया दिलवाया मैं इनदामोंका कुछ जिक्र नहीं करताजोकिसीउत्सवयातेवहारोंमें जैसाकिविवाह आदिमें शायद रेजीडण्टीके नौकरों को दिये गये हों चाहो छोटे२ सुआमिलोंकीजोरेजीडण्टी औरमेरेमहलमेंहोतेहैंदोनोंतरफोंके मनुष्योंको मालूमहोतेहोंपरन्तु मैने स्वतःइसप्रयोजन केलिये इननौकरों सेवार्त्ता नहींकी औरनमैं इसबातको जानताहूं कि इस प्रयोजन केलिये कुछ रुपया दिया गयाहै औरन मैनेइस प्रकारके प्रबन्धकी आज्ञादी जिससे रेजी डन्सी कीखबरे सुनको मिलें ॥

दफ़ा ६३—अबहम उससब गवाही काजो इस मुक़द्दमे के समझनेके लिये आवश्यकथी संक्षेपमें वर्णन कर चुके गवाही केबाकी हिस्सोंका जिक्र उस रायमें जो हम आगे को बयान करेंगे कियाजावेगा ॥

दफ़ा ६४—हमअपना निश्चय इसबात परबयान करचुकेहैंकि करनैलफियरसाहबके ग्वर्नतके प्यालेमें ९ नवम्बर सन् १८७४ई० कोविषमिलायागया औरहमको इसविषयमें कुछसंदेह नहीं हैकियह विष करनैल फियरसाहबके मारडालने कीइच्छा से मिलायागया हमारीरायमें इसयकीनकेवास्तेकिइससेपहिले सितम्बरमहीनेकेअखीरहिस्से और९ नवम्बरकेबीचमेंकरनैलफियरसाहबकोविषदेनेका उद्योगकियागया अतिउत्तम प्रमाण

है तथाच कोई दफ़ा रावजीने उससमय रेजीडण्ट साहबको विष देनेका उद्योग किया जबकि उसनेतीनदफे मिलेहुये चूरोंको मिलाया और जोउसको पूरीखुराक संखियाके देनेमेंभय नहोता तो अवश्यहै कि करनैल फियरसाहब सख्त बीमार होते चाहो उनके प्राण जाते न रहते॥

दफ़ा ६५–हमअपनादूसविषयमेंभीनिश्चयप्रगटकरचुकेहैं कि रावजीने नरसू से मिलकर६–नवम्बरको शर्बतके प्याले मेंविष मिलाया था चाहे नरसू विषके मिलाते वक्त उपस्थित नथा हमखयालकरतेहैंकि रावजी और नरसूकेदूनउद्योगोंसे अपने स्वामीको दुखपहुंचानेको कोई अपना प्रयोजनथा किन्तु और मनुष्यों ने उनको बहकाया था और हम विश्वास मानतेहैं कि वहशख्स गायकवारथा जिसनेउनको सिखायाथा तथाच हमारे विचार में रावजी और नरसू और दामोदर पंथकी गवाहीसे इसकासुबूतहोताहै जोमिलेहुयेचूरे रावजीनेपहिले चूरेमिलायेथे उनकाएक हिस्साँखियाथा और जोचूरा ९–नवम्बरको मिलायागया उसमेंसंखिया और हीरेका चूरहथा॥

दफ़ा ६६–जिस हेतुसे महाराजा गायकवार करनैलफियर साहबको विषदेनेपर तय्यारहुये वहयहथा कि वह रेज़ीडण्ट साहबसे महाबैर रखतेथे और उनकीबदली चाहतेथे तथाच जो खरीता दादाभाई नौरोजी महाराजागायकवार के वज़ीर ने गायकवार की ओर से श्रीयुत वैस राय वीरेश के नाम १२–नवम्बर सन् १८७४ ई० को लिखा था उससे वह बैरखूब जाहिर होताहै जोगायकवारको करनैलफियर साहबसे था॥

अर्थात् महाराजा गायकवारने लिखा था कि मुजको यह खयाल आया कि जो रीति करनैलफियर साहब रेजीडण्ट ने हमेशासे मेरेलिये इख़्तियारकीहै उससेमें हुजूरको इत्तिलाहूं या नहीं और हुजूर के ग़ौरके लिये यह बात अरज करूंकि उस नाइत्तिफाक़ीकीसूरतमें जोहमारेमध्यमेंहै रेज़ीडण्टसाहब

के हाथसे आगेको वगैरकिसी साहबके अच्छे सलूककी क्यों करआशाकर सक्ताहूं फिरगायकवारने अपने और अपनेप्रबन्ध के विषयमें रेजीडण्ट साहबके दिलीबैरका जिक्रकियाहै और बहुदोदृष्टान्तइसबातके बयानकियेहैं कि पहिलेकरनैलफियर साहबके चालचलन के लिये एतिराज कियागया है और यह लिखाहै कि यहदोदृष्टान्त जोमैंने बयानकियेहैं उनसेउसपरेशानी और दुखका हालखूब समझमें नहीं आसक्ताहै जोमुझको हालमें रेजीडण्टसाहब के हाथसेपहुंचताहै अंगरेजी गवर्न्मेण्टकेनायबकी यह रीति मेरे लिये बड़ीचिन्ता और दुखका हेतुहुवाहै विशेषकरइससबबसे कि ऐसेसमयपर बहुतसे लोग औसरपाकर अपनेलाभके प्रयोजनसेमेरी निसबत गलत खबरें मशहूर करतेहैं और सदा मेरी प्रजाको मुझसे घचुता और आज्ञाके तोड़नेपर तय्यारकरतेहैं इसकायह परिणाम होगा कि इसवर्षकी आमदनी में बड़ी हानि होगी और मेरीप्रजा सदैवचिन्तित और दुखित रहेगी और इस बातका समझना कुछकठिननहींहै कि इनबातोंसे उसप्रबन्धमें बड़ा विघ्न होगा जोमैं करनाचाहताहूं जरूर उसकामकेमूल और अन्दाजेको खूब जानतेहैं जोमुझको करना पड़ताहै सोमैं अपनी ओरसे और जिन मनुष्योंको मैने उस कार्य्यके लिये नियत कियाहै उनकी ओरसेयह विनयकरताहूं कि यदि करनैलफियर साहबयहां इसीतौरसे अंगरेजी गवर्न्मेण्टके नायब रहेंगे और मेरे और मेरेअहलकारोंसे इसीभांतिसे ईर्षा और बैरकरेंगे तोमुझकोअपनीकोशिशोंके कामयाबीकीकभीआशानहोगी॥

मैं नेकनिय्यती और दियानतदारी के सिवाय और कोई बातकरनैलफियर साहबसे नहीं करताहूं परन्तु उनकी राय और तदबीर एक निराले तौर कीहै और उनकीराय और विचार बाज़े मुआमिलोंमें एतिदालकी हदसे बढ़गयेहैं और जोकुछउन्होंने अबतक कहाहै याकियाहै उसकीमददकरना बहअपने जिम्मेजरूरी समझतेहैं॥

दफ़ा ६७—इस चिट्ठीके उत्तरमें श्रीमान्वैसरायवीरेशने उन सबबोंके निस्बत जिनपर महाराजागायकवारने बड़ौदेके रेज़ीडेण्टकी बदलीचाही थी बहस करना इख्तियारलिया परन्तु जो सुआमिले जहूर में आयेथे उनपर खूब लिहाज़ करके और सिवाइसके गवर्न्मेण्टहिन्दके इस इरादेपर अमल करकेकि महाराजागायकवारको एकनवीन प्रबन्धकी कामयाबीके साथ करने के लियेहर प्रकारसे मौका दिया जावेगा ज़रूरममदूहने महाराजा गायकवारको इसइरादे सेइत्तिलादी कि हम सरल्यूइसपीली साहबके—सी—ऐस—आईको करनैलफियर साहबकी जगहपर बड़ौदे में एजण्ट नियतकरनाचाहतेहैं॥

दफ़ाई८—जोगवाही इससुकद्दमेके मिसलमेंसंयुक्त हैं उसका ज़ियादह तरहवालादेना और इसबातका साबित करनानिहायत फज़ूलहै कि महाराजा गायकवार करनैलफियरसाहब सेमहाशचुता रखतेथे यहसचहै कि जबकरनैलफियरसाहबने महाराजागायकवारसे दूसरीनवम्बरके खरीतेका ज़िक्रकिया तोमहाराजा साहबने यहबयान किया कि मिस्टरदादाभाई नौरोज़जीदीवानने उसखरीतेकोलिखाथाऔर यहीदीवानउस काज़वाबदेहैयहबातसाफ़ज़ाहिरहै कियहमहाराजगायकवार काबहानाथाऔरमहाराजासाहबको जो यहइजाज़त दीगई थी कि वह आपही अपना दीवानचुनलें उसकीयहमन्शाथी (जैसाकि करनैलफियरसाहबने ज़ुबानी महाराजागायकवार से वर्णनकियाथा)कि जोखतकिताबत वहगवर्न्मेण्टबम्बई या श्रीमान्वैसरायवीरेश के नामसे भेजेंउसके वहआपही ज़वाबदेहें सिवाइसके महाराजागायकवारने उसलिखेहुयेजवाब में जोउन्होने हमारेसम्मुख पेशकियाहै यहतसलीम कियाहै कि उन्होंने वह खरीताभिजवायाथा महाराजागायकवार के बिवाहमेंजो नौसारीमेंहुवाथा करनैलफियरसाहबका संयुक्त नहोनाचाहा वह गवर्न्मेण्टहिन्दकी आज्ञाके अनुसार या महाराजागायकवारको नागवारमालूम हुवाहोगा और जो

इससुआमिलेमें महाराजासाहबने आयासे वार्त्ताकीथी उस का मतलब सिवायइसके और कुछनहीं होसक्ताकि उनको विवाहकी बड़ीचिन्ताथी और उसमेंकुछ संदेहनहीं कि यह चिन्ता उनकोपुचके उत्पन्नहोनेके उपरान्त और भी अधिक होगई होगी॥

दफ़ा ६९—इसबात को तसीजकरना कठिनहै कि महाराजा साहब करनैलफियर साहब से देशके किसी कारण से अपनेमनमें बैर रखतेथे या निजडीलसे अपने मनमेंबैररखते थे इस तहक़ीक़ात में किसीतरहपर यहबात साबित नहीं हुईहै कि करनैलफियरसाहब ने महाराजागायकवार के विषयमें कोई जातीबदसलूकी जाहिरकी थी सोजहांतक हम को मालूम होसक्ता है करनैलफियरसाहब और महाराजा गायकवारमें देशके प्रबन्धमें मतान्तरके होनेसे वैरपैदाहुआ था परन्तु इसविषय मेंभी कोईबात नहीं होसक्तीहै कि जो ग्लानि महाराजासाहब करनैलफियरसाहबसेरखतेथे उसका देश और अपनेडीलके दोनोंहेतुओंसे बुनियादथी और हम उनकेइसबयानको ठीक नहीं मानसक्ते कि उनको करनैलफियरसाहबसे कोईजातीबैर नथा॥

दफ़ा१०—जिसरीतिसे महाराजागायकवारनेरावजी और नरसू और अमीना आयासेवार्त्ता शुरूकीथी उसकाअन्तको यहनतीजाहुवाकि रेजीडण्टसाहबको विषदेनेकेलियेसाजिश कीगई और यहबातउसगवाहीसे साबितहुईहै जिसकोहमने संक्षेपमें वर्णनकियाहै पहिले सन् १८७३ई० के अन्तमें और सन् १८७४ई० के प्रारम्भ में महाराजागायकवारका प्रयोजन प्रकटमें केवल इसबातकी इत्तिलाहासिलकरना था जोरेजीडण्टीमेंबड़ौदेकी रियासत के मुआमिले पेशहोवें महाराजा साहबहरएकबातकोबिल्कुलअपनेआधीनरखतेथेऔरसालिम और यशवन्तराव से एजण्टका कामलेतेथे और जो कुछहोताथा उसको अपने प्राईवेटसीक्रेटरी दामोदरपन्थ कोभी नहीं

बतलाते थे महाराजासाहबराव जो और नरसू से अलग अ-
मीनासेबातें करतेथेजब कि महाराजा गायकवार इसबात से
बड़े तंग हुये कि रेजीडण्ट साहबने लक्ष्मीबाई के साथ उनके
बिवाह को और उसके लड़केके पुत्रहोने को तसलीम करने से
इन्कारकरदिया तोउससमय उनकोबिषदेनेका खयालआया
और उन्होंने वैसाहीकिया महाराजाने रावजी और नरसू को
तरक्की और पारितोषकका लोभदिया तथाच उनको उसपा-
रितोषकका बड़ा भरोसा उनरकमों के सबब से होगया जो
उनकोदीगईं हालांकि जिस प्रयोजनकेलिये उनको रुपयादिया
गयाथावहअबत कजैसाकिवर्णनकियागयाकेवलयहीथा किजो
कुछरेजीडण्टीमेंहोताथा उसकीखबरदियाकरें सन् १८७३ ई०
के अन्तमें महाराजा गायकवारने रावजीको उसके विवाह के
समय पांचसौ रुपये दिये फिर मई या जून सन् १८७४ ई० में
तीनसौरुपये महाराजागायकवारके विवाहका पारितोषक
कुलआठसौ रुपयेमिले नरसू को तीनसौरुपयेनौसारीकेविवाह
के इनआमके और दोसौपचास रुपयेबिनाबयान करनेकिसी
खासकामके उसकोमिले कुलसाढ़े पांचसौरुपये हुये जो श्री-
महाराणी विक्टोरिया और बड़ौदेके रुपयेकी कीमतमें अन्तर
है उसको मुजरा देकर भी निस्संदेह यहरक़में उस थोड़े
मासिकके लिहाज़से बड़ीथीं जोरावजी और नरसू को रेजी-
डण्टीमें मिलतीथीं और यहोदशा उसडेढ़सौ रुपयेकीहै जो
आया को दोदफेमिले अर्थात् पहिले महाराजा गायकवार
के विवाहकेसमय और दूसरे उससमय जबकि उसको पचास
रुपये अपनी अन्त की मुलाकात के उपरान्त जो अक्टूबर
सन्१८७४ ई०में हुईथी मिलेथे और उनको किसी खास हाल
सेकुछ तअल्लुकनथाहमको इसरायकेजाहिरकरनेमें कुछशंका
नहींहैकि यह इनआम इननौकरोंकोइसबात बरमाइलकरने
केलिये दियेगयेथे किजोकुछ महाराजा गायकवार के मुआ-

मिलेरेजीडन्सीमेंहोंउसकीसदाखबरदेतेरहें और यहमामूली पारितोषकनथे जो महाराजासाहब खुशीपररेजीडन्सीकेनौकरोंको दियाकरतेथे सो जोरुपया इसप्रकारसेदियाजावेतो वह हमारेविचारसेरिश्वतहै परन्तुहमयहबातनहीं कहसक्ते कि महाराजागायकवार भी इसकोरिश्वत समझतेथे यानहीं ॥

दफ़ा ७१—परन्तुयह प्रश्नपूछा जासक्ता है कि महाराजा गायकवार को रावजी और नरसूसेयह आशाहोसक्तीथी कि वहएकऐसी रकमकेबदलेजिसको उसकामसेकुछ सम्बन्धनथा जिसकापूराहोना उनकेजिम्मे ठहरायामारडालें इसकायह उत्तरहोसक्ताहै कि महाराजा गायकवारने उसरुपयेकेद्वारा जोउन्होंने नरसू और रावजीकोदिया और अपनेपास उनके बुलाने और वस्तुओंके देनेसेउनको अपनेबसकर लिया और इसकार्य्यके सिद्धहोनेपर बड़ेपारितोषक के देनेकी प्रतिज्ञा कीथीरावजी वर्णनकरता हैकि मुजसे एक लाखरुपया और नरसूसेभी इतनेहीरुपयोंकेदेनेका वाइदा कियागयाथा नरसू कहताहै कि महाराजाने हमारे सम्पूर्ण परिवार सहितनिर्वाहके बन्दोबस्त करनेकाइरादा कियाथा सो उन गरीबआदमियोंके विचारमेंजो पहिलेही से महाराजा गायकवारके तअल्लुकमेंथे निसंदेहयह प्रतिज्ञा एक काफीउपदेश इसबात केलिये मालुम हुवाकिवह इस रीतिसे करनैलफियर साहब कोवधकरेंजिसका असरतुरन्तही नहोजावे और वहपकड़े नजावेंकिन्तु धीरे २ उनकोमारडालें ॥

दफ़ा ७२—जो रीति महाराजा गायकवार ने ९ नवम्बर सन्१८७४ ई० कोया उसके पीछे अखतियार कीथी उससे उनकोनिर्दोषता प्रतीतनहीं होतीदामोदरपंथकी गवाहीसे इस बात का निश्चय होता है कि महाराजा गायकवार को चाहोयहबात मालुम थी किविष देनेका उद्योग उस समय कियागयाथा जबकि वह उसदिन दसबजे भोरके करनैलफियर साहब की मुलाकातके लियेगयेथे और जो उसवक्त भी

उनको इसका हाल मालूम नथा तो उसदिन संध्या से पहिले उसको इत्तिला होगई होगी कर्नैल फियरसाहब और और गवाहोंने यहइज़हार दियाहै कि बड़ौदे की छावनी में विष देनेकी खबर सर्व्वत्र प्रसिद्ध थी॥

शहरछावनी से एकमील की दूरीपर नहीं है सालिम उस दिन रेजीडन्सी में आया था और छावनी में उससे कहा था कि वहकाम होगया यहबात समझमें नहीं आती कि सालिमने जो सदा महाराजा गायकवार के पास उपस्थित रहाकरता था अपने स्वामी को इसबातकी खबर नदी हो परन्तु हमदेखते हैं कि महाराजा गायकवार ९—नवम्बर सोमवार के उपरान्त पहिलेही दफे अगले वृहस्पतिवार को कर्नैल फियरसाहब के मुलाकात करनेके लिये गये और उससमय यहबयान कियाकि मैंने आपको बिष देनेके इरादे की खबर पिछले दिन अर्थात् ११ नवम्बर को सुनी थी और नीचे लिखी हुई चिट्ठी १४ नवम्बर को लिखी गई॥

जो मुलाकात परसों मेरी और आपकी हुई उसमें मुझको आपकी जुबानी इस बातका विस्तृत वृत्तान्त मालूम हुवा कि किसी बदमाश ने आपको बिष देनेका उद्योग कियाथा और मुझ को उसके सुननेसे अतिदुःख हुवा परन्तु ईश्वर की परिपूर्ण कृपा थी कि उस दुष्ट का उद्योग निष्फल हुवा यदि इस अपराधी के जुर्म साबित करानेमें मेरी सहायता की आवश्यक होतो मैं निश्चे देह मदद दूंगा यहचिट्ठी मैंने आपकी इत्तिला के लिये लिखीहै॥ लिखा हुवा १४ नवम्बर सन् १८७४ ई०॥

दफा ७३—अबयह प्रश्न अवश्यकरके पैदा होताहै कि जिस दशामें महाराजा गायकवार दूसरीनवम्बर सन् १८७४ ई० को एकखरीता भेजचुके तो फिरवह क्योंविषसे कर्नैलफियर साहब के मारडालनेका उपायकरते जो यह संकल्प कियाजावे कि इस खरीतेसे रेजीडण्टयों के बदलानेका प्रयोजनथा तो इस प्रश्नका केवल यही उत्तर होसक्ताहै कि खरीता भेजनेकी राय

मिस्टरदादाभाईनौरोजजीने दीहोगीजिन्होंने उसखरीते को सुरक्षित कियाथा और बिषदेनेके मन्सूबे को नजानते थे यह खयालकिया जासक्ता है किमहाराजागायकवारने इस राय कोशीघ्रही पसन्द करलिया होगा॥

दफ़ा ७४—यदि महाराजागायकवार इस अपराध में संयुक्त होतेतोउनकोयह तरीकाइखतियार करना उचित थाकि वहतुरन्त हीकरनैल फियरसाहबकेपासजाकर अपनी चिन्ताप्रगट करते और बारम्बारमिजाजकी तन्दुरुस्तीपूछते तेऔर उनसेयह आशाथी किवहएक चिट्ठीइस मज़मून की करनैलफियर साहबके नामभेजतेकि हमको इसहालसे बड़ा खेदहुवा और इसबात काबड़ा पश्चात्ताप हुवाकिमुख्यहमारे हीदेशमें एक बदमाशके सबबसे हमारीमेहमान्दारीमें फरक हुवा और यहबात उचितथी किजोनफरतउनकोकरनैलफिय रसाहब सेथी उसकेसबबसे उनकोइस बातकी दुगनी चिन्ता रहतीकि इससुआमिलेमें गवर्न्मेण्टअंगरेजीके साथशीघ्रही अपनीसफाई करलेंपरन्तुइसकेबदले महाराजानेआखेंछुपाई और बड़ी देरकेपीछे एक बाजाबिता चिट्ठी सरबसुहरके साथ लिखभेजी महाराजासाहबके इसबर्त्ताव के सिवा इसके और कोईसबब बिचारमें नहींआसक्ता है किआपही उन्होंने बिष देनेके लिये लोगोंको बहकायाथाहम लाचारीसे महाराजा साहबके इसबयान कोकि उनकोइससुआमिले कोकुछ खबर नथीनिश्चयमानने केयोग्य नहीं खयालकरतेहैं॥

दफ़ा७५—यहराय जोजाहिर कीगईहै किशायददामोदर पंथने करनैलफियर साहबके बिषदेने का उपाय किया इस प्रयोजनसेही किखास उसकेखतमें छपजावें उसकेलियेहमा-रीयह रायहैकि किसीगवाहीसे यह बातसाबितनहीं होती किदामोदरपंथ नेऐसा कामकियाथा जिसको वहमहाराजा गायकवारसे गुप्त रखना चाहताथा अथवा यह कि करनैल फियरसाहब कीहिलाकत याबडौदेसे उनकोबदलीके चाहनेमें

उसका कुछ प्रयोजनथा यह बातभी साबित नहीं हुई कि दामोदरपन्थनेअपनेस्वामीकेमालमें चुरालियाहै जोउसनेउस प्रश्नकाउत्तरदियाहै किजोरुपयाखुफियाकामोंकेलियेखासकरकेथाउसकेलिये वहमहाराजा गायकवारको क्योंकरठीकर उत्तरदे सक्ताहै वह हमारे विचारसे काफी मालूम होता है अर्थात् यहकिरुपयेके पानेवालेकी रसीदहुक्म केसाथ लगी हुईथी हालांकि हुक्मइस रीतिसे लिखागयाथा जिसे मुख्य मुआमिले कामूललुप्त होजावे केवल कागज नम्बर (टी) के मुआमिलेमें उसरीतिपर बर्त्तावनहीं कियागया यदियहभी कल्पनाकीजावे कि दामोदरपन्थने तगल्लुबकियाहै तोभी यह खयालहटथाहै किवहइस बातको पूरा२नजातनता थाकिनिज मुआमिलों कोवह बहैसियत महाराजा गायकवारकासीक्रेटरीअंजाम देताथा उनकोनिखत तहकीकात करनाकरनैलफियर साहब केअखतियारसे बाहरथा ॥

दफ़ा १६—यहरायभी जाहिरकीगईहै कि भाव पूना करनेजो महाराजा गायकवार काशुचखयाल किया जाता हैकरनैलफियरसाहबकोबिषदिलवाने काइसप्रयोजनसेबन्दोबस्तकिया किमहाराजा गायकवार आपत्तिमें फंस जावें या करनैल फियरसाहबकी तब्दीली मुल्तवीरहे यहराय उस हालतमें लिहाजके लायकहोतीकि बिषदेनेकाउद्योगसिर्फ जाहिरीहोता परन्तुयह इरादावास्तवमें इसप्रयोजनसेकिया गयाथाकि वहहरतरह सेसिद्धहोजावे और उससेमारडालनेवाला नतीजा केवल इसी सबबसे पैदा नहुवा कि करनैल फियरसाहबने ६नवम्बरको सबशर्बत नहीं पिया ॥

दफ़ा ११—यह पसइससुकहमेपर हरएक तरहदृष्टिकरने के उपरान्त कोईकाफी दलीलइसबातकी नहीं पाते कि जो अपराध महाराजा गायकवारपर लगाये गयेहैं उनके लिये हमारी यह रायहै कि महाराजा गायकवार उन के मुर्त्तकिब नहीं वाजिब ठहर सके ॥

दफ़ा १८—जोरायहमारीइसमुकद्दमेमेंहैउससेथीमान् महाराजा ग्वालियार और श्रीयुत महाराजा जयपुर और राजा सरदिनकरराव कीराय प्रतिकूलहैजोराय उनकीउन अलगरिपोर्टोंमेंलिखीहै जोहरएककमीशनकेमेम्बरने पेशकी हैहमनेउसपरखूबगौरकिया हमनिश्चयकरतेहैं किगवाहोंकी प्रकृतिके एतबारपर हरएक किस्मकी वाजिबीरिआयतकरने केपीछे मुकद्दमेकेहालसेनीचे लिखेहुयेअमरसाबित होतेहैं॥

पहिले—यहकि उन मनुष्यों ने करनैलफियर साहबके बिषदेने का उद्योग किया जिनको मल्हरराव गायकवार ने बहकाया॥

दूसरे—यह कि मल्हरराव गायकवार नेअपने एजण्टों केद्वारा और खतः भीकई नौकरोंसेगुप्तवार्त्ता कीजोकरनैल फियरसाहब बड़ौदेके रजीडण्टकेपासनौकरथे यारेजीडन्सी सेसम्बन्ध रखतेथे॥

तीसरे—मल्हरराव गायकवारने उनमेंसे कई मनुष्यों कोरुपयादिलवाया है॥

चौथे—यहकि इसप्रकारकीवार्त्ताकरने और रुपयेके दिलवानेसे उनका पहिलेप्रयोजन यहथाकि जोकुछ रेजीडन्सी मेंउनके लियेऔर उनकी रियासतके सुआमिलोंकेलियेहोता होवह मालूम करेंऔर दूसरेयहकि करनैलफियरसाहबको बिष देकर दुःखदें॥

बम्बईलिखाहुवा ३१ मार्च सन् १८ ७५ ई० | दस्तखत—आर०कौच
दस्तखत—आर०जी०मोड़
तथा—पी०एस०मैलवल

राय श्रीमान्महाराजा जयाजीरावसेंधिया आलीजाहबहादुर
जी० सी० ऐस० आई० महाराजा मल्हारराव
गायकवार बड़ौदाके मुकद्दमे में॥

मेरेविचारसे विषदिये जानेका इरादा साबित नहीं हुवा जहां तक मुकद्दमे की कैफियत से मेरे ज्ञान और निश्चय तक तहकीकात में आया मुजको इस बातका निश्चय नहीं है किमल्हरराव परविषदियेजानेका जुर्म्मनियतहो॥

मालूमहोताहैकिहीरे और संखिये और तांबेकेमोललेने कापूरासुबूतनहींहैऔरनकोई गायकवारकादस्तखतीकागज पेशहुवाकि जिसमेंइन वस्तुओंके मोललेनेके लियेरुपयेकेदेने काहुक्म पायाजाय केवलइस विषयमेंदामोदरपंथ का बयान हैकिकोई कागज दस्तखती गायकवारका नहीं है किजिसे वहइस मुआमलेमें माखुजकिये जावें॥

उनगवाहोंमेंसेजोइसमुकद्दमेंकेतहतमुकहैं उनमेंकेवल तीन गवाहोंने इसविषयमेंगवाहीदी अर्थात्रावजीऔरनरसु और दामोदरपन्थने परन्तु इनलोगोंकी गवाहीमेंभीबहुतबड़ाइख-तिलाफहैवजह इसकी रोयदादमुकद्दमेमें दर्जहैइसलिये यह गवाही निश्चयमानने केयोग्यक्योंकर मानेजासक्ती हैं॥

पेडरूखानसामां और अब्दुल्ला कीगवाहीऔर अदालतमें सालिमऔर यशवन्तराव औरकंवल्कर गजाबाऔर नूरुद्दीन बोहरा औरहकीमका अदालतमें नबुलाया जानायहसबबातें अपराधीके मतलब को फाइदेमन्दहैं॥

मैंकभी निश्चय नहीं करसक्ता कि विषदिये जानेके लिये ऐसी२कारवाइयांबहुतदिनोंतकप्रकटरीतिसेहुईं ऐसेकाम दोयाएकशख्सजो बहुत विश्वसितहोंउनसेहुवाकरते हैं नकि बहुत से मनुष्यों का समूह संयुक्त किया जावे जब थोड़ी संखियाके एकदफेकेदेनेसे मनुष्यमर सक्तेहैं तोइसका क्याहेतु हैकिबराबर संखियादी गईऔर पीगई इस लियेमैंकोई सबब एकयोग्य मनुष्य अर्थात् सरजण्टबेलन टायनसाहब कीतक-

रीरके खण्डनकरनेका नहीं देखता यह बात भी गौर करने के लायक है कि मल्हरावने जरा भी सालिम और यशवन्तरावको सरत्यू इस पीलीसाहब केहवाले करदेनेमें तामुलनहीं कियाकिन्तु यहबयान कियाकिमैं अपनी सामर्थ्य भरसब तरहकी सहायता दूंगा॥

उसवार्त्ताके विषयमेंजो नौकरोंसे रातको यादिनको हुई थीगौर करनेकेलायक नहींहै ऐसा आवागमन और तेहारों पर पारितोषक का मांगना हुवा करताहै॥

और यह कारवाई केवल रेजीडण्ट साहबके प्रसन्नकरनेकेलिये जो रईस किया करते हैं और रईसभी इसबातकी इच्छाकरतेहैं कि रेजीडण्ट साहबकी कारवाईसे इत्तिला पायें ऐसीही इत्तिलाकी इच्छा रईस और रेजीडण्ट साहब में हुवा करती है मैं अन्त में लिखता हूं कि खासबातें जांच करने की यह हैं॥

पहिलेविषदियेजाने काउद्योग—दूसरेनौकरोंकीसाजिशपसजो कुछमेरीराय पूर्वोक्त सुआमिलेमेंथीवहपेशकरताहूं॥

दस्तखत—श्रीमान्महाराजा ग्वालियार

सुक्काम बम्बई—२७ मार्च सन् १८७५ई०॥

राय श्रीमान् महाराजा जयपुर जय-सी-एस-आई॥

मल्हरावगायकवारपरलगेहुये अपराधकी कमीशनके इजलासकेगवाहों की गवाहीपर कामिल गौरकरनेके उपरान्त नीचे लिखी हुई राय पेश करता हूं वहबयान जो अमीना आयाने और रियासत के दूसरे नौकरोंने किया उससे यह साबित हुवा कि आया और दूसरे रियासत के नौकरों को समय २ पर गायकवारकी आज्ञाके अनुसार रुपये दियेगये परन्तु यहइससे पाया नहीं जाताकि यह रुपय उनको एक अनुचित अपराधके साजिशकरने के लियेदियेगये होंजोकुछ रुपयादिया गयावह गायकवारने पारितोषक कीभांतिदिया

ऐसेइनआमविवाह यात्योहारोंमें दियेजातेहैं उससंगीनअपराधके विषयमें जो गायकवार परहैंरावजी हवालदार का बयानहै किमैंनेकरनैल फियरसाहब केशबंतकेगिलासमें गायकवार के बहकाने से विषडाला सुजकोनरसूने इसविषकी पुडियांदीथीनरसू कहताहैकि सुजकोसालिम नेजोगाकवार कासवारहै यहपुड़िया दीथी मैनेपुड़िया सालिमसे पाई और रावजी हवालदार कोदेदी और दामोदरपंथ गायकवार का प्राईवेट सीक्रेटरीबयान करताहैं किमहाराजानेआज्ञादीकि कुछसंखिया और हीरामंगवादो और सरकारने हिदायतकी थीकि हीरातोगायकवारकेजासूस यशवन्तकोदी और संखिया सालिमको और सालिम और यशवन्तराव बमूजिबबयानदामोदरपंथके यशवन्तराव और सालिम दामोदरपंथ और नरसू के दरमियानीथे परन्तु कमीशनके रूबरू यहलोगहाजिर नहीं कियेगये इसलिये मालूम नहोसका किउन्होंने बम्बईके पुलिस केसम्मुख उसका इजहार कियाथा यानहीं इसबातके सबूतके लिये कि पुड़िया दामोदरपंथ केपास नरसू को पहुंची कोई गवाही नहीं है केवल दामोदरपन्थ और नरसूका बयानहै दामोदरपन्थका बयानहीरे और संखियाके विषयमें जिसकी कोईगवाही नहीं है सच्चाई कोनहीं पहुंचा॥

वह कहता है कि नानाजीवतिल गायकवार के जवाहर खानेके दारोग़ाके द्वारा फतहचन्द हेमचन्दकी दूकानसे यह हीरे मोल लिये गयेथे हेमचन्दने कमीशन के रूबरू बयान किया कि मैनेवास्तेसुलाहिजे केहीरेपेश कियेथे सुलाहिजा करके सुजको लौटा दिये कोई हीरा मोल नहीं लियागया आत्माराम जवारखाने के एक कारिन्देने कमीशन के सम्मुख इजहार दियाहै कि वास्तव में हेमचन्द की दूकानसे हीरे आयेथे परन्तु नापसन्द होकर लौटादियेगये बूरहीन बौहरा जिसके लियेयह वर्णन है कि इससे संखिया मोलली गई थी कमीशनके रूबरू यहभी हाजिरन हुआ और अकबरअली

खानबहादुर बम्बईके पुलिसअफ्सरोंने सरजण्टबेलनटायनसाहबके प्रश्नोत्तरके समयजो दूजहारात परकियेगयेथे इसबात काइकरारकियाकि बौहराअबतककैदहैइस लियेसाफइससे प्रगटहै किबौहरेने विषके मोललेने केविषयमें सिदाकतनहीं की जोयाददाश्तें दामोदरपन्थ केदफ्तरकीं पेशहुईं उनसे तशरीह इसकी पाई नहीं गई किकोई खासरक़म अल्मास यासंखिया याकिसी भांतिके विषके मोल लेनेके लिये रूपया दिया गया होउन याददाश्तों में ब्रह्मभोजन यापुण्यके लिये मंजूरीकाज़िक्रहै और गवाही इसबातकी काफ़ीहै कि वास्तव मेंयह रुपया इन्हींकामों में खर्चकिया गया॥

दामोदरपंथएकशीशीकाजिक्र करतेहैंजिसमेंएकवस्तुपतली विषैलीथीऔरबड़े२ कालेचीवटों और कालेसापों और सुग्गकी घोड़ोंके पेशाबसे उसकोहकीमने तय्यारकियाथा और एकमनुष्यगजाबा महाराजासाहबके साले कंवलकर नौकरकेहाथ दामोदरपंथके मकानपर भिजवादीथी परन्तुनतो हकीमकमीशनकेरूबरू पेशहुवा और न गजाबा आयाजो इसबयान की सिदाकतकरता इसलिये यह मालूम नहुवाकि यह लोगक्या बयान करते ऊपरके कहेहुये हेतुओंसे प्रकट है किजो कुछ दामोदरपंथ ने विषमोललिये जानेके विषयमेंबयान कियावह सिवाय उसके बयानके किसी और मनुष्य का बयान नहीं है इसलिये किसी भांतिसे साबित नहीं होसक्ता॥

बयानहुवा थाकितांबाभी करनैल फ्रियरसाहब केशर्बत में मिलाया गयाथा क्योंकिवह भीएकविषहैपरन्तु इसतांबेका कुछपता नमिलाकि गिलासकेशर्बतमें थायानथा और जबडाक्टर सीवर्डसाहब और डाक्टर ग्रेसाहब नेतलहुटके जुज अलग कियेतब भीउससे कुछ साफमालूमनहुवा॥

तीनगवाह–दामोदरपंथ-रावजी-नरसू-जिनकीगवाहीगायकवारके जुर्म संगीनके विषयमेंहै वहभीशरीक जुर्महैंइन

कीगवाही कीसिदाकतकिसीप्रतिष्ठित मनुष्यने नहींकीऔर नउनकी गवाही गुमान फासिदऔर गलतीसे बरीहै सिवाय इसके इनमेंसेदो गवाहों ने अपराध क्षमाहोजाने की शर्तसे गवाही दी इसलिये इन हेतुओंसे कोई दरजा इस गवाही कानहीं ठहरासक्ता॥

कोई लिखीहुई गवाही तसलीमकरनेकेलायक दामोदर-पन्थकीतरफसे पेश नहींहुई हरचन्द कि वह गायकवारका प्राईवेटसीक्रेटरी था गायकवार और निजकेसम्पूर्ण दफ्तर का अधिकारी था॥

रावजी और नरसू जो अपराध करनेमें संयुक्तहैं उनका बयानहै किमहाराजा से और हमसे जबानी वार्त्ता हुवाकर-तीथी और महाराजाने हमसे कहाथा कि तुम करनैलफियर साहबको विषदो मुख्य२ बातोंमें इनदोनों मनुष्यों के बयान परस्परप्रतिकूलहैं जैसे कि रावजीने वर्णन किया किगायक-वारने प्रतिज्ञाकीथी कि एक २ लक्षरुपये तुमको देंगे नरसू इसविषय में अपनी अज्ञानता बयान करता है और कहता है कि मुजको कुछमालूम नहीं कि गायकवारने ऐसीप्रतिज्ञा कीथीयानहींऔर एकबड़ाबयानरावजीकापेडरू रद्द करताहै रावजीनेवर्णनकिया कि महाराजनेविषकीपुड़ियापेडरूआदि कोदीथी हालांकि पेडरू इन्कार करताहै और कहताहैकि यह बयानरावजी का बिल्कुल झूठहै अभीतक यह मालूमनहीं हुवा कि वग़ैरह कौन लोगथे ऊपर लिखे हुये हेतुओं के सिवाय जो अमसरजनरटबेलनटायन साहबने गवाहोंके इन-हारोंके जबाब पर दरयाफ्त कियेहैं और जो अपनी स्पीचमें गवाहीके विषयमें तकरीरकीथी वह सबमेरे विचारमें गौर करनेके लायकहै उचितहै कि उसपर ध्यानकियाजावेऊपर लिखेहुये हेतुओंमें आनेको कभी निश्चयनहीं दिला सक्ता कि गायकवार किसीतरह इसजुर्ममें मालूमहुये हरचन्द कि करनैलफियरसाहबकी शरबतमें विषमिला और तीनों शरीक

जुर्मकी गवाहीअर्थात् रावजी—नरसू—और दामोदरपंथ की गवाहीपरस्पर प्रतिकूल है॥

दस्तखत रामसिंघ बम्बई २७ मार्च सन् १८७५ ई०॥

राय श्रीमान् राजासरदिनकरराव के० सी० एस०आई मल्हारराव गायकवार बड़ौदेके मुक़द्दमेमें—स्थानबम्बई लिखाहुवा २६ मार्च सन् १८७५ ई०।

विषदिये जानेके विषयके सब मुकद्दमें के देखने और सुनने सेमुझको मालूमहुवा किमहाराजा मल्हारावपरकिसीतरह का अपराध नहीं लगता और कोई सुबूत हीरे और संखिये और तांबेके मोललिये जानेकेविषय में नहीं है॥

या इन जहरोंकी तय्यारीमें एक रुपयेके खर्चका भी सबूत नहींहै और कोई लेख महाराजा के हाथका याकोई कागज जिनमें इनजहरोंके विषयमें लिखाहो पेशनहीं हुवा हरचन्द उनकाप्राईवेटसीक्रेटरी उनकाभाई होगया बहुतसे मनुष्योंमें सेजिनकोइस मुकद्दमेसेसंबन्धथाकेवलतीनगवाहोअर्थात्राव-जीनरसूदामोदरपंथ नेविषके मोललेनेकेविषयमें गवाही दीहै इनसबकाबयानएकदूसरेके प्रतिकूलहै दामोदरपंथ का बयान हीरे के खरीदने में आत्माराम और हेमचन्द से खण्डन हुवा इसनेवर्णन कियाकिमैंनेपुड़ियाखोल कर हीरा और संखिया नहींदेखाथादामोदरकानाम न रावजीनेलियाथाननरसूने कुछ उसकाजिक्र कियाउसका खुदबयानहै किमैंनेयह बयान इस प्रयोजनसे कियाकिमैं गोरोंके पहिरे मेंसोलह दिन तक कैद रहा और मुझकोबड़ा दुखथाइसलियेमैं चाहताथा किमैंऐसा बयानकरूं कि छूटजाऊं रावजी और करनैलफियरसाहब के बयानमें तारीखोंका इखतिलाफहै जबकिविष गिलासमेंडाला गयाथारावजीकहताहै किमैंने श्रीश्रीमहाराजासेपाईथी और

दामोदरकहताहैकिमैंनेशीशी सालिमकोदीथी रावजी कहता है कियहपुड़ियाविषकीमैंने अपनीपेटीमेंरखलीथी और दामोदरपंथकेइजहारहैंकिइनपुड़ियोंकेदिलानेकेलिये सालिमरावजी के मकानपर दौड़ागयाथा और रावजीभी उसकेपीछे२गयाथा रावजी यहभी कहताहै कि महाराजा ने यह पुड़ियासुजको और पेड़रू और २ लोगोंकोदीथीं पेडरूने इनपुड़ियोंके पानेसे इन्कार कियाहै यह नहीं मालूम हुवा कि वग़ैरहमें कौन २ मनुष्यथे और वहकितनेथे रावजीवर्णनकरताहै किमहाराजा ने हमदोनोंकोएक २ लाखरुपयेके देनेकी प्रतिज्ञाकीथी परन्तु नरसू कहताहै कि मैंनहीं जानता रावजीके बयानसे मालूमी होताहै कि शीशीविषैलीवस्तु की ९–नवम्बरकेएकमहीनेपहिले मिलीथी नरसूके बयानसे साबितहै कि कईदिन पहिलेमिलथी–नरसूवर्णन करताहै कि सबलोगोंने फौजू का नामलिखवा दियाथा इसलिये मैंनेभी उसीका नामलिखवादिया॥

तीनगवाह अपने हाकिम के मरचुकेहोगये और दो गवाहों कोजुर्मके मुआफीकी प्रतिज्ञाहै इसलिये उनकी गवाही और इजहारात क्योंकर सच्चे समझे जासक्तेहैं॥

पेडरूखानसामांऔरअब्दुल्लाशर्बतबनानेवालेकी गवाहीगायकवारकेमुफीदमतलबहै और सालिमयशवन्तरावऔरकंवल करगजाबा नूरहीनबोहरा और हकीमका पेशनकियाजाना गायकवार की बरीयत का हेतुहै–कदाचित् निश्चयनहीं कि विषदियेजानेकी कारवाई मुद्दतनक हुवाकरे॥

एक या दो विश्वसित मनुष्यों के द्वारा यहकाम होसक्ताहै न कि बहुत मनुष्यों की शिरकतसे जबकि थोड़ासा विषएक मनुष्यके मारडालनेको काफीहै तो फिर क्योंबराबरविषदिया जावे और पियाजावे इसलिये इनका और कईबातोंका जिक्र जो सरजन्टबेलनटायन साहब ने किया है वह गौर करने के काबिलहै॥

उसबार्त्ताके विषयमें जोनौकरोंसे रातया दिनको कुईकुछ आश्चर्य्य की बात नहीं है ऐसे २ पारितोषक हर खुशी और विवाहादि उत्सवमें दियेजातेहैं और ऐसा होताहै कि रईस और रेजीडण्ट चाहतेहैं का एकदूसरेका गुप्तरीतिसे दिलका हालमालूम होतारहे॥

अबमैं इसबातपर अपनी राय पूर्णकरताहूं कि केवल विष दियेजाने और नौकरों से वार्त्ता करने पर बहसथी इसलिये मेरीरायमें जोकुछ आयासो लिखा॥

(दस्तखतसरदिनकराव)

जोसरासिला हिन्दकी सलतनतके वजीरने पहिलेके महाराजामल्हराव गायकवार की गद्दीसे उतारेजाने के विषयमें हिंदुस्तान के गवर्नर जनरल वीरेश के नाम भेजा है उसका उल्थाभी नीचेलिखा जाता है॥

श्रीमान्लार्डसेलसबरीसाहब बहादुर सलतनत हिन्दकेवजीर का पत्र हजाकसलन्सीरावट आनरेबलसाहब गवर्न्नर जनरल बहादुरहिन्दुस्तान वइजलाइस कौंसिलकी प्रति लण्डन टफ्टर हिन्द॥

३—जून सन् १८७५ ई०

दफ़ा १—आपकेपत्र और वहगवाही जोअबकी तहकीकात मेंसरिचर्ड कौचसाहब की कमीशनके रूबरू लीगई और कमिश्नरोंकी रिपोर्ट और उसकेलिये गवर्न्मेण्ट हिन्दकारेजोल्यूशन और वहइश्तिहार जिसमेंआपने गायकवारके गद्दीसे उतारेजानेका इश्तिहार दियाहै और आपकीलिखी हुईएक याददाश्त जिसमेंआपने बडौदे की रियासतके हालकीतारीख काजिक्र किया है यह सब कागज मेरे पास पहुंचे और मैंने कौन्सिलके इजलासमें उनपर गौरकिया॥

दफ़ा २—मैंआपको इत्तिलादेताहूं कि श्रीमती महाराणी केगवर्न्मेण्ट ने उसरीति को पसन्द फरमायाहै कि जो आपने

पहिलेके मल्हराव गायकवार की गद्दीसे उतारे जानेका हुक्म देनेमें अखतियार किया है ॥

दफ़ा ३–जिसकमीशनने सरर्रि चर्डमीड साहबके नीचे इजलासकियाथा उसने यह रिपोर्टकी थी कि इस रियासत की अप्रबन्धता जिससे गवर्न्मेण्टको चिन्ताथी उसदरजेतक पहुंच गईहै कि उसके दुरुस्ती की बहुत जरूरत है कमीशन ने यह राय भी जो लिखी थी कि इसवईस और उसके सम्मतियों से दूसलाहऔर अच्छे बन्दोवस्तके किसी मवस्सरतदबीरकीआशा रखनी बेफाइदा है और यहबातें केवल अंगरेजी गवर्न्मेण्टके दखलकरने और हिमायत सेजारी होसकीहैं इसलिये पूर्व्वोक्त कमीशननेएकऐसे मदारुलमहामकी तकर्रुरकी सिफारिशकी जिसको जरूरी अधिकारसौंपेजावें और जोगवर्न्मेण्ट हिन्दी की रजामन्दीके सिवाय अलगन होसके ॥

दफ़ा ४–आपकी यहराय हुई कि यह सिफारिश कमीशन कीस्वीकार नकीजावे क्योंकि आपकी रायमें एक स्वाधीनवजीरनियत करके एक अन्याईराजाको हकूमतसे माजूलकरने का उपायउसदशामेंकि राजा भी नाममात्रको गद्दीपर बैठा रहैऔरसूरतोंमें ऐसे कामयाबनहुये थे औजिसपर फिरबर्त्तावकरनाउचित ठहरता इससे आपनेयह उपायबहुत अच्छासोचाकि खाममल्हराव के जिम्मेअपने देशकेदुरुस्ती करनेकाफर्ज ठहरायाजावे ॥

दफ़ा ५–२५–जूलाई सन१८७४ ई०के एकखरीतेमें आपनेगायकवारको उसजिम्मेदारी कोआगाहकरदिया थाजो उनकी अप्रबन्धताके सबबसे गवर्न्मेण्ट अंरेजीपर लाजिम आतीथी आपपरगायकवारकी रियासतकोबग़ावत सेमहफूजफर्जहैसो इस लिहाजसे उनकी प्रजाको अप्रबन्धतासेभी महफूजरखना आपका एकफर्ज अजीमथा जिनशब्दोंमें आपने गायकवारको इसनतीजेसे मुत्तलाकिया उनसेवह अस्लूलखूब जाहिर होते

हैं जिनके अनुसार उन तहकीकात का वर्त्ताव होना चाहिये जो आपको आधीनी रियासतोंके साथ हैं आपने लिखाथाकि आपने यहठीकलिखा है कि गवर्न्मेण्ट अँगरेज़ी हिन्दुस्तानमें निस्संदेह सबसेबड़ी गवर्न्मेण्ट है और हिंदुस्तानीरियासतों की बक़ाबेहतरी उसकी सुरब्बियानाइनायत और हिमायत पर मौकूफ है तथाच बड़ौदे की रियासत उनदोनों बातों के लिहाजसे कि वह जुगराफिये के रूसे ऐसी जगह पर है कि अंगरेज़ी राज उससे मिलाहुवा है और वहां एक अँगरेजी फौजरियासत की रक्षा और उसके अधिपतिके पक्ष और उसकी उचित आज्ञाके प्रचार के लिये रहती है खासकर यही कैफियतहै॥

मेरेमिच मैं इसबातपर राज़ी नहीं होसक्ता कि जो मनुष्य कोई बेजा काम करताहो उसकी हिमायतलिये सेनातैनात करूं जिस सलतनत को अंगरेज़ी गवर्न्मेण्ट सहायक हो उसकीतरफ से कोई बदअमली हैतो वह ऐसी बदअमली है जिसकी जवाबदिही में कुछ गवर्न्मेण्ट अंगरेज़ी भी संयुक्त होती है इसने इस बातकी निगरानी करनेका गवर्न्मेण्ट अंगरेजी को हकही हासिल नहीं है किन्तु उसीका खास फर्जहै कि जिस रियासत की यह दशा हो उसके प्रबन्ध की दुरुस्ती की जावे और सख़्त खराबियों को रोका जाये॥

दफ़ा ६-फिर आपने महाराजा गायकवारको उसबिषयसे सुत्तिलाकिया किइन असूलों के लिहाजसे आपको क्याअमल दरामद करना उचितहै आपने यह इच्छा प्रकटकी कि उनको अपनीरियासतकी दुरुस्तीकाअच्छामौका दियाजावेगा और जोवह उससे लाभ न उठावेंगे तो आपनेउनको उसके जरूरी नतीनों से भी आगाह कर दिया अर्थात् आपने महाराजा साहबको यह लिखाथा कि जो बड़ी२ खराबियां आपके प्रबन्ध में हुई हैं उनकी दुरुस्ती के लिये मैं आपको जिम्मेदार हम

मताहूं आपको अधिकार है कि जिस मनुष्य को आप चाहें अपना कारकुन नियत करेंगे पर यह बातखूब प्रगट हो कि जो नसीहतमें अब आपको करताहूं और बड़ौदे कारेजीडेण्ट जिसपर मुझको अटल विश्वासहै मेरे हिदायत से आपको सम्मतदेगा जो उसपर आपन चलेंगे और इसी हेतुसे बड़ौदे के प्रबन्धमें कुछ दुरुस्ती नहोगी तो सिवाय इसके और कोई बन्दोबस्त नहोगाकिआप अपनेअधिकारसे पृथक् कियेजावेंगे और कोई उपाय जोमेरे विचार से बड़ौदे के मनो भलप्रित प्रबन्धकेलिये आवश्यक होगा और जिसेबड़ौदे को रियासत मेंकुछ दस्तअन्दाजीनहो किया जावेगा॥

सो आपने इसकेबिना कि इसबर्ष के अन्ततक महाराजा गायकवार के निज अधिकार पररहने देने का जिम्माकरें वह तारीख एक हद्दइस बातके सुकर्रर की कि उससे आगे आप महाराजासाहबके साथ रियायत न करेंगे॥

दफ़ा ७—परन्तु यह इम्तिहान उतने समयतक होने न पाया केवल थोड़े महीने तक करनैलफियर साहबके आधीन जारीरहा और अगरचे ओहदेदार के लेख और आपक हिदायतों पर न चलने से आपको उसका बदलदेना उचित हुवा तथापि उसके चालचलनसे कोई ऐसीबात नथी जो गायकवारको अपनीरियासत के प्रबन्धमेंदुरुस्ती करनेकी बाधक होतीइस शर्त्तपरकि वहमनसे इसबातको चाहतेपरन्तु महाराजासाहबके कामोंमे उस प्रकारकी खाहिश जाहिर नहीं होतीथी उसवक्ततक जबकिकरनैलफियर साहबके विषदेनेमें महाराजा गायकवार कीजाहिरीकी शराकतने आपकोउनके माजूलकरने परलाचार करदिया रियासतकी दुरुस्तीमें कुछ भी त्रुटिनहींहुईथी किन्तु बरखिलाफ इसकेजैसाकि आपनेपत्र लिखेहुये २९ अप्रैल सन् १८७४ई० में बयानकियाहै इसीजमाने में महाराजा गायकवारने अपनेभाई खाण्डेरावकी स्त्रीसेऐसी

सख़्त बदसलूकी किउसके सबबसे उसके हिलाकतका अन्देशा था और एकऐसाविवाहकियाजिससेरियासत केसरदारों और उनमें और वैरअधिक होगया और पूर्ववत् उसी प्रकार की फ़जूल खरची करते रहे जिसके सबबसे उधरतो काश्तकार निरासहोगये और इधरइसके इससबबसे कि हिंदुस्तानीसिपाहियोंकी जरूरीमासिक केदेनेका कुछ बंदोबस्त नथा सल्तनतमेंबड़ीअबतरीके होनेका संदेहथा पसइन बातोंसे मल्हरावकी जाती नालायक़ीमें किसीप्रकारकी तब्दीलीसाबित नहींहोतीथीउनकेअहदकोतवारीखमेंजहरखूरानीकेकेइलजाममेंउनकेगिरिफ़्तारहोने और उनकेअहदकेपूर्णहोनेसे पहिले उसवजीरका किसीसबबके बिना मुसौफी होनाथा जिसनेरियासतके प्रबन्धकी इसलाह करनीज़रूरीथी और जोसररिचर्डमीडसाहब कीरिपोर्ट परनियत हुवाथा॥

दफ़ा ८–यदियह बातफर्जकी जावेकि मल्हररावकेजिम्मेविषदेनेका इलजाम ठहराताही नहींतो अबइस बातका तहकीककरना कुछअवश्यनहींहै किउनकीनालायक़ीकी इनअलामतोंके मूलपर अमल करना करीन मसलेहत था यावर्ष के पूर्ण होने तक फैसलेका मुल्तवी करना उचितथाकेवल इस बातकावर्णन करनाकाफी हैकिजो तरीका इखतियार किया जातावह केवलबड़ौदे के रहने वालों के भलाईके लिहाजसे होताजो बरअंगेखती और खतरहलोगों केदिलोंमेंइकबारगी किसीतदबीर सुमलिकत बदल जानेसे पैदाहोताहै यद्यपिउससे दरगुजरकरनाउसकेबनिस्बतसुनासिबहोताकिमैआदके पूर्णहोनेसेरियासतमेंवहइसलाहकीजावेजोवक़्तसे आपत्तिके मारेसमूहों कीदशाकेलिहाजसे सुनासिबथीपरन्तु रियासतके अधिपतिके चालचलनमें कोईबातऐसी नथीजो उसप्रकार की रियायतके मुस्तहक होतीयाआपके गवर्नमेण्टको उत्तमप्रबन्धकीमौहूम आशामें अधिकतर ठहरना लाजिमआता॥

दफ़ा ९–जोसंगीन अपराधमल्हरावके जिम्मेविष दियेजा-नेका नियत किया गया और जिसकी मिस्टर सूटर साहब ने तहक़ीक़ात की थी उसके मुकाबिले में उसप्रकारका तामूल निस्संदेह मज़ाकचीज था श्रीमान् महाराणी विक्टोरियाकी गवर्नमेण्ट आप की इसराय से बिल्कुल अनुकूल है कि आप इस इलजाम से हरगिज चश्मपोशी नहीं कर सकीथे एकऐसे राजाके साथ जिसके निस्बे ऐसा हैबतनाक इलजामहो और वह उन मनुष्यों ने लगाया हो जो अपनेतईं उसका कारिन्दा बयान करतेथे मिलवत् सम्बन्ध और जाहिरा दोस्ताना जारी रखना बड़ी रुसवाई की बातहोती और सरकारके उनलायक लाजिमोंके हकमेंजोबड़ा कठिन और भयकी हालतमें अति सूक्ष्मदेशीयकार्य्यको अंजाम देतेहैं सम्पूर्ण संसार में उसबात का प्रकट करना कि आपके प्राणको बड़ा सस्ता समझते हैं न्यायसे दूरहोता ॥

दफ़ा१०–आपइसबातका तसफिया करतेहैं कि किसरीति से इस अपराधकी तहक़ीक़ात करनीचाहियेकईअमूरअहमके लिहाज़से अमल कियागया अर्थात् आपने सबलोगोंपर यहबात जाहिर करना चाहतेथे कि जिसगवाहीपर आपने काररवाई की थी वहकाफी थी और इसीसबबसे आपने यह तजवीजकी कि वहकाररवाई भी आमतौरसेहो आपकी यहभी इच्छार्थी जैसाकि आपने महाराजासेंधियाको लिखाथा कि इसकमी-शनकीतरतीब उसतौरपर होनीचाहिये जिसपरसंपूर्ण हिन्दु-स्तानके रहनेवालोंको निश्चयहो पस इसविचारसे आपने यह इरादाकिया कि आधी कमीशनमें हिन्दुस्तानीहों और इनमें से एकमेम्बर मिसल मल्हरराव के कौम मरहटाकाराजा और एकअतिप्रतिष्ठित प्रबन्धकमरहटाकी जातिकाहो यहतदबीर आपने श्री महाराणी विक्टोरिया की रिआयाहिन्द की उस दिलीफिकर के सबबसे की थी जो सदासे आपके प्रबन्ध से पाई

जातीहै और जिसकी निस्बत हुजूर मदूहा की गवर्नमेण्ट ने हमेशा अपनी बड़ी रजामन्दी जाहिर की है॥

दफ़ा ११—पर इसबातमें कलाम होसक्ताहैकि इसप्रकारका कारर्वाई कानतीजाहर एकतरहपर आपकीआशाकेअनुकूल हुवायानहीं निस्संदेह उससेभी बड़ी २ कमाहतें पैदाहुई हैं जिससेकाफीदलील इसबातकी पैदाहोसक्तीहै जोईश्वर नचाहे आगेकोइसीप्रकारका मौका पैदाहोतोइसप्रकारके उपायका अमलमेंलाना अनुचितहोगा राजे और सरदार अपनेकानूनी तालीमके सबबसे एक नाजुक कानूनी तहक़ीक़ातके करने के योग्यनहीं होते और हिन्दुस्तानके उनसरदारोंको जो अंगरेजी कानूनी अदालतके दस्तूरों और एकअंगरेजी वकीलकी लियाकत से नावाकिफहोते हैं इसप्रकारके नये कामोंके करने में खासकिस्मकी दिक्कतपेश आईहै इसकेसिवा इससुकद्दमेके हालातके अवलोकनसे यहबात साबितहोतीहै कि एकमुल्क के अधिपतिके अपराधका उसीकेदेशकेभीतरअदालतकीरीति के अनुसार तहक़ीक़ात करना कमसुनासिब होताहै क्योंकि कारर्वाई अदालतके सुस्तहरहोनेसे और जो पाबन्दी मुल्की मसलहत के लिहाज से उसकी निस्बत करारदेते इब्तिदामें लाजिम होतीहै उनसे उसकी बड़ी जिल्लत होतीहै जो उस की रिआया और और राजाओंमें दृष्टिमें सिर्फजुर्म्मके साबित होनेके उपरान्त जायज न होसक्तीहै और इसीसबबसे बहुतलोग उसके दरदशरीक होजाते हैं और यहहमदर्दी आसानी के साथ जोउसके हक्कमें बमंजिले तरफदारीके होजातीहै इसके उपरान्त जोकायदे कारर्वाईके अंगरेजी कानूनकी रूसेजारी कियेगयेहैं उनका अमलदरामद उनमुक़द्दमोंमें मुनासिबनहीं होता जहां गवाहोंके साथ उनके पहिले इजहार और आम अदालतमें उनकेपेश होने के दरमियान सुगमता से साजिश होसक्ती है और जहांइस किस्मकेअमलके वास्तेबहुतसे जरि-

येमौजूदहैं और उनकेअमलमें लानेके वास्ते भीबहुत से लोभ दलानेवाली चीजेंहोतीहैं पसऐसी हालतोंमेंहमेशा इसबात काअंदेशा होगाकिजो गवाहीसुकद्दमे कीतहकीकात केवख्त पेशहोगी वहबमुकाबिले उसगवाहीके काफी मालूम होगी जोतजबीज इस अमरकेकिफलां अम्रकी तहकीकात रीति के अनुसारकी जावेहासिल हुईथी॥

दफ़ा १२–यहमुख्तलिफ दिक्कतेंइस प्रकारकीथीं जिनके होने काअन्दाजा आपपहिलसे नहींकरसक्ते थेपरन्तु तहकीकात केप्रारम्भहोने केउपरान्त वहदिक्कतें मालूमहुईं और २ अधिक होती गईं पसजो दिक्कतें हिंदुस्तानी कमिश्नरों को पेश आईं उनकीवजह इससेसाफ मालूम होती है और यहभी मालूम होताहै किउन्होंने अपनेजियादह तजुर्बेकार रफीकोंके साफ२ फैसलेसे इत्तिफाक करनेमें किसीसबबसे ताम्मुलकिया॥

दफ़ा१३–जिनवजूहातपर हिन्दुस्तानी कमिश्नरोंने अपना फैसला कियाहै उनकी तग्सीह कुछही क्योंनकीजावे परन्तु श्रीमती महाराणी विक्टोरियाकी गवर्न्मेण्ट की रायमें यह बातनहीं होसक्तीकि उसफैसलेकी ओरसे बेपरवाई की जावे तथाच जोहिदायतें मैंनेतारबक्तीके द्वारा आपकेनिकट भेजीं थी उनमेंभी रायजाहिरकीगईथी यदि हिन्दुस्तानीकमिश्नरों के नियतकरनेसे हिन्दुस्तानियोंको इसबात का निश्चयकराना मुतस्विर नहोताकि इस अदालतमें अवश्य करकेन्याय और इन्साफहोगा तो हिंदुस्तानियोंका नियतकरना बिल्कुल वृथा होता और यह भरोसाभी केवलधोकाही धोकाहोता अगर नतीजेके करारदेनेमें हिंदुस्तानी कमिश्नरोंकीरायपरकुछलिहाजकिया जातासिवा इसकेएक ऐसे मुकद्दमेमें जिसकादारोमदार बिल्कलतीन गवाहोंके एतबारपरथा इसबातपरलिहाजकरना अतिआवश्यक थाकि इजहार केवक्त उन गवाहों केक्याढंगथे पसजिनमनुष्योंने अपनी आंखसे इस मुक़द्दमे के

हालातको देखाहोगा उनकोरायको तरमीमके वास्ते किसी ऐसेहाकिमके रूबरूपेश करनाजिसको उसीप्रकारका मौका हासिल नहो (चाहेवहाकिम कैसाहीबड़ा क्योंनहो) मुनासिबनहोता यहबात सचहैकि आपनेउनजुर्मोंमें जिनकीरूसे यह कमीशन मुकर्ररकीथी उसकी काररवाईका कुछकानूनी तहक़ीक़ात बयान नहीं कियाथा किन्तु सिर्फ तहक़ीक़ात बयानकियाथा परन्तु श्रीमतीमहाराणी विक्टोरियाकीगवर्न्मेण्टको रायमें इससे कुछउनबातोंकी खूबीजायलनहीं होती जोमैंने पहिले बयान की है॥

दफ़ा१४–यदि कमीशनकेविचारमें मल्हरराव उसबड़े जुर्म्म के मुर्त्तकिब होते जो उनसे मन्सूबकिया गयाथातो जो दण्ड किसीगरीब मनुष्यकेलिये मुनासिबखयाल कियाजाताउसको उससे कमदण्डदेने की कोईवजह नहोती किन्तु जोपदउनको प्राप्तथाउसकेसबबसे उनकागुनाह और संगीन होजातापरन्तु नतो उनके जिम्मे जुर्म्मसाबित हुवा और नवहबरी किये गये यद्यपि कमीशनकी रायउनके खिलाफ परमाइलथी तथापिवह राय कितई नथी क्योंकि: मेम्बरों मेंसेतीन मेम्बरोंकी रायतो प्रेसीडण्टके समेत यहथीकि जुर्म्मसाबित है और एककीराय बरीयतकीथी पंसइनसूरतों में जोयहलिहाजकिया जावे कि तीनकमिश्नर जिन्होने मल्हरराव को मुजरिमनहींकरारदिया था उनकी जातिके मनुष्यथे और वह कमीशन में इस लिये संयुक्त कियेथे किहिंदुस्तानके लोगोंको उसपर निश्चय होतो हुजूरमलका मवज्जमाकी गवर्न्मेण्टकी यहराय है किमल्हरराव की निस्बत इसतरह सलूक नहीं किया जासक्ता कि मानो जहरखरानी का अपराध उनको जिम्मे साबित होगया तथाचजो इत्तिलहार आपने श्री महाराणी विक्टोरिया की हिदायत से जारी किया था उसमें वह मुजरिम नहीं फर्जकिये गये थे और वह उस दण्डसे बचा दियेगये थे जो

अवश्य करके उस जुर्म के साबित होने पर दिया जाता ..

दफ़ा १५–परन्तु इससे खाहनखाह यह लाजिम नहीं आता कि वह फिरगद्दी पर बैठाये जावें तहकीकात के नतीजे की निस्बत सबसे बढ़कर यह बात कही जासक्ती है कि मल्हरराव के जुर्म की निस्बत जो कमीशन ने कितई राय नहीं दी इससे वह सजा से बचगये उन्होंने इस तरह पर कारवाई की थी कीतीन बड़े तजुर्बेकार अंगरेज ने उनको जहर खूरानी का मुजरिम ठहराया और उनके देसी जातियों ने अपनी राय जाहिर करते वक्त उनको निर्दोष ठहराने से इजतिनाब किया था इस फैसले से कुछ ही नतीजा पैदा क्यों नहो परन्तु वह किसीतरह पर एक बड़े रुतबे के वास्ते उनकी काबलियत की हरगिज एकदली-लन नहीं समझा सक्ता अगर सिर्फ इसी नतीजे पर खिहाज किया जाता तौभी बड़ौदे के रहनेवालों पर हुक्म रानी करने के वास्ते फिर उनको बहाल करने में बड़ी दक्कतें आगे आती॥

दफ़ा १६–परसिवाय इसके और वजूहात भी जो फी नफर काफी वाफी थीं उनके दुबारह नबहाल करने के वास्ते मौजूद थीं अर्थात् जो जमाना सरलिचर्ड मीडसाहब की तहकीकात के उपरान्त गुजराथा उसमें किसी प्रकार की तखफीफ उनबुराइ-यों में नहीं मालूम हुई जो रियासत बड़ौदा की बरे प्रबन्ध के सबबसे मल्हरराव के गिरिफ्तार होने से पहिले उनवजीरों ने अपने ओहदों से इस्तैफा दे दिया जिन्होंने इन्तिजाम की दुरुस्ती शुरू कीथी और सरल्यूइस पीलीसाहब ने आपसे बड़े दिलसे यह सिफारिश की थी कि गायकवार की रियासत को आफतों से महफूज रखने की गर्ज से उसके सरदार को गद्दी से उतारना चाहिये इससे कई सप्ताह के उपरान्त ऐसे अपराधों के होने-का सबूत हासिल हुवा कि अगर वह इससे पहिले दरयाफत होजाते तो इसबालिम अहद का बहुत जल्द खातिमा होजाता सरलिवर्ड कौच साहब की कमीशन की कारवाई के शुरू होने

केउपरान्त सरल्यूइसपीली साहबकेरूबरू भावसेंधियाकाविष देकर मारा जाना और उससेभी अधिकएक और हैबतनाक कतलतर्थात् गोविन्दनायक का बड़े अजाबसे हिलाक होना साबित होगयाथा यह दोनों जुर्म उन मनुष्यों ने कियेथे जो मल्हरावके आधीन अधिकारीथे और पिछलेजुर्मकी निस्बत तोसाफयह पतालगगया कियह मल्हररावकी आज्ञासे हुवा थाअगर वहजुर्म उसवक्त साबित होजाते जबकि वह गद्दीपर बैठेहुयेथे तोजिस हुकूमत से ऐसेबड़े कामकिये जावेंउसके खत्म करनेमें गवर्न्मेण्ट अंगरेजी बहुत अरसे तक ठहर नहीं सक्ती थी॥

दफ़ा १७–पस इन वजूहात पर अगर मल्हरराव के जिम्मे करनैल फ्रियरसाहब को जहरदेने का इलजामभी न होता तौभी उनकागद्दीसे उतारना उचितथाग वर्न्मेण्ट अंगरेजीको मल्हररावके सरदारों और रिआयाको अपने हकूकके हासिल करनेके इखतियारसे महरूम करदिया था यहबात वाजिब न होती कि वह फिर उनको एक ऐसे राजा की हकूमत के कुबूल करनेपर मजबूर करे जिसकी लाइलाज बुराइयांतजु-र्बेसे बखूबी साबित होगईथीं पसआपको यह हिदायतकी गई कि आप अपने जाबितेके इख्तिहारमें मल्हररावके गद्दीसे उ-तारे जानेकी भी आम वजूहात बयानकरें इस अंदेशेसे कि शायद कोई यह खयालकरे कि एक रेजीडण्टको जहर देनेके जुर्ममें सिर्फ गद्दीसे उतारे जानेकी सजादीगई और कमी-शनके हिन्दुस्तानी मेम्बरों की भी रायके लिहाज से यह अम्र मुनासिबनथा कि आप अपने वजूहातमें उन अमूरको दाखिल करेंजो तहकीकातसे पैदाहोंउस किस्मकी काररवाई गोया एक फजूलवजह एक जरूरीकी होती और उसके सबबसे इस अस्लमें खललवाकैहोता कि सख्तबदनजमीहै फीनफसा अख-तियारात हकूमतसे महरूमकरनेकी काफीवजहहै जोफर्जअ-

जीम श्रीमती महाराणी विक्टोरिया की गवर्न्मेण्ट परहिन्द की प्रजाको अन्यायसे महफूज रखनेकाहै उसको हजूर मम-दूहानेएकबड़े सुकह्मेमें निहायतदिलसे तसलीम कियाहै॥

दफ़ा १८–मैं अन्तपरथी महाराणी विक्टोरियाकी ओरसे उनखिदमतोंकी निस्बतबड़ी कदरशिनासी जाहिरकरताहूं जोआपसे उसदर्दनाक सुकह्मेमें जहूरमें आईहैंमैं आपसेयह भी दरख्वास्त करताहूं कि आप सरल्यूइसपीली साहबऔर जिन मनुष्योंने उनके आधीन कामकियाथा उनसे कहदेंकि श्रीमतीमहाराणीकी गवर्न्मेण्टको उनकठिन कामोंका बड़ा खयालहैजोउन्होंने लियाकतके साथअंजामदिये–

दस्तखतसेल्सबरी॥

इति
